d by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

वाणी प्रकाशन

भारतीय पत्रकारिता कोश

विजयदत्त श्रीधर

R
ट९.०३
श्रीध-भ

R
ट९.०३
श्रीध-भ

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खंड -एक

भारतीय पत्रकारिता कोश

विजयदत्त श्रीधर

R
070.2
श्रीध-भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
82.03
ग्रंथ-भ

143772

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान
आदि न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या .... 2?2.03 आगत संख्या 143772

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय पत्रकारिता कोश

(1780-1900)

खण्ड-एक

सप्रे संग्रहालय भोपाल

माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र
संग्रहालय एवं शोध संस्थान
भोपाल (म.प्र.)-462003
की प्रस्तुति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय पत्रकारिता कोश

(1780-1900)

खण्ड-एक

143772

143772

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
फोन : 011-23273167, 23275710
फैक्स : 011-23275710
e-mail : vaniprakashan@gmail.com
website : www.vaniprakashan.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाणी प्रकाशन का 'लोगो'
विख्यात चित्रकार मक़बूल फ़िदा हुसेन की
कूची से

R
82.03

ISBN : 978- 81-8143-749-5

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित
प्रथम संस्करण : 2008
© माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय
एवं शोध संस्थान, भोपाल
आवरण : वाणी प्रकाशन
जयभारत प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-110032
द्वारा मुद्रित

दो खण्डों का मूल्य : 1600.00

BHARTIYA PATRAKARITA KOSH
PART-1 (1780-1900)
by : Vijaydutt Shridhar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री अभय छजलानी,
श्री अच्युतानंद मिश्र
एवं श्री ललित कुमार जोशी
को।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रम

1.	प्राक्कथन	1
2.	भारत में पत्रकारिता का प्रादुर्भाव	9
3.	भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता	28
4.	जातीय चेतना और समाज सुधार	34
5.	हिन्दी पत्रकारिता का युगारम्भ	47
6.	मराठी पत्रकारिता का श्रीगणेश	61
7.	तीन शताब्दियों में फैला सफर	73
8.	धर्म और संस्कृति के पक्ष में	87
9.	मध्यभारत में पत्रकारिता का उद्‍भव	111
10.	जीती शाही फरमान की लड़ाई	135
11.	उर्दू का पहला दैनिक अखबार	151
12.	भाषान्तरण से कानून को मात	185
13.	प्रथम श्रृंखला पत्र	215
14.	कविता बम!	227
15.	शिवशम्भु के चिट्‍ठे	237
16.	मानक अखबार	247
17.	स्वराज्य का उद्‍घोष	273
18.	तमिल पत्रकारिता का आदर्श	285
19.	लंदन से कालाकांकर	305
20.	कलम और तलवार	343
21.	मलयालम पत्रकारिता का प्रतिमान	357
22.	स्वतंत्रता की ज्वाला	375
23.	बिहार प्रान्त का निर्माण	393
24.	हिन्दी का भाषिक संस्कार	423
25.	अनुक्रमणिका	441

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बात

दो खण्डों में पूरी हुई यह किताब भारतीय पत्रकारिता की- सन 1780 से सन 1947 तक- एक सौ अड़सठ वर्ष की यात्रा-कथा है। यह भारत के इतिहास का सबसे ज्यादा उथल-पुथल भरा कालखण्ड है जब यह महादेश एक साथ कई मोर्चों पर जूझ रहा था। सम्पूर्ण और सर्वांगीण स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा था। अंधविश्वास, कूपमंडूकता, पाखण्ड और अमानुषिकता से भरी सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति के लिए समाज सुधार की अलख जगाई जा रही थी। फिरंगियों की लूट और भारतीय उद्यम-कला पर पश्चिम के प्रहार की पराकाष्ठा ने आर्थिक स्वतंत्रता, स्वदेशी और स्वावलम्बन का नया संकल्प जगाया था। कलम के सिपाहियों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर इस महासंग्राम में भागीदारी की। सम्पादकों ने, और समाचारपत्र-पत्रिकाओं ने, इसके लिए भारी कीमत भी चुकाई- गोली खाई, फाँसी चढ़े, जेल गए, जुर्माने भरे, छापे पड़े, जब्ती हुई (बेशक अपवाद भी रहे)। जोश और जुनून की इस बलिपंथी पत्रकारिता को 'मिशन' कहा गया।

तब भारत अखण्ड था। राजनीतिक मानचित्र जरूर बँटा हुआ था- अँगरेजों के प्रत्यक्ष शासन वाला ब्रिटिश इंडिया, कुछ हिस्सा फ्रेंच और पुर्तगाली उपनिवेश वाला और छोटी-बड़ी छह सौ से ज्यादा रियासतें। तथापि भारत की आन्तरिक शक्ति का स्रोत और जनमानस को जोड़ने वाली कड़ी है सांस्कृतिक एकात्मता। उन दिनों संचार के गतिवान साधन नहीं थे। परन्तु वैचारिक अन्तः प्रवाह में एकरूपता के जीवन्त साक्ष्य भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता के माध्यम से सहज उद्घाटित होते हैं। हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, उर्दू, उड़िया, असमिया, तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम आदि- अभिव्यक्ति की भाषाएँ भले ही भिन्न रही हों, परन्तु अभिव्यक्त विचारों और मंतव्यों में भिन्नता नहीं थी। इसीलिए साझा संघर्ष का अनूठा इतिहास रचने में भारतीय पत्रकारिता सफल भी रही। हमारे प्रायः सभी महापुरुष चाहे वे समाज सुधार अभियानों के अगुआ रहे हों, अथवा राजनीतिक नवजागरण के सूत्रधार और स्वतंत्रता संग्राम के लोकनायक; जनसंवाद के लिए उन्होंने पत्रकारिता को माध्यम बनाया। पत्रकारिता का कोई स्वतंत्र लोक नहीं होता। समाज की, राष्ट्र की दैनन्दिन चर्या का इतिवृत्त दर्ज करती है पत्रकारिता, वर्तमान के साथ भूतकाल की पृष्ठभूमि को खँगालते हुए और भविष्य की दिशा का अनुमान लगाते हुए। भारतीय पत्रकारिता के इतिहास के इस कालखण्ड में इन सभी तत्वों का सम्यक दिग्दर्शन है।

प्रान्तों और भाषाओं के दायरे से परे समग्रता में भारतीय पत्रकारिता के इतिहास की यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुति एक अलग तरह का उपक्रम है। काम कठिन है और समय-साध्य भी। पूरे पन्द्रह बरस लगे तैयारी में। कुछ अच्छी पुस्तकों में नये तथ्य मिले। अन्य भारतीय भाषाओं के जानकारों की सहायता ली। राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकाता, बंगीय साहित्य परिषद कोलकाता और राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, एनुअल रजिस्टरों तथा गोपनीय प्रतिवेदनों से तथ्य संकलन में मदद मिली। दो हजार से अधिक पत्र प्रकाशकों-सम्पादकों से पत्राचार कर जानकारियाँ जुटाईं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत सिद्ध हुआ माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल जहाँ सैकड़ों महानुभावों द्वारा प्रदत्त हजारों पृष्ठों की शब्द-सम्पदा तथ्यों की पुष्टि और भ्रान्तियों के निराकरण का आधार बनी। स्वतंत्रता पूर्व के इस कालखण्ड में सम्पादक की संस्था सुदृढ़ थी। उनमें सह-अस्तित्व का भाव और सहयोग का औदार्य था। नवप्रकाशित समाचारपत्र-पत्रिकाओं का स्वागत किया जाता था। उन्हें सहयोगी के रूप में स्वीकार किया जाता था। चाहे भाषा हो या विषय वस्तु, अच्छे पक्ष की सराहना में कोताही नहीं बरती जाती थी और कमियों को रेखांकित कर सुधार की अपेक्षा जतलाने में भी संकोच नहीं किया जाता था। इस कालखण्ड के अनेक हिन्दी समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के पुराने अंकों में अन्य भारतीय भाषाओं के प्रकाशनों पर भी टिप्पणियाँ और प्रतिक्रियाएँ मिलीं। इस तरह के उल्लेखों से प्रामाणिक तिथियाँ और नये-नये तथ्य जुटाने में महत्वपूर्ण सहायता मिली। अनेक अचर्चित और अज्ञात पत्र-पत्रिकाओं का पता चला। कई की तिथि संशुद्धि हुई। अनेक सम्पादकों का कृतित्व और संघर्ष सामने आया। सबसे कठिन काम था एक ही नाम के पत्रों का एकाधिक स्थान से प्रकाशन होने की स्थिति में यह निश्चय कर पाना कि वास्तविक स्थिति क्या है। समकालीन पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठ पलटने से ही भ्रम-निवारण हो सका। कुछ ऐसे भी दृष्टान्त सामने आए कि सम्पादकों के समान नामों ने दुविधा पैदा कर दी। तब पुराने पत्रों में कहीं उपनाम अथवा अन्य उल्लेख मिलने पर स्थिति स्पष्ट हो सकी।

एक प्रश्न हिन्दी भाषा के बदलते स्वरूप की प्रस्तुति का भी है। इस पुस्तक में जहाँ-जहाँ भी पत्र-पत्रिकाओं के उद्धरण दिए गए हैं- उन्हें तत्कालीन मूल भाषिक स्वरूप में ही रखा गया है। वह भाषा आज की तुलना में अटपटी भले ही लगती हो, किंतु इससे हिन्दी गद्य की विकास-यात्रा का भी पता चलता है। कई नगरों के नाम अब बदल गए हैं- बंगलोर (बेंगलूरु), बम्बई (मुम्बई), पूना (पुणे), मद्रास (चेन्नै), कलकत्ता (कोलकाता) आदि। जहाँ कहीं इनका उल्लेख मूल उद्धरण में हुआ है वहाँ जस का तस रखा गया है और जहाँ लेखक की ओर से प्रयोग हुआ है, वहाँ वर्तमान स्वरूप में लिखा गया है। शर्म्मा (शर्मा) वर्म्मा (वर्मा) जैसे उपनामों के सन्दर्भ में भी यही शैली रखी गई।

तथ्य संकलन और सन्दर्भ तलाशने के बुनियादी काम में श्री सन्तोषकुमार शुक्ल, श्री शौकत रमूजी और डा. मंगला अनुजा ने कठोर परिश्रम किया। सुश्री यशोधारा मिश्र, डा. बालशौरि रेड्डी, श्री अम्बिकाप्रसाद कानूनगो, श्री हरि देसाई, डा. सुंकि वेंकटेश्वरलु, श्री आर.एस.पिल्लै, सुश्री आरती सूद, श्री घनश्याम सिंह तोमर के सहयोग ने पथ प्रशस्त किया। पत्रकारिता के इतिहास के अध्ययन की दिशा में पच्चीस वर्ष पहले प्रवृत्त किया था डा. शिवकुमार अवस्थी ने जिन्होंने हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के लिए 'मध्यप्रदेश की पत्रकारिता का इतिहास' लिखने का दायित्व सौंपा था। श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी की सीख ने ज्यादा से ज्यादा छानबीन की राह दिखाई। उनका निर्देश रहा- "या तो पूर्व लेखकों से सहमत हो जाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा अपने कथन के पक्ष में प्रमाण प्रस्तुत करें।" श्री मायाराम सुरजन का स्नेहपूर्ण पीठ थपथपाने वाला अभिभावकत्व सम्बल बना रहा। नईदुनिया के प्रधान सम्पादक श्री अभय छजलानी और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री ललितकुमार जोशी के लिए तो मानो यह कार्ययोजना उनकी अपनी ही थी। कार्य में आई परिस्थितिजन्य शिथिलता को दूर किया माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने। डा. रत्नेश, श्री सुधांशु मिश्र एवं श्री उबैदुल्ला मुबारक ने अनुक्रमणिका तैयार करने और श्री रेवतीरमण मिश्र ने अक्षर संयोजन का दायित्व निभाया। सभी के प्रति हार्दिक आदर और आभार।

अत्यन्त श्रद्धापूर्वक उल्लेख करना चाहता हूँ श्रद्धेय श्री नारायणदत्त जी का जिनके सीख भरे पत्रों से इतना सीखने को मिलता है जितना कदाचित् कोई विश्वविद्यालय भी नहीं पढ़ा सकता। जो कुछ भी अच्छा कर पाया उसका श्रेय उनको ही है।

इस ग्रन्थ का स्वरूप एक ओर भारतीय पत्रकारिता कोश का है, यद्यपि अकारादि क्रम से संकेतबद्ध सूचनाओं के स्थान पर इसमें कालक्रमानुसार विवरण दर्ज किए गए हैं। वहीं दूसरी ओर यह पत्रकारिता के उद्भव और विकास, संघर्ष और सामर्थ्य का विश्लेषणात्मक इतिहास भी है। देश के भिन्न-भिन्न अंचलों और भारतीय भाषाओं के ऐसे प्रमुख समाचारपत्रों और पत्रिकाओं का विस्तृत विवरण इसमें सम्मिलित है, जिनमें अपने समय के राष्ट्रीय संघर्षों का प्रतिनिधि स्वर मुखर हुआ है। विमर्श का स्वरूप और विस्तार, लोकचेतना के सुप्त सरोवर में चिन्तन की लहरें उठाने के छोटे-बड़े प्रयास, आन्दोलनों-अभियानों-नीतियों-प्राथमिकताओं को आकार देने वाली बहसें, मतभिन्नताओं और टकरावों के स्वरूप और राष्ट्रीय सहमति के निर्धारण के यत्न, इन सबकी झलक समकालीन पत्र-पत्रिकाओं के जीर्ण-शीर्ण पत्रों से जुटाने की कोशिश की गई है। फिर भी, यह दावा नहीं है कि सभी कुछ इस ग्रन्थ में संजो लिया गया है। तथ्यों की खोज, संशुद्धि और परिवर्द्धन की प्रक्रिया जारी रहने वाली है। इति।

विजयदत्त श्रीधर
दशहरा, 2007

माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय
एवं शोध संस्थान, भोपाल (म.प्र.) 462 003

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योहान गुटेनबर्ग, जिसने ज्ञान के लोकव्यापीकरण का पथ प्रशस्त किया।
(1840 का काष्ठ चित्र, 'जर्मन समाचार' से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन

मनुष्य की जानने, सीखने और अनुभव बाँटने की आकुलता उसे ज्ञान के महासागर में गोते लगाने को प्रेरित और एक तरह से विवश करती है। भाषा और संवाद उसकी सम्प्रेषण की ललक को पंख लगाते हैं। हजारों साल पहले गिरि-कन्दराओं में उकेरे गए शैल चित्र, धर्म और राजतंत्रों के संदेश-उद्घोषक शिला लेख, भोजपत्रों पर अंकित उपदेश, कागज बनाने की तकनीक, मुद्रण कला का आविष्कार और सूचना-प्रौद्योगिकी का अधुनातन विकास..... यह सब जिज्ञासा और जिजीविषा के ही युगान्तरकारी प्रतिफल हैं, व्यष्टि के अनुभव का समष्टिगत संस्कार।

विज्ञापन कला का प्रादुर्भाव

इतिहासवेत्ता डा. भगवतशरण उपाध्याय ने दशपुर (वर्तमान मन्दसौर, मध्यप्रदेश) में कुमार-गुप्त-बन्धुवर्मा काल के एक शिलालेख को संसार का प्रथम विज्ञापन माना है। वे लिखते हैं, ''देश के कुछ रेशम बुनकरों ने लगभग 1500 वर्ष पूर्व अपना संघ बनाया और व्यापार-विस्तार की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए मालवा पहुँचे और दशपुर में बस गये। इन व्यापारियों ने दशपुर में विशाल सूर्य मंदिर बनवाया। व्यापारियों ने उसके शिलालेख का उपयोग रेशम के वस्त्रों की बिक्री को बढ़ाने के लिए विज्ञापन के रूप में किया। इस शिलालेख में संस्कृत भाषा में सम्राट तथा उसके गोप्ता (गवर्नर) की प्रशंसा की गई। फिर नगर की समृद्धि की कहानी कही और इसी में आसानी से पढ़े जाने योग्य अपने उत्पादों के विज्ञापन का भी सुन्दर वर्णन किया है।''

गुप्तकालीन अभिलेखों में सन 436-455 में दशपुर राज्य के अधिपति बन्धुवर्मन् (बन्धुवर्मा) के शासन काल में सूर्य मन्दिर के निर्माण का विवरण है। तदनुसार दक्षिण गुजरात से रेशमी वस्त्रों के बुनकर-व्यापारी दशपुर राज्य में आकर बसे और फले-फूले। उन्होंने अपना संघ बना लिया था। इसी संघ ने दशपुर नगर में सन 437-38 में सूर्य मन्दिर का निर्माण कराया। बीच की उथल-पुथल में मन्दिर को क्षति पहुँची। उसी संघ ने सन 473-74 में मन्दिर का पुनरुद्धार कराया। तभी मन्दिर में शिलालेख लगाया गया। इस शिलालेख पर 'वत्सभट्टि' विरचित पद्यरचना उत्कीर्ण है, जो संस्कृत में है। पद्य का विज्ञापन-अंश इस प्रकार है-

''तारुण्य कान्त्युपचितोऽपि सुवर्ण्ण हार
ताम्बूल पुष्प विधिना समलंकृतोऽपि।
नारीजनः प्रियैमुपैति न तावद् प्रियां,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यावन्न पट्टमयवस्त्र युगानि धत्ते।।
स्पर्श (वता वर्ण्णा) न्तर-विभाग चित्रेण नेत्र शुभगेन,
यैस्सकलमिदं क्षितितलमलंकृतं पट्ट वस्त्रेण।।''[1]

अर्थात ''स्त्रियाँ चाहे युवावस्था की कांति से युक्त हों या सोने के हार, पान एवं पुष्पसज्जा से सज्जित हुई हों तब भी वे जब तक सुन्दर वस्त्र धारण नहीं करतीं तब तक अपने प्रिय के प्रेम को नहीं पाती हैं, जिसके द्वारा (वस्त्र) यह समस्त पृथ्वी तल शोभायमान है।''

इस पद्यांश के माध्यम से रेशमी वस्त्रों को नारी के चातुर्य और प्रिय के लिए आकर्षण की शर्त के साथ इस प्रकार जोड़ दिया गया कि उसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस तरह विज्ञापन कला का उद्भव इस शिलालेख के साथ होना निस्संदेह माना जा सकता है। आधुनिक विज्ञापन कला के जितने प्रमुख तत्व हैं, उनकी पूर्ति इस संदेश में होती है। एक, जन सामान्य के एकत्र होने और सतत आवागमन का सर्वसुलभ स्थल तब मन्दिर ही थे। दो, सूर्य की उपासना और राजा की अभ्यर्थना के बीच विज्ञापन संदेश का अंकित होना उसके लक्ष्य तक सम्प्रेषण को सुनिश्चित करता था। तीन, पद्यांश को पढ़ने वाला 'प्रिय' हो अथवा 'प्रिया' उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहते होंगे। विज्ञापन की सफलता की यही कसौटी है।

सम्प्रेषण के विविध रूप

पौराणिक आख्यानों के देवर्षि नारद हमारी सृष्टि के आदि पत्रकार ठहरते हैं, जिन्होंने लोक मंगल की कामना से सूचना-संदेशों के सम्प्रेषण का कर्म पहले पहल निभाया था। यहाँ लोकमंगल की भावना महत्वपूर्ण तत्व है। आधुनिक काल में दुनिया भर के रेडियो और टेलीविजन दृश्य-श्रव्य संचार माध्यमों के रूप में आँखों देखा हाल दिखा-सुनाकर कितनी ही पीठ थपथपा लें, परन्तु उन्हें अपनी जड़ें महाभारत के संजय में तलाशनी होंगी। यह वही संजय हैं, जिन्होंने दूर हस्तिनापुर में बैठकर कुरुक्षेत्र के मैदान में लड़े जा रहे महाभारत का आँखों देखा हाल नेत्रहीन कुरुराज धृतराष्ट्र को सुनाया था। वृत्तांत प्रस्तुत करने में संजय ने न कौरव पक्ष और न पांडव पक्ष को बख्शा, श्रीकृष्ण को भी नहीं। जो हुआ, जैसा हुआ, जस का तस सुनाता गया। संवाददाता का आदर्श भी यही है।

लोककलाओं का विविध रूप, मुनादी, सौदागरों के काफिले, तीर्थयात्रियों के समूह, मेले, घुमन्तू जनजातियाँ, यह सब अपने दैनन्दिन कार्य व्यवहार के साथ एक स्थल से दूसरे स्थल तक सूचना-संचार का माध्यम बनते रहे हैं। किसी राष्ट्र-राज्य में राजा और प्रजा (शासन और नागरिकों) का परस्पर सम्बन्ध कैसा है, शिक्षा की, कला-साहित्य-संस्कृति की, व्यापार-वाणिज्य-व्यवसाय की, कृषि की, उद्योग की, सेना की, धर्म की, धार्मिकता की और सबसे अहम तत्व यह कि अपनी मिट्टी से जुड़ाव की परिस्थितियाँ-परिवेश कैसा है, यह सब जानने-समझने-पहचानने की आकांक्षा युगों-युगों से रहती चली आई है।

भारत में संचार तंत्र का व्यवस्थित सिलसिला मध्यकाल (मुस्लिम शासकों) में मिलता है। उन दिनों में वाकिया नवीस नियुक्त किये जाने लगे थे, जो अपने इलाके की पूरी खबरें बादशाह तक पहुँचाया करते थे। मुहम्मद तुगलक (सन 1325-51) और शेरशाह सूरी (सन 1540-45) के समय डाक व्यवस्था इतनी चुस्त हो गई थी कि राजधानी में बैठे-बैठे बादशाह को पूरी सूचनाएँ मिल जाती थीं। उस समय सूचना-संचार का जो रचनाक्रम था, उसके अनुसार वाकिया

---

1. दशपुर, चन्द्रभूषण त्रिवेदी, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृष्ठ 37

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीस (स्थानीय स्तर का संवाददाता), खुफिया नवीस, सवानह नवीस (जीवनी लेखक) और हरकारा (संदेश वाहक) नियुक्त होते थे। औरंगजेब के शासन काल में भारत प्रवास पर आये फ्रांसीसी डा. फ्रांस्वा बर्नियर ने अपने यात्रा वृत्तान्त में वाकिया नवीसों का वर्णन किया है।

कागज का इतिहास

कागज बनाने की शुरूआत चीन और मिस्र में हुई। मिस्र में एक विशेष पौधे के पत्तों से कागज का काम लिया जाता था, जिस तरह भारत में भोज पत्र के उपयोग का विवरण मिलता है। मिस्र में बहुतायत से पाये जाने वाले इस पौधे का ऊपरी छिलका उतार लिया जाता था और डण्डी लम्ब रूप में बीच से चीर दी जाती थी। इसके पश्चात वे डण्डियाँ हाथों से बँटी जातीं, जल में भिगोई जातीं, फिर दबा कर सुखाने के पश्चात चिकनी की जातीं। दसवीं शताब्दी तक यूरोप में अधिकांश कागज मिस्र देश से जाता था। अरबों ने यूरोप में कागज बनाने की विद्या का प्रचार किया। ग्यारहवीं शताब्दी के लगभग स्पेन में कपास के तन्तुओं से कागज बनाना आरम्भ हुआ। इसका अनुसरण जर्मनी, फ्रांस और इटली ने किया। सन 1415 तक कागज हाथ से बनाया जाता रहा। पन्द्रहवीं शताब्दी में जॉन टेट ने इंग्लैण्ड में कागज की पहली मिल लगाई। सन 1685 में स्काटलैंड में कागज का कारखाना स्थापित हुआ। इस समय तक कागज सूत या सन के रेशों से बनता रहा।

अठारहवीं शताब्दी के लगभग अन्यान्य वनस्पतियों के तन्तुओं से कागज बनाने का परीक्षण शुरू हुआ। फलत: घास, तिनके और लकड़ी के गूदे से कागज बनाने का तरीका खोज निकाला गया। पहले पहल पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत में फ्रांस में मशीन का बना कागज तैयार हुआ। इस प्रक्रिया में गूदा चलनियों में छोड़ने पर जब पानी निकल जाता था, तब उसे ऊनी कपड़ों से मढ़े हुए बेलनों से दाब कर रखते थे और फिर गरम बेलन चलाते थे। लोहे के बेलनों से कागज को चिकना करते थे, फिर मशीन पर गाँठ बाँधी जाती थी।

भारत में कागज बनाने का कार्य मुसलमान बादशाहों के काल में प्रारम्भ हुआ। अकबर के जमाने में पल्प से कागज बनने लगा था। तथापि कागज दीर्घकाल तक विदेशों से आता रहा। प्रथम विश्व युद्ध के समय विदेशों से कागज का आयात नहीं हो सका, तब देशी उत्पादकों को कागज के उत्पादन में अपनी स्थिति सुधारने का अवसर मिला।

मुद्रण कला और योहान गुटेनबर्ग

ईसा की दूसरी सहस्राब्दी के ऐसे एक हजार महापुरुषों की सूची अमेरिका के शोधकर्ताओं ने तैयार की, जिन्होंने वैश्विक परिदृश्य को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। इस सूची में सबसे ऊपर जर्मनी के योहान गुटेनबर्ग का नाम अंकित किया गया है, जिन्होंने छापाखाने और चल टाइप की ईजाद की। इस सूची में परम प्रतापी सम्राटों, सेनापतियों, चिन्तक-दार्शनिकों, राजनेताओं, कलाकारों, साहित्यकारों के भी नाम हैं। लेकिन सर्वोच्च प्रतिष्ठा गुटेनबर्ग को मिली। यद्यपि योहान गुटेनबर्ग की प्रामाणिक जन्मतिथि उपलब्ध नहीं है, लेकिन जर्मन इतिहासकार उनका जन्म सन 1400 के आसपास मानते हैं। सन 1447 में गुटेनबर्ग[1] ने हैण्डप्रेस मशीन और धातु के चल टाइप बनाने में सफलता प्राप्त की। यह यूरोप में पुनर्जागरण और सुधारों का युग था। 15वीं शताब्दी तक विश्वविद्यालय कायम होने लगे थे। पुस्तकों की आवश्यकता और माँग बढ़ रही थी। एक और जरूरत महसूस की जा रही थी, वह थी चित्रकारों के लोकप्रिय चित्रों की

1. जर्मन समाचार, मई-जून 2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुकृतियाँ तैयार करना, जिनकी अच्छी माँग थी। उस समय तक चीन-जापान-कोरिया का छापा कला से परिचय हो चुका था। चीन में मिट्टी या लकड़ी के ठप्पे बना कर कागज और कपड़े पर अंकन करने की कला का अस्तित्व गुटेनबर्ग के आविष्कार से कोई आठ सौ साल पहले प्रमाणित होता है। 'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' के अनुसार छठी शताब्दी में चीन में मुद्रण कला का प्रादुर्भाव हुआ। तब मिट्टी की लेई को समतल कर अक्षर उकेरे जाते थे। लेकिन ऐसे अक्षर दुबारा काम में नहीं आते थे। चीन के पी-शेंग ने सन 1041 में चीनी मिट्टी के अक्षर तैयार कर लिए थे। उधर यूरोप में भी दो पटियों के बीच उकेरे हुए अक्षरों या चित्रांकन को दबा कर अक्स उतार लिए जाते थे। लेकिन उक्त प्रक्रिया में न तो प्रतिकृतियाँ बनाई जा सकती थीं, न गुणवत्ता होती थी। योहान गुटेनबर्ग के आविष्कार ने मुद्रण कला में युगान्तरकारी क्रान्ति ला दी। जर्मनी के माइन्त्स नगर में सन 1456 में गुटेनबर्ग ने दुनिया का जो पहला छापाखाना स्थापित किया, उस पर पहले पहल 42 और 36 पंक्तियों वाली बाइबिल के प्रारम्भिक अंशों की 180 प्रतियाँ छापी गईं। इनमें से 2 प्रतियाँ माइन्त्स के गुटेनबर्ग संग्रहालय में आज भी सुरक्षित हैं।

माइन्त्स नगर तब मुद्रण कला का केन्द्र बन चुका था। शब्द की सत्ता के अपरिमित विस्तार तथा ज्ञान और विचारों के जन-जन तक सम्प्रेषण का मार्ग सुलभ करने वाला गुटेनबर्ग इसी कृतित्व के कारण महानों में भी महान माना गया। गुटेनबर्ग ने मुद्रण के लिए उपयुक्त स्याही बनाई। सीसा और टिन के सम्मिश्रण से धातु के चल टाइप बनाने की शुरूआत की। हैण्डप्रेस के कारण मुद्रण प्रक्रिया में गति आई और स्वरूप भी निखरा। लेकिन इस आविष्कार के आर्थिक बोझ ने गुटेनबर्ग को कर्ज के दलदल में फँसा दिया। उसका सहयोगी फस्ट भी उससे अलग हो गया। सन 1462 में माइन्त्स नगर युद्ध के शिकंजे में फँसा और दुश्मनों के कब्जे में चला गया। लेकिन इसी युद्ध ने मुद्रण कला के पूरे जर्मनी में फैलने का पथ प्रशस्त किया..... जहाँ-जहाँ इस कला के जानकार माइन्त्स नगर से भाग कर बसे। अगले कोई एक सौ साल के अरसे में पूरा यूरोप मुद्रण कला से परिचित हो चुका था। केण्ट निवासी विलियम कैक्सटन इंग्लैण्ड का पहला मुद्रक हुआ, जो कोलोन से मुद्रण कला सीख कर आया था। उसने सन 1475 में ब्रिटेन में पहला छापाखाना स्थापित किया।

पहली ऊर्जा चलित प्रिण्टिंग मशीन (जो वाष्प से चलती थी) सन 1800 में जर्मनी के फ्रेडरिक कोनिंग ने बनाई। हस्तचलित मशीनों से कम सँख्या में प्रतियों के मुद्रण की क्षमता से उबरने में नई मशीन से बड़ी मदद मिली। छपाई की गति बढ़ी तो प्रकाशन उद्योग भी फला-फूला। सन 1836 में इंग्लैंड में पहला रोटरी सिलिण्डर प्रेस लगाया गया। लेकिन तब तक टाइप ढलाई का काम गुटेनबर्ग पद्धति से ही हो रहा था। सन 1836 में न्यूयार्क में डेविड ब्रूस ने टाइप ढालने की मशीन बनाई। इस तरह टाइप फाउण्ड्री का सिलसिला शुरू हुआ, जो मुद्रणालयों के काम को गति और विस्तार देने में सफल रहा। सन 1884 में एक-एक अक्षर अलग-अलग ढालने की प्रक्रिया से भी मुक्ति मिली जब अमेरिका में ओटमर ने लाइनोटाइप मशीन बनाई जिससे भिन्न-भिन्न माप में पूरी की पूरी पंक्ति ढल कर निकलने लगी।

बीसवीं शताब्दी में मुद्रण कला और उद्योग का आशातीत विकास हुआ। सन 1960 के दशक में भारत में भी फोटो कम्पोजिंग और आफसेट मुद्रण पद्धति को अपना लिया गया था। पिछले तीन दशकों में ट्रेडिल मशीनों और टाइपों का प्रयोग लगभग समाप्त हो गया है। कम्प्युटरों ने कम्पोजिंग, ग्राफिक्स, पृष्ठ-सज्जा का स्वरूप बदल दिया है। छपाई की आफसेट मशीनें गति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षमता और गुणवत्ता के नए-नए मानक रच रही हैं। सूचना प्रौद्योगिकी की क्रान्ति ने मुद्रण कला में चार चांद लगाए हैं। इन्टरनेट ज्ञान का अकूत खजाना बन गया है।

भारत में मुद्रण कला

भारत में मुद्रण कला का आरम्भ सन 1556 में पुर्तगाली पादरियों ने गोवा में किया। छह सितम्बर 1556 को एक पुर्तगाली जहाज गोवा पहुँचा। जहाज पर प्रिंटिंग प्रेस भी था। इस प्रेस का मालिक जोआओ दे बुस्तामेंते था। उसके साथ एक भारतीय भी था, जिसने पुर्तगाल की राजधानी लिसबन में प्रिंटिंग का काम सीखा था। सन 1560 तक बुस्तामेंते ने गोवा में पाँच किताबें छापीं। इनमें से पहली किताब अक्टूबर सन 1556 में छपी। इसमें ज्यादातर धार्मिक चित्र थे और यह स्थानीय धार्मिक ईसाइयों के पढ़ने के लिए थी। गोवा में छपी शुरूआती किताबें पुर्तगाली भाषा में थीं। ऐसी ही सन 1563 में छपी एक किताब 'कोलो कुआस डास सिम्प्लेस ई ड्रोगाज़' की एक प्रति ब्रिटिश लायब्रेरी लंदन में सुरक्षित है। सन 1575 में गोवा में सम्पन्न पादरियों के सम्मेलन में निर्णय लिया गया कि ईसाई धर्म के प्रचार के लिए ईसाई साहित्य पुर्तगाली भाषा में ही नहीं बल्कि स्थानीय भाषाओं में भी प्रचारित किया जाए। इस उद्देश्य से सन 1577 में गोवा में तमिल टाइप ढाले गए। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने व्यापार और राजकाज के हित में मुद्रण कला के विकास और उपयोग को प्रोत्साहित किया। चार्ल्स बिल्किन्स द्वारा ढाले गए बंगला अक्षरों के टाइप से सन 1778 में बंगला-अँगरेजी व्याकरण की पुस्तक छापी गई। इन्हीं चार्ल्स बिल्किन्स ने देवनागरी अक्षरों के टाइप पहले पहल तैयार किए। इस तरह टाइपों के भारतीयकरण का श्रेय चार्ल्स बिल्किन्स को जाता है। सन 1812 में कोलकाता के निकट सेरामपुर मुद्रण केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। वहाँ ईसाई मिशनरी विलियम कैरे तथा उसके भारतीय सहयोगी पंचानन कर्मकार ने टाइप फाउण्ड्री कायम की जहाँ से भारतीय भाषाओं के टाइप ढालने का काम चल पड़ा। सन 1805 में पुणे में टाइप ढालने का काम श्रीमंत मिरजकर ने किया। सन 1836 में अमेरिकी मिशन ने मुम्बई में टाइप फाउण्ड्री खोली और गणपति कृष्णाजी ने सन 1843 में नागरी और गुजराती टाइप फाउण्ड्री स्थापित की। भारत में टाइप ढालने के काम में गुणवत्ता का शुमार हुआ सन 1864 में, जब मुम्बई में जावजी दादाजी ने 'निर्णय सागर टाइप फाउण्ड्री' की स्थापना की। उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में मुद्रण कला का दारोमदार लिथो (शिला मुद्रण) पद्धति और हैण्डप्रेस पर ही था। बीसवीं सदी में मुद्रण कला ने विकास के नए क्षितिज छुए। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सन 1674 में मुम्बई में एक प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की। दूसरा प्रेस सन 1772 में चेन्नै में कायम किया गया। कोलकाता में सन 1779 में कम्पनी के प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना हुई।

माइल्ड प्रिंटिंग मशीनें तथा नई टाइप फ़ाउण्ड्री के सन्दर्भ में डा. शंकर ए. बिसे का योगदान महत्वपूर्ण है जिन्होंने सन 1905 में छापे के टाइप ढालने की उन्नत मशीन का आविष्कार किया। पहले की मशीनें प्रति मिनिट एक सौ पचास सिंगल टाइप ढाल पाती थीं। बिसे ने सन 1908 में एक साथ 32 सिंगल टाइप ढाल सकने और प्रति मिनिट 1200 सिंगल टाइप ढालने की क्षमता वाली टाइप फाउण्ड्री का निर्माण किया।

टाइप फाउण्ड्री के मालिक आर.पी.बैनरमेन के आग्रह पर बिसे ने सन् 1914 में एक ऐसी फाउण्ड्री मशीन का आविष्कार किया जिससे फाउण्ड्री ही नहीं, मुद्रणालय स्वयं भी अपनी आवश्यकता के अनुसार टाइप की ढलाई करने लगे। इसके बाद बिसे अमेरिका गए और सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1917 में युनिवर्सल कास्टर कार्पोरेशन के लिए एक नई मशीन का निर्माण किया। इस कास्टर मशीन से पेचीदगियाँ और कठिनाइयाँ एकदम दूर हो गई थीं। इसके बाद बिसे ने सन 1920 में माडल टाइप कास्टिंग कार्पोरेशन की स्थापना की तथा लेड और रूल ढालने की मशीन भी बनाई।

देवनागरी लाइनोटाइप मशीन का आविष्कार हरि जी. गोविल ने किया, जिन्होंने यह मशीन न्यूयार्क की मरगनथैलर लाइनोटाइप कम्पनी की सहायता से तैयार की थी। सन 1933 की 'सरस्वती' ने इस आविष्कार की सराहना करते हुए लिखा है- ''देवनागरी लाइनो टाइप मशीन की ईजाद हरि जी. गोविल ने की है। अभी तक हिन्दी की छपाई बहुत धीरे-धीरे होती है, क्योंकि कम्पोजिंग हाथ से होता है। परन्तु अब इस मशीन द्वारा बारह कम्पोजीटरों का काम अकेली एक मशीन करेगी। इस मशीन में बटन दबाते ही टाइप अपने आप ढल कर ठीक जगह पर बैठते जाएंगे।''

दुनिया का प्रथम समाचारपत्र

सन 618 में चीन में दुनिया के प्रथम समाचार पत्र '*ऐकिंग गजट*' का प्रकाशन होने के साक्ष्य मिलते हैं। 'पेकिंग गजट' के आरम्भिक स्वरूप में राजदरबार सम्बन्धी समाचार कुछ लोग कागज पर हाथ से लिख लेते थे और उसे तख्ते पर चिपकाते थे। फिर उसे पेकिंग शहर में गली-गली दिखाते फिरते थे। सर्वसाधारण से जो कुछ उन्हें मिल जाता था, उसी पर वे बसर करते थे। धीरे-धीरे मुख्य मुख्य समाचार छापकर बाँटे जाने लगे। इस तरह 'पेकिंग गजट' का जन्म हुआ। 'पेकिंग गजट' का स्थानीय नाम 'किन बो' है अर्थात राजधानी की खबरें देने वाला। इसका उद्देश्य चीन सरकार के राज्य प्रबंध का सारा हाल प्रजा को ठीक समय पर सुनाना था। भिन्न भिन्न प्रान्तों की रिपोर्टें, सरकारी आज्ञा पत्र, अफसरों की तरक्की, परीक्षाओं के नतीजे इत्यादि इसमें प्रकाशित होते थे।[1]

एक अन्य विवरण इस प्रकार मिलता है- ''सबसे पुराना अखबार अब तक सब लोग जानते थे कि भूमण्डल में चीनं देश का 'किन बो' (पेकिंग गजट) अखबार छपा हुआ मिलता है। अब मालूम हुआ कि 'किन बो' नहीं 'चिंग पाओ' संसार का सबसे पुराना समाचार पत्र है। चीन की राजधानी पेकिंग से प्रकाशित होने वाला 'चिंग पाओ' सरकारी अखबार है। 'किन बो' को छपते हुए एक हजार वर्ष ही बीते हैं, जबकि 'चिंग पाओ' बराबर 1400 वर्षों से छप रहा है। इसमें सब बादशाही खबरें होती हैं। बहरहाल यह तय है कि समाचार पत्रों और पत्रकारिता का जन्म सुदूर पूर्व की धरती चीन में ही हुआ।''[2]

यूरोप में समाचार पत्रों की शुरूआत दीवार पोस्टर से हुई। सबसे पहले सन 1566 में इटली के शहर वेनिस में पोस्टर लगे। उन्हें 'नोटिज स्क्रिट' (लिखित नोटिस) कहा जाता था और यह सार्वजनिक स्थलों पर लगाए जाते थे। इनका प्रतीक मूल्य 'गजेटा' नामक छोटा सिक्का था जो नोटिस पढ़ने वालों से वसूल किया जाता था। इसी से समाचार पत्रों के नाम के साथ 'गजट' की संज्ञा जुड़ी जो आज तक जारी है।

सन 1513 में समाचार पुस्तिका (न्यूज़ बुक) के प्रकाशन का चलन शुरू हुआ। अमूमन इनमें किसी एक महत्वपूर्ण घटना का विवरण होता था। सन 1557 में प्रकाशित ऐसी ही एक

1. सरस्वती, सितम्बर 1914, पृष्ठ 526
2. ग्वालियर गजट, 1898

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूज़ बुक का नाम *'वेलिएण्ट एक्सप्लाएट्स ऑफ सर फ्रांसिस ड्रेक'* था। इसी तरह की एक दूसरी न्यूज बुक में इंग्लैंड और स्कॉटलैण्ड के बीच हुए युद्ध का विवरण है जिसमें स्कॉटलैण्ड के राजा को मौत के घाट उतार दिया गया था। 16वीं शताब्दी में न्यूज़ बुक्स बहुत लोकप्रिय हो गई थीं। हालैण्ड में सन 1526 में पहले समाचार पत्र के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है। इंग्लैण्ड में सन 1558 में 'इंग्लिश मर्करी' नाम का प्रथम समाचार पत्र निकला।

पहला मुद्रित अखबार

दुनिया का पहला मुद्रित अखबार *'रिलेशन'* जुलाई 1605 में फ्रांस के स्ट्रेसबर्ग से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक जान कैरोलस थे। 'रिलेशन' पहले हस्तलिखित पत्र के रूप में निकाला गया। परन्तु उसकी बहुत कम प्रतिलिपियाँ हो पाती थीं और महँगा भी पड़ता था। तब कैरोलस ने प्रिंटिंग प्रेस खरीदा और 'रिलेशन' का मुद्रण किया जाने लगा। अक्टूबर 1605 में जान कैरोलस ने स्ट्रेसबर्ग नगर परिषद में याचिका प्रस्तुत कर माँग की कि अन्य मुद्रकों द्वारा 'रिलेशन' के पुनर्मुद्रण पर प्रतिबंध लगाया जाए। इस तरह प्रतिलिप्याधिकार (कापीराइट) की अवधारणा को जन्म देने का श्रेय भी 'रिलेशन' के सम्पादक को जाता है।[1]

सन 1621 में लंदन में एक पन्ने का अखबार प्रकाश में आया जिसे *'कोरेण्टो'* नाम दिया गया। तथापि इन पन्नों के प्रकाशन का कोई नियमित सिलसिला नहीं बन पाया। सन 1628 में *'वेस्ट मिन्स्टर क्लर्क'* में पहली स्थानीय खबर संसदीय कार्यवाही की छपी। इसी प्रक्रिया का विकसित स्वरूप *'यूरनल्स'* के रूप में सामने आया जो स्थानीय घटनाचक्र की दैनन्दिन रिपोर्ट के रूप में छपने लगा। सन 1655 में *'ऑक्सफोर्ड गजट'* के साथ पत्रकारिता के नए युग का सूत्रपात हुआ। इसका सम्पादन मडिमैन करते थे। यह पहला आवधिक पत्र था। इसका प्रकाशन सप्ताह में दो बार होता था। 24 अंकों के प्रकाशन के पश्चात यह *'लंदन गजट'* बन गया, जो बीसवीं शताब्दी तक प्रकाशित होता रहा।

अखबार दारुल खिलाफा मुअल्ला किला

मुगल सल्तनत के समय दरबार की ओर से अखबार जारी होने का प्रमाण मिलता है। मुगल बादशाह औरंगजेब के जमाने में महत्वपूर्ण फैसले, आदेश, बादशाह के दौरे और दिनचर्या आदि का विवरण अखबार में प्रकाशित किया जाता था। सन 1660 के ऐसे अखबार की कुछ प्रतियाँ रायल एशियाटिक सोसायटी लंदन में सुरक्षित हैं।

साहित्यिक पत्रकारिता का श्रीगणेश फ्रांस में हुआ। सन 1665 में फ्रांस की संसद के सदस्य डेनिस डि सैलो ने राजधानी पेरिस से *'जर्नल डिस सेवण्ट्स'* नामक साहित्यिक और समालोचक पत्र निकाला। आइजक डिसरेली का मत है कि यही संसार का सबसे पहला साहित्य और समालोचना का पत्र है। सैलो ने पहले सम्पादक की जगह पर अपना नहीं, अपने एक भृत्य का नाम दिया था, किन्तु जब उनका पत्र लोकप्रिय हुआ तब सैलो यश के लोभ का संवरण नहीं कर सके और सम्पादक की जगह पर उनका नाम जाने लगा। इस पत्र की देखा देखी अन्य साहित्यिक पत्र निकलने लगे।[2]

---

1. 'रिलेशन' की प्रतियाँ स्ट्रेसबर्ग के अभिलेखागार में उपलब्ध हैं। इस जानकारी के पहले तक मुद्रित अखबार का प्रकाशनारम्भ सन 1609 में माना जाता था।
2. माधुरी, जुलाई 1922, पृष्ठ 21

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1684 में बेल ने *'नावेल्स डी ला रिपब्लिकन डेस लेट्रेस'* का प्रकाशन किया।

11 मार्च 1702 को इंग्लैण्ड में पहला दैनिक पत्र निकला। इसका नाम *'डेली करंट'* था। इसका प्रकाशन ई. मेलेट ने किया। यह कुछ दिन ही प्रकाशित हुआ। पश्चात सेमुएल बकाले ने इसे एक अच्छे समाचारपत्र के रूप में पुनर्जीवित किया।

इंग्लैण्ड में डेनियल डीफो ने *'रिव्यू'* नामक पत्रिका निकालकर साहित्यिक पत्रकारिता की शुरूआत की। 'रिव्यू' का अनुसरण कर रिचर्ड स्टील ने *'टैटलर'* नामक पत्रिका निकाली। *'टैटलर'* का ही उन्नत संस्करण सुप्रसिद्ध साहित्यिक मासिक पत्र *'स्पेक्टेटर'* था। विख्यात लेखक एडीसन और उनके मित्र स्टील ने मिल कर मार्च 1711 से इसका प्रकाशन किया था। सन 1749 में इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध साहित्यिक और समालोचक पत्र *'मंथली रिव्यू'* का जन्म हुआ।

29 जनवरी 1780 को ईस्ट इंडिया कम्पनी के मुलाजिम जेम्स आगस्टस हिकी ने कोलकाता से भारत के प्रथम समाचारपत्र अँगरेजी साप्ताहिक *'बंगाल गजट आर केलकटा जनरल एडवरटाइजर'* (हिकीज गजट) का प्रकाशन किया। भारतीय भाषा का पहला पत्र *'बंगाल गजट'* 15 मई 1818 को कोलकाता से निकला। इस बंगला पत्र के सम्पादक हारुचंद्र राय और प्रकाशक गंगाकिशोर भट्टाचार्य थे। उर्दू का पहला अखबार *'जाम-ए-जहाँनुमा'* 22 मार्च 1822 को मुंशी सदासुख मिर्जापुरी के सम्पादन में कोलकाता से प्रकाशित हुआ। एक जुलाई 1822 को मुम्बई से गुजराती पत्र *'मुम्बई समाचार'* निकला। वर्तमान में यह एशिया का सबसे पुराना जीवित समाचारपत्र है। हिन्दी का पहला पत्र साप्ताहिक *'उदन्त मार्त्तण्ड'* 30 मई 1826 को कोलकाता से युगल किशोर शुक्ल ने प्रकाशित किया। इस तरह, भारत में पत्रकारिता की गंगोत्री होने का गौरव कोलकाता को प्राप्त है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में पत्रकारिता का प्रादुर्भाव

सन 1757 में प्लासी का युद्ध लार्ड क्लाइव की धूर्तता और मीर जाफर की गद्दारी के सहारे फिरंगियों ने जीत लिया। शताब्दी के अंत तक अँगरेज औद्योगिक बंगाल को कृषक बंगाल में तथा समृद्धि को गरीबी में बदलने में कामयाब हो गए। अँगरेजों की इस नीति को एक इतिहासज्ञ ने इस प्रकार परिभाषित किया है- ''प्रथमत: यह निषेधात्मक है, पश्चात आक्रामक, फिर दबावकारी और अंत में दमनकारी।'' 18वीं शताब्दी के अन्त तक बंगाल के उद्योगों को भारी धक्का लग चुका था। प्लासी की लड़ाई के समय तक अँगरेजों की व्यापारिक नीति यह थी कि वे भारतीय उद्योगों का उत्पादन कम कीमत में खरीद कर यूरोप में ऊँची कीमत पर बेचते थे। इंगलैण्ड के दीर्घकालीन हित में यह नहीं था। जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत से इंगलैण्ड में रेशम और अन्य वस्तुओं का आयात शुरू किया तब इंगलैण्ड के सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्रों के निर्माताओं ने कड़ी स्पर्धा महसूस की और एक प्रतिरोधी कानून बनाने के लिए सरकार को विवश कर दिया। इस कानून के अनुसार ''29 सितम्बर 1701 और इसके बाद चीन, पर्सिया और ईस्ट इण्डिया के उद्योगों का बना हुआ जो माल इंगलैण्ड में आयात किया जाएगा, उसका उपयोग नहीं किया जाएगा और इस तारीख के बाद आयात किया गया ऐसा माल गोदामों में ही रखा रहेगा या लौटा दिया जाएगा।''

ईस्ट इण्डिया कम्पनी जिसका मूल उद्देश्य व्यापार-वाणिज्य था, अन्तत: पोर्तगीज, डच और फ्रेंच प्रतिस्पर्धियों से संघर्ष में विजेता बन कर उभरी और प्लासी के युद्ध में विजय के बाद उसने भारत में अपना साम्राज्य खड़ा कर लिया। बादशाह शाह आलम से सन 1765 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मंजूर होने के बाद वैधानिक स्वरूप भी प्राप्त हो गया। सन 1835 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की वाणिज्यिक गतिविधियाँ एक किनारे हो गई और वह सत्ता केंद्र के रूप में स्थापित हो गई।

भारत में पत्रकारिता का प्रादुर्भाव इसी पृष्ठभूमि में हुआ। प्रारम्भिक समाचार पत्रों का प्रकाशन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के असंतुष्ट कर्मचारियों के द्वारा किया गया। समाचार पत्रों के प्रकाशन की ओर वे इसलिए प्रवृत्त हुए क्योंकि वे अपनी घुटन को अभिव्यक्ति देना चाहते थे। कम्पनी के अधिकारी यहाँ न केवल व्यक्तिगत व्यापारिक गतिविधियों से धन संचय करते थे, वरन छोटे कर्मचारियों को दबाकर भी रखना चाहते थे ताकि उनकी अवांछनीय गतिविधियों पर पर्दा पड़ा रहे। इन प्रारम्भिक अँगरेज पत्रकारों को न केवल कम्पनी का कोप भाजन बनना पड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरन वे मानसिक क्लेश के भी शिकार हुए। इसके बाद भी उन्होंने उन बुराइयों का पर्दाफाश किया, जो कम्पनी के उच्च अधिकारियों में घर कर गई थीं। यह सही है कि प्रारम्भिक समाचार पत्रों ने व्यक्तिगत आक्षेपों तक का सहारा लिया, यद्यपि उन्हें ज्ञात था कि कम्पनी बलात स्वदेश रवाना कर देगी और उनकी रोजी रोटी छिन जाएगी। स्वदेश में उन्हें अहमियत नहीं मिलेगी। फिर भी उन लोगों ने हिम्मत के साथ घोटालों का पर्दाफाश किया। कम्पनी ने ऐसे समाचार पत्रों को दी गई डाक रियायत वापस ले ली, ताकि उनका प्रचार-प्रसार न हो और वितरक रखने में उन्हें आर्थिक बोझ उठाना पड़े।

पहले दौर से कम्पनी ने सबक सीखा। इसीलिए दूसरे दौर में कम्पनी के प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग से समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ। इस समय प्रेस सम्बन्धी कोई कानून नहीं थे, परन्तु प्रारम्भिक अनुभव ने इस भावना का बीजारोपण जरूर किया कि प्रेस के ऊपर कुछ बन्धन लगाना होगा। एक उल्लेखनीय बात यह है कि प्रारम्भिक समाचार पत्रों का आकार छोटा था और उनकी पृष्ठ सँख्या कम थी। कम्पनी के बड़े अधिकारियों को यह डर था कि कहीं भारत के ये समाचार पत्र, जिनमें कम्पनी के अधिकारियों की धाँधलियाँ छपती थीं, इंग्लैण्ड पहुँच गए तब वहाँ इन अधिकारियों के खिलाफ वातावरण बनेगा और उन्हें वापस भी बुलाया जा सकता है। यह भी एक कारण था कि कम्पनी के बड़े अधिकारियों ने कम्पनी के समाचार पत्र निकालने के लिए उत्सुक कर्मचारियों के प्रति अधिक सतर्कता और कड़ाई बरती।

मार्टिन वाकर ने कहा है, ''समाचार पत्र एक राष्ट्र की दैनन्दिन चर्या का इतिहास होता है।'' सचमुच बीते कल के अखबार के पृष्ठ हमें इतिहास के रू-ब-रू ला खड़ा करते हैं। भारत के वैविध्य की, उसके संघर्षो की, उत्थान की, पतन की, पुनर्जागरण की, स्वतंत्रता संग्राम की, विकास की ऐसी ही सजीव झाँकी प्रस्तुत करते हैं समय के साक्षी समाचार पत्र। माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल में इसे बखूबी अनुभव किया जा सकता है।

कोलकाता से सन 1768 में समाचारपत्र का प्रकाशन आरम्भ करने का प्रथम प्रयास विलियम बोल्ट्स ने किया था, जिसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। बोल्ट्स ने अखबार निकालने का इरादा जाहिर करते हुए जारी सूचना पत्र में लिखा- ''मेरे पास ऐसी बहुत सारी बातें हैं जो मुझे कहना है और जिनका सम्बन्ध हर व्यक्ति से है।'' इससे कम्पनी के अधिकारियों की भृकुटियाँ तन गईं और बोल्ट्स को बंगाल छोड़ने का हुक्म सुना दिया गया। उसे चेन्नै भेजा गया, फिर वहीं से यूरोप के लिए रवाना कर दिया गया।

बोल्ट्स ने अपनी पुस्तक- 'कन्सीडरेशन्स ऑन इण्डियन अफेयर्स-1772' में अँगरेजों की नीतियों की धज्जियाँ उड़ाई हैं। इसमें एक प्रमुख बिन्दु ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा यह अधिकार हस्तगत करने का भी था कि वे विरोध या असहमति को बर्दाश्त करने के बजाय ऐसे किसी अवांछनीय यूरोपीय को भारत से बलात् विदा कर दिया करते थे। इसके लिए वे कोई मुकदमा चलाना, यहाँ तक कि कारण बताना भी जरूरी नहीं समझते थे। कहना न होगा कि एक समाचार पत्र के प्रकाशन की मंशा जाहिर करने पर स्वयं विलियम बोल्ट्स को ऐसी मनमानी का शिकार होना पड़ा। विलियम बोल्ट्स पर कम्पनी ने यह आरोप लगाया कि वे कई बार कम्पनी के कार्यों के खिलाफ घृणा और अशांति पैदा करने का प्रयत्न कर चुके हैं, इस तरह उन्होंने कम्पनी की सुरक्षा का कर्त्तव्य नहीं निभाया है। अत: उन्हें निर्देशित किया जाता है कि वे स्वयं बंगाल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा छोड़ दें। जुलाई माह में जो जहाज चेन्नै जाए, उससे वे चेन्नै चले जायं और सितम्बर माह में वहाँ से यूरोप के लिए रवाना हों। निष्कर्ष यह निकलता है कि 18 अप्रैल 1768 के पहले बोल्ट्स ने समाचार पत्र के प्रकाशन की कोशिश अवश्य की थी लेकिन उस समय तक कोलकाता में कोई प्रिंटिंग प्रेस नहीं था, अत: बोल्ट्स का समाचार पत्र प्रकाशित नहीं हुआ।

1780

हिकीज गजट

29 जनवरी 1780 को जेम्स आगस्टस हिकी ने *'बंगाल गजट ऑर केलकटा जनरल एडवरटाइजर'* का प्रकाशन किया। *'हिकीज गजट'* के नाम से मशहूर इस समाचारपत्र के प्रवेशांक में हिकी ने स्वयं को आनरेबल कम्पनी का मुद्रक घोषित किया। हिकी के गजट की महारत ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मियों की निजी जिंदगी का भण्डाफोड़ करने में थी। यद्यपि हिकी अपने आपको कम्पनी के कर्मियों में प्रथम मुद्रक मानता था, तथापि कम्पनी उसे अधिक तवज्जो नहीं देती थी। चार पृष्ठ के इस अखबार में गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्ज सहित कम्पनी के अधिकारियों की निजी जिंदगी पर तीखे प्रहारों में ज्यादा स्थान खप जाता था। इसकी एक वजह शायद यह थी कि हिकी का साहित्य आदि से कोई सरोकार न था।

हिकी ने जब हेस्टिंग्ज की पत्नी और कुछ अन्य आला अफसरों के विरुद्ध व्यक्तिगत और तीखे प्रहार किये, तब उसे जी.पी.ओ. (जनरल पोस्ट ऑफिस) के द्वारा समाचारपत्र प्रेषण की सुविधा से वंचित कर दिया गया। लेकिन हिकी के प्रहार बढ़ते जा रहे थे, जिसने अन्तत: हिकी को हेस्टिंग्स के मुकाबले ला खड़ा किया। स्वीडिश मिशनरी जॉन जकारिया कीरनेन्डर ने हिकी के खिलाफ मुकदमा चला दिया, जिसमें हिकी को चार महीने की कैद और पाँच सौ रुपये जुर्माना का दण्ड दिया गया। जब तक वह जुर्माना अदा न करता तब तक उसे जेल में ही रहना था। इसके बावजूद हिकी ने रास्ता नहीं बदला और गवर्नर जनरल तथा मुख्य न्यायाधीश के खिलाफ तीखा लेखन जारी रखा। इस बीच यूरोपीय लोगों की अगुवाई में करीब चार सौ हथियारबंद लोगों की भीड़ ने हिकी के प्रेस पर धावा बोल दिया। हिकी से जमानत माँगी गई, जिसे वह दे न सका और उसे जेल भेज दिया गया। उस पर चले मुकदमे में एक आरोप में एक वर्ष की कैद और दो सौ रुपये जुर्माना की सजा हुई, वहीं दूसरे आरोप में मुख्य न्यायाधीश ने वारेन हेस्टिंग्स को पाँच हजार रुपया क्षतिपूर्ति के रूप में चुकाने का आदेश पारित किया।

आलोचकों के प्रति ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यवहार कितना निर्मम हुआ करता था इसका एक उदाहरण हिकी के प्रति कम्पनी का व्यवहार है। 16,800 सीट्स की छपाई का काम हिकी को मिला था जिसके लिए हिकी ने 35,092 रुपये का देयक प्रस्तुत किया, लेकिन उसे मात्र 6,711 रुपये का भुगतान स्वीकार करने के लिए विवश किया गया। नतीजा यह निकला कि छपाई का काम पूरा करने के कई साल बाद उसके देयक की सिर्फ पाँचवे हिस्से के बराबर धन राशि का भुगतान हो पाया।

'हिकीज गजट' के 29 जनवरी 1780 से 16 मार्च 1782 तक प्रकाशित होने की पुष्टि होती है, यद्यपि इसके सभी अंक उपलब्ध नहीं हैं। राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकाता के दुर्लभ ग्रंथ संग्रह में केवल 29 जनवरी 1780 और 5 जनवरी 1782 के अंक उपलब्ध हैं।

'हिकीज गजट' के प्रारम्भिक अंक संयत भाषा में लिखे गए थे। धीरे-धीरे वह कांडों का भांडाफोड़ करने लगा। विशेषकर तब जब सरकारी शह पर *'इण्डिया गजट'* 18 नवम्बर 1780

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

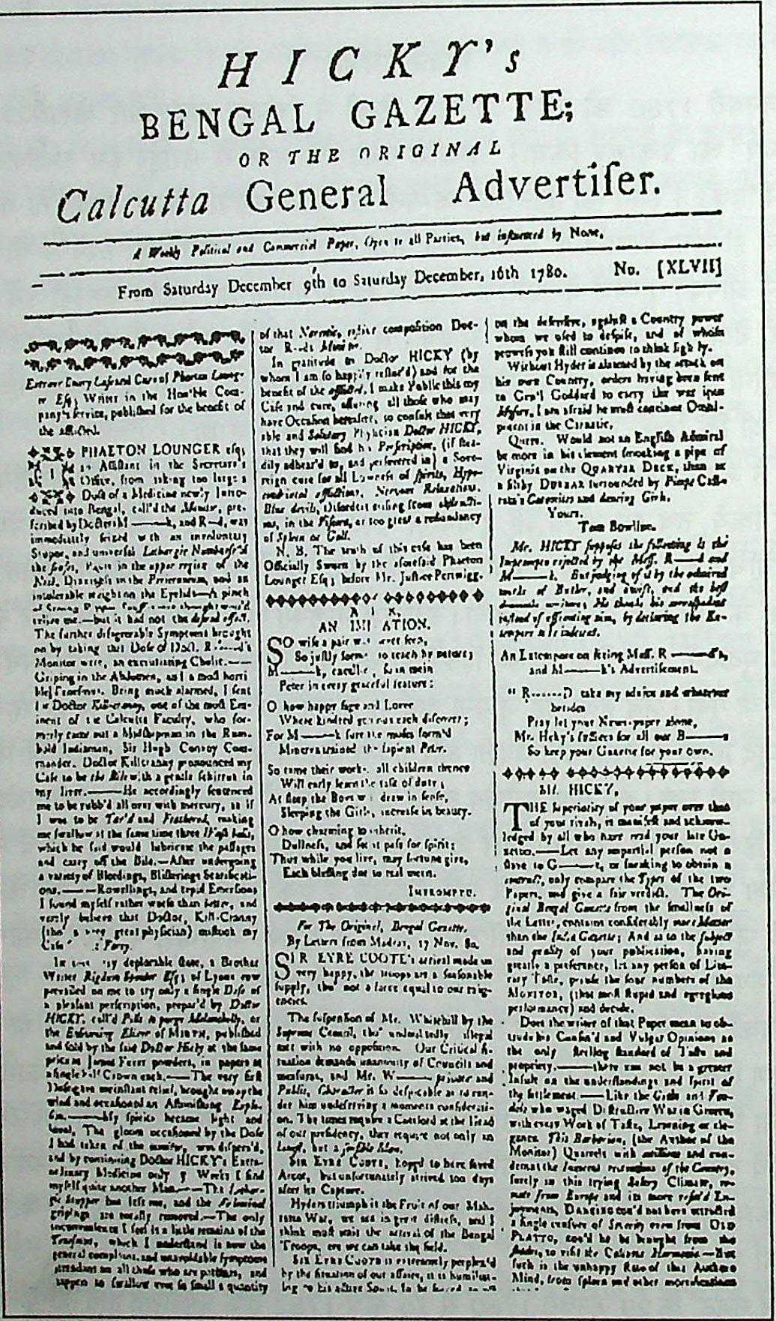

HICKY's BENGAL GAZETTE; OR THE ORIGINAL Calcutta General Advertiser.

A Weekly Political and Commercial Paper, Open to all Parties, but influenced by None.

From Saturday December 9th to Saturday December, 16th 1780. No. [XLVII]

Extraordinary Case and Cure of Phaeton Lounger Esq; Writer in the Hon'ble Company's Service, published for the benefit of the afflicted.

PHAETON LOUNGER esq; an Assistant in the Secretary's Office, from taking too large a Dose of a Medicine newly introduced into Bengal, call'd the *Monitor*, prescribed by Doctors M——k, and R——d, was immediately seized with an involuntary Stupor, and universal *Lethargic Numbness* of the *senses*, Pains in the upper region of the Head, Dizziness in the *Pericranium*, and an intolerable weight on the Eyelids—A pinch of Strong Pepper Snuff was thought would revive me.—but it had not the *desired effect*. The farther disagreeable Symptoms brought on by taking that Dose of Dod. R——d's Monitor were, an excruciating Cholic.——Griping in the Abdomen, and a most horrible Tenesmus. Being much alarmed, I sent for Doctor *Killcranny*, one of the most Eminent of the Calcutta Faculty, who formerly came out a Midshipman in the Rumbold Indiaman, Sir Hugh Conroy Commander. Doctor Killcranny pronounced my Case to be *the Bile* with a gentle Schirrus in my liver.——He accordingly sentenced me to be rubb'd all over with mercury, as if I was to be *Tar'd* and *Feathered*, making me swallow at the same time three *Hog's balls*, which he said would lubricate the passages and carry off the Bile.—After undergoing a variety of Bleedings, Blisterings Scarifications.——Rowellings, and tepid Emersions I found myself rather worse than better, and verily believe that Doctor, Kill-Cranny (tho' a very great physician) mistook my Case [illegible] *Fury*.

In [illegible] very deplorable State, a Brother Writer *Rigdum Funnidos Esq;* of Lyons now persuaded me to try only a single *Dose* of a pleasant perscription, prepar'd by *Doctor HICKY*, call'd *Pills to purge Melancholy*, or the *Exhilarating Elixir* of MIRTH, published and sold by the said *Doctor Hicky* at the same price as James Fever powders, in papers at a single half Crown each.——The very first Dose gave me instant relief, brought away the wind and occasioned an Astonishing *Explosion*.——My spirits became light and [illegible], The gloom occasioned by the Dose I had taken of the *monitor*, was dispers'd, and by continuing Doctor HICKY's Extraordinary Medicine only [illegible] Weeks I find myself quite another Man.——The *Lethargic Stupor* has left me, and the *Tormenting* gripings are totally removed.—The only inconvenience I feel is a little remains of the *Tenesmus*, which I understand is now the general complaint, and unavoidable symptoms attendant on all those who are patients, and happen to swallow ever so small a quantity of that *Narcotic*, costive composition Doctor R——d's *Monitor*.

In gratitude to Doctor HICKY (by whom I am so happily restor'd) and for the benefit of the *afflicted*, I make Public this my Case and cure, advising all those who may have Occasion hereafter, to consult that very able and *Salutary* Physician *Doctor HICKY*, that they will find his *Prescription*, (if steadily adhear'd to, and persevered in) a Sovereign cure for all Lowness of *spirits*, *Hypocondriacal affections*, *Nervous Relaxations*, *Blue devils*, Disorders arising from *obstructions*, in the *Viscera*, or too great a redundancy of *Spleen* or *Gall*.

N. B. The truth of this case has been Officially Sworn by the aforesaid Phaeton Lounger Esq; before Mr. Justice Periwigg.

AN IMITATION.

SO wise a pair was never seen,
So justly form'd to teach by nature;
M——k, carelle[illegible], [illegible]
Peter in every graceful feature:

O how happy sage and Lover
Where kindred genius each discover;
For M——k sure the muses form'd
Minerva trained the sapient *Peter*.

So tame their works, all children thence
Will early learn the task of duty;
At sleep the Boys will draw in sense,
Sleeping the Girls, increase in beauty.

O how charming to inherit,
Dullness, and for it pass for spirit;
Thus while you live, may fortune give,
Each blessing due to real merit.

IMPROMPTU.

For The Original, Bengal Gazette.

By Letters from Madras, 17 Nov. 80.

SIR EYRE COOTE's arrival made us very happy, the troops are a seasonable supply, tho' not a force equal to our exigencies.

The suspension of Mr. Whitehill by the *Supreme* Council, tho' undoubtedly illegal met with no opposition. Our Critical situation demands unanimity of Councils and measures, and Mr. W—— *private* and *Public*, *Character* is so despicable as to render him undeserving a moments consideration. The times require a Cortland at the Head of our presidency, they require not only an *Lawyer*, but a *sensible Man*.

SIR EYRE COOTE, hoped to have saved Arcot, but unfortunately arrived too days after its Capture.

Hyders triumph is the Fruit of our Mahratta War, we are in great distress, and I think must wait the arrival of the Bengal Troops, ere we can take the field.

SIR EYRE COOTE is extreemely perplex'd by the situation of our affairs, it is humiliating to his active Soul, to be forced to act on the defensive, against a Country power whom we used to despise, and of whose prowess you still continue to think lightly.

Without Hyder is alarmed by the attack on his own Country, orders having been sent to Gen'l Goddard to carry the war upon *Mysore*, I am afraid he must continue Omnipotent in the Carnatic.

Quere. Would not an English Admiral be more in his element smoaking a pipe of Virginia on the QUARTER DECK, than at a filthy DURBAR surrounded by Pimps Calcutta's *Catamites* and *dancing Girls*.

Yours.

Tom Bowline.

Mr. HICKY supposes the following is the Impromptu rejected by the Messrs. R——d and M——k. But judging of it by the admired works of Butler, and Swift, and the best domestic writers; He thinks his correspondent instead of offending him, by declaring the Extempore as it indeed.

An Extempore on seeing Mess. R——d's, and M——k's Advertisement.

"R……D take my advice and whatever besides
Pray let your News-paper alone,
Mr. Hicky's *Gazette* for all our B——s
So keep your Gazette for your own.

MR. HICKY,

THE superiority of your paper over that of your rivals, is manifest and acknowledged by all who have read your late Gazette.——Let any impartial person not a slave to G——t, or seeking to obtain a *contract*, only compare the *Types* of the two Papers, and give a fair verdict. The *Original Bengal Gazette* from the smallness of the Letter, contains considerably more *Matter* than the *India Gazette*; And as to the *subject* and quality of your publication, having greatly a preference, let any person of Literary Taste, peruse the four numbers of the MONITOR, (that most stupid and egregious performance) and decide.

Does the writer of that Paper mean to obtrude his Confin'd and Vulgar Opinions as the only Sterling standard of Taste and propriety.——there can not be a greater Insult on the understandings and spirit of the settlement ——Like the Goths and Vandals who waged Distructive War in Greece, with every Work of Taste, Learning or elegance. *This Barbarian*, (the Author of the Monitor) Quarrels with *ambitions* and condemns the *innocent recreations of the Country*, surely in this trying *sultry* Climate, remote *from Europe* and its more *refin'd* Enjoyments, DANCING cou'd not have attracted a single censure of *Severity* even from OLD PLATTO, cou'd he be brought from the *shades*, to visit the Calcutta *Harmonic*.—But such is the unhappy *Rage* of that Authors Mind, from spleen and other mortifications [illegible]

हिकीज गजट, 29 जनवरी 1780, भारत का पहला समाचारपत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रारम्भ हुआ। परन्तु यह अनुमान सही प्रतीत नहीं होता। हिकी के पूर्व इतिहास से यह कहा जा सकता है कि उसका दृष्टिकोण असामान्य था। हिकी वित्तीय अनियमितता के अपराध में दो वर्ष से अधिक समय तक जेल में रहा। इस दौरान उसे मुद्रण कला पर एक पुस्तक हाथ लग गई जिससे उसने प्रिंटिंग प्रेस की जानकारी प्राप्त की। तब तक कोलकाता में एक भी प्रिंटिंग प्रेस नहीं थी। जेल से छूटने के बाद बड़े उत्साह और कड़ी मेहनत से उसने टाइप सैट की कटाई की। परचों तथा विज्ञापनों की छपाई में उसका प्रयोग सफल और सस्ता सिद्ध हुआ। इससे वह उत्साहित भी हुआ। इस प्रकार थोड़ी थोड़ी रकम जमाकर उसने कुछ सौ रुपये जोड़े और इंग्लैंड से प्रिंटिंग का सामान बुलाया, और तभी उसके दिमाग में समाचार पत्र निकालने का विचार आया। जब सामान आ गया तब उसने एक साप्ताहिक समाचार पत्र के मुद्रण के लिए प्रस्ताव बुलाए। प्रस्ताव का उत्तर आशाजनक रहा और उसने *'बंगाल गजट'* प्रारम्भ कर दिया। समाचारों के प्रति कौतूहल उसने पैदा किया था।

'सम्पादक के नाम पत्र' स्तम्भ का जनक भी हिकी का 'बंगाल गजट' ही था। इससे यह भी ज्ञात होता है कि पत्र जनता की भावनाओं को अभिव्यक्ति देने का पक्षधर था। साथ ही जनता की समस्याओं और सोच को उजागर कर विचारों के आदान-प्रदान को महत्व देता था। यह एक प्रजातांत्रिक सोच थी। 25 मार्च 1780 के अंक में फिलन थ्रोप्स के नाम से सम्पादक के नाम एक पत्र छपा था, जिसमें कोलकाता के पोर्तगीज श्मशान घाट की गंदगी के बारे में शिकायत की गई थी।

हिकी की पत्रकारिता पर वारेन हैस्टिंग्स ने पहला प्रहार 14 नवम्बर 1780 को यह आदेश जारी करके किया-''आम सूचना दी जाती है कि एक साप्ताहिक समाचारपत्र जिसका नाम *'बंगाल गजट ऑर केलकटा जनरल एडवरटाइजर'* है, जो जे.ए.हिकी द्वारा मुद्रित किया जाता है, के अंकों में निजी जिन्दगी को कलंकित करने वाले अनेक अनुचित अंश पाये गए हैं, जो शान्ति भंग करने वाले हैं, अतएव इसे जी.पी.ओ. के माध्यम से प्रसारित होने की और अधिक अनुमति नहीं दी जा सकती।''

यह भारत में समाचार पत्र और शासन के बीच टकराव की प्रथम घटना थी। इस तरह हम देखते हैं कि भारत में जिन जेम्स आगस्टस हिकी को पत्रकारिता के प्रादुर्भाव का श्रेय जाता है, उन्हीं के खाते में व्यवस्था से टकराने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए प्रताड़ना के रूप में कीमत चुकाने का सम्मान भी दर्ज है।

'केलकटा गजट'[1] में जेम्स आगस्टस हिकी की मृत्यु के सम्बन्ध में एक छोटा-सा समाचार प्रकाशित हुआ। सन 1802 में एन्जेक्स नामक जहाज से हिकी भारत से रवाना हुए थे। उसी जहाज में उनके जीवन का अवसान हो गया। यद्यपि उनकी मृत्यु की सही तिथि आज तक पता नहीं चल सकी है। जिस जहाज पर हिकी भारत से रवाना हुए थे वह मार्च, 1803 में कोलकाता लौट आया था। इसके लगभग दो महीने बाद 'केलकटा गजट'[2] में एक विज्ञापन छपा जिसमें 'डिसीज्ड' (मृतक) के रूप में हिकी का उल्लेख किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने जेकसन को मृतक हिकी की सम्पत्ति की जवाबदारी सौंपी थी। जेकसन ने इस विज्ञापन में आम लोगों को सूचित किया था कि जो लोग हिकी के कर्जदार हैं वे उस ऋण को चुका दें। दूसरी ओर जिनका

1. केलकटा गजट, 16 दिसम्बर, 1802
2. वही , 12 मई, 1803

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

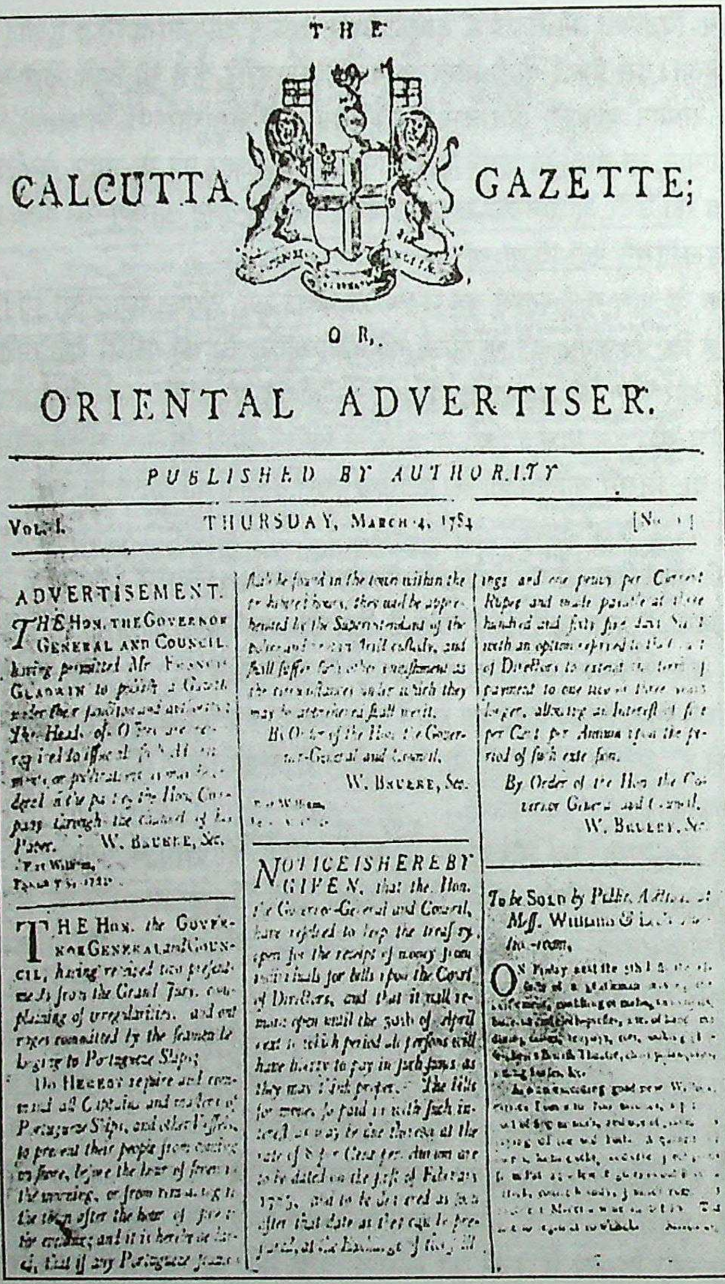

THE

CALCUTTA GAZETTE;

OR,

ORIENTAL ADVERTISER.

PUBLISHED BY AUTHORITY

Vol. I. THURSDAY, March 4, 1784 [No. 1]

ADVERTISEMENT.

THE Hon. the Governor General and Council having permitted Mr. [illegible] Gladwin to publish a Gazette under their sanction and authority; The Heads of Offices are required to [illegible] all [illegible] or publications [illegible] ordered in the [illegible] the Hon. Company through the channel of his Paper. W. Bruere, Sec.

Fort William, [illegible]

THE Hon. the Governor General and Council, having received two presentments from the Grand Jury, complaining of irregularities and outrages committed by the seamen belonging to Portuguese Ships;

Do Hereby require and command all Captains and masters of Portuguese Ships, and other Vessels, to prevent their people from coming on shore, before the hour of [illegible] in the morning, or from [illegible] in the town after the hour of [illegible] in the evening; and it is hereby ordered, that if any Portuguese [illegible] shall be found in the town within the [illegible] hours, they will be apprehended by the Superintendant of the Police and [illegible] jail custody, and shall suffer such other punishment as the circumstances under which they may be apprehended shall merit.

By Order of the Hon. the Governor-General and Council,

W. Bruere, Sec.

NOTICE IS HEREBY GIVEN, that the Hon. the Governor-General and Council, have resolved to keep the treasury open for the receipt of money from individuals for bills upon the Court of Directors, and that it will remain open until the 30th of April next in which period all persons will have liberty to pay in such sums as they may think proper. The bills for money so paid in with such interest as may be due thereon at the rate of 8 per Cent per Annum are to be dated on the first of February 1785, and to be [illegible] after that date as they can be prepared, at the Exchange of [illegible] shillings and one penny per Current Rupee and made payable at three hundred and sixty five days Sight with an option offered to the Court of Directors to extend the term of payment to one two or three years longer, allowing an Interest of five per Cent per Annum upon the period of such extension.

By Order of the Hon. the Governor General and Council.

W. Bruere, Sec.

To be Sold by Public Auction at Mess. Williams & [illegible] the [illegible]-room,

On Friday next the [illegible] [illegible] a gentleman [illegible]

[illegible]

केलकटा गजट, कोलकाता, सन 1780

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिकी से कुछ लेना है, वे अविलम्ब इसकी सूचना दें। 'केलकटा गजट'[1] में नीलामी का दूसरा विज्ञापन छपा और उसके दूसरे दिन हिकी की सम्पत्ति नीलाम कर दी गई।

इण्डिया गजट

18 नवम्बर 1780 को पीटर रीड और बी. मेनजेक ने *'इण्डिया गजट'* का प्रकाशन आरम्भ किया। इस साप्ताहिक का उद्देश्य हिकी की पत्रकारिता का प्रतिकार करना था, जिसे 'इण्डिया गजट' समाज के लिए एक बुराई के रूप में देखता था। सन 1829-30 में वाणिज्यिक और औद्योगिक मंदी के फलस्वरूप कोलकाता की बहुत सी वाणिज्यिक फर्में ठप पड़ गईं, 'मीकिन्तोष एंड कम्पनी' के हाथों से निकल कर 'इण्डिया गजट' का स्वामित्व द्वारकानाथ टैगोर के हाथों में आ गया। आरम्भ में यह एक साप्ताहिक समाचार पत्र था परन्तु इसके साथ नियमित रूप से अतिरिक्त परिशिष्ट, द्वितीय अतिरिक्त परिशिष्ट और असाधारण अंक भी प्रकाशित होते थे। सन 1780 से 1830 तक इसकी वर्ष 1 से 50 तक वर्ष सँख्या (वाल्यूम) थी, लेकिन सन 1831 में नए सिरे से वर्ष सँख्या 1 दी जाने लगी। सन 1833 में 'इण्डिया गजट' दैनिक हो गया। सन 1836 में 'इण्डिया गजट', *'बंगाल हरकारू'* और *'केलकटा क्रानिकल'* में समाहित हो गया। सन 1838 से 43 के बीच यह 'बंगाल हरकारू' और सन 1843-44 में पुन: 'इण्डिया गजट' के नाम से प्रकाशित हुआ। 'इण्डिया गजट' में विज्ञापन, प्रशासन सम्बन्धी समाचार, शासन के आदेश, पाठकों के पत्र, कविताएँ, शासकीय धनादेशों-प्रतिभूतियों के मूल्य, सामाजिक विषयों पर टिप्पणियाँ, ईस्ट इण्डिया हाउस की बहस, पुस्तकों की समीक्षा, जेलों की हालत, जन्म-मृत्यु-वैवाहिक समाचार, साहित्य चर्चा, जहाजों के आवागमन आदि की सूचनाएँ प्रकाशित की जाती थीं।

1784

केलकटा गजट ऑर ओरिएण्टल एडवरटाइजर

हिकी के 'बंगाल गजट' और 'इण्डिया गजट' के प्रकाशन के बाद से अँगरेज शासक बहुत सतर्क थे। वे इस खतरे से वाकिफ थे कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से भारतीयों में भी अपनी बातें कहने की उत्सुकता बढ़ेगी। अत: जब भी समाचार पत्र प्रकाशन की बात सामने आती, अँगरेज उसे अपने शिकंजे में रखने का प्रयत्न करते। जब फ्रांसिस ग्लाडविन ने, समाचारपत्र के प्रकाशन का इरादा किया, तब गवर्नर जनरल की कौसिल ने उसे इसकी अनुमति प्रदान कर दी। इस अखबार का नाम था *'केलकटा गजट ऑर ओरिएण्टल एडवरटाइजर'*। शीर्षक के बीच में कम्पनी का मोनो छपता था। इस समाचारपत्र के वर्ष-1, अंक-2 में प्रथम पृष्ठ पर उपरोक्त अनुमति का उल्लेख है। साथ ही, उस आदेश को भी प्रकाशित किया गया, जिसके माध्यम से कम्पनी ने अपने कार्यालयों और प्रतिष्ठानों को निर्देशित किया था कि सभी विज्ञापन इस समाचारपत्र में प्रकाशित कराये जायं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि यह समाचारपत्र शासन का कृपापात्र था। साप्ताहिक 'केलकटा गजट' का प्रकाशन कोलकाता से 4 मार्च 1784 को प्रारम्भ हुआ। वारेन हैस्टिंग्ज ने 6 फरवरी 1784 को इसके प्रकाशन के लिए आदेश जारी किया था। इसका प्रकाशन प्रत्येक गुरुवार को फ्रांसिस ग्लाडविन ने अपने ही प्रेस से प्रारम्भ किया था। इस पत्र के प्रकाशन के साथ-साथ यह प्रेस भी प्रारम्भ हुआ था। एक नवम्बर 1837 और 30 मार्च 1864 के बीच यह हफ्ते में दो बार प्रकाशित हुआ। सन 1864 तक यह भारत शासन

1. केलकटा गजट, 26 मई, 1803

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मुख-पत्र रहा। इसमें बंगाल शासन के सभी आदेश, अधिसूचनाएं, परिपत्र आदि शामिल किए जाते थे। सन 1864 में जब शासन ने अलग से *'गजट आफ इण्डिया'* का प्रकाशन करना प्रारम्भ किया तब इसका प्रकाशन बंगाल शासन द्वारा किया जाने लगा। मार्च 1784 से अगस्त 1791 तक यह 'केलकटा गजट ऑर ओरिएण्टल एडवरटाइजर' रहा और सितम्बर 1791 से इसे 'केलकटा गजट' के नाम से जाना गया। इसके पुराने अंकों में प्रकाशित सामग्री से स्पष्ट होता है कि प्रारम्भ के और बाद के वर्षो की सामग्री में काफी अंतर है। कम्पनी ने इस समाचारपत्र को डाक से नि:शुल्क भेजने की रियायत दी थी। मोटे अक्षरों में इस समाचार पत्र पर प्रकाशित होता था- 'पोस्टेज अण्डर अथारिटी-फ्री'। खबरों के अलावा इसमें सम्पादक के नाम पत्र भी छपते थे। कविताएं, आसपास के समाचार, न्यायालय के फैसले, कार्यवाहियाँ और इंग्लैण्ड के समाचारपत्रों से अंश उद्धृत किए जाते थे।

फ्रांसिस ग्लाडविन फारसी के भी जानकार थे। उन्होंने अनेक पुस्तकों का अनुवाद किया था। वे पहले ऐसे सम्पादक थे जिनमें लिखने की सोच और समझ थी। स्वास्थ्य विषय में उनकी काफी रुचि थी। उन्होंने हकीम मोहम्मद अब्दुल्ला, जो बादशाह शाहजहाँ के हकीम थे, की पुस्तक 'अल्फाज़-अल-अदबिया' का अँगरेजी में अनुवाद किया था, जिसका प्रकाशन सन 1793 में हुआ। उन्होंने मेडिकल डिक्शनरी का संयोजन और प्रकाशन भी किया। 'फारसी-मुंशी' के नाम से एक पुस्तक भी लिखी जिससे सरलता से फारसी सीखी जा सकती थी। सम्भवत: यह पुस्तक कम्पनी की नौकरी में भारत आने वाले अँगरेजों को फारसी सिखाने के लिए लिखी गई थी। फारसी सीखना अनिवार्य भी था, क्योंकि उस समय कम्पनी के दफ्तरों में फारसी में ही काम होता था।

'केलकटा गजट' ने लम्बी उम्र पाई। 19वीं सदी की शुरूआत में इसमें बुनियादी परिवर्तन हुआ। सन 1815 में यह सरकारी गजट बन गया, फिर भी पत्रकारिता के लिए तो यह जाना ही जाता था। सन 1823 में इसका प्रकाशन सप्ताह में दो बार होने लगा। इसी के साथ उसका अखबारी स्वरूप लुप्त हो गया और वह सरकारी गजट बन कर रह गया।

प्रारम्भिक अंकों में अँगरेजी, फारसी, बंगला भाषाओं के विज्ञापन छपते थे। एक स्तम्भ फारसी भाषा का होता था जिसका शीर्षक था- ''खुलासाए अख़बार दरबारे मुअल्ला व दारुल ख़िलाफत शाहजहाँबाद।'' इस स्तम्भ के समानान्तर अँगरेजी में इसका अनुवाद छपता था। दरबार और आम जनता की खबरें भी छपती थीं।

<u>**1785**</u>

बंगाल जर्नल

फरवरी 1785 में आरम्भ हुआ साप्ताहिक *'बंगाल जर्नल'* भारत के उन प्रारंम्भिक और उल्लेखनीय समाचार पत्रों में से है जिसे प्रेस की स्वतंत्रता का मार्ग अपनाने पर असमय अवसान का मुँह देखना पड़ा। हर शनिवार को प्रकाशित होने वाले 'बंगाल जर्नल' के सम्पादक विलियम डुआन थे। इस अखबार को प्रकाशित होते अभी 6 वर्ष का समय ही बीता था कि सन 1791 में विलियम डुआन को ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ओर से देश छोड़कर चले जाने का हुक्म मिल गया। हुआ यों कि 'बंगाल जर्नल' में, कोलकाता में फ्रांस के मामलों की देखरेख करने वाले कमान्डेण्ट कर्नल डीकनेपिल के बारे में एक ऐसा पैराग्राफ छप गया जिसे कम्पनी ने अपमानजनक माना। अन्तत: सन 1791 में 'बंगाल जर्नल' का प्रकाशन बंद हो गया। प्रेस और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पत्ति की नीलामी का विज्ञापन भी छपा, पर विलियम डुआन के आपत्ति उठाने पर नीलामी रुक गई और पत्र के मालिकों के बीच आपसी बँटवारा हो गया।

मद्रास कूरियर

सन 1785 में चेन्नै से साप्ताहिक *'मद्रास कूरियर'* का प्रकाशन हुआ। 50 गुणित 30 से.मी. आकार में छपने वाला चार पृष्ठों का यह पत्र चेन्नै से प्रकाशित होने वाला पहला अँगरेजी अखबार था। इसमें इंग्लैंड के अखबारों से समाचार उद्धृत किए जाते थे, जिन्हें प्रायः पहले पृष्ठ पर छापा जाता था। हिन्दुस्तान की खबरें तीसरे पृष्ठ पर तथा चौथे पृष्ठ पर साहित्यिक लेख, कविता, विज्ञापन आदि का प्रकाशन होता था। इस पत्र के सम्पादक रिचर्ड जॉनसन थे। सन 1789 में हॅग बोर्ड सम्पादक हुए। इन्हीं ने सन 1791 में *'मद्रास हरकारू'* नामक पत्र निकाला था।

केलकटा मैगजीन ऑर ओरिएण्टल एम्यूजमेंट

देश का पहला मासिक पत्र *'केलकटा मैगजीन ऑर ओरिएण्टल एम्यूजमेंट'* कोलकाता से 6 अप्रैल 1785 को प्रारम्भ हुआ। इसका प्रकाशन मे. गार्डन एण्ड हे ने किया था। इसमें भारत में अँगरेजों की व्यवस्था और अन्य रुचिकर तथा जानकारी परक समाचार-समीक्षा छपती थी।

एशियाटिक मिसलेनी

तिमाही पत्रिका *'एशियाटिक मिसलेनी'* सितम्बर 1785 में कोलकाता से प्रारम्भ हुई। उद्देश्य था भारत के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी लोगों तक पहुँचाना। यहाँ के रीति-रिवाज, रहन-सहन, धार्मिक प्रथाओं को पृष्ठभूमि के साथ प्रकाश में लाना। इसमें फारसी और संस्कृत के पुराने लेखकों की महत्वपूर्ण रचनाएँ भी अँगरेजी में छापी जाती थीं। दो वर्ष में जब इसके आठ अंक छप गए तब इसके मालिक बदल गए। इसमें प्रमुख घटनाओं का सारांश भी दिया जाने लगा। पहले 104 पृष्ठ थे, फिर पृष्ठ सँख्या बढ़ाकर 128 कर दी गई। शीर्षक में 'बंगाल रजिस्टर' शब्द जोड़कर इसका नाम *'एशियाटिक मिसलेनी एण्ड बंगाल रजिस्टर'* कर दिया। बदले स्वरूप का पहला अंक 10 जनवरी 1788 को प्रकाशित हुआ। एक मई 1788 को प्रकाशित दूसरे अंक में एक नोटिस छापा गया- ''चूँकि पत्रिका के तिमाही प्रकाशन में दिक्कत आ रही है, इसलिए बेहतर यह समझा गया कि इसे जुलाई और जनवरी माह की दस तारीख को अर्द्धवार्षिक पत्रिका के रूप में निकाला जाय। अर्द्ध वार्षिक पत्रिका का पहला अंक 21 जुलाई 1788 को *'न्यू एशियाटिक मिसलेनी एण्ड बंगाल रजिस्टर'* के नाम से आया और यही इसका अंतिम अंक साबित हुआ। इसके अनेक वर्षों बाद *'ओरिएंटल मिसलेनी'* नाम का एक मासिक सन 1853 में कोलकाता से 32 पृष्ठों में निकला, जिसकी कीमत एक रुपया थी।

1786

केलकटा क्रानिकल

'केलकटा क्रानिकल'[1] का प्रकाशन 1 फरवरी 1786 से साप्ताहिक पत्र के रूप में हुआ। इसे ए.अपजान निकालते थे। इसमें निबन्ध, कविताएं, विदेशी तथा 'मद्रास कूरियर', 'बाम्बे गजट' आदि भारतीय समाचारपत्रों से चुने हुए समाचार दिए जाते थे। साथ ही शासन की अधिसूचनाएं, स्टॉक एकसचेंज की कीमतें, जहाजों के आवागमन की जानकारी, विज्ञापन आदि का प्रकाशन होता था। जून-जुलाई 1793 के अंकों में बंगला और अँगरेजी भाषा की वृहत

1. 'केलकटा क्रानिकल' के वर्ष 1792 और 1793 के अंक राष्ट्रीय पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दावली का विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। यह बंगला भाषा के इतिहास और बंगाली-मुद्रण के प्रारम्भिक काल पर प्रकाश डालता है। 'केलकटा क्रानिकल' का आकार 45 गुणित 29 से.मी. था। इस पत्र की व्यवस्था ठीक नहीं थी। ऐसा लगता है कि विज्ञापन और ग्राहक शुल्क के बिलों की राशि की अधिक उधारी हो जाने के कारण मालिकों को यह पत्र बेच देना पड़ा। 4 नवम्बर 1793 के अंक में नोटिस छपा- ''जनता को सूचित किया जाता है कि 'केलकटा क्रानिकल' की सम्पत्ति नये मालिकों द्वारा खरीद ली गई है।''

इसके बाद प्रकाशन का दिन बदल दिया गया। बुधवार के स्थान पर समाचारपत्र सोमवार को प्रकाशित होने लगा। 'केलकटा गजट' के 1 फरवरी 1798 के अंक में पत्र की नीलामी की सूचना प्रकाशित हुई, जिससे पता चलता है कि पत्र फिर बन्द हो गया। सूचना यह थी- ''आम नीलामी के जरिए मंगलवार, दिनांक 13 को क्रानिकल कार्यालय के टाइप, प्रेस इत्यादि की बिक्री की जाना है।''

1788

एशियाटिक मिरर

फरवरी 1788 में प्रकाशित हुए *'एशियाटिक मिरर एण्ड कमर्शियल एडवरटाइजर'* की नीति, सही-सही जानकारी जनता को देने की थी। इसके प्रारम्भिक सम्पादक के नाम की जानकारी तो प्राप्त नहीं है, पर सन 1799 में इसका सम्पादन सी.के.ब्रूस एवं डा.शूलब्रेड कर रहे थे।

'समाचार दर्पण'[1] में प्रकाशित जानकारी के अनुसार लार्ड वैल्सले के शासन काल में 'एशियाटिक मिरर' में प्रकाशित एक लेख ने खलबली मचा दी थी। इस लेख में कहा गया था, ''भारत में मुट्ठी भर अँगरेज हैं और शेष जनता तो यहीं की है। यदि एक-एक भारतीय हम पर (अँगरेजों पर) एक-एक कंकड़ भी फेंके तो हम कहाँ के रहेंगे।'' उस समय मुख्य सचिव सेंसर हुआ करते थे। जब मुख्य सचिव के ध्यान में यह बात लाई गई तब इस लेख को राजद्रोह मानकर पत्र के मालिकों को देश छोड़कर चले जाने के लिए कह दिया गया। परन्तु जब उन्होंने लिखित आश्वासन दिया कि भविष्य में ऐसा कुछ नहीं छपेगा, तब वे पत्र का प्रकाशन चालू रख सके।

सन 1817 में इसके मालिक और सम्पादक रेवरेण्ड ब्राइस थे। उनकी मुख्य सचिव और सेंसर जान एडम से सेंसरशिप नियम लागू करने पर तीखी बहस हुई थी। 'केलकटा जर्नल' के सम्पादक जे.एस.बकिंघम के अनुसार ''डा. ब्राइस के सम्पादन के समय 'एशियाटिक मिरर' राजनीति और धार्मिक मामलों में दार्शनिक रुख अपनाता था।'' यह पत्र मई 1820 में बंद हो गया। 'एशियाटिक मिरर' के बंद होते ही मिरर प्रेस के स्थानापन्न मालिक जान बीकाट ने घोषणा कर दी कि वे नया पत्र 'पोस्ट आफ द एशियाटिक मिरर आर द स्पिरिट आफ पब्लिक ओपीनियन इन इण्डिया' प्रकाशित करने वाले हैं। इस नये पत्र का प्रथम अंक 1 जून 1820 को प्रकाशित हुआ। 6 नवम्बर 1820 तक इसके 24 अंक प्रकाशित हुए, फिर बंद हो गया।

एशियाटिक रिसर्चेज

एशियाटिक सोसायटी ने सन 1788 में *'एशियाटिक रिसर्चेज'* पत्रिका का प्रकाशन शुरू

---

1. समाचार दर्पण, 5 नवम्बर, 1834

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। बहु भाषाविद् सर विलियम जोन्स सन 1783 में सुप्रीम कोर्ट के जज बन कर भारत आए थे। पश्चिम और पूर्व के ज्ञान का संगम करने के उद्देश्य से उन्होंने कोलकाता में एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की थी। सन 1832 में सोसायटी ने 'एशियाटिक सोसायटी जर्नल' का प्रकाशन किया। सात वर्ष तक दोनों पत्रिकाएं साथ-साथ निकलीं। फिर सन 1839 में 'एशियाटिक रिसर्चेज' और 'इंडियन रिव्यू एण्ड जर्नल आफ फारन साइंसेज' का विलय 'एशियाटिक सोसायटी जर्नल' में हो गया।

1789

मुम्बई में पत्रकारिता और समाचारपत्रों के प्रकाशन की हलचल सन 1789 में आरम्भ हुई, जब '*बाम्बे हेरल्ड*' निकला। यह मुम्बई से प्रकाशित होने वाला पहला समाचारपत्र था।

1790

बाम्बे गजट

25 जून 1790 को साप्ताहिक '*बाम्बे गजट*' का प्रकाशन मुम्बई से हुआ। इसका वार्षिक शुल्क चालीस रुपये था। मुम्बई के व्यापारिक समाचारों के साथ साथ डच तथा पुर्तगाली उपनिवेशों आदि के समाचार इसमें प्रकाशित होते थे। यह पत्र सन 1906 तक प्रकाशित हुआ।

'रत्न प्रकाश'[1] से इसकी पत्रकारिता की प्रवृत्ति के बारे में पता चलता है, ''महाराज बड़ौदा के मुकदमे की बावत 'बाम्बे गजट' वाले ने बहोत कुछ लिखा है और उसमें सर दिनकर राव और महाराजा ग्वालियर और जयपुर के निसबत यह सख्त बातें लिख दीं। शांताराम वकील महाराजा बड़ौदा ने उस्पर हतकइज्जत (मानहानि) की नालिश की है। अेक दफा मुकद्दमा पेश भी हुवा था मगर बंबई गजट वाले ने कहा के अभी मे इस्की जवाबदेही नहीं कर सकता चुनांचे मुकद्दमे की तारीख बदल गई।'' सन 1791 में मुम्बई के पुलिस कमिश्नर एण्डरसन के खिलाफ टिप्पणी प्रकाशित करने पर 'बाम्बे गजट' पर यह पाबन्दी लगा दी गई कि वह मुद्रण के पहले सरकार से डमी कापी पर अनुमोदन कराए। सन 1792 में 'बाम्बे गजट' का विलय 'बाम्बे हेरल्ड' में हो गया।

बाम्बे कूरियर

सन 1790 में मुम्बई से एक और अखबार निकला। यह अँगरेजी साप्ताहिक पत्र '*बाम्बे कूरियर*' था। जब चार समाचारपत्रों के विलय से सन 1861 में 'टाइम्स आफ इण्डिया' ने रूपाकार ग्रहण किया, तब उसमें विलीन होने वाला यह भी एक अखबार था।

'*केलकटा मंथली रजिस्टर एण्ड इण्डिया रिपॉजिटरि*'[2] का प्रकाशन दिसम्बर, 1790 में प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक और मालिक लिएंट हेनरी मेकेनली थे। पहले यह पत्र माह के प्रारम्भ में प्रकाशित होता था, परन्तु बाद में माह के मध्य में प्रकाशित होने लगा। जून 1791 से यह व्यवस्था लागू हुई। इसी के बाद सम्पादक राजद्रोह के एक प्रकरण में फँस गए, अतः पत्र अनियमित हो गया और कुछ अंकों के बाद बंद भी हो गया। राजद्रोह के मुकदमे से निबटने के बाद सन 1796 से मेकेनली 'बंगाल डायरेक्टरी' का प्रकाशन करने लगे थे।

---

1. रत्नप्रकाश, 25 अप्रैल, 1875
2. केलकटा गजट, 14 जुलाई 1791

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1791

केलकटा मैगजीन

3 अक्टूबर 1791 को जेम्स व्हाइट ने कोलकाता से *'केलकटा मैगजीन'* का प्रकाशन किया। इस मासिक पत्रिका का वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। प्रवेशांक में ही पत्रिका का नाम बदलकर 'केलकटा मैगजीन एंड एशियाटिक एम्यूजमेंट' हो गया था। परन्तु नवम्बर के अंक में शीर्षक में एशियाटिक के स्थान पर ओरिएंटल शब्द आ गया। फरवरी 1793 तक यह पत्रिका छपी। सन 1794 में जेम्स व्हाइट ने केलकटा मंथली जर्नल निकाला।

'मद्रास कूरियर' के सम्पादक पद से इस्तीफा देने के बाद सन 1791 में बायड ने *'हरकारू'* का प्रकाशन आरम्भ किया। यह अखबार एक वर्ष तक चला। बायड का निधन हो जाने के कारण 'हरकारू' का प्रकाशन बंद हो गया।

1792

केलकटा ईवनिंग पोस्ट / केलकटा मार्निंग पोस्ट

तीन मई 1792 को कोलकाता से *'केलकटा ईवनिंग पोस्ट'* का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसकी विज्ञप्ति 24 अप्रैल 1792 के 'केलकटा क्रानिकल' में प्रकाशित कराई गई थी– ''बाजार न. 9 से थामसन एण्ड फैरिस द्वारा एक अँगरेजी पत्र 'केलकटा ईवनिंग पोस्ट' निकालने की योजना है। इस पत्र में लेख, कविता, सरकार की सूचनाएँ प्रकाशित होंगी। निंदा नहीं छापी जाएगी। हर गुरूवार को सायंकाल सात बजे से पूर्व पाठकों तक पहुँचाया जाएगा। वार्षिक शुल्क 26 रुपये है। विज्ञापन की दर एक पंक्ति के लिए छह आना होगी। पहला अंक आने वाली तीन मई को प्रकाशित होगा।''

कुछ समय बाद इस पत्र का नाम *'केलकटा मार्निंग पोस्ट'* हो गया। सन 1810 में पूरी तरह यह पत्र फैरिस के स्वामित्व में आ गया। मई 1817 में फैरिस कम्पनी ने इसे हीरली को बेच दिया। 'केलकटा गजट' भी उन्हीं ने खरीदा था। तब 18 अक्टूबर 1818 से नये नाम 'केलकटा जर्नल' से इसका प्रकाशन हुआ।

'बंगाल जर्नल' बंद होने के बाद विलियम डुऑन ने *'वर्ल्ड'* नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। 'केलकटा गजट'[1] में 'आम जनता को सूचना' शीर्षक से बँटवारे की जानकारी विलियम डुऑन ने छपवाई थी और नीलामी पर आपत्ति भी दर्ज कराई थी। विलियम डुऑन ने 5 जनवरी 1793 के 'वर्ल्ड' में 'बंगाल जर्नल' को पुनः प्रकाशित करने के लिए जन सहयोग की अपील छापी, पर अपेक्षित सहयोग न मिलने से पत्र का पुनर्प्रकाशन नहीं हो सका। वे 'वर्ल्ड' को भी अधिक समय तक नहीं चला सके, क्योंकि 'वर्ल्ड' में ऐसे अनेक लेख छपे जिनमें सेना की कमजोरियों का जिक्र था। प्रशासन उनसे नाराज रहता था। उनके विरुद्ध देश निकाले की कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गई और सरकार ने अपने खर्च पर सन 1794 के अंत में उन्हें यूरोप विदा कर दिया।

1793

ओरिएण्टल स्टार

विलियम डुऑन को यूरोप विदा कर देने के बाद दो भागीदारों ने सन 1793 में *'ओरिएण्टल*

1. केलकटा गजट, 20 सितम्बर, 1792

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टार' निकाला। उन्होंने पुराने शीर्षकों 'बंगाल जर्नल' और 'वर्ल्ड' के बजाय नया शीर्षक चुना। असल में यह पत्र 'बंगाल जर्नल' का ही बदला हुआ स्वरूप था। सन 1799 में 'ओरिएण्टल स्टार' के मालिक और सम्पादक रिचर्ड फलेमिंग और मुद्रक जानसन थे। 1 जून 1820 से यह दैनिक हो गया। इस तरह देश का तीसरा दैनिक पत्र बन गया। प्रथम दो दैनिक थे- 'बंगाल हरकारू' और 'केलकटा जर्नल'। इसकी कीमत 4 रुपये प्रतिमाह थी। इस पर कर्ज बढ़ गया और दो माह में यह बंद हो गया।

R
८२.०३
धीघ-९८
143772

1794

केलकटा मंथली जर्नल

जेम्स व्हाइट ने *'केलकटा मैग्जीन एण्ड ओरिएण्टल एम्यूजमेंट'* मासिक का प्रकाशन 1793 में बन्द करके एक नवम्बर 1794 से 'केलकटा मंथली जर्नल' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसके एक अंक की कीमत एक रुपया थी। इसमें मुम्बई, चेन्नै और कोलकाता के पत्रों के समाचारों का सार संक्षेप इस उद्देश्य से प्रकाशित किया जाता था ताकि कोलकातावासियों, विशेषकर अँगरेजों को वह सब जानकारी मिल जाए। लगभग दो वर्षों के बाद जेम्स व्हाइट की मृत्यु के उपरान्त इस जर्नल का स्वामित्व बदल गया। सन 1800 में इसके मालिक वही थे जो 'बंगाल हरकारू' के थे। नए मालिकों ने इसके स्वरूप को निखारने की कोशिश की और इसमें कला एवं विज्ञान के शिक्षाप्रद और रुचिकर लेख, उल्लेखनीय व्यक्तियों का जीवन परिचय और योगदान भी छपने लगे। सन 1809 में इसे इंडिया गजट प्रेस के मालिक स्काट एण्ड कम्पनी ने खरीद लिया और सन 1835 तक प्रकाशित किया। उन्होंने जनवरी 1833 से इसकी नई श्रृंखला प्रकाशित करना प्रारम्भ किया जो एक प्रकार से प्रमुख घटनाओं का रजिस्टर था।

दिसम्बर 1835 में एक बार फिर इसे नए मालिकों- मेसर्स सेमुएल स्मिथ एण्ड कं. ने संभाला। उन्होंने जनवरी 1838 से नई श्रृंखला में प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। स्मिथ सेमुएल अनुभवी प्रकाशक थे और उनकी व्यापारिक पकड़ भी अच्छी थी। वे 'बंगाल हरकारू' सफलतापूर्वक निकाल रहे थे। उन्होंने 'केलकटा मंथली जर्नल' को व्यवस्थित कर संदर्भ के लिए और अधिक उपयोगी बनाया। यह अपने प्रकार की प्रथम संदर्भ पत्रिका थी। 10 नवम्बर 1838 के 'बंगाल हरकारू' के अनुसार उस समय 'मंथली जर्नल' के 200 ग्राहक थे। इसका प्रकाशन सन 1841 तक हुआ।[1]

1795

बंगाल हरकारू

अठारहवीं सदी के अंतिम वर्षों में बंगाल में 6 नए समाचारपत्रों ने जन्म लिया- 'केलकटा कूरियर' (1795), 'बंगाल हरकारू' (20 जनवरी 1795), 'मार्निंग पोस्ट' (1798), 'टेलीग्राफ' (1798), 'ओरिएंटल स्टार' (1798) और 'एशियाटिक मिरर' (1798)।

सभी पत्र अँगरेजों ने प्रकाशित किए। स्वाभाविक ही वे अँगरेजी भाषी पाठकों को ध्यान में रखकर निकाले गए थे। पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी इन्हें शंका की निगाह से देखती थी, क्योंकि अँगरेजी पढ़ी लिखी जनता, जिसमें भारतीय भी शामिल थे, उनके समाचारों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करती थी।

---

1. 'केलकटा मंथली जर्नल' के वर्ष 1797 से 1801 तक के और उसके बाद के कुछ अंक जिसमें सन 1841 के अंक भी शामिल हैं, राष्ट्रीय पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल हरकारू, कोलकाता, सन 1795

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'केलकटा गजट'[1] में एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ, जो इस प्रकार था- "*बंगाल हरकारू*'- आगामी 20 तारीख, मंगलवार को इसका प्रकाशन, ओरिएण्टल स्टार प्रेस से होगा। टिकिट महसूल मिलाकर वार्षिक शुल्क 52 सिक्का रुपये और तिमाही शुल्क 13 सिक्का रुपया होगा।" 29 अप्रैल 1813 से यह दैनिक पत्र हुआ। इस पत्र का सम्पादन-प्रकाशन डा. चार्ल्स मैकलीन ने किया था, जो कम्पनी में चिकित्सा अधिकारी था। चार्ल्स मैकलीन ने पोस्ट मास्टर जनरल को शिकायत की कि उसके कुछ पत्र रोके जा रहे हैं और उस तक नहीं पहुँचाए जा रहे हैं। उसने धमकी भी दी कि वह इस अक्षमता का भंडाफोड़ करेगा। यह शिकायती पत्र प्राप्त होने के तीन दिन बाद पोस्ट मास्टर जनरल ने बंगाल के मुख्य सचिव से डा. मैकलीन की शिकायत की कि 'बंगाल हरकारू' के ताजा अंक में पोस्ट आफिस के कर्मचारियों की बदनामी छपी है। उसने यह भी स्पष्ट किया कि पोस्ट आफिस के एक कर्मचारी ने डा. मैकलीन को समझा दिया था कि जब तक वे बकाया रकम जमा नहीं कर देते, उनकी डाक रोक ली जाएगी। पोस्ट मास्टर जनरल ने यह शिकायत भी की कि जो कर्मचारी डा. मैकलीन के पास गया था, उसकी पिटाई की गई। बाद में डा. मैकलीन ने बकाया राशि जमा कर डाक लेना प्रारम्भ कर दिया। इस घटना का विवरण डा. मैकलीन ने 'टेलीग्राफ' में प्रकाशित करा दिया। इसमें गाजीपुर के मजिस्ट्रेट राइडर के व्यवहार पर भी आक्षेप था। राइडर ने समाचारपत्र की शिकायत सरकार से कर दी और सरकार ने टेलीग्राफ के सम्पादक से माफी माँगने के लिए कहा। सम्पादक हाल्ट मेकेनली ने पत्र प्रकाशित करने के लिए माफी माँग ली। डा. चार्ल्स मैकलीन को देश निकाला दे दिया गया। पर मैकलीन चुप नहीं बैठा। इंग्लैण्ड जाकर उसने गवर्नर जनरल लार्ड वैलेस्ले के खिलाफ एक पुस्तिका छपाई। अन्ततः लार्ड वैलेस्ले को सन 1805 में गवर्नर जनरल के पद से इस्तीफा देना पड़ा।

सन 1798 और सन 1827 के बीच समाचारपत्र के मालिकाना हक में अनेक बार परिवर्तन आए। जब सन 1791 में लार्ड वैलेस्ले के प्रेस कानून अमल में आये तब यह पत्र विलियम हण्टर के मालिकाना हक में आ गया। इसके बाद सेमुएल ग्रीव मालिक हुए। मई 1821 में सेमुएल स्मिथ भी इसके भागीदार बन गए। कुछ समय बाद सेमुएल स्मिथ अकेले इसके मालिक हो गए। उन्होंने इस पत्र में अनेक पत्रों को समाहित किया। मई 1825 में 'स्काट्समेन इन द ईस्ट' समाहित हुआ। दिसम्बर 1827 में 'बंगाल क्रानिकल' को समाहित कर इसका नया शीर्षक 'बंगाल हरकारू एण्ड क्रानिकल' हो गया। 'केलकटा जर्नल' और 'कोलम्बियन प्रेस गजट' भी इसमें समाहित हुए।

राष्ट्रीय पुस्तकालय ने पत्रिकाओं, समाचारपत्रों और गजटों का सन 1956 में जो केटलाग[2] प्रकाशित किया है, उसमें उल्लेख है कि 'बंगाल हरकारू' की नई श्रृंखला की शुरूआत सन 1828 में हुई और तभी से 'बंगाल हरकारू' का शीर्षक भी बदल गया। परन्तु यह भी सही नहीं है, क्योंकि 'बंगाल हरकारू एण्ड क्रानिकल' के शुक्रवार 15 अगस्त 1828 के अंक पर वर्ष दो, अंक 40, नई श्रृंखला अंकित है। इसी अंक पर दाहिनी ओर कोष्टक में पुराने अंकों की सँख्या को शामिल करते हुए वर्ष सँख्या और अंक सँख्या दी गई है, जो वर्ष 4 अंक 4176 पुरानी श्रृंखला है।

1. केलकटा गजट, 15 जनवरी, 1795
2. राष्ट्रीय पुस्तकालय केटलाग 1956, पृष्ठ 226

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

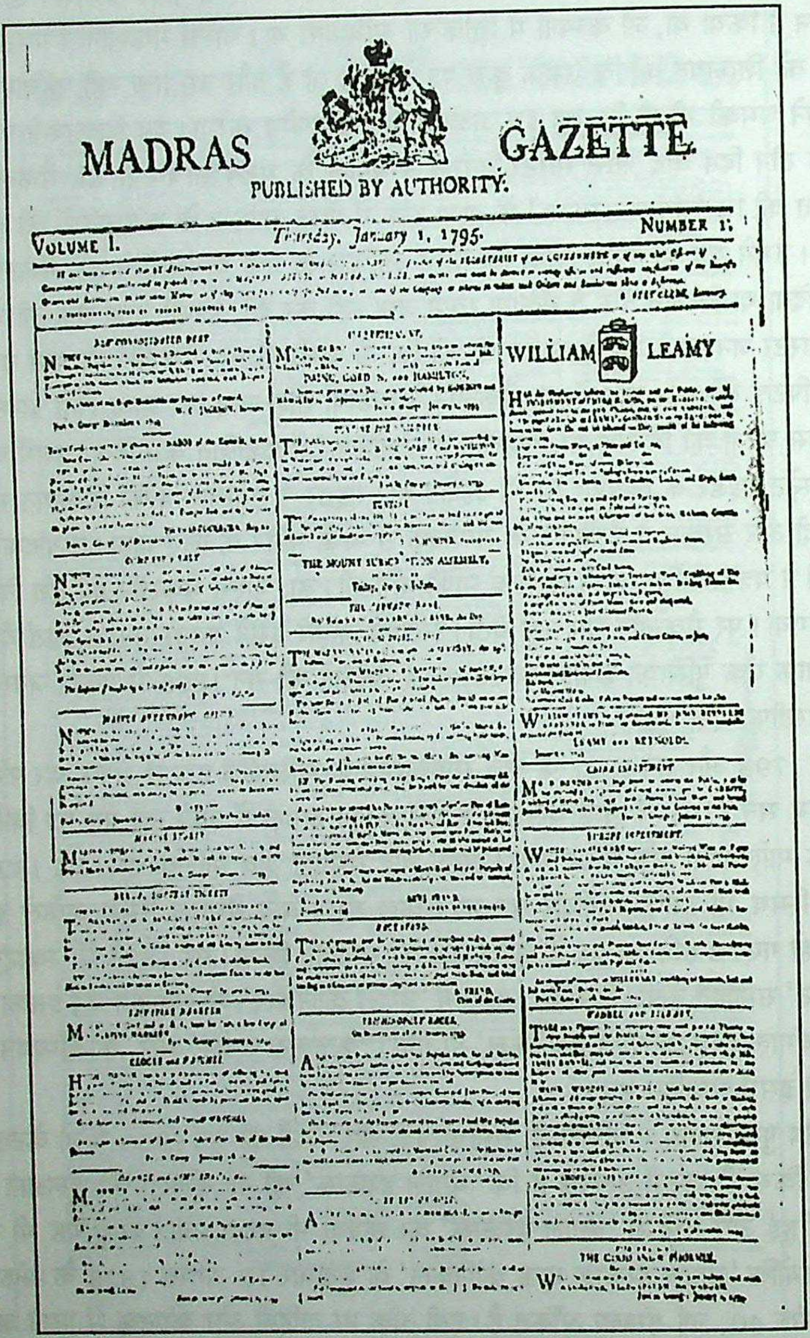

MADRAS GAZETTE.

PUBLISHED BY AUTHORITY.

VOLUME I. Thursday, January 1, 1795. NUMBER 1.

WILLIAM LEAMY

मद्रास गजट, चेन्नै, सन 1795

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई श्रृंखला के दैनिक समाचारपत्र में चार पृष्ठ होते थे। इसका मासिक शुल्क 8 रुपये, तिमाही शुल्क 20 रुपये और वार्षिक शुल्क 64 रुपये था। शुल्क अग्रिम जमा कराया जाता था। प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापन छपते थे। अधिकतर जहाजों के आने-जाने, सामग्री की बिक्री आदि के छोटे छोटे विज्ञापन होते थे। पृष्ठ दो पर सम्पादकीय दिया जाता था। सम्पादकीय का आकार विषय के अनुसार छोटा-बड़ा होता था। दो-तीन विषयों पर भी सम्पादकीय लिखे जाते थे। पृष्ठ क्रमांक तीन पर अधिकतर यूरोप के देशों के समाचार, फ्रांस और इंग्लैण्ड के पत्रों से लिए गए समाचार, कोर्ट प्रकरण, खेलों के सम्बन्ध में समाचार होते थे। पृष्ठ चार पर भारत में प्रकाशित अन्य शहरों के समाचारपत्रों से समाचार लिए जाते थे और विज्ञापन भी छापे जाते थे।

सन 1799 के प्रेस कानून के मुताबिक रविवार को समाचारपत्रों का प्रकाशन नहीं होता था। उस समय के समाचारपत्र एक-दूसरे पर निगाह रखते थे और व्यंग्योक्तियों में नोक-झोंक पाठकों में पढ़ने की रुचि बनाए रखने का यह तरीका तभी से प्रारम्भ हुआ है।

सन 1795 में आर. विलियम्स ने *'मद्रास गजट'* नाम से साप्ताहिक अखबार निकाला। स्वतंत्र लेखन और शासन के विरुद्ध लिखने पर इस पर सेंसर लगा दिया गया। डाक सेवा में दी जाने वाली सुविधाएं बंद कर दी गईं।

कुछ माह बाद हम्फ्रीज ने शासकीय अनुमति लिए बगैर *'इण्डियन हेरल्ड'* प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया। बिना अनुमति के प्रकाशन एवं कम्पनी तथा प्रिंस ऑफ वेल्स के विरुद्ध लिखने के आरोप में हम्फ्रीज को गिरफ्तार कर लिया गया। जब उसे इंग्लैण्ड भेजा जा रहा था, तब वह जहाज से निकल भागा।

'इंडियन अपोलो' का प्रकाशन साप्ताहिक के रूप में रविवार 4 अक्टूबर 1795 को हुआ था। इसका प्रकाशन थामस होलिंगबरी ने मिरर प्रेस कोलकाता से किया। इसकी कीमत प्रति अंक एक रुपया थी, जो अधिक थी।

1798

एशियाटिक मैगजीन

'एशियाटिक मैगजीन' मासिक पत्रिका थी। 'केलकटा गजट'[1] में इस पत्रिका के प्रकाशन के बारे में विज्ञापन छपा है, जिसके अनुसार बंगाल हरकारू आफिस से इसका प्रकाशन 4 मई 1798 को या उसके पहले होगा। 'केलकटा गजट'[2] में दूसरा विज्ञापन छपा जिसमें इस पत्रिका के प्रथम अंक (मई 1798) में किन-किन विषयों पर क्या छपा, उसकी रूपरेखा बताई गई है। प्रथम अंक में पत्रिका का उद्देश्य, ईस्ट इंडिया कम्पनी के मालिकों की बैठक में पीटर मूर का भाषण, कविताएँ, अप्रैल माह की राजनीतिक गतिविधियाँ, हिन्दुओं विशेषकर ब्राह्मणों के धार्मिक रीति रिवाजों, नियुक्तियाँ, सरकारी आदेश, बंगाल, चेन्नै, मुम्बई आदि स्थानों के समाचारों का प्रकाशन हुआ था। इसका दूसरा अंक जून 1798 में छपा। मई 1799 में जब लार्ड वैलेस्ले ने प्रेस के लिए काले कानून लागू किये, उस समय इसका पंजीयन नहीं हुआ था। स्पष्ट है कि उसके पहले ही यह पत्रिका बंद हो गई थी।

1. केलकटा गजट, 13 अप्रैल 1798
2. वही, 31 मई 1798

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केलकटा कूरियर

दीर्घ जीवन पाने वाले कोलकाता के इस पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ होने के बारे में अलग अलग वर्ष बताए गए हैं। राष्ट्रीय पुस्तकालय के कैटलाग में इसके प्रारम्भ होने का वर्ष 1795 बताते हुए कहा गया है कि यह अर्द्ध साप्ताहिक पत्र था। परन्तु 'केलकटा गजट'[1] में प्रकाशित विज्ञापन के अनुसार इसका प्रथम अंक 6 मई 1798 को प्रकाशित हुआ। इसके मालिक और मुद्रक थामस होलिंग बेरी और राबर्ट खेलेन थे। इसकी कीमत आठ आना थी।

लार्ड वैलेस्ले के प्रेस के नियमन 1799 के समय जिन सात समाचारपत्रों ने अपना पंजीयन कराया था, उनमें एक यह भी था। पंजीयन साप्ताहिक के रूप में हुआ। पंजीयन के बाद 'केलकटा कूरियर' का प्रकाशन रविवार के बदले शुक्रवार हो गया। यह सन 1830 तक निकल कर कुछ समय के लिए बंद हो गया। 4 अप्रैल 1832 से 'केलकटा कूरियर' पुनः प्रकाशित हुआ। वर्ष और अंक सँख्या नई श्रृंखला में दी जाने लगी। नई श्रृंखला के सम्पादक जार्ज प्रिंसप थे। इस समय इसका आकार 50 गुणित 30 से.मी. हो गया।

1799

4 अप्रैल 1799 से प्रकाशित होने वाले *'रिलेटर'* के प्रकाशनारम्भ की घोषणा समाचारपत्र के सम्पादक जान होवेल ने की थी जो 'केलकटा गजट'[2] में प्रकाशित हुई। इस पत्र के अंक उपलब्ध नहीं हैं। इस पहले अर्द्ध साप्ताहिक का प्रयोग सफल नहीं रहा।

सन 1799 में साप्ताहिक *'एशियाटिक मिरर'* का प्रकाशन चार्ल्स ब्रूस ने किया। वही इसके सम्पादक थे। टीपू सुल्तानं से अँगरेजों के युद्ध के समाचारों को छापने के कारण ब्रूस को निर्वासन का नोटिस थमा दिया गया। क्षमा याचना करने पर वे कम्पनी के कोप से बच पाए। सन 1799 में कोलकाता से अँगरेजी साप्ताहिक *'टेलीग्राफ'* निकला। इसका प्रकाशन हाल्ट मैकनली तथा एच.डी.विल्सन ने किया। सम्पादन का दायित्व मैकनली निभा रहे थे।

1814

केलकटा टाइम्स

'केलकटा टाइम्स' का प्रकाशन 1814 में हुआ था। जेम्स सिल्क बकिंघम ने 'केलकटा जर्नल'[3] में तत्कालीन समाचारपत्रों का जो सिंहावलोकन किया था, उसमें 'केलकटा टाइम्स' के बारे में लिखा- ''इसमें विज्ञान, धर्म, राजनीति आदि के सम्बन्ध में लेखादि प्रकाशित होते थे। 'केलकटा जर्नल'[4] में इसका अन्तिम उल्लेख मिलता है।

1815

गवर्नमेण्ट गजट

'गवर्नमेण्ट गजट' साप्ताहिक पत्र था। इसमें तत्कालीन समाचारपत्रों जैसे 'बंगाल हरकारू', 'केलकटा गजट' आदि के समान समाचार और विज्ञापन प्रकाशित होते थे। 2 मई 1815 को अधिसूचना जारी कर 'केलकटा गजट' प्रेस से प्रिंटिंग का कार्य मिलिटरी आरफेन सोसायटी प्रेस को हस्तान्तरित कर 'गवर्नमेण्ट गजट' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। सरकार ने यह आदेश जारी

---

1. केलकटा गजट, 3 मई 1798
2. वही, 28 मार्च 1799
3. केलकटा जर्नल, 8 अगस्त 1820
4. वही , 25 मार्च 1820

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया कि भविष्य में अधिकारी सभी आदेशों, अधिसूचना और विज्ञापन की प्रतियाँ प्रकाशन के लिए 'गवर्नमेण्ट गजट' में भेजा करेंगे। इसके पूर्व ऐसा आदेश 'केलकटा गजट' के लिए जारी किया गया था।

गवर्नमेण्ट गजट[1] में नोटिस प्रकाशित हुआ– ''भविष्य में 'गवर्नमेण्ट गजट' का प्रकाशन सप्ताह में दो बार किया जाएगा। नियमित पत्र पूर्ववत गुरूवार को और परिशिष्ट प्रत्येक सोमवार की शाम को, जिसमें सरकार द्वारा पारित सभी आदेश छापे जाएंगे। इससे हमारे पाठकों को सामान्य आदेश तीन दिन पहले ही मिल जाया करेंगे। तथापि शुल्क वही रहेगा– चार रुपये प्रतिमाह।

इसके बाद 'गवर्नमेण्ट गजट' के दोनों अंकों (सोमवार और गुरूवार) में शासन के ये आदेश प्रकाशित होने लगे। यह सिलसिला लम्बे अरसे तक नहीं चल सका। जब सरकार के सभी विज्ञापन और आदेश 'गवर्नमेण्ट गजट' में छपने लगे तब 'केलकटा गजट' को काफी धक्का लगा। उसकी प्रसार सँख्या पर भी विपरीत प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। वे परदे के पीछे इस कोशिश में थे कि पूर्वस्थिति बहाल हो जाए। तब 'गवर्नमेण्ट गजट'[2] में दूसरी सरकारी अधिसूचना प्रकाशित हुई– ''यह घोषित किया जाता है कि इस माह (मार्च 1832) के पश्चात सभी सरकारी विज्ञापन सिर्फ इसी के निमित्त छपने वाले साप्ताहिक 'केलकटा गजट' में छपेंगे। समाचारपत्र 'गवर्नमेण्ट गजट' का प्रकाशन इसी अंक के साथ बंद किया जा रहा है। एक समाचारपत्र बुधवार और शनिवार की शाम को प्रकाशित हुआ करेगा, जिसकी प्रकृति शासकीय पत्र की नहीं होगी और इसका नाम 'केलकटा कूरियर' होगा। नया गजट और कूरियर दोनों मिलिटरी आरफन सोसायटी प्रेस से छपा करेंगे, जो सरकारी छापाखाना बना रहेगा।''

राष्ट्रीय पुस्तकालय के कैटलाग (पृष्ठ 240) पर उल्लेख है कि 'गवर्नमेण्ट गजट' जो साप्ताहिक पत्र था, 1828-1832 तक अर्द्ध साप्ताहिक के रूप में पुन: प्रकाशित हुआ। यह सेरामपुर प्रेस से अँगरेजी और बंगला में छपता था। जान मार्शमेन इसमें बंगाली अनुवादक थे। इसमें सरकार और हाईकोर्ट, राजस्व मंडल के आदेश और सरकारी विज्ञापन छपते थे।

1. गवर्नमेंट गजट, 29 सितम्बर 1823
2. वही, 29 मार्च 1832

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता

1818

केलकटा एक्सचेंज गजट एण्ड डेली एडवरटाइजर

'बंगाल हेरल्ड'[1] में उल्लेख है कि *'केलकटा एक्सचेंज'* दैनिक पत्र था और फर्म मैकेन्जी लायल एण्ड कं. के केलकटा एक्सचेंज प्रेस में छपता था। इसका प्रकाशन अप्रैल 1818 में हुआ था। यह पत्र सन 1920 के बाद तक प्रकाशित होता रहा। एक अप्रैल 1920 के अंक में शीर्षक के नीचे इसका स्थापना वर्ष 1818 मुद्रित किया गया है। यह विज्ञापनों का दैनिक पत्र था। इसके मुद्रक ए. ई. मुलिन्स थे। इसका प्रसार कोलकाता, दमदम, बैरकपुर और कोलकाता के आस-पास था। आम जनता की जानकारी के लिए इसकी प्रतियाँ, इस समाचारपत्र के कार्यालय के बाहर, पुलिस आफिस, लाल बाजार, म्युनिसिपल बाजार में भी चिपकाई जाती थीं। रायल एक्सचेंज बंगाल की प्रत्येक रेजीमेंट और पंजाब तथा उत्तर-पूर्व प्रांत के रेजीमेंट की मैस को भी प्रतिदिन डाक से प्रतियाँ भेजी जाती थीं। सभी प्रकार के विज्ञापनों विशेषकर व्यापारिक विज्ञापनों का यह प्रभावी माध्यम था। इसमें कोलकाता कार्पोरेशन, शासकीय विभागों, पोर्ट कमिश्नर, भारत शासन द्वारा सोने की बिक्री मुद्रा नियंत्रक, ईस्टर्न बंगाल रेलवे, उत्तर-पश्चिम रेलवे, मुम्बई के बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों, चार्टर्ड बैंक आफ इण्डिया और निजी व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन छपते थे।

पाक्षिक पत्रिका *'ओरिएण्टल कामर्शियल रजिस्टर'* का प्रकाशन कोलकाता से 2 अप्रैल 1818 को किया गया था। केलकटा टाइम्स प्रेस में छपकर माह की पहली और पंद्रह तारीख को जारी होता था। पत्र में समाचार एवं धातुओं से बनी वस्तुओं विशेषकर मशीन, औजार एवं नट बोल्ट आदि, दवाइयों, लकड़ी के सामान और कपड़े के भाव छपते थे।

दिग्दर्शन आर इंडियन यूथ्स मैगजीन

'दिग्दर्शन आर इंडियन यूथ्स मैगजीन' सेरामपुर मिशन के संरक्षण में नेटिव स्कूलों के विकास के लिए बनी संस्था 'इंस्टिट्यूशन फार दि इनकरेजमेन्ट आफ नेटिव स्कूल्स' की पुस्तिका के रूप में छपती थी। यह संस्था सन 1816 में कायम हुई थी। इसका कार्यालय सेरामपुर के मिशन हाउस में था। विलियम कैरे, जे. मार्शमैन और विलियम वार्ड इसके व्यवस्थापक थे। इसी समिति की ओर से बंगला मासिक *'दिग्दर्शन'* की शुरूआत अप्रैल 1818

1. बंगाल हेरल्ड, 29 नवम्बर 1829, पृष्ठ 423

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हुई। जान क्लार्क मार्शमैन इसके सम्पादक थे।

जिन दो पण्डितों को सेरामपुर मिशन में विद्यालयों की व्यवस्था पद्धति सीखने के लिए भेजा गया था, उन्हीं के अनुवाद के सहारे 'दिग्दर्शन' मासिक के तीन अंकों के हिन्दी संस्करण निकले। इस कार्य के लिए मारकुइस ऑफ हेस्टिंग्स ने 6000 रुपये दिये थे। उसी अनुदान से प्रथम तीन संस्करणों की डेढ़-डेढ़ सौ प्रतियाँ छापी गईं और दिल्ली तथा राजपूताना के विद्यालय के अधिकारियों को भेज दी गईं।

बंगीय परिषद में सुरक्षित बंगला संस्करण पर प्रवेशांक का प्रकाशन वर्ष सन 1818 दिया गया है। लेकिन उत्तरपाड़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित अंक में एक पृष्ठ पर सन 1816 तथा दूसरे पृष्ठ पर सन 1818 अंकित है। 'दिग्दर्शन' के हिन्दी संस्करण के सन्दर्भ में जो कुछ सूचना मिलती है वह 'इंस्टिट्यूशन फार इनकरेजमेण्ट आफ नेटिव स्कूल्स' के माध्यम से, जो इस प्रकार है- ''दिग्दर्शन' मासिक के आरम्भिक तीन अंक हिन्दी भाषा में प्रकाशित हैं। उनका मुद्रण देवनागरी लिपि में हुआ है। इसके अन्य अंक भी सम्भावित हैं। ये सभी हिन्दुस्तान के उन भागों में भेज दिए गए हैं जहाँ स्कूल स्थापित हो चुके हैं। वे इस दिशा में कैप्टन नोवन के विशेष ऋणी हैं कि इन्होंने अपने क्षेत्र में इस दिशा में कई स्कूलों की स्थापना करके विशेष कार्य किया है तथा इस कार्य (हिन्दी पुस्तकों एवं दिग्दर्शन मासिक) को पूर्ण करने के लिए दिल्ली के दो पंडितों को भेजा है। इन दोनों पंडितों की सहायता से समिति ने हिन्दी के उन कार्यों को पूरा किया है। आशा है कि वहाँ के स्कूलों के लिए इनका उपयोग होगा।'' इस सूचना को आधार मान कर विश्लेषण किया जाय तो यह निष्कर्ष निकलता है कि 'दिग्दर्शन' विद्यार्थियों के लिए पुस्तक श्रृंखला थी। इसके प्रकाशन के लिए न तो कोई अनुमति ली गई थी और न इसे समाचारपत्र का रूप दिया गया था। 'दिग्दर्शन' का एक भी स्वतंत्र अंक अभी तक देखने को नहीं मिला। लेकिन पत्र निकालने वालों ने आय व्यय की जो रिपोर्ट प्रकाशित की है उसमें हिन्दी 'दिग्दर्शन' के तीन अंक निकले, ऐसा लेखा-जोखा मिला है।

फ्रेण्ड आफ इण्डिया

जब अँगरेज मिशनरी विलियम कैरी और जे. मार्शमैन बंगाल आए तब कम्पनी के अधिकारियों ने उन्हें सहयोग नहीं दिया। वित्तीय कठिनाई के कारण वे सेरामपुर चले गए जहाँ के डेनिस गवर्नर ने न केवल उनका स्वागत किया वरन उसके सहयोगी व्यवहार के कारण उन्होंने सेरामपुर में ही बसना उचित समझा। वे धर्मप्रचार के उद्देश्य से आए थे। वहाँ उन्होंने मिशन की स्थापना की जो बैप्टिस्ट मिशन के नाम से जाना गया। डा. कैरी इसके संस्थापक हुए, उनके सहयोगी डा. मार्शमैन और वार्ड थे। उन्होंने स्थानीय जनता से विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए बंगला भाषा सीखी। सेरामपुर से उन्होंने तीन पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ किया- (1)*दिग्दर्शन*- बंगला मासिक, (2)*फ्रेण्ड आफ इण्डिया*- अँगरेजी मासिक तथा (3)*समाचार दर्पण*-बंगला साप्ताहिक।

सेरामपुर कालेज की लायब्रेरी में उपलब्ध *'फ्रेण्ड आफ इण्डिया'* की फाइलों के अनुसार इसका पहला अंक मई 1818 में निकला। 'दिग्दर्शन' की तरह यह भी 20 गुणित 30/16 आकार का पत्र था। इस पर सम्पादक का नाम नहीं है, लेकिन सेरामपुर मिशन की पंजियों के मुताबिक सम्पादक डा. मार्शमैन थे। इसमें हिन्दुस्तान के आर्यों और साहित्य के सम्बन्ध में लेखों के अलावा अमेरिका और यूरोप की खबरें दी जाती थीं। यह विलायती कागज पर छपता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी पृष्ठ संख्या लेखों की उपलब्धता पर निर्भर होती थी। कीमत एक रुपया प्रति अंक थी। इसके प्रवेशांक में 6 लेख छपे हैं- (1)बंगाल में धर्म के प्रसार का संक्षिप्त विवरण, (2)श्रीमती मोर का निधन, (3)कलकत्ता बाइबिल सोसायटी का सातवाँ अधिवेशन (4)सेटिन और एडम का आगमन, (5)यूरोप की खबरें तथा (6)अमेरिका की खबरें। अंत में दिग्दर्शन (बंगला) का विज्ञापन छपा है।

दिसम्बर 1819 में पत्र की सफलता से उत्साहित होकर नई योजना बनाई गई जिसके अनुसार इसी नाम से यह पत्र दो श्रृंखलाओं- एक मासिक और दूसरी तिमाही प्रकाशित करने की घोषणा की गई। सितम्बर 1820 में तिमाही श्रृंखला का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। दोनों का कलेवर भिन्न रहता था। तिमाही में अधिकतर विदेशी और भारत के महापुरुषों, धर्म, रीति-रिवाज आदि विषयों पर लेख होते थे।

सन 1826 तक दोनों समाचारपत्र ठीक से निकलते रहे। यह अवश्य था कि तिमाही नियमित नहीं था। सन 1826 में मासिक 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' के आकार को बढ़ा दिया गया और उसकी कीमत भी एक रुपया से बढ़ाकर डेढ़ रुपया कर दी गई। मिशन इसे स्वावलम्बी बनाने की कोशिश में था। यह सितम्बर 1828 तक निकला। जहाँ तक तिमाही 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' का प्रश्न है, जुलाई या अगस्त 1826 में इसका 15वाँ अंक प्रकाशित हुआ। 16वें अंक के बाद यह बंद हो गया। 'इण्डिया रिव्यू'[1] में इनके बंद होने का कारण 'सहयोग का अभाव' बताया गया है।

बंगाल गजट

15 मई 1818 को कोलकाता से *'बंगाल गजट'* निकला। यह बंगला का ऐसा पहला पत्र था जिसके सम्पादक और प्रकाशक सभी बंगाली थे। सम्पादक हारूचन्द्र राय और प्रकाशक गंगाकिशोर भट्टाचार्य थे। दोनों आत्मीय सभा के सदस्य और राजा राममोहन राय के सहयोगी थे। 'बंगाल गजट' में छपे बनारस के 3 अगस्त के एक पत्र में कहा गया है, ''मिदनापुर के बागियों ने, लेन को पार करके, आरा पर धावा बोल दिया। अपनी सुरक्षा के सम्बन्ध में घबराए वहाँ के यूरोपियनों ने सैनिक सहायता के लिए दानापुर लिखा। इसके मुताबिक मलिका के 5वें और 10वें और 37वें सैनिक दस्तों को भरकर दो स्टीमर वहाँ भेज दिये गए। आधी रात में एक स्टीमर कीचड़ में बुरी तरह फँस गई। सैनिकों को जल्दी-जल्दी उतार कर पैदल ही रवाना कर दिया गया। किन्तु आवश्यक सावधानी नहीं बरती गई। यकायक दोनों तरफ से बहुत पास से उन पर जबरदस्त हमला बोल दिया गया और उनकी छोटी सी सेना के 150 आदमियों को जिनमें कई अफसर भी थे, पंगु बना दिया गया। अनुमान किया जाता है कि वहाँ के तमाम यूरोपियनों को जो 47 थे, कत्ल कर दिया गया है।''

समाचार दर्पण

23 मई 1818 को जान क्लार्क मार्शमैन ने *'समाचार दर्पण'* नामक बंगला पत्र सेरामपुर से निकाला था। यह 22 वर्ष तक चलता रहा। उस पर सरकार की कृपा दृष्टि रही। उसे डाक खाने के महसूल का केवल एक चौथाई अंश देना पड़ता था। साप्ताहिक 'समाचार दर्पण' ईसाई धर्म का प्रचार करने के उद्देश्य से निकाला गया था। फिर भी इससे बंगला शिक्षा-प्रचार में

1. इण्डिया रिव्यू, अक्टूबर 1839, पृष्ठ 408

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्वपूर्ण सहायता मिली। 'समाचार दर्पण' के 14 जुलाई 1821 के अंक में जो पत्र छपा था, उसके खंडन में राजा राममोहन राय ने शिवप्रसाद के नाम से एक पत्र भेजा। 'समाचार दर्पण' ने उसे इस शर्त पर छापना स्वीकार किया कि उसका कुछ अंश निकाल दिया जाय। पर राजा साहब ने इसे स्वीकार नहीं किया और शिवप्रसाद शर्मा की ओर से और उनके नाम से ही 'ब्रह्मैनिकल मैगजीन' निकाल दी और इसमें विवाद की चर्चा सहित अपना खण्डन पत्र भी प्रकाशित कर दिया।

अखबार सेरामपुर

बैप्टिस्ट मिशनरियों ने तय किया कि उनके बंगला पत्र 'समाचार दर्पण' का फारसी संस्करण भी प्रकाशित किया जाए तथा इसके लिये शासकीय सहायता माँगी जाए। कौसिल ने इसके लिए एक सौ साठ रुपये देना स्वीकार किया। समाचारपत्र के कर्ताधर्ताओं को निर्देश दिया कि इस पत्र में कोई आपत्तिजनक बात न छापी जाए। कौसिल ने इस पत्र की एक सौ साठ प्रतियाँ मदरसा कलकत्ता, हिन्दू कॉलिज देहली, आगरा और बनारस के कॉलिजों को भेजने का निर्देश दिया तथा इसे भेजने में डाक टिकिटों को भी माफ कर दिया। 'समाचार दर्पण' का फारसी संस्करण '*अखबार सेरामपुर*' शीर्षक से 6 मई 1826 को प्रकाशित किया गया। समाचारपत्र दो वर्ष तक प्रकाशित होता रहा। शासन से आर्थिक सहायता बंद होने पर इसे बंद कर दिया गया।

इसके बाद बंगला 'समाचार दर्पण' 11 जुलाई 1829 से द्विभाषी (बंगला और अँगरेजी) में परिवर्तित कर दिया गया। यह प्रयोग सफल रहा। तब इसे अर्द्धसाप्ताहिक कर दिया गया। व्यवस्था, प्रचार, प्रसार के साधन सीमित होने से 8 नवम्बर 1834 से यह पुनः साप्ताहिक हो गया। इसके बाद यह लगातार 7 वर्षों तक निकलता रहा। सम्पादक मार्शमैन के अन्य दो अँगरेजी समाचारपत्रों 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' और 'गवर्नमेण्ट गजट' में व्यस्त रहने से 'समाचार दर्पण' 25 दिसम्बर 1841 को बन्द हो गया। सन 1842 में 'समाचार दर्पण' नई श्रृंखला के रूप में भगवतीचरण चट्टोपाध्याय के सम्पादकत्व में पुनः प्रकाशित हुआ।

'*एशियाटिक मैगजीन एण्ड रिव्यू एण्ड लिटरेरी एण्ड मेडिकल मिसलेनी*' नामक तिमाही पत्रिका 14 जुलाई 1818 से प्रकाशित होना प्रारम्भ हुई। भारत में ऐसी पत्रिका पहले नहीं छपी थी, जिसमें राजनीतिक समाचारों, समीक्षा, पदस्थापनाएं, स्थानान्तरण आदि जानकारी के अतिरिक्त व्यवस्थित ढंग से व्यक्तित्वों, संस्मरणों, चिकित्सा पद्धतियों और साहित्यिक-सांस्कृतिक विषयों पर पठनीय सामग्री दी जाती हो। छह अंक निकलने के बाद यह पत्रिका बंद हो गई।

केलकटा जर्नल

'केलकटा गजट' में सूचना छापी गई- 'केलकटा गजट' और 'मॉर्निंग पोस्ट' के ग्राहकों और आम नागरिकों को सूचित किया जाता है कि समाचारपत्रों के मालिक दोनों अखबार बंद कर रहे हैं और पाठकों एवं आम नागरिकों की भावनाओं की कद्र करते हुए एक नया अखबार '*केलकटा जर्नल*' आरम्भ कर रहे हैं जिसका प्रथम अंक शुक्रवार, दो अक्टूबर 1818 को प्रकाशित होगा।''[1] यह पत्र पहले साप्ताहिक था। परन्तु चार माह के बाद जनवरी 1819 में सप्ताह में तीन बार और इसके बाद पाँच बार निकलने लगा। इसके पश्चात 2 जुलाई 1819 से दैनिक हो गया। दैनिक होने के सम्बन्ध में 'केलकटा जर्नल'[2] में निम्नलिखित नोटिस

1. केलकटा गजट, 29 सितम्बर 1818
2. केलकटा जर्नल, 19 जून 1819

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित किया गया- ''आगामी एक जुलाई से 'केलकटा जर्नल' सोमवार के अलावा सप्ताह में प्रतिदिन प्रकाशित होगा।''

'केलकटा मिरर' 1818 में प्रकाशित हुआ। परन्तु यह पत्र अधिक समय तक नहीं चला। यह कोलकाता की आर्मेनियन कम्युनिटी का पत्र था। इस समाचारपत्र के अनेक उद्धरण 'एशियाटिक जर्नल' में दिए गए हैं, जिन्हें पढ़कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह पत्र ऐतिहासिक घटनाओं के सम्बन्ध में रोचक जानकारी प्रकाशित करता था।

1819

मासिक पत्रिका *'इण्डियन'*[1] का कोलकाता से 6 सितम्बर 1819 को प्रकाशन आरम्भ हुआ। सम्पादक ने स्पष्ट कर दिया था कि उसका उद्देश्य केवल रोचक जानकारियों से पाठकों को कुछ क्षण के लिए मनोरंजन प्रदान करना है। यह प्रयोग अधिक समय तक नहीं चल सका। पत्रिका बंद हो गई। ईसाई धर्म के प्रचार के उद्देश्य से प्रारम्भ पत्रिकाओं में कोलकाता से प्रकाशित मासिक पत्रिका *'गास्पेल मैगजीन'* का प्रकाशन एक दिसम्बर 1819 से प्रारम्भ हुआ। यह द्विभाषी पत्रिका बंगला और अँगरेजी भाषाओं में प्रकाशित होती थी- एक कालम बंगला में और उसके समानांतर दूसरा कालम अँगरेजी में। एक अंक में 16 पृष्ठ होते थे। एक प्रति की कीमत 4 आना थी। इसका प्रकाशन बंगाल आक्जीलरी मिशनरी सोसायटी ने किया था। दूसरे वर्ष से पत्रिका द्विमासिक हो गई। कुछ वर्षों के बाद पत्रिका बन्द हो गई। जनवरी 1820 से 'गास्पेल मैगजीन' का बंगला संस्करण भी प्रकाशित हुआ था, जो 1823 तक जारी रहा। इसमें जीवन चरित, डायरी, कविताएँ तथा ईसाई धर्म विषयक सामग्री छपती थी।

1820

चर्च मिशनरी सोसायटी ने धर्म प्रचार के उद्देश्य से तिमाही पत्रिका *'क्वार्टरली सरकुलर'* का प्रकाशन मार्च 1820 में किया। अप्रैल 1824 से इसकी समयावधि मासिक हो गई और नाम *'मिशनरी इंटेलीजेंसर'* हो गया। पाँच वर्ष बाद फिर नाम बदला और जुलाई 1829 से इसका नाम *'क्रिश्चियन इंटेलीजेंसर'* हो गया।

1821

बंगाल ईवनिंग पोस्ट

'बंगाल ईवनिंग पोस्ट' का प्रकाशन एक मार्च, 1821 को प्रारम्भ हुआ। यह पत्र भारत के समाचारों को महत्व देता था। स्थानीय समाचार अधिक छपते थे। सम्पादक की हैसियत से बकिंघम की निश्चित नीति नहीं थी। वह 'फ्री लांसर' की भाँति लिखता था और सरकार का विरोध करने से नहीं चूकता था। हैस्टिंग्स ने लेखन के लिए उसे कई बार चेतावनी भी दी थी। न्यायालय में उसके खिलाफ़ मामले प्रस्तुत किए गए। अनेक बार उसकी सुरक्षा भी खतरे में पड़ी। जब जॉन एडम अस्थायी गवर्नर जनरल होकर भारत आया और उसने कुछ नियुक्तियाँ की तब 'केलकटा जर्नल' ने उनका विरोध किया। फिर क्या था, सरकार ने बकिंघम की भारत में रहने की अनुमति समाप्त कर दी और 15 अप्रैल 1823 के पूर्व उसे भारत छोड़ देने का आदेश जारी कर दिया। इसके बाद फ्रांसिस सेण्डीज को सम्पादक नियुक्त किया गया। अब पत्र के सम्पादन की जिम्मेदारी तीन व्यक्तियों पर डाली गई- सेण्डीज, जेम्स सदरलैण्ड और एस.

1. केलकटा जर्नल, 7 अक्टूबर 1819

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरनाट। परन्तु अगस्त 1823 के 'केलकटा जर्नल' ने बकिंघम के भारत छोड़ने के आदेश की पृष्ठभूमि प्रकाशित कर इसमें डा. ब्रायस को जो 'जान बुल इन द ईस्ट' से सम्बंधित थे, जिम्मेदार ठहराया। इस पर सरकार ने आपत्ति की और फलस्वरूप सेण्डफोर्ड अरनाट को भी देश निकाले का आदेश थमा दिया गया। सरकार की निगाह में यह पत्र खतरनाक समझा जा रहा था, इसीलिए ऐसी परिस्थितियां निर्मित की जा रही थीं कि पत्र दम तोड़ दे। अंतत: 9 नवम्बर 1823 को सरकार ने इसे प्रकाशित करने का लायसेंस ही रद्द कर दिया। इस पत्र ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की हिम्मत से लड़ाई लड़ी और उस लड़ाई में वीरगति पाई।

जॉन बुल / इंग्लिशमैन

'जॉन बुल' का प्रकाशन दो जुलाई 1821 को हिन्दोस्तानी प्रेस कोलकाता से हुआ। जेम्स मीकांजी इसके सम्पादक थे। इस पत्र में समाचार पर ज्यादा ध्यान दिया जाता था। सन 1829 के बाद अनेक कारणों से इसकी प्रसार सँख्या गिरने लगी और जब जे.एच. स्टॉक्यूलर ने सन 1833 में जिम्मेदारी ली, तब यह बन्द होने के कगार पर पहुँच गया था। यह पत्र स्वतंत्रता के हामी 'केलकटा जर्नल' का विरोध करने के लिए निकाला गया था। दोनों में खूब नोक झोंक होती थी। 'तिमिर नाशक' ने इस सम्बन्ध में लिखा था- 'केलकटा जर्नल' में बकिंघम ने कम्पनी सरकार के कार्यों की खूब खिंचाई की थी, जबकि 'जान बुल', 'केलकटा जर्नल' के समाचारों का खुला प्रतिवाद करता था। दोनों पत्रों में प्रकाशित समाचारों को जानने की सबको उत्सुकता रहती थी। मार्च 1823 में जेम्स सिल्क बकिंघम के निर्वासन और नवम्बर 1823 में 'केलकटा जर्नल' का लायसेंस रद्द होने के बाद 'जान बुल' में पाठकों की रुचि समाप्त हो गई।

सन 1825 में जब कम्पनी ने अपने कर्मचारियों के समाचारपत्रों से सम्बद्ध होने पर प्रतिबन्ध लगा दिया तब इसकी स्थिति बिगड़ने लगी। दो मालिक अलग हो गए। बाद में इसका स्वामित्व क्रुटेन्डर मीकिलॉप एण्ड कम्पनी के पास आ गया जो सन 1832 में दिवालिया हो गई। देनदारियों को पूरा करने के लिए 'रिसीवर' नियुक्त किया गया जिससे नीलामी में जे.एच.स्टॉक्यूलर ने 'जान बुल' एक मई 1833 को खरीद लिया। स्टॉक्यूलर ने पत्र को नए सिरे से अच्छा निकालने का प्रयत्न किया। वे इस क्षेत्र में अनुभवी थे। इसकी नीति भी बदली। द्वारकानाथ टैगोर ने भी वित्तीय मदद पहुँचाई। फिर पुराने नाम को बदलना ठीक समझा गया। एक अक्टूबर 1833 से 'इँग्लिशमेन' नाम से प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ। इसका आकार 50 गुणित 30 से.मी. था। सन 1837 में इसका शीर्षक बदल कर 'इँग्लिशमेन एंड मिलिटरी क्रॉनिकल' कर दिया गया। तब तक यह पत्र स्वतंत्र पत्रकारिता का पक्षधर हो गया था। उल्लेखनीय है कि सी.टी.मेटकाफ ने 15 सितम्बर 1835 को प्रेस पर से बंधन उठा लिया था। फरवरी 1839 में जे.डब्ल्यू. जानसन, जो बैरिस्टर थे, इंग्लैण्ड से आकर इसके संयुक्त सम्पादक बने। वे यहाँ 1840 तक ही रह पाए। प्रथम ब्रिटिश-अफगान युद्ध के समय जे.एच.स्टॉक्यूलर स्वयं युद्ध संवाददाता बनकर सीमाओं पर गए, तब सम्पादकीय कार्य ब्लेकबर्न देखने लगे। स्टॉक्यूलर को सन 1842 में अपना समाचारपत्र 13,000 पाउंड में बेचकर स्वदेश लौटना पड़ा। नए मालिक डब्ल्यू.ई.हैरी इसे निकालने लगे, परन्तु इसमें वह बात नहीं थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातीय चेतना और समाज सुधार

संवाद कौमुदी

सदियों की गुलामी से जर्जर हुए भारतीय समाज में नये प्राण फूँकने के लिए साहस भरी पहल और अनथक संघर्ष करने वाले राजा राममोहन राय ने अपने अनुष्ठान को मुखर करने के लिए पत्रकारिता को माध्यम बनाया। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की लड़ाई भी उन्होंने लड़ी और अमानुषिक सती प्रथा पर कानूनी रोक लग पाने के लिए वे ही श्रेय के अधिकारी हैं। राजा राममोहन राय ने 'शिवप्रसाद' के नाम से सितम्बर 1821 में अँगरेजी और बंगला में *'ब्रह्मैनिकल मैगजीन'* का प्रकाशन किया। इसके एक पृष्ठ पर बंगला भाषा में जो सामग्री प्रकाशित की जाती थी, उसी को साथ के पृष्ठ पर अँगरेजी में भाषान्तरित करके छापा जाता था। इसमें उन सभी आरोपों का उत्तर दिया जाता था, जिनमें हिन्दुत्व का मजाक उड़ाया जा रहा था। इस पत्र के तीन अंक प्रकाशित हो पाए। चार दिसम्बर, 1821 को बंगला साप्ताहिक *'संवाद कौमुदी'* ताराचन्द दत्त एवं भवानीचरण बनर्जी द्वारा प्रकाशित और राजा राममोहन राय के सम्पादन में एक गम्भीर और सुविचारित पहल के रूप में सामने आया। ब्रह्म समाज के इस मुख पत्र से लगभग तीन माह तक वे जुड़े रहे। परन्तु सती प्रथा जैसे मुद्दों पर मतभिन्नता के कारण वे अलग हो गए। सन 1821 में अँगरेज जज द्वारा एक भारतीय प्रतापनारायण दास को कोड़े लगाने की सजा दी गई, जिसके कारण जेल में उसकी मृत्यु हो गई। इस बर्बरता के विरुद्ध आवाज उठाते हुए राजा राममोहन राय ने सम्पादकीय लेख में न्यायपालिका के सम्बन्ध में निम्नलिखित मुद्दे उठाए- (1) जूरी प्रथा आरम्भ की जाए, (2)न्यायाधीश और दण्डाधिकारी के पद पृथक किए जाएं, (3)न्यायालय की कार्यवाही आम जनता के लिए खुली हो, (4)उच्च पदों पर भारतीयों की अधिकाधिक नियुक्ति हो, (5)पंचायतें कायम की जाएं और (6)भारतीय पृष्ठभूमि पर आधारित विधि का निर्माण हो।

'केलकटा जर्नल'[1] ने लिखा कि 'संवाद कौमुदी' में धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक विषयों के साथ ही देश और दुनिया के समाचार तथा स्थानीय समाचारों की जानकारी जनता को दी जाएगी। प्रति मंगलवार प्रकाशित होने वाले इस समाचारपत्र के विषयों का दायरा व्यापक था, जिसमें सामाजिक, नैतिक, धार्मिक आदि सभी विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती थी। उन दिनों भारतीय समाज की पहचान अशिक्षा, अज्ञान, अन्धविश्वास, बीमारी, भुखमरी, कुप्रथाओं,

1. केलकटा जर्नल, 20 दिसम्बर 1821

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुसंस्कार, कूपमंडूकता आदि विकारों से ग्रस्त समाज की थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शिकंजा कस रहा था और गुलामी के अभिशाप से भारतीयों का मनोबल पस्त था। हिन्दू विधवाओं को सती प्रथा के नाम पर पति की चिता में जिंदा झोंक देने की बर्बरता भारतीय समाज के मानसिक पतन की पराकाष्ठा ही मानी जाएगी। राजा राममोहन राय की 'संवाद कौमुदी' ने अमानवीय सती प्रथा के विरुद्ध जिहाद छेड़ा। इस संघर्ष की प्रतिक्रिया यथास्थितिवादियों पर कैसी हुई, इसका एक उदाहरण 'केलकटा जर्नल' की इस टिप्पणी से प्रगट होता है- ''वह पत्र जो बारूद की भाँति विस्फोटक होकर पूरे देश में हलचल मचा रहा था, जनता की सहानुभूति के अभाव में मुँह के बल गिर पड़ा। विशेषत: उन लेखों के कारण जिनमें हिन्दू विधवाओं को जलाने का कड़ा विरोध किया गया है।''[1]

14 मार्च, 1823 को गवर्नर जनरल ने एक अध्यादेश जारी कर जब प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया और अखबारों के सम्पादकों-प्रकाशकों से यह लिखित आश्वासन माँगा कि सरकार द्वारा निषिद्ध विषयों पर वे कलम नहीं चलाएंगे, तब राजा राममोहन राय ने न्यायालय में इस अध्यादेश को चुनौती दी। लेकिन उनकी याचिका खारिज कर दी गई। तब राजा राममोहन राय ने सरकार के सामने झुकने के बजाय अखबार को बंद करना बेहतर माना। वे यह याचिका प्रिवी कौंसिल तक ले गये। वहाँ भी उन्हें असफलता हाथ लगी। फिर भी उनका संघर्ष व्यर्थ नहीं गया। अन्तत: गवर्नर जनरल चार्ल्स मेटकाफ को प्रेस की आजादी बहाल करनी पड़ी।

'संवाद कौमुदी' के प्रारम्भ के कुछ अंकों में सम्पादक के रूप में भवानीचरण बनर्जी का नाम आया है, यद्यपि शुरू से ही राजा राममोहन राय इसके मुख्य कर्ता रहे। हारूचंद्र राय, गंगाकिशोर भट्टाचार्य, भवानीचरण बनर्जी और ताराचंद्र दत्त का सहयोग उन्हें प्राप्त था। ये सभी ब्रह्म समाज के सामाजिक सुधार अभियान के सक्रिय सहयोगी थे। शिक्षा में सुधार, जाति-पाँति और छुआछूत पर प्रहार भी उनके अभियान के हिस्से थे। 'संवाद कौमुदी' ने पारिवारिक रीति-रिवाजों और त्यौहारों-उत्सवों आदि पर ज्यादा धन खर्च करने का विरोध किया और यह अपेक्षा की कि यह धन कला और विज्ञान पर खर्च किया जाये तो समाज की भलाई के काम आएगा। उस युग में राजा राममोहन राय ने तकनीकी शिक्षा की जरूरत पहचानी थी और उस पर जोर दिया था। राजा राममोहन राय के इंगलैण्ड प्रवास के दरम्यान 11 मई, 1822 से गोविन्दचन्द्र कोनार ने 'संवाद कौमुदी' का सम्पादन किया, लेकिन बमुश्किल चार माह ही इसका प्रकाशन हो पाया। तदनन्तर 18 अप्रैल 1823 को कोनार और आनंद गोपाल मुखोपाध्याय ने नया लायसेन्स लेकर इस अखबार को पुन: प्रकाशित किया और मुखोपाध्याय सम्पादक हुए। लगभग दस वर्ष तक इसका प्रकाशन होता रहा। सन 1830 में 'संवाद कौमुदी' अर्द्ध साप्ताहिक हो गया था। कुछ समय राजा राममोहन राय के सुपुत्र राधाप्रसाद राय भी 'संवाद कौमुदी' के सम्पादक रहे।

1822

समाचार चन्द्रिका

'संवाद कौमुदी' जहाँ उदारवादी समूह का प्रतिनिधित्व करती थी, वहीं पाँच मार्च 1822 को प्रकाशित *'समाचार चन्द्रिका'* हिन्दूवादी पत्रिका थी। इसने जहाँ पश्चिमी शिक्षा के प्रसार, सती प्रथा बन्द करने की मुहिम का विरोध किया, वहीं जब 1829 में सती प्रथा को कानूनी तौर

1. केलकटा जर्नल, 24 फरवरी, 1823

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

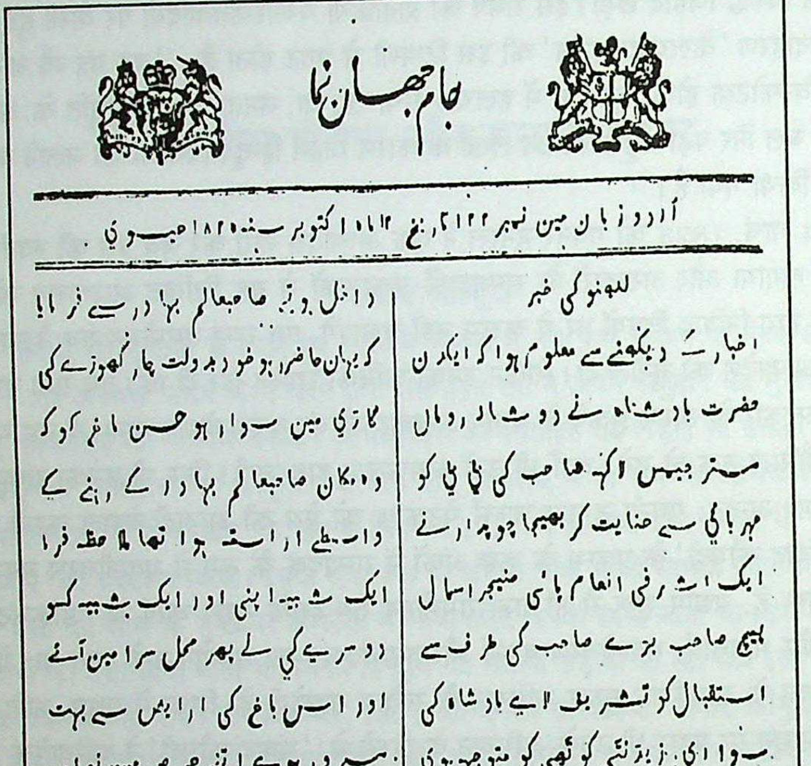

جام جہان نما

اردو زبان مین نمبر ۱۲۲ بتاریخ ۱۶ اکتوبر سنہ ۱۸۲۲ عیسوی

لکھنو کی خبر

اخبار کے دیکھنے سے معلوم ہوا کہ ایک دن
حضرت بادشاہ نے دوشالہ رومال
مستر جیمس الکہ صاحب کی بی بی کو
مہربانی سے عنایت کر بھیجا چوبدار نے
ایک اشرفی انعام پائی منیجر اسمال
بیبج صاحب بڑے صاحب کی طرف سے
استقبال کو تشریف لائے بادشاہ کی
سواری رزیڈنٹی کوٹھی کو متوجہ ہوئی
کوٹھی کے متصل کمپنی سپاہیون کی
صف باندھے کھڑی تھی ان سبھو نے
موافق دستور کے سلامی کی رزیڈنٹ صاحب
کوٹھی سے نکل حضرت کو اندر لے گئے
حاضری کھائی خلوت مین کچھ باتین ہوئین
معتمد الدولہ بھی حاضر تھے حضرت عطر لے
بلدی ہالی کو جنہنے نقلی میوے کی ڈالی
گذرانی تھی پانچ روپے انعام دیے
وہان سے سوار ہوے محلسرا مین

داخل ہوئے صاحب عالم بہادر سے فرمایا
کہ یہان حاضر ہو خود بدولت چار گھوڑے کی
گاڑی مین سوار ہو حسن باغ کو کہ
وہ مکان صاحب عالم بہادر کے رہنے کے
واسطے آراستہ ہوا تھا ملاحظہ فرما
ایک شیشہ اپنی اور ایک شیشہ کسو
دوسرے کی لے پھر محل سرا مین آئے
اور اس باغ کی آرایش سے بہت
مسرور ہوئے اتنے عرصے مین نواب
معتمد الدولہ جو حضور کے حکم سے
رزیڈنٹ صاحب کی خدمت مین رہے تھے
حضور مین آئے حالات گذارش کر کے
صاحب عالم بہادر کے ساتھ رخصت ہوئے
اور حضرت بجرے پر سوار ہو کوٹھی
محل کو تشریف لے گئے اور ایک
خوان الناس کا سرفراز محل صاحب
کو بھجوا دیا امرت لال جرمن بیگی سے
بس تلوارین خاص کوٹھی سے منگوا کر

जाम-ए-जहाँनुमा (उर्दू) कोलकाता, सन 1822

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर प्रतिबंधित किया गया तब उसका यह कहकर विरोध किया कि हिन्दुओं की इस प्रथा में शासन अनधिकार हस्तक्षेप कर रहा है। यही नहीं, लगातार ऐसे समाचार, जहाँ पति की चिता में पत्नी सती हुई, प्रकाशित किए, ताकि यह सिद्ध हो सके कि कानून का कोई प्रभाव नहीं हुआ। 'समाचार चन्द्रिका' ने ईसाई मिशनरियों का विरोध किया और जिन लोगों ने धर्म परिवर्तन किया था, उनके खिलाफ लिखा। इसने सरकारी अधिकारियों और उनके द्वारा की जा रही घूसखोरी का खुलकर विरोध किया और कहा कि यदि सरकारी अधिकारी और कर्मचारी ईमानदार और निष्पक्ष होते तो ब्रिटिश शासन रामराज्य हो जाता। अप्रैल 1829 में पत्र अर्द्ध साप्ताहिक हो गया। भवानीचरण बनर्जी ने इसका सम्पादन मार्च 1822 से 1848 तक किया। इसके बाद उनके पुत्र राजकृष्ण ने इसे सम्हाला। परन्तु आर्थिक संकट के कारण वे इसे नहीं चला पाए। तब भगवतीचरण बनर्जी ने इसे खरीद लिया। बाद में यह दैनिक हो गया। अँगरेज और एंग्लो-इण्डियन इसे बंगला का 'केलकटा टाइम्स' कहा करते थे।

'ब्रिटिश इण्डियन मिलिटरी रिपॉजिटरि' छमाही पत्रिका थी जो जनवरी 1822 में निकली। यह कोलकाता के चर्च मिशन प्रेस से मुद्रित होती थी। एक प्रति की कीमत छह रुपये थी। इसके सम्पादक और स्वामी कैप्टन सेमुएल पार्लकी थे जो बंगाल आर्टीलरी दमदम में माडल मास्टर थे। जब पार्लकी का इलाहाबाद स्थानान्तर हो गया, तब इसका कॉपीराइट सेमुएल स्मिथ एण्ड कं. को हस्तांतरित कर दिया। पत्रिका तिमाही कर दी गई। कीमत चार रुपये हो गई। सन 1833 में पत्रिका बन्द हो गयी।

फरवरी 1822 में कोलकाता से मासिक *'पशुबलि'* का प्रकाशन हुआ। इसे कोलकाता स्कूल बुक समिति ने निकाला था। इस बंगला पत्रिका के पहले सम्पादक डब्लू.एच.पियर्स थे।

जाम-ए-जहाँनुमा

उर्दू पत्रकारिता का प्रादुर्भाव सन 1822 में हुआ जब उर्दू का पहला समाचारपत्र *'जाम-ए-जहाँनुमा'* 27 मार्च 1822 को कोलकाता से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक मुंशी सदासुख मिर्जापुरी थे जो पूर्व में 'समाचार चन्द्रिका' से सम्बद्ध रह चुके थे। प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित होने वाले इस साप्ताहिक को विलियम हॉपकिंस के मिशन प्रेस में छापा जाता था। समाचारपत्र के संचालक हरिहर दत्त थे। 20 गुणित 28 से.मी. आकार के इस पत्र में छह पृष्ठ होते थे।

प्रारम्भ में 'जाम-ए-जहाँनुमा' केवल उर्दू भाषा में निकाला गया था। इसके आठवें अंक से, जो बुधवार 15 मई 1822 को प्रकाशित हुआ, इस समाचारपत्र में एक कालम फारसी भाषा में भी शुरू किया गया। यह कालम इतना लोकप्रिय हुआ कि दो अंक निकलने के पश्चात उर्दू भाषा में आरम्भ हुए इस पत्र का प्रकाशन फारसी में ही किया जाने लगा।

'केलकटा जर्नल'[1] ने लिखा- ''जिस हिन्दुस्तानी अख़बार के अब तक छह अंक प्रकाशित हो चुके हैं, उसकी भाषा में निकट भविष्य में परिवर्तन किया जाने वाला है।'' 'केलकटा मंथली जर्नल'[2] में सम्पादक के नाम एक पत्र में किसी ने फारसी के समाचारपत्र 'जाम-ए-जहाँनुमा' के ग्यारहवें अंक का उल्लेख किया है। इससे प्रमाणित होता है कि इस समाचारपत्र की भाषा जून 1822 तक फारसी हो चुकी थी। एक वर्ष पश्चात फारसी भाषा के साथ-साथ पत्र में उर्दू का एक परिशिष्ट भी निकाला जाने लगा। इस परिशिष्ट के प्रकाशन की सूचना प्रत्येक अंक

1. केलकटा जर्नल, 8 मई 1822
2. केलकटा मन्थली जर्नल, जिल्द-9, पृष्ठ 661

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मुख पृष्ठ पर अँगरेजी में दी जाती थी- "जाम-ए-जहाँनुमा के सम्पादक सूचित करते हैं कि यूरोप के वासियों के लिए पत्र को मनोरंजक और लाभप्रद बनाने के लिए यह निर्णय लिया गया है कि इस पत्र का सम्पादक मंडल समाचारपत्र के साथ उर्दू का एक परिशिष्ट प्रकाशित करेगा। यदि इसका क्रय फारसी के समाचारपत्र के साथ किया जाएगा तो इसका मूल्य चार आना प्रति अथवा एक रुपया मासिक होगा। परन्तु यदि केवल उर्दू परिशिष्ट लिया जाएगा तो उसका शुल्क दो रुपये मासिक होगा।" चीफ़ सेक्रेट्री विलियम ब्रुथ बैले ने 'जाम-ए-जहाँनुमा' पर टिप्पणी लिखी- "यह समाचारपत्र भविष्य में अँगरेज सत्ता के विरुद्ध आग लगाने वालों का नेतृत्व कर सकता है।"

'जाम-ए-जहाँनुमा'[1] में प्रकाशित खबरों से तत्कालीन परिस्थितियों और मानसिकता का खुलासा होता है। इसमें प्रकाशित 'लखनऊ की खबर' दृष्टव्य है- "अखबार के कागज़ से दरियाफ्त हुआ के रबीउसानी महीने की पहली तारीख मंगल के दिन उस रोज़ मुआफ़िक मामूल साहब रेज़ीडेन्ट बहादुर के वास्ते हाज़री की तैयारी थी- हज़रत बादशाह करावली की तरफ से सैर करके क़सरे बादशाही में रौनक़अफरोज हुए। पाँच घड़ी दिन चढ़े तक मुन्तज़र बैठे थे के साहब रेजीडेन्ट बहादुर आये। आठ अँगरेज आलीक़द्र साथ लाए। जहाँपनाह ने सब साहबों के साथ हाज़िरी तनावुल फरमाई और इसके बाद इख़्तलात की बातें हुआ कीं। आखिर बड़े साहब रुख्सत के वक्त इत्रपान जो कुछ के रस्म है लेकर कोठी को सवार हो गये। तुस पीछे जब हज़रत के खाने का वक्त आया और सब किस्म का खाना दस्तरख्वान पर चुना गया। हज़रत ने खुश्के के चावलों को बादशाही तोआम के लायक़ न देखा। गुलाम हुसैन खां दारोग़ा को इरशाद हुआ के लल्लू मोदी और चिमनलाल मुशर्रिफ बावर्चीखाने का मुकीद हो आखिर दोनों ने अपनी गफ़लत पर नादिम होकर पाँच हज़ार रुपये अहमक़ाना के गँवाए के बादशाह खताबख्श ने क़ुसूर माफ़ फरमा दिया और जिस वक़्त हज़रत बाला दस्तगाह को खासा खाने से फराग़त हुई तो अब मोतमिद्दोला बहादुर मतालिब माली व मुल्की अर्ज़ करके अपने घर को गये।"

'जाम-ए-जहाँनुमा'[2] में 'धुएं का जहाज' शीर्षक समाचार कथा छपी है- "बहुत दिनों से यह खबर मशहूर थी के इंग्लिस्तान में एक जहाज़ तैयार होता है के जिस तरह एक नाव पिछले बरस कलकत्ते में आई के सिर्फ धुएँ के ज़ोर से चढ़ाव उतार पर बेतकल्लुफ़ दरिया में चली जाती थी वो जहाज़ इस तरह बे-खटके बहरेमुहील में आमदवशुद करेगा और इस जहाज़ के बनाने वाले ने इंग्लैंड से कलकत्ते पहुँचने की पचहत्तर दिन मुद्दत ठहराई है किस वास्ते के वो जहाज़ पानी से इलाक़ा नहीं रखता जो हवा का मोहताज हो उसको आँधी तूफ़ान मौसम ग़ैरमौसम सब बराबर है। बारे पिछले हफ्ते में वो जहाज़ विलायत से आया जिस दिन वो कलकत्ते पहुँचा दरिया के किनारे एक अंबोह जमा था हफ़्ते अक़लीम के सैयाह इकट्ठे हुए थे किस वास्ते के अगले ज़माने में किसू ने जहाज़ का नाम नहीं सुना है चंद नाव के देखने से लोगों ने समझा था के जहाज़ भी बन सकता है हर बड़े रियाज़ीदां जिन्हों को इस इल्म में दावा है वह कहते थे के ऐसा जहाज़ विलायत से कलकत्ते हरगिज़ न पहुँचेगा इस जहाज़ की तैयारी और जल्द रफ्तारी को देखकर सब खिलक़त दंग हो गई और रियाज़ी के अहले कमाल हैरान होकर कहने लगे के सचमुच में जहाज है, जो धुंऐ के ज़ोर से चला आता है या कोई तिलिस्म है के दिखलाई देता

1. जाम-ए-जहाँनुमा, 29 दिसम्बर 1824
2. जाम-ए-जहाँनुमा, 28 दिसम्बर 1825

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है इस जहाज़ के बनानेवाले को हज़ार आफरीन कहना चाहिए बशर का यह काम नहीं ऐसी नादिर सनात का ईजाद करना बहुत मुश्किल है इस सबब से के बनाने वाला मौजूद देखने वालों ने बनते हुए अपनी आँखों से देखा सबको यक़ीन हुआ। अगले वक़तों में किसी ने बनाया होता तो बहोत लोग भी कहते के इसके बनाने वाले के फरिश्ते मददगार थे। उसने धुँऐ का जहाज़ नहीं बनाया खल्क़ को अपना मोजज़ा दिखलाया गर्ज़ जिस क़दर सतायिश लोगों ने की अगर लिखी जावे तो एक दफ्तर में गुंजायश न पावे। अब देर रसी का सबब गुज़ारिश किया जाता है के इस मर्तबा जहाज़ 109 दिन में इंग्लिस्तान से कलकत्ता पहुँचा। 34 दिन मुक़र्ररी मियाद से बढ़ गये उसका सबब यह हुआ के कोयला जहाज़ में कम हो गया जितना कोयला दरकार था उतना राह में न मिला आखिर जिसक़दर कोयला मयस्सर हुआ उसको जलाते हुए जहाज़ कलकत्ते में लाए वज़न मुताबिक़ जो बनाने वाले ने तजबीज़ किया है अगर कोयला दिनरात आतिशखाने में जलता धुँआ इस अंदाज़ पर निकलता के उसके ज़ोर से जहाज़ पचहत्तर दिन में कलकत्ता पहुँचता। इसके सिवा जहाज़ की बनावट में कुछ फ़ितूर नहीं है। अब जहाज़ के कप्तान ने जगह जगह जज़ीरों में कोयले का बंदोबस्त किया है आयंदा जहाँ दरकार होगा वहाँ से कोयला मिलेगा और जहाज़ पचहत्तर दिन में बेशक इंग्लैंड से कलकत्ता और कलकत्ते से इंग्लैंड आया जाया करेगा और इंग्लैंड के बहुत सारे अमीर जिनको हिन्दुस्तान देखने की आरज़ू है कम फुर्सती के सबब ऐसा दराज़ सफर नहीं कर सकते थे के सिर्फ आमदरफ़्त में एक बरस गुज़र जाता। सैर के दिन एक बरस से ज्यादा होते अब यक़ीन है कि इस जहाज़ के वसीले से हिन्दुस्तान देखेंगे। किस वास्ते के आमद रफ़्त की मुद्दत पाँच महीने से ज्यादा नहीं।''

'जाम-ए-जहाँनुमा' की भाषा सरल और शैली सुलझी हुई होती थी। इसकी प्रसार सँख्या कम थी, फिर भी इसमें प्रकाशित समाचार, लेख आदि पाठकों की आवश्यकता को दृष्टिगत रख कर ही प्रकाशित किए जाते थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नीति फारसी भाषा के प्रचलन को देश से मिटा देने की थी।

'जाम-ए-जहाँनुमा' के मुखपृष्ठ पर कम्पनी की मोहर 27 अगस्त 1828 तक लगाई जाती रही, किन्तु इसके बाद के अंकों पर यह नहीं दिखती। इसके साथ-साथ एक परिवर्तन और दिखाई देता है कि स्थानान्तरण अथवा नियुक्ति के समाचार बाद के अंकों में नहीं मिलते। कम्पनी के संरक्षण में परिवर्तन से समाचारपत्र के संचालक को आर्थिक हानि अवश्य हुई, किन्तु यह परिवर्तन अखबार के लिए लाभ का सौदा रहा। पत्र का दब्बूपन समाप्त हो गया। जिस दिन से कम्पनी का साया इस समाचारपत्र से उठा, उसी दिन से इस पत्र का अपना प्रेस भी हो गया। तीन सितम्बर 1828 से 'जाम-ए-जहांनुमा' अपने प्रेस में छपने लगा।

मिरात-उल-अख़बार

राजा राममोहन राय ने 12 अप्रैल 1822 को कोलकाता से फारसी भाषा के *'मिरात-उल-अख़बार'* का प्रकाशन आरम्भ किया। समाचारपत्र के प्रकाशन की घोषणा करते हुए कहा गया- ''अवाम को मुत्तला किया जाता है कि इस मुल्क में अख़बारबीं तबक़े के लिए बहुत से अखबार शाया होते हैं लेकिन अब तक फ़ारसी का कोई अख़बार शाया नहीं हुआ है। जिससे उन लोगों को जो अँगरेजी से नावाकिफ़ हैं और शुमाली खुसूसन ख़बरें मालूम हो सकें, चुनांचे एडीटर 'मिरात-उल-अख़बार' के इजरा का काम शुरू कर रहा है।''

'मिरात-उल-अख़बार' का मंतव्य प्रगट करते हुए राजा राममोहन राय ने पहली टिप्पणी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा- ''कुछ अँगरेज देश और विदेश के समाचार प्रकाशित करते हैं किंतु इससे केवल वे ही लोग लाभ उठा पाते हैं जो अँगरेजी जानते हैं। जो लोग अँगरेजी नहीं जानते वे ख़बरों को दूसरों से पढ़वाते हैं या फिर उनसे अनजान बने रहते हैं, ऐसी दशा में मुझे फारसी में एक साप्ताहिक अख़बार प्रकाशित करने की आवश्यकता महसूस हुई। बहुत से लोग फ़ारसी भाषा जानते हैं अतएव यह अख़बार बहुत से लोगों तक पहुँचेगा। इस अख़बार के प्रकाशन से मेरा अभिप्राय न तो धनाढ्य व्यक्तियों की और न अपने मित्रों की प्रशंसा करना है और न मुझे यश और कीर्ति की अभिलाषा है। इस पत्र के प्रकाशन से मेरा अभिप्राय यह है कि जनता के समक्ष ऐसी बातें प्रस्तुत की जाएं जिनसे उनके अनुभवों में वृद्धि हो, सामाजिक प्रगति हो, सरकार को जनता की स्थिति मालूम रहे और जनता को सरकार के कामकाज और नियम-क़ानूनों की जानकारी मिलती रहे।''

'केलकटा जर्नल'[1] बताता है कि 'मिरात-उल-अख़बार' के प्रवेशांक में क्या-क्या छपा था- (1)सम्पादकीय टिप्पणी, (2)कम्पनी के नियम जिसके अनुसार कम्पनी के कर्मचारी बीमार होने पर अवकाश प्राप्त कर सकते थे, (3)चीन में मतभेद, (4)टपरा के जज जॉन हेज का मुकदमा, (5) 26 अप्रैल को सम्राट की वर्षगांठ के अवसर पर बंदियों की रिहाई, (6)जहाजरानी के समाचार, (7)रूस और सबलाईन कोर्ट के बीच मतभेद, (8)रणजीत सिंह के कारनामे, (9)इस वर्ष हिन्दुस्तान में अच्छी फसल, (10)हाथी का जोड़ा बिक्री के लिए, (11)अफीम और नील के मूल्य और (12)शाहजहाँबाद को ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा अँगरेजी स्कूल खोलने के लिए सहायता की पेशकश जिस पर स्थानीय निवासियों ने कोई ध्यान नहीं दिया।'केलकटा जर्नल' ने लिखा- ''देशी भाषाओं में प्रकाशित समाचारपत्रों में अन्य कोई पत्र इतना अच्छा नहीं निकलता जितना कि 'मिरात-उल-अखबार'।''

यह साप्ताहिक एक वर्ष ही चल पाया था कि प्रेस की आजादी में बाधा डालने वाले प्रेस अध्यादेश के विरोध में राजा राममोहन राय ने 'मिरात-उल-अखबार' का प्रकाशन बंद करने की घोषणा करते हुए 4 अप्रैल 1823 को अन्तिम सम्पादकीय लिखा- ''शपथ पत्र पर विश्वास दिलाने के बाद भी जब प्रतिष्ठा को आघात लगता है और हर समय लायसेंस रद्द करने का डर बना रहता है, तब दुनिया के समक्ष मनुष्य मुँह दिखाने लायक नहीं होता इससे मन की शांति भंग होती है। स्वभावतः मनुष्य से गलती होती है। अपनी भावना को प्रकट करते समय जिन शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया जाता है तो उनका अपने पक्ष में अर्थ निकाल कर शासन के रोष का सामना करना पड़ता है।'' सन 1823 के प्रेस आर्डिनेंस के खिलाफ राजा राममोहन राय ने जो आन्दोलन प्रारम्भ किया था उसे बंगाल के उदारवादी व्यक्तियों और 'यंग बंगाल' ने 12 वर्षों तक चलाया। तीन अगस्त 1835 को गवर्नर जनरल मेटकाफ ने प्रेस पर लगाया अंकुश वापिस ले लिया। इस प्रकार जन आन्दोलन की जीत हुई, जिसके अगुआ राजा राममोहन राय थे।

मुम्बई से 26 अप्रैल 1822 को फ़ारसी में *'आईना-ए-सिकंदरी'* का प्रकाशन किया गया। यह साप्ताहिक समाचारपत्र था, जो शनिवार को निकाला जाता था। इसमें 30 गुणित 20 से.मी. आकार के बारह पृष्ठ होते थे। सन 1833 तक इसका प्रकाशन फ़ारसी भाषा में हुआ। सन 1834 में इसके साथ उर्दू का एक परिशिष्ट भी प्रकाशित किया जाने लगा।

---

1. केलकटा जर्नल, 20 अप्रैल 1822

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुम्बई समाचार

'मुम्बई समाचार' एशिया महाद्वीप का सबसे पुराना जीवित अखबार है जो सन 1822 से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है। 'मुम्बई समाचार' के संस्थापक-सम्पादक फरदुनजी मर्झवानजी को गुजराती का पहला मुद्रणालय स्थापित करने का श्रेय जाता है। सन 1812 में यह प्रेस कायम हुआ और इसी प्रेस से एक जुलाई 1822 को 'श्री मुम्बइना समाचार' का प्रकाशन गुजराती साप्ताहिक पत्र के रूप में हुआ। इसके पीछे बंगला पत्र 'समाचार दर्पण' की प्रेरणा थी। पश्चिम भारत में गुजराती में कोई पत्र शुरू किया जाए, यह विचार फरदुनजी के मन में आया। इसे उनके मित्रों ने बहुत पसन्द किया। इनमें मुम्बई के तत्कालीन गवर्नर माउण्ट स्टूअर्ट एलफिन्स्टन प्रमुख थे। छापाखाने के लिए कोलकाता से मराठी, अँगरेजी, फारसी का नया टाइप मँगवाया गया। 10 जून 1822 को नोटिस जारी किया गया कि एक जुलाई 1822 से गुजराती भाषा में प्रति सप्ताह 'श्री मुम्बइना समाचार' प्रकाशित किया जाएगा। कुछ ही दिनों में 150 ग्राहकों ने समाचारपत्र खरीदने के लिए अपने नाम दर्ज कराये। 50 प्रतियाँ गवर्नर एलफिन्स्टन ने ली थीं। साप्ताहिक के रूप में 'श्री मुम्बइना समाचार' का अंतिम अंक सोमवार दो जनवरी 1832 को प्रकाशित हुआ और तीन जनवरी 1832 से वह दैनिक 'मुम्बई समाचार' के रूप में प्रकाशित होने लगा। लेकिन प्रेस की तकनीकी कठिनाइयों की वजह से कुछ समय बाद अर्द्धसाप्ताहिक निकलने लगा। सन 1855 तक यही स्थिति रही। प्रत्येक रविवार और बुधवार को 'मुम्बई समाचार' प्रकाशित होता था।

सन 1827 के बाद घटनाचक्र कुछ ऐसा चला कि 'श्री मुम्बइना समाचार' के प्रेस, फरदुनजी के बंगले, वाड़ी आदि पर जब्ती की नौबत आ गई। इन्हीं हालात के बीच 11 अक्टूबर 1832 को फरदुनजी दमन जाकर रहने लगे। 27 मार्च 1847 को उनका निधन हो गया। उनके प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप प्रकाशित लेख में फरदुनजी की तुलना 'गुटेनबर्ग' से की गई थी।

'मुम्बई समाचार' की भाषा सरल तथा शैली सधी हुई थी। इसकी खबरों में व्यापारी जगत के लिए उपयोगी समाचारों की बहुलता होती थी और इसकी लोकप्रियता का एक बड़ा आधार भी यही रहा। 'मुम्बई समाचार' का आकार 25 गुणित 20 से.मी. और पृष्ठ सँख्या 14 थी। प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापन छापे जाते थे।

27 जून 1866 से 29 मार्च 1898 तक माणिकजी बरजोरजी के संचालन-सम्पादन काल में 'मुम्बई समाचार' ने उल्लेखनीय प्रगति की। एक अच्छे अखबार के रूप में इसकी लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ी और प्रसार सँख्या बढ़ कर 3200 हो गई। मुम्बई सरकार की तब इसके बारे में राय थी- ''यह अग्रणी पत्र है। इसमें महत्वपूर्ण समस्याएँ लिखी रहती हैं। उनके सम्बन्ध में चर्चा और विवेचन होता है। इससे ठोस अभिप्राय और संतुलित विचार मिलता है।''

7 नवम्बर 1924 को प्रथम गुजराती पत्रकार परिषद को सम्बोधित करते हुए 'मुम्बई समाचार' के सम्पादक महेरजी ने कहा था- ''एक सच्चे पत्रकार का कर्त्तव्य है प्रजा का मत समझना, उसे हरेक दिशा में मार्गदर्शन करना। सरकार और प्रजा को एक-दूसरे के विचारों से अवगत कराना और उनमें एक-दूसरे के प्रति विश्वास निर्माण करना चाहिए।'' यह पर-उपदेश मात्र नहीं था। 'मुम्बई समाचार' इसी राह पर चला और सबका विश्वासी बना। उस समय अँगरेजी और देशी भाषाओं के पत्रकारों और समाचारपत्रों के प्रति सरकार का नजरिया भेदभावपूर्ण रहता था। सरकारी संस्थाओं के द्वार एक प्रकार से भारतीय भाषाओं के संवाददाताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

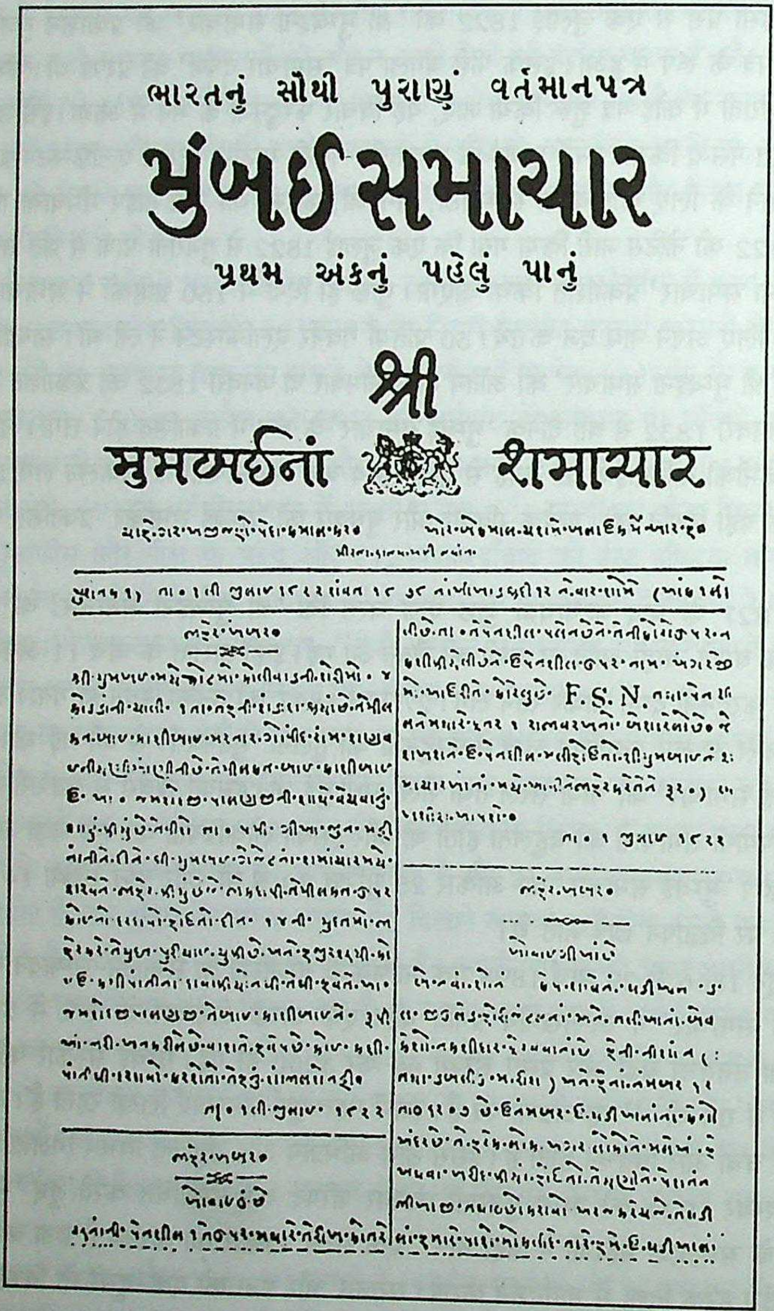

ભારતનું સૌથી પુરાણું વર્તમાનપત્ર

મુંબઈ સમાચાર

પ્રથમ અંકનું પહેલું પાનું

શ્રી

મુમબઈનાં શમાચાર

मुम्बई समाचार, (गुजराती) मुम्बई, सन 1822

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए बंद रहते थे। महेरजी भाई ने इस विसंगति के विरुद्ध आवाज उठाई और अन्ततः ऐसे प्रतिबंधों को समाप्त कराया। एक रिपोर्टर के रूप में महेरजी भाई के लिखे हुए समाचार वृतान्त की प्रामाणिकता ऐसी थी कि सर फिरोजशाह मेहता जैसे शीर्ष नेता भी उसी रिपोर्ट पर विश्वास करते थे।

'मुम्बई समाचार' ने आरम्भ से ही तटस्थता का गुरुमंत्र अपनाया और पूरे परिवार की रुचियों का न केवल ध्यान रखा बल्कि उनके लिए विशेष रूप से स्तम्भ चलाये। साहित्य, कटाक्ष, कानून, व्यापारिक सलाह, धर्म, नीति, भजनवाणी, प्रवास वर्णन, अनुभव आदि स्तम्भ लोकप्रियता का आधार बने। व्यापारी वर्ग तो सुबह से ही 'मुम्बई समाचार' की प्रतीक्षा करने लगता था। इस अख़बार का प्रजामत विभाग (लोकवाणी) विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा है जिसमें पाठकों को खुल कर अपनी बात कहने का अवसर दिया जाता था।

1921 में 'मुम्बई समाचार' की प्रसार सँख्या 4,000 थी। 1972 में यह आँकड़ा बढ़ कर 1,00,911 प्रतियाँ हो गया। साप्ताहिक संस्करण की प्रसार सँख्या तब 1,17,739 रहती थी। एक जुलाई 1971 को मुम्बई महानगर पालिका ने 'मुम्बई समाचार' के 150वें स्थापना दिवस के अवसर पर पत्र के प्रति असाधारण सम्मान की अभिव्यक्ति स्वरूप पुरानी अपोलो स्ट्रीट का नामकरण 'मुम्बई समाचार मार्ग' कर दिया।

कोलकाता की बैप्टिस्ट मिशनरी सोसायटी की प्रेस से मासिक पत्र *'आक्जीलरी मिशनरी हेरल्ड'* का प्रकाशन जुलाई 1822 में हुआ। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। सन 1829 में इसका नाम 'मिशनरी हेरल्ड' कर दिया गया। परन्तु जब बैप्टिस्ट मिशनरी सोसायटी ने नया पत्र 'केलकटा क्रिश्चियन आब्जर्वर' निकाला, तब मई 1832 में 'मिशनरी हेरल्ड' बंद कर दिया गया। जनवरी 1840 से यही 'केलकटा मिशनरी हेरल्ड' के नाम से निकलने लगा। यह ईसाई धर्म प्रचार का पत्र था जो नवम्बर 1846 तक निकला। इसके स्थान पर जनवरी 1847 से नया अखबार *'ओरिएण्टल बैप्टिस्ट'* निकलने लगा।

1823

केलकटा गजट एण्ड कमर्शियल एडवर्टाइजर

एक अक्टूबर 1828 के *'केलकटा गजट एण्ड कमर्शियल एडवर्टाइजर'* के अंक से ज्ञात होता है कि 'डेली एडवर्टाइजर' जिसका प्रकाशन जनवरी 1823 में हुआ था, केवल विज्ञापनों के प्रकाशन और उनके प्रसार के उद्देश्य से निकाला गया था। चार पृष्ठ के इस अखबार में कम दर पर विज्ञापन छापे जाते थे। घर-घर इसका निःशुल्क वितरण भी किया जाता था। यही पत्र एक अक्टूबर 1828 से नए शीर्षक और नई सामग्री के साथ 'केलकटा गजट एण्ड कामर्शियल एडवर्टाइजर' के नाम से प्रकाशित हुआ। इसमें तीन-चौथाई भाग में विज्ञापन छपते थे और शेष एक-चौथाई भाग में स्थानीय तथा यूरोप के उल्लेखनीय समाचार छापे जाते थे। रविवार को छोड़ कर यह बाकी छह दिन छपता था। इसका वार्षिक शुल्क 12 रुपये और तिमाही शुल्क चार रुपये अग्रिम था। 10 वर्ष के बाद इसका नाम और कलेवर दोनों में परिवर्तन कर *'डेली केलकटा इण्टेलीजेंसर एंण्ड कमर्शियल एडवर्टाइज़र'* के नाम से निकला। फिर 19 मार्च 1839 से इसमें 'डेली न्यूज' समाहित हो गया। दो वर्ष बाद इसे कोलकाता के एक बैरिस्टर जेम्स ह्यूम ने खरीद लिया और वे एक जुलाई से *'केलकटा स्टार'* के नाम से निकालने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरिएण्टल मैगजीन एण्ड केलकटा रिव्यू

मासिक पत्रिका *'ओरिएण्टल मैगजीन एण्ड केलकटा रिव्यू'* का प्रकाशन जनवरी 1823 में प्रारम्भ हुआ। प्रत्येक अंक में 100 से 120 पृष्ठ हुआ करते थे। इसके एक अंक की कीमत पाँच सिक्का रुपये थी। ग्यारह माह तक पत्रिका नियमित रूप से निकली, बाद में तिमाही हो गई और इसका नाम 'क्वार्टरली ओरिएण्टल मैगजीन, रिव्यू एण्ड रजिस्टर' हो गया। इसमें विविध विषयों जैसे साहित्य, विज्ञान, मेडिकल, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान, यात्रा पर लेख छपते थे। मार्च, 1824 में तिमाही का पहला अंक प्रकाशित हुआ। कीमत नौ रुपये थी। तिमाही का प्रकाशन मेसर्स ठक्कर एण्ड कं. ने किया था। सम्पादक ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डा. जेम्स ब्रायस थे।

शम्स-उल-अख़बार

कोलकाता से फारसी के दूसरे अखबार *'शम्स-उल-अख़बार'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। 6 मई 1823 को 'शम्स-उल-अख़बार' के प्रकाशन के लिए एक आवेदन पत्र दिया गया था। इसके मुद्रक और प्रकाशक क्रमश: मनीराम ठाकुर और मास्टर मोहन मित्र थे। यह समाचारपत्र सन 1827 में बंद हो गया। इसके अंतिम अंक में सम्पादक ने लिखा- ''प्रत्येक व्यक्ति को यह मालूम होना चाहिए कि इस समाचारपत्र के प्रकाशन के प्रारम्भ से आज तक असफलता के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगा।''

केलकटा यूनिटेरियन कमेटी की ओर से 1823 में *'यूनिटेरियन रिपॉजिटरि'* का प्रकाशन कोलकाता से किया गया। नवम्बर 1824 तक इस मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक विलियम एडम्स थे।

मिशनरीज द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका *'एशियाटिक आब्जर्वर'* सन 1823 में कोलकाता से निकली। इसके सम्पादक मेकाइश हिल थे। बैप्टिस्ट मिशन प्रेस से यह पत्रिका छपती थी। बाद के अंकों में बतौर सम्पादक डब्लू.एच.पियर्स का नाम छपता था। एक साल बाद अक्टूबर 1824 में 'एशियाटिक आब्जर्वर' का प्रकाशन बन्द हो गया।

अक्टूबर 1823 में कोलकाता से *'संवाद तिमिर नाशक'* का प्रकाशन हुआ। कृष्ण मोहन दास इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। यह बंगला पत्र तीन वर्ष तक निकला।

1824

जनवरी 1824 में मासिक पत्रिका *'हेलटर स्केलटर मैगजीन'* का प्रकाशन हुआ। इसका प्रकाशन टी.बी. स्काट एण्ड कम्पनी ने किया था। 'बंगाल हरकारू' में इस पत्रिका के बारे में टिप्पणी मिलती है- ''हेलटर स्केलटर मैगजीन' की तुलना अन्य पत्रिकाओं से नहीं की जा सकती, क्योंकि यह सबसे भिन्न पत्रिका है।''[1] जुलाई 1825 का अंक इसका अंतिम अंक रहा।

स्काट्समेन इन द ईस्ट

जब फरवरी 1823 में 'केलकटा जर्नल' के मालिक-सम्पादक बकिंघम का सरकार ने लायसेंस रद्द कर दिया, तब उन्हें भारत छोड़कर जाना पड़ा। वे मार्च 1823 में भारत से चले गए। डा. डब्ल्यू.बी.मस्टन के नाम, जो सरकारी चिकित्सक थे, लायसेंस जारी किया गया। 'स्काट्समेन इन द ईस्ट' समाचारपत्र का प्रकाशन एक मार्च 1824 से प्रारम्भ हुआ।

1. बंगाल हरकारू, 6 जनवरी 1825

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ओरिएण्टल हेरल्ड' (दिसम्बर 1825) के अनुसार, "यह दैनिक पत्र उदार सिद्धान्तों का पक्षधर था।" कुछ समय बाद ही इसे वित्तीय कठिनाइयों ने घेर लिया और डा. मस्टन इससे अलग हो गए। नए सम्पादक भी इसे नहीं चला सके। 16 मई 1825 से पत्र बन्द हो गया। इसका मालिकाना हक मेसर्स सेमुएल स्मिथ एण्ड कम्पनी ने खरीद लिया और इसे 'बंगाल हरकारू' में समाहित कर दिया। जब 'केलकटा जर्नल' का प्रकाशन बन्द हुआ तब समाचारपत्र को अनेक लोगों से बकाया राशि लेनी थी। जे.एस. बकिंघम ने इस वसूली के लिए दैनिक 'बंगाल हरकारू'[1] में एक विज्ञापन छपवाया कि जिन व्यक्तियों को 'केलकटा जर्नल' की राशि देना हो वे अपनी राशि गंगा गोविन्द बनर्जी के पास जमा करा दें, जिन्हें इसके लिए अधिकृत किया गया है।

बंगाल वीकली मैसेंजर / केलकटा लिटरेरी गजट

'बंगाल वीकली मैसेंजर' का प्रकाशन कोलकाता से सन 1824 में हुआ था। यह 'बंगाल हरकारू' का रविवारीय अंक था। इस तथ्य का उल्लेख 'क्वार्टरली ओरिएण्टल मैग्जीन'[2] में मिलता है। बंगाल वीकली मैसेंजर की सीरीज *'केलकटा लिटरेरी गजट'* के नाम से जनवरी 1826 से प्रारम्भ हुई। यह दो भागों में रहता था- एक भाग में एशिया तथा दूसरे भाग में यूरोप के साहित्य के सम्बन्ध में सामग्री छपती थी। जब 'लन्दन वीकली रिव्यू' के संयुक्त सम्पादक कैप्टन डी.एल.रिचर्डसन सरीखे अनुभवी पत्रकार ने 'बंगाल हरकारू' में कार्यभार सम्हाला तब उन्हें 'केलकटा लिटरेरी गजट' की व्यवस्था और सम्पादन का कार्य सौंपा गया। इससे पत्र का स्तर और प्रसार सँख्या दोनों बढ़े। कीमत प्रति अंक दो रुपये थी। जनवरी 1834 से कैप्टन डी.एल.रिचर्डसन इसके स्वामी हो गये, वे उसके सम्पादक भी थे। दिसम्बर 1835 तक उन्होंने इसे प्रकाशित किया। इसके बाद यह साप्ताहिक 'रिफार्मर' के साथ 'बंगाल हेरल्ड' में समाहित हो गया। 10 अक्टूबर 1857 को प्रकाशन बंद हो गया।

1825

कोलम्बियन प्रेस गजट / बंगाल क्रानिकल

'कोलम्बियन प्रेस गजट' का प्रकाशन जून 1825 में कोलकाता से सप्ताह में दो बार किया जाता था। इसके साथ विज्ञापन परिशिष्ट निःशुल्क बाँटा जाता था। तीन माह में इसके ग्राहकों की सँख्या 520 हो गई थी। इसकी नीति स्वतंत्र थी। एक वर्ष के बाद लोगों की माँग को देखते हुए मालिकों ने इसका नाम बदलकर *'बंगाल क्रानिकल'* रख दिया और हफ्ते में तीन बार निकालने की घोषणा कर दी। नए शीर्षक से एक जुलाई 1826 से मंगलवार, शुक्रवार और रविवार को छपने लगा। शुल्क चार रुपये मासिक रखा गया। इसमें एशिया और यूरोप के समाचार अलग-अलग शीर्षकों से दिए जाते थे। सम्पादक जेम्स सदरलेण्ड थे। कुछ समय बाद बर्मा युद्ध के बारे में सरकार ने जो पत्र कम्पनी के कोर्ट आफ डायरेक्टर्स को लिखा था, उस पर इसने टिप्पणी कर दी। शासन को यह ठीक नहीं लगा और सरकार ने 'बंगाल क्रानिकल' का लायसेंस रद्द करने का नोटिस समाचारपत्र को भेज दिया। मालिकों ने शासन से समाचारपत्र चालू रखने का निवेदन करते हुए सम्पादक को बदल देने का आश्वासन दिया। विलियम एडम

1. बंगाल हरकारू, 2 जुलाई 1824
2. क्वार्टरली ओरिएंटल मैग्जीन, मार्च 1824

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक बने। परन्तु वे अधिक दिनों तक सम्पादक नहीं रह सके। उन्होंने अपना पत्र 'केलकटा क्रानिकल' निकाल लिया। सन 1827 में 'बंगाल क्रानिकल' बिक गया और 'बंगाल हरकारू' के मालिक मे. सेमुएल स्मिथ एण्ड कम्पनी ने इसे खरीद लिया। एक जनवरी 1828 से दैनिक 'बंगाल हरकारू' का नाम *'बंगाल हरकारू एण्ड क्रानिकल'* कर दिया गया। यहीं से 'बंगाल क्रानिकल' अलग से सप्ताह में तीन बार निकलता रहा।

इसके बाद इन दोनों समाचारपत्रों के स्वामित्व में सन 1834 में पुनः परिवर्तन हुआ। द्वारकानाथ टैगोर 26 सितम्बर 1834 से 'इण्डिया गजट' के एकमात्र मालिक हो गए। उन्होंने इण्डिया गजट के दैनिक संस्करण को 'बंगाल हरकारू एण्ड क्रानिकल' में समाहित कर दिया। वह सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को छपने लगा। यह संस्करण सन 1843 के अन्त में बन्द हो गया। इसका कारण यह था कि लोग दैनिक पत्र पढ़ने लगे थे और सप्ताह में तीन बार छपने वाला संस्करण पाठकों को नहीं बाँध सका।

सन 1825 में एशियाटिक लिथोग्राफिक प्रेस कोलकाता से *'मंथली म्यूजिकल मिसलेनी'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह संगीत को समर्पित पत्रिका थी। यद्यपि यह पत्रिका दीर्घजीवी नहीं हो सकी, परन्तु संगीत शिक्षा के क्षेत्र में इसकी पहचान बन गई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पत्रकारिता का युगारम्भ

1826

उदन्त मार्त्तण्ड

सन 1780 से 1818 तक बंगाल से केवल अँगरेजी के ही समाचारपत्र प्रकाशित हुए। वे अधिकारियों के भ्रष्टाचार, अधिकारों के दुरुपयोग और कम्पनी की नीतियों में निहित स्वार्थों की आलोचना करने से नहीं चूकते थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के संचालक भारत में प्रेस को दबाकर रखना चाहते थे ताकि कम्पनी के व्यापार और प्रशासन की कमजोरियाँ प्रकाश में न आ सकें। गवर्नर जनरल लार्ड हैस्टिंग्ज को प्रेस के प्रति नरम रुख अपनाने के कारण कम्पनी के संचालकों के असंतोष का सामना करना पड़ रहा था। इसी के तुरन्त बाद लार्ड हैस्टिंग्ज 9 जनवरी 1823 को स्वदेश चले गए और जान एडम गवर्नर जनरल नियुक्त किए गए। जान एडम प्रेस की स्वतंत्रता का विरोधी था। उसने प्रेस को नियंत्रण में रखने के उद्देश्य से चार मार्च 1823 को एक अध्यादेश जारी किया जिसके अनुसार समाचारपत्र, पत्रिका के प्रकाशन के पूर्व 'सपरिषद गवर्नर जनरल' से लायसेंस प्राप्त करना, तथा इसके लिए आवेदन पत्र के बदले शपथ पत्र भरकर देना, अनिवार्य कर दिया गया। शपथपत्र में दी गई जानकारी में परिवर्तन होने की दशा में दूसरा शपथपत्र भरकर देना पड़ता था। लायसेंस को किसी भी समय रद्द करने का अधिकार गवर्नर जनरल को था।

हिन्दी का पहला समाचारपत्र *'उदन्त मार्त्तण्ड'* 30 मई 1826 को कोलकाता से प्रारम्भ हुआ। 'उदन्त मार्त्तण्ड' के प्रकाशन की जानकारी प्रकट होने से पहले हिन्दी समाचारपत्रों के इतिहास लेखक बाबू राधाकृष्ण दास ने 'हिन्दी भाषा के सम-सामयिक पत्रों का इतिहास' (सन 1894) में राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की सहायता से गोविन्द रघुनाथ थत्ते द्वारा सम्पादित 'बनारस अख़बार' (सन 1845) को हिन्दी का पहला समाचारपत्र माना था। 'उदन्त मार्त्तण्ड' को प्रकाश में लाने का श्रेय कोलकाता के शोधविद्वान ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय को है। मई 1931 के 'विशाल भारत' में आपका 'हिन्दी समाचारपत्रों की आरम्भिक कथा' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें 'उदन्त मार्त्तण्ड' के प्रवेशांक का चित्र भी छापा गया था। तब इतिहासकारों ने अपना मत बदला तथा 'उदन्त मार्त्तण्ड' को हिन्दी का प्रथम समाचारपत्र माना।

'उदन्त मार्त्तण्ड' के संचालक और सम्पादक युगलकिशोर शुक्ल थे। उस समय कोलकाता में उत्तर भारत के लोग या तो व्यापार करने जाते थे या नौकरी के लिए। प्रारम्भ में शुक्लजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

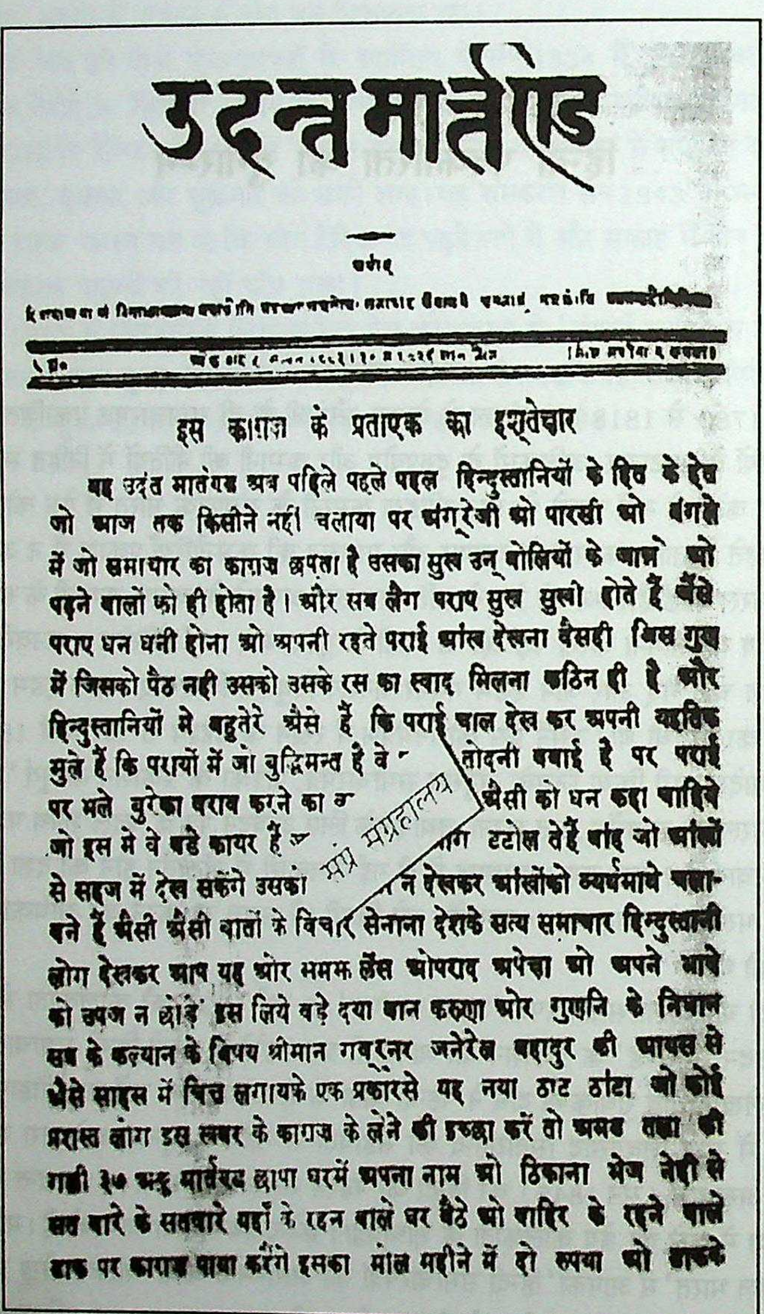

उदन्तमार्त्तण्ड

इस कागज़ के प्रताएक का इश्तेहार

यह उदंत मार्तण्ड अब पहिले पहले पहल हिन्दुस्तानियों के हित के हेत जो आज तक किसीने नहीं चलाया पर अंगरेजी ओ पारसी ओ बंगले में जो समाचार का कागज छपता है उसका सुख उन बोलियों के जानने ओ पढ़ने वालों को ही होता है। और सब लोग पराए सुख सुखी होते हैं जैसे पराए धन धनी होना ओ अपनी रहते पराई आंख देखना वैसही जिस गुण में जिसको पैठ नही उसको उसके रस का स्वाद मिलना कठिन ही है और हिन्दुस्तानियों मे बहुतेरे ऐसे हैं कि पराई चाल देख कर अपनी चाल छोड़ बैठते हैं कि परायों में जो बुद्धिमन्त है वे … तोदनी बधाई है पर पराई पर भले बुरेका बराव करने का … ऐसी को धन कहा चाहिये जो इस मे वे बड़े कायर हैं … टटोल ते हैं वाह जो आंखों से सहज में देख सकेंगे उसको … न देखकर आंखोंको व्यर्थमाये बताते हैं ऐसी ऐसी बातों के विचार सेनाना देशके सत्य समाचार हिन्दुस्तानी लोग देखकर आप पढ़ ओर समझ लेंय ओपराए अपेक्षा जो अपने भावे को उपज न छोड़ें इस लिये बड़े दया वान करुणा ओर गुणनि के निधान सब के कल्यान के विषय श्रीमान गवरनर जनेरेल बहादुर की आयस से ऐसे साहस में चित्त लगायके एक प्रकारसे यह नया ठाट ठाटा जो कोई प्रशस्त लोग इस खबर के कागज के लेने की इच्छा करें तो अमड़ तला की गली ३७ अङ्क मार्तण्ड छापा घरमें अपना नाम ओ ठिकाना भेजने ही से सब वारे के सवारे यहां के रहन वाले घर बैठे ओ बाहिर के रहने वाले डाक पर कागज पाया करेंगे इसका मोल महीने में दो रुपया ओ डाकके

उदन्त मार्त्तण्ड, हिन्दी का प्रथम पत्र, कोलकाता, 30 मई 1826

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोलकाता की सदर अदालत में क्लर्क थे और बाद में वकील हो गए थे।

युगल किशोर शुक्ल ने 'उदन्त मार्त्तण्ड' क्यों निकाला? इसका उल्लेख उन्होंने पत्र के पहले अंक में किया है-"यह उदन्त मार्त्तण्ड अब पहिले पहल हिन्दुस्तानियों के हित के हेतु जो आज तक किसी ने नहीं चलाया पर अँगरेजी ओ फ़ारसी ओ बंगले में जो समाचार का काग़ज़ छपता है उसका सुख उन् बोलियों के जान्ने ओ पढ़ने वालों को ही होता है........ देश के सत्य समाचार हिन्दुस्तानी लोग देखकर आप पढ़ ओ समझ लेंय ओपराई अपेक्षा जो अपने भावों के उपज न छोड़े, इसलिये बड़े दयावान करुणा ओ गुणनि के निधान सबके कल्यान के विषय श्रीमान् गवरनर जेनेरल बहादुर की आयस से अैसे चाहत में चित्त लगाय के एक प्रकार से यह नया ठाट-ठाटा......."

'उदन्त मार्त्तण्ड' के हर अंक के अंत में लिखा रहता था- "यह उदन्त मार्त्तण्ड कलकत्ते के कोल्हू टोला के अमड़ा तला की गली के 37 अंक की हवेली के मार्त्तण्ड छापा में हर सतवारे मंगलवार को शाया होता है। जिनको लेने का काम पड़े वे उस छापा-घर में अपना नाम भेजने ही से उनके समीप भेजा जायेगा। उसका मोल महीने में दो रुपया।" 'उदन्त मार्त्तण्ड' का आकार 30 गुणित 20 से.मी. तथा पृष्ठ सँख्या आठ थी. इसकी भाषा कलकतिया हिन्दी थी। इस पत्र के निकलने की सूचना 'समाचार-चन्द्रिका' में प्रकाशित हुई, जिसके अनुसार- "अँगरेजी और बंगला के पत्रों के बाद फ़ारसी में, उर्दू में भी पत्र प्रकाशित हुए और अब नागरी भाषा में 'उदन्त मार्त्तण्ड' प्रकाशित हुआ है, जिससे हमें बड़ी प्रसन्नता हुई है।"[1]

'समाचार दर्पण' लिखता है- "नागरी का समाचारपत्र। हाल में इस कलकत्ता नगर से 'उदन्त मार्त्तण्ड' नामक एक नागरी का नूतन समाचारपत्र प्रकाशित हुआ है, इससे हमारे आल्हाद की सीमा नहीं है, क्योंकि समाचारपत्र द्वारा सम्पत्ति सम्बन्धी और नाना देशों के राज सम्पर्कीय वृतान्त प्रकाशित होते हैं, जिनके जानने में अवश्य ही उपकार होता है।"[2]

आवरण पृष्ठ के ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों में 'उदन्त मार्त्तण्ड' नाम रहता था। उसके नीचे छोटे अक्षरों में अर्थात लिखा हुआ है। फिर उसके नीचे संस्कृत में-

"दिवाकांत कांति विनाध्वान्तं
न चाप्नोति तद्वज्जगत्यज्ञ लोकः।
समाचार सेवामृते ज्ञत्वमाप्तुं
न शक्नोति तस्मात् करोमीति यत्नं।।"

लिखा रहता था। इसका अर्थ है- "सूर्य के प्रकाश के बिना जिस तरह अंधेरा नहीं मिटता उसी तरह समाचार-सेवा के बिना अज्ञ जन जानकार नहीं बन सकते। इसलिए मैं यह (समाचारपत्र-प्रकाशन रूपी) प्रयत्न कर रहा हूँ।"

वरेण्य सम्पादक एवं हिन्दी के विद्वान नारायणदत्तजी ने उक्त ध्येयवाक्य की व्याख्या करते हुए लिखा है ('उदन्त मार्त्तण्ड' का अर्थ समाचार-सूर्य है)- इससे यह भी सिद्ध होता है कि हिन्दी पत्रकारिता के आदि पुरुष को पत्रकार के प्रथम कर्तव्य की बड़ी सही और स्पष्ट पहचान थी।

उस समय हिन्दी में दो तरह की लेखन शैलियाँ प्रचलित थीं। बृजभाषा की शैली का परिचय

---

1. समाचार चन्द्रिका, 11 मार्च 1826
2. समाचार दर्पण, 17 जून 1826

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं 'उदन्त मार्त्तण्ड' का पौषवदी एक संवत् 1884 तारीख 11 दिसम्बर 1827 के अंक से मिलता है- ''प्रथम या काज को जो कारण कहयौ ताको विस्तार सयानिकौ जनावनो उचित है, ताते अब कछु मध्य देशीय भाषा लिखतु हों।'' कोलकाता से जो भी हिन्दी पत्र निकले उन पर स्थानीय भाषा और संस्कृति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। उस समय कोलकाता में विद्यमान जन जागृति का प्रभाव 'उदन्त मार्त्तण्ड' पर भी पड़ा।

19 दिसम्बर 1826 के अंक में गवर्नर जनरल लार्ड ऐम्सहर्स्ट के लखनऊ दौरे का विवरण इस प्रकार प्रकाशित हुआ था- ''जिस समय ए नगर में पैठे उतने समय देखने में आया कि राजमार्ग में दोनों ओर छोटी-छोटी हवेलियों के बाजरों पर मुसज्जर और कमखाब और ताश बादले के कामों के सोनहले ओ रुपहले ओ कारचोबियों के काम के कपड़े लोगों ने लटकाये थे ओ लखनौ शहर भीतर जितनी दुकानें जिस जिस पदार्थ की थीं उस समय सामग्री से सुची उसकी शोभा देखते ही बन आवती है। और जेंब जेंब सबारी शहर में धंसी, तेंब तेंब ठौर-ठौर नाच रंग भी देखने में आये। फिर जब वे आसफुद्दौला के महल के पास हो के निकले उस समय बादशाह की जेठी बहिन की डेवढ़ी की तैनाती फौज आके सलामी की।''

युगल किशोर शुक्ल के सम्पादन की विशेषता थी तथ्यों को पूरा और रुचिकर स्वरूप में प्रगट करना। निम्नलिखित उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी- ''अँगरेजी 1826 साल 19 को सरकार कम्पनी अंगरेज बहादुर जो ब्रह्मा के बीच में परस्पर संधि हो चुकने के प्रसंग से यह दरबार शोभनागार हो के श्रीमान लार्ड एमहर्स्ट गवरनर जेनरेल बहादुर के साक्षत से मौलवि महम्मद खलिलुद्दीन खां अवध बिहारी बादशाह की ओर से वकालत के काम पावने के प्रसंग से सात पारचे की खिलअत ओ जिगा सर पेच जड़ाऊ मुलाहार और पालकी झालदार ओ मृत महाराजा सुख्मणि बहादुर के संतति राजा शिवचंद्र राय बहादुर ओ राजा नृसिंह चंद्र रायबहादुर राज्य ओ बहादुरी पदवो मिलने के प्रसंग से सात-सात पारचे को खिलअत जिगा सर पेच जड़ाऊ मुक्ताहार ढाल तरवार ओ चार घोड़े की गाड़ी की सवारी की अनुमति ओ राय गिरधारी लाल बहादुर ओ मिर्जा महम्मद कामिल खां नवाब नाजिम बहादुर के विवाह के प्रसंग से छ छ परचे की खिलअत जिगा सरपेच जड़ाऊ ओ कृपाराम पण्डित नवाब फैज महम्मद खां बहादुर के ओर से पुरी वकालत का पद होने के प्रसंग से दो शाला गोशवारा नीमे आस्तीन सरपेच जड़ाऊ पगड़ी ओ मृत विशम्भर पण्डित की स्त्री के एक्टिंग वकील देविप्रसाद तिवाड़ी दो शाल ओ महम्मद सओद खाँ साहिब ओ राजा भूप सिंह बहादुर मोटि के एक-एक हार से मुक्ति ओ कृतकृत्य हुए ओ जालवन के रईस के वकील शिवराम ने श्रीनरवर गवरनर जेनरेल बहादुर के साक्षात कर इस संधि के बधाई की कविता भेंट धरी ओ नरः श्रेष्ठ उस कविता का भाव बूझे पर बहुत रीझे।''

'उदन्त मार्त्तण्ड' के आषाढ़ 1883(सन 1826) के अंक में चुटीली शैली की झलक मिलती है- ''एक यशी वकील वकालत का काम करते-करते बुड्ढा होकर अपने दामाद को वह काम सौंप के आप सुचित हुआ। दामाद कई दिन वह काम करके एक दिन आया ओ प्रसन्न होकर बोला हे महाराज आपने जो फलाने का पुराना ओ संगीन मोकद्दमा हमें सौंपा था सो आज फैसला हुआ यह सुनकर वकील पछता करके बोला कि तुमने सत्यनाश किया। उस मोकद्दमे से हमारे बाप बढ़े थे तिस पीछे हमारे बाप मरती समय हमें हाथ उठा के दे गए ओ हमने भी उसको बना रखा ओ अब तक भली-भाँति अपना दिन काटा ओ वही मोकद्दमा तुमको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंप करके समझा था कि तुम भी अपने बेटे पोते परोतों तक पलोगे पर तुम थोड़े से दिनों से उसको खो बैठे।''

बंगला पत्र 'समाचार चन्द्रिका' में उत्तर भारतीय और मारवाड़ी व्यापारियों के विरुद्ध एक चिट्ठी छपी थी। इसके उत्तर में 'उदन्त मार्त्तण्ड' में उसी शैली में दो-तीन चिट्ठियाँ छपीं तथा एक टिप्पणी भी लिखी जिसके उत्तर में 'समाचार चन्द्रिका' के सम्पादक भवानीचरण बनर्जी ने उनके विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में अपमानजनक सामग्री छापने के आरोप में कार्यवाही प्रारम्भ करने की सूचना दी थी। जिन व्यापारियों के हित के लिये शुक्ल ने कानूनी कार्यवाही को न्योता, उन्होंने उनका समर्थन करना तो दूर 'उदन्त मार्त्तण्ड' का ग्राहक चंदा भी नहीं चुकाया। परिणामस्वरूप यह पत्र बंद करना पड़ा। 19 दिसम्बर 1827 के (79वें) अंक के अंत में जो टिप्पणी प्रकाशित हुई, उसमें पत्र के अंतिम दिनों की कसक मिलती है-

''आज दिवस लौं उग चुक्यौ मार्त्तण्ड उदन्त।
अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त।।''

''जबते या कलकत्ता नगरी में उदन्त मार्त्तण्ड को प्रकाश भयो तबते लै आज दिवस लों काहू प्रकार ते ढाढस बाँध विद्या के बीज बबैको हिन्दुस्तानियन के जड़ता के खेत को बहुविधि जोत्यो पहिले तो ऐसी कठोर भूमि काहे को जुतै ताहू पै कायाकष्ट कर जैसो तैसो हर चलाय वा क्षेत्र में गांठ की ब्यू बखेर बड़े यतन से सींच फल लुन्यौ चाह्यौ तो समय लोभ रूपी टाड़ी परिवा खेत के फल फूल पाती सिगरी चरि गई अब तो फिरि-फिरि या नाशें क्षेत्र को गोडियो तो श्रमही के फल फलेंगे।''

हिन्दी भाषी लोगों में प्रारम्भ से ही समाचारपत्र पढ़ने के लिए पैसा खर्च करने का उत्साह नहीं था। यह धारणा युगल किशोर शुक्ल के इस कथन से पुष्ट होती है- ''इस 'उदन्त मार्त्तण्ड' के नांव पढ़ने के पहिले पछाहियों के चित्त का इस कागज न होने से हमारे मनोर्थ सफल होने का बड़ा उतसा था इसलिए लोग हमारे बिन कहे भी इस कागज की सही की बही पर सही करते गये पै हमें पूछिए तो इनकी मायावी दया से सरकार अँगरेज कम्पनी महाप्रतापी की कृपा कटाक्ष जैसे औरों पर पड़ी, वैसे पड़ जाने की बड़ी आशा थी और मैंने इस विषय में उपाय यथोचित किया पै करम की रेख कौन मेटै। तिस पर भी सही की बही देख जो सुखी होता रहा अन्त में नटों कैसे आम दिखाई दिए इस हेत स्वारथ अकारथ जान निरे परमारथ को कहाँ तक बनजिए अब अपने व्यवसाई भाइयों से मन की बात बताय बिदा होते हैं। हमारे कुछ कहे सुने का मन में न लाइयो जो देव और भूधर मेरी अंतर व्यथा और इस गुण को विचार सुधि करैंगे तो मेरे ही हैं। शुभमिति।''

इन पंक्तियों में शुक्ल जी की हताशा झलकती है। यह भी स्पष्ट होता है कि युगल किशोर शुक्ल को 'उदन्त मार्त्तण्ड' का प्रकाशन एक वर्ष सात माह बाद इसलिए बन्द करना पड़ा कि उन्हें सरकार, व्यवसायी वर्ग एवं ग्राहक-वृन्द किसी से भी समुचित सहायता न मिली। उस समय कम्पनी सरकार उर्दू-फारसी के 'जाम-ए-जहाँनुमा' और बंगला के 'समाचार दर्पण' जैसे पत्रों को आर्थिक सहायता देती थी। कोलकाता के हिन्दी भाषी भी दो रु. महीना खर्च करके 'उदन्त मार्त्तण्ड' खरीदने के लिए तैयार नहीं थे।

बैप्टिस्ट मिशन प्रेस कोलकाता से सितम्बर 1826 में मासिक पत्रिका '*क्रिश्चियन इन्वेस्टीगेटर*' का प्रकाशन किया गया। यह विशुद्ध धार्मिक पत्रिका थी। इसकी सामग्री का स्तर अच्छा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल आठ अंक निकलने के बाद यह पत्रिका बन्द हो गई।

केवल तीन माह तक प्रकाशित हुई मासिक पत्रिका *'इण्डियन मैगजीन'* का प्रकाशन अप्रैल 1826 में हुआ। जून का अंक अंतिम रहा। पाठकों का समर्थन इस पत्रिका को नहीं मिला।

1827

केलकटा क्रानिकल

'केलकटा क्रानिकल' का प्रकाशन जनवरी 1827 के अन्तिम सप्ताह में प्रारम्भ हुआ। यह सप्ताह में तीन बार प्रकाशित होता था। 'बंगाल क्रानिकल' में शासन के खिलाफ छप जाने से इसके मालिक डी. रोजारियो को लायसेंस रद्द करने बावत कारण बताओ नोटिस थमा दिया गया। उस समय जेम्स सदरलैण्ड (जो पहले 'केलकटा जर्नल' में थे) 'बंगाल क्रानिकल' के सम्पादक थे। नोटिस मिलने पर मालिक ने सम्पादक को बलि का बकरा बनाने पर समझौता कर लिया और जेम्स सदरलैंड को दण्ड भुगतना पड़ा। इसके बाद एडम सम्पादक बन गए परन्तु वे ज्यादा दिन रह नहीं पाए और अन्ततः उन्होंने अपना स्वयं का अखबार 'केलकटा क्रानिकल' के नाम से निकाला।

'बंगाल क्रानिकल' का मालिकाना हक 'बंगाल हरकारू' ने ले लिया। 'केलकटा क्रानिकल' के दो मालिक थे विलियम एडम और विलियर्स होलराफ। दिनांक 31 मई 1827 को मुख्य सचिव सी. लुशिंगटन ने समाचारपत्र के मालिकों को 29 मई के अंक में प्रकाशित कथित आपत्तिजनक अंश उद्धृत करते हुए लायसेंस निरस्त करने का नोटिस भेज दिया। इस पत्र का उत्तर एक जून को केवल एडम ने दिया था। इस उत्तर की प्रति 4 जून 1827 के 'बंगाल हरकारू' में छपी थी। लायसेंस रद्द होने के बाद 'केलकटा क्रानिकल' का प्रकाशन बन्द हो गया।

ओरिएण्टल आब्जर्वर

'जान बुल' से अनेक पाठकों ने माँग की कि वे एक ऐसा रविवारीय अंक निकालें जिसमें सप्ताह भर की सभी प्रकार की प्रमुख और रोचक जानकारियाँ एक ही स्थान पर मिल सकें। तदनुसार 18 फरवरी 1827 से साप्ताहिक *'ओरिएण्टल आब्जर्वर'* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसका मासिक शुल्क दो रुपये था। इसमें सप्ताह भर की देश की प्रमुख घटनाओं, मृत्यु, विवाह, ज्वारभाटा, मौसम आदि की जानकारी छपती थी। कुछ समय बाद यह साहित्यिक पत्रिका बन गई। इसके प्रकाशक-मुद्रक जार्ज प्रिटचार्ड थे। सन 1829 में इसके 150 ग्राहक थे। मई 1833 में 'जान बुल' को जे.एच.स्टाक्यूलर ने खरीद कर अक्टूबर 1833 से उसका नाम 'इंग्लिशमेन' कर दिया। इस बीच जार्ज प्रिटचार्ड की मृत्यु हो गई और उनकी पत्नी 'ओरिएण्टल आब्जर्वर' की मालिक हो गई।

एक जनवरी 1834 से 'ओरिएण्टल आब्जर्वर' नए टाइप और अच्छे कागज में छपने लगा। इसके सम्पादन में 'इंग्लिशमेन' के सम्पादक सहयोग करने लगे। यह सहयोग भर था, दोनों पत्र अलग-अलग थे। यह सन 1841 तक निकला। इसके बाद 'बंगाल हेरल्ड' में समाहित हो गया। 'बंगाल हेरल्ड' सन 1829 से निकल रहा था और उसमें 'लिटरेरी गजट' तथा 'रिफार्मर' पहले ही समाहित हो चुके थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत प्रकासादरस

'*जगत प्रकासादरस*' के चार भाग सेंट्रल पब्लिक लाइब्रेरी पटियाला में सुरक्षित हैं। कुल पत्रों की सँख्या 1317 है। 15 गुणित 25 से.मी. आकार के सहस्राधिक अंकों की यह सामग्री शोध-सन्दर्भ की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। भारत के समाचारों के अलावा विदेशी विप्लवों, युद्धों और महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्बन्ध में विवरण-सूचनाएँ भी यहाँ संकलित है।

'जगत् प्रकासादरस' की भाषा पर फारसी का प्रभाव है, उस समय यह प्रभाव स्वाभाविक था। 'जगत् प्रकासादरस' से समाचार की एक बानगी-

''तारीष 1 दसंबर सन 1830''

षबर भूंचाल की. कलकत्ते की षबर मधे''।

''इषबार की रू से यह परेसान षबर इस तौर जाहिर हुई कि इगंलसतान वगैरा फरंग के मुलक की तरफ जून के महीने के अन्त में एक भूंचाल ऐसे जोर अरु सषती साथ उस धरती में आइआ कि बारां सहर अछे बसते हुए अरु बहुत करके बड़ी 2 इमारतें बुलंद अरु मकान मजबूत अरु पाइदार..................... बेसुमार ही बरबाद हो गए। सच है ऐसा भूंचाल किसी ने सुणा भी नहीं तो देखणे की किआ बात है।..................दिवालें ऐसी तराँ गिरीं कि जैसे बालू की भीत डिगती (गिरती) है। अरु एक असचरज होर हूआ कि जिस वषत इह भूंचाल का उपद्रव था उस उपर से उलों (ओले) की बरषा और साथ होती गई और हड़ (बाढ़) आइआ। पाणी की सरसाई से बहुत सारे मकान अछेअछे आला और अदना के नास हो गए। नुकसान और घाटा जानों का भी बहुत सारा हूआ। कुछ लिषणें में नहीं आवता। अटकल से पाँच लाष से दस लाष तलक आदमी के प्राण गए हैं।''

ग्लीनिंज इन साइंस

अँगरेजी के ग्लीनिंज का अर्थ है कण कण जोड़कर प्रस्तुत करना। यह पत्र विज्ञान विषयों के कार्यों को जोड़कर एक साथ प्रस्तुत करने वाला ऐसा प्रारम्भिक अखबार था, जो नई चेतना और अन्वेषणों का प्रसार करता था। इसे जनवरी 1829 में कोलकाता की बैप्टिस्ट मिशन प्रेस से प्रकाशित किया गया था। प्रारम्भ में अँगरेजी पत्रिकाओं से लेख आदि लेकर प्रकाशित करता था, परन्तु बाद में मौलिक लेख प्रकाशित करने लगा। पहले एक वर्ष के अंकों को देखने से ज्ञात होता है कि इसमें- घोड़ों के खुर काटने के सिद्धांत/टिम्बर की ताकत बिगाड़े बिना उसे काटने (सीधे, तिरछे) के प्रयोगों के नतीजे/भारत में मशीनों के उपयोग की आवश्यकता/बंगाल में खनिज उत्पादन की विशेषताएं/कलकत्ता के निकट वाष्पक्रिया के प्रयोग/हैजे से बचाव के उपाय तथा सहारनपुर और मुजफ्फरपुर में गुड़ बनाने के खर्च का विवरण आदि वैविध्यपूर्ण सामग्री दी जाती थी। इसकी उपयोगिता से प्रभावित होकर रेवेन्यू बोर्ड ने मार्च 1829 में इस पत्र को गवर्नमेण्ट गजट की रियायत के समान दो-तिहाई टिकिट पर भेजने के आदेश दिए। फिर मार्च 1831 से इसे डाक से निःशुल्क भेजने की सुविधा प्राप्त हुई। प्रारम्भ में कैप्टन जेम्स डी. हरबर्ट इसके सम्पादक थे। एक जनवरी 1832 से यह 'जर्नल आफ द एशियाटिक सोसायटी' हो गया। हिन्दू कालेज के शिक्षक और यंग बंगाल के प्रेरणास्रोत हेनरी डिरोजिओ ने कालेज की प्राध्यापकी के साथ एक सायंकालीन दैनिक '*हासपेरस*' फरवरी, 1829 में प्रारम्भ किया। वे ही इसके मालिक और सम्पादक थे। कुछ समय बाद उन्होंने प्राध्यापकी छोड़ दी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

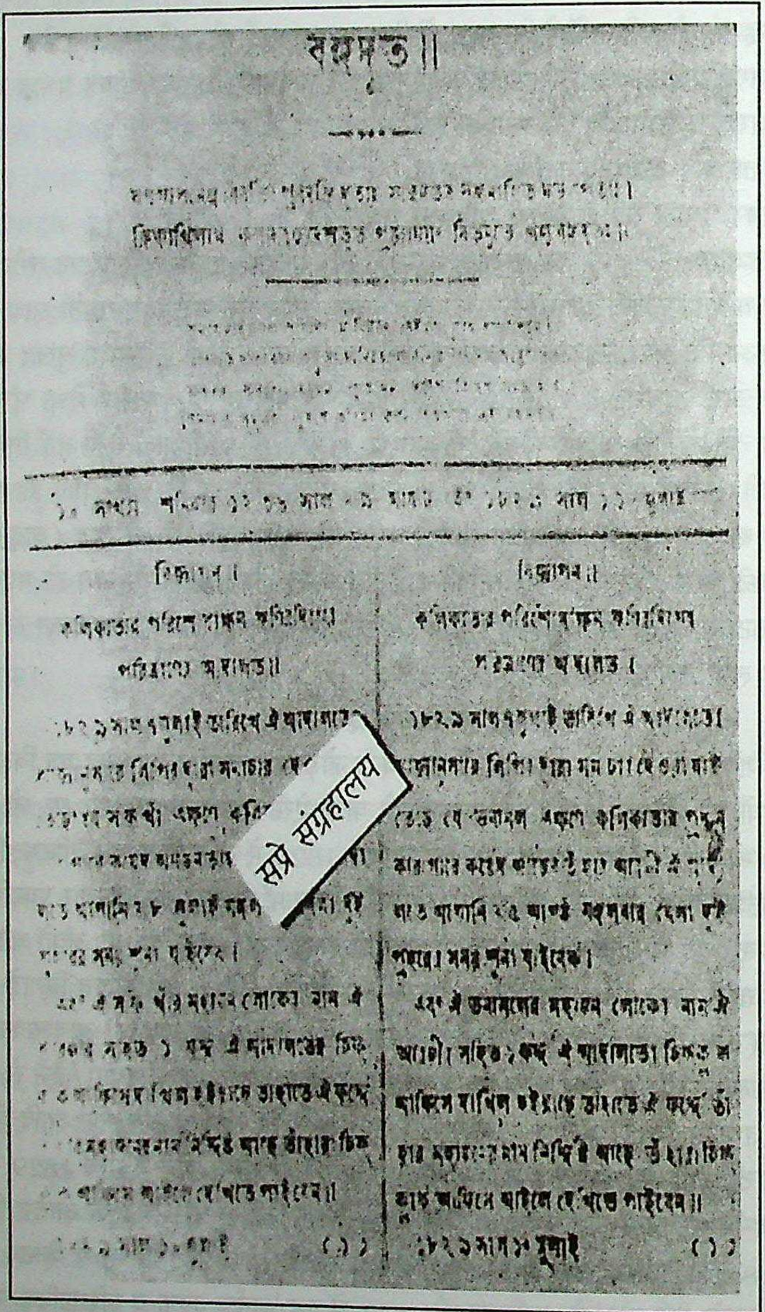

বঙ্গদূত ॥

सप्रे संग्रहालय

बंगदूत, कोलकाता, 10 मई 1829

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हासपेरस' बंद कर एक नया दैनिक अखबार '*ईस्ट इण्डियन*' 1831 से निकाला।

बंगाल हेरल्ड

साप्ताहिक '*बंगाल हेरल्ड*' का प्रकाशन मई 1829 में प्रारम्भ हुआ। इसे '*केलकटा मैसेंजर या केलकटा इंटेलिजेंसर*' के नाम से भी जाना जाता है। प्रारम्भ में कोलकाता के छह व्यक्तियों ने इसे निकाला था- आर.एम.मार्टिन, द्वारकानाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार टैगोर, राममोहन राय, नीलरतन हालदार और राजकिसन सिंह। इसके सम्पादक आर.एम.मार्टिन और नीलरतन हालदार थे, परन्तु इसके लेखन में राममोहन राय के विचारों की ध्वनि आती थी। मुफस्सिल क्षेत्रों के लिए इसका डाक संस्करण भी छपता था। परंतु यह व्यवस्था अधिक समय तक नहीं चल सकी। पहले तो चार मालिक- राममोहन राय, द्वारकानाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार टैगोर और नीलरतन हालदार इससे पृथक हुए। इसके कुछ समय बाद पत्र को 'बंगाल हरकारू' के मालिक मे.सेमुएल स्मिथ एण्ड कं. ने खरीद लिया। नए मालिक ने इसे 'बंगाल हरकारू एण्ड क्रानिकल' के वीकली कम्पेन्डियम के नाम से निकालना शुरू किया। तब तक मार्टिन इंग्लैंड लौट गए थे और कैप्टन डी.एल.रिचर्डसन को जो 'लिटरेरी गजट' के सम्पादक थे, इसके सम्पादन का दायित्व सौंपा गया।

'बंगाल हेरल्ड' में जनवरी 1836 से दो साप्ताहिक 'लिटरेरी गजट' और 'रिफार्मर' समाहित हो गए। जनवरी 1842 से इसमें 'ओरिएण्टल आब्जर्वर' भी समाहित हो गया। 'बंगाल हेरल्ड'[1] में यह सूचना प्रकाशित की गई कि भविष्य में यह पत्र 'बंगाल हरकारू' के परिशिष्ट के रूप में निकलेगा।

बंगदूत

10 मई 1829 को राजा राममोहन राय ने साप्ताहिक '*बंगदूत*' निकाला। इसमें बंगला, हिन्दी और फ़ारसी भाषा का प्रयोग किया जाता था। इस पत्र का प्रबुद्ध जगत में अच्छा स्वागत हुआ। तथापि 'बंगदूत' बहुत ज्यादा दिनों तक नहीं चल पाया। मात्र 82 दिनों की अवधि में इसे काल कवलित होना पड़ा। नीलरतन हालदार द्वारा केलकटा हिन्दू हेरल्ड प्रेस बांसतल्ला से प्रकाशित 'बंगदूत' मूलत: बंगला पत्र था। इसमें कचहरी के नोटिस होने के कारण फारसी हमेशा रहती थी और हिन्दी का उपयोग भी किया जाता था। कोलकाता के राष्ट्रीय पुस्तकालय के दुर्लभ ग्रंथ विभाग तथा बंगीय साहित्य परिषद में 'बंगदूत' के प्रथम वर्ष के कुछ अंक उपलब्ध हैं, जिनमें उसके हिन्दी में प्रकाशित होने की सूचना, उद्देश्य और नियमावली दी हुई है। देश-विदेश के राजनीतिक, व्यापारिक और शिक्षा सम्बन्धी समाचारों को प्रकाशित करना 'बंगदूत' का उद्देश्य था ''वैपारियों के वैपार का उपकार और योरोप की विद्या और उपविद्या की जानकारी देना इसका लक्ष्य था।'' 'बंगदूत' की भाषा के सम्बन्ध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है- ''राजा साहब की भाषा में एक-आध जगह कुछ बंगलापन जरूर मिलता है, पर उसका रूप अधिकांश में वही है, जो शास्त्रज्ञ विद्वानों के व्यवहार में आता था।''

'बंगदूत' का आदर्श वाक्य उसकी नीति का उद्घोषक था:-

''दूतनिकी यह रीति बहुत थोरेमें भाषें
लोगनि को बहुलाभ होय याहीते लाखें।।

1. बंगाल हेरल्ड, 30 दिसम्बर 1843

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

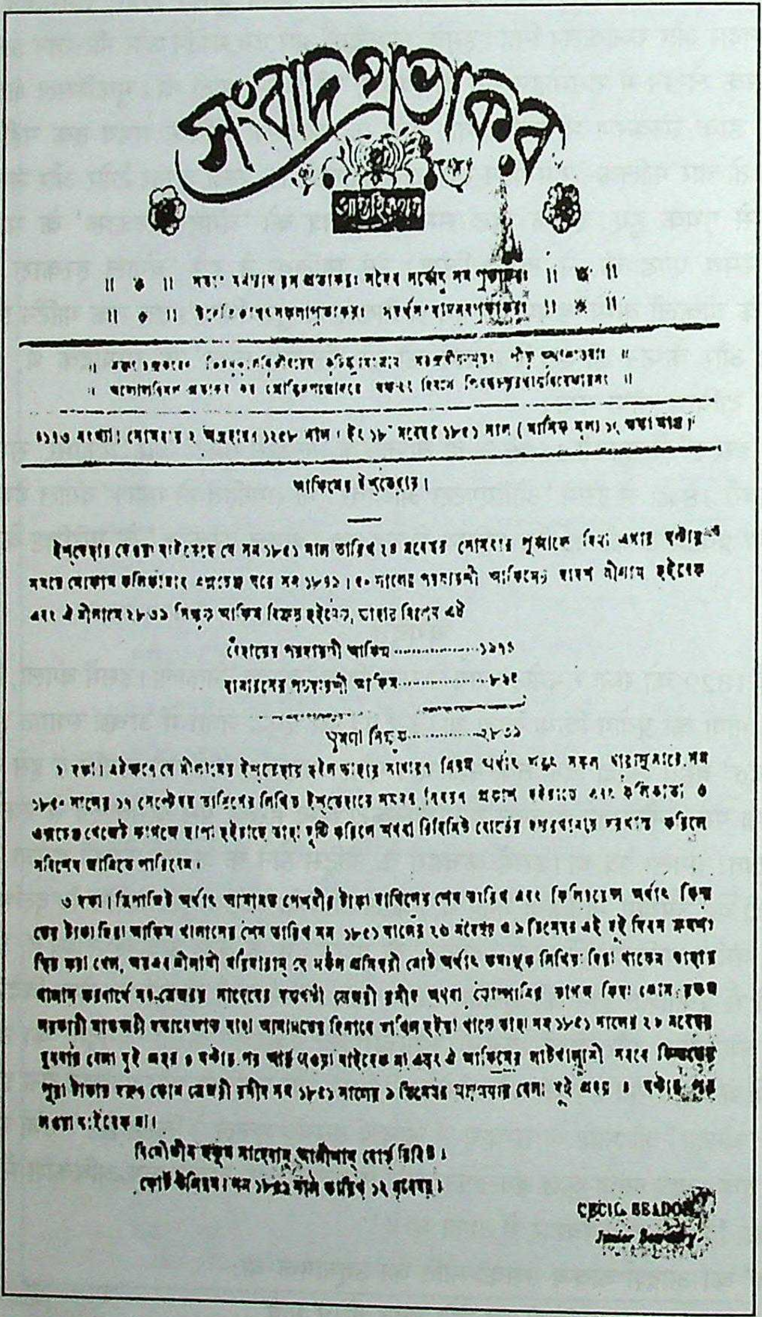

সংবাদ প্রভাকর

আফিমের ইস্তেহার।

CECIL BEADON,
Junior Secretary.

संवाद प्रभाकर, (बंगला) कोलकाता, सन 1830

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगालाको दूत पूत यहि वायुको जानो।
होय विदित सब देश कलेशको लेश न मानो।।"

'क्रिश्चियन इंटेलिजेंसर' नामक यह पत्र ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार और धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'चर्च आफ इंग्लैण्ड मिशनरी' की ओर से कोलकाता से जुलाई 1829 में निकाला गया। जनवरी 1831 से इसका कलेवर बदला और इसमें समाज, व्यवहार, पुरातत्व, रीति-रिवाज और भारतीयों के अंधविश्वासों पर सामग्री दी जाने लगी। बाद में विवादास्पद बातें भी छपने लगीं। इसी कारण सन 1843 में चर्च आफ इंग्लैण्ड ने इस पत्र से अपना नाता तोड़ने का फैसला किया। इसके पहले सम्पादक रेवरेण्ड जार्ज पिकान्स थे। उनके बाद रेवरेण्ड बासवेल और फिर सन 1841 में रेवरेण्ड इनेस सम्पादक रहे।

जुलाई 1829 में साप्ताहिक *'सर्वतत्व दीपिका'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। यह पत्र उपनिवेश के खिलाफ उग्र स्वर रखता था। तिमिरनाशक प्रेस से इसका मुद्रण होता था। कलाचन्द्र राय सम्पादक थे। सन 1829 में कोलकाता से *'कैलीडोस्कोप'* का प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशक जे.जे.फिल्यूरी थे। पत्रिका सन 1931 तक प्रकाशित हुई।

1830

संवाद प्रभाकर

28 जनवरी 1830 को बंगला के स्वनामधन्य कवि ईश्वरचन्द्र गुप्त ने साप्ताहिक *'संवाद प्रभाकर'* का प्रकाशन किया। वही इसके सम्पादक थे। ग्यारह वर्ष आठ माह प्रकाशित होने वाले 'संवाद प्रभाकर' ने बंगला पत्रकारिता तथा बंगला गद्य लेखन को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंगला साहित्य का इतिहास, कविताएँ, विज्ञान की प्रगति इस पत्र के प्रमुख विषय थे। अपने समय के अग्रणी लेखकों को तो 'संवाद प्रभाकर' ने अपने परिवार में जोड़ा ही, नवोदित प्रतिभाओं को प्रकाश में लाने और प्रोत्साहित करने का काम भी किया। बंकिमचन्द्र चटर्जी जैसे महान रचनाकारों को स्थापित करने में इस पत्र की भूमिका थी। 'संवाद प्रभाकर' की दृष्टि आधुनिक थी। सम्पादक वस्तुपरक पत्रकारिता के पक्षधर थे। यह उनका राष्ट्रवादी दृष्टिकोण ही था कि उनका पत्र अँगरेजों द्वारा भारत के दोहन और शोषण पर तीखी टिप्पणी करता था। बंगाल से अर्जित राजस्व को बंगाल पर खर्च नहीं करने के वे विरोधी थे। दस अगस्त 1836 से कुछ दिनों के लिए बंद रहने के बाद 1836 में 'संवाद प्रभाकर' सप्ताह में तीन बार और 14 जून 1839 से दैनिक पत्र के रूप में निकलने लगा। 'संवाद प्रभाकर' को बंगला भाषा का प्रथम दैनिक समाचारपत्र होने का गौरव प्राप्त है। 23 जनवरी 1859 को सम्पादक ईश्वरचन्द्र के निधन के बाद उनके अनुज रामचन्द्र गुप्त इसके सम्पादक-प्रकाशक हुए।

कोलकाता से जनवरी 1830 में मासिक *'केलकटा मैगजीन'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक डी.एल.रिचर्डसन थे। यह साहित्यिक पत्रिका थी जिसमें लेख, कहानियां आदि छपते थे। अप्रैल 1833 में जब प्रकाशक सेमुअल स्मिथ एंड कम्पनी ने 'केलकटा क्वार्टरली मैगजीन एण्ड रिव्यू' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया, तब 'केलकटा मैगजीन' बंद कर दी गई।

'पार्थेनान' के पहले अंक ने ही कट्टरपंथियों को झकझोर दिया और उनके प्रभाव तथा हिम्मत को ऐसी चुनौती दी कि वे सब एकजुट होकर इसके पीछे पड़ गए। इसका प्रकाशन फरवरी, 1830 में हुआ। इस पत्र के सम्पादक और अन्य लेखक भारतीय थे। पहले अंक का विवरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बंगाल स्पेक्टेटर'[1] में मिलता है, जिसके अनुसार इसने उपनिवेशवाद और महिला शिक्षा की वकालत की थी, सस्ते न्याय की माँग उठाई थी और हिन्दुओं के अन्धविश्वास की भर्त्सना की थी। कट्टरपंथी हिन्दुओं के दबाव के कारण इसका दूसरा अंक छपने के बाद भी नहीं बँटा। अन्तत: पत्र बंद हो गया।

साप्ताहिक *'मिरर आफ द प्रेस आर द पोलीटिकल एण्ड लिटरेरी रजिस्टर'* का प्रकाशन एक मई 1830 से हुआ. आकार 32 गुणित 24 से.मी. था। इसका तिमाही शुल्क नौ रुपये था। पिछले सप्ताह की घटनाओं का यह अच्छा रजिस्टर था। घटनाओं पर पक्ष-विपक्ष में जनता की राय भी छापी जाती थी। मुद्दों को समझने में इसकी भूमिका अच्छी थी। इसका साहित्य खण्ड उपयोगी था। यह साप्ताहिक छह माह ही निकल पाया।

कोलकाता से जून 1830 में साप्ताहिक *'शास्त्र प्रकाश'* का प्रकाशन किया गया। लक्ष्मीनारायण न्यायालंकार इसके सम्पादक थे। जब वे पूर्णिया में जज नियुक्त हो गए, तब फरवरी 1831 में इसका प्रकाशन बंद हो गया।

एक सितम्बर 1830 से मुम्बई से साप्ताहिक *'मुम्बई वर्तमान'* पत्र निकला। नौरोजजी दाराबजी इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। तेरह वर्ष बाद इसका नाम *'मुम्बईना हरकारू अने वर्तमान'* हो गया। तब यह अर्द्ध साप्ताहिक पत्र हो गया था। सन 1833 में फिर एक बार इसका नाम बदला- *'मुम्बईना चाबुक'*। सन 1850 में इसे *'चाबुक'* नाम दिया गया। अन्तत: सन 1881 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

1831

रिफार्मर

समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने और रूढ़ियों से छुटकारा दिलाने के उद्देश्य से कुछ प्रबुद्ध भारतीयों ने साप्ताहिक *'रिफार्मर'* का प्रकाशन फरवरी, 1831 में प्रारम्भ किया। यह बंगदूत प्रेस से छपता था। यह सुधारवादी पत्र था। जातिभेद, बहुपत्नी प्रथा आदि का विरोधी था। स्त्री शिक्षा की वकालत करता था और हिन्दू विधवा विवाह का समर्थक था। दो रुपये प्रतिमाह कीमत, 46 गुणित 30 से.मी. आकार वाला यह पत्र प्रति रविवार छपता था। इसमें अधिक विज्ञापन नहीं होते थे। यह 4 पृष्ठ का अखबार था जिसमें एक पृष्ठ में चार कालम होते थे। इसमें सम्पादक के नाम पत्र, सम्पादकीय और अन्य समाचारपत्रों से प्रमुख समाचारों का सारांश छपता था। सन 1833 में इसके 400 ग्राहक थे जिनमें 100 अँगरेज थे। उस समय के हिसाब से यह अच्छी प्रसार सँख्या थी। सन 1835 के अंत में यह 'बंगाल हेरल्ड' और 'केलकटा लिटरेरी गजट' में समाहित हो गया। इसके मालिक भोलानाथ सेन थे। इसका सम्पादन प्रसन्न कुमार टैगोर करते थे।

जोरबागान स्ट्रीट कोलकाता से 23 फरवरी 1831 को साप्ताहिक *'संवाद सुधाकर'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक प्रेमचन्द्र राय थे। यह चार वर्ष तक प्रकाशित हुआ। *'समाचार सभा राजेन्द्र'* सात मार्च 1831 को कोलकाता से प्रकाशित हुआ। इसकी भाषा बंगला और फारसी थी। शेख अजीमउल्ला सम्पादन करते थे। कानपुर के सेमुअल ग्रीनवे के प्रेस से सन 1828 में *'ओनीनिबस'* नामक समाचारपत्र छपना शुरू हुआ जिसके कुछ ही अंक जारी हो पाये। सन 1830 में इसी प्रेस की एक शाखा मेरठ में स्थापित हुई। वहाँ से सन 1831 में 'मेरठ

1. बंगाल स्पेक्टेटर, सितम्बर 1842

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आब्जर्वर' का प्रकाशन होने लगा। इसके सम्पादक कैप्टन एच. ट्यूकेट और उनके सहायक कैप्टन एन. केम्पवैल थे। लार्ड विलियम वेंटिक की प्रशासनिक कार्रवाइयों की आलोचना करने के कारण यह सरकार की निगाहों में खटकने लगा। कैप्टन केम्पवेल को तोड़ लिया गया। बाद में हटचिन्स और व्हिफेन ने 'मेरठ आब्जर्वर' के सम्पादन की जवाबदारी सम्हाली। लेकिन इस पत्र के कलेवर में निखार तब आया जब एच.कोप सम्पादक हुए। वे उस जमाने के श्रेष्ठ सम्पादकों में गिने जाते थे और बाद में 'दिल्ली गजट' और 'लाहौर क्रानिकल' जैसे पत्रों के सम्पादक हुए। प्रेस का प्रभार ग्रहण करने के बाद कोप ने उसी प्रेस से सन 1835 में *'मेरठ युनिवर्सल मैगजीन'* का प्रकाशन आरम्भ किया। यह अच्छी मासिक पत्रिका थी जो सन 1837 तक प्रकाशित हुई।

'एनक्वायरर' का प्रकाशन कोलकाता के युवा बुद्धिजीवियों ने 17 मई 1831 को किया। इस साप्ताहिक के सम्पादक कृष्णमोहन बनर्जी थे। इसका उद्देश्य हिन्दुत्व की रक्षा करते हुए उन लोगों को प्रत्युत्तर देना था जो भारतीय समाज को तोड़ना चाहते थे। 'संवाद कौमुदी' के अनुसार 'एनक्वायरर' के लेखक विलक्षण बुद्धि के धनी थे। यद्यपि उस समय तक राष्ट्रीयता का गर्व घर-घर में व्याप्त नहीं हुआ था, फिर भी शिक्षितों की यह टोली राष्ट्रीयता की भावना से उद्वेलित थी। इस पत्र की कीमत 2 रुपये माहवार थी। प्रसार सँख्या 100 थी। पोस्टेज सुविधा के अभाव में यह बाहर नहीं जा पाता था। दिसम्बर 1834 में इसे मासिक का स्वरूप देना पड़ा। अन्तत: जून 1835 का अंक इसका अंतिम अंक साबित हुआ।

कोलकाता का हिन्दू कालेज देशप्रेमी नवयुवकों का गढ़ था। अप्रैल 1831 में यहाँ के शिक्षक एच.एल.व्ही. डिरोजिओ ने नौकरी छोड़कर दैनिक पत्र *'ईस्ट इण्डियन'* एक जून 1831 से निकाला। इसका उद्देश्य सभी समुदायों के न्यायोचित अधिकारों की आवाज बुलंद करना था। इसकी कीमत 5 रुपये मासिक थी। समकालीन दैनिकों से पत्रकारिता के मानदण्डों में यह पत्र आगे था। यह पुराने समाचार नहीं देता था। सम्पादक की योग्यता के प्रभाव से पत्र लोकप्रिय हुआ और प्रसार सँख्या भी अच्छी थी। सम्पादक डिरोजिओ के निधन के बाद 15 फरवरी 1832 को यह पत्र बंद हो गया।

ज्ञान अन्वेषण

बंगला साप्ताहिक *'ज्ञान अन्वेषण'* का प्रकाशन दक्षिणारंजन मुखोपाध्याय ने 18 जून, 1831 को कोलकाता से किया था। यह बंगाल के नवयुवकों की भावनाओं का प्रवक्ता था। मुखर राजनीतिक मत इसकी विशेषता थी। यह पत्र ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा भारत में राजनीतिक आधिपत्य जमाने के विरुद्ध था। इस पत्र ने दो टूक लिखा भी- ''व्यापारियों की एक टोली को हमारे ऊपर सर्वसत्ताधारी बनाया गया है। प्रश्न यह है कि व्यापारिक मनोभावना के ये लोग कहाँ तक कानून बनाकर हमें न्याय दे पाएंगे और हमारे अधिकार और स्वतंत्रता कहाँ तक सुरक्षित रहेगी। ....संक्षेप में कहें तो वे लाभ के अपने नीच इरादों को शासन के ऊपर ही रखेंगे।'' इस पत्र ने देशहित में प्रेस की स्वतंत्रता, सरकारी कार्यालयों के भ्रष्टाचार, गरीबों की दशा, शिक्षा के प्रसार, सेवाओं का भारतीयकरण आदि अनेक विषयों पर सुझाव दिए। पत्र का दृष्टिकोण प्रगतिशील था। उसने सामाजिक कुरीतियों को त्यागने की सलाह भी दी। 'ज्ञान अन्वेषण' के संस्थापक-सम्पादक दक्षिणारंजन के बाद इस पत्र को रसिक कृष्ण मलिक और माधवचन्द्र मलिक ने चलाया। सन 1833 में यह द्विभाषी पत्र (अँगरेजी और बंगला) हो गया। यह पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा ध्यान 'दर्पण' की ओर होता था। बालशास्त्री जाम्भेकर ने बड़े निस्वार्थ भाव से 'दर्पण' समाचारपत्र चलाया। आठ वर्ष बाद उन्होंने 'दर्पण' को 'युनाइटेड सर्विस गजट एण्ड लिटरेरी क्रानिकल' में परिवर्तित कर दिया। इस प्रकार एक जुलाई 1840 को 'दर्पण' की यात्रा समाप्त हो गई।

साप्ताहिक *'इण्डियन रजिस्टर'* का प्रकाशन फरवरी, 1832 के प्रथम सप्ताह में किया गया था। कुछ महीनों के बाद यह सप्ताह में दो बार प्रकाशित होने लगा। 'इंडिया गजट' के दो मई 1832 के अंक में इस सम्बन्ध में एक विज्ञापन प्रकाशित कराया गया जिसमें घोषणा की गई कि 'इंडियन रजिस्टर' जो प्रति बुधवार और शनिवार को प्रकाशित होता है, ईस्ट इंडियन के हितों को संरक्षित करने के लिये समर्पित है। कुछ समय बाद यह पत्र प्रतिदिन शाम को छपने लगा। इसका शुल्क 3 रुपये मासिक रखा गया। परन्तु यह व्यवस्था नहीं चल सकी और पत्र हफ्ते में तीन दिन मंगलवार, गुरुवार तथा शनिवार को प्रकाशित होने लगा। इसका मासिक शुल्क दो रुपये कर दिया गया। इसकी प्रसार सँख्या 200 थी। एक अक्टूबर 1833 से यह पत्र पुन: दैनिक हो गया। अन्ततः 22 दिसम्बर 1833 के पूर्व 'इण्डियन रजिस्टर' का प्रकाशन बंद हो गया। 'रिफार्मर'[1] में 'इण्डियन रजिस्टर' के अंतिम अंक का अंश उद्धृत किया गया, जिसमें बंद होने का कारण बताया गया है कि विशेषकर ईस्ट इण्डियनों का जो सहयोग मिलता था वह वापिस ले लिया गया।

अर्द्ध साप्ताहिक *'स्पेक्टेटर इन इण्डिया'* का प्रकाशन दो मार्च 1832 को कोलकाता से हुआ। हर मंगलवार और शुक्रवार को इसका प्रकाशन होता था। यह सामाजिक विषयों को समर्पित पत्र था। यह पत्र आठ पृष्ठों का था। दस अंकों के बाद यह साप्ताहिक पत्र के रूप में निकलने लगा। पृष्ठ सँख्या 12 कर दी गई थी। चार अगस्त 1832 को इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

कोलकाता मिशनरी कान्फ्रेन्स ने जून 1832 में मासिक पत्र *'केलकटा क्रिश्चियन आब्जर्वर'* प्रकाशित किया। इसके तीन सम्पादक थे जो कान्फ्रेंस में चुने गए थे। प्रथम तीन सम्पादक थे- रेवरेण्ड अलेक्जेण्डर डफ आफ द स्काटिश मिशन, रेवरेण्ड डब्ल्यू.एच.पीयर्स आफ द बैप्टिस्ट मिशनरी सोसायटी और रेवरेण्ड थामस बोआज आफ द लंदन मिशनरी सोसायटी। इसमें तीन भाग रखे गए- 1.अध्यात्म पर सैद्धान्तिक लेख और ऐसे लेख जिनमें इसका पालन करने की विधियों का वर्णन हो, 2.धर्म पर आधारित साहित्य की समीक्षा और सामान्य साहित्य तथा 3.धर्म प्रचार कार्यों की प्रगति और समाचार। इस पत्र की मालिक 'कलकत्ता मिशनरी कान्फ्रेंस' थी। इसका वार्षिक शुल्क 10 रुपये था। प्रारम्भ में यह बैप्टिस्ट मिशन प्रेस, लोअर सर्कुलर रोड कोलकाता से छपता था। इसकी प्रसार सँख्या 300 से 350 के बीच थी। यह पत्र सन 1857 के बाद भी कुछ समय तक चलता रहा।

सन 1832 में मुम्बई से पारसी समाज के मुख पत्र के रूप में *'जामे जमशेद'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक पेस्तनजी माणिकजी मोतीवाला थे। यह साप्ताहिक समाचारपत्र के रूप में निकला था। सन 1853 में इसे दैनिक समाचारपत्र किया गया।

अक्टूबर 1832 में *'मद्रास क्रानिकल'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक विशाख पेरूमाल अय्यर और श्रवण पेरूमाल अय्यर थे। कानस्टेंटाइन ईसाई मिशन द्वारा चेन्नै से प्रकाशित

1. रिफार्मर, 22 दिसम्बर 1833

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पत्र अर्द्धसाप्ताहिक था। इसका प्रकाशन बुधवार को तेलुगु संस्करण तथा शनिवार को तमिल संस्करण के रूप में किया जाता था।

साप्ताहिक *'फिलानथ्रोपिस्ट'* सन 1832 में कोलकाता से निकला। यह धार्मिक पत्र था। इसके सम्पादक-प्रकाशक सी.एच. हेग थे। बाद में जॉन मार्शमैन ने यह पत्र हस्तगत कर इसे आठ जनवरी 1835 से 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' के नाम से प्रकाशित किया।

सन 1832 में कोलकाता से *'दूरबीन'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक फ़िदा हुसैन थे। सन 1857 में फारसी के इस समाचारपत्र पर आपत्तिजनक सामग्री प्रकाशित करने के आरोप में मुक़दमा चलाया गया था। सम्पादक के गलती स्वीकार कर लेने पर मुकदमा खारिज कर दिया गया।

1833

आगरा अख़बार

'आगरा अख़बार' और *'ज़ब्दहतुल अख़बार'* एक ही थे। पहले यह 'आगरा अख़बार' के नाम से प्रकाशित होता था, बाद में इसका नाम 'ज़ब्दहतुल अख़बार' रखा गया था। आगरा अख़बार के मालिक और सम्पादक मुंशी वाजिद अली खां थे। उन्होंने सन 1833 में इसका प्रकाशन किया था। इसके उद्धरण 'बंगाल हरकारू एंड क्रानिकल' कोलकाता में छपते थे। यह महत्व उस समय के फारसी के किसी भी समाचारपत्र को प्राप्त नहीं था। इसी पत्र के एक मार्च सन 1834 के अंक में प्रकाशित नोटिस द्वारा सूचित किया गया कि 'आगरा अख़बार' ने अपना नाम बदल कर 'ज़ब्दहतुल अख़बार' कर लिया है।

मुंशी वाजिद अली खां की योग्यता को सभी मानते थे। उनको पाँच रियासतों- भरतपुर, अलवर, झझ्झर, जावरा और हैदराबाद तथा सेठ लक्ष्मीचंद से आर्थिक सहयोग प्राप्त होता था। इसके अतिरिक्त पत्र की बिक्री से एक सौ चालीस रुपये की आय थी। खर्च लगभग चालीस रुपये प्रति माह आता था। विज्ञापन से होने वाली आय इसके अलावा थी। वाजिद अली खां बड़ी सजगता से लिखते थे। वे पश्चिमी सभ्यता को पसंद नहीं करते थे।

'ज़ब्दहतुल अख़बार' की शैली का एक नमूना दृष्टव्य है- ''अवध- यद्यपि इन दिनों अवध के नवाब स्वस्थ हैं किन्तु बुढ़ापे की कमजोरी के कारण दरबार में बहुत कम आते हैं। समस्त राजकाज शहज़ादे द्वारा चलाए जा रहे हैं। शहज़ादा बेदार बख़्त को औरतों की सलाह पसंद आती है उनकी दोनों बेगमें उनके दाएं-बाएं बैठी रहती हैं और जो वे कहती हैं वही होता है। इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। स्वर्गीय सुलतान के समय भी ऐसा ही होता था, वे भी औरतों पर पूर्ण विश्वास करते थे जिसके फलस्वरूप शासन में जो खराबी आई वह जगज़ाहिर है। अब पुनः वही पद्धति शुरू हुई है जिसका देखना है क्या होता है।''

सन 1853-54 की एक सरकारी रिपोर्ट में लिखा गया- ''ज़ब्दहतुल अख़बार' जिसके सम्पादक वाजिद अली खां थे और जो 20 वर्षों से निकल रहा था, बंद कर दिया गया है।'' सन 1833 में दिल्ली के कर्नल पेव, डा. रंकन और जान टेलर तथा इनके कुछ विदेशी और भारतीय मित्रों ने विचार किया कि जब मेरठ और आगरा सरीखी जगहों से समाचारपत्र छप सकते हैं तब दिल्ली से क्यों नहीं? एक लाभप्रद कार्य की कल्पना में उन्होंने सन 1833 में *'देहली गजट'* प्रकाशित किया। इसका सम्पादन समय-समय पर अलग-अलग व्यक्ति जैसे कर्नल पेव, हालिंग्स और कर्नल आर. विल्सन करते रहे। सन 1866 में जब कोप इसके सम्पादक थे, इसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

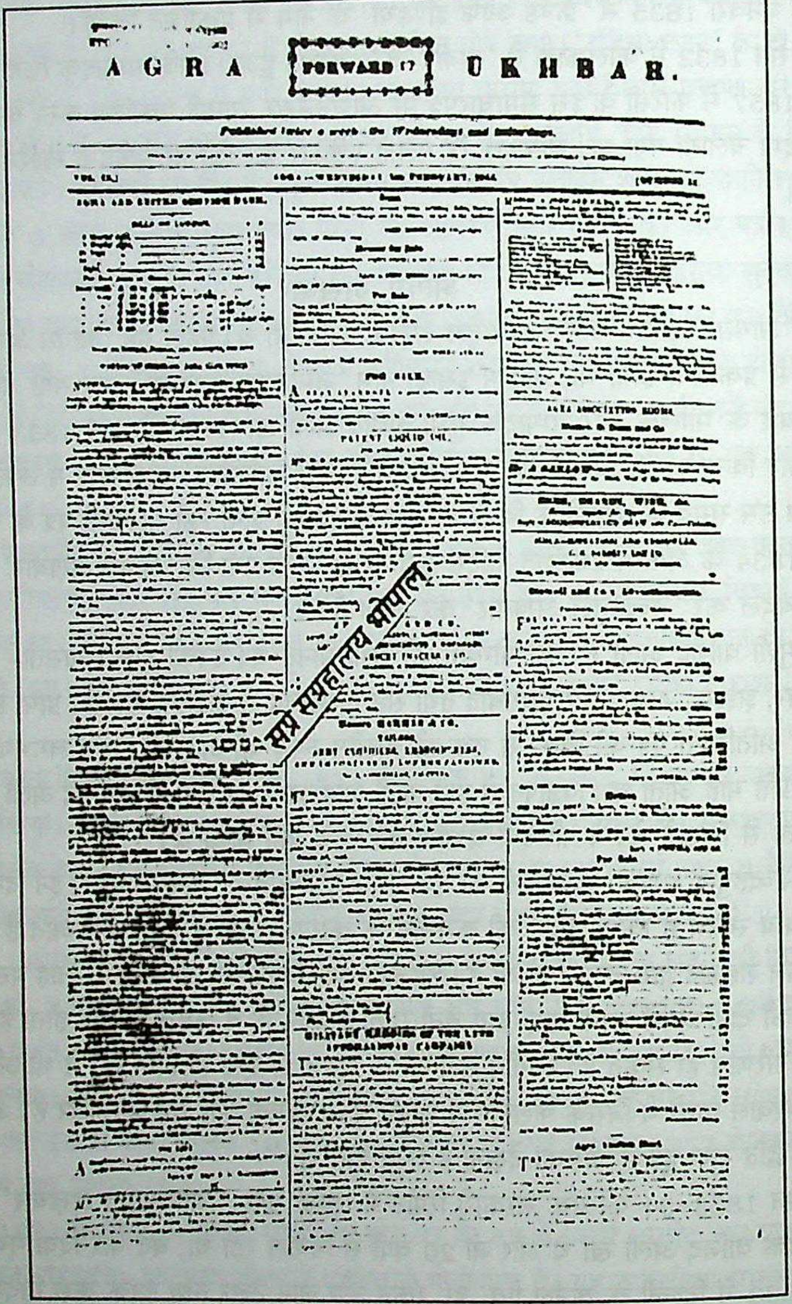

A G R A FORWARD U K H B A R.

Published twice a week - On Wednesdays and Saturdays.

FOR SALE.

PATENT LIQUID OIL

सप्रे संग्रहालय भोपाल

आगरा अखबार, सन 1833

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसार सँख्या 1892 थी। सन 1865 तक यह पत्र प्रकाशित होता रहा।

मार्च 1833 में प्रकाशित *'बंगाल मंथली स्पोर्टिंग मैगजीन'* के सम्पादक जे.एच. स्टाक्यूलर थे। इसमें घुड़दौड़, खेलकूद, थिएटर, संगीत तथा वन्य प्राणियों से सम्बन्धित सामग्री छापी जाती थी। इस विषय क्षेत्र की कोई और पत्रिका नहीं होने से इसकी लोकप्रियता बढ़ गई थी। यहाँ तक कि कुछ अंक बढ़ी हुई माँग के कारण दुबारा छापने पड़े थे। क्रिकेट की खबरें भी इसमें छपती थीं। 1845 में इसका कलेवर बदला, पर वह पाठकों को रास नहीं आया। सन 1846 में इसे बंद कर दिया गया।

अप्रैल 1833 में सेमुअल स्मिथ एण्ड कम्पनी ने मासिक 'केलकटा मैगजीन' के स्थान पर त्रैमासिक पत्रिका *'केलकटा क्वार्टरली मैगजीन एण्ड रिव्यू'* का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके सम्पादक डी.एल. रिचर्डसन थे। यद्यपि यह बदलाव सफलता पाने के लिए किया गया था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ और पत्रिका बंद हो गई।

चेन्नै से प्रकाशित *'कर्नाटक क्रानिकल'* तेलुगु, तमिल तथा अँगरेजी भाषा में मजमून छापता था। 18 मई 1833 को आरम्भ होने वाला यह पत्र साप्ताहिक था।

अगस्त 1833 में *'ईस्ट इण्डिया युनाइटेड सर्विस जर्नल'* का प्रकाशन कोलकाता से द्वै-मासिक पत्रिका के रूप में हुआ। जुलाई 1834 में मासिक पत्रिका हुई और 1838 में त्रैमासिक निकलने लगी। जे.एच. स्टाक्युलर पत्रिका के प्रकाशक थे। इसका वार्षिक शुल्क सत्रह रुपये तथा एक प्रति का मूल्य 2 रु. था। अप्रैल 1839 में इस पत्रिका का प्रकाशन बंद हो गया।

इतिहास, आत्मकथा, भूगोल, नीति और आचार शास्त्र तथा विज्ञान सम्बन्धी जानकारियों के प्रकाशन को मुख्य ध्येय मानने वाली पत्रिका *'मेनुअल आफ लिटरेचर एण्ड साइन्स'* सितम्बर, 1833 में कोलकाता से प्रकाशित हुई। इस पाक्षिक के प्रकाशक एम.डब्ल्यू.बुलस्टन, गंगाचरण सेन एवं नवकुमार चक्रवर्ती थे। इसका मासिक शुल्क छह आना तथा वार्षिक शुल्क आठ रुपये था। इसके पहले अंक में सर विलियम जान का जीवन वृत्त, नैसर्गिक दर्शन तथा ब्रिटेन के धर्मों पर लेख हैं। यह अँगरेजी और बंगला भाषा में निकलती थी। जनवरी 1834 में इसकी नई श्रृंखला मासिक पत्रिका के रूप में निकली।

सितम्बर 1833 में अँगरेजी साहित्य और विज्ञान की तरक्की से जन साधारण को अवगत कराने के ध्येय से प्रेरित पत्रिका *'फोर आना मैगजीन'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। केवल एक वर्ष तक यह पत्रिका प्रकाशित हो सकी। अँगरेजी और बंगला भाषा में इसका प्रकाशन होता था।

सन 1833 में कोलकाता से *'माह आलम अफ़रोज़'* का प्रकाशन मौलवी वहाजुद्दीन ने किया। वही इसके सम्पादक थे। प्रारम्भ में इस साप्ताहिक पत्र की नीति नरमपंथी थी। किन्तु सन 1835 में जब सर चार्ल्स मेटकॉफ के कार्यकाल में प्रेस एक्ट स्वीकृत हुआ तब इसने ब्रिटिश राज्य पर टीका टिप्पणी करना प्रारम्भ कर दिया। एक बार कुछ अँगरेज शिकार पर गये थे जिनकी गोली का निशाना चूक जाने से एक महिला की मृत्यु हो गई थी। न्यायालय में उस अँगरेज ने सफाई में कहा कि यह केवल एक दुर्घटना थी, अन्यथा उस महिला को मारने का उसका कोई इरादा नहीं था। अँगरेज न्यायाधीश ने उस अँगरेज हत्यारे को दोषमुक्त कर दिया। 'माह आलम अफ़रोज़' ने प्रतिक्रिया स्वरूप टिप्पणी की कि न्यायालय ने ऐसा उदाहरण पेश किया है जिसके फलस्वरूप भविष्य में भी इस प्रकार की हत्या के आरोपी छूट जाया करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैप्टिस्ट मिशनरियों लॉरी और वैड के प्रयत्नों से लुधियाना से सन 1833 में फारसी भाषा में '*लुधियाना अख़बार*' निकला। ईसाई मत के प्रचार साहित्य की कमी पूरी करने के लिए इस पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। पहले यह पत्र हस्तलिखित निकाला गया। सन 1835 में प्रेस लग जाने के पश्चात इस पत्र को टाइप में छापा जाने लगा। इस समाचारपत्र का प्रथम सम्पादक होजेज़ नामक अँगरेज था, जो पहले पोस्ट मास्टर और बाद में शिक्षक रह चुका था। 'लुधियाना अख़बार' चार पृष्ठ का निकलता था। इसकी एक प्रति की कीमत चार आने थी। इसमें विदेशी समाचारों का बाहुल्य रहता था। कुछ समय पश्चात खबरों का स्थान ऐतिहासिक, भौगोलिक और दूसरे लेखों ने ले लिया।

1834

एक जनवरी 1834 से जे.ग्राण्ट और जे.टी. पियर्सन के सम्पादन में '*इंडियन जर्नल आफ मेडिकल एंड फिजीकल साइंस*' का कोलकाता से प्रकाशन हुआ। यह मासिक पत्रिका थी। इस पत्रिका के विषयों में उपचार एवं चिकित्सा विज्ञान, देशी उपचार पद्धति, अस्पतालों की रिपोर्ट, चिकित्सा विषयक कानून, अंत्य परीक्षण, प्राणी विज्ञान एवं कीट विज्ञान, वनौषधि, प्रमुख चिकित्सकों के कृतित्व का वर्णन आदि सम्मिलित रहते थे। सन 1835 में डा. फ्रेडरिक कारबिन सम्पादक हुए। सन 1843 में सम्पादन का दायित्व डा. इविलेघ ने सम्हाला। सन 1844 के उत्तरार्द्ध में डा.सी. फिन्च सम्पादक हुए।

9 जून 1834 को '*प्रजा मित्र*' निकला। सन 1834 में अर्द्ध साप्ताहिक '*वृत्तान्त वाहक*' का प्रकाशन भवानीपुर कोलकाता से हुआ। यह बंगला भाषा का पत्र था। '*फोर्ट सेंट गजट*' का प्रकाशन सन 1834 में चेन्नै से तेलुगु और अँगरेजी में साप्ताहिक पत्र के रूप में हुआ। सन 1834 में बालासोर से गुजराती साप्ताहिक '*प्रजातंत्र*' का प्रकाशन हुआ। जगदीशचरण शाह इसके सम्पादक थे।

1835

फ्रेण्ड आफ इण्डिया

जनवरी 1835 में साप्ताहिक '*फ्रेण्ड आफ इण्डिया*' का प्रकाशन हुआ। पुराने 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' से इसका कोई सम्बन्ध नहीं था। सन 1843 में कोलकाता से छपने वाले 5 प्रमुख समाचारपत्रों में सबसे अधिक भारतीय ग्राहक 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' के ही थे। इसका प्रचलन अधिक होने से इसे अधिक विज्ञापन भी मिलते थे। परन्तु सम्पादक ने खुलासा किया– ''सोलह पृष्ठों के इस पत्र में अधिकतम तीन पृष्ठ विज्ञापन ही छापे जा सकते हैं।''[1]

सन 1857 के विद्रोह से घबराकर सरकार ने प्रेस पर कड़े बन्धन लगाने के उद्देश्य से कानून बना दिया जिसके अनुसार प्रत्येक समाचारपत्र को लायसेंस लेना जरूरी था। लायसेंस की शर्तें बन्धनकारी थीं। सन 1857 का कानून अँगरेजी और सभी भाषायी पत्रों पर समान रूप से लागू किया गया था। 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' ने इसके खिलाफ आवाज उठाई। जिन पत्रों ने लायसेंस की शर्तों का उल्लंघन किया उनके खिलाफ कार्रवाई की गई। फिर भी इस गलाघोंटू कानून का

1. फ्रेण्ड आफ इण्डिया, 1 अक्टूबर 1846, पृष्ठ 625

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक पत्रों ने उल्लंघन किया। उस समय 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' के सम्पादक हेनरी मीड थे। सम्पादक ने 25 जून 1857 के अंक में 'प्लासी की शताब्दी' शीर्षक से एक सम्पादकीय लेख लिख दिया जिसमें अँगरेज शासकों की आलोचना की गई। गवर्नर जनरल को यह लेख पसन्द नहीं आया। भारत सरकार के सचिव सी.बीडन ने बंगाल सरकार के गृह विभाग के सचिव को 29 जून 1857 को एक पत्र लिखकर इस आपत्तिजनक लेख की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। बंगाल सरकार ने समाचारपत्र को चेतावनी दी। परन्तु इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और पुन: एक सम्पादकीय 2 जुलाई 1857 के अंक में 'प्रथम चेतावनी' शीर्षक से प्रकाशित किया गया। इस समय पत्र के मालिक जे.सी.मार्शमैन इंग्लैण्ड में थे। उनके स्थानीय प्रतिनिधि स्थिति की गम्भीरता को समझ रहे थे। इसके पहले कि सरकार द्वारा समाचारपत्र का लायसेंस रद्द किया जाता, स्थानीय प्रतिनिधि ने भारत सरकार को लिखित आश्वासन दिया। आश्वासन में कहा गया था, ''जे.सी.मार्शमैन की अनुपस्थिति में पत्र में ऐसा कुछ नहीं छापा जाएगा जिससे शिकायत हो तथा लायसेंस की शर्तों का उल्लंघन हो।''

सेरामपुर से प्रकाशित 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' प्रति गुरुवार प्रकाशित होता था। सन 1857 के विद्रोह के सम्बन्ध में पत्र का अपना मत स्पष्ट था। वह यह जताने की हरसम्भव कोशिश करता रहा कि आखिर ऐसी स्थिति उत्पन्न होने की कौन-कौन सी परिस्थितियाँ थीं। 14 जनवरी 1858 के अंक में प्रथम पृष्ठ पर सन 1857 के विद्रोह का घटनाक्रम और पृष्ठभूमि का विस्तार से विवरण देते हुए वे कारण बताए गए जिनसे ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई। 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' में सम्पादक के नाम पत्र भी छपते थे, कभी प्रतिक्रियाएँ और कभी शिकायती पत्रों को प्रमुखता से छापा जाता था।

राबर्ट नाइट सन 1868 में मुम्बई छोड़कर कोलकाता आ गए थे। उन्होंने बंगाल सरकार के कृषि विभाग में चार वर्ष नौकरी की, फिर सन 1874 में त्यागपत्र दे दिया। वे कलम के धनी तो थे ही, व्यवसाय बुद्धि भी उनमें तीव्र थी। उन्होंने कोलकाता के 24 व्यापारियों से सहयोग प्राप्त कर पहले सन 1875 में 'इंडियन स्टेट्समेन' निकाला। फिर 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' को 30,000 रुपये में खरीद कर उसे कोलकाता ले आए। राबर्ट नाइट को कुछ भारतीयों का भी इस पत्रकारिता-अनुष्ठान में सहयोग प्राप्त था। इनमें उल्लेखनीय त्रिलोकनाथ चटर्जी थे। कुछ समय तक ये दोनों पत्र कोलकाता से अलग-अलग नामों से छपते रहे। राष्ट्रीय पुस्तकालय के केटलॉग में 'स्टेट्समेन एण्ड फ्रेण्ड आफ इण्डिया' का संयुक्त शीर्षक सन 1884 से होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। इसी पुस्तकालय में इस शीर्षक के जनवरी 1877 के अंक उपलब्ध हैं, जिनमें शीर्षक है 'स्टेट्समेन' और उसके नीचे 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' लिखा है।

जनवरी 1877 में 'स्टेट्समेन' एवं 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' कोलकाता में तीन चौरंगी से राबर्ट हैमण्ड द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित किया जाता था। उस समय यह चार पृष्ठों का छपता था। प्रत्येक पृष्ठ पर सात बड़े कालम होते थे। प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापन छपते थे। सम्पादकीय दूसरे पृष्ठ पर चौथे कालम से छपता था। इस पृष्ठ के पहले के तीन कालमों में सम्पादक के नाम पत्र और विज्ञापनों को स्थान दिया जाता था।

राबर्ट नाइट सन 1878 में इंग्लैण्ड चला गया और वहाँ उसने एक साप्ताहिक '*लन्दन इण्डियन स्टेट्समेन*' प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। उसके इंग्लैण्ड जाने के बाद उसके पुत्रों पाल नाइट और राबर्ट नाइट कनिष्ठ ने समाचारपत्र का काम सम्हाला और खूब प्रगति की। सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

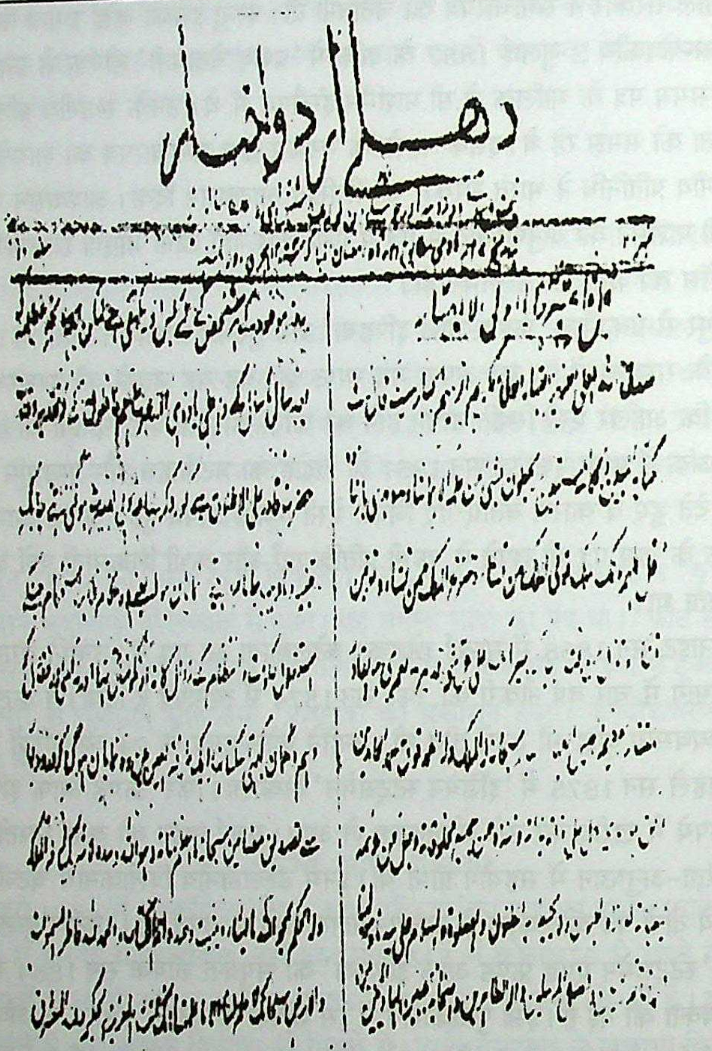
دہلی اردو اخبار

۱۷ مئی ۱۸۵۲ء کا دہلی اردو اخبار

देहली उर्दू अखबार, 17 मई 1853

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1923 में केवल 'स्टेट्समेन' के नाम से यह पत्र निकलने लगा।

'केलकटा रिव्यू' सन 1835 में कोलकाता से प्रारम्भ हुआ। प्रो. जयगोपाल बैनर्जी सम्पादक थे। यह अच्छी मासिक पत्रिका थी जिसमें कविताएँ, सामयिक लेख प्रकाशित होते थे। पुस्तकों की समीक्षा, अर्थशास्त्र, इतिहास, साहित्य, विज्ञान आदि पर लेखों के लिए नियमित स्तम्भ थे। जुलाई 1835 में खेलकूद की मासिक पत्रिका *'ओरिएण्टल स्पोर्टिंग मैगजीन'* का प्रकाशन सेमुअल स्मिथ एंड कम्पनी ने कोलकाता से किया। यह जे.एच.स्टाकयूलर की पत्रिका *'बंगाल मंथली स्पोर्टिंग मैगजीन'* की प्रतिस्पर्धा में निकाली गई थी। दिसम्बर 1835 में यह पत्रिका बंद हो गई।

सुलतान उल अख़बार

फ़ारसी भाषा के 'सुलतान उल अख़बार' का प्रकाशन दो अगस्त 1835 को कोलकाता से किया गया था। आठ पृष्ठ के इस समाचारपत्र का शुल्क कोलकाता वासियों के लिए दो रुपये था। अमीरों को डाक खर्च अतिरिक्त देना होता था। समाचारपत्र के प्रकाशक एवं सम्पादक रज्जब अली थे। इसमें ब्रिटिश शासन के विरुद्ध समाचार प्रकाशित किए जाते थे। समाचारों पर टिप्पणियाँ भी दी जाती थीं। नौ अगस्त 1835 के अंक में लिखा, ''अँगरेजी न्यायालयों में रिश्वत का बाज़ार गरम है।'' अदालत और डाक विभाग के कुप्रबन्ध के बारे में भी इसी अंक में लिखा गया था। इसके प्रकाशक मोहम्मद ताहिर को 17 जून 1857 को राजद्रोही समाचार छापने के आरोप में गिरफतार किया गया। किन्तु उसे सज़ा नहीं हो सकी। केवल भविष्य में ऐसा न करने तथा जब भी अदालत उसे तलब करे हाज़िर होने की ज़मानत देने एवं अपना अपराध स्वीकार करने की शर्त पर 27 जुलाई 1857 को रिहा कर दिया गया। यह पत्र सन 1857 तक निकलने के बाद बंद हो गया। सितम्बर 1835 में कैलाशचन्द्र दत्त और भुवनमोहन मित्र के सम्पादन में *'हिन्दू पायनियर'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह साहित्यिक मासिक पत्रिका थी। इसके प्रवेशांक में प्रकाशित सामग्री- कोलकाता का भूगोल, कविता, ओथेलो की विपदा, महिलाओं पर निबंध तथा पिंडारी प्रेमी से यह परिचय मिल जाता है कि यह पत्रिका राजनीति और धार्मिक विवादों से दूर रही। सन 1840 में इसका प्रकाशन बंद हो गया।

शिमला अख़बार

सन 1835 में शिमला से बाबू शिवप्रसाद ने *'शिमला अख़बार'* का प्रकाशन किया। इसे सर हर्बर्ट एडवर्ड का संरक्षण प्राप्त था। आरम्भ में इस पत्र का प्रकाशन उर्दू लिपि में होता था, बाद में क्षेत्र में हिन्दी भाषा का अधिक प्रचलन होने के कारण देवनागरी लिपि में छपने लगा। सन 1849 में आर्थिक संकट के चलते 'शिमला अख़बार' के प्रकाशन में कठिनाई आने लगी। सन 1849 में कुछ समय के लिए बंद होने के बाद सन 1850 में इसका पुनर्प्रकाशन शेख़ अब्दुल्ला के सम्पादन में हुआ। सन 1835 वाला 'शिमला अख़बार' साप्ताहिक पत्र था, जबकि इसका दुबारा प्रकाशन पाक्षिक पत्र के रूप में हुआ। 'शिमला अख़बार' में ख़बरें, वैचारिक लेख तथा पश्चिम की दुनिया के बारे में जानकारियाँ सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित की जाती थीं।

1836

देहली उर्दू अख़बार

दिल्ली से सन 1836 में साप्ताहिक *'देहली उर्दू अख़बार'* प्रकाशित किया गया था। 12 जुलाई 1857 से इसका नाम *'अख़बार-उल-ज़फ़र'* हो गया। वार्षिक शुल्क बीस रुपये तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मासिक शुल्क दो रुपये था। इसकी छपाई अन्य समाचारपत्रों की तुलना में बेहतर थी। पहले अंक में सम्पादक का नाम सैयद हुसैन, उसके पश्चात के अंकों में अगस्त 1840 तक सम्पादक मुईनउद्दीन तथा 23 अगस्त 1840 को सम्पादक मोतीलाल का नाम दिया गया है। अप्रैल 1848 में मोहम्मद बाक़र सम्पादक हुए। अप्रैल 1849 के बाद के अंकों में मोहम्मद हुसैन का नाम सम्पादक के रूप में गया है। 30 अक्टूबर 1853 को मोहम्मद हुसैन (मोहम्मद बाक़र के पुत्र) प्रेस के मालिक एवं प्रकाशक बने और अंत तक वही रहे। मोहम्मद हुसैन ने अपनी पुस्तक 'आबे हयात' में लिखा है, ''सन 1836 में उर्दू का देहली अख़बार जारी हुआ और यह इस ज़बान में पहला अख़बार था के मेरे वालिद मरहूम के कलम से निकला।''

'देहली उर्दू अख़बार' से मौलवी मोहम्मद बाकर का सम्बन्ध शुरू से रहा। परन्तु तब वे सरकारी सेवा में थे। 12 अगस्त 1840 के अंक में 'विज्ञापन' शीर्षक के अंतर्गत एक पुस्तक तथा उसके लेखक का परिचय इस तरह दिया गया है, ''सर्कुलर नम्बर दो मुस्दरह साहबान सदर बोर्ड रेवेन्यू जिसका वायदा छापने का हमने साबिक़ में किया था- अब छप चुका है जिनको मंज़ूर हो इस छापेख़ाने के सुप्रिन्टेन्डेन्ट को लिखें फ़ौरन बिला तबक़्क़ुफ़ भेजा जाएगा। वाज़ह हो यह तर्जुमा किया हुआ है मोहम्मद बाक़र नामी एक साहब का जो साबिक़ में मुदर्रिस थे मदरसा खास देहली में सररिश्तेदारी कलेक्टरी और तहसीलदारी मुद्दत तक की है। माल के काम में बहुत महारत रखते हैं।''

मौलाना बाक़र का प्रेस उनके मकान में ही था और उसका नाम देहली उर्दू अख़बार प्रेस था। 'देहली उर्दू अख़बार' के दो स्तम्भ 'हुज़ूरेवाला' तथा 'साहिबेकलां' प्रमुख थे। 'हुज़ूरेवाला' के अंतर्गत किले के आदेश तथा ज़फ़रशाह की गतिविधियाँ छापी जाती थीं। 'साहिबेकलां' के अंतर्गत ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों के आदेश और उनके दरबार के समाचार होते थे। विदेशों के समाचार अधिक तथा देशी रियासतों और देहली दरबार के समाचारों के साथ उनके कुप्रबन्ध पर टीका टिप्पणी की जाती थी। साहित्य के प्रकाशन में भी इस साप्ताहिक का बड़ा योगदान था। ग़ालिब, ज़ौक़, मोमिन जैसे प्रसिद्ध शायरों की कविताएँ छापता था। अँगरेजों के अत्याचारों और अनाचारों का यह अख़बार विरोध करता था किन्तु यह बहुत सधे हुए ढंग से प्रतीकों के माध्यम से किया जाता था। बहादुरशाह ज़फ़र से इस पत्र के सम्पादक को विशेष लगाव था। दिल्ली के बाहर के समाचार शहरों अथवा स्थानों का नाम देकर बिना शीर्षक के छापे जाते थे। सन 1857 में अँगरेजों ने सम्पादक को गोली मार कर हत्या कर दी थी। उसी के पश्चात पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया। सन 1836 में चेन्नै से *'स्पेक्टेटर'* का प्रकाशन हुआ। यह अँगरेजी में निकलने वाला साप्ताहिक पत्र था। सन 1860 में इसका 'मद्रास टाइम्स' में विलय हो गया।

अप्रैल 1836 में डा. फ्रेडरिक कारबिन के सम्पादन में मासिक पत्रिका *'इंडियन रिव्यू एण्ड जर्नल आफ फारेन साइंस एण्ड द आर्ट्स'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। इसके प्रकाशक जी.वोलास्टन थे। पत्रिका का एक साल पूरा हो जाने के बाद दूसरे वर्ष के पहले अंक में सम्पादक ने लिखा- ''एक ओर हमने इस बड़े देश के जन साधारण में शिक्षा के प्रसार को देखा और दूसरी ओर यह पाया कि यूरोप में विज्ञान के आविष्कारों की ओर कोई रुचि नहीं है। हमने इसी कार्य को करने की कोशिश इस पत्रिका के माध्यम से की है। हमारी सफ़लता का एक प्रमाण यह है कि पहले पत्रिका 32 पृष्ठों की निकलती थी, जो अब बढ़ कर 64 पृष्ठों की हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है।'' इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क 16 रुपये तथा एक प्रति का मूल्य दो रुपये था। 1843 में डा. कारबिन के स्वदेश लौट जाने पर डा. ग्राण्ट इस पत्रिका के सम्पादक-प्रकाशक हुए। इसके बाद पत्रिका का प्रकाशन अनियमित हो गया। जुलाई 1847 के अंक के साथ पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो गया।

मद्रास मेल

सन 1836 से प्रकाशित 'स्पेक्टेटर' एवं 'मेल' के एकीकरण के बाद उसे नया नाम देकर *'मद्रास मेल'* का प्रकाशन सन 1868 में किया गया था। ब्रिटिश स्वामी एवं सम्पादक होने के कारण यह हमेशा ब्रिटेन के निवासियों के मतानुसार चलता था और उन्हीं की बात कहता था। अत: इसे सरकार का पूरा सहयोग प्राप्त था। इसके पहले सम्पादक चार्ल्स लॉसन थे। उन्होंने मद्रास प्रेसीडेंसी की ओर से सन 1887 में एक कमेटी बनाकर रानी विक्टोरिया की जयन्ती का आयोजन किया था। उनके बाद इस पत्र के सम्पादक के.के. बियूचेम्प हुए। वे नमक विभाग में अधिकारी थे। उन्होंने जन साधारण से सम्बन्धित घटनाओं के स्वतंत्र प्रकाशन की आवश्यकता पर जोर डाला था। उनके बाद इस पत्र का सम्पादन टी.ई.वेब्ले ने किया। वे एक साहित्य समीक्षक थे। उन्होंने समाचारपत्र को जनमत का मापक यंत्र बताया। पश्चात ए.ई.लासन और डी.स्काट ब्रेमनर सम्पादक हुए। इस पत्र पर ए.ए.हेलेस का विशेष प्रभाव पड़ा। वे स्वतंत्र चेता पत्रकार थे। वे सन 1912 में 'मद्रास टाइम्स' से जुड़े और एक जनवरी 1921 को 'मेल' में काम करना शुरू किया। वे उप सम्पादक के पद पर नियुक्त किये गये थे और सन 1928 में पत्र के सम्पादक बने। वे इस पत्र की रिपोर्टें, समाचार, यहाँ तक कि प्रूफ भी स्वयं देखा करते थे। इसमें आसपास के कस्बों और ग्रामीण अंचल के समाचार भी छापे जाते थे। सन 1921 में 'मद्रास टाइम्स' और 'मद्रास मेल' का विलय हो गया। सन 1928 से इसमें चित्रों का प्रकाशन भी किया जाने लगा। उस समय इसे 16 पृष्ठों का निकाला जाता था। सन 1929 से इसका साप्ताहिक संस्करण प्रकाशित होने लगा।

1837

जनवरी 1837 में *'डेली न्यूज'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। यह अँगरेजी पत्र पहले वर्ष में ही काफी लोकप्रिय हो गया था। तदनन्तर सम्पादक के 'इंग्लिशमेन' में चले जाने के कारण यह लड़खड़ा गया और 'कमर्शियल एडवरटाइजर' में विलीन हो गया। सितम्बर 1837 में अँगरेजी पाक्षिक पत्र *'रैन बो'* कोलकाता से निकला। समकालीन पत्र 'केलकटा क्रिश्चियन आब्जर्वर' ने इसे बच्चों की पत्रिका करार दिया था। यह पाक्षिक ज्यादा दिनों तक नहीं चल पाया। सन 1837 ई. में सर सैयद अहमद खां के भाई सैयद मोहम्मद खां ने साप्ताहिक *'सैयद-उल-अख़बार'* का प्रकाशन दिल्ली से उर्दू भाषा में किया। इसके सम्पादक मौलवी अब्दुल ग़फूर थे। यह समाचारपत्र अधिवक्ताओं में काफी लोकप्रिय था। इस प्रेस को मिर्ज़ा ग़ालिब का उर्दू दीवान सर्वप्रथम प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है। सन 1844 से सन 1848 के बीच इस समाचारपत्र की आर्थिक स्थिति लड़खड़ा गई। 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया'[1] में 'केलकटा कूरियर' के हवाले से यह जानकारी दी गई कि दिसम्बर 1837 में कोलकाता से *'संवाद गुणाकर'* नामक एक अर्द्ध साप्ताहिक बंगला भाषा में प्रकाशित हुआ। बाद में कुछ समय के लिए यह दैनिक के रूप में भी प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक गिरीशचंद्र बसु थे।

---

1. फ्रेण्ड आफ इण्डिया, 4 जनवरी 1838

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

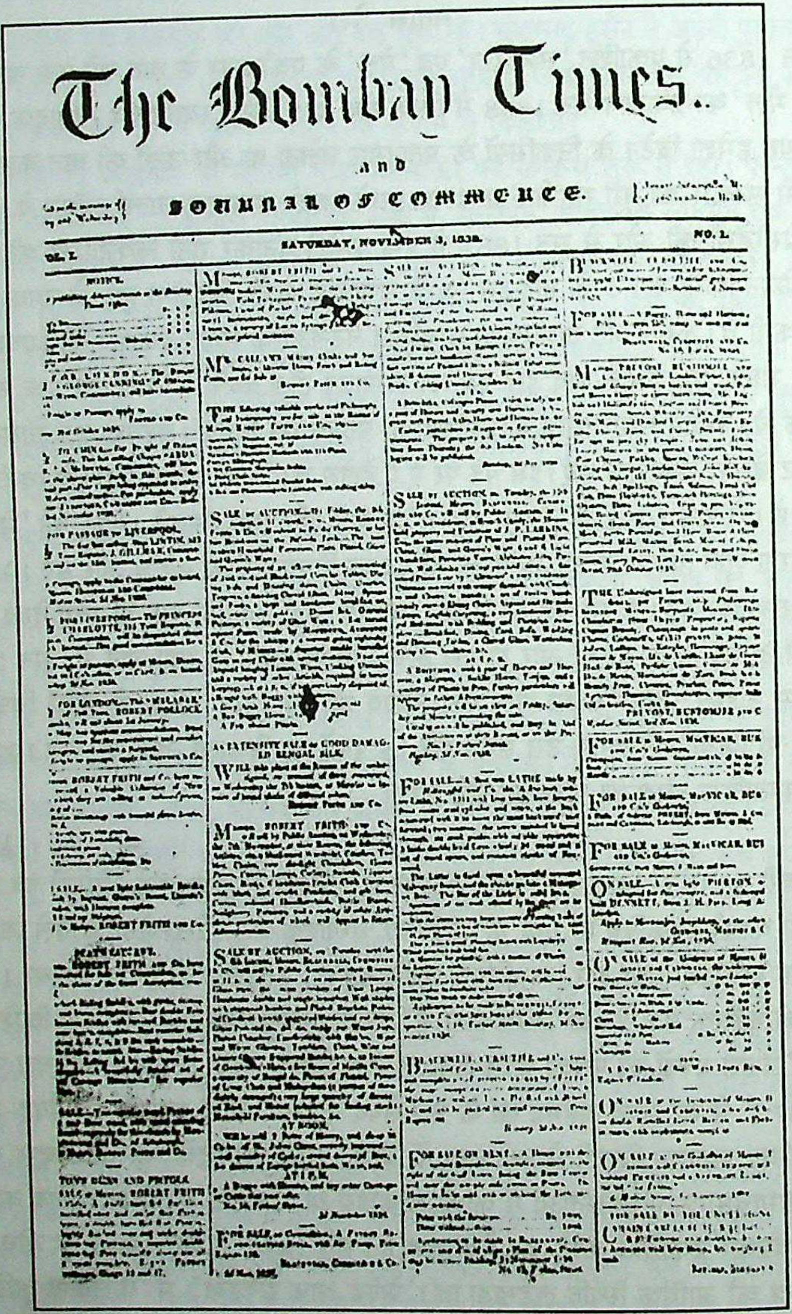

The Bombay Times.

and

Journal of Commerce.

SATURDAY, NOVEMBER 3, 1838.

VOL. I.

NO. I.

बाम्बे टाइम्स, मुम्बई, 3 नवम्बर 1838

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन शताब्दियों में फैला सफर

1838

बाम्बे टाइम्स/टाइम्स आफ इंडिया

मुम्बई से पहला समाचारपत्र *'बाम्बे हेरल्ड'* अँगरेजी साप्ताहिक के रूप में सन 1789 में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद सन 1790 में 'बाम्बे कूरियर' प्रकाशित हुआ। 3 नवम्बर 1838 को 'बाम्बे कूरियर' का नाम बदलकर 'बाम्बे टाइम्स' कर दिया गया। यह अर्द्ध साप्ताहिक पत्र था, जिसका सम्पादन एक सेवानिवृत्त डाक्टर जे.ई.ब्रेनन करते थे। राबर्ट नाइट भारत में कटलर पामर एण्ड कम्पनी के एजेंट के रूप में आए थे और 'बाम्बे टाइम्स' इसी कम्पनी का पत्र था। सन 1842 में इस पत्र के सम्पादक बुस्ट थे। बुस्ट जब छुट्टी पर इंग्लैण्ड चले गये तब राबर्ट नाइट को कोलकाता से मुम्बई बुलाकर 'बाम्बे टाइम्स' का स्थानापत्र सम्पादक बनाया गया। इंग्लैण्ड से लौटकर बुस्ट जब अपने स्वयं के पत्र 'बाम्बे स्टैण्डर्ड' का सम्पादन करने लगे तब राबर्ट नाइट 'बाम्बे टाइम्स' के स्थायी सम्पादक हो गये। उस समय मुम्बई से 'बाम्बे टेलीग्राफ' भी निकलता था।

सन 1861 में राबर्ट नाइट ने तीन पत्रों- 'बाम्बे टाइम्स', 'बाम्बे स्टैण्डर्ड' और 'बाम्बे टेलीग्राफ' को मिलाकर *'टाइम्स आफ इण्डिया'* शीर्षक से नया समाचारपत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। इस नये पत्र के शीर्षक के सम्बन्ध में राबर्ट नाइट ने स्पष्टीकरण देते हुए लिखा- ''मुम्बई को देश की प्रेस की राजधानी का दर्जा प्राप्त हो चुका है, अत: यहाँ से प्रकाशित समाचारपत्रों में प्रान्तीयता का बोध करना उपयुक्त नहीं है।'' जब 'टाइम्स आफ इण्डिया' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ तब इसने 'बाम्बे टाइम्स' का प्रकाशन वर्ष (1838) ग्रहण करते हुए उसी पत्र की परिपाटी का अनुसरण किया। इसी प्रकाशन वर्ष को आज का 'टाइम्स आफ इण्डिया' भी अपना रहा है। जबकि 'बाम्बे टाइम्स' सन 1790 में प्रकाशित 'बाम्बे कूरियर' का सन 1838 में हुआ नामांतरण था। इस आधार पर प्रकाशन आरंभ होने का वर्ष सन 1790 गिना जाना चाहिए था।

राबर्ट नाइट इंग्लैण्ड की पत्रकारिता की परिपाटियों से परिचित थे। यद्यपि उतनी स्वतंत्रता से उन्होंने 'टाइम्स आफ इण्डिया' के प्रारम्भिक वर्षों में भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं होने दी परन्तु वास्तविकता को संयम से प्रदर्शित करने की कोशिश अवश्य की। राबर्ट नाइट और मैथियास मुल दोनों इसके मालिक थे। इसके पास अच्छी मुद्रण मशीन थी। धीरे-धीरे इस पत्र ने बेहतर मुद्रण की साख स्थापित कर ली। 'टाइम्स आफ इण्डिया' के प्रथम पृष्ठ पर छोटे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े विज्ञापन छपते थे। एक पृष्ठ में सात कालम होते थे। एक कालम की चौड़ाई लगभग 7 सेंटीमीटर होती थी और लम्बाई लगभग 70 सेंटीमीटर रहा करती थी। सम्पादकीय चौथे पृष्ठ पर दी जाती थी। सम्पादकीय अग्रलेख तीन या चार विषयों पर बाँये हाथ की ओर उप शीर्षक देकर लिखे जाते थे।

राबर्ट नाइट सन 1864 में छुट्टियाँ मनाने इंग्लैण्ड चले गए और वहाँ से जब चार वर्ष बाद सन 1868 में लौटे तब उन्होंने अपने सहयोगी मैथियास मुल को 'टाइम्स आफ इण्डिया' बेच दिया। फिर राबर्ट नाइट ने नया पत्र 'बाम्बे स्टेट्समैन' निकाला। मुम्बई में उनका मन नहीं लगा अत: कुछ वर्षों बाद इस नये पत्र को भी बेचकर वे कोलकाता चले गए। मुम्बई और कोलकाता की पत्रकारिता में बुनियादी अंतर था। कोलकाता की पत्रकारिता ईस्ट इण्डिया कम्पनी से रुष्ट और नाराज अँगरेजों ने प्रारम्भ की थी, जबकि मुम्बई की पत्रकारिता में यह भावना नहीं थी। राबर्ट नाइट को ही यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने इन दोनों शहरों की पत्रकारिता को संयत करते हुए उसकी भाषा को परिष्कृत किया।

जब थामस जेवल बेनेट 'टाइम्स आफ इण्डिया' के सम्पादक हुए तब उन्होंने अनेक शिक्षित भारतीयों से निकट के सम्बन्ध बनाये और उन्हें 'टाइम्स आफ इण्डिया' में लिखने के लिए प्रेरित किया। 'टाइम्स आफ इण्डिया' भी अँगरेजी शासन का पक्षधर था। फिर भी इसमें शासकीय अधिकारियों की लापरवाही के समाचार प्रकाशित होते थे। जब भारत में अकाल पड़ा तब गुजरात क्षेत्र में किसान व्याकुल हो उठे। अँगरेजी हुकूमत के अधिकारियों ने जब यहाँ भू-राजस्व की वसूली कड़ाई से प्रारम्भ की तब सम्पादक बेनेट ने अधिकारियों के रवैये की कड़ी आलोचना की, जिसकी शासन को जाँच करानी पड़ी। सन 1870 में 'टाइम्स आफ इण्डिया' ने रायटर की समाचार सेवा लेना प्रारम्भ किया। उस समय देश में आवागमन के साधन सीमित थे अत: डाक से देश के विभिन्न स्थानों से प्रकाशित जो समाचारपत्र प्राप्त होते थे, उनके महत्वपूर्ण समाचारों को उद्धृत किया जाता था। सन 1870 के अंकों को देखने से ज्ञात होता है कि 'टाइम्स आफ इण्डिया' में चेन्नै के 6 दिन पुराने, इलाहाबाद और कोलकाता के चार दिन पुराने समाचारपत्रों के समाचार उद्धृत किए गए हैं। साथ ही कोलकाता, कराची, दिल्ली, पुणे, चेन्नै आदि प्रमुख शहरों से संवाददाताओं द्वारा तार से भेजे गए संक्षिप्त समाचार भी प्रकाशित हुए हैं। सन 1883 में पैट लोवेट ने 'टाइम्स आफ इण्डिया' में सेवा प्रारम्भ की।

रिपोर्टिंग करते समय आज के समान जल्दबाजी नहीं की जाती थी। यह आवश्यक नहीं समझा जाता था कि प्रमुख व्यक्ति के भाषण उसी दिन मुद्रण के लिए दे दिए जाएँ। विस्तृत रिपोर्ट अगले दिन मुद्रण के लिए दी जाती थी। इसी प्रकार न्यायालयों के प्रकरणों की रिपोर्टिंग भी होती थी। धारा-सभा की कार्यवाही का विवरण देने के लिए बारी-बारी से 'टाइम्स आफ इण्डिया' और 'बाम्बे गजट' के प्रतिनिधियों को भेजा जाता था। खेल समाचार की भी विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित होती थी।

थामस बेनेट स्वयं एक अनुभवी सम्पादक थे। उन्होंने भारतीयों पर विश्वास किया। कार्य कुशलता और प्रावीण्य को परखकर उसे प्रोत्साहित किया। जब थामस बेनेट इस पत्र के एकमेव मालिक हो गए, तब उन्होंने पत्र के मुद्रण को और अधिक आकर्षक बनाने के उद्देश्य से लंदन से एफ.एम.कोलमेन को मुम्बई बुलाया। कोलमेन 'मास्टर प्रिंटर' थे और उन्हें लंदन में स्तरीय दैनिक पत्र के मुद्रण का दीर्घकालीन अनुभव था। इन दोनों ने मिलकर 'टाइम्स आफ इण्डिया'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ऊँचाइयों पर पहुँचाया। दोनों में अच्छा सामंजस्य था। पत्र के कलेवर और मुद्रण कला की श्रेष्ठता के कारण यह पत्र सर्वाधिक प्रसार सँख्या वाले पत्रों में गिना जाने लगा। दोनों की जोड़ी इतनी सफल सिद्ध हुई कि एक ज्वाइंट स्टाक कम्पनी बेनेट कोलमेन एण्ड कम्पनी लिमिटेड की स्थापना कर 'टाइम्स आफ इण्डिया' इसी को सौंप दिया गया। इंग्लैण्ड से दो अनुभवी पत्रकारों-लोवेट फ्रेसर और सर स्टेनले रीड को पत्र में काम करने के लिए मुम्बई बुलाया गया। लोवेट फ्रेसर के कार्यकाल में पहली बार विशेष संवाददाता की नियुक्ति प्रारम्भ हुई। इनमें अँगरेजी के प्रख्यात कवि रुडियार्ड किपलिंग प्रथम थे। लोवेट फ्रेसर के बाद स्टेनले रीड इसके सम्पादक हुए।

सन 1890 में इसकी 3,000 प्रतियाँ छपती थीं। सन 1961 में इसके केवल मुम्बई संस्करण की प्रसार सँख्या एक लाख साठ हजार थी। सन 1895 में जब तिलक पर देशद्रोह का मुकदमा चल रहा था, तब 'टाइम्स आफ इण्डिया' को न्यायालय की अवमानना के लिए चेतावनी दी गई थी।

के. रामाराव तीसरे दशक में इस पत्र के उप सम्पादक थे। उन्होंने लिखा है कि अँगरेजों का मालिकाना हक होने की सीमाओं के भीतर इस पत्र के सम्पादकीय क्षेत्र में स्वतंत्रता रहती थी। इस पत्र के सम्पादक सर स्टेनले रीड ने जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के समय जब यह लिख दिया कि जनरल डायर के कार्यों के कारण भारत में निवास कर रहे अँगरेजों को नीचा देखना पड़ा, तब मुम्बई में रह रहे कुछ अँगरेजों को यह अच्छा नहीं लगा। रीड को जब यह पता चला तो वे कई दिन क्लब तक नहीं गए ताकि अँगरेजों का गुस्सा ठण्डा पड़ जाए। मुम्बई में उस समय व्यापार और खेलकूद की गतिविधियाँ प्रमुख थीं, अत: इस पत्र में इन दोनों विषयों के भरपूर समाचार छपते थे। इस पत्र के सम्पादकों में एस.टी. सेपर्ड प्रेस के कर्मचारियों के अधिकारों के पक्षधर थे। सर फ्रेसिंस लो के सम्पादन काल में शासन और समाचारपत्र के बीच सम्पादकीय स्वतंत्रता की लड़ाई चरम सीमा पर पहुँची।

स्वतंत्रता के बाद 'टाइम्स आफ इण्डिया' के प्रथम भारतीय सम्पादक फ्रैंक मोरेस हुए। सन 1961 में 'टाइम्स आफ इण्डिया' के सम्पादक एन.जे.नगपुरिया थे। उनके बाद गिरिलाल जैन सम्पादक हुए। दिलीप पडगांवकर के कार्यकाल में सम्पादकीय स्वतंत्रता क्षीण होती गई और सम्पादक के पद का महत्व घटता गया। इसे पत्रकारिता का 'समीर जैन युग' कहा जाने लगा। 'टाइम्स आफ इण्डिया' अब मुम्बई के अतिरिक्त दिल्ली, अहमदाबाद, बेंगलूरु, चेन्नै, कोचीन, हैदराबाद, कोलकाता, लखनऊ और पटना से भी प्रकाशित होता है।

भारत में पत्रकारिता के इतिहास में 'टाइम्स आफ इण्डिया' का अनेक अर्थों में विशेष स्थान है। देश का अँगरेजी भाषा का सबसे पुराना जीवित दैनिक होने के साथ ही इस पत्र ने पत्रकारिता में नए मानदण्ड स्थापित किए। बेनेट कोलमेन एण्ड कम्पनी के समाचारपत्रों के समूह में यह सर्वाधिक प्रभावी पत्र है।

कोलकाता से सन 1868 तक बंगला भाषा के 48 ऐसे समाचारपत्र प्रकाशित हुए जिनका शीर्षक 'संवाद' शब्द से प्रारम्भ होता था। ये समाचारपत्र नए नए संवादों के वाहक थे। प्रारम्भिक दौर के ऐसे समाचारपत्रों में *'संवाद सुधा सिंधु'* भी था, जिसका प्रकाशन 13 अप्रैल 1838 को हुआ था। इसके सम्पादक कालीशंकर दत्त थे। यह पत्र लगभग एक वर्ष तक चला।

अगस्त 1838 में चित्र प्रधान पत्रिका *'स्केचेज आफ ओरिएण्टल हैड्स'* का प्रकाशन ग्राण्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने किया। वे बहुत अच्छे चित्रकार थे। इस पत्र के प्रत्येक अंक में चार व्यक्तियों के चित्र प्रकाशित किए जाते थे। एक अंक का मूल्य दो रुपये आठ आने था। इस प्रकाशन पर 'इंडिया रिव्यू' के सितम्बर 1838 के अंक में व्यक्तित्वों के विविधतापूर्ण चयन की सराहना की गई है। चित्रों के साथ व्यक्ति परिचय भी दिया जाता था। 15 अक्टूबर 1845 के अंक के साथ इस मासिक पत्रिका का प्रकाशन बंद हो गया।

22 सितम्बर 1838 को मुर्शिदाबाद से '*मुर्शिदाबाद न्यूज*' का प्रकाशन अँगरेजी साप्ताहिक के रूप में हुआ। किसी कस्बे से प्रकाशित होने वाला अँगरेजी का यह पहला पत्र था। विलियम स्टीफन लेमब्रिक इसके सम्पादक तथा मुद्रक-प्रकाशक भी थे। उन पर बिना नोटिस दिए प्रेस चलाने का अभियोग चला कर प्रेस में ताला डाल दिया गया। बाद में पाँच सौ रुपये जुर्माना और प्रेस जब्त करने की सजा सुनाई गई। यद्यपि कुछ ही माह बाद प्रेस खोल दिया गया, लेकिन अख़बार का प्रकाशन फिर नहीं हो पाया।

21 दिसम्बर 1838 को '*संवाद सौदामिनी*' का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। यह द्विभाषी साप्ताहिक था जो बंगला और अँगरेजी में छपता था। कालीचंद्र दत्त इसके सम्पादक थे। पत्र में मौलिक सामग्री का प्राय: अभाव होता था। यह तीन साल तक प्रकाशित हुआ।

सन 1838 में साप्ताहिक '*संवाद मृत्युंजय*' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसका सम्पादन पार्वतीचरण दास ने किया। इसकी सामग्री पद्य में रहा करती थी। रूढ़ियों से हटकर नवाचारों को अपनाना इस पत्र के सम्पादक को पसंद नहीं था। सन 1838 में साप्ताहिक '*संवाद दिवाकर*' का प्रकाशन हुआ। इसका सम्पादन गंगानारायण बसु ने किया। यह अधिक समय तक नहीं चल सका।

वृत्तांतनी

तेलुगु भाषा का पहला साप्ताहिक '*वृत्तांतनी*' चेन्नै से सन 1838 में निकला। मंडीगल वेंकटराव शास्त्री इसके संपादक थे। अँगरेजी पत्रों से समाचार उद्धृत करने के अलावा 'वृत्तांतनी' में सामाजिक कुरीतियों के विरोध में लेख छापे जाते थे। सम्पादक के नाम पत्र में समाज हितैषी मुद्दे उठाये जाते थे। 15 फरवरी 1847 को यह अखबार बन्द हो गया।

1839

संवाद भास्कर

साप्ताहिक '*संवाद भास्कर*' का प्रकाशन मार्च 1839 में श्रीनाथ राय ने प्रारम्भ किया। सम्पादन गौरीशंकर तर्कवागीस करते थे। यह मुखर पत्र था और स्वतंत्रता पूर्वक अपने विचार व्यक्त करता था। साप्ताहिक के रूप में प्रारम्भ होकर यह 14 जनवरी 1848 से अर्द्ध साप्ताहिक हो गया। यह स्तरीय पत्र था और इसकी प्रसार सँख्या भी अच्छी थी। देश के अनेक भागों के अलावा विदेशों में भी इसकी प्रतियाँ खरीदी जाती थीं। बंगला पत्रकारिता के विकास में 'संवाद भास्कर' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

'संवाद भास्कर' का दृष्टिकोण प्रगतिशील था। उसने महिला शिक्षा का जोरदार पक्ष लिया। सन 1849 में कोलकाता में हिन्दू बालिका विद्यालय की स्थापना हुई तब उसका स्वागत करते हुए इसे स्त्रियों की मुक्ति का कदम निरूपित किया। अँगरेजी शिक्षा का भी स्वागत किया परन्तु यह भी कहा कि नवयुवक केवल नौकरी ढूँढने के उद्देश्य से अँगरेजी न पढ़ें।

मई 1839 में प्रकाशित साप्ताहिक '*केलकटा क्रिश्चियन एडवोकेट*' का प्रकाशन बंगाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आक्जीलरी मिशनरी के रेव्हरेंड टी.बोआज ने किया था। वे ही इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। यह धार्मिक पत्र था। लेकिन रोमन कैथोलिक चर्च पर प्रहार के कारण विवादग्रस्त हो गया था। 12 पृष्ठ के इस पत्र का प्रकाशन सन 1855 के आखिरी दिनों में बंद कर दिया गया।

'बंगाल कैथोलिक एक्सपोजिटर' का प्रकाशन जुलाई 1839 में हुआ। रस्टन जूनियर इसके सम्पादक थे। इसका आदर्श वाक्य था- ''एक तन और प्राण, एक ईश्वर, एक धर्म, एक बपतिस्मा।'' इसका वार्षिक शुल्क दस रुपये था। पारस्परिक विवादों के बीच एक और पत्रिका 'कैथोलिक इंटेलीजेंसर' निकाली गई। इसका प्रकाशन पाँच फरवरी 1841 को हुआ। फिर मेल-मिलाप के प्रयासों का प्रतिफल *'बंगाल कैथोलिक हेरल्ड'* के रूप में सामने आया जो दोनों पत्रों का संयुक्त रूप था। सन 1846 से यह कैथोलिक आर्फोनेज प्रेस से छपने लगा। इसकी प्रतियाँ देश से बाहर भी जाती थीं। एक दशक से ज्यादा समय तक इसका प्रकाशन हुआ।

चार नवम्बर 1839 से साप्ताहिक *'लीगल आब्जर्वर'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। इसमें सुप्रीम कोर्ट के फैसले और कानून सम्बन्धी अन्य सामग्री प्रकाशित की जाती थी। जान स्टोन इसके प्रकाशक और सम्पादक थे। इसका मासिक शुल्क चार रुपये था।

गौरीशंकर तर्कवागीस ने 29 नवम्बर 1839 से साप्ताहिक *'संवाद रसराज'* निकाला था। इसके सम्पादक कालीकांत गंगोपाध्याय और गंगाधर भट्टाचार्य थे। इसका प्रकाशन सन 1857 में बंद हो गया। क्षेत्रमोहन भट्टाचार्य ने इसका पुनर्प्रकाशन सन 1861 में किया था।

सन 1839 के अंतिम दिनों में कोलकाता से बंगला दैनिक *'संवाद अरुणोदय'* प्रकाशित हुआ। जगननारायण मुखोपाध्याय इसे सम्पादित करते थे।

1840

ईस्टर्न स्टार

सुप्रीम कोर्ट के बैरिस्टर जेम्स ह्यूम ने कोलकाता से साप्ताहिक *'ईस्टर्न स्टार'* का प्रकाशन पाँच जनवरी 1840 से प्रारम्भ किया। इसका मुद्रण इंग्लिशमैन प्रेस में होता था। इसका आकार 50 गुणित 30 से.मी. था। जब ह्यूम ने एक जुलाई 1841 को 'केलकटा स्टार' प्रारम्भ किया तब 'ईस्टर्न स्टार' का सहयोगी पत्र बन गया। दोनों के सम्पादक ह्यूम ही थे। सन 1846 में ह्यूम के मजिस्ट्रेट बन जाने पर हीटले ने सम्पादन दायित्व सम्हाला। मार्च 1850 में जे.एच.लोव ने 'केलकटा स्टार' खरीद लिया और इसका नाम बदल कर 'मार्निंग क्रानिकल' कर दिया। मई 1850 में इसमें 'इण्डियन टाइम्स' समाहित हो गया। साथ ही 'ईस्टर्न स्टार' के प्रकाशक भी बदल गए। नए सम्पादक हेनरी टोरेन्स हुए जिन्होंने 'ईस्टर्न स्टार' के कलेवर को व्यवस्थित करते हुए इसमें साहित्य और अन्य समकालीन पत्रों से उल्लेखनीय समाचार लेकर अधिक उपयोगी बनाया। 'ईस्टर्न स्टार' में साहित्य के चार पृष्ठ अलग छपते थे, जो 'मार्निंग क्रानिकल' के साथ निःशुल्क वितरित किए जाते थे। फरवरी 1857 में यह बंद हो गया।

14 मार्च 1840 से कोलकाता से *'वीकली एक्जामिनर एण्ड लिटरेरी रजिस्टर'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इस साप्ताहिक पत्र के सम्पादक ड्यूमण्ड थे। हर शनिवार को छपने वाले इस पत्र का मूल्य एक रुपया मासिक था। जुलाई 1841 में बंद हो गया।

प्राणी शास्त्र, वनस्पति शास्त्र एवं खनिज आदि विषयों पर केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका *'केलकटा जर्नल आफ नेचुरल हिस्ट्री'* का प्रकाशन अप्रैल 1840 में कोलकाता से हुआ। इसका वार्षिक शुल्क 16 रुपये तथा एक प्रति का मूल्य चार रुपये था। इसका उद्देश्य ''मनोरंजन कम,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

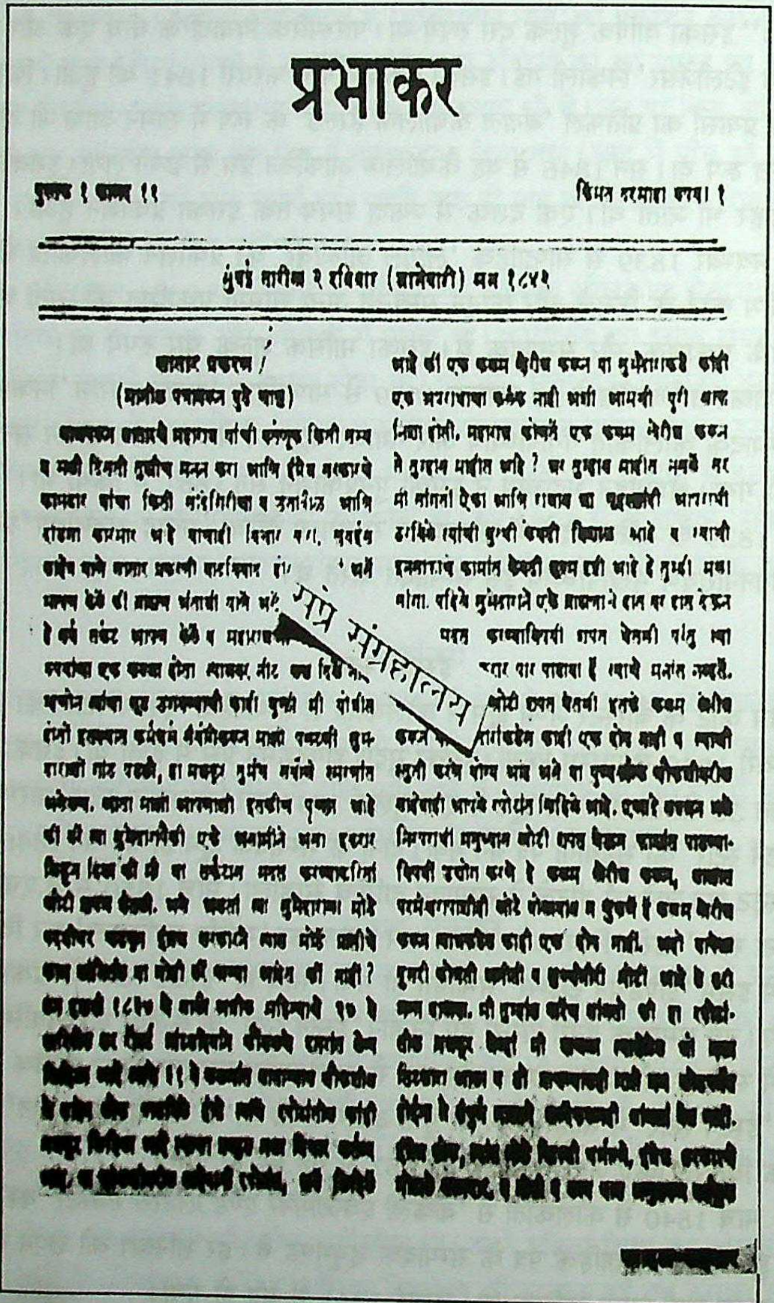

प्रभाकर, (मराठी), मुम्बई, सन 1841

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानकारियां ज्यादा से ज्यादा'' देना था। दो अंक छप जाने के बाद इसका नाम बदलकर *'केलकटा जर्नल आफ नैचुरल हिस्ट्री एंड मिसलेनी आफ द आर्ट्स एंड साइंस इन इण्डिया'* कर दिया गया। इसके सम्पादक मण्डल में मैकलेण्ड, ग्रिफिथ, आर. राईट, जार्ज गार्डनर, जान मेकफरसन प्रभृति प्रतिभाशाली लेखक थे। एक अच्छी पत्रिका होने के बावजूद यह दूसरी वर्षगाँठ नहीं मना सकी।

सेरामपुर से एक जुलाई 1840 को द्विभाषी अँगरेजी-बंगला साप्ताहिक *'गवर्नमेंट गजट'* का प्रकाशन हुआ। इसके प्रथम सम्पादक जे.सी.मार्शमैन थे जो 1852 तक इस पद पर रहे। मार्शमैन के बाद कृष्णमोहन बंद्योपाध्याय सम्पादक हुए। इसमें बंगला भाषा में कानूनों, कानून के प्रारूपों, शिक्षा सम्बन्धी घोषणाओं, नियुक्तियों, शासकीय विज्ञापनों, कोर्ट के आदेशों और निर्णयों आदि का अनुवाद और अन्य समाचार प्रकाशित किए जाते थे। इसका प्रकाशन 1895 तक हुआ। सन 1862 से यह कोलकाता से प्रकाशित होने लगा।

मराठी का *'मुम्बई अखबार'* चार जुलाई 1840 को प्रकाशित हुआ। युनाइटेड सर्विस गजट छापाखाने से सूर्याजी कृष्णाजी ने इसका मुद्रण-प्रकाशन किया। इसका आकार 45 गुणित 30 से.मी. था। 'मुम्बई अखबार' की 28 जून 1840 को जारी प्रस्तावना-घोषणा में कहा गया था- ''लोगों को समाचारपत्र पढ़ने की आदत लग गई है.... मराठी भाषा में पत्र हो और सबको दुनिया में चल रही घटनाओं की जानकारी हो इसलिए 'मुम्बई अखबार' नाम का पत्र सिर्फ मराठी भाषा में प्रति शनिवार प्रकाशित किया जाएगा। इसमें अँगरेजी लिपि नहीं होगी। यह पत्र सुन्दर अक्षरों में तथा स्वच्छ कागज पर निकलेगा। इसमें लोकोपयोगी विषयों पर पत्र और मत भी छपेंगे। किसी का पक्षपात न करते हुए वास्तविक समाचार ही लिखा जाएगा।'' 'मुम्बई अखबार' का तिमाही शुल्क 5 रुपये और अग्रिम साढ़े चार रुपये था।

एक अक्टूबर 1840 को पाक्षिक पत्रिका *'इण्डियन मिरर'* का प्रकाशन नौजवान प्रतिभाओं ने किया। लेकिन इसके सिर्फ दो अंक ही प्रकाशित हो पाये। नवम्बर 1840 में कोलकाता से ज्ञान-विज्ञान की पत्रिका *'इण्डियन यूथ्स मैगजीन'* का प्रकाशन हुआ। युवाओं द्वारा प्रकाशित यह पत्र स्तरीय था। परन्तु ज्यादा दिन निकल नहीं पाया। मेरठ से *'देहली एडवरटाइजर'* सन 1840 में प्रकाशित हुआ। यह विज्ञापन प्रधान पत्र था। इसके मालिक कोपिंग थे, जिनका देहली बैंक भी था। सन 1853 में इसका नाम बदलकर 'इण्डियन टाइम्स' कर दिया गया। यह सन 1856 तक चला, तब तक, जब इसका प्रेस जब्त कर बेच दिया गया।

<u>1841</u>

प्रभाकर

24 अक्टूबर 1841 को गोविन्द विट्ठल कुंटे ने *'प्रभाकर'* का प्रकाशन मुम्बई से शुरू किया। 17 जुलाई 1842 को 'प्रभाकर' स्वयं के प्रेस से छपना शुरू हो गया। मराठी पत्र समाचारों के लिए अँगरेजी और गुजराती समाचारपत्रों पर निर्भर रहते थे। सम्पादक गोविंद विट्ठल कुंटे स्वयं विद्वान व्यक्ति थे। उन्हें मराठी का प्रथम 'प्रोफेशनल' पत्रकार माना गया है। उन्होंने अपनी जिन्दगी के पच्चीस वर्ष पत्रकारिता को समर्पित किए। जब भारत की राजनीतिक स्थिति अत्यन्त जटिल थी, ऐसे समय में 'प्रभाकर' 21 वर्ष तक प्रकाशित हुआ। 'प्रभाकर' का वार्षिक शुल्क 12 रुपये था।

'वीकली इन्टेलीजेन्सर' का प्रकाशन बंगाल के शिक्षित भारतीय नवयुवकों ने जनवरी 1841

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रारम्भ किया था। यह पत्र उन घटनाओं का दस्तावेज था जो भाषायी प्रेस में छपती थीं। इस पत्र ने माना कि भाषायी अखबार अँगरेज और कम्पनी के अधिकारी नहीं पढ़ते हैं। यह पत्र अधिक समय तक नहीं चल पाया।

'मेहर-ए-मुनीर' का प्रकाशन एक जनवरी 1841 को कोलकाता से किया गया। यह फारसी समाचारपत्र सप्ताह में तीन बार प्रकाशित होता था। 'मेहर-ए-मुनीर' के सम्पादक और मालिक मोहम्मद अली थे। पत्र का शुल्क दो रुपये मासिक था।

कोलकाता सुप्रीम कोर्ट के बैरिस्टर जेम्स ह्यूम ने 'केलकटा इंटेलिजेंसर' और 'कमर्शियल स्टार' के प्रकाशन अधिकार खरीद लिए थे। वे 'ईस्टर्न स्टार' के सम्पादक भी रहे थे। उन्हीं ने एक जुलाई 1841 से *'केलकटा स्टार'* के नाम से प्रकाशन आरम्भ किया। सन 1845 में इसका आकार बढ़ाया गया। ह्यूम के बाद चार्ल्स बुचर सम्पादक बने। 23 मार्च 1850 को नये प्रकाशक जे.एच.लोव ने इसे *'मार्निंग क्रानिकल'* नाम से निकाला।

सन 1841 ई. में सैयद औलाद अली के सम्पादन में फ़ारसी अख़बार *'गेतीनुमा'* का प्रकाशन दिल्ली से हुआ था। सैयद औलाद अली 'मज़हर-उल-हक़' के सम्पादक मोहम्मद अकबर के समान ही तहलका मचा देने वाले पत्रकार थे। सैयद औलाद अली और मोहम्मद अकबर के मध्य कलम की नोक-झोंक चलती रहती थी।

सिराज़-उल अख़बार

सन 1841 में दिल्ली से फ़ारसी भाषा में *'सिराज-उल अख़बार'* का प्रकाशन हुआ। यह आठ पृष्ठों का साप्ताहिक पत्र था। इसका प्रकाशन अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह के समय हुआ था और यह सरकारी गज़ट जैसा था। इसमें बादशाह के दैनिक कार्यक्रमों का ब्यौरा तथा देश विदेश की ख़बरें रहती थीं। इसके स्वरूप का परिचय दिल्ली के मजिस्ट्रेट जान लारेंस की टीप से मिल जाता है:- ''बादशाह का समाचारपत्र 'सिराज-उल अख़बार' महल से प्रकाशित किया जाता है। इससे सम्बन्धित समस्त व्यक्ति शाही कर्मचारी हैं। इस पत्र की कुल 26 प्रतियाँ हर सप्ताह छपती हैं। अधिकांश प्रतियाँ बादशाह के प्रशंसकों को दी जाती है। कुछ प्रतियाँ महल के गार्ड, गवर्नर जनरल और लेफ्टिनेंट गवर्नर को भी भेजी जाती हैं। महल के जिन लोगों को इसकी प्रतियाँ दी जाती हैं उनके वेतन से एक रुपया प्रति माह इसका खर्च पूरा करने के लिए काटा जाता है। इस पत्र की भाषा ठेठ फारसी होती है।''

हालाँकि बहादुर शाह की सत्ता का व्यावहारिक रूप से पतन हो चुका था, किन्तु उनके दरबार के पद उस समय भी समाप्त नहीं हुए थे. उन पदों में से एक पद 'वाकया नवीस' का था। मसलहउद्दीन सैयद अबुल मुग़लिया दरबार के अंतिम वाकया नवीस थे। गारसां दतासी ने इसे दिल्ली का सबसे पुराना अख़बार बताया है। 'सिराज-उल अख़बार' के अंतिम दौर की कुछ प्रतियाँ जिनमें सन 1857 की प्रतियाँ भी हैं, राष्ट्रीय अभिलेखागार में सुरक्षित हैं।

इस अख़बार में प्रकाशित एक समाचार जिसका शीर्षक 'ख़बर गुलशनाबाद' है, से संकेत मिलता है कि नासिक का नाम गुलशनाबाद भी था। इस समाचार में लिखा गया है कि ईसाई पादरियों द्वारा गौ हत्या के विरोध में शहर के व्यापारियों ने अपनी दुकानें बंद रखीं। सम्भवतः यह देश में पहली हड़ताल रही होगी। इसी अख़बार से पता चलता है कि बादशाह अँगरेजी समाचारपत्रों में प्रकाशित समाचारों का अनुवाद भी सुना करते थे। यदि अँगरेजी समाचारपत्रों में बादशाह से सम्बन्धित कोई असत्य समाचार प्रकाशित होता था तो उसका खण्डन 'सिराज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल अख़बार' में किया जाता था।

सन 1841 में बंगला पत्र *'संवाद निशाकर'* प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक नीलकंवल दास थे। सन 1841 में बंगला भाषा का *'संवाद भारत बंधु'* निकला। यह साप्ताहिक पत्र था, जिसके सम्पादक श्यामाचरण बंद्योपाध्याय थे।

1842

एक जनवरी 1842 को लेमैन के सम्पादन में मासिक *'क्रिश्चियन हेरल्ड'* का प्रकाशन क्रिश्चियन धर्म की शिक्षा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से किया गया था। वार्षिक शुल्क पन्द्रह रुपये था। इसका नाम बदलकर *'चर्च आफ इंग्लैण्ड मैगजीन'* कर दिया गया। के.एम.बनर्जी इसके सम्पादक थे। जनवरी 1843 में इस साप्ताहिक पत्र का नाम *'चर्च मैगजीन'* हो गया। इसका अंतिम अंक 6 जनवरी 1844 को निकला।

जनवरी 1842 में कोलकाता से *'ईस्टर्न बेल्स एण्ड केलकटा टाइम्स'* निकला। यह साप्ताहिक अख़बार था। इसमें सामान्य सूचनाएं, लेखादि प्रकाशित किए जाते थे।

वीरेश्वर उर्फ तात्या छत्रे ने सात फरवरी 1842 को मराठी साप्ताहिक *'ज्ञानसिंधु'* का प्रकाशन आरम्भ किया। उसका आकार 45 गुणित 30 से.मी. था। यह पत्र प्रति सोमवार ज्ञानसिंधु छापाखाने से प्रकाशित होता था। चार पृष्ठ के इस पत्र में हर पृष्ठ पर तीन कालम रहते थे। प्रारम्भ में उसका शुल्क 12 आना मासिक था। एक अंक का शुल्क चार आना था। सन 1845 में मासिक शुल्क एक रुपया हो गया। यह पत्र लिथो पर छापा जाता था। सन 1851 के पूर्व 'ज्ञानसिंधु' बंद हो गया।

मार्च 1842 में कोलकाता से *'लिटरेरी ब्लूसम'* का प्रकाशन पी.एस.डी. रोजारिओ ने किया। इसमें शिक्षित नौजवानों के लिए ज्ञानवर्धक और जीवनोपयोगी लेखादि छपा करते थे। केवल नौ माह तक प्रकाशित होकर यह अँगरेजी पत्रिका दिसम्बर 1842 में बन्द हो गई।

अँगरेजी का ही एक और मासिक *'केलकटा लिटरेरी ग्लीनर'* मार्च 1842 में कोलकाता से प्रकाशित हुआ। इसकी एक प्रति का मूल्य एक रुपया तथा वार्षिक शुल्क दस रुपये था। इसके प्रकाशक-सम्पादक डब्लू. एच. कैरी थे। साहित्य, विज्ञान, राजनीति और इतिहास पर सामग्री देने के अलावा इस पत्रिका में नई किताबों की समीक्षा की जाती थी। इसमें प्रमुख व्यक्तियों की जीवनी भी छापी जाती थी। फरवरी 1844 में इसकी व्यवस्था डब्लू. रस्टन देखने लगे। लेकिन इस पत्रिका को चला पाना उनके लिए भी सम्भव नहीं हुआ।

बंगाल स्पेक्टेटर

रामगोपाल घोष ने द्विभाषी मासिक *'बंगाल स्पेक्टेटर'* अँगरेजी और बंगला में अप्रैल 1842 में प्रकाशित किया। इसके सम्पादक रामगोपाल घोष और प्यारेचंद मित्रा थे। प्रथम अंक में प्रकाशन का उद्देश्य बताते हुए घोषणा की गई थी कि देश में ज्ञान और सुख की वृद्धि के लिए यह पत्रिका समर्पित होगी। जब इसका प्रकाशन हुआ तब तक सती प्रथा पर रोक लग गई थी। चार्ल्स मेटकाफ की प्रेस के प्रति उदारवादी नीति आ चुकी थी। पत्रिका ने जनता की तकलीफों को सरकार तक पहुँचाने और शिक्षित जनता को देश की समृद्धि के बारे में सोचने को प्रोत्साहित किया। जाति भेद को मिटाने की अपील की। उसने बताया कि सन 1842 में केवल मारीशस में भारत के 36000 कुली काम कर रहे हैं, जिन्हें धोखा देकर वहाँ ले जाया गया है। इसी पत्र ने पहली बार सामान्य शिक्षा के बदले तकनीकी शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता जताई, ताकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

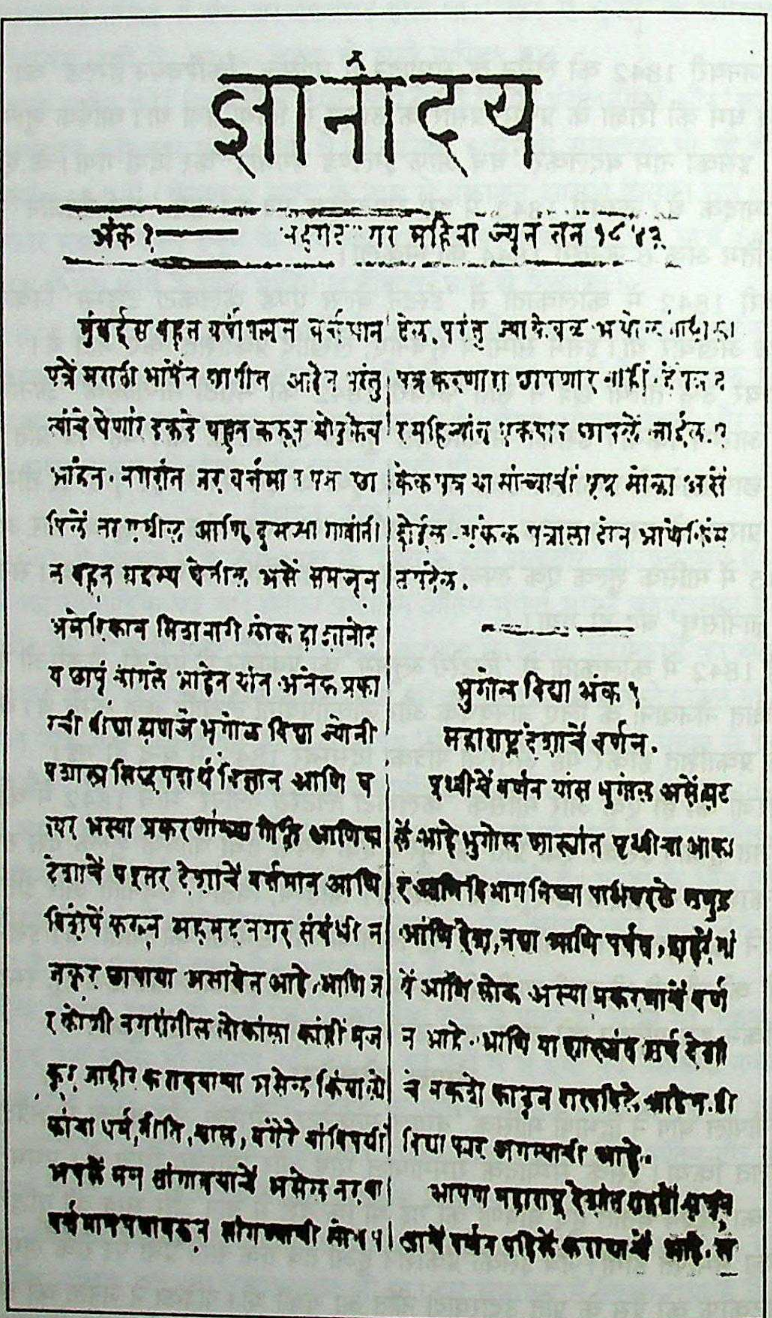

ज्ञानोदय

अंक १ — [illegible] महिना ज्यून सन १८४२

मुंबईंत बहुत वर्तमानपत्रें वर्तमान पत्रें मराठी भाषेंत छापीत आहेत परंतु त्यांचे येणार इकडे पाहून करून थोडकेच आहेत. नगरांत तर वर्तमानपत्र पाहिलें ना पाहिलें आणि दुसऱ्या गावांतील बहुत माणसें घेत नाहींत असें समजून अमेरिकन मिशनरी लोक हा ज्ञानोदय छापूं लागले आहेत यांत अनेक प्रकारची थोडी म्हणजे भूगोल विद्या ज्योतिष शास्त्र सिद्धपदार्थ विज्ञान आणि यसारख्या प्रकरणांच्या गोष्टी आणि या देशाचें व इतर देशाचें वर्तमान आणि विशेषें करून अहमदनगर संबंधी वर्तमान छापावयाचा असा बेत आहे. आणि जर कोणी नगरांतील लोकांस कांहीं मजकूर जाहीर करावयाचा असेल किंवा त्यांकांचा धर्म, नीति, चाल, वगैरे यांविषयीं आपलें मन सांगावयाचें असेल तर या वर्तमानपत्राकडून सांगावयाची सोय होईल. परंतु [illegible] पत्र करणारा छापणार नाहीं. हें पत्र दर महिन्यांत एकदा छापलें जाईल. एकेक पत्र या सांच्याचें [illegible] असें होईल - [illegible] पत्राला [illegible] लागेल.

भुगोल विद्या अंक १

महाराष्ट्र देशाचें वर्णन.

पृथ्वीचें वर्णन यांस भुगोल असें म्हणतात. भुगोल शास्त्रांत पृथ्वीचा आकार आणि [illegible] भाग [illegible] समुद्र आणि देश, नद्या आणि पर्वत, शहरें गावें आणि लोक अस्या प्रकारचें वर्णन आहे. आणि या शास्त्रांत सर्व देशांचें [illegible] आहे. [illegible] आहे.

आपण महाराष्ट्र देशांत [illegible] त्याचें वर्णन [illegible] करावयाचें आहे. [illegible]

ज्ञानोदय, (मराठी), सन 1842

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी बाद में अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

'बंगाल स्पेक्टेटर' ने 1 दिसम्बर 1842 और 15 जनवरी 1843 को भारत के प्रशासन का भारतीयकरण करने की माँग का जोरदार समर्थन किया और कहा कि ऊँचे पदों पर भारतीय नागरिकों की सँख्या बढ़ाई जाए। देश में ईसाई मिशनरी के फैलाव और उन पर किए जा रहे खर्च के बारे में इसने एक नवम्बर 1842 को संवाददाता के हवाले से लिखा कि सन 1836 में भारत में ईसाई प्रतिष्ठानों के संचालन पर कुल 9,45,159 पौण्ड खर्च हुआ था, जिसमें बंगाल का योगदान 43,984 पौण्ड रहा।

इसका शुल्क एक रुपया मासिक था। परन्तु यह पत्रिका अधिक दिन नहीं चल सकी। 20 नवम्बर 1843 के अंक में इसके बंद करने की सूचना प्रकाशित कर दी गई। आठ माह में इसके मालिकों को एक हजार रुपये से अधिक का घाटा सहना पड़ा।

ज्ञानोदय

सन 1813 में स्थापित अमेरिकी-मराठी मिशन ने धर्मप्रचार के साथ ज्ञान प्रसार करने के लिए जून 1842 में *'ज्ञानोदय'* मासिक प्रारम्भ किया। पहला अंक बीस पृष्ठ का था। महाराष्ट्र में निरंतर प्रकाशित होने वाला यह प्रथम नियतकालिक है। काल यात्रा के यशस्वी पड़ावों पर 'ज्ञानोदय के 100 वर्ष' और 'ज्ञानोदय के 125 वर्ष' शीर्षक से पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। प्रवेशांक में अपन उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लिखा- ''मुम्बई से बहुत से मराठी पत्र निकलते हैं परंतु उसे खरीदने वाले बहुत कम हैं। नगर का पत्र हो तो स्थानीय समाचार अधिक आने से यहाँ ग्राहक सँख्या बढ़ सकती है, यह सोचकर यह पत्र माह में एक बार निकाला जाएगा।'' 'ज्ञानोदय' मासिक प्रारम्भ में भूगोल और विज्ञान के विषय में काफी जानकारी प्रकाशित करता था। साथ ही अंधश्रद्धा और कुरीतिपूर्ण सामाजिक और कौटुम्बिक प्रथाओं का विरोध करता था।

यह पत्र लिथो (शिलाछापे) पर छापा जाता था। इसका दूसरा अंक अगस्त 1842 में निकला। उसमें 16 पृष्ठ थे। सन 1843 से 'ज्ञानोदय' मुम्बई के मिशन छापाखाने में छपने लगा। सन 1842 से 1844 तक यह मासिक के रूप में निकला। सन 1845 से यह 16 पृष्ठों का पाक्षिक हो गया। प्रथम छह अंक केवल मराठी में प्रकाशित हुए, उसके बाद सन 1866 तक अँगरेजी और मराठी- दो भाषाओं में 'ज्ञानोदय' निकलता रहा।

'ज्ञानोदय' के पहले सम्पादक अमेरिकी मिशनरी रेव्हरेंड हेनरी बेलेंटाइन थे। उन्हें अँगरेजी, ग्रीक, लैटिन, संस्कृत और मराठी भाषा का अच्छा ज्ञान था। सन 1867 से रेव्हरेंड शाहू दाजी कुकड़े ने सम्पादन किया। सन 1867 से 1872 की अवधि में 'ज्ञानोदय' केवल मराठी में निकला। मराठी समाचारपत्रों में चित्र छापने की परम्परा शुरू करने का श्रेय 'ज्ञानोदय' को जाता है।

देश में रेलगाड़ी की शुरूआत की जानकारी 1852 में इस प्रकार प्रकाशित की थी:- ''23 फरवरी 1852 पासून भायखल्यामध्ये लोखंडी रसवाकर लोकोमोटिव म्हवजे वाफेची गाडी चालू झाली; ती पाहव्या करितां त्या दिनशी हजारो निकाळे..... कोणी वीस कोणी तीस कोसावसन ती पाहव्यास येन।'' 18 नवम्बर 1852 के अंक में लिखा, ''ठाण्यापर्यंत कांहीसा लोखंडी रस्ता तयार झाल्या पासून वाफेची गाडी ठाण्यास गेली। तीतून काही बडे लोग गेले होते। तेथे पोचावयास 45 मिनिटे लागली..... हा नमुना भरत खंडात पहिलाच अणि हे काम म्हव्जे भरत खंडात नवा शकच चालू झाल्या सारखे आहे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

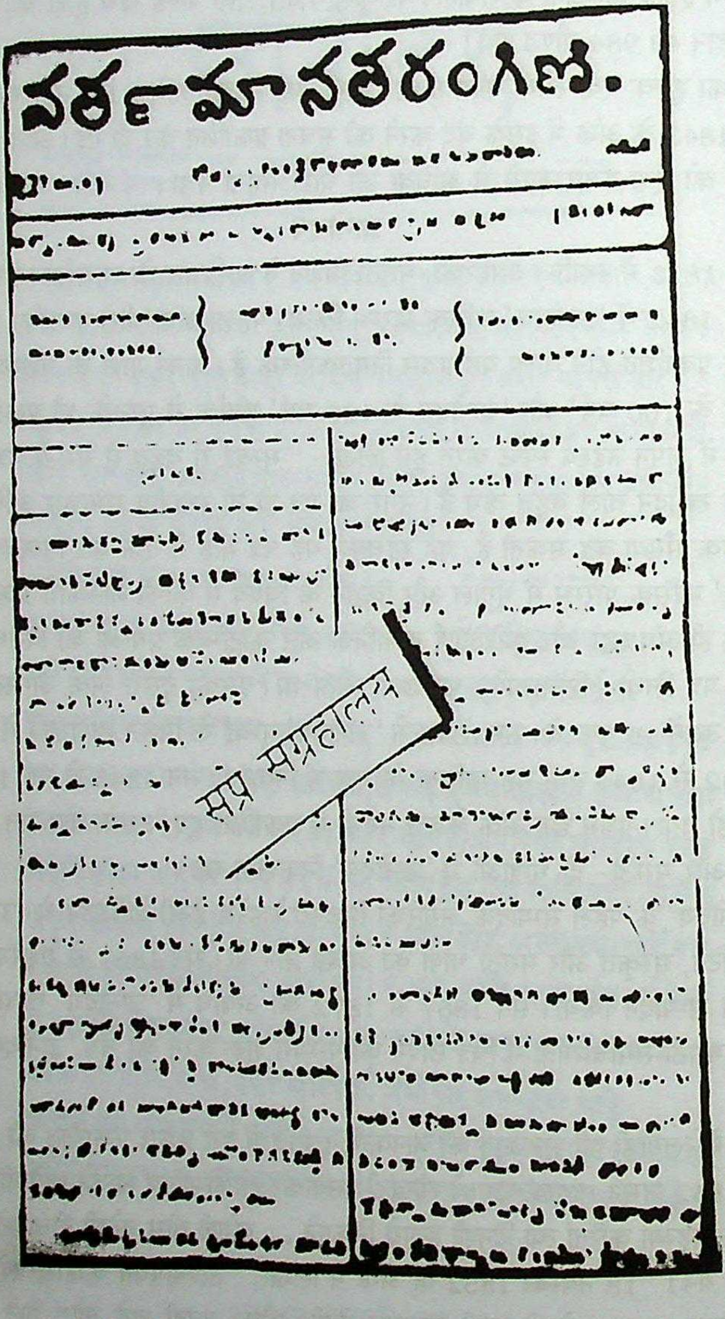
వర్తమానతరంగిణి.

सप्र संग्रहालय

वर्तमान तरंगिनी (तेलुगु), चेन्नै, सन 1842

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ज्ञानोदय' का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए जनवरी 1856 के अंक में लिखा गया, "लोगों को सच्चा ज्ञान दर्शाना, सच्च क्या झूठ क्या इसे कैसे जानें यह सिखाना और विशेष करके ख्रिस्ती धर्म के विचारों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना तथा ख्रिस्ती धर्म के अनुसार चलने से कितना कल्याण होता है यह स्पष्ट करना, ज्ञानोदय का हेतु था।'ज्ञानोदय' में प्रारम्भ से ही मराठी भाषा के नियतकालिक पत्रों और वाङ्मय का सन्दर्भ लिया जाता था, इसलिए प्रकाशन के कुछ समय बाद बंद हो गए समाचारपत्रों के नाम और जानकारी भी 'ज्ञानोदय' से मिलती है।

जुलाई 1873 से 'ज्ञानोदय' का रूपांतर 12 पृष्ठों के साप्ताहिक में हो गया। प्रथमतः अहमदनगर से, फिर मुम्बई से, पुनः अहमदनगर से और फिर मुम्बई ऐसे स्थानांतरण होते रहे। 'ज्ञानोदय' को 75 वर्ष तक अमेरिकी-मराठी मिशन ने चलाया। बाद में उसकी व्यवस्था छह मिशनों द्वारा संभाली गई।'ज्ञानोदय' का शुल्क प्रारम्भ में डेढ़ रुपया था।

ज्ञानोदय के सम्पादकों का कालक्रम इस प्रकार रहा- प्रथम सम्पादक रेव्हरेंड हेनरी बेलेंटाइन 1835 से 1865 तक। उनके बाद एबट ह्यूम, फेअरबॅक, शाहू दाजी कुकडे, रेव्हरेंड तुकाराम नाथुजी, रेव्हरेंड नारायण वामन तिलक (1912 से 1919), देवदत्त तिलक, रेव्हरेंड दि.शं. सावरकर, मनोहर कृष्ण उजगरे, रेव्हरेंड डा. भा.पां. हिवाले, रेव्हरेंड शाल सालवी, र.ह.केलकर, सुमन्त दयानंद करंदीकर आदि।

'ज्ञानोदय'[1] ने परिशिष्ट अंक के रूप में 'मुलांचा भाग' (बच्चों का विभाग) प्रकाशित करना शुरू किया। परिशिष्ट अंक माह में एक बार 'ज्ञानोदय' के साथ प्रकाशित होता था। प्रारम्भ में यह अंक 4 पृष्ठों का होता था। 1 जनवरी 1874 से 8 पृष्ठों का हुआ। जनवरी 1876 से बच्चों के विभाग को *'बालबोध मेवा'* नाम दिया गया था।'बालबोध मेवा' का सम्पादन क्रमशः सी.डब्ल्यू.पार्क, मिस ब्रूस, आर.एस.ह्यूम, डा. इ.आर. बिसेल ने किया। सन 1896 से सन 1910 तक रेव्हरेंड ना.वा.तिलक सम्पादक थे।'बालबोध मेवा' सन 1945 तक चला। विगत डेढ़ सौ वर्षों का महाराष्ट्र और उसकी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ समझने के लिए 'ज्ञानोदय' एक अच्छा सन्दर्भ माना जाता है।जून 1842 में बंगला मासिक पत्रिका *'विद्या दर्शन'* का प्रकाशन हुआ। इसे अक्षय कुमार दत्त और प्रसन्न कुमार घोष ने निकाला था। इस पत्रिका के केवल छह अंक निकल पाये।

छह जुलाई 1842 को नील की खेती करने वालों के संगठन ने साप्ताहिक *'प्लांटर्स जर्नल'* का प्रकाशन किया। यह किसानों की समस्याओं और उद्योग व्यापार सम्बन्धी जानकारियाँ सुलभ कराने के लिए निकाला गया था। इसका सम्पादन स्पीड करते थे। कुछ समय बाद पत्र का नाम 'प्लांटर्स जर्नल मरकेन्टाइल एण्ड एग्रीकल्चर इंटेलीजेंसर' कर दिया गया था। उद्यानों पर केन्द्रित यह पत्रिका 1843 तक निकली। इसका वार्षिक शुल्क 20 रुपये था।

जामेअ-उल अख़बार

चेन्नै से प्रकाशित होने वाले उर्दू के समाचारपत्रों में प्रथम नाम *'जामेअ-उल अख़बार'* का है, जिसके सम्पादक सैयद रहमत उल्ला थे। सन 1842 में प्रकाशित यह साप्ताहिक पत्र सोलह पृष्ठों का था। इसका मासिक शुल्क एक रुपया था। किताबत सुन्दर तथा छपाई सुरुचिपूर्ण होती थी। प्रत्येक पृष्ठ के दो कालम होते थे।'जामेअ-उल अख़बार' समाचार संकलन एवं सम्पादन

---

1. ज्ञानोदय, 1 जनवरी 1873 के अंक (पुस्तक 32, अंक 1)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मान से अपने समकालीन समाचारपत्रों की तुलना में बेहतर था। इसमें हिन्दुस्तान के दूरस्थ स्थानों एवं विदेशों के समाचार हर सप्ताह प्रकाशित किए जाते थे। स्थानीय समाचार तथा मद्रास शासन द्वारा दिए गए आदेशों को प्रथम कालम में छापा जाता था। अन्य स्थानों से प्राप्त समाचार दूसरे कालम में छपते थे। समाचारों के साथ-साथ कभी-कभी किसी देश का भूगोल, कृषि सम्बन्धी समाचार, संस्कृति, दण्ड देने के यंत्र, धर्म आदि विषयों पर लेख भी दिए जाते थे।

इस समाचारपत्र से दिल्ली से प्रकाशित होने वाले एक अन्य समाचारपत्र की जानकारी मिलती है, जिसका नाम 'सईद-उल अख़बार' था। उसके सम्बन्ध में 15 अप्रैल 1844 के अंक में प्रकाशित समाचार इस प्रकार है-

ख़बर देहली

''मुंशी नूरउद्दीन साहब एक कदीम इलाक़ेदार जो अब पेंशन पाते हैं एक अख़बारी काग़ज उर्दू ज़बान में पत्थर के छापे से हफ़्ते को एक बार छापते हैं, जिसका नाम 'सईद-उल अख़बार' रखे हैं।''

वर्तमान तरंगिनी

8 जून 1842 को सैयद रहमत उल्ला ने चेन्नै से तेलुगु साप्ताहिक *'वर्तमान तरंगिनी'* का प्रकाशन किया। उनका अपना छापाखाना था। प्रकाशक ने 'पाठकों के नाम' अपने निवेदन में लिखा- ''हम बहुत धनी नहीं हैं। हमें तेलुगु भाषा का अच्छा ज्ञान भी नहीं है। किन्तु हमें इस पत्र की प्रगति की पूरी आशा है और हमें विश्वास है कि यह पत्र हिन्दुओं की मैत्री से मालामाल होगा। इससे हमें नाम और लोकप्रियता मिलेगी।''

रहमल उल्ला ने पत्र के लिए योग्य सम्पादक नियुक्त किए। 'वर्तमान तरंगिनी' के सातवें अंक से पी.वेंकटराव का नाम सम्पादक के रूप में मिलता है। उन्होंने एक दशक तक 'वर्तमान तरंगिनी' का सम्पादन किया। इस पत्र में धार्मिक विवाद, निन्दा और सराहना नहीं छापी जाती थी। पी.वेंकटराव निष्पक्ष और निर्भीक सम्पादक थे। सुसम्पादन और स्तरीय पाठ्य सामग्री के कारण 'वर्तमान तरंगिनी' की लोकप्रियता बढ़ी। यह पत्र 12 पृष्ठ का था। हरेक पृष्ठ पर दो कालम होते थे। आरंभ में यह पत्र बुधवार को छपता था, फिर गुरूवार को छपने लगा। 18 दिसम्बर 1852 तक 'वर्तमान तरंगिनी' के प्रकाशित होने का साक्ष्य मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म और संस्कृति के पक्ष में

1843

तत्वबोधिनी पत्रिका

बंगाल की तत्वबोधिनी सभा ने जनजागरण के उद्देश्य से मासिक *'तत्वबोधिनी पत्रिका'* का प्रकाशन कोलकाता से 16 अगस्त 1843 से किया। इस बंगला पत्रिका के उद्देश्यों में ज्ञान का विस्तार करना, राजा राममोहन राय के कृतित्व का प्रकाशन करना और समाज के चरित्र को सुधारमूलक बनाना था। इसमें धार्मिक तत्वों की व्याख्या के अतिरिक्त सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि विषयों पर लेख प्रकाशित होते थे। 'तत्वबोधिनी पत्रिका' ने बंगाली समाज और धर्म की रक्षा की और अपनी संस्कृति और विरासत के प्रति जागृत किया।

अक्षय कुमार दत्त ने 'तत्वबोधिनी पत्रिका' का 1843 से 1855 तक सम्पादन किया। मिशनरी द्वारा दबाव डालकर धर्मांतरण कराने की घटनाओं से 'तत्वबोधिनी पत्रिका' सजग थी। उसने गरीब जनता को रकम देकर, नौकरी देकर और शिक्षा देकर धर्म परिवर्तन के लिये तैयार करने को अनुचित ठहराया। उसने अहम मुद्दे उठाए और कहा कि सामाजिक कानून के उल्लंघन में तो दण्ड की व्यवस्था है पर धर्म परिवर्तन के लिए क्यों नहीं? उसने सुझाव दिया कि हिन्दुओं के अपने स्कूल होने चाहिए ताकि शिक्षा के नाम से धर्म परिवर्तन न हो। इस सुझाव को हाथों हाथ लिया गया। नागरिकों की एक बैठक हुई और एक कोष की स्थापना हुई तथा हिन्दू हितार्थी विद्यालय प्रारम्भ किया गया। इसके सचिव देवेन्द्रनाथ टैगोर थे। तब धर्म परिवर्तन की रफ्तार धीमी पड़ गई। अब तत्वबोधिनी पत्रिका का ध्यान बंगाल के लोगों की दयनीय आर्थिक स्थिति की ओर गया। उसने इस कमजोरी की जड़ तक जाकर वे कारण गिनाए जो गरीबी के लिए जिम्मेदार थे। उसने बताया कि अँगरेज सरकार कैसा भेद कर रही है- जिस पद पर एक अँगरेज काम करता है उसे एक हजार वेतन दिया जाता है, परन्तु उसी पद पर काम करने वाले भारतीय को केवल 100-150 रुपये मिलते हैं। इस प्रकार हम अपनी स्वतंत्रता कम दामों में बेच रहे हैं। पत्रिका ने खेतिहर मजदूरों, कामगारों की समस्याओं को भी उजागर किया। समाज सुधार और कुप्रथाओं को बन्द करने की मुहिम चलाई। इसने ईश्वरचंद्र विद्यासागर के विधवा विवाह विषय पर लेख प्रकाशित किए और समाज को नई सोच की ओर मोड़ा।

जनवरी 1843 में 16 पृष्ठों की द्विभाषी- अँगरेजी और बंगला- पत्रिका *'इवैन्जेलिस्ट'* का प्रकाशन एसोसिएशन आफ बैप्टिस्ट चर्चेज ने किया था। बंगाल के भारतीय ईसाइयों तक धर्म सम्बन्धी सूचनाएं और निर्देश पहुँचाने के उद्देश्य से यह मासिक पत्रिका निकाली गई थी, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

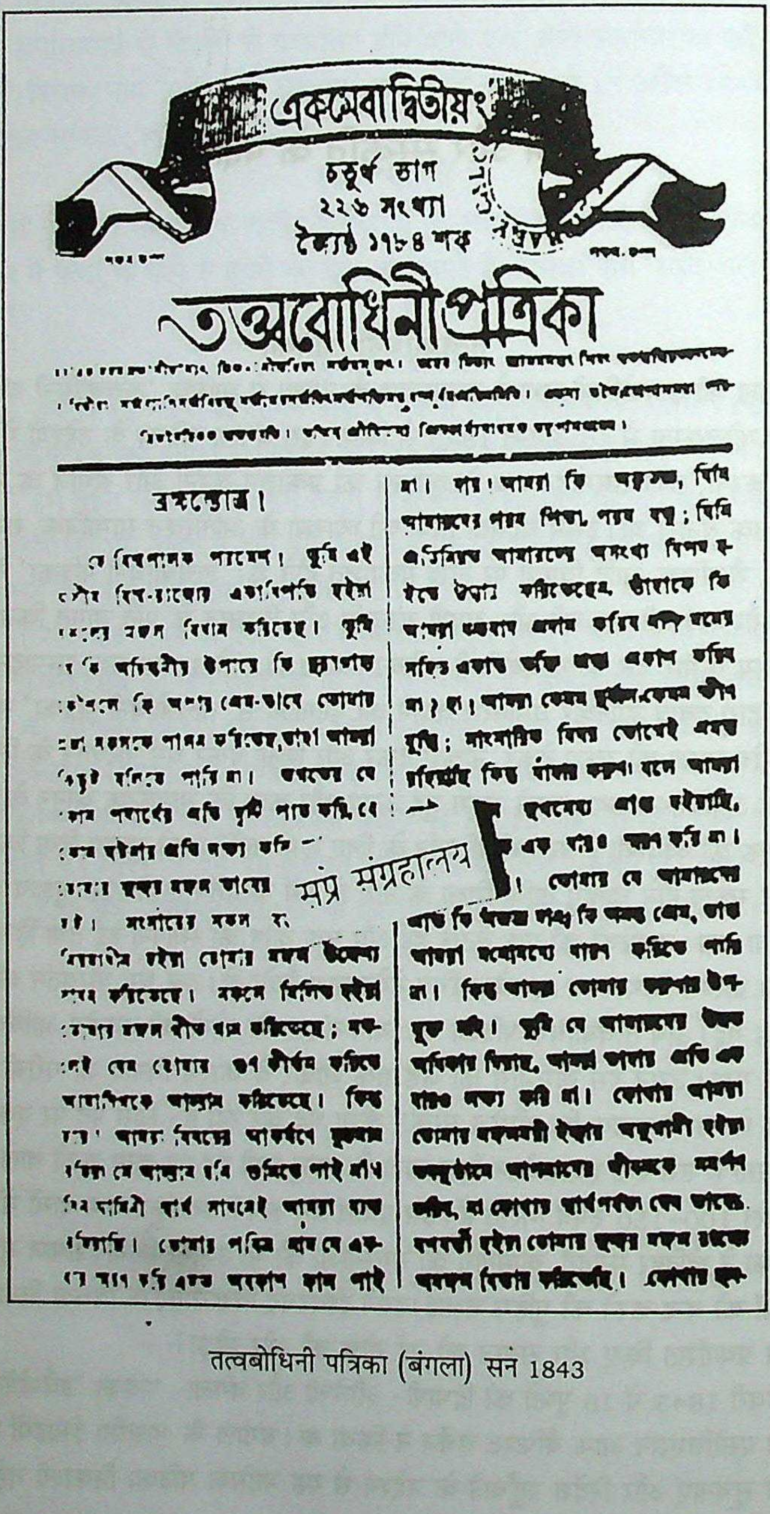

একমেবাদ্বিতীয়ং

চতুর্থ ভাগ

২২৬ সংখ্যা

জ্যৈষ্ঠ ১৭৮৪ শক

তত্ত্ববোধিনীপত্রিকা

ব্রহ্মস্তোত্র।

[illegible]

तत्वबोधिनी पत्रिका (बंगला) सन 1843

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिसम्बर 1845 में बंद हो गई। जनवरी 1848 में पुनः जॉन राबिनसन के सम्पादन में निकली।

चालीस पृष्ठों की मासिक पत्रिका *'ओरिएण्टल मैगजीन'* सेंडर्स एण्ड कोन्स लाल बाजार प्रेस कोलकाता से छपती थी। इसका आकार 21 से.मी. गुणित 13.5 से.मी. था। पत्रिका का आवरण पृष्ठ फीके नीले रंग का था और अँगरेजी शैली की बेल-बूटे की डिजाइन आवरण पृष्ठ के चारों ओर होती थी। पत्रिका का प्रकाशन जनवरी 1843 से प्रारम्भ हुआ। इसके लगभग डेढ़ वर्ष तक के अंकों का उल्लेख मिलता है। यह पत्रिका विभिन्न रुचियों के पाठकों को रोचक, ज्ञानवर्धक जानकारी देती थी। इसमें कविता, इतिहास, साहित्य, सामाजिक व्यवस्था, संस्मरण आदि का समावेश किया जाता था। राजनीतिक समीक्षा होती थी और सम्पादकीय टीपें रहती थीं। इसमें विज्ञापन भी छपते थे, जिनकी दर एक पृष्ठ- 8 रुपये, आधा पृष्ठ 4 रुपये और प्रति पंक्ति तीन आना होती थी।

कोलकाता से बेलिन ने फरवरी 1843 में मासिक पत्रिका *'बकेट'* प्रकाशित की। इसके प्रकाशक और सम्पादक बेलिन थे। इस पत्रिका के दो ही अंक निकल पाए।

मई 1843 में रिचर्ड थामस मार्टिन के सम्पादन में कोलकाता से *'इण्डियन जूरिस्ट'* का प्रकाशन हुआ। यह द्वै-मासिक पी.एस.डी. रोजारियो एण्ड कम्पनी द्वारा निकाला गया था। कानून विषयक इस पत्रिका का मूल्य एक रुपया था। पाँच माह के बाद इसकी आवृत्ति मासिक हो गई। सितम्बर से दिसम्बर 1843 तक ही ऐसा सम्भव हो पाया। जनवरी 1844 में पत्रिका पुनः द्वै-मासिक हो गई। परन्तु यही इसका अंतिम अंक रहा। इस पत्रिका में भारत और ब्रिटेन में बनने वाले कानून, अदालती फैसले, विधि एवं न्याय सम्बन्धी व्याख्यान प्रमुखता से छापे जाते थे।

कोलकाता से 15 सितम्बर 1843 को फ्री चर्च आफ स्काटलैण्ड की पाक्षिक पत्रिका *'फ्री चर्चमैन'* का प्रकाशन चर्च सम्बन्धी जानकारी देने के लिए किया गया था। राजनीति को इसमें स्थान नहीं दिया जाता था। जान मेकनाल्ड इसके सम्पादक थे। सन 1845 में यह मासिक हुई और सन 1851 में इस पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो गया। इसकी एक प्रति का मूल्य चार आने तथा वार्षिक शुल्क आठ रुपये था।

मौलवी मोहम्मद बाक़र ने अक्टूबर 1843 में देहली से *'मज़हर-उल-हक़'* का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। यह उनका दूसरा उर्दू अख़बार था। सम्पादक के स्थान पर शेख इमदाद हुसैन का नाम जाता था। इसमें यदा-कदा 'देहली उर्दू अख़बार' के लेखों की नक़ल करके प्रकाशित की जाती थीं। सन 1848 में इसे बंद कर दिया गया। बंगला भाषा में सन 1843 में *'आयुदर्शन'* बैरकपुर से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक श्रीनाथ राय थे।

मंगलूर समाचार

एक जुलाई 1843 को मंगलूर से कन्नड पत्र *'मंगलूर समाचार'* का प्रकाशन जर्मन इवांजेनिकल मिशन ने किया। रेवरेण्ड हरमोन मोएगलिंग इस पाक्षिक पत्र के सम्पादक थे। यही कन्नड भाषा का प्रथम समाचारपत्र है। 'मंगलूर समाचार' के प्रकाशन का उद्देश्य लोगों तक सही समाचार ठीक तरह से और कम मूल्य पर पहुँचाना था। लिथो मुद्रण पद्धति से छपने वाला यह अखबार एक वर्ष तक निकला। पूर्व में यह धारणा थी कि बेल्लारी से प्रकाशित होने वाला 'कन्नड समाचार' कन्नड भाषा का पहला पत्र है। किन्तु टाटा इंस्टीट्यूट आफ फण्डामेण्टल रिसर्च के सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीनिवास हवानूर के शोध से यह प्रमाणित हुआ कि 'मंगलूर समाचार' (1843) ही कन्नड भाषा का पहला पत्र है, जबकि बेल्लारी का 'कन्नड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार' सन 1844 में प्रकाशित हुआ।

1844

पेशवा की राजधानी पुणे से प्रकाशित होने वाला पहला पत्र *'मित्रोदय'* 2 मार्च 1844 को निकला। इसे वीरेश्वर सदाशिव छत्रे ने निकाला था। प्रवेशांक में पत्र का उद्देश्य बताते हुए कहा गया, ''मित्रोदय पत्र लोक कल्याण के लिये निकाला है। इसमें छह विषय लिए हैं। इस हिंदू प्रदेश में जो ज्ञान होना चाहिए उसका अभाव होने के कारण लोगों की अवनति हो रही है। यह ज्ञान इस पत्र के द्वारा दिया जाएगा।'' यह पत्र अल्पायु रहा।

अप्रैल 1844 में साप्ताहिक *'हिन्दुस्तान गार्जियन'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। यह अँगरेजी पत्र था। इसका राजनीतिक दृष्टिकोण इस टिप्पणी से झलकता है- ''हिन्दुस्तान में सरकार का अच्छी प्रकार चलाना दिखावटी अंदाज से संभव नहीं है।'' 20 जुलाई 1844 के अंक में प्रकाशक ने पत्र को बन्द करने की घोषणा कर दी।

केलकटा रिव्यू

मासिक पत्रिका *'केलकटा रिव्यू'* 15 मई 1844 से प्रकाशित हुई। यह एक शिक्षाप्रद बहुआयामी पत्रिका थी। इसमें संस्कृति, वेदांत, इतिहास, शिक्षा आदि विषयों पर गम्भीर लेखों के अतिरिक्त पुस्तकों की समालोचना होती थी। पठनीय पत्रिका होने और शासन की सहानुभूति प्राप्त होने से इसकी प्रसार सँख्या अच्छी थी। सन 1856 में यह कुछ माहों के लिए 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' के सम्पादक के स्वामित्व में रही, जिन्होंने इसे दिसम्बर 1855 में 5,000 रुपयों में खरीद लिया था। परन्तु यह प्रयोग सफल न हो सका। सन 1857 में इसका स्वामित्व पुन: बदला। इसकी शुरूआत अच्छी और पठनीय पत्रिका के रूप में हुई थी। अंक के अंत में विविध टीकाओं के अन्तर्गत सामयिक विषयों और प्रकाशनों पर सटीक टीकाएँ की जाती थीं। सन 1921 के अंक में प्रधान सम्पादक के रूप में हेनरी स्टीफन का नाम जाता था। उस समय इसका कलेवर विशेष रुचि आकर्षित करने लगा था। इसमें लघु कहानियाँ, कविताएँ, व्यक्ति चित्र, व्यंग्य चित्र और सामान्य सामयिक रुचि के लेख छपते थे। फरवरी 1922 के अंक में 16 पृष्ठों में कोलकाता शहर और आसपास की पुरानी, ऐतिहासिक भव्य इमारतों के चित्र छपे हैं। मार्च 1922 के अंक में इस पत्रिका को कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा हस्तगत किए जाने का विवरण मिलता है- ''8 जनवरी 1921 को सर आशुतोष मुखर्जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय की सीनेट में प्रस्ताव रखा कि विश्वविद्यालय की पत्रिका का प्रकाशन होना चाहिए। 11 फरवरी 1921 को सिण्डीकेट ने 'केलकटा रिव्यू' का कापीराइट 1500 रु. में क्रय करने का प्रस्ताव पारित किया। 25 फरवरी को इसका आदेश पारित किया गया।''

राजनारायण मित्रा ने 17 जुलाई 1844 को *'कायस्थ कौस्तुभ'* नामक पत्रिका निकाली। इसके मात्र तीन अंक प्रकाशित हुए।

सन 1844 में *'पाक्षिर विवरण'* का प्रकाशन कोलकाता बुल सोसायटी की सहायता से हुआ। रामचन्द्र मित्रा इसके सम्पादक थे। पक्षी विषयक विविध जानकारी देने वाली इस बंगला मासिक पत्रिका का एक अंक ही निकला। बंगला साप्ताहिक *'संवाद राजरानी'* गंगा नारायण बसु के सम्पादन में सन 1844 में निकला। *'सर्वस्व रागिनी'* सन 1844 में प्रभाकर प्रेस से निकला। यह साप्ताहिक पत्र इतिहास, विज्ञान और नैतिक शास्त्र पर लेखादि प्रकाशित करता था। यह पत्र सन 1846 में बन्द हो गया। चार्ल्स नेपियर ने सिंध से पहला अँगरेजी पत्र *'कराची*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एडवरटाइजर' निकाला। यह अखबार सन 1844 में प्रकाशित हुआ था।

अँगरेजी साप्ताहिक '*केलकटा क्रिश्चियन हेरल्ड*' का उद्देश्य भारत के ईसाइयों को उन मुद्दों से अवगत कराना था जो ईसाई धर्म के लिए जरूरी थे। यह पत्र कोलकाता की डब्ल्यू.एच.केरी एंड कम्पनी ने 17 जुलाई 1844 को मुद्रित और प्रकाशित कराया था। इसका शुल्क एक रुपया मासिक था। यह पत्र वही विज्ञापन स्वीकृत करता था जो उसके उद्देश्य से मेल खाते थे। इसके मालिकों ने मई 1845 से '*मंथली क्रिश्चियन हेरल्ड*' भी प्रकाशित किया था, जिसमें भारत के ईसाइयों और ईसाई धर्म की ऐसी जानकारी प्रकाशित की जाती थी जो यूरोप के लोग पढ़ने के इच्छुक हों। 24 दिसम्बर 1845 को 'केलकटा क्रिश्चियन हेरल्ड' का अन्तिम अंक प्रकाशित हुआ। परन्तु इसी के साथ यह घोषणा भी की गई कि पत्र के मालिक एक नया दैनिक पत्र निकालना चाहते हैं, अतः साप्ताहिक बन्द किया जा रहा है।

मुम्बई से सन 1844 में '*सदुक्ति रत्न*' नाम का पत्र निकला। एक वर्ष के अंदर ही उसका अवसान भी हो गया। इस पत्र के सम्पादक ने 'प्रभाकर' और 'मित्रोदय' जैसे पत्रों के विचारों पर भी टीका टिप्पणी की थी।

सादिक़-उल अख़बार

दिल्ली से '*सादिक़-उल अख़बार*' शीर्षक से चार समाचारपत्र प्रकाशित हुए हैं। पहला समाचारपत्र सन 1844 में फ़ारसी भाषा का था। गारसां दतासी के अनुसार, दूसरा पत्र सन 1853 में प्रकाशित हुआ जिसके संचालक मुस्तुफ़ा खां थे। तीसरा पत्र जमीलुद्दीन खां हिज्र ने सन 1854 में निकाला था। यह पत्र लोकप्रिय हुआ। चौथा पत्र शेख खुदाबख़्श ने सन 1856 में प्रकाशित किया था। पहली बार निकाला गया 'सादिक़-उल अख़बार' सन 1850 में बंद हो गया था। दूसरे की आयु भी लगभग एक वर्ष की थी। बाद के दोनों 'सादिक़-उल अख़बार' सन 1857 के बाद तक प्रकाशित होते रहे। प्रारम्भ में यह अख़बार फ़ारसी में प्रकाशित किया जाता था। फिर उर्दू में निकलने लगा। मुम्बई के 'अहसन-उल अख़बार'[1] ने इस परिवर्तन के सम्बन्ध में लिखा है:- ''सादिक़-उल अख़बार' के सम्पादक ने अपने अख़बार की भाषा में शनैः-शनैः परिवर्तन लाकर इसे उर्दू भाषा का समाचारपत्र बना लिया है। यह समझ में नहीं आता कि उन्होंने फ़ारसी भाषा से क्यों अपना नाता तोड़ लिया।''

शाही फ़रमान के पालन में लखनऊ के समस्त प्रेस सन 1849 में बंद कर दिए गए थे। उस समय मुस्तुफ़ाई प्रेस लखनऊ के मालिक मुस्तुफ़ा खां अपने प्रेस को कानपुर ले गए। मुस्तुफ़ा खां ने दिल्ली में भी एक प्रेस खोला और सन 1851 में 'सादिक़-उल अख़बार' का दिल्ली से प्रकाशन आरम्भ किया। मुस्तुफ़ा खां कानपुर और दिल्ली के प्रेस में समय की पाबंदी, साफ सुथरी छपाई और 'सादिक़-उल अख़बार' के प्रकाशन पर ज्यादा समय और ध्यान नहीं दे पाए। इसी कारण इस समाचारपत्र का प्रकाशन सन 1854 में बंद कर दिया गया। जमीलउद्दीन खां हिज्र ने समाचारपत्र बंद होने के बाद इसी नाम से नये समाचारपत्र का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। जमीलउद्दीन खां हिज्र पूर्व में मुस्तुफ़ाई प्रेस से सम्बद्ध थे। वे वहाँ किताबत का कार्य करते थे। उन्होंने दिल्ली के जमील उल ताबये प्रेस से जुलाई 1854 में 'सादिक़-उल अख़बार' का प्रकाशन आरम्भ किया। सन 1857 में स्वतंत्रता संग्राम के समय जमीलउद्दीन खां ने अपनी लेखनी का उपयोग देश की आजादी के दीवानों के पक्ष में किया, जिसके कारण अँगरेजों ने उन्हें

---

1. अहसन-उल-अखबार, 22 अक्टूबर 1847

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

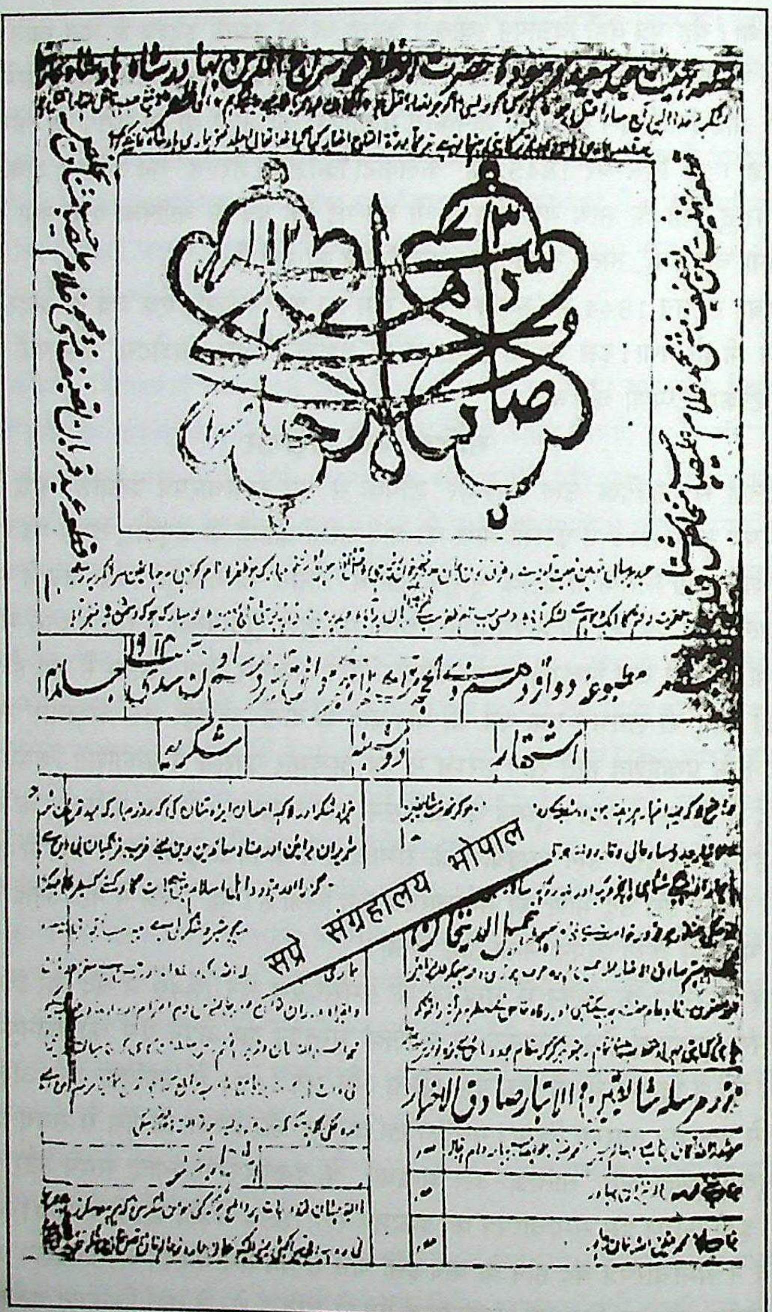

सादिक उल अखबार (उर्दू), सन 1844

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरफ्तार कर लिया। बहादुरशाह जफ़र पर चलाए गए मुकदमे में इनका और इनके समाचारपत्र का उल्लेख बार-बार हुआ है।

यह साप्ताहिक पत्र मंगलवार को प्रकाशित किया जाता था। इसका मासिक शुल्क एक रुपया था। इस अखबार ने अपना घोषणा पत्र इस प्रकार जारी किया- ''स्पष्ट किया जाता है कि यह साप्ताहिक समाचारपत्र मंगलवार को प्रकाशित किया जाकर इच्छुकों और रईसों को भेजा जाता है। इसका शुल्क जनहित में एक रुपया मासिक तथा अर्द्धवार्षिक राशि अग्रिम भेजने वालों के लिए पाँच रुपये तथा वार्षिक पंद्रह रुपये है। जो महानुभाव इसको खरीदना चाहें वे सैयद जमीलउद्दीन मालिक एवं संचालक सादिक़-उल अख़बार मोहल्ला जमीलपुरा उर्फ चूड़ीवालाँ को आवेदन कर मँगाएँ। यदि जनोपयोगी समाचार अथवा लेख छपवाना चाहें तो वह बिना किसी शुल्क के छापा जा सकता है किन्तु विशेष व्यक्ति अथवा वर्ग के लिए प्रकाशनार्थ सामग्री का शुल्क दो आने प्रति पंक्ति है। लेखकों को चाहिए कि वे अपने लेख हस्ताक्षर एवं सहमति की मुहर के साथ भेजें।''

जमीलउद्दीन खां सत्यवादिता एवं निर्भय भावना से कार्य करते रहे। कश्मीर के महाराजा द्वारा जनता पर अत्याचार और शोषण करने की घटना को उन्होंने 'सादिक़-उल अख़बार' के 16 मार्च 1857 के अंक में प्रकाशित किया- ''कोह परी से इस समाचारपत्र के संवाददाता ने सूचित किया है कि कश्मीर के महाराजा गुलाबसिंह द्वारा अपनी प्रजा पर काफी अत्याचार किये जा रहे हैं। प्रजा के उठने बैठने पर टैक्स लिया जाता है। यदि राजघराने या उससे सम्बन्धित किसी के यहाँ जन्म हो, शादी-ब्याह हो अथवा युवराज या अन्य कोई बीमार हों या यज्ञोपवीत संस्कार हो तो उस पर टैक्स लिया जाता है। यदि लड़की का जन्म हो तो आठ आने और लड़का पैदा हो तो दस आने लिए जाते हैं। इन अत्याचारों का वर्णन नहीं किया जा सकता। जब अपनों से यह हाल है तो प्रजा पर क्या क्या अत्याचार नहीं होते होंगे। यदि राजा किसी को बंदी बनाने का आदेश देता है तो कर्मचारी अपनी चुस्ती दिखाने के लिए उसका सिर उतार लेते हैं और अचरज तो इस बात का है कि घोंसी, तेली, पठारी, धुनिये, जुलाहे, गाय, भैंस, बकरी आदि पर भी टैक्स लगा रखा है। वेश्याओं से भी एक टका प्रति रुपये के हिसाब से टैक्स लिया जाता है। यदि कोई व्यक्ति टैक्स नहीं देता तो उसकी आँखों में तेल की सलाई फेरी जाती है। इस कारण प्रजा तंग आकर किन्नौर व बलख से रावलपिंडी और पंजाब के जिलों में भाग कर शरण ले रही है।''

फ़ारसी भाषा का *'अहसन-उल-अख़बार'* नौ नवम्बर 1844 को मुम्बई से आरम्भ हुआ। इसी पत्र के 26 जनवरी 1847 के अंक में दिल्ली में मिर्ज़ा ग़ालिब की जुआ के प्रकरण में गिरफ्तारी तथा 2 जुलाई 1847 के अंक में 6 माह की सजा और दो सौ रुपये जुर्माना की खबरें छपी थीं। यह भी छपा कि मिर्ज़ा ग़ालिब को फँसाया गया था। यह साप्ताहिक था।

1845

बनारस अखबार

'बनारस अखबार' को तब तक हिन्दी का पहला समाचारपत्र माना जाता रहा, जब तक 'उदन्त मार्त्तण्ड' सर्वप्रथम होने के प्रामाणिक दावे के साथ प्रगट नहीं हुआ था। जनवरी, 1845 में काशी से राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने 'बनारस अखबार' का प्रकाशन किया। गोविन्द रघुनाथ थत्ते इस अखबार के सम्पादक थे। लिथो प्रेस से छपने वाले साप्ताहिक 'बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखबार' के मुख पृष्ठ पर छपा करता था-

''सुबनारस अखबार यह शिवप्रसाद आधार।
बुद्धि विवेक जन निपुन को चित हित बारम्बार।।
गिरजापति नगरी जहाँ गंग अमल जलधार।
नेत शुभाशुभ मुकुर को लखो विचार विचार।।''

'बनारस अखबार' में प्रकाशित समाचार पढ़ने से उसकी उर्दू-फारसी मिश्रित हिन्दी भाषा का परिचय मिल जाता है। एक उदाहरण- ''यहाँ जो पाठशाला कई साल से जनाब कप्तान किट साहब बहादुर के इहतिमाम और धर्मात्माओं के मदद से बनता है उसका हाल कई दफ़ा ज़ाहिर हो चुका है। अब वह मकान एक आलीशान बन्ने का निशान त्ययार हर चेहार तरफ़ से हो गया बल्कि इसके नक्शे का बयान पहिले मुन्दर्ज है, सो परमेश्वर के दया से साहब बहादुर ने बड़ी तन्देही मुस्तैदी से बहुत बेहतर और माकूल बनवाया है। देखकर लोग उस पाठशाला के किले के मकानों की खूबियां अक्सर बयान करते हैं। और उसके बनने के खर्च का तजबीज़ करते हैं कि जमा से ज्यादा लगा होगा और हर तरह से लायक तारीफ के है सो यह सब दानाई साहब ममदूह की है। खर्च से दूना लगावट में मालूम होता है।''

'बनारस अखबार' का चन्दा एक रुपया माहवार था। 'बनारस अखबार' के साथ साथ 'बनारस गजट' उर्दू में निकलता था। उसका सम्पादन भी गोविंद रघुनाथ थत्ते ही करते थे। 'बनारस अखबार' और 'बनारस गजट' दोनों एक ही 'प्रेस मतबअ बनारस अखबार' में छपते थे। सन 1849 में 'बनारस अखबार' की कुल आमदनी 376 रु. थी और 'बनारस गजट' की 281 रुपये। नेपाल के राजा से दोनों अखबारों के लिए 136 रु. की सहायता दी जाती थी। सन 1853 में 'बनारस गजट' का प्रकाशन बंद हो गया। इसके लगभग एक वर्ष बाद तक 'बनारस अखबार' चलता रहा।

इंडिया स्पोर्टिंग रिव्यू

मार्च 1845 में *'इंडिया स्पोर्टिंग रिव्यू'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ था। यह त्रैमासिक पत्रिका थी। 'केलकटा स्टार' के मालिक इसके प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क बीस रुपये था। 'फ्रेण्ड आफ इंडिया' के 17 अप्रैल 1845 के अंक से पता चलता है कि 'इंडिया स्पोर्टिंग रिव्यू' में आठ लिथोग्राफिक प्रिंट होते हैं जो अनूठे हैं- एवं इंग्लैण्ड के किसी भी पत्र में छापे से इनकी तुलना की जा सकती है। सन 1846 में इसका वार्षिक शुल्क बढ़ाकर 25 रुपये कर दिया गया था। सन 1850 में इसका स्वामित्व मेसर्स सेन्डर्स कोन एंड कम्पनी के हाथों में चला गया। सन 1856 में इस पत्रिका में एक नई श्रृंखला जोड़ी गई और एक नोटिस निकाला गया- ''इंडिया स्पोर्टिंग रिव्यू को त्रैमासिक के स्थान पर द्वै-मासिक बनाने का निश्चय किया गया है। इसका आकार घटाकर इसमें एडवर्टाइज़र का समावेश किया जाएगा जो प्रत्येक अंक के साथ होगा। इस प्रकार फर्म, पुस्तकालय, मेस आदि लाभान्वित होंगे। वार्षिक शुल्क 20 रुपये मय डाक खर्च के।'' एबिल ईस्ट इस समय भी पत्र के सम्पादक थे। इसका प्रकाशन सन 1857 के अंत तक हुआ। 'हिन्दू पेट्रियट'[1] के अनुसार 'इंडिया स्पोर्टिंग रिव्यू' अब साप्ताहिक *'इंडियन फील्ड'* के रूप में निकलेगा, जिसमें खेलकूद के तथा अन्य समाचार होंगे।''

1. हिन्दू पेट्रियट, 10 दिसम्बर 1857

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़वायद-उल-नाज़रीन

मास्टर रामचंद्र ने 23 मार्च 1845 को *'फ़वायद-उल-नाज़रीन'* का प्रकाशन दिल्ली से किया। यह आठ पृष्ठों की पाक्षिक पत्रिका थी, जिसमें साहित्यिक एवं ज्ञानवर्धक लेख रहते थे। इसके मुख पृष्ठ पर लिखा रहता था:- ''क़ीमत इस पर्चे की चार आने माहवारी जारी होता है महीने में दो बार! महसूल डाक जिम्मे खरीदार! रामचंद्र मुदर्रिस उलूम अँगरेजी मदरसा देहली के एहतमाम से मतबा उल उलूम देहली में छपा''। इसके 18 नवम्बर 1845 के अंक में तीन लेख, एक विज्ञप्ति तथा चार समाचार हैं- 1.कुर्रए ज़मीन का हाल (पृथ्वी के पिंड का वर्णन), 2.हाल आग़ा मोहम्मद शाहे ईरान (ईरान के बादशाह आग़ा मोहम्मद का समाचार), 3.इश्तिहार और राये मोहतमिम (सम्पादकीय एवं उसकी राय), 4.हाल मरवारीय यानी मोती का वर्णन, 5.हाल सूरत पंजाब (पंजाब की स्थिति का वर्णन), 6.ख़बर देहली (दिल्ली के समाचार) 7.ख़बर मुलतान (मुलतान के समाचार), 8.ख़बर पेशावर (पेशावर के समाचार)।

मोफस्सिलाइट

अँगरेजी साप्ताहिक *'मोफस्सिलाइट'* का प्रकाशन कोलकाता से दो अगस्त 1845 को हुआ। इसके सम्पादक बैरिस्टर जे.लांग थे। चार माह बाद नवम्बर के अंतिम सप्ताह में इस पत्र ने एक नोटिस प्रकाशित कर यह घोषणा कर दी कि 'मोफस्सिलाइट' आगरा प्रेसीडेंसी स्थानांतरित हो रहा है और भविष्य में हफ्ते में दो बार प्रकाशित हुआ करेगा। आगरा प्रेसीडेंसी से यह पत्र 4 मार्च 1846 से प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ। इसमें दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों के समाचार अधिक प्रकाशित होते थे। इस पत्र के अंक उपलब्ध नहीं हैं। 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' में इसका उल्लेख मिलता है। इसका वार्षिक शुल्क 25 रुपये था।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम के सिलसिले में इस पत्र का उल्लेख इस प्रकार मिलता है- ''आगरा से प्रकाशित होने वाली एक पत्रिका 'मोफस्सिलाइट' के अनुसार नज़ीरबाद और नीमच की रेजीमेन्टें जून के अन्त में आगरा के पास पहुँच गई थीं, जुलाई के आरम्भ में, आगरा से लगभग बीस मील के फासले पर सुशिया ग्राम के पिछाड़े के एक मैदान में, उन्होंने डेरा डाल दिया था, और 4 जुलाई को वे नगर पर हमला करने की तैयारी करती मालूम होती थीं। इन रेजीमेन्टों में 10,000 सैनिक थे (7,000 पैदल, 1500 घुड़सवार और 8 तोपें)। उनके हमले की तैयारी का समाचार पाकर, आगरा से पहले की छावनियों में रहने वाले योरोपियनों ने वहाँ से भाग कर किले के अन्दर शरण ले ली। आगरा के कमांडर जान कॉलिन ने सबसे पहले घुड़सवारों, पैदलों तथा तोपखाने की कोटा स्थित टुकड़ी को दुश्मन का मुकाबला करने के लिए आगे भेजा। परन्तु अपने तय स्थान पर पहुँचते ही उन सैनिकों में से एक-एक भाग खड़ा हुआ और जाकर विद्रोहियों से मिल गया। 5 जुलाई को आगरा गैरीसन ने विद्रोहियों पर आक्रमण करने के लिए कूच किया। इस गैरीसन में यूरोपियनों की तीसरी बंगाल सेना, तोपखाने की एक बैटरी और यूरोपियन स्वयंसेवकों की एक टुकड़ी थी। कहा जाता है कि इस गैरीसन ने बागियों को गाँव से खदेड़ कर पीछे के मैदान में भगा दिया। लड़ाई में लगे 500 आदमियों की उसकी कुल सेना में 49 खेत रहे और 92 घायल हो गये। इतना नुकसान उठाकर गैरीसन को पीछे हटना पड़ा। उसे दुश्मन के घुड़सवारों ने अपनी कार्रवाइयों से इस तरह हलाकान कर दिया था और उसके लिए ऐसा खतरा पैदा कर दिया था कि गैरीसन के सैनिक उनके ऊपर गोली तक न चला सके।''

साप्ताहिक *'रेशनल एनालिसिस आफ गॉस्पेल'* का प्रकाशन नौ अगस्त 1845 को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोलकाता से किया गया। एक सितम्बर 1845 को कोलकाता से अँगरेजी का '*इकानामिस्ट*' निकला। यह सांध्य दैनिक था। जनवरी 1846 में इसका विलय 'स्टैण्डर्ड' में हो गया था।

क़ुरान-उस-सैदीन

दिल्ली कालिज की स्थापना पुरानी और आधुनिक विचारधारा के संगम के कारण हुई। एक ओर पूर्वी विचारधारा, ज्ञान और साहित्य के लिए इस कालिज में मौलाना इमाम बख़्श सहबाई जैसे विद्वान थे, वहीं दूसरी ओर आधुनिक विचारों और विज्ञान के ज्ञाता डाक्टर स्प्रिंगर जैसे व्यक्ति भी थे। वे इस कालिज के प्राचार्य थे।

सन 1845 में दिल्ली कालिज से '*क़ुरान-उस-सैदीन*' साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू किया गया। स्प्रिंगर ने लिखा है- ''सन 1845 में मैंने दिल्ली में 'पेनी' मैगजीन के समान एक सचित्र साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित की। इसका नाम क़ुरान-उस-सैदीन था। इस प्रकार पूर्व और पश्चिम दोनों गुरू और शुक्र ग्रह के समान थे जिनका संयोग इस मैगज़ीन में हुआ। यह प्रथम प्रयास था पूर्व और पश्चिम के संयोग का। ग्यारह वर्ष बाद जब मैंने हिन्दुस्तान से विदा ली तो मुझे यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई थी कि इसका अनुकरण करके बारह से अधिक मैगज़ीन प्रकाशित हो रही थीं।''

इसका उद्देश्य देशवासियों में पश्चिमी विचारधारा का प्रचार करना था। यह पत्रिका बारह पृष्ठों की थी। इसका मासिक शुल्क दो रुपये, छैमाही दस रुपये और वार्षिक शुल्क बीस रुपये था। इसमें समाचारों के अतिरिक्त लेख, गज़लें, क़सीदे आदि छपते थे। कालिज के विभिन्न संकायों की गतिविधियों को विशेष रूप से छापा जाता था।

अँगरेजी खण्ड के सम्पादक पंडित बिशन नारायण के पुत्र पंडित धर्मनारायण थे। वे अत्यन्त मेधावी छात्र थे। उस समय (सन 1847 में) उनकी आयु 22-23 वर्ष की थी। बाद में उन्होंने कई पुस्तकों का अनुवाद किया। इनमें 'पोलिटिकल इकॉनामी' और 'इंग्लैण्ड का इतिहास' प्रमुख हैं। वे मौलाना सहबाई के शिष्य थे।

इंदौर के रेजीडेन्ट मिस्टर हैमिल्टन ने सन 1848 में पंडित धर्मनारायण की योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें इंदौर मदरसे का हैडमास्टर और प्रेस का संचालक तथा 'मालवा अखबार' का सम्पादक नियुक्त किया था। इस सम्बन्ध में 'क़ुरान-उस-सैदीन' के 4 दिसम्बर 1848 के अंक में, जो पंडित धर्मनारायण के सम्पादन में प्रकाशित होने वाला अंतिम अंक था, लिखा:- ''ब सबब रवानगी इंदौर इस खिदमत से दस्तबरदार हुआ।'' पंडित धर्मनारायण के इंदौर चले जाने के पश्चात इसका संम्पादन मोहम्मद हुसैन करने लगे। उनके पश्चात मोतीलाल सम्पादक हुए।

सन 1849 में प्रकाशित सरकारी रिपोर्ट में कहा गया है, ''क़ुरान-उस-सैदीन' के संपादक अब मोतीलाल हैं। जो इसी कॉलिज में अंग्रेज़ी विभाग में उच्च कक्षा के छात्र हैं। इस प्रांत से प्रकाशित पत्रिकाएं मुहिब्ब-ए-हिन्द, फ़वायदुल नाज़रीन और क़ुरान-उस-सैदीन द्वारा प्रकाशित जानकारी वास्तविक और लाभप्रद होती है। वास्तव में यह उच्च श्रेणी की पत्रिकाएं हैं। इनके सम्पादकों द्वारा अपने देशवासियों को यूरोपीय ज्ञान, शिक्षा और साहित्य से परिचय कराने के यह अच्छे साधन हैं। किन्तु इस बात का दुख: है कि गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष इनके प्रकाशन की सँख्या बहुत कम हो गई है! क़ुरान-उस-सैदीन की सँख्या 60 से घट कर 22 रह गई है। पत्रिका अपना भार बड़ी कठिनाई से वहन कर रही है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कुरान-उस-सैदीन' के 16 अक्टूबर 1848 के अंक में प्रकाशित समाचार का एक नमूना प्रस्तुत है- ''अमृतसर के एक पूजास्थल के दरवाज़े पर किसी अदूरदर्शी ने एक इश्तिहार चिपका दिया। संक्षेप में उसका विषय यह है कि अँगरेजों द्वारा अनाचार और अत्याचार किया जा रहा है इस कारण गुरू के समस्त अनुयायी अँगरेजों की हत्या करके जान का बदला जान से लें तथा अपने प्रांत को स्वतंत्र करके अपना राज्य स्थापित करें। जो ऐसा करने का साहस नहीं जुटा पाएगा वह वास्तव में सिख नहीं है।''

मौलवी करीमउद्दीन ने दिल्ली में एक छापाखाना 'मतबा रिफ़ाये आम' स्थापित किया था। इसी प्रेस से उन्होंने *'करीम-उल-अख़बार'* निकाला। पत्रिका *'गुले राना'* भी सन 1845 में इसी छापेखाने से मुद्रित कर निकाली गई।'' 1845 में चेन्नै से *'नेटिव हेरल्ड'* का प्रकाशन हुआ था।

1846

हिन्दू इन्टेलीजेंसर

साप्ताहिक *'हिन्दू इन्टेलीजेंसर'* का प्रकाशन 16 नवम्बर 1846 से हुआ था। इसके सम्पादक काशी प्रसाद घोष थे। भारतीय भाषाओं के पत्रों में व्यक्तिगत सूचनाओं के प्रकाशन की शुरूआत इसी पत्र ने की। इसका मुद्रण लाल बाजार कोलकाता के मेंडेस एण्ड कम्पनी से होता था और प्रकाशक गिरीशचन्द्र बोस थे। दो साल बाद काशी प्रसाद बोस इसके एकमात्र स्वामी हो गए। इस पत्र को कई होनहार पत्रकारों को दीक्षित करने का श्रेय जाता है। इनमें 'हिन्दू पेट्रियट' के हरिश्चन्द्र मुखर्जी, 'बंगाली' और 'बंगाल रिकार्डर' के गिरीशचन्द्र घोष, 'मुकर्जीज मैगजीन' के शंभुचन्द्र मुकर्जी, 'रईस और रैय्यत' कोलकाता मंथली मैगजीन के क्रिस्टोदास पाल प्रमुख हैं। इस पत्र का वार्षिक शुल्क 20 रुपये था। एक प्रति की कीमत एक रुपया थी। यह पत्र कम्पनी की सेवा में कार्यरत भारतीयों की समस्याओं और अँगरेज विरोधी भावनाओं को भी प्रकाशित करता था।

'हिन्दू इन्टेलीजेंसर' का प्रकाशन जून 1857 के विद्रोह के समय, जब प्रेस की स्वतंत्रता का हनन हुआ, तब बन्द करना पड़ा। इस सम्बन्ध में 'हिन्दू पेट्रियट'[1] ने लिखा- ''इस सप्ताह से 'हिन्दू इंटेलीजेन्सर' बंद हो रहा है। सम्पादक नये प्रेस कानून में लगाई पाबंदी के अन्तर्गत काम नहीं कर सकते।''

'केलकटा क्रिश्चियन हेरल्ड' बन्द होने के बाद एक जनवरी 1846 से दैनिक *'केलकटा स्टैंडर्ड'* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। यह ईसाई धर्म के सिद्धान्तों पर आधारित पत्र था। घोषणा की गई थी यह न किसी पार्टी का पत्र होगा, न किसी समुदाय का। इसका प्रकाशन डब्ल्यू. एच.कैरी ने किया था। यह पाँच माह ही मुश्किल से चल सका और जून 1846 के प्रथम सप्ताह में बंद हो गया। इसका पुन: प्रकाशन एक जनवरी 1847 को हुआ। इसकी कीमत 3 रुपये मासिक रखी गई थी। परन्तु 18 मार्च 1847 के 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' के अनुसार, ''आज प्रात: 'केलकटा स्टैंडर्ड' की दुबारा मौत हो गई और लगता है यह अब कभी जिन्दा नहीं होगा।''

बंगला पाक्षिक *'नित्य धर्मानुरंजिका'* का प्रकाशन 11 जनवरी 1846 को हुआ। नन्दकुमार कविरत्न इसके सम्पादक थे। एक दशक के बाद आवृत्ति मासिक हो गई।

26 जनवरी 1846 को कोलकाता से त्रैमासिक *'विद्या कल्पद्रुमम्'* प्रकाशित हुई। यह बंगला पत्रिका थी। इसमें भूगोल और इतिहास सहित विविध विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते थे।

1. हिन्दू पेट्रियट, 25 जून 1857

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जन साधारण का अज्ञान निवारण इस पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य था। इस पत्रिका को *'इनसाइक्लोपीडिया बेंगाली'* भी कहा जाता था। इसके तेरह अंक ही निकल पाए।

अमेरिकी मिशन के ओलिवर टी.कटर ने शिवसागर से जनवरी 1846 में असमिया मासिक *'अरुणोदय'* का प्रकाशन आरम्भ किया। स्थानीय और देश-विदेश की खबरें भी अरुणोदय में प्रकाशित की जाती थीं। लकड़ी के ब्लाक बना कर चित्र छापे जाते थे। बाइबिल पर आधारित चित्र कथाएं इस पत्र में छपती थीं। 'अरुणोदय' ने असम में साहित्य और पत्रकारिता की रुचि विकसित करने में योगदान दिया। यह पत्र सन 1882 तक प्रकाशित हुआ।

बैप्टिस्ट एसोसिएशन ने ईसाई मत के प्रचार के लिए सन 1846 में कोलकाता से बंगला मासिक *'उपदेशक'* का प्रकाशन किया। रेवरेण्ड जे.बेंगर इस पत्र के सम्पादक थे। सन 1857 तक इसका प्रकाशन हुआ। छह साल के अन्तराल के बाद सन 1863 में 'उपदेशक' फिर निकलने लगा। सन 1865 में हमेशा के लिए बंद हो गया।

बरेली मदरसे के सुप्रिन्टेंडेन्ट ट्रिगर के प्रयासों से सन 1847 में मदरसे में लिथो प्रेस 'मतबअ- उमदत-उल-अख़बार' स्थापित किया गया। उन्होंने सरकार से समाचारपत्र *'उम्दत-उल-अखबार'* को संरक्षण प्रदान करने का अनुरोध किया। प्रारम्भ में समाचारपत्र 'उम्दत-उल-अखबार' का संचालन मौलवी अब्दुल रहमान करते थे, बाद में मुंशी लक्ष्मण प्रसाद ने कार्यभार संभाला। इसकी क़ीमत एक रुपया माहवार थी। इसकी एक सौ प्रतियाँ छापी जाती थीं जिनमें से 76 पाठकों को भेजी जाती थीं। इसका मासिक व्यय चालीस रुपये तथा आय 70 रुपये थी। कुछ समय पश्चात बिना शुल्क बढ़ाए इसके पृष्ठों की सँख्या में वृद्धि की गई और छह पृष्ठों में इसका प्रकाशन किया जाने लगा। इसमें मनोरंजक लेखों का समावेश किया गया तथा चित्रों का प्रकाशन भी किया जाने लगा। कुछ समय पश्चात प्रेस के सुप्रिण्टेण्डेण्ट कल्याण राय हो गए, किन्तु समाचारपत्र का सम्पादन मुंशी लक्ष्मण प्रसाद ही करते रहे।

ब्रह्म समाज की स्थापना कट्टरपंथियों के प्रतिकार के लिए हुई। इसकी अनेक शाखाएँ स्थापित हुई। इसी क्रम में कोलकाता में सत्य संचारिणी सभा की स्थापना मई 1846 में हुई। इसके अध्यक्ष राजा राममोहन राय के छोटे पुत्र रामप्रसाद राय थे। सभा ने मुख पत्र *'सत्य संचारिणी पत्रिका'* का प्रकाशन अगस्त 1846 में किया। यह मासिक पत्रिका थी और इसके सम्पादक हिन्दू कालेज के छात्र श्यामाचरण बसु थे। पत्रिका ने महिला शिक्षा जैसे विषयों का प्रचार कर उसकी तरफदारी की। यह पत्रिका एक वर्ष तक चली।

कोलकाता से 11 जून 1846 को अँगरेजी, हिन्दी, फारसी, बंगला तथा उर्दू में बहुभाषी साप्ताहिक *'मार्त्तण्ड'* प्रकाशित हुआ। मौलाना नसीरुद्दीन के सम्पादन में 'मार्त्तण्ड' कोलकाता के इण्डियन प्रेस से प्रकाशित होता था। यह पत्र दस पृष्ठों का था।

बंगला, हिन्दी, उर्दू, अँगरेजी और फारसी भाषाओं में एक साथ निकलने वाला *'जगदीपक भास्कर'* 11 जून 1846 को प्रकाशित हुआ। साप्ताहिक *'इण्डियन सन'* कोलकाता से 11 जून 1846 को प्रकाशित किया गया था। इसके प्रकाशक फरीदउद्दीन खाँ थे। वार्षिक शुल्क 40 रुपये था। इसका प्रकाशन अधिक समय तक नहीं हो सका। 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया'[1] ने सूचना छापी कि ''इंडियन सन' का अस्त हो गया है और क्षितिज पर इसकी रश्मि तक शेष नहीं है।''

1. फ्रेण्ड आफ इण्डिया, 30 जून 1846

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मासिक पत्रिका *'ओरिएण्टल आब्जर्वर'* का प्रकाशन कोलकाता से जुलाई 1846 में किया गया था। इसके पहले तीन अंक चंद्रिका प्रेस में छपे तथा बाद के अंक स्टेनहोप प्रेस में छपते थे। तिनकोरी मुकर्जी पत्र के सम्पादक थे। शुल्क चार आने प्रतिमाह था। इसका उद्देश्य देशहित के समस्त विषयों और समस्याओं पर स्थानीय लोगों के मत एवं विचार प्रस्तुत करना और उन्हें शासन तथा यूरोप के जनसाधारण के सामने रखना था। पत्रिका में उस समय व्याप्त भ्रष्टाचार का विरोध भी किया जाता था। सम्पादक की राय थी- ''प्रबुद्ध जन की होशियारी और चौकसी से, जो अपने अधिकारों और हितों की रक्षा करना चाहते हैं, इस समस्या से निबटा जा सकता है।''

17 अक्टूबर 1846 को उमाकान्त भट्टाचार्य ने भास्कर प्रेस कोलकाता से साप्ताहिक *'समाचार ज्ञान दर्पण'* का प्रकाशन आरम्भ किया। यह धार्मिक और नैतिक विषयों पर केन्द्रित पत्र था। तीन साल तक प्रकाशित होने वाले इस पत्र ने राजनीति से दूरी बनाए रखी। भास्कर प्रेस से तब तीन पत्र प्रकाशित होते थे। 'भास्कर' का विषय राजनीति था। हास्य व्यंग्य का पत्र 'रस राज' के नाम से प्रकाशित होता था। 'ज्ञान दर्पण' नैतिक विषयों के लिए था।

नवम्बर 1846 में उर्दू साप्ताहिक *'फ़वायद-उल-शायक़ीन'* निकला। प्रभुदयाल इसके सम्पादक थे। यह एक तरह से अँगरेजी गजट का उर्दू संस्करण था, जिसमें विधि विषयक लेख, न्यायालयों के फैसले, कानून और नियम तथा मुंसिफ़ परीक्षा में बैठने वालों के लिए प्रश्नोत्तर प्रकाशित किए जाते थे। उर्दू अख़बार प्रेस इसका मुद्रक-प्रकाशक था। यह पत्र 1850 में बन्द हो गया।

मुम्बई से दैनिक *'बाम्बे टेलीग्राफ एण्ड कूरियर'* 1846 से प्रारम्भ हुआ था। पृष्ठ का आकार 48 गुणित 30 से.मी. था। यह 8 पृष्ठों में छपता था। आगरा से उर्दू में प्रकाशित होने वाला *'सदर-उल-अख़बार'* पहला समाचारपत्र था जिसे सन 1846 में आगरा कालेज के अँगरेज व्याख्याता सीफंक ने प्रकाशित किया था। इसके लिए धन संग्रह हेतु उन्होंने अपने कालेज के लगभग दो सौ व्यक्तियों को पाँच-पाँच रुपये के शेयर बेचे थे। यह समाचारपत्र आगरा कालेज के विद्यार्थियों के लिए विज्ञान एवं अन्य आधुनिक जानकारियाँ उपलब्ध कराने के ध्येय से निकाला गया था। आपत्तिजनक सामग्री का प्रकाशन होने के कारण इसके सम्पादक को पदच्युत कर दिया गया। उनके स्थान पर फ़ॉलियन को नियुक्त किया गया। साथ ही समाचारपत्र का नाम बदल कर *'अख़बार-उल-हक़ायक़'* रख दिया गया।

सुधाकर

रत्नेश्वर तिवारी ने सुधाकर प्रेस बनारस से *'सुधाकर'* का प्रकाशन आरम्भ किया था। इसका प्रकाशन देवनागरी लिपि में होता था, किन्तु भाषा उर्दू थी। सम्पादकीय अवश्य हिन्दी में लिखा जाता था। इसकी प्रकाशन तिथि की पुष्टि नहीं होती किन्तु राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली की समाचारपत्र पंजी में 17 अप्रैल सन 1847 को इसका अंकन मिलता है। 'सुधाकर' साप्ताहिक समाचारपत्र था, जिसका मासिक शुल्क एक रुपया था।

इस पत्र के सम्बन्ध में शासकीय रिपोर्ट में कहा गया है- ''अब यह केवल हिन्दी में प्रकाशित होता है। इसकी शैली बनारस से प्रकाशित अन्य हिन्दी के समाचारपत्रों से बेहतर है, किन्तु इसमें संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। अतः इसका प्रसार केवल उन लोगों तक सीमित है जो हिन्दी भाषा पढ़ और समझ सकते हैं।'' इसके सम्पादक तारामोहन मित्र थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुधाकर' सन 1852 में पाक्षिक हो गया और उसकी प्रसार सँख्या 100 हो गई। इसकी आधी प्रतियाँ सरकार ग्रामीण स्कूलों में वितरण के लिए खरीदती थी।

सीतानाथ घोष एवं उमेशचन्द्र मित्रा ने मासिक पत्रिका *'जगत बंधु'* सन 1846 में निकाली। इस बंगला पत्रिका का सम्पादन सीतानाथ घोष ही करते थे। तीन वर्ष तक इस पत्रिका के कोलकाता से प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है।

सन 1846 में मुम्बई से *'चित्र ज्ञान दर्पण'* का प्रकाशन हुआ। यह गुजराती मासिक पत्र था। सन 1850 से सचित्र पत्रिका के रूप में निकलने लगा।

सन 1846 में लाहौर से अँगरेजी साप्ताहिक *'लाहौर क्रानिकल'* प्रकाशित होने लगा। सन 1872 में 'सिविल एण्ड मिलिटरी गज़ट' शुरू हुआ था। कुछ समय बाद दोनों पत्रों का विलय हो गया और 'गज़ट' ही 1947 तक प्रकाशित होता रहा। यह अँगरेजी राज और ईसाइयत का समर्थक पत्र था। स्वतंत्रता के बाद पत्र बन्द हो गया।

1847

असद-उल अख़बार

आगरा से समाचारपत्र *'असद-उल अख़बार'* मई 1847 में निकला। पत्र के मालिक एवं सम्पादक कमरुद्दीन थे। पत्र का आकार 30 गुणित 20 से.मी. था। यह चार पृष्ठ का था। हर पृष्ठ पर दो कालम होते थे। 15 जुलाई 1850 के अंक से खबर का एक उदाहरण- "बादशाह ने मिर्ज़ा असदउल्ला खां ग़ालिब को सम्मानपूर्वक बुलाकर उन्हें इतिहास की एक पुस्तक लिखने का काम सौंपा है। इस किताब में तैमूर काल से आज तक की घटनाएँ अंकित होंगी। इस किताब को सुन्दर लिपि में लिखने वाले कातिबों को पचास रुपये मासिक दिए जाएंगे। बादशाह के इस कार्य से भविष्य में अन्य जनहितकारी कार्य होने की आशा बलवती हुई है। उन्होंने मिर्ज़ा ग़ालिब को 'नज्मुद्दौला दबीरुल मुल्क बहादुर' की पदवी, छह परिधान और तीन रत्न प्रदान किए हैं। आशा है कि यह पुस्तक अत्यन्त सुन्दर होगी और इसकी भाषा से हर व्यक्ति लाभ उठाएगा।"

जनवरी 1847 में रेवरेण्ड जे. थामस ने एसोसिएशन आफ बैप्टिस्ट चर्चेज इन बंगाल की ओर से मासिक पत्रिका *'ओरिएण्टल बैप्टिस्ट'* का प्रकाशन कोलकाता से किया। यह पत्रिका मिशन प्रेस में छपती थी। वार्षिक मूल्य तीन रुपये था। चर्च के सदस्यों के मानसिक विकास और जिज्ञासाओं के समाधान के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की गई थी। कुछ माह बाद 'केलकटा मिशनरी हेरल्ड' को 'ओरिएण्टल बैप्टिस्ट' में समाहित कर दिया गया। अँगरेजी एवं बंगला में द्विभाषी साप्ताहिक पत्र *'संवाद ज्ञानाञ्जन'* 15 अप्रैल 1847 को कोलकाता से निकला। इसके सम्पादक चैतन्यचरण अधिकारी थे। यह साप्ताहिक अल्पजीवी रहा।

मलयालम भाषा की पत्रकारिता की शुरूआत तेलिचेरि से सन 1847 में प्रकाशित *'राज्य समाचारम्'* के साथ हुई। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मलयालम में पत्रकारिता का प्रादुर्भाव हुआ था। ईसाई पादरियों हरमेन गुन्टार और बेंजामिन बेइली ने इसकी शुरूआत की। मलयालम का दूसरा पत्र *'पश्चिमोदयम्'* भी सन 1847 में प्रकाशित हुआ।

विष्णु सभा के सचिव हरिनारायण गोस्वामी के सम्पादन में मई 1847 में *'हिन्दू धर्म चन्द्रोदय'* का प्रकाशन हुआ। यह मासिक पत्रिका थी, जो एक साल तक प्रकाशित हुई।

16 जून 1847 को उमाकान्त भट्टाचार्य के सम्पादन में *'संवाद काव्य रत्नाकर'* निकला। यह बंगला साप्ताहिक दो वर्ष तक प्रकाशित हुआ। रंगपुर से अगस्त 1847 में *'रंगपुर वार्ता'* का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन सम्पादक गुरूचरण रायचौधरी ने किया। यह बंगला साप्ताहिक सन 1857 तक निकला। इसमें ग्रामांचल के विषयों को प्रमुखता से उभारा जाता था। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने पर जोर देता था। रायचौधरी के बाद नीलाम्बर मुखोपाध्याय ने सम्पादन किया।

अगस्त 1847 में कोलकाता से बंगला साप्ताहिक *'संवाद साधु रंजन'* प्रकाशित हुआ। ईश्वरचंद्र गुप्त इसके सम्पादक थे। उनके बाद नवकृष्ण राय ने यह दायित्व सम्हाला। सन 1860 तक इस पत्र का प्रकाशन हुआ। बंगला मासिक *'हिन्दू बंधु'* अगस्त 1847 में निकला। उमाचरण भद्र इसके सम्पादक थे। ईसाई मिशनरियों के सनातन धर्म विरोधी प्रचार का प्रतिवाद करने के उद्देश्य से यह मासिक पत्र निकाला गया था।

ख़ैरख़्वाह-ए-हिन्द

एक सितम्बर 1847 को दिल्ली से *'ख़ैरख़्वाह-ए-हिन्द'* नामक एक साहित्यिक और शैक्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया। प्रारम्भ में पत्रिका मौलवी मोहम्मद बाक़र के प्रेस मतबअ देहली उर्दू अख़बार में पंडित मोतीलाल द्वारा मुद्रित और प्रकाशित की जाती थी। मासिक शुल्क एक रुपया था। इसके बाबत मास्टर रामचंद्र ने पत्रिका 'फ़वायद-उल-नाज़रीन'[1] में लिखाः- ''पूर्व में यह लिखा जा चुका है कि ख़ैरख़्वाह-ए-हिन्द नामक एक पत्रिका का प्रकाशन शीघ्र किया जा रहा है। ईश्वर की कृपा से वह पत्रिका एक सितम्बर सन 1847 को प्रकाशित हो गई है तथा प्रबुद्धजन ने इसका स्वागत करते हुए इसे महत्व भी दिया है। ईश्वर ने चाहा तो इसमें ऐसे लेख छापे जाएंगे जो देशवासियों के लिए लाभकारी होंगे। प्रत्येक दौर का इतिहास जैसे हिन्दुस्तान, योरुप, ईरान, अफगानिस्तान आदि के तथा अन्य शिक्षाप्रद लेख जैसे नीतिशास्त्र, खगोल शास्त्र, विज्ञान आदि पर विवरण सहित लेख होंगे ताकि प्रत्येक व्यक्ति की समझ में आ सकें। उसमें संसद के समाचार, प्रस्ताव, योजनाएँ एवं सुधार तथा इंग्लैंड के अधिकारियों की आश्चर्यजनक बातें और बड़े-बड़े उस्ताद शायरों के कलाम प्रकाशित किए जाएंगे। इस पत्रिका में बादशाहों के चित्रों के अतिरिक्त मकानों और भवनों के नक़शे आदि भी होंगे। पचास पृष्ठों की इस पत्रिका का मासिक शुल्क एक रुपया होगा। प्रबुद्ध जनों को ज्ञात हो कि यह पत्रिका अन्य पत्रिकाओं के समान नहीं होगी जो पाठकों द्वारा एक बार पढ़ लिए जाने के पश्चात किसी काम की नहीं रहता। यह एक बेशकीमती पुस्तक के समान होगी।''

चूँकि इसी नाम का एक और अखबार मिर्जापुर से निकल रहा था, इसलिए खैरख्वाह-ए-हिन्द का नाम बदलकर 'मुहिब्ब-ए-हिन्द' कर दिया गया। 'मुहिब्ब-ए-हिन्द' में तीन किश्तों में चीन का इतिहास, दो किस्तों में पंजाब युद्ध का विवरण, सिंध के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन, चार किश्तों में भूतों पर लेख, शाह नसीर की तीन गज़लें आदि के प्रकाशन से पता चलता है कि 'मुहिब्बे हिन्द' के विषयों का दायरा बड़ा था।

मतला-उल अख़बार

'असद-उल अख़बार' का प्रकाशन आगरा में समाचारपत्रों के लिए शुभ शगुन था। इसके प्रकाशन से पूर्व वहाँ केवल दो उर्दू अखबार 'ज़ब्दहतुल अख़बार' और 'सदर-उल अख़बार' निकलते थे। 'असद-उल अख़बार' के प्रकाशन के पश्चात और कई नए समाचारपत्र एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ।

---

1. फवायद-उल-नाजरीन, अंक सितम्बर 1847

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1847 में 'असद-उल अख़बार' के प्रकाशन के कुछ समय बाद शेख खादिम अली ने *'मतला-उल अखबार'* निकालना प्रारम्भ किया। इसके सम्पादक शेख खादिम अली थे। यह मतबअ अकबरी से प्रकाशित होता था। यह पत्र मई 1857 तक निकलता रहा। इसका प्रमाण लखनऊ से प्रकाशित 'सहर सामरी'[1] से मिलता है जिसमें इस समाचारपत्र से उद्धृत खबरें छपी हैं। ''बाग़ियों की गढ़ी जो अँगरेजी और सुलतानी फौज गई थी उसका हाल मतला-उल-अखबार में यूँ मरक़ूम (अंकित) है के साहब लेफ्तिनेन्ट अंदर ईं (इसमें) और दस सिपाही मक़तूल (मारे गए) और पच्चीस आदमी मजरूह (घायल) हुए और तोपखाने के ग्यारह आदमी मक़तूल (मारे गए) हुए। और बादशाही फ़ौज में से सत्रह आदमी मारे गए। और बाग़ियों में से जो क़रीब पाँच सौ थे काम आए। आखिरकार (अंत में) बाग़ी छोड़ भागे!''

लखनऊ अख़बार

सन 1847 के आरम्भ में *'लखनऊ अख़बार'* का प्रकाशन किया गया था। मोहम्मद अतीक़ सिद्दीकी के मुताबिक-''लख़नऊ से सर्वप्रथम प्रकाशित जिस समाचारपत्र के प्रमाण हमें प्राप्त होते हैं, वह उर्दू का 'लखनऊ अख़बार' था। राष्ट्रीय अभिलेखागार की समाचारपत्र पंजी-1847 में 24 अप्रैल 1847 को अन्य समाचारपत्रों के नामों के साथ 'लखनऊ अख़बार' का उल्लेख मिलता है।

जाम-ए-जमशेद / जाम-ए-जहांनुमा

सन 1847 में मेरठ से उर्दू का पहला समाचारपत्र *'जाम-ए-जमशेद'* निकला। सन 1848 में प्रकाशित सरकारी रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि इस पत्र में केवल समाचार प्रकाशित किए जाते थे। इसकी प्रसार सँख्या 103 और मासिक शुल्क एक रुपया था। लाहौर से प्रकाशित होने वाले 'कोहेनूर' समाचारपत्र के मालिक और सम्पादक मुंशी हरसुख राय पूर्व में 'जाम-ए-जमशेद' मेरठ के सम्पादक थे।[2] आगरा से 'जाम-ए-जमशेद' नाम का अख़बार प्रकाशित होने पर मेरठ वाले 'जाम-ए-जमशेद' का नाम बदलकर 'जाम-ए-जहांनुमा' कर दिया गया। अगस्त 1851 में इसका प्रकाशन आरम्भ हुआ। सम्पादक मुंशी चमनलाल तथा ईश्वरी प्रसाद थे। इसमें आगरा से प्रकाशित शासकीय गजट तथा न्यायालयों द्वारा दीवानी प्रकरणों में दिए गए फैसलों के उद्धरण समाचारों के साथ प्रकाशित किए जाते थे। फैज़ी द्वारा लिखित 'महाभारत' का अनुवाद एक पृष्ठ पर अलग से छापा जाता था। मासिक शुल्क एक रुपया था। आगरा गजट से लिए गए उद्धरणों के अतिरिक्त मनोरंजक समाचार भी 'जाम-ए-जहांनुमा' में प्रकाशित होते थे। सन 1858 में प्रकाशित शासकीय रिपोर्ट के अनुसार इस समाचारपत्र का प्रकाशन सन 1857 तक होता रहा।

पाक्षिक *'ज्ञान संचारिणी'* का प्रकाशन नवम्बर 1847 में हुआ। इस बंगला पत्र के सम्पादक गंगानारायण बसु थे। तीन वर्ष प्रकाशित हुआ। इसमें समाचारों के अलावा शिक्षा विषयक सामग्री प्रकाशित की जाती थी।

बंगला साप्ताहिक *'संवाद सुजान बंधु'* का प्रकाशन दिसम्बर 1847 में हुआ। इसके सम्पादक नवीनचन्द्र थे। यह पत्र सन 1849 तक निकला। थोड़े अन्तराल के पश्चात् जनवरी 1850 में रामचरण चौधरी ने इसका पुनर्प्रकाशन किया। किन्तु यह प्रयोग सफल नहीं हुआ। सन 1847 में ही द्वारकानाथ मुखोपाध्याय ने साप्ताहिक *'संवाद दिग्विजय'* निकाला। इसी वर्ष गोपाल

1. सहर सामरी, 18 मई 1857
2. असद-उल-अख़बार 28 जनवरी 1850

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण के सम्पादन में साप्ताहिक *'संवाद मनोरंजन'* प्रकाशित हुआ। दोनों पत्रों का प्रकाशन काल बहुत कम रहा। सन 1847 में बंगला पत्र *'अखिल गुरुम'* कोलकाता से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक ब्रजनाथ बोस थे।

1848

एडवर्ड एलडिन ने 20 जनवरी 1848 में मासिक *'इण्डिया रजिस्टर आफ मेडिकल साइंस'* का प्रकाशन कोलकाता से किया। चिकित्सा विषयक इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क दस रुपये था। सन 1849 में पत्रिका बंद हो गई।

मार्च 1848 में अँगरेजी पत्रिका *'पिकनिक मैगजीन'* का प्रकाशन हुआ। यह मासिक पत्रिका थी। इसमें पुस्तक समीक्षा, जीवनी, विज्ञान, कहानियां, कविताएं, कला, शतरंज तथा नई पुस्तकों की सूचनाएँ प्रकाशित की जाती थीं। फरवरी 1849 में पत्रिका त्रैमासिक हो गई। इसका वार्षिक शुल्क दस रुपये था।

अप्रैल 1848 में बंगला साप्ताहिक *'संवाद ज्ञान रत्नाकर'* का प्रकाशन तारणी चरण राय और विशंभर कार ने किया। इसका प्रकाशन एक वर्ष तक हुआ।

सन 1848 के उत्तरार्द्ध में साहित्यिक पत्रिका *'मैआर-उस-शौअरा'* आगरा से प्रकाशित की गई। यह पाक्षिक पत्रिका थी जिसके सम्पादक मौलवी अबुल हसन थे। यह पत्रिका क़मरुद्दीन के प्रेस से जिसमें 'असद-उल अख़बार' छपता था, प्रकाशित की जाती थी। चार पृष्ठों की पत्रिका का मासिक शुल्क चार आना था। पत्रिका 1860 तक प्रकाशित हुई।

जून 1848 में कोलकाता से *'संवाद रत्न वर्षण'* निकला। इस बंगला पाक्षिक के सम्पादक माधवचन्द्र घोष थे। अगस्त 1848 में मिर्ज़ापुर के अपने छापाखाने से ईसाई मिशनरियों ने पत्रिका *'बनारस रेकार्डर'* का प्रकाशन किया था। यह पत्रिका काफी समय तक प्रकाशित होती रही। इसे 'बनारस मैगजीन' भी कहा जाता था। यह पहले मासिक पत्रिका थी। कोलकाता से प्रकाशन होने पर द्वैमासिक किया गया था। इसकी प्रथम आठ जिल्दें सेरामपुर कालिज लायब्रेरी में सुरक्षित हैं। इसके प्रथम अंक से पता चलता है कि कलकत्ते की व्यापारिक संस्था थैकर्स एंड को इसे प्रकाशित करती थी। पत्रिका का अग्रिम वार्षिक शुल्क 16 रु. था। एक प्रति का उधारी मूल्य डेढ़ रुपया था। फरवरी सन 1853 में इसका प्रेस, प्रकाशन एवं स्थान परिवर्तित हो गए। सन 1852 से प्रकाशन अर्द्धवार्षिक कर दिया गया था। अर्द्धवार्षिक के दो अंक निकलने के पश्चात इसे बंद कर दिया गया था।

बनारस में केदारनाथ घोष और कालीप्रसाद ने सन 1848 में मतबअ बाग़ोबहार प्रेस खोला। इसी प्रेस से अगस्त 1848 में *'मिरात-उल उलूम'* का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के सम्पादक हरवंशलाल कृषि के आधुनिकीकरण एवं इतिहास पर लेख प्रकाशित करने में विशेष रुचि रखते थे। मासिक पत्रिका का वार्षिक शुल्क छह रुपये था। इसके केवल तीन अंक निकले। यह पत्रिका आर्थिक संकट के कारण बंद हो गई।

ठाणे से रघुनाथ शंकर शास्त्री ने सन 1848 में *'अरुणोदय'* नामक पत्र शुरू किया था। उसकी एक प्रति सरकार खरीदती थी। इसके बारे में इतनी ही सूचना मिलती है।

17 सितम्बर 1848 को कोलकाता से बंगला साप्ताहिक *'संवाद अरुणोदय'* प्रकाशित हुआ। इसकी आयु मात्र एक वर्ष रही। पंचानन बंद्योपाध्याय इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। महेशचन्द्र घोष ने अक्टूबर 1848 में बंगला साप्ताहिक *'संवाद कौस्तुभ'* निकाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

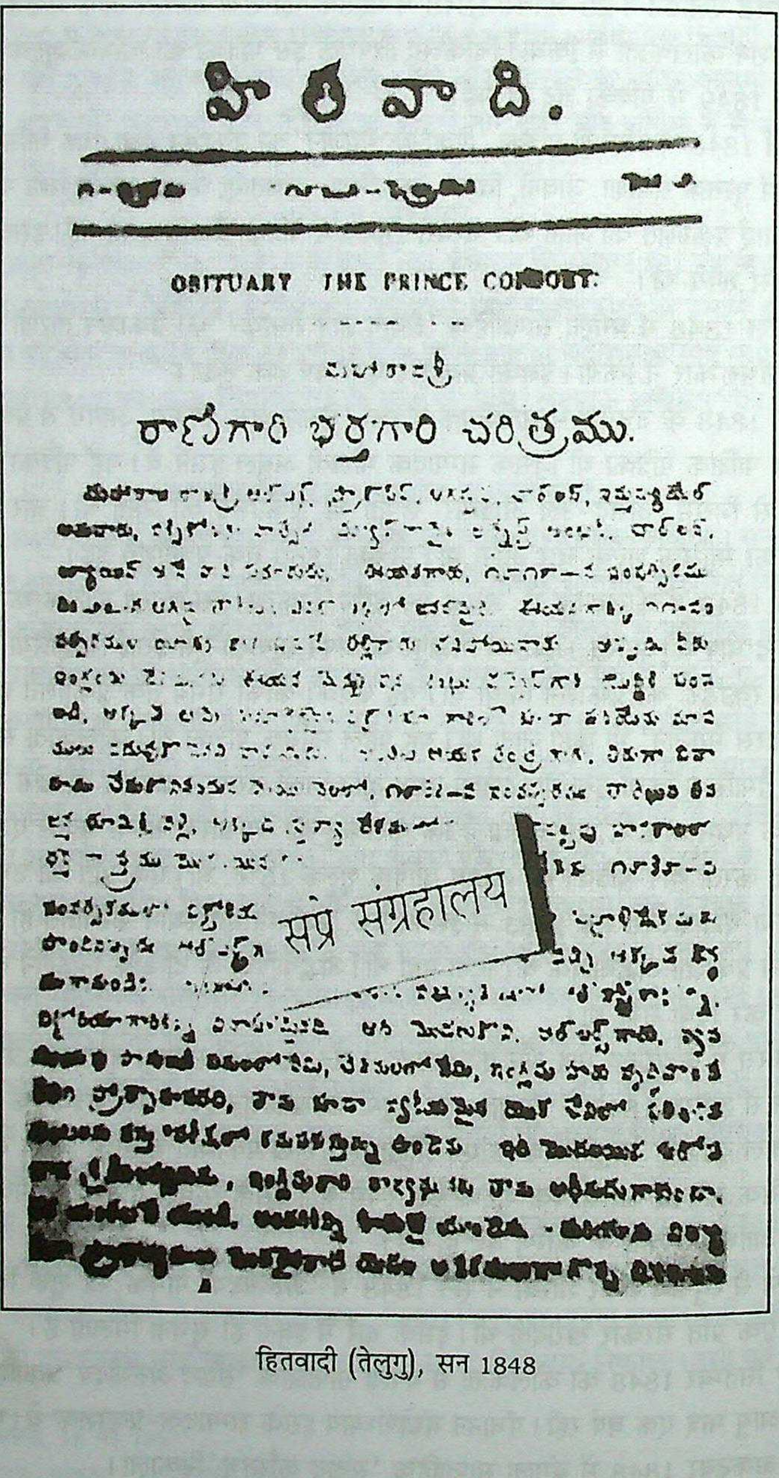

హితవాది.

OBITUARY THE PRINCE CONSORT:

రాణిగారి భర్తగారి చరిత్రము.

सप्रे संग्रहालय

हितवादी (तेलुगु), सन 1848

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1848 में दिल्ली कॉलिज से पाक्षिक पत्रिका *'तोहफ़ा-तुल हदायक़'* का प्रकाशन किया गया था। इसका मासिक शुल्क एक रुपया था। इस पत्रिका का विवरण 'क़ुरान-उस सैदीन'[1] में मिलता है- ''एक समाचारपत्र जिसका नाम 'तोहफ़ा-तुल हदायक़' है प्रकाशित किया गया है। इसकी शैली नई तथा उम्दा है। यह प्रेस मतबअ उलूम में मुद्रित होता है। इसके प्रथम पृष्ठ पर कविताएं, चिकित्सा सम्बन्धी जानकारी तथा शल्यक्रिया का वर्णन, द्वितीय पृष्ठ पर मानव जाति का इतिहास, तृतीय पृष्ठ पर विधि सम्बन्धी जानकारी तथा आदेश एवं चतुर्थ पृष्ठ पर सामान्य समाचार प्रकाशित किए जाते हैं। मासिक शुल्क एक रुपया है। इसके सम्पादक मुहम्मद ज़ाफ़र तथा अली नक़ी हैं।''

वर्ष 1848 में *'हितवादी'* निकला। इसके सम्पादक जे. एडमंड शार्के थे। अमेरिकन मिशन प्रेस चेन्नै से प्रकाशित यह तेलुगु पत्र मासिक था। बाद में मासिक हो गया। 14 वर्ष प्रकाशित होकर सन 1862 में यह पत्र बन्द हो गया। इसी वर्ष (सन 1848) मलयालम पत्र *'ज्ञाननिक्षेपम्'* निकला।

बाबू केदारनाथ घोष और कालीप्रसाद बनर्जी ने बनारस से मासिक पत्रिका 'मिरात-उल उलूम' के अतिरिक्त सन 1848 में दो अन्य साप्ताहिक *'बाग़ोबहार'* एवं *'चंद्रोदय'* भी प्रकाशित किए थे। 'बाग़ोबहार' उर्दू साप्ताहिक था, जबकि चंद्रोदय बंगला भाषा का साप्ताहिक था। 'चंद्रोदय' का अंत भी 'मिरातुल उलूम' के समान बहुत जल्दी हो गया। 'बाग़ो बहार' का प्रकाशन सन 1853 तक होता रहा। उसी वर्ष यह साप्ताहिक और प्रेस दोनों बंद हो गए। 'बाग़ो बहार' में केवल समाचार छापे जाते थे। मासिक शुल्क चौदह आने था। सन 1852 में प्रकाशित सरकारी रिपोर्ट में इसके सम्बन्ध में लिखा है:- ''बाग़ो बहार प्रेस तथा बाग़ोबहार साप्ताहिक दोनों के मालिक और सम्पादक काली प्रसाद बनर्जी हैं। इसमें समाचारों के अतिरिक्त और कुछ प्रकाशित नहीं होता। इसकी प्रसार सँख्या भी कम है। यद्यपि कभी कभी उसमें लाभदायक लेख भी छपते हैं, किन्तु छपाई इतनी खराब होती है कि वे पढ़े नहीं जा सकते। इसके ग्राहकों की सँख्या में कमी का कारण सम्भवत: इसकी ख़राब छपाई है।''

सन 1848 के उत्तरार्द्ध में आगरा से *'कुतुब-उल-अखबार'* प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक मुंशी मोहम्मद अमीर खां थे। यह मतबअ क़ादरी में छपता था। 'असद-उल-अख़बार' ने इस पत्र के बारे में लिखा है:- ''क़ुतुब-उल-अख़बार अवाख़िर (उत्तरार्द्ध) दिसंबर सन 1848 में जारी हुआ। इसके मोहतमिम (सम्पादक एवं संचालक) मुंशी मोहम्मद अमीर खां हैं। वह बहुत शाइस्तगी (शिष्टता) और तहज़ीब (सभ्यता) से छापा जाता है।'' यह पत्र 30 गुणित 20 से.मी. आकार में आठ पृष्ठों का प्रकाशित होता था। नज़ीर अहमद खां सम्पादक और प्रेस के मालिक हुए तथा इसका नाम भी बदल कर ''क़ुतुब-उल अख़बार व तज़ाकिरा अशआर व अहकामे सरकार व तवारीख़-उल-अख़बार'' रखा गया।

'आज़म-उल-अख़बार' चेन्नै से उर्दू में प्रत्येक गुरुवार को प्रकाशित होने वाला प्रथम सासाहिक पत्र था। इसका प्रकाशन सन 1848 में हुआ था। इसका नाम कर्नाटक के नवाब ग़ौस मोहम्मद खां जिनका उपनाम आज़म था, के नाम पर रखा गया था। इसके मुखपृष्ठ पर नवाब की मुहर और दो शेर लिखे जाते थे। यह 20 गुणित 30 से.मी. इंच आकार में आठ पृष्ठों में प्रकाशित किया जाता था।

1. क़ुरान-उस-सैदीन, जून 1848

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

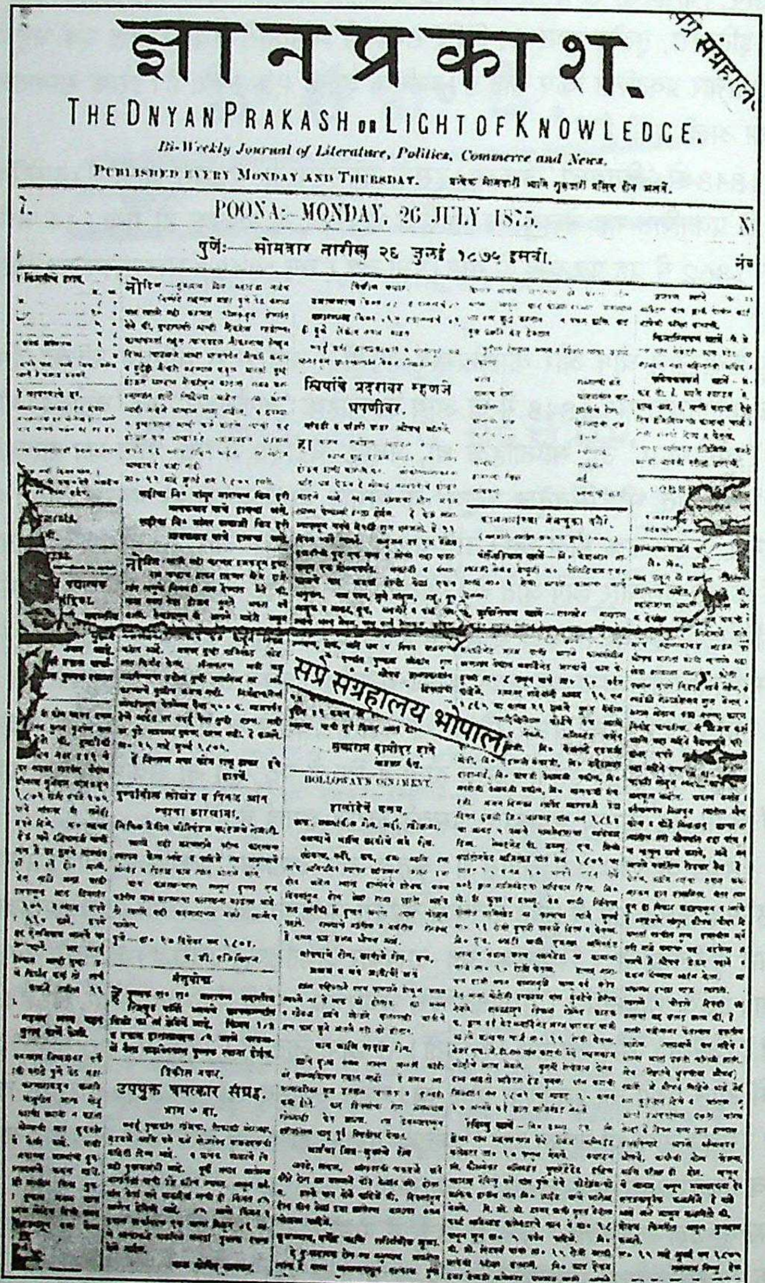

ज्ञानप्रकाश (मराठी) सन 1849

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1848 में शम्भुचरण मित्रा ने बंगला साप्ताहिक *'संवाद दिनमणि'* निकाला। कालिकांत भट्टाचार्य ने सिवपुर (हावड़ा) से बंगला साप्ताहिक *'संवाद मुक्तावली'* का प्रकाशन सन 1848 में किया। यह पत्र एक वर्ष तक प्रकाशित हुआ। अंदूत के राजा राजनारायण का संरक्षण इस पत्रिका को प्राप्त था।

'संवाद भृंगदूत' सन 1848 में नीलकँवल दास ने निकाला। यह बंगला साप्ताहिक एक साल तक निकला। बंगला मासिक *'ज्ञान चन्द्रोदय'* सन 1848 में राधानाथ बसु के सम्पादन में आरम्भ हुआ। इसके दो अंक निकल पाए।

1849

कैप्टन फ्रांसिस पामर ने दैनिक *'इण्डियन टाइम्स'* का प्रकाशन जनवरी 1849 में प्रारम्भ किया। वे ही इसके सम्पादक थे। लगभग सवा साल बाद जे.एच.लोव ने 'इंडियन टाइम्स' खरीद लिया और एक मई 1850 से 'मार्निंग क्रानिकल' में समाहित कर दिया। जे.एच.लोव ने मार्च 1850 में 'केलकटा स्टार' खरीदकर 'मार्निंग क्रानिकल' के नाम से 25 मार्च 1850 से प्रारम्भ किया था। 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया'[1] में इसके बारे में लिखा गया- ''हमें डर है कि भारत में सस्ती पत्रकारिता लाभदायी नहीं होती है क्योंकि 'इंडियन टाइम्स' की अच्छी प्रसार सँख्या और अच्छे संचालन के बाद भी उसे विलीन होना पड़ा।

सन 1849 में हावड़ा की शुभकारी सभा ने मासिक पत्र *'शुभकारी'* का प्रकाशन किया। यह तीन वर्ष तक निकला। रामसहाय भट्टाचार्य पत्र के सम्पादक थे। सन 1850 में इसका नाम *'सर्वशुभकारी'* कर दिया गया। सम्पादक मोतीलाल चट्टोपाध्याय हो गये। सन 1851 में यह बंद हो गया। सन 1855 में इसका पुनर्प्रकाशन हुआ।

कटक से रेवरेण्ड सी. लेसी के सम्पादन में उड़िया भाषा में *'ज्ञान अरुण'* निकला। इसका प्रकाशन मिशनरियों द्वारा किया जाता था। कुछ महीनों में बंद हो गया।

ज्ञानप्रकाश

साप्ताहिक *'ज्ञानप्रकाश'* का प्रकाशन कृष्णाजी त्र्यम्बक रानडे ने 12 फरवरी 1849 को किया। 'ज्ञानप्रकाश' का आकार 30 गुणित 20 से.मी. था। पूना के पेठ में अपने ही प्रेस में छपता था। 'ज्ञानोदय'[2] ने लिखा था- ''पूना से ज्ञानप्रकाश नाम का समाचारपत्र मराठी भाषा में निकला है वह प्रति सोमवार को छपेगा। उसका शुल्क वार्षिक 10 रु. और छमाही 6 रुपया होगा।'' 1853 से 'ज्ञानप्रकाश' द्वि-साप्ताहिक हो गया। सन 1862 तक 'ज्ञानप्रकाश' शिला मुद्रण से छापा जाता था 1863 से टाइप मशीन पर निकलने लगा। सप्रे संग्रहालय में उपलब्ध सन 1875 के अंकों को देखने से पता चलता है कि यह मराठी और अँगरेजी भाषा में द्वि-साप्ताहिक के रूप में निकलता था। 22 जुलाई 1875 के अंक में प्रथम पृष्ठ पर 'ज्ञानप्रकाश' का मूल्य और विज्ञापन की दरें दी गई थीं। तार से खबरें प्राप्त की जाती थीं। खबरें प्राप्त करने का साधन अँगरेजी समाचारपत्र भी थे।

29 जुलाई 1875 के 'ज्ञानप्रकाश' में समाचार छपा था- ''अपनी महारानी के ज्येष्ठ पुत्र और राजगद्दी के वारिस प्रिंस ऑफ वेल्स भारत में बम्बई में आएंगे। उनके स्वागत के लिए 50,000 रुपये खर्च आएगा, उसे सरकार मान्यता दे ऐसा प्रस्ताव बम्बई की म्युनिसिपल कमेटी

---

1. फ्रेण्ड आफ इण्डिया, 9 मई 1850
2. ज्ञानोदय, 2 अप्रैल 1849

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने किया है।'' उस समय भारत के वायसराय लार्ड नार्थ ब्रूक थे। 2 अगस्त 1875 के 'ज्ञानप्रकाश' में सम्पादकीय छपा, जिसका शीर्षक था ''अपनी सरकार का गोरी चमड़ी का अहंकार''। इसमें इंडियन अधिकारी (काले रंग) और अँगरेज अधिकारी (गोरे रंग) में भेदभाव का खुलासा है।

'ज्ञानप्रकाश' के स्वामी कृष्णाजी त्र्यम्बक रानडे थे। बाद में उनके भतीजे वामनराव रानडे हुए। हरि नारायण गोखले और वासुदेवराव केलकर भी भागीदार थे। सन 1895 में पुणे में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, तब एक माह तक 'राष्ट्रसभा समाचार' के नाम से दैनिक पत्र के स्वरूप में निकला। सन 1902 में 'ज्ञानप्रकाश' को मराठी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार हरिनारायण आप्टे ने ले लिया। सन 1904 में जब रूस और जापान में युद्ध शुरू हुआ, तब 14 अगस्त 1904 से 'ज्ञानप्रकाश' का दैनिक संस्करण निकलने लगा। वासुदेव गोविन्द आप्टे इसके सम्पादक नियुक्त हुए। 'ज्ञानप्रकाश' के दैनिक और साप्ताहिक संस्करण नियमित रूप से निकलते रहे।

सन 1905 में गोपालकृष्ण गोखले ने 'सर्वेंट्स आफ इंडिया सोसायटी' की स्थापना की। सोसायटी ने आर्यभूषण छापाखाना एवं 'ज्ञानप्रकाश' पत्र को खरीद लिया। सन 1907 में बापूजी मार्तंड आंबेकर 'ज्ञानप्रकाश' से जुड़े। उस समय 'ज्ञानप्रकाश' के सम्पादक नरेश अप्पाजी उर्फ बाबू साहब द्रविड़ थे। समाचारपत्र चलाने के गुण उनमें थे। उदारवादी नीति का अनुसरण करते हुए उन्होंने 'ज्ञानप्रकाश' को लोकप्रिय बनाया।

14 जुलाई 1925 के अंक से पता चलता है कि 'ज्ञानप्रकाश' मुम्बई और पुणे- दो स्थानों से निकलता था। इसमें 'मुम्बई वैभव' पत्र भी शामिल कर लिया गया था। यह सोमवार को छोड़कर प्रतिदिन प्रात: प्रकाशित होता था। तब छह पृष्ठों के अंक के साथ दो पृष्ठ का परिशिष्ट जोड़ा गया।

अन्य समाचारपत्रों के बारे में भी समाचार दिए जाते थे- 'निजाम विजय' के लिए 'ज्ञानप्रकाश' लिखता है- ''यम के दूत 'निजाम विजय' के चारों ओर घूम रहे हैं, ऐसा महसूस हो रहा है। सर्व शक्तिमान सरकार सोचेगी तो एक क्षण में 'निजाम विजय' बंद कर सकती है। परंतु ऐसे समाचारपत्र बंद करने के बजाय सरकार को इसका उपयोग प्रजा के हित में करना चाहिए। इस इलाके में एक ही मराठी समाचारपत्र है और दूसरा पत्र निकालने की अनुमति भी मिलने की सम्भावना नहीं है।''

'ज्ञानप्रकाश' में विविध विषयों पर विस्तार से जानकारी दी जाती थी। सन 1926 में कृष्णजी गोविन्द लिमये सम्पादक बने। पत्र की नीति में परिवर्तन करते हुए उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक विचारों के साथ साथ नाटक, सिनेमा, संगीत, ललित साहित्य पर लेख प्रकाशित किए। साहित्य समीक्षा और ऐतिहासिक प्रश्नों पर चर्चा प्रकाशित होने लगी।

'कर्मवीर'[1] में समाचार छपा था- ''25 मई 1926 को आर्य भूषण प्रेस में आग लग जाने से सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसायटी को बहुत हानि पहुँची। जिस बाड़े में ज्ञानप्रकाश और आर्य भूषण प्रेस थे, वह किबे बाड़ा कहलाता था। किबे बाड़ा इन्दौर के किबे साहब की सम्पत्ति थी। सर्वेन्ट आफ इन्डिया सोसायटी ने ज्ञानप्रकाश और आर्यभूषण प्रेस के इस बाड़े को रहन के रूप में पाया था। ज्ञानप्रकाश महाराष्ट्र का पुराना पत्र है। गोखले और चन्द्रावरकर जैसे विद्वानों का इस पत्र से सम्बन्ध था। अत: लगभग 100 वर्षों का इतिहास इस अग्निकुंड में स्वाहा हो गया।

1. कर्मवीर, 5 जून 1926

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा गांधी ने सर्वेन्ट्स आफ इन्डिया सोसायटी के पत्र को अपने यंग इन्डिया प्रेस में छपा देने की बात कही थी।''

हैदराबाद के जस्टिस केशव राव ने 5 हजार रुपये तथा प्रो. कर्वे ने दो हजार रुपये इस हानि की पूर्ति के लिए दिए। डाक्टर परांजपे, प्रो. अभ्यंकर, केसरी कार्यालय, दक्खन सभा, प्रेस ओनर्स एसोशिएशन, आरोग्य मण्डल आदि संस्थाओं ने ज्ञानप्रकाश की सहायता के लिए फन्ड खोले। कर्मचारियों ने अपने बोनस के लगभग 5 हजार रुपये संस्था को दे दिए। 'ज्ञानप्रकाश' का कम्पोज ठेके से करने वाले घरत ने बिना मूल्य 6 मास तक कम्पोज करने का वचन दिया। एक जून 1929 से काका साहेब लिमये के सम्पादन में मुम्बई से 'ज्ञानप्रकाश' का संस्करण छपने लगा। वैविध्यपूर्ण सामग्री के कारण वह लोकप्रिय भी हुआ। इसका सम्पादन बाद में वि.धों.कुलकर्णी, रा.गो.कानडे, द.शं.कुलकर्णी, स.ह.मोदक, य.द.सोकुरकर ने किया। पुणे के समान मुम्बई संस्करण भी आठ पृष्ठों का था। पहले और आठवें पृष्ठ पर विज्ञापन रहते थे। चार पृष्ठों पर अग्रलेख और स्तम्भ होते थे। पाँचवें पृष्ठ पर ताजी खबरें छपती थीं। मुम्बई संस्करण के लिए भारत सेवक समाज ने 'मुम्बई वैभव' छापाखाना खरीदा था। खर्च ज्यादा होने से हानि को देखते हुए वह संस्करण बंद करना पड़ा।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ और 30 जनवरी 1948 को केवल पाँच महीने बाद ही महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई। 'ज्ञानप्रकाश' ने तीन फरवरी के अंक में प्रथम पृष्ठ पर खबर दी। 'ज्ञानप्रकाश' ने अग्रलेख 'महात्मा गांधी का शोचनीय अंत' में लिखा- ''पंडितजी की सूचनानुसार आज का दिन सभी ने उपवास और प्रार्थना में बिताया। गांधीजी ने हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के लिए कुछ दिन पूर्व जो उपवास किया था उसको समाप्त करते समय सात शर्तें रखीं थी जिससे देश की हिंदू जनता में तीव्र असंतोष था, परंतु महात्मा जी जैसे जगतमान्य नेता पर एक हिन्दू युवक ने हमला किया यह ठीक नहीं हुआ। गांधीजी की पार्थिव देह आज यद्यपि नष्ट हो गई परंतु उनकी आत्मा चिरंजीवी रहेगी।'' मराठी 'नवभारत'[1] ने एक समाचार छापा था- ''पूना का सुप्रसिद्ध 'ज्ञानप्रकाश' दैनिक एक जनवरी 1951 से बंद हो गया।'' 'साधना'[2] में शं.द.ज़ावड़ेकर ने लिखा- ''पूना का 'ज्ञानप्रकाश' पत्र बंद करने का निर्णय उसके चालकों ने लिया यह सुनकर अनेक महाराष्ट्रीय पाठकों को दुःख हुआ। एक शतक पहले भारत में व्यक्तिवादी प्रागतिक तत्वज्ञान आया। उसने हमारे सामाजिक, राजकीय और धार्मिक जीवन में क्रान्तिकारक बदलाव किया। प्रागतिक तत्वज्ञान की निष्ठा से ही आगे चलकर भारत सेवक समाज की स्थापना हुई और ज्ञानप्रकाश उस निष्ठा का महाराष्ट्रीय मुख पत्र बना।''

1. नवभारत, मासिक, फरवरी 1951
2. साधना, साप्ताहिक, 6 जनवरी 1951

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

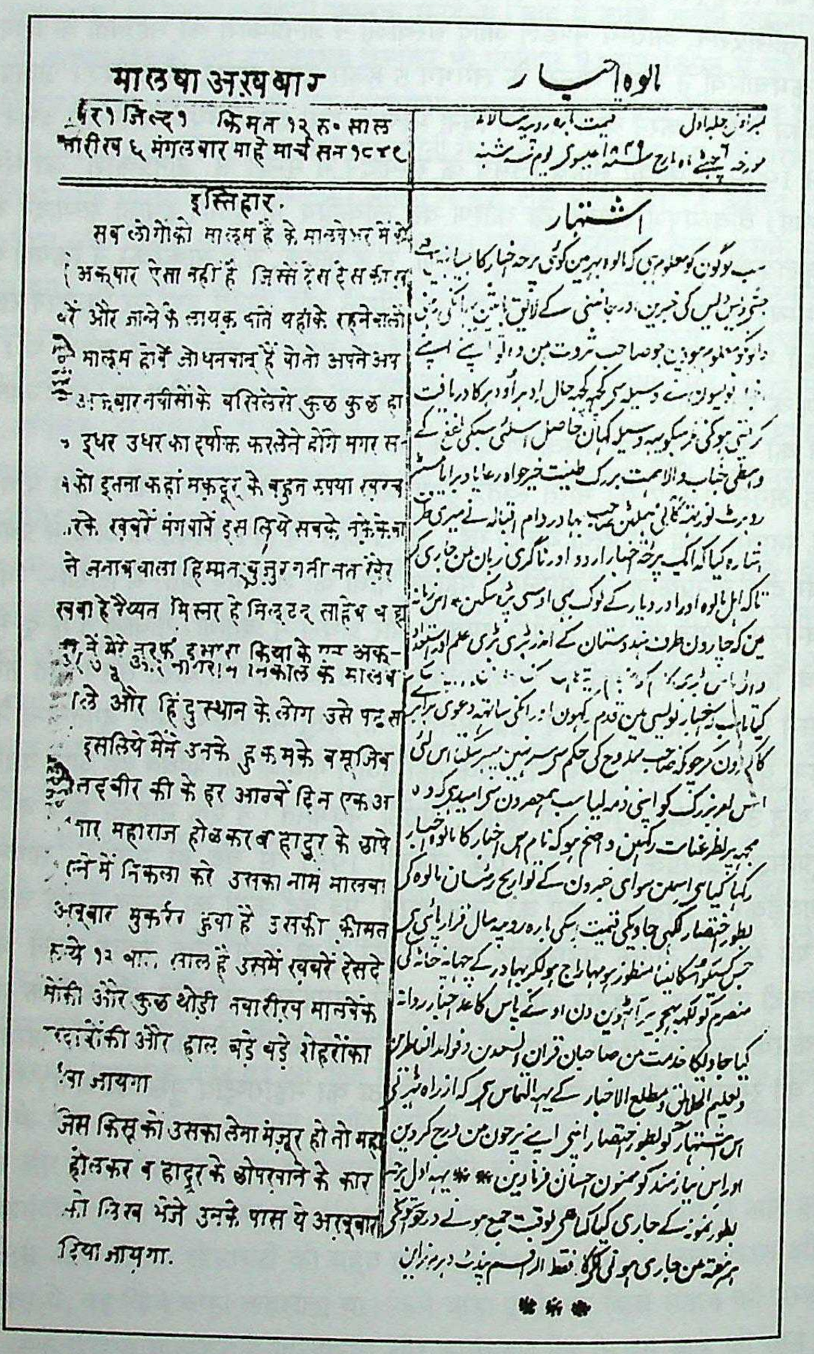

मालवा अखबार

नंबर १ जिल्द १ किमत १२ रु० साल
तारीख ६ मंगलवार माहे मार्च सन १८४९

مالوہ اخبار

इस्तिहार.

सब लोगोंको मालूम है के मालवेभर में कोई
अखबार ऐसा नहीं है जिस्से देस देस की खबरें
और जान्ने के लायक बातें यहांके रहनेवालों को
मालूम होवें जो धनवान हैं वो तो अपने अपने
अखबारनवीसोंके वसिलेसे कुछ कुछ हाल
इधर उधर का दर्याफ्त करलेते होंगे मगर सब
को इतना कहां मकदूर के बहुत रुपया खर्च
करके खबरें मंगावें इस लिये सबके नफेके वा
स्ते जनाब वाला हिम्मत बुजुर्ग नती नत [illegible]
सखा है रैय्यत मिस्तर हेमिल्टन साहेब बहा
दुर ने मेरे तुरफ इशारा किया के एक अख
बार [illegible] निकाल के मालवे
वाले और हिंदुस्थान के लोग उसे पढ़ें
इसलिये मैंने उनके हुकमके बमूजिब
तदबीर की के हर आठवें दिन एक अख
बार महाराज होळकर बहादुर के छापे
खाने में निकला करे उसका नाम मालवा
अखबार मुकर्रर हुवा है उसकी कीमत
रुपये १२ बारा साल हैं उसमें खबरें देसदे
सोंकी और कुछ थोड़ी तवारीख मालवेके
सरदारोंकी और हाल बड़े बड़े शेहरोंका
लिखा जायगा

जिस किसको उसका लेना मंजूर हो तो महा
राज होलकर बहादुर के छापखाने के कार
कूनोंको लिख भेजे उनके पास ये अखबार
भेज दिया जायगा.

اشتہار

मालवा अखबार (हिन्दी-उर्दू), 6 मार्च 1849

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यभारत में पत्रकारिता का उद्भव

1849

मालवा अख़बार

6 मार्च, 1849 को इन्दौर से 'मालवा अख़बार' का प्रकाशन हुआ। 'मालवा अख़बार' के प्रवेशांक में प्रथम पृष्ठ पर इश्तिहार छापा गया-

इश्तिहार

''सब लोगों को मालूम है के मालवे भर में कोई परचा अख़बार का ऐसा नहीं है जिस्से देस देस की ख़बरें और जानने के लायक बातें यहाँ के रहने वालों को मालूम होंवे जो साहबे सरबत हैं वो तो अपने अपने अख़बार नवीसों के वसीले से कुछ कुछ हाल इधर उधर का दरयाफ़त कर लेते होंगे मगर सबको ये वसीला कहाँ हासिल इसलिए सबके नफ़े के वास्ते जनाब वाला हिम्मत बुज़ुर्गतीनिन ख़ैरख़्वाह रिआया वो बराया मिस्टर रूबर्ट नूरतहगाई हेमिल्टन साहब बहादुर इकबालह ने मेरी तरफ इशारा किया के एक परचा अख़बार उर्दू और नागरी ज़बान में जारी कर ताके अहले मालवा और दयार के लोग भी उसे पढ़ सकें। इस जमाने में चारों तरफ हिन्दुस्तान के अन्दर बड़े बड़े इल्म और इस्तेदादवाले इस बड़े काम को अंजाम देते हैं उनके सामने मुझ हेचमिदान के क्या ताब के अख़बार नवीसी में कदम रखूं और उनके साथ दावा बराबरी का करूं मगर चूंके साहब ममदुह के हुक्म से सर नहीं फैर सकता इसलिए इस अम्र बुज़ुर्ग को अपने जिम्मे लिया सब हमअसरों से उम्मीद है के वो मुझ पर नज़रे इनायत रखें वाज़े हो के नाम इस अख़बार का 'मालवा अख़बार' रखा गया है इसमें सिवाय खबरों के तवारीख रईसान् मालवे के बतौर इख़्तेसार लिखे जावेगी कीमत इसकी बारह रुपये साल करार पाई है जिस किसू को उसको लेना मंजूर हो तो महाराज होलकर बहादुर के छापेखाने के कारकून को लिख भेजें हर आठवें दिन उनके पास काग़ज अख़बार रवाना किया जावेगा। ख़िदमत में साहबान 'क़ुरान-उस-सैदीन' व 'फ़वायद-उल नाज़रीन' व 'तालीम-उल-हलायक़' व 'मतला-उल-अख़बार' के यह इलतिमास है के अज़ राह महरबानी इस इश्तिहार को बतौर इख़्तिसार अपने अपने परचों में दर्ज कर दें और इस नियाज़ मंद को ममनून अहसान फरमादें- यह अव्वल परचा बतौर नमूने के जारी किया गया है बवक्त जमा होने दरख्वास्तों के हर हफ्ते में जारी होने लगेगा।''

''फकत अलराक़िम - पँडित धर्मनारायण''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मालवा अखबार' प्रारम्भ में मंगलवार, उसके बाद बुधवार और प्रकाशन के अंतिम वर्षों में प्रत्येक शुक्रवार को प्रकाशित होता था। एक प्रति का मूल्य चार आने था। एक ही पृष्ठ के दो हिस्सों में दायीं ओर हिंदी और बायीं ओर उर्दू में छपने वाले इस पत्र की प्रिंट लाइन भी दोनों भाषाओं में रहा करती थी। आरंभ में मालवा अखबार में समाचार विशेषकर राजधानियों के अथवा ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों के दौरों के विवरण छपा करते थे। उस समय की परिस्थिति को देखते हुए 'मालवा अखबार' का प्रकाशन बहुत अच्छे ढंग से होता था। इसका आकार 30 गुणित 20 से.मी. तथा पृष्ठ सँख्या आठ रहती थी। लिथोप्रेस में छपे इस पत्र की प्रसार सँख्या प्रारम्भ में 108, सन 1850 में 95, सन 1851 में 90, सन 1852 और 53 में 91 एवं 1854 में 105 हो गई थी। 'मालवा अखबार' के सम्पादक धर्मनारायण देहली कॉलेज के विद्यार्थी रह चुके थे तथा दिल्ली से प्रकाशित 'कुरान-उस सैदीन' का सम्पादन कर रहे थे।

प्रवेशांक में 'मालवा अखबार' मालवा का परिचय देते हुए लिखता है- ''हिन्दुस्तान का एक जिला बहुत जरखेज है, और उसमें बहुत-सी नदियां बहती हैं और उसके बड़े बड़े शेहर ये हैं- उज्जैन, इंदौर, धार, रतलाम, बड़नगर, खाचरौद, मंदसौर, रामपुरा, भानपुरा, मनासा, आगर, सिरोंज, भेलसा, शाजापुर, देवास, गंगराड़ ताल, मड़ाबल, महतपुर (महिदपुर), सारंगपुर, भुपाल, दौहद, जावरा।''

''इन सब शेहरों में से उज्जैन बहुत पुराना है पुराणों में भी यह क्षेत्र गिना जाता है। नया शेहर उज्जैन का पुराने से दो मैल दखन कुं है। मसूर तो ये है के पुराना शेहर पृथ्वी के छाया में आ गया था, लेकिन ऐसा मालूम होता है कि वो क्षिप्रा नदी के तले आ के तबा हो गया है. ....नया शेहर उतना ही ईच्या है के जितना पुराना था।''

सन 1853 में 'मालवा अखबार' का सम्पादन प्रेमनारायण करने लगे जो उसी स्कूल में, जिसके प्रधान अध्यापक पं. धर्मनारायण थे, सहायक अध्यापक के पद पर कार्य करते थे। 'मालवा अखबार' में इंदौर सहित मालवा क्षेत्र के शहरों के अलावा भारत के बड़े-बड़े शहरों दिल्ली, लखनऊ, मेरठ, कोलकाता, हैदराबाद, लाहौर, ग्वालियर, भोपाल, नागपुर, मुम्बई, कानपुर आदि की खबरों का खुलासा रोचक ढंग से दिया जाता था। समाचारों की प्रस्तुति का ढंग किस्सागोई की तरह था। राजाओं, महाराजाओं, नवाबों आदि की खबरों को महत्व देकर छापा जाता था। 'मालवा अखबार' में होलकर, सिंधिया तथा पवार खानदान के इतिहास की जानकारी कई किस्तों में सिलसिलेवार छापी गई। प्रकाशन के दूसरे साल में वार्षिक समीक्षा का सिलसिला भी 'मालवा अखबार' ने आरम्भ किया। सात जनवरी 1851 के अंक में 'सन 1850 के साल का खुलासा' शीर्षक समीक्षा पठनीय है।

'सन 1850 के साल का खुलासा'

''शुक्र भगवान् का के सन 1850 ईसवी का साल अच्छी तरह से पूरा हो गया औ इस बरस में सारी हिन्दुस्तान की रईयंत आराम से रही- अब कि शुरू सन 1851 का है हिंदुस्थान के लोग सब लड़ाई के खयालों से छूटकर उम्मैद आराम और फायदे के कामों में हैं और सामान खुशी के भी तैयार भगवान इस बरस को सब पर मुबारक करे। इस मुकाम पर मुनासिब मालूम होता है के खुलासा बड़ी-बड़ी बातों का जो पिछले बरस में हुई हैं लिखा जावे अखबार के पढ़ने वालों को मालूम है के सन 1837 से बराबर हिंदुस्थान में लड़ाई रही। फकत इसी बरस में मैदान लड़ाई का गरम नहीं हुआ कुछ थोड़ा सा फसाद जो पंजाब में रहा लड़ाई में दाखिल नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता सन 1850 के शुरू में लोहे की सड़क की तैयारी इस मुल्क में शुरू हुई और उम्मैद हुई कि हिंदुस्थान में भी यह राह आने जाने की जारी हो जावेगी इसी बरस में सरकार आप तैयारी नहरौं गंगा और जमना और पंजाब में लगी रही और कुछ अजब नहीं जो कई बरस में पैदावारी इस मुल्क की दुगनी हो जावे और उस सारे खर्च का जो लड़ाई में खर्च हुआ है बदला हो जावे।''

17 अक्टूबर 1860 के 'मालवा अखबार' में आवश्यक वस्तुओं की महँगाई के संदर्भ में राज्य के कर्तव्य का प्रेरक दिग्दर्शन होता है- ''ग्वालियर राज्य में गल्ले की भयंकर तंगी हो गई। व्यापारियों ने गल्ला छिपा लिया तथा 14 सेर का बेचने लगे। राजा ने स्वयं बाजार में छापा मारकर अनाज बरामद किया और 16 सेर का बिकवाया प्रजा बहुत खुश हुई।''

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के परवर्ती घटनाक्रम की खबरें 'मालवा अखबार' में पाई जाती हैं। इस समय 'मालवा अखबार' के सम्पादक प्राणकिशन और उनके सहायक मुंशी गुलाम अली थे। एक खबर-

''अवध का समाचार है कि 1857 के उपद्रव के बाद मम्मू खां खान बहादुर और ज्वाला प्रसाद जो बड़ों के नेता थे पकड़े गये नाना साहब और अजीमुल्ला मारे गए होंगे। बूंदी के राजा मारे गए। अवध की बेगम के साथ 25000 लोग नेपाल गये थे उनमें से बहुत सारे लोग मर गये बाकी पकड़ कर सौंप दिए गए।''[1]

अखबार का प्रकाशन क्यों? 'मालवा अखबार' में इस विषय पर सम्पादकीय टिप्पणी छापी गई-

अख़बार लिखना[2]

''एक मित्र ने हमसे पूछा के अख़बार लिखने के क्या मायने हैं और अखबार लिखने वालों को कौन सी बातें जान्ना चाहिये। मालूम हो के अखबार लिखने वाला लोगों का अगवा होता है। और उसको सब चीज जान्नी चाहिए। नहीं तो वो ही मसल होगी के आँख का अंधा और नाम नैनसुख बहुत से हिंदुस्तानी अखबार वालों ने ये समज लिया है के खबरें भर देने से अख़बार हो जाता है। ये झूठ है अगर अखबार लिखने के ये मायने हैं के फलानी फौज ने फलानी जगेसे फलानी जगे को कूच किया। या फलाने कप्तान साहब मर गये। और बकरीने दो मूका बच्चा दिया, तो हम अखबार लिखने के लायक नहीं और हमको चाहिये कि इस्तिफा देदें। और कोई धंदा करलें हमको अैसा अख़बार लिखना नहीं आता और न हम इसे अखबार कहते हैं अगर कहीं लड़ायी होती हो तो वहाँ की खबर लिखनी चाहिये न के फलाने शहर में नाजका भाव ये है। और फलाने साहब पहाड़ों में शिकार को गये हैं हाँ जबकहीं काल पड़े, तो लिखना चाहिए मगर ये नहीं के हर हफ्ते दो सफे इसी से भर दिये। अखबार लिखनेवाला नुमाइंदा हो तो एक बात भी है और यों तो जो है सो है। दूसरी बात ये है के अखबारवालों के सवालों में बड़ा मजा आता है। अेक साहब पूछते हैं के रजीडंट और अजंट में क्या फर्क भला ये भी कोयी सवालों में सवाल है जिसको जरासी भी अँगरेजी आती होगी तो किताब देखकर बता देगा। हमने इसका जबाब लिखा और उनोंने भी अपने अखबार में उसे छापा फिर उनोंने एक अैसा ही सवाल किया और फिर हमने जवाब लिखा वो गवरमेंट गजट पर तकरार करते हैं के परचा गजट से अलग हो गया। और उसमें कई परचे और एक परचे में लिखा था के जो गजट इसके साथ हैं वो सई

1. मालवा अखबार, 5 दिसम्बर 1860
2. वही, 23 जनवरी 1861

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं। मालूम नहीं वो कौनसा गजट है फकत।''

''भला ये क्या अखबार लिखना इसीको कहते हैं हमको तो लिखते हुए शरम आती है। मगर वो साहब मेहरट के दफ्तर में जाके पूछते तो मालूम हो जाता हमसे सवाल कर्ते हैं इसमें वक्त खोना है। और कुछ हासिल नहीं हाँ किसी मुकदमे में कोयी बात पूछें तो बात भी है। इनकमटेक्स पर उनोने पूछा था और हमने उसका जवाब भी लिखा। शायद उनके पसंद न आया हो मगर जो तजबीज हमने बतायी है वो बावन तोले पावरत्ती है। हाँ उसमें बकवर का बहुतसा काम है और उनको बकवर आता ही होगा क्योंकि बगैर बकवरके क्या अखबार लिखा जायगा क्योंकि वो तो उसका तत्व है। बंबई के अँगरेजी अखबार में लिखा था के हिंदुस्तानी अखबारवालों को उपदेस का ख्याल नहीं। वात्घात लिखा करते हैं।''

''ताना पक्का दिया। हम तकसीर मानते हैं। और यही उसका डंड है अँगरेजी अखबार सबके पास नहीं पौंचता और हिंदुस्तानी अखबार सब जगे पौचंता है। अगर अखबार बाले बाहीयात खबरों की जगे दो एक मजमून लिखा करें तो बहुत फायदा होगा ये सच है के हम माफ तो कुछ नहीं करते और दूसरों को समझाते हैं मगर अब हमने ठान लिया है के लोगों को थोड़ा-थोड़ा सीधे रस्ते पर लावें और दूसरे-तीसरे हफ्ते पर दो एक मजमून लिखें मगर ये नहीं के खबर बिलकुल न होगी एक दो खबरें लिखकर कोयी बात छेड़ देंगे और जो समजमें आवेगा वो लिखेंगे अब मुशकिल तो ये है के अखबार के 4 सफे तो उर्दू में उड़ जाते हैं बाकी 4 सफे में क्या हम अपना सिर लिखें। कल रात को एक मित्र ने हिंदुस्तानी किस्सों का जिक्र किया और सबने मिलकर कहा के देव भूत जिन्द परीके सबब से किस्सा उड़ जाता है और लिखनेवाले का नाम हो जाता है और फिर देखो तो उसे अकल नहीं मानती के किस्से में किसी आदमी की मुसीबत का जिक्र होता है तो चाहिये कि उसमें ऐसी हो के जो हररोज हुआ करती है। अंगरेजी किस्सों का भी जिक्र आया। हमने कहा के पहले वो लोग भी भूत प्रेत का हाल लिखते थे मगर अब लोग उनको पसंद नहीं करते और दसतूर उड़ गया। एक मित्र ने कहा के 'मालवा अखबार' में किसी अंगरेजी किस्सों की बात छपे तो अच्छा है हम उनकी बात दिल जान से मानते हैं मगर अखबार में जगे नहीं। अगर दस बीस किस्से हिंदी में छप जाय तो अच्छा अगर हमारे किस्से से कोयी साहब नाराज हो तो उनकी खुशी मगर हमने कोयी बात ऐसी नहीं लिखी हमको अपने मुल्क की बहुत मोहब्बत है और इस सबब से ये हात घिसायी की मगर अखबारवाले हमारी बात को मानेंगे तो बहुत फायदा होगा मेहनत तो है मगर इसका अंजाम बहुत अच्छा होगा।''

'मालवा अखबार' में नये आविष्कार की खबर बताती है कि सम्पादक की सोच कितनी प्रगतिशील थी- ''मिस्टर करेट साहब ने एक ऐसी मशीन बनाई है जो खुद हवा करे तथा खुद ही टट्टियों पर पानी छिड़के अँगरेज सरकार ने उस आदमी को 50 हजार रु. इनाम दिया।''[1]

'मालवा अखबार' ने ऐसे ही एक प्रसंग में हिन्दुस्तानियों को कोसा है,[2] ''जो अपना समय चौपड़ खेलने नाच-गाने में बर्बाद कर रहे हैं तथा हुनर नहीं सीखना चाहते। भारतीयों को यह अकल नहीं है के विलायत से कपड़ा बनकर आता है तथा हमारा रुपया विलायत जा रहा है। हम कपड़ा अपने यहाँ इसलिए नहीं बनाते क्योंकि यह काम सिर्फ जुलाहों का है।''

अगले अंक में 'मालवा अखबार' बताता है- ''फ्रांस में एक शख्स ने नए तरीके का तार

1. मालवा अखबार, 12 जून 1861
2. वही, 2 अक्टूबर, 1861

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाला है जिसका नाम पालीग्राफ रखा है। उसकी सबसे बड़ी खासियत यह है के किसी शख्स द्वारा लिखी गई मजमून या खींची गई तस्वीरें उसी शकल में दूसरे कागज पर किसी भी मुल्क में भेजी जा सकती हैं।''[1]

अँगरेजों का एक गुण रहा है आविष्कारक की सराहना करना। 'मालवा अखबार' की यह खबर देखिए-

'नई कारीगरी'[2]

''इलाबाद में छोटेलाल नामक एक महाजन ने अपनी अकल से एक धुंवे की गाड़ी ऐसी बनाई है के उसके वास्ते लोहे की सड़क की कुछ जरूरत नहीं घोड़े की डाक गाड़ी की तरां कंकर की सड़क पर दौड़ी जाती है। ये हाल लाट साहब ने महारानी लंदन को लिखा। वहाँ से इस कारीगरी की एवज में एक सर्टीफिकेट महाजन मजकूर को आया है के हिंदुस्तान के हाकमों में से जिसकी मुलाकात को वो जाय दरवाजे तक पेशवाई हो और अपने से ऊंचा बिठाये।''

समाचारपत्र की स्वतंत्रता के प्रति 'मालवा अखबार' की प्रतिबद्धता असंदिग्ध थी। 6 फरवरी 1861 के अंक में प्रकाशित संक्षिप्त किन्तु गहरी टिप्पणी से यह स्पष्ट हो जाता है- ''अखबार आलम के देखने से मालूम होता है के किसी डिप्टी कलक्टर ने अखबार आलम के मोहतमीमसाहब के नाम एक परवाना लिखा और मोहतमीम साहब ने उसका जवाब भेजा हम इसको देखकर बहुत खुश हुए उसमें जवाब खूब है अखबार नवीस किसी हाकम का नौकर नहीं वो रईयत में से है मगर उसकी बेइज्जती का इख्तीयार हाकम को नहीं। हमारे पास भी एक ने परवाना भेज दिया था और हमने बसबब़ से रिश्ता होने के उसे फेर दिया अब हमको यकीन है के वो ऐसी बुरी हर्कत न करें।''

मालवा अखबार (मराठी)

बीच में कुछ अवधि के लिए बंद रहने के पश्चात सन 1875 से 1878 तक 'मालवा अखबार' मराठी साप्ताहिक समाचारपत्र के रूप में प्रकाशित हुआ। मराठी संस्करण का आकार 48 गुणित 34 सेण्टीमीटर था। इसमें 7-7 से.मी. के चार कालम थे। प्रत्येक अंक चार पृष्ठ का होता था। मराठी के साथ-साथ कुछ मजमून-अधिकतर आदेश, विज्ञापन आदि अँगरेजी में भी छपते थे।

'मालवा अखबार' के सम्बन्ध में 'अखबार आलम' में खबर है- ''राक़िम 'अखबार आलम' के एक अल्ताफफर्मा इंदौर से अपने इत्तेहाजनामे मरकूमा 29 सितम्बर में रकमतराज़ हैं के पंडित प्राणकिशन साहब हेडमास्टर मदरसा इंदौर और मोहतमिम 'मालवा अखबार' और मुंशी गुलाम अली साहब नायब मोहतमिम साहब ने अपने ओहदे से इस्तीफा दे दिया। राकिम 'अखबार आलम' को इस सबब से रंज हुआ के वाकियानिगारी 'मालवा अखबार' की जैसी उम्दा और लायके तहसीन पंडित प्रानकिशन साहब की तहरीरें होती थीं वैसी अब किसी दूसरे के एहतमाम से होना दुश्वार है।''[3]

'आफताब-ए-पंजाब' में 'मालवा अखबार' के सम्बन्ध में प्रकाशित समाचार से पता चलता

1. मालवा अखबार, 14 मई 1862
2. वही, 22 जनवरी 1862
3. अखबार आलम, 12 अक्टूबर 1865

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है कि 'मालवा अखबार' के सम्पादक कुख्यात वर्नाकुलर प्रेस एक्ट के शिकार हुए थे-

'एडीटर मालवा अखबार को सजा'[1]

''मालवा अखबार' के एडीटर को महाराजा होलकर ने तीन माह की कैद सख्त की सजा दी है। इसकी वजह यह है के बाद जारी होने एक्ट मतबूआत् (प्रेस एक्ट) इस अखबार की तहरीर किसी कदर ख़िलाफ एक्ट मज़कूर पाई गई।''

वायसराय की कोप दृष्टि

14 मार्च 1878 को तत्कालीन वायसराय लार्ड लिटन ने 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' पारित करने के पक्ष में जो वक्तव्य दिया था, उसमें 'मालवा अखबार' का विशेष रूप से जिक्र हुआ था। उन्होंने कहा- ''लेकिन सबसे अधिक साहसी राजद्रोह उत्तर भारत के भारतीय भाषाई पत्रों में लिखा जा रहा है। एक मराठा राजधानी (इंदौर) से प्रकाशित 'मालवा अखबार' का एक पैराग्राफ बहुत चुभता हुआ है। इसमें एक अफवाह का जिक्र है जिसने बम्बई के व्यापार और पूँजी बाजार को प्रभावित किया है कि नाना साहब रूसी सेना के साथ भारत पर आक्रमण करना चाहते हैं और वे फिर ज़ार की सहायता से पेशवाओं के पुराने राज्य-सतारा, बड़ौदा, नागपुर, झांसी आदि को एक सामंतवादी राज्य के रूप में बनाना चाहते हैं जो पेशवाओं के सार्वभौम अधिकार को स्वीकार करेगा। इसी पत्र में 15 दिन बाद अँगरेजी राज के बुरे समय और अंधकारमयी दिनों की बात करता है और असरदार ढंग से कहता है कि पिछली रात हमने एक सपना देखा जिसमें एक हिरण ने एक शेर और एक बाघ को अपने कब्जे में कर रखा था। थोड़े दिन बाद यह घोषणा करता है कि इस देश में सरकार का मुख्य उद्देश्य यह है कि हर तरह की चालबाजियों से जनता की जेब से उनका रुपया निकाल लिया जाय और उसके बाद यह पत्र घोषणा करता है कि हाल ही में देश के निवासियों में यह भावना घर कर गई है कि मुसलमान भी इस देश के वासी हैं।'' आगे एक लेख में अखबार ने यह विचार व्यक्त किया- ''अब कुछ अँगरेज राजनीतिज्ञ यह घोषणा करने लगे हैं कि हमारे भारतीय साम्राज्य की रक्षा करना हमारे लिए अब अधिक महत्व का नहीं है और यह घोषित करता है कि इससे लोमड़ी और अंगूर खट्टे की मसल सही साबित होती है और ये सब होलकर की राजधानी से प्रकाशित होता है और इसमें संदेह नहीं कि हरेक दरबार में और मध्य भारत के हरेक बाजार में पढ़ा जाता है।'' मध्यप्रदेश का यह प्रथम समाचारपत्र 'मालवा अखबार' लगभग 29 वर्षों तक प्रकाशित होता रहा।

सन 1849 के पूर्वार्द्ध में हकीम जवाहरलाल ने आगरा से *'नुज़हतुल नवाह'* और *'अख़बार-उल नवाह'* का प्रकाशन किया था। वे इसके स्वामी और सम्पादक थे। इसके उद्धरण 'कोहेनूर', 'असद-उल-अख़बार' जैसे समाचारपत्र छापा करते थे। एक उदाहरण- ''अख़बार उल नवाह' में बा हवाला ईंग्लिशमैन में मरक़ूम है के नवाब रज़ाहुसैन खां वालिए मुर्शिदाबाद की बीवी बआरज़ा चेचक फ़ौत हुई। बीवी के ग़म में नवाब साहब बहादुर भी ज़हर खा मरे और यह भी लिखा है के ढाई बरस हुए के इस नवाब की वालिदा भी इस तरह मरीं थीं।''

चेन्नै से सन 1849 में उर्दू साप्ताहिक *'तय्यसुर-उल-अख़बार'* प्रकाशित किया गया था। इसके सम्पादक हकीम अब्दुल बासित 'इश्क़' थे। यह हर शनिवार को प्रकाशित किया जाता था। मासिक शुल्क पाँच आने और एक प्रति का मूल्य पाँच पैसे था। इस पत्र में देश-विदेश के समाचारों के अतिरिक्त देसी रियासतों और उनके शासकों के समाचार छापे जाते थे। पत्र

1. आफताब-ए-पंजाब, 19 मई 1878

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पहला कालम सेंट जार्ज क़िले के समाचारों के लिए निर्धारित था। हिन्दुस्तान के अन्य समाचारपत्रों के समान इस पत्र को भी अपने ग्राहकों से समय पर शुल्क न मिलने की शिकायत रहती थी। ग्राहकों पर अपील का कोई असर नहीं हुआ। सन 1853 में समाचारपत्र का प्रकाशन बंद हो गया।

मार्च 1849 में बंगला साप्ताहिक *'संवाद रस सागर'* प्रकाशित हुआ। श्रेष्ठ मोहन बंद्योपाध्याय सम्पादक थे। दिसम्बर 1849 में यह अर्द्ध साप्ताहिक हो गया। 12 अप्रैल 1852 से सम्पादन दायित्व रंगलाल बंद्योपाध्याय ने ग्रहण किया। तब इसका नाम बदल कर 'संवाद सागर' कर दिया गया।

सन 1849 में चेन्नै से प्रकाशित *'आफ़ताब-ए-आलमताब'* का उल्लेख दिल्ली से प्रकाशित 'फ़वायद-उल-नाज़रीन' में मिलता है, जिसमें इस पत्र से समाचार लेकर प्रकाशित किए गए हैं। आगरा के 'असद-उल-अख़बार' के अंक 80 में 'आफ़ताब-ए-आलमताब' से अहमदाबाद का निम्नलिखित समाचार उद्धृत किया गया है। ''अख़बार 'आफ़ताब-ए-आलमताब' ने यूं लिखा है के एक महाजन ने वास्ते तालीम हिन्दू लड़कों के एक मदरसा क़ायम करना चाहा जब इस बात की इत्तला कलेक्टर को हुई तो साहबे मज़कूर ने बहुत तहसीन व आफ़रीन की और सरे दरबार रायबहादुर के खिताब से सरफ़राज़ किया।''

'अख़्तर शहंशाही' में *'गवर्नमेण्ट गजट'* का उल्लेख किया गया है- ''यह गज़ट 13 मार्च 1856 को औसतयोम पंजशंबा सालाना नो रुपये मतबा फौजदारी अहाता कचहरी फौजदारी शहर आगरा से मौलवी हसन बख्श मीर मुंशी मुहकमा सेशन जज मैनपुरी ने बाएहतमाम पंडित केसरीदास जारी किया और प्रिंटर इसके मुंशी शिवनारायण मालिक अख़बार 'मुफ़ीद-उल-खलायक़' आगरा थे। बाद इसके 19 नवम्बर सन 1859 को इलाहाबाद उठ आया।'' दूसरी ओर 'असद-उल-अख़बार' के 187वें अंक में प्रकाशित समाचार से इस गज़ट के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है- ''इश्तिहार मुंजानिब जी.बी.लैडली साहब मुत्तरज्जिम गवर्मेन्ट गज़ट आगरा। गवर्मेन्ट गज़ट की क़ीमत सन 1851 से 14 रुपये सालाना है। लेकिन यह तजवीज़ क़रार पाई है के सिवाए रुख़्सत और तक़रुर्र ओहदे दारान मुतअहिद व ग़ैर मुलअहिद इश्तिहारात ज़ायद व नक़ल गज़ट की बजिन्स छापाए संग छपवा कर फ़रोख़्त की जाये। और क़ीमत आठ आने फ़ी माह मुकर्रर की है महसूल डाक ज़िम्मे खरीदार होगा।'' इस गज़ट के सन 1851 में प्रकाशन की पुष्टि होती है।

मई 1849 में मेरठ से उर्दू समाचारपत्र *'मफ्ताह-उल-अखबार'* प्रकाशित किया गया जिसके सम्पादक हकीम महबूब अली खां थे। सन 1849 की रिपोर्ट में इसका उल्लेख है- ''मई सन 1849 से हकीम महबूब अली खां क़ारी प्रेस से एक समाचारपत्र निकाल रहे हैं इसकी प्रसार सँख्या 68 तथा शुल्क एक रुपया मासिक है। समाचारपत्र की क़िताबत सुन्दर है तथा शैली भी अच्छी है। इसमें समाचार के अतिरिक्त अन्य किसी सामग्री का प्रकाशन कभी कभार ही होता है।'' इसका प्रकाशन सन 1852 में बंद कर दिया गया।

बंगला मासिक *'सत्य धर्म प्रकाशिका'* जून 1849 में कोलकाता से निकला। गोविन्द चंद्र डे इसके सम्पादक थे। गोविन्द चन्द्र बंद्योपाध्याय ने जुलाई 1849 से साप्ताहिक *'संवाद रस उद्गार'* का प्रकाशन किया। पाक्षिक *'कौस्तुभ किरण'* का सम्पादन-प्रकाशन अगस्त 1849 में राजनारायण मित्रा ने कोलकाता से किया। यह बंगला पत्र अल्पजीवी रहा। एक सितम्बर 1849

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

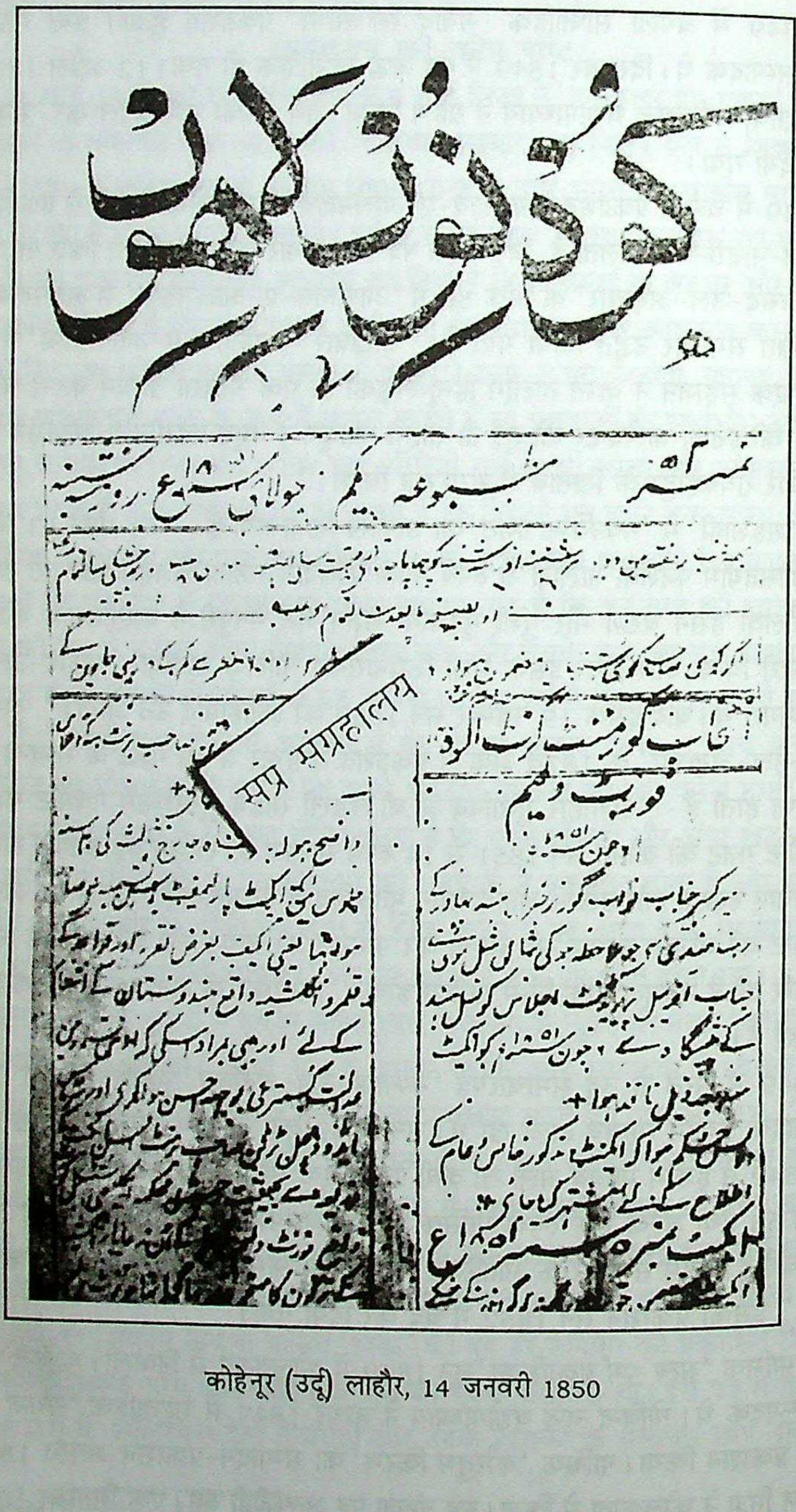

کوہ نور

पत्र संग्रहालय

कोहेनूर (उर्दू) लाहौर, 14 जनवरी 1850

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बेलगाम से कन्नड पत्र *'सुबुद्धि प्रकाश'* निकला।

सितम्बर 1849 में अँगरेजी मासिक पत्रिका *'लिटरेरी क्रानिकल'* प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक कैलाशचंद्र बोस और प्रकाशक रामरतन बोस थे। मई 1850 में कुर्रम घोषाल ने इसे खरीद लिया। सम्पादक ने लिखा था- ''देश की शिकायतों को प्रगट करना एवं ऐसे मुद्दों को उजागर करना जो वर्तमान में चल रहे हैं, हमारा प्रथम कर्त्तव्य होगा।'' दिसम्बर 1850 में पत्रिका का अंतिम अंक निकला।

सितम्बर 1849 में जयकाली बसु ने व्यापार पर केन्द्रित बंगला दैनिक *'महाजन दर्पण'* का प्रकाशन आरम्भ किया। कोलकाता से निकलने वाला यह पत्र कुछ महीनों का मेहमान रहा।

अहमदाबाद से गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी का पत्र *'वर्तमान'* सन 1849 में निकला। बनारस से उमाकान्त भट्टाचार्य ने नवम्बर 1849 में साप्ताहिक *'भैरव दण्ड'* निकाला। साप्ताहिक पत्र *'बंगाल रेकार्डर'* का प्रकाशन दिसम्बर 1849 में कोलकाता से हुआ था। इसमें समाचारों के अतिरिक्त व्यापारिक, मिलिटरी, राजनीति और साहित्य के बारे में सामग्री रहती थी। तीन अंकों के बाद इसके बारे में लिटरेरी क्रानिकल ने लिखा, ''देशी लोगों में अँगरेजी साहित्य और विज्ञान की प्रगति का एक और उदाहरण।''

'बंगाल रेकार्डर' के संस्थापक-सम्पादक श्रीनाथ घोष थे। गिरीशचन्द्र घोष उनके सहयोगी थे। इसने सामाजिक उत्थान के अनेक मुद्दों को उठाया जैसे महिला शिक्षा। परन्तु यह पत्र अधिक समय तक नहीं चल सका। इसका शुल्क बहुत कम था और प्रसार सँख्या भी सीमित रही। दिसम्बर 1850 के बाद यह बंद हो गया।

बंगला साप्ताहिक *'वर्धमान चन्द्रोदय'* दिसम्बर 1849 में निकला। इसके सम्पादक रामतारण भट्टाचार्य थे। सन 1851 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया। दिसम्बर 1849 में जदुनाथ सेन ने पाक्षिक *'संवाद रस रत्नाकर'* का प्रकाशन किया। यह प्रकाशन की नियमितता को कायम नहीं रख पाया।

सन 1849 में तमिल मासिक *'तिरुनेलवेली डायोसेशन मैगजीन'* प्रकाशित हुई। इसका प्रकाशन तिरुनेलवेली से होता था। भरतपुर के राजा ने द्विभाषी *'मज़हरुल सुरूर'* उर्दू और हिन्दी भाषा में सन 1849 में प्रकाशित कराया।

साप्ताहिक 'मज़हरुल सुरूर' के प्रकाशन के साथ राजस्थान में पत्रकारिता की परम्परा शुरू हुई। एक कालम में उर्दू तथा दूसरे में हिन्दी में समाचार छपते थे। सन 1849 में शिमला से *'माउण्टेन मानीटर'* निकला।

1850

कोहेनूर

14 जनवरी 1850 से *'कोहेनूर'* का प्रकाशन लाहौर से आरम्भ हुआ। मुंशी हरसुखराय सम्पादक-प्रकाशक थे। 'कोहेनूर' अपने समय का लोकप्रिय पत्र रहा है। इसकी प्रसार सँख्या अच्छी थी। उर्दू के नामी पत्रों में गिना जाता था। 'कोहेनूर' पचपन साल तक प्रकाशित हुआ।

'कोहेनूर' का आकार 30 गुणित 20 से.मी. था। प्रारम्भ में यह छह पृष्ठों का था। बाद में पृष्ठ सँख्या सोलह हो गई थी। इसमें स्थानीय समाचारों के अतिरिक्त विदेशों के समाचार, लेख, गज़लें, शासकीय आदेश और विज्ञप्तियाँ छपा करती थीं। भूकम्प, बाजार भाव, आपराधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटनाएं, स्कूलों की स्थापना, न्यायालय में चल रहे सनसनीखेज मुकदमे, सरकारी बजट और प्रत्येक प्रांत की आमदनी और खर्च आदि के समाचार छापे गए हैं। विदेशी समाचारों में विशेष रूप से मिस्र, ईरान और अफ़गानिस्तान के समाचार शामिल थे। अफ़गानिस्तान में 'कोहेनूर' का विशेष संवाददाता वहाँ से फ़ारसी भाषा में समाचार भेजा करता था जिसे फारसी में ही छाप दिया जाता था। व्यापार एवं पुस्तकों के सम्बन्ध में विज्ञापन भी छापे जाते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में हिन्दुस्तान में टेलीग्राफ पद्धति प्रारम्भ हो गई। पहले कोलकाता-मुम्बई तथा आगरा के बीच तार लाइन शुरू हुई, फिर सन 1857 में आगरा और पेशावर के बीच तार लाइन डाली गई। इस सम्बन्ध में 'कोहेनूर' में समाचार दिया गया- ''बिजली की डाक का तार लाहौर तक बखूबी लग गया है और पुराने तोपख़ाने के एक मकान में इसके कारखाने का दफ्तर क़ायम हुए है। ग़ालिब है के सुबह शाह इजरा पावे और पिशावर तक बाद बरसात जारी होगा- सब सामान मुहैया है तार के अंबार डाकखाने में लग रहे हैं और पंजाब में बड़ी धूम हो रही है किसी की समझ में कुछ नहीं आता कोई कहता है कि इस तार के ऊपर थाली चलेगी कोई ख़्याल करता है कि थाली दौड़ेगी मगर जब देखते हैं कि दरिया के ऊपर पहुँच कर तार किनारों पर ज़मीन में दाब दिया है और दरिया के अंदर पानी में चला गया है और दूसरे किनारे पर फिर निकल कर कुढ़े पर फिर चढ़ा दिया गया है उनकी अक़्ल खब्त हो जाती है के थाली तार पर क्यों कर चलेगी। राक़िम अख़बार को इस अमर की तहक़ीक़ात का बहुत ख्याल है अक्सर साहब लोगों से दरियाफ़्त किया पर कुछ मुताबक़त नहीं मिली। किसी ने कुछ कहा किसी ने कुछ फ़रमाया अभी कुछ मालूम नहीं है के बिजली की डाक क्यूंकर चलेगी और कलकत्ता-बम्बई की ख़बर लाहौर तथा पिशावर तक एक ही दिन में क्यों कर पहुँचेगी- बड़ी मुश्किल यह है कि अहाली इस कारखाने के तमाशाइयों को दाख़िल बिल्कुल नहीं होने देते मगर ग़ालिब है के लाहौर में जब कारखाना इजरा पावेगा तो हाल मुफ़स्सिल हवाला-ए-क़लम किया जावेगा।''[1]

सन 1856 के मार्च महीने तक इसका प्रकाशन बिना किसी बाधा के होता रहा। अचानक मुंशी हरसुखराय को बंदी बना लिया गया। हरसुखराय की गिरफ्तारी के पश्चात इसका सम्पादन मुंशी हीरालाल करने लगे। इस दौर में उर्दू और फारसी के कई समाचारपत्र बंद हो गए, किन्तु 'कोहेनूर' प्रकाशित होता रहा। जेल से छूटने के पश्चात हरसुखराय पुनः सम्पादन करने लगे।

'कोहेनूर' पहले साप्ताहिक था। कुछ समय पश्चात सप्ताह में दो बार प्रकाशित होने लगा और फिर सप्ताह में तीन दिन प्रकाशित किया जाने लगा। सन 1888 में इसे दैनिक समाचारपत्र बना दिया गया। किन्तु दैनिक पत्र का प्रकाशन ज्यादा समय तक नहीं किया जा सका। इस बीच इसको अँगरेजी और उर्दू दो भाषाओं में प्रकाशित किया जाता था। दो नवम्बर 1890 को मुंशी हरसुखराय की मृत्यु हो गई। उनके वारिस जगतनारायण ने इसका जिम्मा संभाला। कुछ दिनों बाद उनकी भी मृत्यु हो जाने के पश्चात हरसुखराय की विधवा 'कोहेनूर' को पुनः साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित करने लगीं। सन 1904 में प्रकाशन बंद कर दिया गया।

मुंशी हरसुखराय पत्रकारों द्वारा स्वतंत्र विचार प्रकट करने के पक्षधर थे। सन 1856 में जब समाचारपत्रों पर प्रतिबंध लगाने की बात उठी थी तो मुंशी ने अपने पत्र में 'आज़ादी मुतालिबा' शीर्षक से सम्पादकीय लिखा था- ''अख़बार नवीसान व विक़ाय निग़ारान मुल्के हिन्द और

1. कोहेनूर, 4 जुलाई 1854

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहित्मान मताबेअ को वाज़ह हो के दरईं लेजिस्लेटिव कौंसिल ए हिन्द में तजवीज़ हुई है के एक क़ानून ऐसा इजरा पावे जिससे छापे वालों को इख्तियारात छापने पर मज़ामीन के न रहें और सरकार की तरफ़ से मज़ाहमतो मदाखलत होवे। बस सबको लाज़िम है के यकदिल और एकराय होकर बकमाल मुस्तैदी से पैरवी इस अमर की करें के ऐसा क़ानून जारी न होवे वर्ना सबको ज़रर है और फिर अख़बार और छापे की हस्ती नहीं रहेगी। मगर क़यास नहीं चाहता के सरकार जिसने यह इख्तियारात दिये हैं बिलावजह इसमें मदाखलत करे।''

हरवंशलाल ने मासिक पत्रिका 'मिरात-उल-उलूम' का प्रकाशन किया था। जिसके केवल तीन अंक ही निकल पाये और उसका प्रकाशन बंद हो गया। तदनन्तर उन्होंने सन 1850 में अपना निजी प्रेस मफ़ादे हिन्द खोला। सन 1850 की सरकारी रिपोर्ट में इसका उल्लेख मिलता है- ''मतबा मफ़ादे हिन्द से हरवंशलाल गुज़िश्ता छह माह से *'ज़ायरीने हिन्द'* निकाल रहे हैं जिसकी इशाअत 75 है।'' सन 1851 की सरकारी रिपोर्ट में कहा गया है- ''मतबा ज़ायरीन हिन्द अब भी हरवंशलाल और भैंरोप्रसाद के हाथों में है और उर्दू अख़बार 'ज़ायरीने हिन्द' इसी मतबे में मुरत्तिब किया जाता है।'' सन 1853 में हरवंशलाल और भैंरोप्रसाद ने प्रेस तथा पत्र का प्रकाशन बंद कर दिया।

'कोहेनूर' के प्रकाशन के प्रथम वर्ष में ही एक अन्य पत्र *'दरिया-ए-नूर'* प्रकाशित होने लगा। 'दरिया-ए-नूर' की छपाई सुन्दर होती थी। इसका प्रकाशन हर इतवार को होता था। प्रकाशन के प्रथम वर्ष में इसके सौ ग्राहक थे। सन 1852 की सरकारी रिपोर्ट में लिखा गया- ''अब हम पंजाब के समाचारपत्रों पर एक दृष्टि डालते हैं। उनके नामों से यह प्रकट होता है कि वे ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए प्रयासरत थे क्योंकि वहाँ समाचारपत्रों के नामों के साथ नूर यानी प्रकाश शब्द लगा रहता है, जैसे 'दरिया-ए-नूर' जो लाहौर से प्रकाशित होता है। एक दूसरा 'कोह-ए-नूर' जो सप्ताह में दो दिन प्रकाशित किया जाता है।'' 'दरिया-ए-नूर' का प्रकाशन सन 1854 में बंद हो गया।

अप्रैल 1850 में कपाल विज्ञान की पत्रिका *'पेम्फलेटियर'* का प्रकाशन कोलकाता से फेरोनॉजिकल सोसायटी के अध्यक्ष कालीकुमार दास ने किया था। वे ही सम्पादक थे। मासिक शुल्क आठ आने था। पत्रिका के प्रवेशांक में पाठकों को सूचित किया गया था- ''पेम्फलेटियर' साहित्य, कला और विज्ञान की पत्रिका होगी। कपाल विज्ञान पर इसमें सामग्री रहेगी। हम अपने पाठकों के स्वास्थ्य, नैतिकता एवं मानसिकता का विकास करने वाली सामग्री प्रस्तुत करेंगे। शासन की त्रुटियाँ बिना किसी भय के प्रकट करेंगे और उसके अच्छे कार्य की सराहना भी की जायेगी।'' समकालीन पत्रों में 'पेम्फलेटियर' को सराहा गया था। अच्छा पत्र होने के बावजूद यह दीर्घजीवी नहीं हो पाया।

4 मई 1850 को सेरामपुर से बंगला साप्ताहिक *'सत्य प्रदीप'* का प्रकाशन मेरीडिथ टाउनरोड ने किया। इसका अंतिम अंक 26 अप्रैल 1851 को निकला। जनवरी 1860 में कोलकाता से पुनः मासिक 'सत्य प्रदीप' का प्रकाशन क्रिश्चियन वर्नाकुलर एजूकेशन सोसायटी की बंगाल शाखा ने बच्चों की पत्रिका के रूप में किया।

जावरा के नवाब मोहतशमुद्दौला ग़ौस मोहम्मद खां ने सन 1850 में *'मोहतशमुल अख़बार'* का प्रकाशन कराया था। उनके नाम पर ही अखबार का नाम रखा गया था। यह रियासत का पत्र था जिसके सम्पादक मुंशी मिर्ज़ा नसरुल्ला बेग थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मालवा अख़बार' ने मोहतशमुल अखबार के बारे में लिखा:- ''कई दिन हुए के वहाँ के अख़बार का पहला पर्चा हमारे पास आया उसको देखने से हमको बहोत खुशी हुई खुदा करे के उसको लिखने वाले की कोशिश पूरी होवे। यह अख़बार नवाब साहेब जावरे के छापेखाने से जारी हुआ है। उन्हों के नाम पर से उसका नाम मोहतशम उल अखबार रक्खा गया है कीमत उसकी 1 रु. महीना है और अठवारे में एक दफे जारी हुआ करेगा। हम इस अख़बार के जारी होने से बहुत खुश है क्योंकि जब हम मालवे में आये थे उस वक्त यह मुल्क़ अखबार के नाम से बिल्कुल खाली था मगर जबसे लोगों को जरा अखबार के पढ़ने की ख्वाहिश होती है और यक़ीन है के आहिस्ते आहिस्ते और भी अख़बार जारी होवेंगे। जावरे का अख़बार उर्दू जुबान में लिखा गया है''।[1]

बंगाल टाइम्स / सिटीजन

कोलकाता से दैनिक *'बंगाल टाइम्स'* का प्रकाशन एक जून 1850 से हुआ। इसका मासिक शुल्क तीन रुपये और अग्रिम ढाई रुपये मासिक था। यह दो पृष्ठों का पत्र था। 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' ने इसके बारे में लिखा, ''यह स्वतन्त्र विचारधारा का पत्र है और मुद्दों के अनुसार अपनी नीति प्रतिपादित करेगा। परन्तु अच्छे पत्रों के बीच यह छोटा सा समाचारपत्र कैसे टिक सकता था? दो पृष्ठों में पूरी जानकारी भी नहीं दी जा सकती थी।''[2] 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' में इसका प्रकाशन बंद होने और उसके स्थान पर नया पत्र *'सिटीजन'*[3] प्रकाशित होने की जानकारी छपी है। 'सिटीजन' का प्रकाशन साप्ताहिक पत्र के रूप में 24 अप्रैल 1850 से हुआ था। इसके सम्पादक जान न्यूमार्क थे। 6 हफ्ते के बाद साप्ताहिक बंद हो गया था। फिर 14 अक्टूबर 1850 से 'बंगाल टाइम्स' को मिलाकर दैनिक हो गया।

व्यापार-उद्योग पर केन्द्रित दैनिक *'कमर्शियल एंड शिपिंग गज़ट'* का प्रकाशन 17 जून 1850 को किया गया था। सितम्बर 1854 में इसी पत्र ने 'शिपिंग गजट' के नाम से एक और पत्र आरम्भ किया। सन 1857 में दोनों बंद हो गए।

जून 1850 में मासिक *'दुर्भिक्षानिका'* कोलकाता से निकली। इस बंगला मासिक के सम्पादक-प्रकाशक द्वारकानाथ मजूमदार थे। यह राजनीतिक पत्रिका थी।

पादरी स्मिथ ने जुलाई 1850 में कोलकाता से *'सत्यार्णव'* मासिक पत्र निकाला। इसके सम्पादक रेवरेण्ड जे. लांग थे। यह बंगला पत्र पाँच वर्ष तक प्रकाशित हुआ। बंगला साप्ताहिक *'संवाद सुधांशु'* सितम्बर 1850 में कृष्ण मोहन बंद्योपाध्याय के सम्पादन में निकला। इसमें समाचार, टिप्पणियाँ और अन्य उपयोगी जानकारी छापी जाती थी। सासाहिक *'संवाद वर्दमान'* सितम्बर 1850 में वर्दमान से प्रकाशित हुआ। कालीदास बंद्योपाध्याय इसका सम्पादन करते थे। सितम्बर 1850 में साप्ताहिक *'ईस्ट इण्डिया मैसेंजर'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। यह अँगरेजी पत्र सन 1851 में बन्द हो गया। प्रत्येक गुरुवार को छपने वाले इस पत्र का वार्षिक शुल्क दस रुपये था।

कोलकाता से नवम्बर 1850 में मासिक पत्रिका *'मिशनरी'* का प्रकाशन हुआ। आरम्भ में यह पत्रिका 16 पृष्ठ की थी, सन 1853 में 36 पृष्ठों की निकलने लगी। वार्षिक शुल्क तीन

---

1. मालवा अखबार, 21 मई 1850
2. फ्रेण्ड आफ इण्डिया, 6 जून 1850
3. वही, 17 अक्टूबर, 1850

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये था। सन 1854 में 'मिशनरी' त्रैमासिक कर दी गई। दिसम्बर 1854 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया। सन 1850 में गिरीशचन्द्र मुखोपाध्याय ने '*धर्म मर्म प्रकाशिका*' निकाली। यह बंगला मासिक पत्रिका थी। सन 1850 में सूरत से अर्द्धसाप्ताहिक '*सूरत समाचार*' प्रकाशित हुआ। इस गुजराती अखबार के सम्पादक अलेक्जेंडर कनेलिक थे।

6 दिसम्बर 1850 को कोलकाता से साप्ताहिक '*वीकली जर्नल*' का प्रकाशन हुआ। प्रथम अंक में नीति एवं उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा गया- ''वीकली जर्नल' किसी विशेष लीक पर चलने की नीति की वकालत नहीं करता। न ही यह किसी वर्ग का पक्ष लेगा और न किसी वर्ग की उपेक्षा करेगा। हमारे यहाँ कुछ संस्थानों में भ्रष्टाचार व्याप्त है, जिसका भंडाफोड़ कर उनमें सुधार लाने की आवश्यकता है। यह पत्र इन विसंगतियों के विरुद्ध आवाज़ उठायेगा।'' वार्षिक शुल्क 12 रुपये था। अक्टूबर 1851 में बंद हो गया।

दिसम्बर 1850 में गोविन्दचरण गुप्त ने साप्ताहिक '*संवाद सज्जन रंजन*' निकाला। एक साल बाद यह अर्द्ध साप्ताहिक हो गया। लेकिन तीसरे साल में बन्द हो गया। दस साल के पश्चात इसको पुनर्जीवित किया गया।

'*संवाद वर्धमान ज्ञान प्रदायिनी*' साप्ताहिक सन 1850 के दिसम्बर में निकला। इसके सम्पादक विशेश्वर बंद्योपाध्याय थे। सन 1850 में मुम्बई से अँगरेजी साप्ताहिक '*एक्ज़ामिनर*' का प्रकाशन हुआ।

सामदंड मार्त्तण्ड

सन 1850 में प्रकाशित '*सामदंड मार्त्तण्ड*' के सम्पादक युगल किशोर शुक्ल थे। विविध विषयों का साप्ताहिक पत्र कोलकाता से प्रकाशित होता था। सम्मेलन पत्रिका में उल्लेख मिलता है कि, ''उदन्त मार्त्तण्ड के तेईस वर्ष बाद युगल किशोर शुक्ल ने सन 1850 में 'सामदंड मार्त्तण्ड' नामक पत्र निकाला।'' बंगला का पत्र '*नित्य धर्म रंजिका भैरव बंधु*' का प्रकाशन कोलकाता से सन 1850 में हुआ। इसके संपादक नंदकुमार कविरत्न थे।

1851

जाम-ए-जमशेद

'सईद-उल अख़बार' में प्रकाशित सूचना से पता चलता है कि ''*जाम-ए-जमशेद*' जनवरी 1851 से हर हफ्ते सनीचर के दिन ज़ेर एहत्माम बाबू शिवचरण नाथ आगरा से आठ सफ़ों पर शाया हुआ करेगा क़ीमत सालाना पेशगी नौ रुपये।''[1] बाबू शिवचरण नाथ ने जब आगरा से दूसरा 'जाम-ए-जमशेद' प्रकाशित किया तब मेरठ से प्रकाशित होने वाले जाम-ए-जमशेद का नाम बदल कर 'जाम-ए-जहांनुमा' कर दिया गया। इस पत्र में सामान्य समाचारों के अतिरिक्त सरकारी गज़ट और न्यायालयों के फैसलों के उद्धरण प्रकाशित किए जाते थे।

अर्द्ध साप्ताहिक '*पीपुल्स फ्रेण्ड*' का प्रकाशन कोलकाता से एक मार्च 1851 को हुआ। इसकी प्रकाशक मेसर्स डी रोजारियो एण्ड कम्पनी थी। जून 1851 में यह पत्र बन्द हो गया। अँगरेजी साप्ताहिक '*बाम्बे गार्जियन*' का प्रकाशन मुम्बई से सात मार्च 1851 को हुआ था। प्रत्येक शुक्रवार को निकलता था। डा. डनलप सम्पादक और प्रकाशक थे।

श्रीमती मुखोपाध्याय के सम्पादन में पाक्षिक '*ज्ञान दर्शन*' 13 मई 1851 को निकला। एक

1. सईद-उल-अखबार, 6 जनवरी 1851

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून 1851 को कालीदास मित्रा ने पाक्षिक *'काशी वार्ता प्रकाशिका'* का प्रकाशन किया। जनवरी 1853 से यह साप्ताहिक हो गया। सम्पादक गोविन्दचन्द्र बंद्योपाध्याय हुए।

अँगरेजी और बंगला के द्वि-भाषी मासिक *'मिदनापुर एण्ड हिडगेली गार्जियन'* का प्रकाशन मिदनापुर से जून 1851 में किया गया। यह पत्र एक वर्ष तक प्रकाशित हुआ। चन्द्रशेखर उपाध्याय के सम्पादन में सात जून 1851 को *'संवाद ज्ञानोदय'* निकला। यह मासिक बंगला पत्र चार वर्ष तक प्रकाशित हुआ। उर्दू समाचारपत्र *'बाग़े नूर'* 1851 में अमृतसर से प्रकाशित हुआ।

नूर-आला-नूर

'नूर-आला-नूर' लुधियाना से सन 1851 में प्रकाशित हुआ। इसके पहले यहाँ से फ़ारसी पत्र 'लुधियाना अख़बार' सन 1835 में अमेरिकन मिशन द्वारा प्रकाशित किया गया था। इस पत्र का अपना प्रेस था। 'कोहेनूर'[1] में 'नूर-आला-नूर' के सम्बन्ध में यह समाचार प्रकाशित किया गया था- ''एक कृपालु के पत्र से ज्ञात हुआ है कि लुधियाना में मोहम्मद हुसैन ने 'नूर आला नूर' नामक एक प्रेस की स्थापना की है कोहेनूर के संचालक इस नाम को जानकर बेहद प्रसन्न हैं। हिन्दुस्तान के छापेखानों के मालिक अपने नाम के अनुसार यह सोचते होंगे कि पंजाब में इस समय प्रकाश (नूर) की वर्षा हो रही है अर्थात कोहेनूर, दरिया-ए-नूर, रियाज़-ए-नूर, बाग़ेनूर, नूर-आला-नूर तो अस्तित्व में आ चुके हैं अब केवल खुदा का नूर (अलौकिक प्रकाश) शेष रह गया है। सुना है कि बेराह नामक स्थान पर एक और छापाखाना खुला है उसका नाम भी नूर-आला-नूर है। क्योंकि लुधियाने के नूर-आला-नूर को विज्ञापित नहीं किया गया है इसलिए नूर आला नूर के मालिक को अपने छापेख़ाने का नाम खुदा का नूर रखना चाहिए क्योंकि ईश्वर की कृपा से वह नश्वर भी नहीं है एवं सबसे श्रेष्ठ है। अनारकली छावनी में जो नया छापाखाना स्थापित होने वाला है सुना है कि उसका नाम आइना-ए-सिकन्दर रखा है। यद्यपि वह भी नूर (प्रकाश) रहित नहीं है तथापि उनको ज्ञात होना चाहिए कि नूर आला नूर से बढ़कर खुदा का नूर (दिव्य प्रकाश) है जिससे बढ़कर ही उनको कोई नाम सोचना चाहिए।'' सन 1853 में 'नूर-आला-नूर' बंद हो गया।

अर्द्ध साप्ताहिक *'आप्टीमिस्ट'* दो अगस्त 1851 को प्रकाशित हुआ। लंग इसके सम्पादक थे। अक्टूबर 1851 में प्रकाशन बन्द कर दिया गया।

विज़ीटर जनरल आफ स्कूल्स रैड के संरक्षण में मुंशी सदासुख लाल ने दो अक्टूबर 1851 को एक प्रेस नूर उल बिसार कायम किया और उन्होंने दो समाचारपत्र भी निकाले, एक उर्दू का तथा दूसरा हिन्दी का। उर्दू के समाचारपत्र का नाम *'नूर उल बिसार'* तथा हिन्दी पत्र का नाम *'बुद्धि प्रकाश'* रखा। इन दोनों का सम्पादन वे स्वयं करते थे। 'नूर-उल-बिसार' में समाचारों के अतिरिक्त भौतिक शास्त्र, इतिहास आदि पर लेख होते थे। भाषा सरल थी। अधिकांश लेख अँगरेजी पुस्तकों से अनुवाद करके छापे जाते थे। 'बुद्धि प्रकाश' की भाषा हिन्दी थी। दोनों समाचारपत्रों के दो-दो सौ अंक शासकीय स्कूलों के लिए खरीदे जाते थे।

उर्दू अख़बार *'रियाज़ नूर'* सन 1851 में सियालकोट से प्रकाशित किया गया था। कुछ समय पश्चात इसे मुलतान से प्रकाशित किया जाने लगा। प्रारम्भ में इस पत्र को सियालकोट से 'रियाज़-उल अख़बार' के नाम से प्रकाशित किया गया था। जब स्थान परिवर्तन करके मुलतान

1. कोहेनूर, 8 जुलाई 1851

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रकाशित हुआ तब इसका नाम 'रियाज़-ए-नूर' कर दिया गया। 12 पृष्ठ के इस पत्र का आकार 19 गुणित 29 सेंटीमीटर था। प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित होता था।

'कोहेनूर' में प्रकाशित सम्पादकीय टिप्पणी से 'रियाज़-ए-नूर' के सम्पादक के साथ सरकारी ज्यादती का खुलासा होता है। ''पहले कुछ हाल मुहतमिम 'रियाज़ नूर' का 'अख़बार शुआ उल शम्स' में दर्ज होता था लेकिन हमको बाइसे अदावत यक़ीने-कुल्ली न था अब तहरीर एक दोस्त से मालूम हुआ के मुहतमिम रियाज़ नूर मुलतान की हवालात में हैं एक हज़ार रुपया ज़मानत तलब है मुक़दमा ताहाल फैसला नहीं हुआ है। ख़ारिजन मालूम होता है के हुकूमेवक़्त व अमलानिस्बत रियाज़ नूर मज़नून बदर्जा कमाल है इस वास्ते सूरत बेहबूदी की नज़र नहीं आती। खुदा उनके हाल पर रहम फ़रमाये।[1]'' इसी वजह से 'रियाज़ नूर' हमेशा के लिए बंद हो गया। इस घटना के पश्चात मेहदी हुसैन खां लखनऊ चले गए जहाँ मुंशी नवलकिशोर के समाचारपत्र 'अवध अख़बार' के सम्पादक रहे।

साप्ताहिक *'हरकारा'* बनारस से सन 1851 में प्रकाशित हुआ। इसका मासिक शुल्क एक रुपया था। पत्र में समाचारों के अलावा लेख भी प्रकाशित होते थे। सैयद अहमद अली 'हरकारा' के सम्पादक थे। सन 1853 तक इसके प्रकाशन की पुष्टि होती है। सन 1851 में मासिक *'प्रबोध चन्द्रिका'* का प्रकाशन हुआ।

गुजराती भाषा के साप्ताहिक पत्रों में सबसे प्राचीन *'रास्तगोफ़्तार'* है। दादाभाई नौरोजी के सम्पादन में 15 नवम्बर 1851 से इसका प्रकाशन हुआ। एक वर्ष बाद कृष्णमोहन दास ने मंगलदास नत्थूभाई तथा लक्ष्मीदास खीमजी की सहायता से 'सत्य प्रकाश' प्रकाशित किया। 1860 में दोनों पत्रों का विलय हो गया। रास्तगोफ़्तार का शाब्दिक अर्थ भी 'सत्य प्रकाश' है। पत्र की प्रसार सँख्या 1738 थी। यह पत्र सन 1861 तक प्रकाशित होता रहा।

कोलकाता में सन 1851 में वर्नाक्युलर लिटरेचर कमेटी की स्थापना की गई। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राधाकान्त देव, राजेन्द्रलाल मित्रा, हागसन प्रैट आदि इस समिति से जुड़े थे। इसी कमेटी ने अक्टूबर 1851 से राजेन्द्रलाल मित्रा के सम्पादन में मासिक पत्रिका *'विविधार्थ संग्रह'* का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसमें राजपूतों का इतिहास, बुंदेला राजाओं का इतिहास, कश्मीर, जयपुर, श्रीलंका का इतिहास और प्रख्यात शहरों का वर्णन प्रकाशित हुआ। अजंता-एलोरा की गुफाएं, जगन्नाथ मंदिर आदि का रोचक सचित्र वर्णन छापा गया। कश्मीर की कसीदाकारी, चित्र कला तथा ललित कलाओं पर भी लेख प्रकाशित हुए। बाद में इसके सम्पादक कालीप्रसन्न सिंह हो गये। यह पत्रिका सन 1861 तक निकली।

कटक सोसायटी ने सन 1851 में कटक से *'उत्कल हितैषिणी'* का प्रकाशन किया। इसका अँगरेजी नाम 'ओड़िया पेट्रियट' था। उड़िया भाषा का यह पत्र सरकारी गजट की तरह था। इसके सम्पादक कालीपद बंद्योपाध्याय थे। इसमें राजकीय संवादों के ओड़िया अनुवाद प्रकाशित किए जाते थे। यह पत्र सन 1869 तक प्रकाशित हुआ। सन 1851 में चेन्नै से अँगरेजी पाक्षिक *'गार्जियन'* का प्रकाशन हुआ। नौरोजजी काबसजी ने मुम्बई से सन 1851 में गुजराती भाषा का *'बाग़े नसीहत'* निकाला। हैदराबाद से मासिक उर्दू पत्रिका *'सबरस'* का प्रकाशन सन 1851 में हुआ।

1. कोहेनूर, 20 मई 1856

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आफ़ताब-ए-हिन्द

एक जनवरी 1852 को बनारस से काशीदास मित्र ने *'आफ़ताब-ए-हिन्द'* निकाला। यह साप्ताहिक पत्र काशी प्रेस से प्रत्येक गुरूवार को प्रकाशित किया जाता था। इसका वार्षिक शुल्क पाँच रुपये और मासिक आठ आना था। इस अख़बार की भाषा अरबी-फारसी मिश्रित उर्दू थी। इसके तेवर का पता इस ख़बर से बखूबी लग जाता है- ''एक शख़्से अँगरेज ने एक दरबान को ज़र्बे गोली से हलाक़ किया व गिरफ़्तारे अदालत हुए। चुनांचे 11 जनवरी सन 1853 को मुक़दमा मज़कूर अदालत सुप्रीम कोर्ट में दायर होकर इज़हारात से गवाहान के ज़ाहिर हुआ के बरोज़ माजरा शाम के वक़्त मिस्टर मिस्ली, वन्यूजेन्ट और सोयल, वाल्टर, यह चार शख़्स अँगरेज बसवारी बग्गी मुहाज़ी दरवाज़ा-ला के बाबू के पहुँच कर शिकार कुत्ते में मशगूल हुए और दरबान बाबू मौसूफ़ मानेअ हुआ। उन्होंने न माना और इरादा अन्दर जाने का किया और मय हर्बा लाठी व बंदूक मुस्तैद ज़दोज़र्ब हुए लेकिन वह दरबान मानेअ ही रहा इसमें मिस्ली साहब ने पुरग़ज़ब होकर बंदूक चलाया और ज़ालिम सिंह नामी प्यादा ज़र्बे गोली से मजरूह हुआ और बाद कुछ देर के जांबहक़ हो गया व जुमला अंगरेजान गिरफ्तार हुए और मिस्टर मिस्ली साहब व हुज़ूर जनाब साहब मजिस्ट्रेट बहादुर चौबीस परगना के इस तरह पर मज़हर हुए के मैने बइरादा हलाकत के बंदूक़ सर नहीं किया और ज़ालिम सिंह से अदावत कुछ नहीं थी के उसको मारता सिर्फ़ वास्ते हिफाज़ते जान अपनी के बंदूक सर किया था और हमारा इरादा यह था के गोली उसकी रानों के दरमियान से निकल जावेगी मगर निशाने ने ख़ता किया के गोली उसकी रान में असर कर गई के वह मर गया। साहिबान कौसिली ने सवाल जवाब में कोताही नहीं किया और जूरियों की तजवीज़ से मिस्टर मिस्ली मुजरिम ठहरे। जनाब साहब जज बहादुर ने उनके हक़ में यह हुक्म सादिर फ़रमाया के तीन मुद्दाअलम रिहाई पावें व मिस्टर मिस्ली साहब एक बरस तक बिला महनत मुक़य्यद रहें और मुजरिम को यह तसल्ली दी गई के तुमको क़ैद में कुछ तकलीफ़ न होगी सैरे कुतुब बख़ूबी किया करो।'' इस पर टीका करते हुए समाचार के अंत में आफताब-ए-हिन्द ने लिखा- ''इसको अदालते शाही कहते हैं जिसमें जान रियाया जावे और दादख़्वाह दाद न पावे (इसी को शाही अदालत कहा जाता है कि प्रजा की जान भी चली जाये और वादी को न्याय भी न मिले) .....अगर किसी हिन्दुस्तानी से ऐसा जुर्म सरज़द होता तो बेशक सज़ा को पहुँचता।'' जुलाई 1852 में *'एकसट्रेक्ट्स कन्सर्निंग क्रिश्चेनिटी'* का प्रकाशन कोलकाता से ईश्वरचंद्र नंदी ने किया। यह ईसाई मिशनरीज की प्रचार पत्रिका थी।

अखबार ग्वालियर

ग्वालियर के महाराज जयाजीराव सिंधिया की रुचि के कारण एक समाचारपत्र प्रकाशित करने का निर्णय हुआ। एक जनवरी 1852 से *'अखबार ग्वालियर'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह द्विभाषी पत्र था जिसमें पृष्ठ को दो कालम में बाँट कर एक तरफ हिन्दी और दूसरी ओर उर्दू में मजमून छापे जाते थे। मुंशी लक्ष्मणदास सम्पादक-प्रकाशक थे जो आलीजाह दरबार प्रेस के सुप्रिन्टेन्डेण्ट थे। पत्र के एक ओर 'अखबार ग्वालियर' और दूसरी ओर 'ग्वालियर गजट' छपा मिलता है। मुंशी लक्ष्मणदास के बाद उमाचरण ने पत्र की जिम्मेदारी सम्हाली। सन 1904 में गजट और अखबार को अलग-अलग करने का फैसला लिया गया। तदनुसार 11 जनवरी 1905 से 'ग्वालियर स्टेट गजट' सरकारी गजट के रूप में तथा 'जयाजी प्रताप' समाचारपत्र के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में प्रकाशित होने लगे। 'जयाजी प्रताप' के पहले सम्पादक श्रीलाल बी.ए. हुए।

प्रवेशांक में सम्पादक 'जयाजी प्रताप' की ओर से यह सूचना जारी हुई- ''विदित हो कि यह पत्र प्रति बुधवार को प्रकाशित होगा और इसमें विद्या, व्यापार, खेती, स्त्री शिक्षा, परस्पर मेलजोल, पुरुषार्थ, जाति उन्नति के प्रबन्ध छपा करेंगे, और भी इसके द्वारा देश देशान्तर के समाचार प्रकाशित हुआ करेंगे। पत्र की भाषा ऐसी सरल नागरी होगी कि हिन्दी, उर्दू व देशी भाषा के अभ्यासी अच्छी तरह इसको पढ़कर समझ सकें। इसका वार्षिक मूल्य डाक महसूल सहित 2 रु. साल होगा. एक सँख्या का मूल्य दो आना है। सम्वाददाताओं की सेवा में प्रार्थना है कि वे जो सम्वाद भेजना चाहें नियत समय पर अर्थात हर सप्ताह में सोमवार तक भेजा करें।'' प्रारम्भ में ही स्पष्ट कर दिया गया था कि ''इस पत्र में मुल्की बहस नहीं छापी जायेगी''।

'जयाजी प्रताप' में समाचार के कुछ उद्धरण- ''इस साल प्लेग का कोप संयुक्त प्रान्त में बहुत है, बम्बई में तो घटता जाता है, परंतु और प्रान्तों में इसकी बाढ़ है। 14 जनवरी में जो सप्ताह समाप्त हुआ उसमें भारतवर्ष भर में प्लेग रोग से 25719 मनुष्य मरे; पहले सप्ताह में 24385 मरे थे।[1]

'जयाजी प्रताप' में 'स्वदेशी वस्तु का प्रचार और बंगाल प्रदेश' शीर्षक से समाचार था- ''बंगाल विच्छेद का मामला जब से सरकार की ओर से पास हुआ है तब से समस्त बंगाली जाति में आंदोलन फैला हुआ है, इस सम्बन्ध में बंगालियों ने एक भारी प्रतिज्ञा की है कि वे अब विलायती वस्तुओं का इस्तेमाल बिलकुल छोड़ दें और देशी वस्तुओं का ही इस्तेमाल करें इस प्रतिज्ञा का यह प्रभाव हुआ है कि बंगाल में यूरोपियन सौदागरों को बड़ी हानि पहुँची है और देशी वस्तुओं की माँग होने लगी है।''[2]

'जयाजी प्रताप' के सम्पादक आंचलिक परिवेश के प्रति बहुत जागरूक थे। ग्वालियर अंचल में उनके निज संवाददाताओं का जाल बिछा हुआ था। तार से भी खबरें मँगाई जाती थीं और अन्य समाचारपत्रों से समाचार उद्धृत किये जाते थे। प्लेग जैसी महामारी, अग्निकांड, बाढ़, भूकम्प की खबरों के अलावा नयी खोजें, परीक्षाफल, विदेशों की हलचल, समाज सुधार, नारी शिक्षा जैसे विषयों पर प्रचुर सामग्री दी जाती थी। खबर दृष्टव्य है- ''समाचार मिले हैं कि बेगम साहबा भोपाल का विचार है कि गरीब उच्च वर्ण की स्त्रियां जो पर्दे में रहने के कारण अपने दुःख-दर्द को प्रगट नहीं कर सकतीं, उनके निर्वाह और प्रबन्ध के वास्ते एक कारीगरी का विद्यालय स्थापन करे हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि बेगम साहबा की मनोकामना सुफल हो।''[3]

अगले अंक में समाचार है- ''बड़े प्रसन्नता की बात है कि गवालियार राज्य के सुन्दरसी पीपलरवा के पंडित ओंकार नागर ब्राम्हण ने कपड़ा रंगने का एक यंत्र बनाया है जिसमें एक बार रंग भर देने से बिना अड़चन के दिन भर में दस हजार हाथ कपड़ा रंग जाता है। एक यंत्र से नित्य सौ मनुष्यों का काम निकलता है, और सुना गया है कि मूल्य भी केवल चार पाँच रुपया है। हमको ज्यादा: हर्ष होता यदि पंडित जी साहब राज्य के किसी बड़े नगर में रह कर इस यंत्र से काम लेते।''[4]

1. जयाजी प्रताप, 25 जनवरी, 1905
2. वही, 30 अगस्त, 1905
3. वही, 1 फरवरी 1905
4. वही, 1 फरवरी 1905

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जयाजी प्रताप' की पुरानी फाइलों के पन्ने पलटने से समकालीन प्रवृत्तियों पर भी प्रकाश पड़ता है

''तिलक से बर्ताव-बम्बई से बर्मा

''जिन देशभक्त सेनानी को राजद्रोही समझकर गवर्नमेंट ने अदालत के हवाले किया और अदालत ने जिनको जमानत पर छोड़ देना विपत्ति जनक समझा- इतना कठोर दंड दिया कि एक सहस्र रुपये जुरमाने के साथ देश के प्रिय सेवक को 6 वर्ष के लिए काले पानी की आज्ञा दी और सबसे बढ़कर इसे ही ज्ञाप समझा कि विलायत की प्रिवी कौंसिल में अपील करने की प्रार्थना नामंजूर कर दी.....

श्रीयुत तिलक को लेकर हार्डिज जहाज के रंगून के बंदरगाह में पहुँचने पर उनका हृदय बंदेमातरम् तथा तिलक महाराज की जय ध्वनि से प्रफुल्लित हुआ। कई सहस्र मनुष्य वहाँ उनके दर्शनार्थ उपस्थित थे। उनको ले जाते समय उनके दोनों ओर के मकान दर्शनार्थियों से ठसाठस भरे हुए थे। रंगून से स्पेशल ट्रेन पर लोकमान्य तिलक मंडाले भेजे गए।''[1]

1950 में जयाजी प्रताप यह 'मध्यभारत संदेश' में रूपान्तरित हुआ तब भी अर्द्धसाप्ताहिक ही था। राम किशोर शर्मा इसके अंतिम सम्पादक थे और वही 'मध्यभारत संदेश' के प्रथम सम्पादक हुए। तब इसका वार्षिक मूल्य 8 रु. तथा एक अंक का डेढ़ आना था।

'जयाजी प्रताप की बिदाई' शीर्षक सम्पादकीय में लिखा गया- ''जयाजी प्रताप ने जनता की सेवा की पवित्र भावना लेकर आज से ठीक 45 वर्ष पूर्व जनवरी 1905 में, जन्म ग्रहण किया था, एक ऐसे युग में, जब मध्य भारत में तो क्या समस्त भारत में समाचारपत्रों का बाल्यकाल था और कुछ इने-गिने पत्र ही जनता की सेवा कर रहे थे।'' ''जयाजी प्रताप' अपने को 'मध्य भारत संदेश' में विलीन कर रहा है- देशहित की उदार भावना से, जिससे ग्वालियर राज्य ने अपने को मध्य भारत में विलीन किया यह कहना अधिक उचित होगा कि 'जयाजी प्रताप', 'मध्यभारत संदेश' में अपना रूपान्तर मात्र कर रहा है।''[2] राज्यों के पुनर्गठन के पश्चात सन 1956 के अंत में 'मध्यभारत संदेश' का नाम 'मध्यप्रदेश संदेश' हो गया। सन 1957 से 1975 तक साप्ताहिक पत्र के रूप में ग्वालियर से प्रकाशित होता रहा। 1975 में इसे भोपाल ले जाया गया। 15 जून 1994 का अंक 'मध्यप्रदेश संदेश' का अन्तिम अंक रहा। एक दशक बाद, जनवरी 2004 से इसका प्रकाशन पुनः प्रारंभ हो गया है।

31 जनवरी 1852 को सेरामपुर से बंगला मासिक *'ज्ञान अरुणोदय'* का प्रकाशन चन्द्रोदय प्रेस से हुआ। इसके सम्पादक कालीदास मित्रा और यदुनाथ चट्टोपाध्याय थे। सामाजिक विषयों की यह पत्रिका एक साल तक चली।

'क्वार्टरली मिशनरी इंटेलिजेंसर' मार्च 1852 में निकली। सन 1856 में यह अँगरेजी पत्रिका बन्द हो गई।

आगरा गजट

छह अप्रैल 1852 के गवर्नमेंट गजट में हिन्दी पत्र *'आगरा गजट'* के बारे में छपा है- ''जाना गया है कि सरकारी कानून और आईन जो गवर्नमेंट गज़ट के द्वारा प्रकाश किए जाते हैं रिआया में ऐसे प्रगट नहीं होते जैसा कि चाहिए। कारण इसका कुछ तो यह है कि वह गज़ट बड़ा बहुत

1. जयाजी प्रताप, 26 सितम्बर, 1908
2. जयाजी प्रताप, 14 जनवरी 1950 (वर्ष 45 अंक 76)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है और कुछ यह कि उसका हिन्दी भाषा में उल्था नहीं छापा जाता इसलिये विचार हुआ कि इस गजट का उर्दू और हिन्दी उल्था इस रीति से छपा करे कि हर एक पृष्ठ पर एक ओर हिन्दी और एक ओर उर्दू हुआ करे''।''इस गज़ट का नाम हिन्दी गज़ट होगा और वह महीने में एक बार छपा करेगा और पश्चिम देश के लिये जो कोई आईन जारी होगा अथवा कोई आज्ञा या इश्तहार ऐसा दिया जायगा कि जिसके जानने से प्रजा का काम निकले वे सब गज़ट में प्रकाश किये जायंगे।'' 'आगरा गज़ट' का वार्षिक मूल्य दो रुपये था। अप्रैल सन 1852 से इसका प्रकाशन आरम्भ हो गया।

चश्मा-ए-फ़ैज़

साप्ताहिक *'चश्मा-ए-फ़ैज़'* सियालकोट से सन 1852 में प्रकाशित किया गया। इसके सम्पादक दीवानचंद थे। सन 1857 में 10 मई से 14 जून तक इस पर सेंसर बिठाया गया था। उसके बाद इसे बंद कर दिया गया और सम्पादक को शासन ने आदेश दिया कि वह अपने पत्र का कार्यालय लाहौर ले जाए। तब लाहौर से उन्होंने 'चश्मा-ए-खुर्शीद' नाम से साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया। सन 1857 के दिसम्बर में सम्पादक को सियालकोट जाने की अनुमति मिलने पर उन्होंने लाहौर से 'चश्मा-ए-खुर्शीद' का प्रकाशन बंद कर दिया और सियालकोट आकर पुन: 'चश्मा-ए-फैज़' का प्रकाशन शुरू किया। बाद में इसका 'विक्टोरिया पेपर' में विलय हो गया। दीवानचंद 'विक्टोरिया पेपर' भी निकालते थे। उन्हीं ने जनवरी 1853 में पाक्षिक 'हुमाए-बे-बहा' लाहौर से निकाला था तथा सन 1856 में सियालकोट से 'नूर-आला-नूर' मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया था। कोहेनूर की भाँति इसे भी सरकार से सहायता प्राप्त होती थी।

मुंशी दीवानचंद और मुंशी हरसुखराय के बीच चार वर्ष तक 'कोहेनूर' और 'चश्मा-ए-फैज़' में तकरार चलती रही। चार वर्ष बाद मुंशी नवलकिशोर ने दोनों में समझौता-कलम कराया। इनका वैमनस्य व्यापारिक था। झगड़ा तब बढ़ गया था जब मुंशी हरसुखराय बंदी बना लिए गए थे और दीवानचंद ने 'कोहेनूर' के ग्राहकों को तोड़ने का यत्न किया। कोहेनूर ने इसकी प्रतिक्रिया में 6 मई 1856 के अंक में लिखा था- ''हम आपको दोस्ताना समझाते हैं कि यह बात आपकी शान वाला शान के बईद है (आपकी गरिमा के विपरीत है) क्योंके आप गिरे पर लात लगाते हैं। जब तक मुंशी मौसूफ़ क़ैद नहीं हुए थे आप उनसे यहाँ तक खायफ़ और लरजां (इतने भयभीत और कांपते) रहे के आपने कान तक न खड़खड़ाए और दुम भी नहीं हिलाई। तान और तंज का तो क्या जिक्र है (व्यंग्य और कटाक्ष करना तो दूर की बात है) साहब मेरे मिर्ज़ा की तरह गुफ़्तगू कीजिए निरे गंवार न बन जाइए। कुसूर मेरी दराज़ नफ़्सी का माफ़ कीजिए।''

15 मई 1852 को पुणे से पहला अँगरेजी पत्र *'पूना आब्जर्वर'* नाम से निकला। इस पत्र का वार्षिक शुल्क 15 रु. और मासिक 2 रु. था। इस पत्र के पहले सम्पादक चार्ल्स विलियम एलन थे। दादाभाई बैरामजी प्रकाशक थे। 'भारत भ्राता'[1] में 'पूना आब्जर्वर' पर यह खबर मिलती है- ''पूना आब्जर्वर' पर अर्स्तरशियर रेजिमेण्ट के कप्तान हावेल साहेब ने मानहानि-अभियोग में पाँच हजार का दावा किया था। मिस्टर जस्टिस पारसन ने अभियोग को खर्चा सहित खारिज कर दिया और निर्णय करते समय उन्होंने कहा कि कोई बात ऐसी नहीं पाई जाती जिससे स्पष्ट

1. भारत भ्राता, 19 फरवरी, 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो कि प्रतिवादी की ओर से यह मिथ्या कथन था।'' अर्द्ध साप्ताहिक *'संवाद विभाकर'* का प्रकाशन 15 जून 1852 को हुआ। इसके सम्पादक मनमोहन बसु थे।

विचार लहरी

कृष्ण शास्त्री चिपलूणकर ने पुणे से जुलाई 1852 में पाक्षिक *'विचार लहरी'* प्रकाशित किया। 'विचार लहरी' के मुख पृष्ठ पर अँगरेजी सन और माह नहीं दिये जाते थे। पत्र का पहला अंक आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा शके 1774 दिन गुरुवार को निकला था। मुख पृष्ठ पर 'विचार लहरी' शीर्षक तथा उसके एक ओर 'सध्दर्मोध्दारक' और दूसरी ओर 'दुर्धर्माच्छेदक' लिखा होता था। उसके नीचे पुणे व तिथि, वार, शक संवत और एक बाजू में 'सत्य' और दूसरी बाजू में 'शान्ति' शब्द अंकित रहते थे। आठ पृष्ठ थे।''पत्र का उद्देश्य- सम्प्रति काल में स्वार्थ की दृष्टि से हिन्दू धर्म का मिथ्या वर्णन करने वाली अनेक पुस्तकें, शालाएं स्वभाषा में और स्वदेश में उत्पन्न होकर हिन्दू धर्म को नीचा दिखाने के लिए भागीरथ प्रयत्न कर रही हैं। अपना पैसा खर्च करके मिशनरी ईसाई धर्म का प्रसार करते हैं। ऐसे समय में हिन्दू लोगों के लिये आवश्यक है कि सनातन धर्म का संरक्षण करके उसे मजबूत करें। विधर्मी हिन्दू धर्म का नाश करने को प्रवृत्त होते हैं। उन्हें प्रतिवाद की आवश्यकता है। इसी विचार से विचार लहरी का प्रारंभ किया।'' यह पत्र एक वर्ष चला।

छह जुलाई 1852 को *'संवाद शशिधर'* का प्रकाशन कालीदास मित्रा के सम्पादन में हुआ। इसमें देश-विदेश की खबरें, विधि विषयक लेख, उपयोगी सूचनाएं प्रकाशित की जाती थीं। सामयिक टिप्पणियाँ भी सम्पादक लिखते थे। इस पत्र का प्रकाशन एक वर्ष तक हुआ।

साप्ताहिक पत्र *'क्विल'* धारदार, असरदार और धमाकेदार प्रकृति का था। अँगरेजी शब्द 'क्विल' का मतलब है साही पक्षी का नुकीला पर। इसे बंगाल के शिक्षित नवयुवकों के नेता ताराचंद चक्रवर्ती ने निकाला था। इस पत्र की प्रकाशन तिथि के बारे में मत भिन्नता है, केवल मृणाल कांति चंदा ने अपनी पुस्तक में इसका उल्लेख करते हुए लिखा है कि जब ताराचंद चक्रवर्ती राजा वर्दमान की नौकरी से सन 1851 में लौटकर कोलकाता आए, तब सन 1852 में इसका प्रकाशन किया। तब तक 'बंगाल स्पेक्टेटर' बन्द हो गया था और बंगाल के शिक्षितों को अभिव्यक्ति का कोई माध्यम नहीं रहने से इस पत्र का प्रकाशन किया गया। यह पत्र कुछ माह ही चल पाया। नवम्बर 1852 में *'विश्व विलोकन'* निकला। सन 1852 में कैथोलिक आर्फन प्रेस चेन्नै से ईसाई मिशनरी ने *'मद्रास एक्जामिनर'* निकाला। ताराचंद सिकदर ने मासिक *'विद्यारत्न'* का प्रकाशन सन 1852 में किया। सन 1852 में मुम्बई से *'सौदागर'* अखबार निकला। इसके सम्पादक दादाभाई कावसजी दाढ़ीवाला थे। सन 1852 में बंगला पत्र *'संवादिनी सागर'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक नीलकँवल दास थे। इसी वर्ष रामनिधि दास ने बंगला पत्रिका *'भक्ति सूचक धर्म व्यापिका'* का प्रकाशन कोलकाता से किया।

1853

शुआ-उल-शम्स

'शुआ-उल-शम्स' का प्रकाशन सन 1853 में हुआ। इसके सम्पादक गुलाम नसीरुद्दीन थे। 'शुआ-उल-शम्स' कम्पनी सरकार का प्रशंसक था। लखनऊ से प्रकाशित 'सहर सामरी'[1] में 'शुआ उल शम्स' से लिए गए समाचारों के प्रकाशन से यह प्रमाणित होता है कि 1857 में यह

1. सहर सामरी, 1857, जिल्द 1, अंक 12-13

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचारपत्र निकल रहा था। सन 1857 की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार- ''पंजाब के अख़बारात पर बा-आसानी सेंसर आयद कर दिया गया। पेशावर में 'मुर्तज़ाई' के एडीटर को बाग़ियाना मज़ामीन लिखने के जुर्म में क़ैद करके अख़बार उसका बंद कर दिया गया इस तरह मुलतान के देसी अख़बार की इशाअत भी रोक दी गई।''

जनवरी 1853 में कोलकाता से त्रैमासिक पत्रिका *'ईस्ट इण्डिया आर्मी मैगजीन एण्ड मिलिटरी रिव्यू'* निकली। सैनिक विषयों के इस प्रकाशन का पहला अंक 164 पृष्ठों का था। मुम्बई और चेन्नै में भी इसका प्रसार था। पाँच अंक निकलने के बाद यह पत्रिका बन्द हो गई। फरवरी 1853 में कोलकाता से बंगला मासिक *'धर्मराज'* का प्रकाशन तारकनाथ दत्त ने किया। ईसाई मिशनरी गतिविधियों का विरोध करने के लिए भवानी विश्वनाथ ने *'वर्तमान दीपिका'* नामक पत्र निकाला। यह साप्ताहिक पत्र 9 अप्रैल 1853 को वर्ष प्रतिपदा के दिन निकला। 'ज्ञानोदय'[1] में लिखा- ''गत वर्ष के अगस्त माह में 'शुक्रोदय' नाम का एक मराठी समाचारपत्र मुंबई में निकल रहा था। केवल तीन अंक निकलकर वह बंद हो गया। अब सुविज्ञ हिन्दू विचार करके 'वर्तमान दीपिका' प्रकाशित कर रहे हैं। यह प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य छह रुपया है।''

26 अप्रैल 1853 को बच्चों के लिए उपयोगी पत्रिका *'विद्या दर्पण'* प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक प्रिय माधव बसु और योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय थे। नैतिकता, इतिहास तथा ज्ञानवर्धक लेखों के अलावा इस मासिक पत्रिका में कविताएं भी प्रकाशित की जाती थीं। 7 मई 1853 को कोलकाता से *'लिटरेरी स्टार'* साप्ताहिक का प्रकाशन हुआ। इसमें क्रोशिया की डिजायनों, नये फैशन तथा महिलाओं के लिए उपयोगी अन्य सामग्री प्रकाशित की जाती थी। पहेलियाँ भी छपती थीं। जुलाई 1854 में यह पत्रिका बन्द हो गई।

मई 1853 से 'वर्तमान दीपिका' की स्पर्धा में *'धूमकेतु'* प्रकाशित हुआ। 'धूमकेतु' चार पृष्ठ का पत्र था। 'धूमकेतु' के सम्बन्ध में 'ज्ञानोदय'[2] ने लिखा- ''हिन्दुस्तान के इस प्रदेश में दर्पण मराठी समाचारपत्र प्रथम निकला। तबसे आज तक छह समाचारपत्र निकले। 'धूमकेतु' आठवाँ पत्र है। इनमें से कितने ही बंद हो गए। 'दर्पण' के बाद अखबार प्रभाकर, ज्ञानोदय, ज्ञानप्रकाश, शुक्रोदय, वर्तमान दीपिका और अब 'धूमकेतु' पत्र निकला है।'' 'प्रभाकर' की उदार नीति भाऊ महाजन ने 'धूमकेतु' में भी कायम रखी। जनवरी 1854 के अंक में 'गुजराथ्याचे महाराज', 'पुनर्विवाह प्रतिबंधामुळे अनर्थ' आदि प्रमुख समाचार हैं। 'धूमकेतु' की मान्यता थी कि पुनर्विवाह चालू करो। इससे विधवाओं पर उपकार होंगे और धर्म में सुधार होगा। पूर्णकालिक पत्रकारिता को स्वीकार कर उसे सफल बनाने वाले भाऊ महाजन पहले मराठी पत्रकार हैं।

बिहार से प्रकाशित होने वाला पहला समाचारपत्र *'नूर-उल-अनवार'* है, जो सन 1853 में आरा से निकला था। इसके सम्पादक-प्रकाशक सैय्यद मोहम्मद हाशिम बिलग्रामी थे। द्वारकानाथ राय के सम्पादन में मासिक *'सुलभ पत्रिका'* का प्रकाशन जुलाई 1853 में हुआ। यह बंगला पत्रिका थी। इसमें सामाजिक विषयों पर लेखादि के अलावा इतिहास तथा समसामयिक विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती थी।

1. ज्ञानोदय, 15 अप्रैल 1853
2. वही, 15 अप्रैल 1853

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्रे संग्रहालय भोपाल

THE HINDOO PATRIOT

With which is incorporated the Indian Field.

PUBLISHED EVERY MONDAY

CALCUTTA:—MONDAY, DECEMBER 6, 18[illegible]

THE WEEK.

[illegible]

हिन्दू पेट्रियट, सन 1853

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्टोरिया पेपर

सियालकोट से प्रकाशित साप्ताहिक *'विक्टोरिया पेपर'* के मालिक और सम्पादक राय दीवानचंद थे। सन 1853 में उन्होंने इसका प्रकाशन आरम्भ किया जो सन 1925 तक चलता रहा। दीवानचंद की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र ज्ञानचंद इसका सम्पादन-प्रकाशन करते रहे। प्रारम्भिक काल में यह सप्ताह में एक बार प्रकाशित होता था, कुछ समय पश्चात सप्ताह में दो बार निकलने लगा। इसका मुद्रण रिफ़ा-ए-आम प्रेस से होता था। सितम्बर 1881 में यह घोषणा छापी गई- ''आज से विक्टोरिया पेपर हफ़्ते में तीन बार छपेगा और बावजूद ज्यादती सिर्फ बारह आने महाना क़ीमत ज्यादा ली जावेगी।'' इसी के साथ मतबआ का नाम रिफ़ाएआम के बजाय 'मतबअ विक्टोरिया पेपर सियालकोट' कर दिया गया।

हिन्दू पेट्रियट

साप्ताहिक *'हिन्दू पेट्रियट'* का प्रकाशन सन 1853 में गिरीशचन्द्र घोष ने किया था। सप्रे संग्रहालय में उपलब्ध जनवरी 1885 के अंक के अनुसार इसे बूमेश चंद्र नंदी ने हिन्दू पेट्रियट प्रेस, नम्बर 108 घोष स्ट्रीट में छपवा कर प्रकाशित किया था। कोलकाता वासियों के लिए इसका वार्षिक शुल्क ग्यारह रुपया आठ आना, मासिक एक रुपया दो आना तथा एक प्रति का मूल्य आठ आना था। 12 पृष्ठ के अखबार का आकार 45 गुणित 25 से.मी. था।

प्रथम पृष्ठ पर 'वीक' स्तम्भ के अंतर्गत पूरे सप्ताह के समाचार छपते थे। समाचारों में अधिकारियों की नियुक्ति, स्थानान्तरण, घटनाओं का विवरण, आदेश, योजनाएं, सरकारी प्रस्ताव आदि सम्मिलित होते थे। मौसम तथा लंदन के समाचारों का समावेश होता था। अंक के तीसरे पृष्ठ पर सम्पादकीय लिखी जाती थी। स्थानीय समाचार एक स्तम्भ के अन्तर्गत छपते थे। 'हिन्दू पेट्रियट' ने सम्पादकीय टिप्पणियों के माध्यम से हिन्दुस्तान में राजनीतिक चेतना जागृत करने का प्रयास किया था। इस पत्र की नीति स्वतंत्र थी।

सन 1853 में *'नूर-ए-मग़रिबी'* का प्रकाशन दिल्ली से किया गया। इस पत्र के सम्पादक बलदेव सिंह थे। इसमें देश और विदेश के समाचार छपते थे। उसी साल इस प्रेस से किताब 'तारीख बुंदेलखंड' छपी थी। नूर-ए-मग़रिबी प्रेस इंडियन स्टेंडर्ड प्रेस की शाखा थी, जिसका विलय सन 1854 में इंडियन स्टेंडर्ड प्रेस में कर दिया गया था।

सन 1853 में सैयद अमीर अली ने हिदायत प्रेस कायम किया। इसी प्रेस से *'नूर-ए-मशरिक़ी'* का प्रकाशन हुआ। इसकी एक प्रति का मूल्य चार आना था। इसके 56 ग्राहक थे। 18 एवं 25 मई 1855 के अंकों में बादशाह बहादुरशाह के स्वास्थ्य और उनकी दिनचर्या का उल्लेख है। बहादुरशाह जफ़र की गज़लें छापी गई हैं। दरबार के पर्चे विवरण सहित छापे गए हैं। विदेशों और देश के महत्वपूर्ण समाचार संक्षिप्त रूप में छपे हैं।

मराठी पत्रकारिता के बाल्यकाल में पत्रों का प्रकाशन मुम्बई या पुणे से होता था। परंतु ग्रामीण क्षेत्र भी पीछे नहीं रहे। नाना मोरोजी जिलोककर ने सन 1853 में *'वर्तमान संग्रह'* पत्र निकाला। यह कोल्हापुर दरबार के स्वामित्व का पत्र था। कोल्हापुर से ही दूसरा पत्र *'ज्ञानप्रसारक'* 1853 में निकला। सन 1853 में *'मिलिट्री गजट'* शिमला से प्रकाशित हुआ।

छह अक्टूबर 1853 को उस्मान खां ने कस्बा अलीगढ़ (कोल) से *'फ़तह-उल-अख़बार'* प्रकाशित किया था। इसके सम्पादक कृपाशंकर सिकंदराबादी एवं क़ातिब फ़िदा अली बिजनौरी वाला दाद खां थे। चार पृष्ठों का यह साप्ताहिक प्रत्येक मंगलवार को निकाला जाता था। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मफ़तह-उल-अख़बार प्रेस में छपता था। समाचारों के साथ-साथ इसमें आगरा की सरकारी ख़बरें तथा न्यायालय में चल रहे मुकदमों की कार्यवाही प्रकाशित की जाती थी।

अर्द्ध वार्षिक पत्रिका *'इण्डियन एनल्स आफ मेडिकल साइंस'* का प्रकाशन अक्टूबर 1853 में कोलकाता से हुआ। बेडफोर्ड के सम्पादन में निकली इस पत्रिका में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सामग्री प्रकाशित की जाती थी। वार्षिक शुल्क दस रुपये था।

मासिक *'छोटो जागुलिया हितैषी सभार पत्रिका'* अक्टूबर सन 1853 में निकली। इस बंगला पत्रिका का उद्देश्य देशवासियों की मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक उन्नति था। कुछ ही महीने इसका प्रकाशन हुआ। अर्द्ध साप्ताहिक बंगला पत्र *'संवाद पाषाण दलन'* सन 1853 में प्रकाशित हुआ। चिकित्सा विषयक मासिक *'चिकित्सा रत्नाकर'* सन 1853 में हालदार सेन के सम्पादन में निकला।

बंगला भाषा में कृषि विषय पर केन्द्रित मासिक पत्रिका *'भारतवर्षीय कृषि विविध संग्रह'* का प्रकाशन सन 1853 में हुआ। इसमें कृषि तथा उद्यान विषयक लेख छापे जाते थे। प्यारेचंद मित्रा के सम्पादन में निकलने वाली इस पत्रिका ने बंगला भाषियों को कृषि विज्ञान सम्बन्धी नई-नई जानकारियाँ प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीती शाही फरमान की लड़ाई

1854

समाचार सुधावर्षण

आठ / नौ जून 1854 को पहला हिन्दी (बंगला) दैनिक पत्र *'समाचार सुधावर्षण'* निकला। पत्र के सम्पादक और प्रकाशक बंगला भाषी श्यामसुन्दर सेन थे। पृष्ठ संख्या छह से आठ होती थी। आधे से ज्यादा भाग में हिन्दी तथा शेष भाग में बंगला भाषा के मजमून रहते थे। 10 अगस्त 1854 के 'संवाद प्रभाकर' से, जो उस समय के बंगला दैनिकों में सबसे पुराना था, पता चलता है कि तब तक इसके 54 अंक निकल चुके थे। 'समाचार सुधावर्षण' का शीर्षक, पता, सँख्या, तिथि आदि दो भाषाओं में रहते थे- पहले हिन्दी में और फिर बंगला में। प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापन होते थे, वे भी पहले हिन्दी में और फिर बंगला में। दूसरे पृष्ठ पर भी विज्ञापन दिए जाते थे। 'समाचार सुधावर्षण' रविवार को छोड़कर सभी दिन निकलता था। इसका मासिक शुल्क एक रुपया था। आकार 45 गुणित 30 से.मी. तथा प्रत्येक पृष्ठ में चार कालम रहते थे।

'समाचार सुधावर्षण' की खबरों के कुछ उद्धरण :-

'आकाश यात्रा'

''8 जनवरि तारिख में काइट साहेब बेलुनपर सवार होकर विमान भ्रमणके उद्योग किया था, लेकिन करने सके नहीं। दिन दोपहर तिन घण्टाके वक्त बेलुन उठनेकी बात थी। उसीसे ही उक्त वक्तमें बहुत आदमि इकट्ठे हुए थे, पर संध्या पर्य्यन्त हर तरह ततवीर करके भी काइट साहेब बेलुन उठाने सके नहीं। देखनेवाले उदास होकर अपने 2 घर चले गये। ग्यासके दोषसे बेलुन शून्य अर्थात् आकासमें उठा नहीं, साहेब नया ग्यास ल्यावने के लिए कलकत्ते आदमी भेजे हैं, वह ग्यास आवने से अपने पाससे रुपये खरचकर और एक दफे बेलुन आस्मान में चढ़ाकर अपना बदनामी ढांकेंगे।''[1]

'नागपुर की बात'

''हम लोग के गवरनर जेनरल लार्ड डेलहौसि बहादुरने नागपुर राज्यापहरण कर राजराणियों का गहना ओ सब खजाना लूट लाके कलकत्ता महानगर के तोषक खानेमें रखा है। हेमलटन कम्पनी के साहेबान लोग स्पष्ट रूप से समाचारपत्रों में विज्ञापन देके उन पदार्थोंके निलाम करके बेचनेका समय सभों को जनावेंगे और एक विशेष बात सुनने में आई है कि नागपुर के महाराज

1. समाचार सुधावर्षण, 12 जून 1855

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

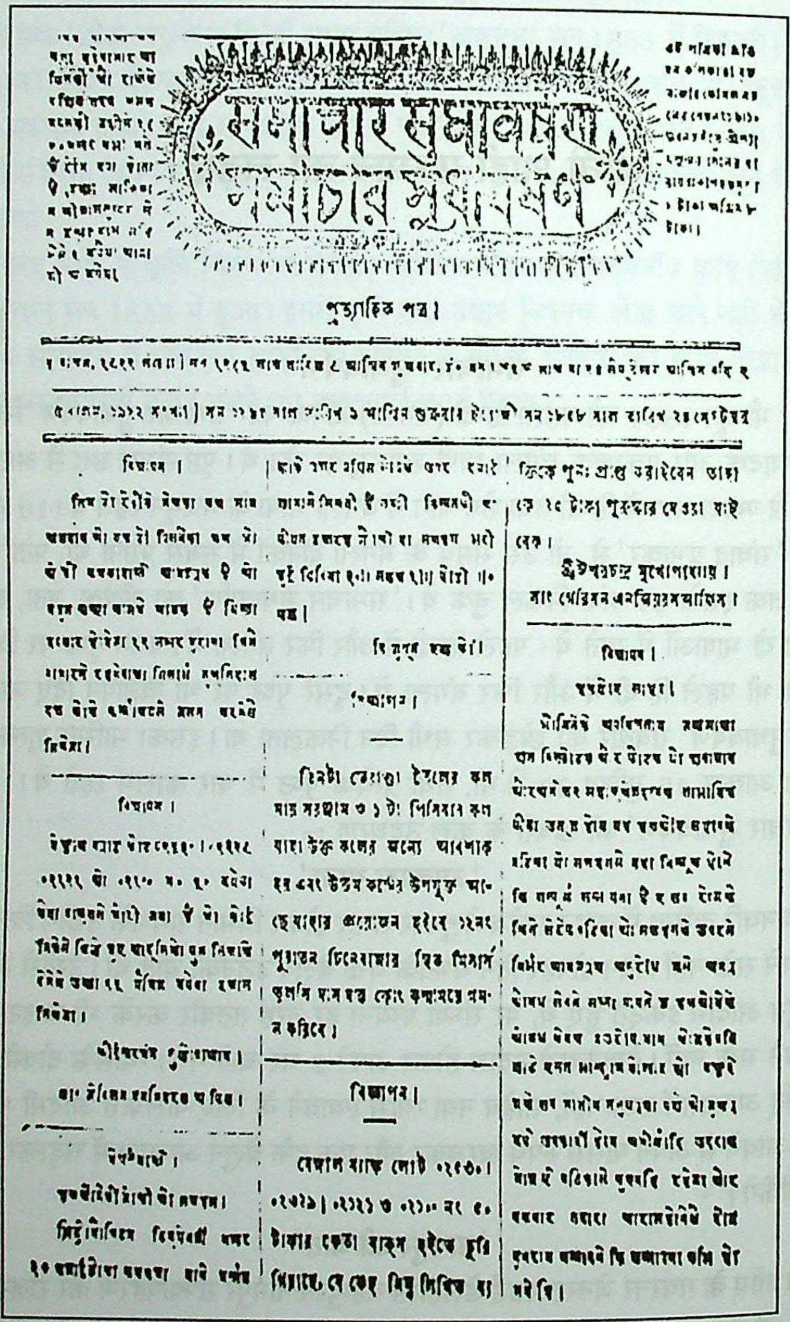

समाचार सुधावर्षण, हिन्दी का पहला दैनिक, जून 1854

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की राणियाँ जिस महल में बास करती हैं उन्हनको उस महल से निकालके दूर कहीं और एक क्षुद्र स्थान में बास करावने की इच्छा करते हैं और उस राजमन्दिर में कमिस्यनर साहेब को वास करने के लिए अनुमति देनेवाले हैं। लेकिन यिह बात सत्य है कि नहीं सो हम लोग नहीं कह सकते हैं अगर यिह बात सत्य है तो ब्रीटिश गवर्नमेण्ट ने भारतवर्ष निवासी राजोंपर अन्याय अत्याचार ओ जोरावरी करनेको जो आरम्भ किया है सो अब उस्का हद्द हो चुका, काहेसे कि धन गहना ओ कपड़ा लूटके फेर बैठनेका झोपड़ा भी छीननेका जब इरादा किया इससे अधिक और जोरावरी क्या करनी होती है? नागपुर राज्यपर जितना बलातकार किया ऐसा कोई और राज्यपर इतना बल प्रकाश नहीं किया। क्या अत्याचारी हत्यारे नवाबोंसे नागपुर के महाराजने इंग्रेजों पर बड़ा दुराचार किया था। वृथा निरपराधी राजा के मरेपर उनकी विधवा राणियों को नाना प्रकार की यातना देते हैं, यिह क्या उचित है? लेकिन अब इन लोगों को भी सब लोग कहेंगे कि लोग बड़े दुराचारी ओ अन्यायी हैं। जो होय एक बात का बड़ा आश्चर्य मालुम देता है ओ हम लोग हमेशा बराबर सुनते हैं कि इंग्रेज लोग स्त्री जातियों पर बड़ी दया करते हैं ओ उन्हनको कोई बातका क्लेश भी नहीं देते हैं, सो इतने दिन तक इंग्रेज लोगोंके दयालुपनका प्रकाश नहीं भया था। ईश्वर की इच्छासे भारतवर्ष ओ इयुरोप खण्ड दोनों स्थान में दयालुताका प्रकाश होके चमक रहा है। परन्तु हम लोग के गवरनर जेनरल लार्ड डलहौसि बहादुर बड़े सतकुलीन ज्ञानी प्रतिष्ठित दयावान पर उपकारी हैं। उन्हन ने नागपुर के राणीयों पर इस प्रकारका अत्याचार करनेको जो आरम्भ कर लिया, सो किसके उपदेशसे हुआ सो नहीं कहा जाता। अगर विलायत के कोर्ट आफ डैरेकटरों के तरफसे हुकुम आया होय तो लार्ड बहादुर क्या करेंगे, नहीं तो स्वभाव बदल गया होगा।''[1]

''बोम्बाई नगर के समाचारपत्रसे मालुम भया कि अगले दिनों में पेंढारि (पिंडारी) नामक जात के अत्याचारी लोग धनी लोगों की सम्पत्तिको जैसा लूट लेते थे उसी प्रकारसे आजकलके हम लोगके गवरनर जेनरल बहादुर अपने समान बन्धु-तुल्य स्वाधीन राजोंकी सम्पत्ति लूटने के लिए लण्डन नगर में जन्म लेकर भारतवर्षमें आये हैं। गवरनर जेनरल बहादुरके नाम पर समाचार पत्रिका वालों के इस प्रकारकी कडुई बात लिखना उचित नहीं। इस बातको सुनके हम लोगोंको बड़ा दुख हुआहै, लेकिन क्या करें हम लोग सबबात में असमर्थ हैं। राज्य शासनकर्ता की निन्दा सुनने से बड़ा पाप होता है। परन्तु राजा होय या प्रजा होय जो जैसा कर्म करेगा उसका माफिक यश भी होगा इस विषय में परमेश्वर भी असमर्थ है। छोटों की निन्दासे बड़ोंका कुछ मान घटता नहीं।''[2]

'वरिशाल के पत्रका समाचार'

हाय क्या सर्वनाश होने का समाचार सर्वदेश से आता है। एक तो पहाड़ियों का उपद्रव चारों ओर मच रहा है उसके मारे सब लोग बड़े दुःखी हो रहे हैं। इस दुःख के सिवाय प्रजाके पक्षमें और भी एक प्रकार अत्याचारियोंका उपद्रव वरिशालमें उपजनेवाला है ऐसा सुननेमें आता है ओ वरिशालसे हम लोगोंके मित्रने वहाँका समाचार लिख भेजा है कि वरिशाल में एक फकीर लाल ध्वजा लगाये हुए बांस को कंधे पर लेके सब लोगोंके सन्मुख वह फकीर एक प्रकार की बात सुन्दर रचना करके कहने लगा कि इस बखत इंग्रेजों पर चढ़ाई करने ही से अपने लोगोंको जय

1. समाचार सुधावर्षण, 18 मई 1855
2. वही, 30 मई 1855

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलेगा, काहेसे कि आजकल वे लोग क्रिमियाके युद्ध में बड़े व्याकुल है और इस बखत वे लोग हम लोगों के साथ नहीं लड़ सकेंगे। अगर वे लोग दो हजार सेनादल भेजेंगे तो उन्हनके विपक्षमें हमलोग 42000 सेनादल भेजेंगे। चलो हम लोग एकमता करके हथियार पकड़कर पराई अधीनताको त्याग अपनी स्वाधीनता सम्पादन करें। अगर हर जाके मारा होनेसे भी हम लोग को कुछ दु:ख नहीं, इसलिए अब उद्योग करना अति उत्तम है। अपनी देशकी ओ स्त्री पुत्र कुटुम्बोंकी ओ अपने स्वाधीनताकी रक्षा के निमित्त हम लोग हथियार पकड़ेंगे यिह काम करना बड़ा आवश्यक है ओ भाई लोग अब किसलिए एकमता करने को विलम्ब करते हो। श्री परमेश्वर की इच्छा ऐसी है कि हम लोग फेर भी सेवा वृत्तिको त्यागके स्वाधीन वृत्ति को अनुसरण करके राजसिंहासन पर बैठकर राज्य भोग करें।

इस वचन धाराको सुनत ही सुननेहारे सब कोई एकदम मदोन्मत होकर सन्तोष के मारे फूले नाचने लगे, ओ सब लोगोंने अपने मनमें प्रतिज्ञा किई है कि राजा के विरुद्धमें हम लोग सब शस्त्र पकड़कर फकीरकी सहायता करेंगे, और उन लोगोंके मनमें अच्छी तरह से सत्य करिके निश्चय भया है कि हम लोगोंको उद्धार करनेके लिए परमेश्वरने इस फकीर को भेज दिया है, और उन लोगोंने प्राण पर्य्यन्त प्रतिज्ञा किई है कि इंग्रेजोंसे युद्ध में भागेंगे नहीं। उन लोगों के उपद्रव आरम्भ होनेके लिए बड़ी देरी नहीं है, इसलिये पूर्व देश के तरफ गवर्णमेण्ट शीघ्र सेनादल भेज देंगे तो अच्छा है। दोनों तरफ अत्याचारियों का उपद्रव आरम्भ होने से फेर बड़ा कठिन हो जाएगा ओ मनुष्य सब धन ओ प्राण दोनों से नष्ट हो जाएंगे आगे समाचार सब स्पष्ट करिके फेर लिख भेजेंगे।

वरिशाल निवासी गंगानारायण पंडित

ता. 27 सेप्टेम्बर"[1]

मुगल बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र ने एक फरमान निकाला जिसमें देशवासियों से अपील की गई थी कि वे अँगरेजों को देश से बाहर निकाल दें। इस फरमान को 'समाचार सुधावर्षण' ने ज्यों का त्यों छाप दिया। उत्तेजना रोकने के लिए लार्ड केनिंग ने 13 जून 1857 को प्रेस एक्ट पारित किया और लेखन और मुद्रण की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा दिया। इस कानून के अन्तर्गत 17 जून को तीन पत्रों के सम्पादक-मुद्रक-प्रकाशक पर मुकदमे चले। कलम के ये सिपाही थे- 'दूरबीन' के अहमद अली, 'सुल्तान-उल-अखबार' के मुहम्मद ताहिर तथा 'समाचार सुधावर्षण' के श्यामसुन्दर सेन।

कोलकाता के सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होनी थी। 17 जून 1857 को सुप्रीम कोर्ट में श्यामसुन्दर सेन की पेशी हो गई। पाँच दिन के अंदर ही फैसला भी हो गया। 'दूरबीन' और 'सुल्तान-उल-अखबार' फारसी के पत्र थे, इन पत्रों ने भी मुगल बादशाह का फरमान प्रकाशित किया था। परन्तु मुहम्मद ताहिर (सुल्तान-उल-अखबार) और अहमद अली (दूरबीन) ने अपनी गलती कुबूल कर ली, अत: उन्हें मुक्त कर दिया गया। परन्तु श्यामसुन्दर सेन ने उनके खिलाफ लगाए गए आरोपों का प्रतिवाद किया। 17 जून को सारे दिन मुकदमे में बहस जारी रही। न्यायाधीशों के सामने वैधानिक कठिनाई आ गई कि उस समय भारत का वैधानिक शासक मुगल बादशाह था, जिसके नाम से ईस्ट इंडिया कम्पनी राजस्व वसूली करती थी। देश के शासक के फरमान का प्रकाशन राजद्रोह की परिधि के अन्तर्गत नहीं आया।

---

1. समाचार सुधावर्षण, 27 सितम्बर 1855

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लार्ड केनिंग ने 1 जुलाई 1858 को घोषणा की कि गदर समाप्त हो गया है। लेकिन 'समाचार सुधावर्षण' से प्रकट होता है कि इसके बाद भी संघर्ष जारी था। 19 सितम्बर 1858 के अंक में छपे एक समाचार में कहा गया कि कैप्टन मेह के नेतृत्व में अतिरिक्त सेनाएं दमदम आ गयी हैं और 19वीं रेजिमेंट का एक भाग मेजर हक के नेतृत्व में चिनपुरा भेजा गया है और चिनपुरा में सेना की शक्ति और अधिक बढ़ गयी है। (चिनपुरा बैरकपुर छावनी के करीब है, जहाँ भारतीय सेना ने सबसे पहले क्रान्ति की ज्वाला सुलगायी थी।) इस समाचार से स्पष्ट होता है कि सितम्बर 1858 तक बंगाल की स्थिति अँगरेजों के लिए निरापद नहीं हो पाई थी।

अँगरेजों को मिल रही मदद की खबरें भी इस अंक में छपी हैं। एक खबर में कहा गया कि सरकार ने इस बात पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की है कि बाबू विश्वनाथ पंडा ने नावों का एक पुल बनाया है, जिससे गोरखा सिपाहियों को नदी पार करने में बड़ी मदद मिली है। सरकार ने विश्वनाथ पंडा को पाँच सौ रुपये का इनाम दिया है तथा जिन दो गाँवों ने इस काम में उनकी मदद की थी, उन्हें दो-दो सौ रुपये का इनाम दिया है।

29 सितम्बर 1858 के अंक में छपे समाचार में कहा गया, ''कैप्टन मिनी द्वारा 19 सितम्बर को रीवा से लिखे पत्र से पता चलता है कि कमांडर मिचिल ने महू राज्य से सेनाएँ लेकर तात्या टोपे की सेनाओं पर हमला किया। हम लोग लड़ाई जीत गए हैं, विद्रोही हार गए हैं और हमने उनकी कुछ तोपें अपने कब्जे में कर ली हैं। विद्रोही इधर-उधर बिखर गए हैं और उत्तर पूर्व की ओर भाग रहे हैं। हमारी घुड़सवार सेना, जिसके पास बंदूकें और हथियार हैं, पैदल सेना के साथ उनका पीछा कर रही है। ये विद्रोहियों के अंतिम दिन हैं। ब्रिगेडियर कारपेन्टर ने उनके छिपने की जगहों को नष्ट कर दिया है और उनके एक सरदार रामनाथ सिंह को घायल कर दिया है।''

बंगीय साहित्य परिषद कोलकाता में उपलब्ध 1862 के अंक से 'समाचार सुधावर्षण' के समाचारों की भाषा का परिचय मिलता है:-

'बड़ी भयानक चोरी की तैयारी'

मे महिने के 5 तारीख के सिन्धियान नामक पत्र में लिखा है कि कराचि नगर में के 8वीं गिनती के पलटून में कई एक नए पठान सिपाही कर्म्स में भरती भये हैं वे लोग सब इसके पहले चोरी डकइती करके अपना काल श्रेय करते थे, कराचि (करांची) के कलेक्टर मिस्टर सदानस साहब ने उस दल में से दो सिपाहियों को खजाना खाने की रक्षा करने के लिए स्थापन किया पठानों ने उसी रात को खजाना खाना लूट करने का विचार किया, खजाने के रखवारी के दो सेना दल ने विह समाचार पाते साथ ही पहले पोलिस............ (उपलब्ध पृष्ठ का अपूर्ण समाचार)''

'समाचार सुधावर्षण' के उपलब्ध अंकों में 12 जून 1868 का अंक अंतिम है। इस पर 15 बालम, 53 नं. कलीकाता 31 ज्येष्ठ शुक्रवार 1275 (बंगाब्द) बंगला में, तथा 15 बालम 53 नं. कलकत्ता 31 ज्येष्ठ शुक्रवार 1275 साल हिन्दी में एवं 12 जून 1868 साल अँगरेजी में लिखा मिलता है। इस अंक में अधिकांश समाचार बंगला में ही छपे थे। हिन्दी में इक्के दुक्के समाचार ही मिलते हैं। 12 जून 1868 का एक विज्ञापन इस प्रकार है- ''इस छापाखाना में पुराना अक्षर बिक्री के वास्ते तैयारि है, जिसको दरकार होगा मोल भेज देने से पा सकेगा। श्री यादवचंद्र।

'समाचार सुधावर्षण' का मासिक मूल्य दो रुपये, सालाना चौबीस रुपये, पेशगी सालाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीस रुपये और छह महीने की पेशगी दस रु. था। एक अखबार का दाम आठ आने छपा था। यह पत्र 1873 तक प्रकाशित हुआ। 'समाचार सुधावर्षण' की विषय वस्तु तथा भाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस समय तक प्रकाशित पत्रों से यह परिष्कृत थी। इसमें देश-विदेश के रोचक समाचार, युद्ध विवरण, स्त्री अपहरण, पारस्परिक मानापमान तथा विद्रोह की खबरें भी शामिल हैं, छापे जाते थे। 'समाचार सुधावर्षण' का और वृत्तान्त तो नहीं मिलता लेकिन जो भी तथ्य सामने हैं वे यह परिचय देने में सक्षम हैं कि 'समाचार सुधावर्षण' हिन्दी पत्रकारिता का एक गौरवशाली अध्याय है।

कोलकाता से सायंकालीन अँगरेजी दैनिक *'ईवनिंग मेल'* 2 जनवरी 1854 को निकला। कम्पनी की सेवा से बर्खास्त डा.जी.डब्ल्यू. मैरियट इस पत्र के सम्पादक और प्रकाशक थे। यह टेबलायड आकार का अखबार था, जो छह महीने तक प्रकाशित हुआ। इन्हीं ने 'इक्लीजिएस्टिक इंटेलिजेंसर' साप्ताहिक का भी प्रकाशन किया था। यह पत्र भी कुछ समय बाद बंद हो गया।

साप्ताहिक *'स्माल काज कोर्ट क्रानिकल'* का प्रकाशन 28 जनवरी 1854 को कोलकाता से हुआ। मेकन और गोविन्द चन्द्र डे इस पत्र के सम्पादक थे। प्रकाशक एन. राबर्टसन एंड कम्पनी थी। न्यायालयीन कार्यवाही का प्रकाशन इसमें किया जाता था। इस पत्र का प्रकाशन जून 1854 तक हुआ। जनवरी 1854 में मासिक *'रसार्णव'* का प्रकाशन हुआ। फरवरी 1854 में कोलकाता से अँगरेजी साप्ताहिक *'इण्डियन स्टेण्डर्ड'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका प्रकाशन जून 1854 तक हुआ। 27 फरवरी 1854 को बंगला साप्ताहिक *'संवाद दिनकर'* प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक केदारनाथ बंद्योपाध्याय थे।

मुर्तज़ाई

पेशावर से उर्दू का प्रथम समाचारपत्र साप्ताहिक *'मुर्तज़ाई'* अप्रैल सन 1854 में प्रकाशित किया गया था। इस पत्र के सम्पादक और मालिक हाजी अलीकरम गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे। इसी कारण एक दूसरे पर छींटाकशी करने से बचा रहा। 'कोहेनूर' ने नये छापेखानों की सूचना देते हुए लिखा है:- ''ख़बर है कि एक मतबा जदीद बनाम 'गुलज़ारे पंजाब' श्री अमृतसर जी में बा एहत्माम रखेसिंह नाम किसी बुज़ुर्ग ने और दूसरा मतबा बनाम 'मुर्तज़ाई' बा एहत्माम अलीकरीम साहब पेशावर में जारी हुआ है और तीसरा मतबा लाहौर में बा एहत्माम मौलवी सुल्तान एहमद साहब नाम एक बुज़ुर्ग कुतुब फ़रोश की किताबें छापने के लिए ख़ास लाहौर में जारी होने वाला है खुदावंद करीम इनकी उम्र दराज़ करे और तरक़्क़ी बख़्शे।''[1] 'कोहेनूर' के सन 1854-55 के अंकों से पता चलता है कि उनमें 'मुर्तज़ाई' से लिए गये समाचारों का प्रकाशन हुआ है-

ख़बर पेशावर

''साहबे अख़बार पेशावर लिखते हैं के बारिश खूब हुई गर्मी का बाज़ार सर्द है बीमारी भी बकसरत है। गोरों की जान पर बन रही है। चौथी जुलाई को ऐन बारिशेबारां में रात तीन कैदी मलिक अनवर खां नाम मियादी पाँच साल दो कस मुलाज़िम नामीरदह मियादी चौदह-चौदह साल दीवारे जेल से उतर कर भाग गये। उसी वक़्त शोरऔगुल फ़रारियों का हुआ और दारोग़ा वग़ैरह ओहदेदारान तजस्सुस में अर्क़रेज़ी की मगर मफ़रूर काफ़ूर हो गये और शकर की तरह बह गये। फरज़न्द हसन नाम दारोग़ा मुहबिस और एक जमादार और चार बर्क़न्दाज़ मवाख़ज़ह

1. कोहेनूर, 11 अप्रैल 1854

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हैं। शाहज़ादा कोकान बदस्तूर पेशावर में रौनक़अफ़रोज़ हैं इरादाए वतन अनक़रीब दरपेश है साहिबे अख़बार पेशावर उनको हिदायत करते हैं के बाराहे क़ाबुल तशरीफ़ न ले जावें इस हिदायत का मुद्दुआ कुछ न खुला। 1857 में 'मुर्तजाई' को बंद करा दिया। सम्पादक को विद्रोही लेख प्रकाशित करने के अपराध में बंदी बना लिया।

मतला-ए-अनवार

'मतला-ए-अनवार' गुजरात (पंजाब) का प्रकाशन मई 1854 में हुआ। 'कोहेनूर' के सम्पादक मुंशी हरसुखराय ने पंजाब के समाचारपत्रों का उल्लेख करते हुए लिखा है:- ''पंजाब में फ़ज़ले एजदी से (ईश्वर की कृपा से) अब इल्मो हुनर की इस क़दर तरक़्क़ी है (अब ज्ञान एवं कला की इतनी उन्नति हुई है) के हिन्दुस्तान में शायद बीस बरस में नहीं हुई होगी। चुनांचे 'कोहेनूर' से लेकर 'लाहौर क्रानिकल' मुलतान व 'शुआ-उल-शम्स' मुलतान, 'चश्म-ए-फ़ैज़' सियालकोट, 'लाहौर गज़ट' व 'मतला-ए-अनवार' गुजरात, 'मुर्तुज़ाई' पेशावर, 'क़ादरी' गुरुदासपुर गो नौज़ाइदा हैं (यद्यपि नये हैं) आला तरबीयत, फ़ीउल नस्ल नौ मतबा तो अब मौजूद हैं (उच्च शिक्षा प्राप्त, कुलीन, नए छापेखाने वाले यहाँ पर हैं)।'' यह आठ पृष्ठों का था। इसका वार्षिक शुल्क दस रुपये था।

सन 1854 के जून माह में *'जगन्मित्र'* नाम से एक और पत्र रत्नागिरी से शुरू हुआ। 'जगन्मित्र' ज्ञानप्रकाश के आकार में प्रति सोमवार निकलता रहा। इसका शुल्क एक माह के लिए आठ आना था। वार्षिक शुल्क पाँच रु. था। इस पत्र के सम्पादक जनार्दन हरी आठले थे। आठले का स्वयं का छापाखाना होने से पत्र के आर्थिक नुकसान की भरपाई हो जाती थी।

'सत्यशोधक' सन 1854 की दीपावली पर (नवम्बर में) रत्नागिरी से निकला। शिक्षक हरि नारायण लिमये इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। फुलस्केप आकार का दो पृष्ठों का पत्र 1889 से टाइप पर छपने लगा। 22 दिसम्बर 1854 को *'नैयर-ए-आज़म'* मुफ़्ती मोहम्मद बख़्श ने बटाला (गुरुदासपुर) से प्रकाशित किया था।

'गुलशन-ए-नौबहार' सन 1854 में कोलकाता से फ़ारसी भाषा में प्रकाशित किया गया था। 1857 के संघर्ष काल में इसने अँगरेजी सत्ता के विरुद्ध लेख छापे, जिसके फलस्वरूप शासन ने प्रेस ज़ब्त कर लिया और इसका प्रकाशन बंद हो गया।

शाहजहांपुर में कोठी मन्नूलाल से पाक्षिक पत्र *'रिफ़ाए खलायक'* सन 1854 में निकला था। सम्पादक लाला बैजनाथ थे। चार पृष्ठ का यह पत्र गौरी प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये बारह आने था। सन 1854 में मुम्बई से टेलर स्मिथ के सम्पादन में *'बाम्बे क्वार्टरली रिव्यू'* निकला। गुजराती पत्र *'शमशेर बहादुर'* अहमदाबाद से सन 1854 में लल्लूभाई रामचन्द्र के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ।

अहमदाबाद से सन 1854 में गुजराती मासिक पत्र *'बुद्धि प्रकाश'* का प्रकाशन हुआ। यह पत्र गुजरात वर्नाकुलर सोसायटी ने प्रकाशित किया। 'बुद्धि प्रकाश' के प्रकाशक कुबेर दास थे। सत्यप्रकाश प्रेस से छपता था।

नवम्बर 1854 में *'मुद्गर'* पत्रिका निकली। नौशेरवां दाराबजी के सम्पादन में गुजराती पत्र *'आप अख़्तियार'* मुम्बई से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। 1856 तक प्रकाशित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्योत्साहिनी पत्रिका

कोलकाता में सन 1853 में सामाजिक सुधारों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से विद्योत्साहिनी सभा की स्थापना हुई। इसी सभा का मुखपत्र *'विद्योत्साहिनी'* पत्रिका थी, जिसका प्रकाशन कालीप्रसन्न सिंह ने 20 अप्रैल 1855 से किया था। पत्रिका ने बाल विवाह की हानियों पर जनता का ध्यान आकर्षित किया तथा विधवा विवाह का समर्थन करते हुए बहुपत्नीवाद को समाप्त करने की वकालत की। यह पत्रिका राजनीतिक मुद्दों से परहेज नहीं करती थी। इसने लिखा कि "जब तक देशवासी एकता के सूत्र में नहीं बँधेंगे तब तक गुलामी की जंजीरें जकड़ी रहेंगी।"

'इंडियन फ्रीमेन्स फ्रेण्ड' का प्रकाशन जनवरी 1855 से हुआ। इसका वार्षिक शुल्क 16 रुपये था। साप्ताहिक *'ज्ञानवर्धक'* फरवरी 1855 में प्रकाशित हुआ। *ज्ञानप्रसार, चंद्रिका* और *ज्ञानदर्शन* (त्रैमासिक) पत्रिकाएं भी इसी वर्ष निकली। 22 मार्च 1855 को मासिक *'सिद्धान्त दर्पण'* का प्रकाशन हुआ। इस बंगला पत्रिका के सम्पादक योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय थे।

21 अप्रैल 1855 को पटना से *'पटना हरकारा'* निकाला गया। इसके प्रकाशक शाह अबुतुराब तथा सम्पादक लाला बिंदाप्रसाद 'हसरती' थे। मई 1855 में हरणचन्द्र मुखोपाध्याय के सम्पादन में बंगला पाक्षिक *'बंगवार्ता वाह'* निकला। इसी माह एक और बंगला साप्ताहिक *'ज्ञानदर्पण'* प्रकाशित हुआ। जुलाई 1855 में मासिक पत्र *'सर्वार्थ पूर्णचन्द्र'* निकला। इस बंगला पत्र के सम्पादक अद्वैत चन्द्र थे। भारत के प्राचीन शास्त्रों और पुराणों का बंगला अनुवाद प्रकाशित करना, इतिहास की जानकारियाँ देना तथा जन समस्याओं के समाधान के लिए शासन का ध्यान आकर्षित कराना, इस पत्र के उद्देश्य थे।

'केलकटा मंथली मैगजीन' के स्वामी बाबूप्रसाद दत्त थे और सम्पादन का दायित्व शंभुचन्द्र मुखर्जी और क्रिस्टोदास पाल पर था। इसका प्रकाशन 15 अगस्त 1855 से हुआ था। स्तर अच्छा होते हुए भी, कुछ अंकों के बाद पत्रिका बन्द हो गई।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर केन्द्रित पत्रिका *'बंग विद्या प्रकाशिका'* सितम्बर 1855 में प्रकाशित हुई। इस बंगला मासिक के सम्पादक नवीनचन्द्र थे। कुछ समय बाद ही इसे पाक्षिक कर दिया गया। साहित्य और सामाजिक विषयों पर आलेख प्रकाशित किए जाते थे। सियालकोट से साप्ताहिक *'रहनुमा-ए-पंजाब'* 24 सितम्बर 1855 को प्रकाशित किया गया था। छह पृष्ठ के इस पत्र के प्रकाशक सत्य आदरजी एवं सम्पादक प्राणकिशन थे। यही प्राणकिशन 'मालवा अखबार' के भी सम्पादक रहे।

'कश्फ़-उल-अख़बार' मुम्बई से प्रकाशित उर्दू भाषा का दूसरा समाचारपत्र था जो लखनऊ के मुंशी अमान अली ने सन 1855 में प्रकाशित किया था। यह साप्ताहिक पत्र बुधवार को प्रकाशित होता था। इसका आकार 35 गुणित 25 से.मी., पृष्ठ सँख्या आठ थी। इस समाचारपत्र का परिशिष्ट *कश्फ़-उल असरार* था। इसके मुखपृष्ठ पर काव्य पंकितयों में इसका इश्तिहार छपता था जो किसी पूर्व समाचारपत्र में दृष्टिगोचर नहीं होता।

'मुफ़र्रह-ए-क़ुलूब' का प्रकाशन सन 1855 में कराची से हुआ था। यह साप्ताहिक पत्र कराची के कमिश्नर बारटेल फेरियर की सलाह पर मिर्ज़ा मुख़लिस अली मुशहदी ने निकाला था। वही सम्पादक थे। उनके बाद मिर्ज़ा मोहम्मद शफ़ी और फिर मिर्ज़ा मोहम्मद जाफ़र और मिर्ज़ा मोहम्मद सादिक़ सम्पादक रहे। सन 1906 तक इसका प्रकाशन होता रहा। 'मुदर्रिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ारसी' पत्रिका के सन 1885 के एक अंक में 'मुफ़र्रह-ए-क़ुलूब' के सम्बन्ध में टिप्पणी दी गई है-इस फ़ारसी साप्ताहिक का प्रकाशन सिंध में कराची से किया गया है। यह अच्छा साप्ताहिक है। पिछले तीस वर्षों से इसका प्रकाशन हो रहा है। इसमें विभिन्न देशों के समाचारों का प्रकाशन होता है। इस साप्ताहिक का आकार 20 गुणित 30 से.मी. एवं पृष्ठ 16 होते थे। प्रत्येक पृष्ठ पर दो कालमों में समाचार, लेख तथा ग़ज़ल और उन अमीरों की प्रशस्तियाँ रहती थीं जो इसे आर्थिक सहयोग प्रदान करते थे।

कराची से मिर्ज़ा मुख़लिस अली ने *'मुफ़र्रह-ए-क़ुलूब'* निकालने के साथ साथ (सक्खर) से उसी साल फारसी का समाचारपत्र *'मतला-ए-खुर्शीद'* भी निकाला था। दो स्थानों से अलग अलग दो अखबारों के प्रकाशन में कठिनाई होने के कारण कुछ समय पश्चात वे इसका प्रकाशन कराची से करने लगे। सन 1865 तक यह समाचारपत्र प्रकाशित होता रहा। बाद में इसका विलय 'मुफ़र्रह-ए-क़ुलूब' में हो गया और 'मुफ़र्रह-ए-क़ुलूब व मतला-ए-खुर्शीद' के नाम से एक ही समाचारपत्र सन 1906 तक निकलता रहा। एक परिवर्तन यह हुआ कि उर्दू की ग़ज़लें और लेख भी छापे जाने लगे। फ़ारसी का भाग विलुप्त हो गया।

'ज्ञानसागर' मासिक पत्र के रूप में प्रकाशित हुआ जो बाद में हर सप्ताह छापा जाने लगा। रघुनाथ त्र्यंबक जोशी इस मराठी पत्र सम्पादक-प्रकाशक थे। बाद में इसी पत्र का नाम 'नित्यसार संग्रह और ज्ञानसागर' हो गया। सरकारी रिपोर्ट में लिखा है कि जुलाई 1855 में मुम्बई से 'नित्यसार संग्रह' नाम का दैनिक पत्र प्रकाशित होता है और उसमें अँगरेजी, गुजराती, मराठी समाचारपत्रों की विशेष वार्ताएं संक्षेप में दी जाती हैं। यह पत्र नारायण मोरोजी ने निकाला है।

बाबू सदाशिव ने ईसाई धर्म प्रचार का विरोध करने के लिए पाक्षिक *'सद्धर्म दीपिका'* सन 1855 में शुरू किया। हिन्दू लोगों को हिन्दू धर्म तत्व समझाना तथा ईसाई धर्मियों की पोल खोलना इसका उद्देश्य था। तमिल पत्रिका *'राजवर्ती बोधिनी'* सन 1855 में मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्म के प्रचार के लिए प्रकाशित की गई। प्रेसीडेन्सी कालेज चेन्नै से तमिल और मलयालम में मासिक *'वर्नाकुलर न्यूज पेपर'* सन 1855 में प्रकाशित हुआ।

1856

तिलिस्म-ए-लखनऊ

25 जुलाई 1856 को *'तिलिस्म-ए-लखनऊ'* का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ और 8 मई 1857 को अंतिम अंक निकला। इस पत्र के मुख पृष्ठ पर ऊपर के भाग में बेलबूटों से सजा शीर्षक रहता था। पहले कालम में यह सूचना छपती थी- ''इस अख़बार की तबअ का हर जुमे को दस्तूर है और खबरों की तस्सीह का इलज़ाम ता मक़दूर है। मदह ओ ज़म का अंदाज़ नहीं रखा। हाँ सच कहने से कलम को बाज़ नहीं रखा। एक रुपया आठ आने क़ीमत माहवारी है, साढ़े छह रुपये शिशमाही और पंद्रह रुपये सालाना पेशगी है जो लोग बाद साल इनायत फरमाएं इक्कीस रुपये रहमत फरमाएं।''

'तिलिस्म' की यह खबर उसके तेवर का आईना है- ''लखनऊ में सनीचर आया है चोरों ने हंगामा मचाया है। जो सानहा है (घटना है) वह अजायब (अद्भुत) है। आँख झपकी पगड़ी ग़ायब है। मीर साहब ज़माना नाज़ुक है- दोनों हाथों से थामलो दस्तार (पगड़ी) जिस दिन से सल्तनत (शासन) न रही, शहर बिगड़ा चोरों की बन आई किसी में हालत न रही इसी अंधेर पर एक मसल (मुहावरा) याद आई के अंधे की जोरू का खुदा रखवाला। इस नाबीनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अंधत्व) पर यह हुकूमत अंधेर है, साफ़ अंधे के हाथ में बटेर है। रोज़ बातें अजायब होती हैं।''

उन दिनों बहादुर शाह ज़फ़र और वाजिद अली शाह के अधिकारों में कोई अंतर नहीं था। दिल्ली में बहादुर शाह ज़फ़र के आदेश क़िला मुअल्ला तक सीमित थे, उसी प्रकार वाजिद अली शाह के आदेश क़ैसर बाग़ से बाहर नहीं माने जाते थे, यद्यपि शासन इन दोनों के नाम से चलाया जाता था। वास्तव में सत्ता रेज़ीडेन्ट के हाथ में थी जिसके आदेश के बिना पत्ता भी नहीं हिलता था। यह एक ऐसा रहस्य था जिसे सब जानते थे और इस पीड़ा को सहते भी थे। उस पीड़ा का वर्णन 'तिलिस्म-ए-लखनऊ' ने इस प्रकार किया- ''ज़माने की गर्दिश ने अजब वीरानी दिखाई तमाम ख़ल्क़ को रिक़्क़त थी। यह हैरानी देख कर हसरत थी। देखने वालों का दिल कुढ़ता था मगर क्या हो सकता था। एक दूसरे का मुंह देख कर रोता बिलखता था।''

नौ जनवरी 1856 को पंजाब से प्रकाशित *'खुर्शीद'* एक अच्छी पत्रिका थी। इसमें शैक्षिक और साहित्यिक लेख छपते थे। इसके सिर्फ तीन अंक देखने को मिलते हैं। इस पत्रिका में कुल बावन पृष्ठ होते थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। सन 1857 में इसके प्रकाशित होने का विवरण नहीं मिलता। जनवरी 1856 में *'मर्म धुरन्धर'* मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। अप्रैल 1856 में बंगला मासिक *'सत्य ज्ञान संचारणी'* पत्रिका निकली। नवकृष्ण बसु और श्रीनाथ बंद्योपाध्याय सम्पादक थे।

ढाका से जे.एस. मिन्हास ने अँगरेजी साप्ताहिक *'ढाका न्यूज'* का प्रकाशन 21 अप्रैल 1856 से किया। हर शनिवार को प्रकाशित होने वाले इस पत्र के सम्पादक फोरबिस थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये आठ आने था। स्थानीय-समाचारों पर केन्द्रित इस अखबार का प्रकाशन सन 1957 के बाद भी जारी रहा। जून 1856 के पहले सप्ताह में *'वीकली न्यूज'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। इसमें सप्ताह भर के घटनाचक्र को प्रकाशित किया जाता था। किसी कर्मचारी से गोपनीय दस्तावेज हासिल कर छापने के मामले में इस अँगरेजी साप्ताहिक पर सरकार की भृकुटि तन गई। इसी वजह से तीन महीने में इसका प्रकाशन बन्द करना पड़ा। शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर हागसन प्राट ने चार जुलाई 1856 को साप्ताहिक *'एजुकेशन गजट'* का प्रकाशन किया। कोलकाता के सत्यार्णव प्रेस से हर सप्ताह शुक्रवार को यह निकलता था। ओब्रियन स्मिथ सम्पादक थे। सन 1866 में प्रियचरण सरकार और सन 1868 में भू देव मुखोपाध्याय सम्पादक हुए। शिक्षा जगत से सम्बंधित सूचनाएं और समाचार तथा लेख इसमें प्रकाशित किए जाते थे। जुलाई 1856 में काली प्रसन्न सिंह ने बंगला मासिक पत्रिका *'सर्वतत्व प्रकाशिका'* निकाली।

अँगरेजी पत्र *'फीनिक्स'* सन 1856 से 1861 तक कोलकाता से प्रकाशित हुआ था। इसकी एक उद्धृत खबर से प्रकाशन की पुष्टि होती है- ''सरकार के एक पत्र, फीनिक्स के वक्तव्य के अनुसार 15 अक्टूबर तक विद्रोहियों ने खजाने का जो रुपया लूटा था, उसकी मात्रा 1 करोड़ पौण्ड है, विद्रोह के फलस्वरूप उत्तरपूर्वी प्रान्तों की मालगुजारी में जो घाटा हुआ है, उसकी मात्रा 50 लाख पौण्ड है, और युद्ध के मद पर होने वाले खर्चे की मात्रा कम से कम एक करोड़ पौण्ड है।''

बंगला पाक्षिक *'अरुणोदय'* का प्रकाशन कोलकाता से लालबिहारी डे ने सन 1856 में प्रारम्भ किया था। इसकी प्रकाशक क्रिश्चियन ट्रेक्ट सोसायटी थी। कम्पनी के अधिकारियों और उनके परिवार के सदस्यों के प्रति बंगाल में काफी असन्तोष था। 'अरुणोदय' ने लिखा ''व्यापारियों के लड़के राजाओं के लड़के हो गए हैं।'' पत्र का मत था कि ऐसी स्थिति में कम्पनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अधिकार ताज को हस्तान्तरित होने भर से स्थिति नहीं सुधरेगी। यह तो तब होगा जब प्रशासन की कमजोरियाँ दूर की जाएँगी। 'अरुणोदय' ने बंगला भाषा के प्रति प्रशासन के रूखे रवैये की भी आलोचना की और कहा कि बंगला समाज की मूल भाषा है इसकी कीमत पर अँगरेजी नहीं पढ़ाई जानी चाहिए। इसका प्रकाशन 1908 तक होता रहा।

रोज़त-उल-तालीम अथवा राजपूताना अख़बार

एक अक्टूबर 1856 को जयपुर से *'रोज़त-उल-तालीम'* का प्रकाशन हुआ। हिन्दी में इसका नाम *'राजपूताना अख़बार'* था। यह द्विभाषी पत्र हिन्दी और उर्दू में निकलता था। इसके सम्पादक राजकीय पाठशाला के प्रधान अध्यापक कन्हैयालाल थे। पत्र के प्रकाशन का उद्देश्य बताते हुए लिखा गया- ''श्रीयुत साहब अजंट बहादुर व शिवदीनजी जो कि महाराजा के प्रमुख प्रधान हैं विद्या संबंधी विचारों की सहायता में चित्त दे रहे हैं और विशेष यह है कि पंडितजी साहब इतनी बड़ी पदवी पाय के भी आठवें दिन आय कर पाठशाला की सम्हाल करते हैं और नाना प्रकार की विद्याओं का प्रचार करते हैं। ऐसे अवसर को पाय मेरे चित्त में भी हुलास उत्पन्न हुआ, ज्यों एक अख़बार जिसमें राजपूताना देश के उत्तम नगरों का वृतान्त लिखा जावे, पाठशाला के छापेखाने से छप कर जारी हुआ करे। इस हेतु इस अखबार का नाम 'राजपूताना अख़बार' स्थापित किया है तो यह अख़बार प्रथम तारीख अक्तूबर महीने से जारी होगा। इस अख़बार में राजपूताना देश में प्रधान नगर यथा, जैपुर, जोधपुर, उदैपुर, कोटा, बूंदी, बीकानेर, जैसलमेर, अलवर, भरतपुर, अजमेर, सीकर, खेतड़ी इत्यादिक राजधानियों के वृतान्त की नवी नवी वार्ता अन्य देशन की व विलायतों की भी लिखी जावेगी।''

इस पत्र में 'इंग्लिशमैन', 'फ्रेन्ड आफ इंडिया', 'केलकटा गजट', 'ह्यूम न्यूज़', 'बाम्बे टाइम्स' आदि अँगरेजी समाचारपत्रों से खबरें उद्धृत की जाती थीं। हर पृष्ठ के एक तरफ़ उर्दू तथा दूसरी ओर नागरी ब्रजभाषा में मजमून छपते थे। सार्वजनिक हित के समाचारों को निशुल्क तथा निजी विज्ञापनों को दोआना प्रति पंक्ति की दर से छापा जाता था। पत्र के सम्पादक सजग थे- ''प्रथम ही यह अख़बार का कार्य प्रारंभ हुआ है। इस हेतु लेखक तथा छापने वाले की गलती से कुछ कसर रह गई। ईश्वर करे तो दूसरे परचे में सारी निकल जावेगी।''

'राजपूताना अखबार' के प्रत्येक अंक में शीर्षक के ऊपर सूर्य की आकृति छापी जाती थी तथा अंक में प्रकाशित विषयों का उल्लेख शीर्षक के चारों ओर बनाए गए वृत्तों में किया जाता था। इसमें इतिहास, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान का समावेश रहता था। मुख पृष्ठ पर 'रोज़त-उल-तालीम' शीर्षक के नीचे तिथि तथा वार अंकित करने के बाद पत्र का विज्ञापन प्रकाशित किया जाता था-

''राजपूत दरवेश की ख़बरें पारावार
पान करऊ बुध विबुध मति भयो अमिय अख़बार''

राजपूताना के प्रमुख नगरों में पत्र ने संवाददाता नियुक्त किए थे, जो इस समाचार से ज्ञात होता है-''1 अक्तूबर 1856- एक कारिस्पांडेन्ट स्थान भरतपुर से लिखते हैं कि इस इलाक़े में ऐसी वर्षा हुई कि कई मनुष्यों ने भी न कभी देखी न सुनी कि चारों तरफ शहर में आने तथा बाहर जाने का मार्ग सड़क पर होकर बह रहा है- आदि।''

कोलकाता से अक्टूबर 1856 में श्री ज्ञावती सभा ने बंगला में धार्मिक विषयों पर केन्द्रित मासिक *'अद्वैततत्व प्रदर्शिका पत्रिका'* प्रकाशित की। इसके सम्पादक द्वारकानाथ होरी तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुसूदन सरकार थे।

'मज़हर-उल-अख़बार' का प्रकाशन चेन्नै से सन 1856 में हुआ। 'मज़हर-उल-अख़बार' महीने में तीन बार प्रकाशित किया जाता था। प्रत्येक अंक के साथ एक परिशिष्ट भी निकलता था। इसका कार्यालय मोहल्ला त्रिमुलकटहरी में था। सम्पादक मोहम्मद ख़्वाजा बादशाह 'इबरत' शायर भी थे। मालिक मोहतमिम सैयद रहमत उल्ला तथा मुद्रक बिस्मिल्ला बेग थे।

मुंशी मोहम्मद अज़ीम सन 1849 में 'लाहौर क्रानिकल' निकालते थे। वहाँ से अलग होने पर उन्होंने सन 1856 में *'साप्ताहिक पंजाबी अखबार'* निकाला। जो कुछ समय बाद बंद हो गया। सन 1865 में इसका प्रकाशन पुन: हुआ और सन 1890 तक प्रकाशित होता रहा। आकार 25 गुणित 20 से.मी. तथा पृष्ठ सँख्या दस थी। 'पंजाबी अख़बार' गम्भीर प्रकृति का था। इसमें राजनीतिक लेख अँगरेजी समाचारपत्रों से ली गई खबरें, स्थानीय तथा बाहर के समाचार, मौसम सम्बन्धी जानकारी आदि छपते थे। *'पंजाब गवर्नमेंट गजट'* सन 1856 में शिमला से निकला। यह अँगरेजी पत्र था। वर्ष 1856 में *'दिन वर्तमानी'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। चेन्नै से प्रकाशित तेलुगु भाषा की यह साप्ताहिक पत्रिका भारतीय भाषाओं के विभाग में आचार्य पद पर नियुक्त पीटर पर्सिवल के सम्पादन में हर शनिवार को प्रकाशित होती थी। सैद्धांतिक रूप से यह अँगरेजों का समर्थन और जनता का ज्ञानवर्द्धन करती थी। इसका प्रकाशन 1870 में बंद हो गया।

सन 1856 में लखनऊ से प्रकाशित *'एजाज़'* के मालिक और सम्पादक बेनीप्रसाद थे। वे पहले लखनऊ दरबार में वाक़या निगार के पद पर तैनात थे। उन्होंने नवाज़गंज में प्रेस खोला था जिसका संचालन दुर्गाप्रसाद करते थे। शुक्रवार को प्रकाशित इस समाचारपत्र का पेशगी वार्षिक शुल्क सात रुपये आठ आना और वर्ष के अंत में देने वालों के लिए 10 रुपये आठ आना था।

सहर सामरी

17 नवम्बर 1856 को लखनऊ से *'सहर सामरी'* नामक उर्दू साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया गया। पंडित बैजनाथप्रसाद पत्र के मालिक तथा संचालक थे। आरम्भ में प्रसिद्ध शायर हज़रत अमीर मीनाई सम्पादक थे। पाँचवें अंक में 'इल्तिमास' शीर्षक से प्रकाशित किया गया कि हज़रत अमीर मीनाई ने इसका सम्पादन छोड़ दिया है और अब रघुवीर नारायण इसके सम्पादक हो गए हैं। यह आठ पृष्ठ का रहता था। स्थानीय समाचारों के अतिरिक्त, देश के विभिन्न स्थानों से प्राप्त समाचार तथा अन्य समाचारपत्रों से ली गई खबरें प्रकाशित की जाती थीं। 'सहर सामरी' लखनऊ वासियों की भावनाओं को स्वर देने वाला समाचारपत्र था जिसमें कम्पनी के अनाचार, शोषण, अत्याचार और कुप्रबन्ध का चित्रण किया जाता था। इस पत्र का उल्लेख सन 1869 तथा सन 1886 की सरकारी रिपोर्ट में मिलता है। तब इसके स्वामी पंडित जगन्नाथ तथा सम्पादक शंकरदयाल 'फ़रहत' थे।

सुबह सादिक

'सुबह सादिक़' का प्रकाशन सन 1856 में चेन्नै से हुआ। इसके मालिक शाह मोहम्मद सादिक़ शरीफ़ चिश्ती, सम्पादक जाफ़र हुसैन चिश्ती 'हरीफ़' तथा मुद्रक गुलाम मुहीउद्दीन हनीफ़ थे। सन 1856 में इसके प्रकाशन का प्रमाण लखनऊ से प्रकाशित 'सहर सामरी'[1] में छपे समाचार से मिलता है:-

1. सहर सामरी, 5 जनवरी 1857

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मालूम हुआ है के 27 अक्तूबर रियासत कर्नाटक जप्ती सरकारे इँग्लिशिया में आये और 'सुबह सादिक़' मद्रास ने यह बात रास्त सुनाई के इस रियासत की जब्ती दीवान की कारसाज़ी से हुई। उस नमक हराम की इफ़तरा परदानी से हुई।"

'सहर सामरी'[1] में छपा 'सुबह सादिक़' का एक अन्य समाचार- "सुबह सादिक़ मद्रास रजिस्टर लंदन के हवाले से नाक़िल हैं मज़ामीने फ़रहत उनकी तहरीर में शामिल हैं के लंदन में दरमियान एक हफ़्ता एक हज़ार इक्यासी आदमी फ़ोत हुए असीर ज़ंज़ीरे मल्कुल-मौत हुए। 1788 लड़की पैदा हुईं गुलशने हस्ती में नौ निहाले उम्मीद हवेदा हुईं। इस अंदाज़ से कसरत आबादिये मुल्क क़यास किया चाहिए शुआरे अवामुन्नास को किया चाहिए। इस सफ़ीहे में मज़कूर है दिले सामईन मसरूर है के इन दिनों शाहज़ादा एडन पेट्रिट साहब बहादुर की शादी ख़ाना आबादी शाही खानदान में बड़ी धूमधाम से हुई तमाम खिलक़त फ़ैज़याब इनाम ओ इकराम से हुई। 70-80 लाख रुपये का जहेज़ मिला हर एक अफ़सुर्दा दिल नसीमे-तहनत से गुल गुल खिला।" पृष्ठ सँख्या 12 थी। सन 1860 में सम्पादक अब्दुल रहमान शफ़्फ़ाफ़ थे। पत्र में साहित्यिक लेख भी छापे जाते थे।

दिसम्बर 1856 में विजयकृष्ण मुखोपाध्यय के सम्पादन में बंगला पाक्षिक *'उत्तर पारा'* निकला। माजिलपुर (चौबीस परगना) से दिसम्बर 1856 में *'माजिलपुर पत्रिका'* निकली। 23 दिसम्बर 1856 को आगरा के मुफ़ीदुल-ख़लायक़ प्रेस से लाला मुकन्दलाल के सम्पादन में साप्ताहिक *'मुफीद-उल-खलायक पत्र'* निकला। इसके मालिक मुंशी शिवनारायण थे। हर मंगलवार को छपने वाले इस पत्र के चार पृष्ठ होते थे। वार्षिक शुल्क नौ रुपये था। इसका प्रकाशन सन 1858 तक हुआ।

सन 1856 में मुम्बई से *'तमांतक'* नाम का मराठी पत्र शुरू हुआ। दुर्व्यसन दूर करने का संकल्प लेकर यह पत्र चलाया गया। इसमें समाचार और विज्ञापन छपते थे। जमाखिंडी में राजा की ओर से विद्या के प्रसार हेतु विद्यालय की स्थापना की गई। इसी विद्यालय से सन 1856 में *'परसु'* पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसमें नीति, ज्ञान, कला-कौशल के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित की जाती थी। उड़िया भाषा की मासिक पत्रिका *'प्रबोध चन्द्रिका'* ईसाई धर्म के प्रचार के लिए सन 1856 में प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक रेवरैण्ड लेसी थे। बेहला की हरिभक्ति प्रदायिनी सभा ने कोलकाता से सन 1856 में *'सांवत्सरिक संवाद पत्रिका'* निकाली। यह बंगला की वार्षिक पत्रिका थी। मुम्बई से महिलाओं पर केन्द्रित पहली गुजराती पत्रिका *'स्त्री बोध'* सन 1856 में प्रकाशित हुई। यह सचित्र मासिक पत्रिका थी। इसमें उपयोगी ज्ञानवर्धक सामग्री का प्रकाशन किया जाता था। खुरशेदजी कामा इसके सम्पादक थे।

1857

पयाम-ए-आज़ादी

फरवरी 1857 में दिल्ली से *'पयाम-ए-आज़ादी'* का प्रकाशन हुआ। इस पत्र का सम्पादन प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अज़ीमउल्ला खां करते थे और प्रकाशक बहादुरशाह जफ़र के पौत्र बेदार बख़्त थे। 'पयाम-ए-आज़ादी' के मुख पृष्ठ पर ये पंक्तियाँ छपती थीं-

"हम हैं इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा।
पाक वतन है क़ौम का, जन्नत से भी प्यारा।।"

---

1. सहर सामरी, 19 जनवरी 1857

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पंक्तियां सन 1857 की क्रान्ति के दिनों में राष्ट्रगीत के समान थीं। 'पयाम-ए-आज़ादी' कभी रोज, कभी सप्ताह में दो बार या कभी एक बार निकल जाया करता था। प्रारम्भ में उर्दू भाषा में, पश्चात उर्दू-हिन्दी में निकलने लगा। सन 1857 की क्रांति के समय मुग़ल सम्राट बहादुरशाह ज़फ़र ने देश की जनता के नाम फरमान जारी किया था, जिसमें उन्होंने सभी देशवासियों को एक होकर फिरंगियों को देश से निकाल देने का आह्वान किया था, क्योंकि ''खुदा ने इन्सान को जितनी बरकतें दी हैं, उनमें आज़ादी सबसे बड़ी नियामत है।'' इस पर टिप्पणी करते हुए 'पयाम-ए-आज़ादी' ने लिखा था- ''हिन्द के बाशिंदो, अरसे से जिसका इन्तज़ार था, आज़ादी की वह पाक घड़ी आज आ पहुँची है। हिन्दुस्तानी अब तक धोखे में आते रहे और अपनी ही तलवार से अपनी गर्दनें काटते रहे। अब हमें मुल्कफ़रोशी के इस गुनाह का कुफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) करना चाहिए। अँगरेज अब भी अपनी पुरानी दग़ाबाज़ी से काम लेंगे। वे हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ़ और मुसलमानों को हिन्दुओं के खिलाफ़ भड़काएंगे।'' स्वतंत्रता की पहली लड़ाई के असफल होते ही 'पयाम-ए-आज़ादी' पर प्रहार हुआ। बेदार बख़्त को फाँसी दे दी गई। जिन लोगों के घर में 'पयाम-ए-आज़ादी' की प्रतियां पाई गईं, उन्हें भी मौत के घाट उतार दिया गया।

'मख़ज़न-उल-अख़बार' 5 जनवरी 1857 को प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक अब्दुल्ला थे। पत्र हर इतवार को प्रकाशित होता था। बारह पृष्ठ के इस अखबार का शुल्क एक रुपया मासिक था।

लाहौर से पाक्षिक *'सफ़ीर-ए-पंजाब'* का प्रकाशन फरवरी 1857 में किया गया था। यह प्रत्येक मास की पहली तथा पंद्रह तारीख को निकलता था। 32 पृष्ठ के इस पत्र के स्वामी हरसुख राय, सम्पादक मुंशी नवलकिशोर, प्रबन्धक गुलाम मोहम्मद तथा मुद्रक अली बख़्श थे। वार्षिक शुल्क नौ रुपये था। 10 नवम्बर 1857 के अंक में इसको 'कोहेनूर' में शामिल करने की सूचना छपी थी।

गौरीशंकर तर्कवागीस ने 24 फरवरी 1857 को साप्ताहिक *'हिन्दू रत्न कमलाकर'* का प्रकाशन कोलकाता के भास्कर प्रेस से किया। *'ताज-उल-अख़बार'* का प्रकाशन मुहम्मद अब्दुल्ला खां ने मार्च 1857 में किया था।

इसके बावत 'सहर सामरी'[1] ने लिखा था- ''शहर देहली में एक ताजुल अख़बार हुआ है मज़ामीन व मायनी में यक्ताये रोज़गार हुआ है। आबोताब सुख़न से मानिन्द गोहरे आबदार बहम है। सहीफ़े में गुंज़ाइश क़लील थी इस वजह से खुलासाये इश्तिहार रक़म है।''

'मैअदन-उल-अख़बार' के सूत्र सिर्फ इस इश्तहार में मिलते हैं- ''बसंत ऋतु है, बंजर भूमि उपवन बन गई है। विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु दृष्टिगोचर होते हैं उपवनों के आसपास बुलबुलों की भीड़ एकत्रित है ऐसे में विचार आया कि यह सृष्टि क्षण भंगुर और नश्वर है तथा जो नश्वर है उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए। मनुष्य को वह कार्य करना चाहिए जिससे दूसरों को प्रसन्नता हो और सुख मिले अतः समाचारपत्र प्रकाशित करने का निश्चय किया है बाज़ार का वातावरण देखकर इसके मूल्य को कम रखा है। इसका शुल्क चौदह आना है। पेशगी वार्षिक शुल्क नौ रुपये है तथा वर्ष के अंत में देने वालों के लिए शुल्क तेरह रुपये है। एक आना भी कम नहीं लिया जायेगा। इसका नाम मैअदन-उल-अख़बार रखा है। बृहस्पतिवार को

1. सहर सामरी, 9 मार्च 1857

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप कर शुक्रवार को प्रेषित किया जाएगा। एक बार इस पर नजर डालें। लखनऊ के बाहर के ग्राहक को डाक खर्च स्वयं वहन करना होगा। यदि इसका ग्राहक बनना स्वीकार न हो तो दूसरे अंक के प्रकाशन से पहले सूचित करके हानि से बचें।''

मार्च 1857 में लखनऊ से *'अय्यार-उल-अख़बार'* साप्ताहिक समाचारपत्र का प्रकाशन सैयद आफ़ताब अली ने किया था। वे ही इसके सम्पादक थे। इतवार को इसका प्रकाशन होता था। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था।

'अशरफ़-उल-अख़बार' के प्रकाशन के सम्बन्ध में 'सहर सामरी'[1] में छपे इश्तिहार से ज्ञात होता है कि यह समाचारपत्र मार्च 1857 में लखनऊ से प्रकाशित किया गया था। सैयद वाजिद अली बिलग्रामी संपादक, प्रकाशक, मुद्रक थे। इतवार को प्रकाशित होता था। पेशगी वार्षिक शुल्क दस रुपये तथा वर्षांत पर पंद्रह़ रुपये रखा गया था।

कालीपद चट्टोपाध्याय ने 13 अप्रैल 1857 को बंगला मासिक *'विज्ञान मिहिरोदय'* निकाला। इसके सम्पादक नारायण छत्तराज गुणानिधि थे। इस पत्रिका में विज्ञान विषयक लेख, सामान्य समाचार और ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की जीवनी प्रकाशित की जाती थीं।

खुलासत-उल-अख़बार

बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र के मुक़दमे की फाइल से *'खुलासत-उल-अख़बार'* के प्रकाशन की पुष्टि होती है। 13 अप्रैल 1857 के अंक में प्रकाशित समाचार बतौर उदाहरण प्रस्तुत है- ''ईरान-कुछ दिन हुए जामा मस्जिद की दीवार पर एक इश्तहार चिपकाया गया था। उस पर एक तलवार और एक ढाल की शकल बनी हुई थी और यह कहा जाता था कि यह घोषणा ईरान के शाह की ओर से आई है- ''समस्त सच्चे मुसलमानों का यह धार्मिक कर्त्तव्य है कि वे ईरान के शाह की सहायता करने में कटिबद्ध हों और सच्चे हृदय से उसके शासन और अधिकारों को पुष्ट करें और अङ्गरेज़ों के विरुद्ध धार्मिक युद्ध में प्रवृत्त हों ताकि उन्हें नष्ट और बरबाद करके उसकी कृपा के पात्र बनें, और उन पुरस्कारों तथा उपाधियों को प्राप्त करें जो ईरान का शाह उनको उदारतापूर्वक प्रदान करेगा।'' घोषणा में इस बात का भी उल्लेख था कि ईरान का शाह शीघ्र हिन्दुस्तान आएगा और इस देश को स्वतंत्र बनाएगा।''

अप्रैल 1857 में कोलकाता से हास्य विनोद की पत्रिका *'कोमस ऑर केलकटा चारवारि'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक के.पी.मूरी थे। इस पत्रिका की प्रेरणा ब्रिटिश पत्रिका 'पंच' से ली गई थी। कोलकाता से भोलानाथ मुखोपाध्याय के सम्पादन में जून 1857 से बंगला मासिक पत्रिका *'लोक लोचन चन्द्रिका'* प्रकाशित हुई।

'अकमल-उल-अख़बार' का प्रकाशन सन 1857 के संग्राम के कुछ समय पश्चात हुआ। इसके मालिक़ हकीम महमूद खां और सम्पादक मुंशी बिहारीलाल 'मुश्ताक़' थे। अख़बार के 20 अप्रैल 1870 के अंक में बजट पर प्रतिक्रिया पठनीय है- ''बेशक जो लोग गवर्मेंट के खैरख्वाह और रियाया के तालिबे फ़लाह हैं वह हरगिज़ इस बजट को पसंद नहीं करेंगें क्योंकि ऐसा निज़ाम किस काम का के बेजंग-ओ जदाल के साल में भी खज़ाना शाही पर इख़्तलाल और पे दर पे इन्कम टेक्स देते देते रिआया ए शकिस्ता बाल का बुरा हाल है जब साले गुज़िश्ता का बजट निकला था उस वक़्त तमाम लोग इस सबब से नाखुश हुए थे के बावजूद के सरकार दौलतमदार की तरफ़ से विल्सन साहब ने बड़े शद्दोमद के साथ इक़रार किया था के पाँच बरस

1. सहर सामरी, 9 मार्च 1857

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद यह इन्कम टेक्स नहीं लिया जाएगा फिर सर रिचर्ड टेम्पल ने एक रुपया इन्कम टेक्स मुक़र्रर किया। इसके बाद उसी साल के अन्दर इसको दूना किया गया लेकिन इसके साथ ही लोगों ने तौअतन ओ करहन इसको मान लिया और रो पीट कर छह महीने एक रुपये के हिसाब से जुमला डेढ़ रुपये के अदा किया और यह समझा के अब कोई लड़ाई भिड़ाई जद्दाल ओ क़त्ताल नहीं है- सो आइंदा साल जैसा के गवर्नर जनरल वायसराय बहादुर ने वायदा फ़रमाया है और इन्कमटेक्स देना नहीं पड़ेगा। सो जनाब सर रिचर्ड टेम्पल साहब बहादुर मुशीरेमाल के हुसने तदबीर के सबब यह हुआ के एक रुपये के बदले तीन रुपये दो आना टेक्स देना पड़ा। सर रिचर्ड टेम्पल बहादुर ने अपने हिसाब किताब और मंसूबे को ऐसा छिपा कर रखा के गोया इसके फ़ाश होने में बिल्कुल निज़ाम बिगड़ जावेगा। हालांके अगर इस क़दर न छिपाते और खर्च की तफ़सील शरह व बस्त के साथ लोगों को सुना देते तो पक्का था के लोग इतने बरहम न होते और इस टेक्स को अदा करने को इतना नागवार न समझते...''

सन 1857 के विद्रोह के दौरान एक नया साप्ताहिक मैदान में आया। इसका नाम 'प्रेस' था। इसका प्रकाशन और मुद्रण बंगाल हरकारू प्रेस से हुआ था। पहला अंक शनिवार, सात नवम्बर 1857 को छपा। यह अँगरेजों ने ही निकाला था। इसकी नीति भारतवासियों के विरुद्ध थी। अपने 12 सितम्बर 1857 के अंक में इसने 'हमारी नीति' के अंतर्गत लिखा- ''कुछ समय से हमारा इरादा घटनाक्रम पर नजर रखने का था। देशी भाषाओं के प्रेस द्वारा किये जा रहे लेखन का हमने बारीकी से अध्ययन किया। हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं यह सही नहीं है।'' इसकी सम्पादकीय व्यवस्था बंगाल हरकारू से बिलकुल अलग रखी गई थी। वार्षिक मूल्य 20 रुपये था। यह पत्र सन 1860 में बंद हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू का पहला दैनिक अखबार

1858

उर्दू गाइड

उर्दू पत्रकारिता में दैनिक समाचारपत्र के प्रकाशन का सिलसिला सन 1858 में 'उर्दू गाइड' के साथ शुरू होता है। इसका श्रेय भी शहर कोलकाता को ही है जहाँ मुंशी वलीउल्ला लेन के मकान नं. 6 से मौलवी अजीज अंसारी के सम्पादन में यह अखबार निकला। पत्र के मालिक मौलवी कबीर अहमद खाँ थे। मतबा मज़हरुल अजाइब में इस पत्र का मुद्रण होता था। वार्षिक ग्राहक शुल्क 12 रुपये और पृष्ठ सँख्या चार थी। भारत में उर्दू पत्रकारिता का आरम्भ 1822 में 'जामे जहाँनुमा' से होता है, जिसके 36 वर्ष बाद उर्दू की दैनिक पत्रकारिता का युगारम्भ हुआ। उन दिनों भारतवर्ष में दैनिक समाचारपत्र गिने चुने ही थे। 'उर्दू गाइड' में प्रकाशित यह समाचार दृष्टव्य है-

''तीसवीं मार्च का एक टेलीग्राम जो कराची बन्दरगाह से बम्बई गजट को मिला है उससे मालूम हुआ है के वहाँ के पादरियों ने एक रिसाला छापा है जिस पर वहाँ के मुसलमान बहुत नाखुश हुए और मुसलमानों ने उस पादरी के मकान में बहुत सी ईंटें फेंकी थीं। यह रिसाला इलाहाबाद से छप कर आया था। एक अरसे से पादरी शेल्डन बाँटते थे।''[1]

'उर्दू गाइड' में समाचारों के अतिरिक्त हिन्दुस्तान के राजा, नवाब, धनी व्यक्तियों आदि के सम्बन्ध में विवरण प्रकाशित किया जाता था। भोपाल की नवाब बेगम के सम्बन्ध में भी उर्दू गाइड में समाचार छपे थे। वे अँगरेजों की समर्थक थीं। 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय भोपाल रियासत ने अँगरेजों की सहायता की थी। इस सम्बन्ध में 'उर्दू गाइड' में समाचार दिया गया।[2]

''1857 में जब हिन्दुस्तान में बलवा हुआ तो इसकी इब्तेदा वहाँ इस तरह शुरू हुई के ----माह अप्रैल में चंद इश्तिहार जेहाद तख्त देहली की तरफ से मुल्क भोपाल में तक़सीम हुए और जनाब सिकंदर जहाँ बेगम साहिबा ने इस ख़बर को पाते ही साहब एजेण्ट को तलब फरमा कर दर-पै-तदारुक हुईं और जून के महीने में बेगम साहिबा ने सुराग़ लगा कर पता पाया के एक शख़्स जमादार फ़ौज की जमीअत कर रहा है इस ख़बर को पाते ही उसको गिरफ़्तार कर

1. उर्दू गाइड, 5 अप्रैल 1874
2. वही, 3 सितम्बर 1867

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LUCKNOW

اوده اخبار

4th July 1875.

अवध अखबार (उर्दू), लखनऊ, सन 1858

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया और शहर बदर करने का हुक्म दिया। जुलाई के महीने में जब होलकर ने बलवा किया और साहब लोग भाग कर भोपाल में आए तो बेगम साहिबा ने बाहिफ़ाज़त तमाम होशंगाबाद तक पहुँचा दिया बावजूद के उनके क़राबतदार और वुज़राअ का एक तब्क़ाअ खिलाफ था ताहम बेगम साहिबा ने इस्तिक़लाल नहीं छोड़ा और बिलाख़िर अपने क़राबतदारों और फौज कंटिन्जेन्ट के असलहदारों में 149 आदमियों को जो बानि-ए-फ़साद थे सज़ाए संगीन दी।''

आखिरी दिनों में दैनिक 'उर्दू गाइड' का प्रकाशन साप्ताहिक पत्र के रूप में प्रत्येक शुक्रवार को होने लगा। सन 1878 तक इस अख़बार का प्रकाशन होने के सूत्र मिलते हैं। 'उर्दू गाइड' के सम्बन्ध में उसके समकालीन पत्र दिल्ली के 'नुसरत-उल-अख़बार'[1] की टिप्पणी दृष्टव्य है- ''उर्दू गाइड' से कुछ फैज़ हिन्दुस्तान व खास पंजाब में नहीं गो बंगाली और अँगरेजी का हिस्सा है यह अख़बार कलकत्ता से बड़े औराक़ पर टैप में छपता है।'' लाहौर से प्रकाशित 'अंजुमन पंजाब'[2] लिखता है- ''उर्दू गाइड के अक्सर करसपान्डेन्ट भी हैं और शायक़ीन भी ज्यादा हैं।''

द्विभाषी *'सुबोधिनी'* 13 जनवरी 1858 को चिनसूरा से प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक रामचन्द्र दीक्षित थे। 18 जनवरी 1858 को बंगला अर्द्ध साप्ताहिक *'कालिकाता वार्तावाह'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। मासिक *'रचना रत्नावली'* साहित्यिक पत्रिका थी। जनवरी 1858 में प्राणनाथ तथा वैद्यनाथ चन्द्र ने इसका प्रकाशन किया। अप्रैल 1858 में बंगला मासिक *'हितैषिणी'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ।

अवध अख़बार

सन 1857 की क्रांति के असफल होने के बाद उर्दू पत्रकारिता का रुख कुछ काल के लिए नरम जरूर पड़ा लेकिन ईस्ट इण्डिया कम्पनी की विदाई और भारत के शासन सूत्र सीधे ब्रिटेन के सम्राट के अधीन आ जाने के बाद फिर परिवर्तन आया और देश की समस्याओं पर राय जाहिर की जाने लगी। इसी दौर में सन 1858 में लखनऊ से मुंशी नवलकिशोर ने उर्दू साप्ताहिक *'अवध अख़बार'* का प्रकाशन आरम्भ किया। बाद में यह दैनिक समाचारपत्र हो गया। करीब 90 साल तक इस पत्र का प्रकाशन होता रहा। समाचारपत्र के प्रकाशन और सम्पादन में मुंशी नवलकिशोर की गहरी रुचि थी। सन 1856 में वे आगरा से 'सफ़ीर-ए-आगरा' साप्ताहिक निकाल चुके थे। इस अखबार से एक अच्छे सम्पादक के रूप में उनकी पहचान बनी। सन 1857 में वे 'कोहेनूर' (लाहौर) के सम्पादक रहे, किन्तु उसी वर्ष वापस लखनऊ लौट आए। सर राबर्टगुमरी और कर्नल ऐबट के संरक्षण में उन्होंने मतबअ नवल किशोर कायम किया। मुंशीजी की योग्यता के कारण लखनऊ का नवल किशोर प्रेस जल्दी ही अग्रणी मुद्रणालय के रूप में स्थापित हो गया। उस समय शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में इस मुद्रणालय के प्रकाशन छाए हुए थे।

'अवध अख़बार' 70 गुणित 50 से.मी. आकार में छपता था। सन 1871 में 'अवध अख़बार' सप्ताह में दो बार प्रकाशित किया जाने लगा। सर सैयद अहमद ने 'तहज़ीब उल अख़लाक़' में इस पत्र के सम्बन्ध में लिखा- ''अवध अख़बार' पहले से ही बावक़अत (प्रतिष्ठित) अख़बार था और अब तो कुछ कहना ही नहीं है। हमको यह उम्मीद है के हमारे और हमअस्र (समकालीन) विकाय निग़ार (पत्रकार) भी 'अवध अख़बार' की तक़लीद

---

1. नुसरल-उल-अखबार, 1 अगस्त 1876
2. अंजुमन पंजाब, 28 जनवरी 1876

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(अनुसरण) करेंगे और मुंशी नवल किशोर की आला हिम्मती (साहस) से यह उम्मीद है के उनका अख़बार मिस्ल (के समान) बड़े-बड़े बावक़्त (सम सामयिक) अँगरेजी अख़बारात के रोज़ाना जारी हुआ करेगा। और खुदा करे ऐसा ही हो।''

सर सैयद की यह अभिलाषा 1874 में पूरी हुई, जब 'अवध अख़बार' दैनिक पत्र के रूप में निकलने लगा। मौलवी गुलाम मोहम्मद 'तपिश', पंडित रतननाथ 'सरशार', मौलवी अहमद हसन शौकत, अब्दुल हलीम 'शरर', सैयद अमजद अली 'अशहरी', मिर्जा हैरत देहलवी, मौलाना जालिब देहलवी जैसे आला दर्जे के अदीब 'अवध अखबार' से सम्बन्धित रहे हैं।

जब मौ. गुलाम मोहम्मद तपिश 'अवध अख़बार' के सम्पादक थे, तब उनके और संचालक मुंशी नवल किशोर के बीच किसी मुद्दे पर मतभेद हो गया जो इतना गहरा गया कि सम्पादक को हटा दिया गया। तत्कालीन समाचारपत्र जगत के स्वस्थ पर्यावरण की बानगी देखिए कि सर सैयद अहमद ने अपने पत्र 'अखबार साईंटिफिक सोसायटी'[1] में लिखा- ''क्या यह बात अफ़सोस के लायक नहीं है के मुंशी नवलकिशोर सा नामवर शख़्स की निस्बत जैसे के मुंशी गुलाम मोहम्मद साहब हैं बेएतनाई (उपेक्षा) करके उनको हाथ से खो दे और इस बात का ख्याल न करे के ऐसे शख़्स की अलेहदगी (अलग) करने से ऐसे मशहूर अख़बार की तरक्क़ी में जिसका शोहरा (ख्याति) हिन्दुस्तान से इंग्लिस्तान तक है क्या नुक़सान आवेगा।'' इस टिप्पणी का छपना था कि मुंशी नवल किशोर ने गुलाम मोहम्मद खां 'तपिश' को वापस बुला लिया। वे कुछ समय तक 'अवध अख़बार' में रहे। पश्चात पंडित रतननाथ 'सरशार' ने सम्पादक का दायित्व सम्हाला।

पं. रतननाथ 'सरशार' के सम्पादन में 'अवध अख़बार' की लोकप्रियता बढ़ी। इसमें प्रकाशित होने वाला 'फ़साना-ए-आज़ाद' स्तम्भ पत्र की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण बना। 'जराफ़त' शीर्षक के अन्तर्गत लखनऊ के रीति रिवाजों पर छपने वाले चुटीले लेखों को खूब पढ़ा जाने लगा। 'सरशार' ने विभिन्न लेखों की कड़ियाँ मिला कर उन्हें कहानी के रूप में छापा। प्रवाहमयी शैली, नये-नये शब्दों का प्रयोग, विचारपूर्ण लेख और चुटीली प्रस्तुति ने उन्हें जनप्रिय बना दिया। दिसम्बर 1878 से 1879 तक करीब एक साल 'फ़साना-ए-आज़ाद' का 'अवध अख़बार' में नियमित प्रकाशन हुआ। बाद में यह पुस्तकाकार भी निकला। फरवरी, 1880 से सरशार ने 'अवध अख़बार' के सम्पादन से मुक्ति पा ली। मौलवी अहमद हसन 'शौकत' और अब्दुल हलीम 'शरर' भी 'अवध अख़बार' के सम्पादन से सम्बद्ध रहे। शरर को 'अवध अख़बार' के विशेष संवाददाता के रूप में हैदराबाद भी भेजा गया था। 'अवध अख़बार' एक सुव्यवस्थित समाचारपत्र था। तार द्वारा समाचार प्राप्त करने की व्यवस्था इसने की थी, जिन्हें प्रथम पृष्ठ पर छापा जाता था।

'अवध अख़बार'[2] के सोच की गहराई को प्रगट करने वाले एक लेख का अंश यहाँ उद्धृत है- ''हमारी यह क़ैफ़ियत है कि ज़ैद पर कोई सदमा पड़ा उमर बाग़ बाग़ हो गया। एक क़ौम पर मुसीबत नाज़िल हुई दूसरी क़ौम के घर में घी के चिराग़ जल गए। इस नाइत्तेफ़ाक़ी और तआस्सुब का बुरा हो के हिन्दुस्तान का इसी ने सत्यानाश कर रखा है। इस नाइत्तेफाक़ी ने हमको इस दर्जे पर पहुँचा दिया है। खुदा जाने अब आइन्दा क्या करेगी?''

---

1. अखबार साईंटिफिक सोसायटी, 29 सितम्बर, 1876
2. अवध अखबार, 18 अगस्त 1880

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अवध अख़बार' के सोच में आधुनिकता के लिए गुंज़ाइश थी, लेकिन पूरब का सब कुछ छोड़कर पश्चिम की नकल करने के वह खिलाफ था। 'अवध अख़बार'[1] में प्रकाशित लेख का यह अंश इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है। इस लेख का शीर्षक था- हिन्दुस्तान और पूर्वी पोशाक- ''क्या हमारा दिल और हमारा मुशाहिदा इस अम्र की गवाही नहीं देता के एक हिन्दुस्तानी अँगरखा, पाजामा और उस पर चुग़ा या अबा (चोंगा अथवा लम्बा कोट) और सिर पर इमामा या दस्तार (पगड़ी या साफा) पहनता है तो कितना भला मालूम होता है गोया उसकी सक़ाफत और वजाहत (संस्कृति एवं सुंदरता) दुगनी और चौगुनी हो जाती है उसके मुक़ाबले में जब कोई हिन्दुस्तानी कोट पतलून टाँग कर खरूज़ (बाहर निकलता) करता है तो कितना मकरूह और हवन्नक (घृणास्पद एवं मूर्ख) मालूम होता है।'' मुंशी नवलकिशोर का निधन सन 1895 में हुआ। तब तक वही 'अवध अख़बार' का सम्पादन-संचालन करते रहे। पश्चात उनके पुत्र मुंशी प्रयागनारायण और पौत्र मुंशी यशनारायण ने नवलकिशोर प्रेस का दायित्व सम्हाला।

अर्द्ध साप्ताहिक *'चमत्कार मोहन'* कोलकाता से अगस्त 1858 में श्रीकान्त शर्मा ने निकाला। केदारनाथ दत्त इसके सम्पादक थे। अक्टूबर 1858 में बंगला मासिक *'कालिकाता पत्रिका'* मथुरानाथ दत्त के सम्पादन में निकली।

सोमप्रकाश

साप्ताहिक *'सोमप्रकाश'* का प्रकाशन ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने प्रारम्भ किया था। इसका प्रथम अंक 15 नवम्बर 1858 को प्रकाशित हुआ। विद्यासागर की बीमारी के कारण उन्होंने पत्र द्वारकानाथ विद्याभूषण को दे दिया जिन्होंने कुशलतापूर्वक पत्र का सम्पादन किया और पत्र की प्रतिष्ठा बढ़ाई। 'सोमप्रकाश' में राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा होती थी। उस समय देश भर में अँगरेजों के खिलाफ वातावरण था। प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी नहीं थी। जो लोग सरकारी तंत्र में कार्यरत थे उन्हें अँगरेजों के मुकाबले बहुत कम वेतन दिया जाता था। 'सोमप्रकाश'[2] ने प्रश्न उठाया, ''क्या 8 व्यकित 20 करोड़ जनता के लिए कानून बना सकते हैं? क्या यह न्यायोचित है?''

'सोमप्रकाश'[3] ने स्पष्ट लिखा, ''लाठी का जवाब लाठी से, पत्थर का जवाब पत्थर से और घूँसे का जवाब घूँसे से ही दिया जाना चाहिए।'' 'सोमप्रकाश' की माँग थी कि आई.सी.एस. (इण्डियन सिविल सर्विस) में भारतीयों की बराबरी की हिस्सेदारी हो और इसकी परीक्षा भारत में भी आयोजित की जाए।

'सोमप्रकाश' में विदेशों के समाचार भी छपते थे। समाचार एजेंसी रायटर से समाचार लिए जाते थे। इसमें राजनीति के अलावा, अर्थव्यवस्था, व्यापार, कर प्रणाली, समाज सुधार, सामाजिक विसंगतियाँ आदि पर लेख छपते थे। इसने जनता के शोषण को उजागर करते हुए आवाज उठाने में कोताही नहीं की। समकालीन अँगरेजी साप्ताहिक 'हिन्दू पेट्रियट' और 'सोमप्रकाश' ने बंगालियों में राष्ट्रीयता की भावना बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'हरकारू' की आलोचना का उत्तर देते हुए सोमप्रकाश ने लिखा था- ''प्रत्येक करदाता को

1. अवध अखबार, 3 दिसम्बर 1880
2. सोम प्रकाश, 4 नवम्बर 1861
3. वही, 17 नवम्बर, 1862

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

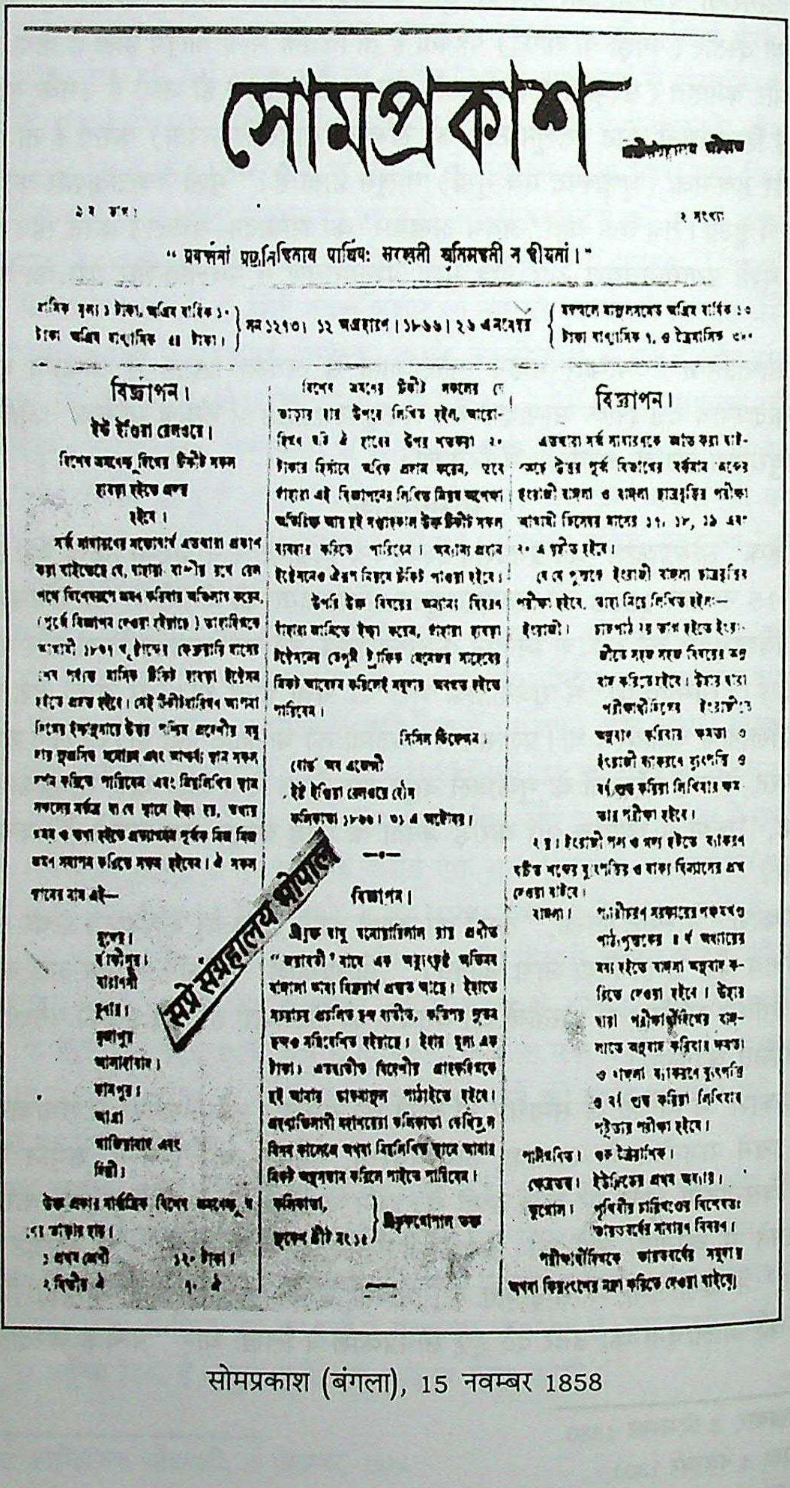

সোমপ্রকাশ

" প্রবর্ত্ততাং প্রকৃতিহিতায় পার্থিবঃ সরস্বতী শ্রুতিমহতী ন হীয়তাং। "

সন ১২৬৫। ১২ অগ্রহায়ণ। ১৮৫৮। ২৯ নবেম্বর

বিজ্ঞাপন।

ইষ্ট ইণ্ডিয়া রেলওয়ে।

বিজ্ঞাপন।

বিজ্ঞাপন।

सोमप्रकाश (बंगला), 15 नवम्बर 1858

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता के धन के व्यय पर अपनी राय जाहिर करने का अधिकार है।'' 'सोमप्रकाश' ने सन 1865 में लिखा- ''हमें कोई भी राजनीतिक अधिकार नहीं हैं, हमारी आकांक्षाओं के अनुरूप आगे बढ़ने के कोई अवसर नहीं हैं, क्या हमारी भारतीय सभ्यता उससे पहले के युग की नहीं जब किंग जान ने मैग्ना कार्टा पर हस्ताक्षर किए थे या जब हेनरी तृतीय ने संसद की स्थापना की थी। यदि यह सही है तो फिर यह कैसे सोचा जा रहा है कि जिन अधिकारों का इंग्लैण्ड की जनता उपभोग कर रही है, वे अधिकार भारतीयों के लिए 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भी बहुत अधिक समझे जा रहे हैं।''

नवम्बर 1858 में तारकचन्द्र चूड़ामणि के सम्पादन में साप्ताहिक *'भारतवासी'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। सन 1858 में कृष्णकँवल भट्टाचार्य ने बंगला साप्ताहिक *'विचारक'* प्रकाशित किया। *'सोल्जर पत्रिका'* बलदेवप्रसाद मिश्र के सम्पादन में सन 1858 में निकली।

1859

शुभसूचक

मराठी साप्ताहिक *'शुभसूचक'* सतारा से सन 1859 में प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ। सप्रे संग्रहालय में उपलब्ध 15 मार्च, 1861 के अंक से पता चलता है कि यह पत्र प्रत्येक गुरूवार को प्रकाशित होता था। प्रथम स्वाधीनता संग्राम (1857) के तुरंत बाद का काल होने से इसमें विद्रोह के बाद की घटनाओं का विवरण मिलता है। जब लखनऊ शहर पर अँगरेजों ने फिर अधिकार किया तो उनके सिपाहियों ने वहाँ से 14,82,654 रु. 6 आना और 11 पाई की लूट की थी। इस लूट को सिपाहियों में बाँट देने के आदेश सरकार ने दिए थे। इनमें से अँगरेज सेनापति लार्ड कलाइव के हिस्से में 74132 रु. आने का समाचार में उल्लेख है। पत्र का मूल्य पेशगी देने पर तीन रु., वर्ष के बाद में देने पर चार रु. सालाना तथा मासिक पाँच आना था। इसके सम्पादक रामचन्द्र आपाजी चितले थे।

साप्ताहिक *'नसीम'* का प्रकाशन जौनपुर से एक जनवरी 1859 को किया गया था। यह सोमवार को निकाला जाता था। प्रकाशक सैयद मुज़फ़्फ़र हुसैन थे। इस्हाक़ी प्रेस में छपने वाले इस पत्र का वार्षिक शुल्क नौ रुपयें था। इसके सन 1876 तक प्रकाशित होने की पुष्टि 'नुसरत-उल-अख़बार'[1] में प्रकाशित समाचार से होती है। उसमें लिखा है- अफ़सोस के 'नसीम' जौनपुर होकर भी खुश न चले, खुदा इसको बरबाद न करे- जौनपुर में हफ्तेवार छपता है।'' 5 जनवरी 1886 को पुनः साप्ताहिक *'नसीम'* मोहम्मद इस्हाक़ ने जौनपुर के मोहल्ला टोला से प्रकाशित किया था। बिहारीलाल चक्रवर्ती ने 17 फरवरी 1859 को बंगला मासिक *'पूर्णिमा'* निकाला।

'शम्स-उल-अख़बार' चेन्नै से सन 1859 में प्रकाशित हुआ। यह लगभग पचास वर्ष तक प्रकाशित होता रहा। चार पृष्ठों में प्रकाशित होने वाला यह पत्र आरम्भ में पाक्षिक था और कुछ समय पश्चात साप्ताहिक हो गया। इस अख़बार के पहले सम्पादक सैयद अब्दुल सत्तार थे। बाद में मोहम्मद नसीरुद्दीन सम्पादक हुए। आज भी चेन्नै के जाम बाजार में इसके दफ्तर की इमारत 'शम्स-उल-अख़बार' के नाम से मशहूर है।

आठ पृष्ठों का *'तिलिस्म-ए-हैरत'* सन 1859 में चेन्नै से प्रकाशित किया गया था। इसके प्रकाशक शाह मोहम्मद सादिक़ शरीफ़, प्रबन्धक जाफ़र हुसैन 'हरीफ़' एवं सम्पादक गुलाम

1. नुसरत-उल-अखबार, 1 अगस्त 1876

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहीउद्दीन 'हनीफ़' थे। इसे मतबा तिलिस्म-ए-हैरत में मुद्रित कराया जाता था, वार्षिक शुल्क धनी व्यक्तियों से पच्चीस रुपये तथा साधारण व्यक्तियों से छह रुपये था।

वीरेश्वर छत्रे ने सन 1859 में साप्ताहिक *'ज्ञानबोधक'* का प्रकाशन किया। इसका मासिक शुल्क छह आना तथा वार्षिक शुल्क साढ़े चार रुपये था। लन्दन के 'पंच' की तर्ज पर हिन्दुस्तान में अँगरेजी में पहली व्यंग्य चित्र प्रधान पत्रिका *'इण्डियन पंच'* के नाम से निकली। इसका प्रकाशन 13 जून 1859 को दिल्ली से हुआ था। यह आठ पृष्ठों की पत्रिका थी। उर्दू सासाहिक *'अज़ीम-उल-अख़बार'* का प्रकाशन जुलाई 1859 में पटना से हुआ था।

श्यामाचरण सान्याल तथा विपिनबिहारी सरकार ने तीन सितम्बर 1859 से *'सौदामिनी'* पत्रिका निकाली। 19 सितम्बर 1859 को गोसाईं दासगुप्ता के सम्पादन में साप्ताहिक *'संवाद द्विजराज'* का प्रकाशन शुरू हुआ। सन 1859 में ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन का मुख पत्र *'भारतवर्षीय सभा मासिक विज्ञापनी'* प्रकाशित हुआ।

1860

पूर्ण चंद्रोदय

इंदौर से मराठी साप्ताहिक *'पूर्ण चंद्रोदय'* का प्रकाशन एक नवम्बर 1860 से आरम्भ हुआ। रामचंद्रराव भाउ साहब द्वारा प्रकाशित इस पत्र का उद्देश्य स्वदेशी भाषा का समाचारपत्र जन साधारण को उपलब्ध कराना था। इसके सम्पादक वासुदेव बल्लार मुड़े थे। यह प्रति शुक्रवार छपता था। वार्षिक मूल्य 6 रु. था। मध्यप्रदेश में प्रथम मराठी पत्र होने का श्रेय 'पूर्ण चंद्रोदय' को है। इसके कलेवर की व्याख्या करते हुए पाठकों को बताया गया- ''इस पत्र में मुल्की, फौजदारी, अदालत संबंधी खबरें, रसायन शास्त्र, वैद्य शास्त्र, शिल्प शास्त्र आदि प्रसंगानुसार समाचार प्रसिद्ध किये जाएंगे। जो व्यक्ति स्वदेशहित में इस पत्र को सहयोग देना चाहते हैं, उन्हें राजमहल के पास पुस्तक गृह में अपना नाम और पता लिखना चाहिए। 'पूर्ण चंद्रोदय' के 13 दिसम्बर 1861 के अंक में 'प्रख्यात बंडखोर नानासाहेब' शीर्षक से नानासाहब पेशवा और तात्याटोपे के जीवित होने तथा उनके नेपाल और तिब्बत में होने के समाचार प्रकाशित हुए। 8 दिसम्बर 1861 के 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' से उद्धृत समाचार में कहा गया कि ''करांची में एक मनुष्य को नानासाहेब होने के शक में गिरफ्तार किया गया और उससे पूछताछ की जा रही है।'' समाचारपत्र को जो शुल्क मिलता था, वही सम्पादक का वेतन होता था। इस पत्र के लिए गणेश मार्तंड ने पूँजी कर्ज के रूप में दी थी। प्रति वर्ष 300 रु. कम पड़ते थे। अन्ततः 'पूर्ण चंद्रोदय' 1865 में बंद हो गया।

सासाहिक *'कोटा गजट'* का प्रकाशन एक जनवरी 1860 को कोटा से हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक मीर फ़तहउल्ला शाह थे। साप्ताहिक *'रफ़ीक़-उल-हिन्द'* का प्रकाशन कोलकाता से जनवरी 1860 में हुआ था। इसके सम्पादक-प्रकाशक हरिश्चंद्र कमियाजी थे। यह उर्दू समाचारपत्र था। पूर्वी बंगाल के रंगपुर से अप्रैल 1860 में *'दिक्प्रकाश'* प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक मधुसूदन भट्टाचार्य थे।

कोलकाता के एंग्लो-इण्डियन यूनियन प्रेस से अप्रैल 1860 में मासिक पत्रिका *'ज्ञान चन्द्रिका'* प्रकाशित हुई। इस बंगला पत्रिका के सम्पादक बालाईचन्द्र सेन थे। सामाजिक उत्थान तथा नशा आदि बुराइयों से दूर रखने की शिक्षा देना इसका उद्देश्य था। धर्मप्रचार, उद्योग और फौजी प्रशिक्षण पर जोर देती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मंज़ूर-उल-अख़बार' सूरत से निकलने वाला प्रथम उर्दू साप्ताहिक था। मई 1860 में निकला था। 12 पृष्ठों में इतवार को क़ादरी प्रेस में छपवा कर प्रकाशित किया जाता था। सम्पादक मौलवी मंज़ूर थे।

ढाका से मई 1860 में मासिक पत्रिका *'कविता कुसुमावली'* प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक कृष्णचन्द्र मजूमदार थे, जो स्वयं अच्छे कवि थे। जून 1860 में साप्ताहिक *'मनोहर'* का प्रकाशन उमेशचन्द्र चट्टोपाध्याय के सम्पादन में कोलकाता से हुआ। जून 1860 में ढाका से बंगला पत्रिका *'मनोरंजिका'* निकली। सितम्बर 1860 में *'राजपुर पत्रिका'* प्रकाशित हुई।

मास में तीन बार प्रकाशित होने वाला *'करतान'* चेन्नै से सन 1860 में प्रकाशित हुआ। कुछ समय बंद रहने के बाद सन 1865 में इसे पुन: प्रकाशित किया गया। *'मुफ़ीद-उल-नाम'* का प्रकाशन सन 1860 में फ़तहगढ़ से किया गया था। मुंशी रामस्वरूप प्रकाशक तथा मुंशी शंकर स्वरूप 'निजात' सम्पादक थे। इसका वार्षिक शुल्क 9 रुपये था।

सन 1860 में साप्ताहिक *'मजमा-उल-बहरीन'* का प्रकाशन लुधियाना से हुआ। इसके प्रकाशक सैयद मोहम्मद शाह और सम्पादक असग़र हुसैन थे। पृष्ठ सँख्या छह और वार्षिक शुल्क 12 रु. था। यह अख़बार सन 1876 तक प्रकाशित हुआ। 'नुसरत-उल-अख़बार'[1] में इसके बन्द होने की ख़बर छपी थी।

लाहौर से सन 1860 में मासिक *'गंज-ए-शायगाँ'* का प्रकाशन किया गया था। मुंशी हरसुख राय इसके प्रकाशक और सूरजभान सम्पादक थे। सोलह पृष्ठों की इस पत्रिका में सरकारी आदेश, क़ानून और मुक़दमों से सम्बन्धित परिपत्र और निर्णय छापे जाते थे।

चेन्नै से सन 1860 में अँगरेजी साप्ताहिक *'मद्रास गजट'* का प्रकाशन हुआ। बाद में इस पत्र का विलय 'ओल्ड स्पेक्टेटर' में हो गया जो सन 1921 में 'मद्रास मेल' में समाहित हुआ। सन 1860 में बंगला की विज्ञान पत्रिका *'विज्ञान कौमुदी'* निकली। सन 1860 में मराठी मासिक *'सर्वसंग्रह'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक माधव चंद्रोबा थे। त्रिपुरा ज्ञान संचारिणी सभा के मुख पत्र *'त्रिपुरा ज्ञान प्रकाशनी'* का प्रकाशन मासिक पत्रिका के रूप में हुआ। पूर्वी बंगाल के दुधूरिया विक्रमपुर से इसका प्रकाशन होता था। कैलाशचन्द्र सरकार पत्रिका के सम्पादक थे। सन 1860 में *'मंगल ऊषा'* पत्रिका के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है।

तेलुगु पाक्षिक पत्रिका *'श्रीयक्षिणी'* का प्रकाशन सन 1860 में बेल्लारी से हुआ। सन 1867 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया। इसके सम्पादक त्यागराज वेंकटरमन थे।

1861

जगहितकारक

सन 1861 में अजमेर से हर शनिवार को *'जगहितकारक'* का प्रकाशन पण्डित शिवनारायण ने किया। यह लिथो प्रेस पर छपा करता था। इस साप्ताहिक पत्र की एक प्रति "लम्बर 69 अजमेर 3 जनवरी सन 1863 ई. पौष सुदी 14 शनिवार जिल्द 3" जयपुर के रामचरण प्राच्य विद्या संग्रहालय में सुरक्षित है। इस पर अंकित है-"यह समाचारपत्र प्रति अठवाड़े एक बार शनीचर के लिए छपता है।"

'जगहितकारक' की भाषा और शैली का परिचय देने वाली एक खबर, जो 'देहली गजट' से उद्धृत की गई है, इस प्रकार है- "29 अप्रैल 1863 ई. को श्रीयुत महाराजा साहिब बहादुर

1. नुसरत-उल-अखबार, 1 अगस्त, 1876

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्रधान पण्डित शिवदीन के साथ आगरे की वैधक की पाठशाला में पधारे और उसको देख करके बहुत प्रसन्न हुए। वे चाहते हैं कि ऐसी ही एक वैधक की पाठशाला जैपुर में भी तैयार हो। बिदा होने के समय महाराजा साहिब ने एक हजार रुपये इस पाठशाला के लिए दिए और कहा कि पाठशाला के प्रधान डाक्टर प्लेफैर साहिब बहादुर जिस भाँति उचित समझें पाठशाला की वृद्धि के लिए रुपये खरच करें।''

'जगहितकारक' में समाचारों के साथ सम्पादक की टिप्पणी भी दी जाती थी। एक उदाहरण- ''यहाँ एक ठाकुर पर गुलाम मोल लेने के दोष में पाँच सौ रुपये का जुर्माना हुआ। ठाकुर साहिब के कामदार के लिए भी कि जो इस सौदे में शामिल था उचित दंड विचारा गया। कदाचित हिन्दुस्तानी सरदार इसको कठिन दंड समझें परन्तु अँगरेजी कानून के अनुसार दंड यह कुछ भी कठिन नहीं है अर्थात अँगरेज गुलामी की रीति बन्द करने के लिए अपने प्राण भी देते हैं। इसका कारण यह है कि अँगरेज साहिब जानते हैं कि मनुष्य मनुष्य का दास नहीं है वरन केवल ईश्वर का ही दास है परन्तु ईश्वर ने भी मनुष्य को स्वतंत्र पैदा किया है तो इस दशा में मनुष्य, मनुष्य को अपना दास कैसे बना सकता है।''

विकास की झलक को 'जगहितकारक' ने इस प्रकार शब्द दिए-''देखते हैं कि और देशों में लोहे की सड़कें तैयार हो गई हैं। लोग हजारों तरह के अनगिनत लाभ उठाते हैं। एक इन्द्रजाल की सी रचना है। जहाँ जी में आया कोई घंटे में चाहे जिस नगर की सैर करते हैं...... क्या यह सब देश इस रेती के बीच ऐसा शुटा पड़ा रहेगा कि जैसा समुद्र में कोई उजाड़ टापू पड़ा रहता है। यह आस है कि इस विषय में हमारे हाकिम जहाँ तक हो सकेगा परिश्रम में कमी न करेंगे। कदाचित राजपूताने के राजा और सरदार या तेल की कोई कम्पनी सरकार के विचार से राजपूताने में लोहे की सड़क के बनाने की राह निकाल सकें इन नगरों में होकर लोहे की सड़क निकले तो बहुत कुछ लाभ हो।''

'जगहितकारक' सामाजिक सुधारों का पक्षधर था- एक उदाहरण :-

रीति का वध करना

''कलकत्ते के न्यूजीलियर समाचारपत्र के सम्पादक लिखते हैं कि सितारे (सतारा, महाराष्ट्र) के ब्राह्मणों में से कितने ही पंडितों ने सलाह करके यह विचार किया है कि जो लड़का सोलह बरस की अवस्था से कम और लड़की आठ बरस की अवस्था से कम हो तो उसका ब्याह नहीं करना चाहिये। यथार्थ में वहाँ के पंडितों का यह विचार बहुत ठीक और उचित है। बहुधा ऐसा होता है कि हिन्दू जाति में जो छोटे बच्चों का ब्याह कर दिया जाता है तो उनमें से पहले बच्चे शीतला आदि रोगों में मर जाते हैं और उनके माँ-बापों को उनके मरने और नया विवाह करने और धन की हानि से बहुत दुख होता है सिवाय इसके छोटी उमर में ब्याह करने से और बहुत सा बिगाड़ है।''

7 मार्च 1861 को ढाका से साप्ताहिक *'ढाका प्रकाश'* निकला। इसके सम्पादक कृष्णचन्द्र मजूमदार और प्रकाशक ब्रजसुन्दर मित्रा, दीनबंधु मलिक तथा चंद्रकांत बसु थे। यह पत्र हर गुरूवार को प्रकाशित होता था। मजूमदार के बाद दीनानाथ सेन सम्पादक हुए। तब यह शुक्रवार को छपने लगा था। तदनन्तर रविवार को निकलने लगा। मई 1861 में शिवकृष्ण दत्त के सम्पादन में *'बंग हितार्थिनी'* का प्रकाशन हुआ।

सेरामपुर से 10 जनवरी 1861 को *'इण्डियन रिफार्मर'* का प्रकाशन किया गया। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँगरेजी पाक्षिक पत्र था। गास्पेल के प्यूरिटी तथा चेरिटी के लिए समर्पित था।

परिदर्शक

बंगला दैनिक *'परिदर्शक'* का प्रकाशन मई 1861 में प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक जगनमोहन तर्कालंकार और मदनमोहन गोस्वामी थे। इस पत्र की प्रतियाँ कहीं उपलब्ध नहीं हैं, परन्तु समकालीन समाचारपत्रों ने इसमें प्रकाशित कुछ समाचारों को उद्धृत किया है। यह पत्र राष्ट्रीय विचारधारा का पोषक था और अँगरेजों की नीतियों का विरोध करता था। 'सोमप्रकाश'[1] में 'परिदर्शक' का एक उद्धरण प्रकाशित हुआ है-''कथित निष्पक्ष कहे जाने वाले इंग्लिशमेन और हरकारू अँगरेजों के प्रमुख पक्षधर अखबार हैं जो उन्हें कभी भी नुकसान नहीं पहुँचा सकते। हाँ। अपढ़ और गँवार भारतीयों की चीख में क्या रखा है?'' बाद में कालीप्रसन्न सिंह ने इस पत्र को ले लिया। वे 14 नवम्बर 1869 से इसके सम्पादक हुए। 24 नवम्बर 1862 के सम्पादकीय में उन्होंने लिखा कि अभी भी देश की जनता समाचारपत्रों के महत्व को नहीं समझ पाई है। अँगरेजी पढ़े लिखे लोग तो अँगरेजी पत्र पढ़ लेते हैं परन्तु क्योंकि बंगला भाषा के पत्रों का स्तर ठीक नहीं है अत: उन्हें लोग कम ही पढ़ते हैं। इसका कारण यह है कि उनके पास समाचार प्राप्त करने के साधनों का अभाव है। जब तक बंगला के पत्रों का प्रसार नहीं बढ़ेगा तब तक जनमत पर प्रभाव कैसे होगा?

राजनीति पर केन्द्रित पाक्षिक *'भारत वर्षीय संवाद पत्र'* मई 1861 में निकला। इस बंगला पत्र के सम्पादक तारकचंद्र चूड़ामणि थे।

143772

देहली इन्स्टीट्यूट जर्नल

'देहली इन्स्टीट्यूट जर्नल' का प्रकाशन सन 1861 में दिल्ली से किया गया था। इसके प्रकाशक एम. विलियम्स थे। इसे देहली प्रेस में, जहाँ 'देहली पंच' भी छपता था, छपवाया जाता था। सोलह पृष्ठ का द्विभाषी अखबार था। इसके पहले पृष्ठ पर दाईं ओर उर्दू और बाईं ओर अँगरेजी में सामग्री छापी जाती थी। वार्षिक शुल्क 6 रुपये था।

कोलकाता से 10 जुलाई 1861 को *'इण्डियन एम्पायर'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह अँगरेजी साप्ताहिक पत्र था, जो हर बुधवार को प्रकाशित होता था। यह पत्र समाचारों और विचारों का व्यापक दायरा लेकर चलता था। इसके पहले अंक में कहा गया कि पारस्परिक निर्भरता और लाभ के महान सिद्धान्तों के अवलम्बन के बिना कोई भी ढाँचा ज्यादा दिनों तक टिक नहीं सकता।

सन 1861 में *'ख़ैर ख़्वाहे ख़ल्क़'* नामक साप्ताहिक अजमेर से निकलना प्रारम्भ हुआ। उस समय हिन्दुस्तान से प्रकाशित होने वाले समाचारपत्रों की सँख्या 723 हो गयी थी। इसका सम्पादन सोहनलाल एवं अयोध्याप्रसाद करते थे। छोटे आकार के आठ पृष्ठों में निकाला जाता था। समाचारों के अतिरिक्त इसमें लेख भी प्रकाशित किए जाते थे। 'हिन्दुस्तानियों को हथियार रखने से वंचित करने', 'जाति प्रथा के सम्बन्ध में आधुनिक विचार' तथा 'बलात् धर्म परिवर्तन' जैसे विषयों को इसने चुना। शासन ने सम्पादक की स्वतंत्र विचारधारा को पसंद नहीं किया और इसके प्रकाशन पर रोक लगा दी गई।

अख़बार-ए-आलम

'अख़बार-ए-आलम' का प्रकाशन सन 1861 में मेरठ से हुआ। इसके मुख पृष्ठ पर आधे

1. सोमप्रकाश, 14 अप्रैल 1862

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भाग में पच्चीकारी होती थी। बीच में कलात्मक अरबी लिपि में समाचारपत्र का नाम 'अख़बार-ए-आलम' छपा रहता था। इसका प्रकाशन प्रत्येक गुरूवार को किया जाता था। इसमें सोलह पृष्ठ होते थे। दूसरे समाचारपत्रों से सामग्री उद्धृत की जाती थी। इस पत्र में सम्पादकीय नहीं लिखा जाता था। जिस स्थान का समाचार होता था उसका नाम शीर्षक के रूप में दिया जाता था। समाचार संक्षिप्त होते थे। रईसों, रियासतों के शासकों तथा अधिकारियों से सम्बन्धित समाचार विशेष रूप से छापे जाते थे। भोपाल की शासक सिकंदरजहां बेगम के सम्बन्ध में हर अंक में कोई न कोई समाचार अवश्य छपता था। विदेशों के समाचार मुम्बई, कोलकाता, चेन्नै आदि बड़े शहरों से प्रकाशित उर्दू समाचारपत्रों से लेकर छापे जाते थे। ''इस महीने की 15 तारीख के मालवा अखबार ने अखबार ग्वालियर के हवाले से लिखा है कि बम्बई के गवर्नर सर जार्ज रसिल क्लार्क के जाने के बाद मिस्टर लीड उनके स्थान पर नियुक्त होंगे। यह वही मिस्टर लीड हैं जो सन 1857 ग़दर के दिनों में महारानी की ओर से विद्रोह की जाँच के लिए यहाँ आए थे और हिन्दुस्तान से वापसी के बाद राजधानी लंदन पहुँच कर पार्लियामेन्ट में बिना हिचक यह कहा था कि हिन्दुस्तान में विद्रोह अँगरेजों के कारण ही हुआ। बेक़सूर हिन्दुस्तानियों की अँगरेजों ने गोली मार कर हत्या की और फाँसियां दीं। 'अख़बार-ए-आलम' के पाठक सोच सकते हैं कि इतने न्यायप्रिय अँगरेज अधिकारी भी हैं और ऐसे अँगरेज अधिकारी भी हैं जिन्होंने विद्रोह के दिनों में वह काम किए हैं जिन्हें लिखने में भय लगता है। दिल्ली के ज्वाइंट-मजिस्ट्रेट टामस मैटकाफ़ तथा मुरादाबाद के मजिस्ट्रेट के हाल तो लिखने योग्य ही नहीं हैं। हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल ने न्यायालय के माध्यम से उन अँगरेजों को जिन्होंने विद्रोह के समय अत्याचार और अनाचार किए थे खूब सज़ाएं दीं। सच तो यह है कि लार्ड कीनिंग जैसे न्यायप्रिय तथा निष्पक्ष गवर्नर जनरल हिन्दुस्तान में कम ही आए होंगे।''[1]

31 अगस्त 1861 को मुम्बई से *'आनन्द लहरी'* नामक पत्र का प्रकाशन हुआ। सन 1870 में यह पत्र गोवा से निकला, जो वहाँ का प्रथम मराठी नियतकालिक था। सन 1970 में इसका शताब्दी वर्ष मनाया गया था। 8 दिसम्बर 1861 को अहमदनगर से *'वृत्त वैभव'* प्रति रविवार प्रकाशित होने लगा। यह लिथो प्रेस पर छापा जाता था। प्रथम पृष्ठ पर साप्ताहिक पंचांग, बाजार भाव दिए जाते थे। वार्षिक शुल्क अग्रिम 6 रु. एवं वर्ष के अन्त में 7 रु. था। इसके प्रकाशक खंडेराव बालाजी थे। उनकी लिखने की शैली सुन्दर थी।

सन 1861 में हिन्दी की छह पत्रिकाएं निकली। राजा लक्ष्मणसिंह का *'प्रजाहितैषी'* इसी वर्ष निकला। गुजराती पत्र *'खेड़ा वर्तमान'* सन 1861 में खेड़ा से प्रकाशित हुआ। सन 1861 में आगरा से *'ज्ञानदीप'* निकला। क्रिश्चियन वर्नाक्युलर सोसायटी कटक ने सन 1861 में उड़िया में *'अरुणोदय'* का प्रकाशन किया। 1861 में प्रकाशित इस पत्र का उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार था। मासिक 'अरुणोदय' तीन साल तक निकलता रहा। गोवा से सन 1861 में पुर्तगाली भाषा का साप्ताहिक पत्र *'इण्डिया'* प्रकाशित हुआ। बंगला मासिक *'गद्य प्रसून'* का प्रकाशन सन 1861 में महेशचन्द्र गंगोपाध्याय ने किया। *'जेमन कर्म तेमन फल'* नाम की मासिक पत्रिका भी सन 1861 में निकली और बहुत जल्द बन्द हो गई।

सन 1861 में अध्यापकों के लाभ के लिए *'पुणे पाठशाला पत्रक'* पुणे के नार्मल स्कूल से निकला। केरो लक्ष्मण छत्रे इस मराठी पत्रिका के सम्पादक थे। उनके बाद कृष्ण शास्त्री

1. अखबार-ए-आलम, नं. 19, जिल्द 2, 6 मार्च 1862

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिपलूणकर ने सम्पादन किया। सन 1864 में इस पत्रिका का नाम 'मराठी शाला पत्रक' कर दिया गया। इस मराठी मासिक से ही उपन्यास प्रकाशित करने की प्रथा शुरू हुई और रासेल्स नामक उपन्यास सर्वप्रथम इसमें अनुदित होकर छपा। सन 1929 में यह बाल मासिक हो गया। दा.पा. रानडे के सम्पादन काल में इस पत्रिका का कायाकल्प हुआ।

1862

देहली गजट

साप्ताहिक '*देहली गजट*' आगरा से जनवरी 1862 में प्रकाशित हुआ। 1871 में इसे दैनिक कर दिया गया तब यह टेबलायड आकार का 12 पृष्ठ का अख़बार था। प्रत्येक पृष्ठ में चार कालम होते थे। एक कालम की चौड़ाई 7 से.मी. थी। इसके प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापन छपते थे। इसमें समकालीन पत्र-पत्रिकाओं के समाचारों की समीक्षा भी की जाती थी। इसका मुद्रण देहली प्रेस आगरा में होता था। मुद्रण और प्रकाशन का दायित्व विलियम ड्यूगो पर था। 2 फरवरी 1876 के अंक में प्रकाशित एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि जनवरी 1874 से इसके शुल्क में कमी कर दी गई थी। एक प्रति का शुल्क चार आना था। स्थानीय और डाक से भेजने के शुल्क अलग अलग थे। स्थानीय वार्षिक शुल्क 36 रुपये तथा डाक से भेजने का वार्षिक शुल्क 42 रुपये था। शुल्क अग्रिम जमा कराया जाता था। पाँच पंक्तियों तक के एक विज्ञापन की दर एक रुपये एक बार के लिए थी। इसमें सरकारी विभागों के विज्ञापनों के अतिरिक्त राज्यपालों, उप राज्यपालों, चीफ कमिश्नरों द्वारा पारित आदेशों, नियुक्तियों, छुट्टियों, स्थानान्तरणों आदि की सूचनाएं भी प्रकाशित होती थीं। इस प्रकार यह शासकीय गजट की भूमिका भी निभाता था। संस्थानों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों और निजी विज्ञापनों की भी इसमें भरमार रहती थी। 'देहली गजट' में विभिन्न शहरों- कोलकाता, ढाका, इलाहाबाद, दार्जिलिंग के प्रमुख समाचारों को संक्षेप में प्रकाशित किया जाता था। ये समाचार या तो उन स्थानों से प्रकाशित समाचारपत्रों से लिए जाते थे अथवा संवाददाताओं द्वारा भेजे जाते थे। जो समाचार अन्य पत्रों से लिए जाते थे उनके अंत में सम्बन्धित समाचारपत्र के नाम का उल्लेख होता था।

अजीमगंज (मुर्शिदाबाद) से साप्ताहिक '*विश्व मनोरंजन*' का प्रकाशन जनवरी 1862 में किया गया। यह बंगला पत्र धन सिंधु प्रेस से छपता था। नवलकिशोर सेन इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। सन 1864 में इसका नाम '*भारत रंजन*' कर दिया गया। लखनऊ से छह जनवरी 1862 को '*समाचार हिन्दोस्तानी*' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह साप्ताहिक पत्र प्रत्येक सोमवार को अँगरेजी भाषा में निकलता था। इसका वार्षिक शुल्क 10 रुपये और मासिक शुल्क एक रुपया था। बाहर के ग्राहकों से डाक खर्च के रूप में 12 आना अलग से लिए जाते थे। इसके पहले पेज पर ग्राहक शुल्क और विज्ञापन दर की सूचना के अलावा मुद्रा बाजार की दरें, सरकारी नोटिस और तार से प्राप्त खबरें प्रकाशित किए जाते थे। विदेशों से भी तार द्वारा समाचार प्राप्त करने की व्यवस्था 'समाचार हिन्दोस्तानी' ने की थी। अप्रैल 1862 से साप्ताहिक पत्रिका '*मंगलोदय*' का प्रकाशन ब्रजगोपाल एवं नंदगोपाल मतिलाल ने किया। जून 1862 में '*बंगोज्ज्वल*' नामक पत्रिका निकली। रामचन्द्र भौमिक ने जून 1862 में ढाका से साप्ताहिक '*ढाका वार्ता प्रकाशिका*' निकाली। यह बंगला पत्रिका एक साल तक प्रकाशित हुई।

साप्ताहिक '*अहसन-उल-अख़बार*' का प्रकाशन बांसबरेली से 17 सितम्बर 1862 को किया गया था। इसमें आठ पृष्ठ रहते थे। प्रत्येक शुक्रवार को निकलता था। इसके स्वामी तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

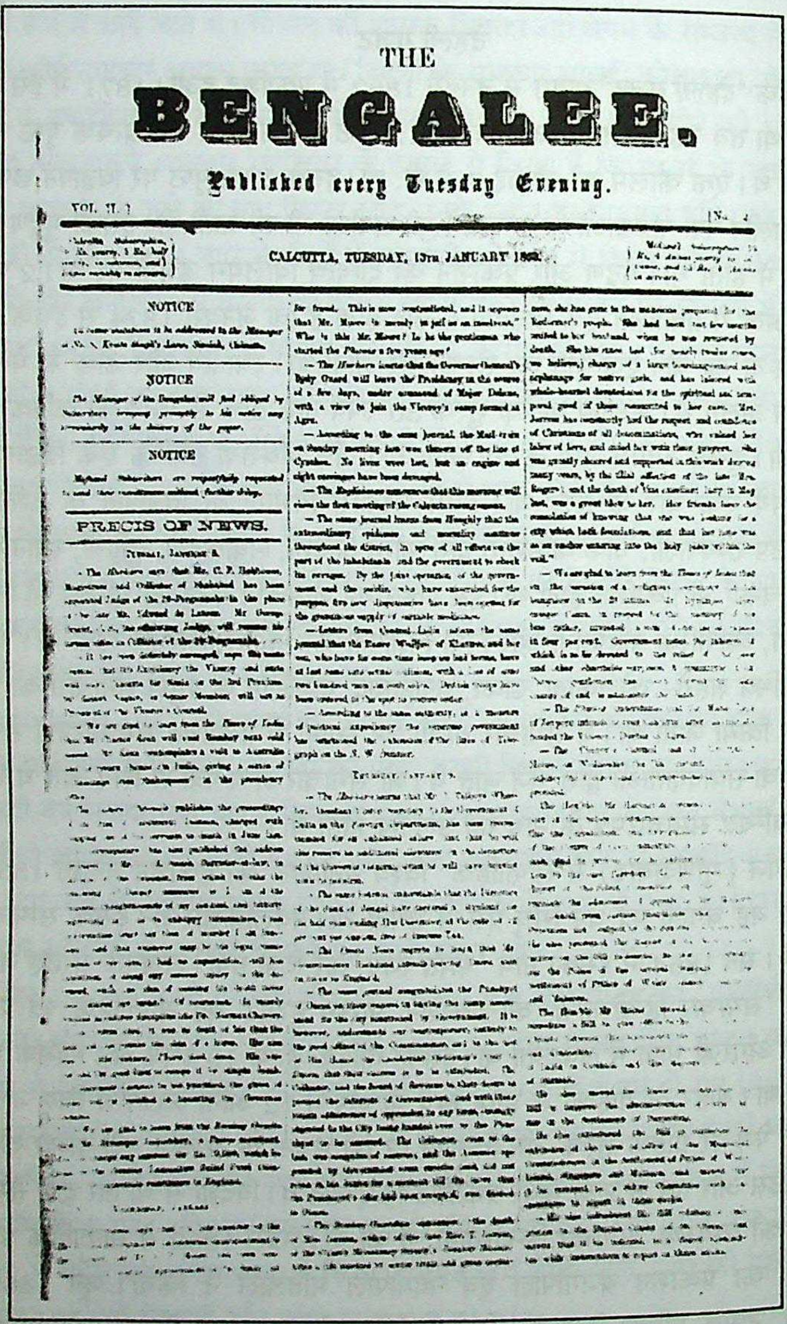

THE

BENGALEE.

Published every Tuesday Evening.

VOL. II.] [No.]

CALCUTTA, TUESDAY, 13TH JANUARY 1862.

NOTICE

NOTICE

NOTICE

PRECIS OF NEWS.

— The Hurkaru learns that the Governor General's Body Guard will leave the Presidency in the course of a few days, under command of Major Dolane, with a view to join the Viceroy's camp formed at Agra.

— According to the same journal, the Mail-train on Sunday morning last was thrown off the line at Cyndon. No lives were lost, but an engine and eight carriages have been damaged.

बंगाली, कोलकाता, सन 1862

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक मौलवी मोहम्मद अहसन थे। मतबा सिद्दीक़ी में छपता था। वार्षिक शुल्क नौ रु. था।

दबदबा-ए-सिकंदरी

रामपुर रियासत के नवाब कुतुब अली खां की प्रेरणा से *'दबदबा-ए-सिकंदरी'* 15 अक्टूबर 1862 को रामपुर से निकला। मौलवी हसन खाँ इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक थे। 16 पृष्ठ के इस अख़बार का वार्षिक शुल्क बीस रुपये धनिक वर्ग के लिए और जन साधारण के लिए बारह रुपये चार आना रखा गया था। इस पत्र के 13 जुलाई 1885 के अंक में भारत सम्बंधी मामलों के सहायक सचिव लार्ड चर्चिल का भाषण छपा था जिसमें उन्होंने अँगरेजों द्वारा हिन्दुस्तान में की जा रही कमाई का उल्लेख किया था। "हिन्दुस्तान और इंग्लैंड के बीच आवाजाही करने वाले व्यापारिक जहाज़ों की सँख्या लगभग दो हज़ार पाँच सौ है। इनमें कार्यरत कर्मचारियों की सँख्या लगभग 50-60 हज़ार है। इनके मालिकों में 88 प्रतिशत अँगरेज हैं। 28 करोड़ पौंड का माल इंग्लैंड से हर वर्ष हिन्दुस्तान आता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हिन्दुस्तान कितने अँगरेजों का भरण-पोषण करता है और हिन्दुस्तान का कितना धन प्रतिवर्ष इंग्लैंड जाता है। इसके अतिरिक्त रुपये के मूल्य का जो माल हिन्दुस्तान आता है वह लगभग 25 करोड़ रुपये का होता है और उसके कारखानों में तीन लाख व्यक्तियों का पोषण होता है। इसके अलावा 3 लाख अँगरेज अन्य विभागों में हैं जो इस देश में कार्यरत हैं और अपने वेतन का बड़ा भाग इंग्लैण्ड भेजते हैं। 25 या 30 लाख पौंड प्रतिवर्ष हिन्दुस्तान इंग्लैन्ड को होमचार्ज के रूप में देता है। एक करोड़ कई लाख पौंड की पूँजी अँगरेजों ने यहाँ रेलवे के व्यापार में लगा रखी है जिसका लाभांश उन्हें प्राप्त होता है।"

16 पृष्ठ के पाक्षिक *'रुहैलखंड अख़बार'* का प्रकाशन सन 1862 में बरेली से किया गया था। इसमें अधिकतर रुहैलखंड के समाचार छपा करते थे। सन 1862 में साप्ताहिक *'अंजुमन-ए-हिन्द'* का प्रकाशन लखनऊ से हुआ था। अंजुमन-ए-हिन्द नामक सँस्था इसका प्रकाशन करती थी। इसका वार्षिक शुल्क पंद्रह रुपये बारह आना था। मुद्रण मतबा अंजुमन ए-हिन्द लखनऊ में होता था। समाज सुधार विषयक लेख प्रमुखता से छपते थे। इसी अंजुमन ने हिन्दी पत्र 'भारत पत्रिका' का भी प्रकाशन किया था।

बंगाली

'बंगाली' अँगरेजी साप्ताहिक था जो प्रति मंगलवार प्रकाशित होता था। सन 1862 से 1897 तक यह साप्ताहिक पत्र के रूप में निकला, फिर दैनिक हो गया। इसके सम्पादक गिरीशचंद्र घोष थे। इसका आकार 43 गुणित 26 से.मी. था। प्रत्येक पृष्ठ पर 3 बड़े कालम होते थे। स्वदेशी भावना का पोषक था। कोलकाता शहर में इसका वार्षिक शुल्क 10 रुपये और मुफ़स्सिल में 13 रुपये था। 'बंगाली' बंगाल के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का पत्र था। यह क्रान्तिकारियों का हिमायती था। जब सत्येन और कन्हाईलाल ने सरकारी गवाह नरेन्द्र गुसाईं को जेल में मौत के घाट उतार दिया, तब इस पत्र ने खुशी का इजहार किया था। सन 1878 में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने सम्पादन का दायित्व सम्हाला। सन 1883 में प्रकाशित एक लेख पर फिरंगी सरकार कुपित हो उठी और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को दो माह की जेल की सजा दे दी गई। 17 अप्रैल 1931 से 'बंगाली' का नगर संस्करण शाम को 'केलकटा ईवनिंग न्यूज' के नाम से निकलने लगा। एक वर्ष चार माह बाद इसका नाम बदलकर 'स्टार आफ इंडिया' कर दिया गया, जिसका पहला अंक 17 अगस्त 1932 को निकला। ए.पी.आई. और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायटर की समाचार सेवाएँ ली जाती थीं। सात कालम के इस पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेरिस, बर्लिन, ओटावा, लंदन, रंगून, मुम्बई आदि स्थानों के छोटे छोटे उल्लेखनीय समाचार तथा कोलकाता घुड़दौड़ के समाचार छपते थे। राष्ट्रीय आन्दोलन के समाचारों को प्रकाशित करने में यह आगे रहता था। मीरा बेन के मुम्बई में गिरफ्तार होने के सम्बन्ध में 17 अगस्त 1932 के अंक का समाचार इस प्रकार था- ''मीरा बेन, जो 17 अगस्त की सुबह गुजरात मेल से बम्बई पहुँची, को सी.आई.डी. इंस्पेक्टर रायबहादुर मोहनलाल देसाई ने पुलिस आयुक्त के आदेश की अवज्ञा करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। उनसे बम्बई छोड़ने तथा बिना पुलिस आयुक्त की अनुमति के बम्बई में प्रवेश नहीं करने को कहा गया। यह उनकी दूसरी गिरफ्तारी है।''

'सुजन रंजनी' तेलुगु भाषा की प्रथम साहित्यिक पत्रिका है। चेन्नै से सन 1862 में विंजमूरि कृष्णमाचार्युलु, बहुजनवल्ली सीतारामाचार्युलु तथा कारुमंची सुब्बारायलु नायडु के सम्पादन में इसका प्रकाशन हुआ। पहले यह मासिक पत्रिका थी, जो बाद में द्वैमासिक हो गई। सन 1867 में इसका प्रकाशन बंद हो गया। कोट्टायम से *'विज्ञान निक्षेपम्'* नामक साप्ताहिक पत्र के प्रकाशन के साथ केरल में पत्रकारिता आरम्भ हुई। *'वेस्टर्न स्टार'* सन 1862 में अँगरेजी में कोचीन से निकला।

गोवा से प्रकाशित होने वाला दूसरा मराठी समाचारपत्र 'देश सुधारणेच्छु' था। उसके पहले 'गोवा संस्थान' नाम का एक पत्र सन 1862 में शुरू हुआ था। *'गोवा संस्थान'* लिथो मुद्रण से छापा जाता था। अँगरेजी तथा मराठी का यह द्विभाषी साप्ताहिक पत्र था। इस समाचारपत्र का शुल्क छह रुपये वार्षिक था।

'सेंट्रल प्राव्हिन्सेज न्यूज' सरकारी समाचारपत्र था, जो विदर्भ का पहला अखबार कहा जाता है। शिक्षा विषयक समाचार, सरकारी अधिकारियों के स्थानांतरण, नियुक्तियां आदि इसमें छपते थे। सन 1887 के अंक में न्यायसुधा, नागपुर समाचार, नेटिव ओपीनियन, पुणे वैभव, जगतहितेच्छु, जगन्मित्र आदि पत्रों से प्राप्त खबरें छपी मिलती हैं। इसके सम्पादक बलवंत विनायक गोखले थे। *'सत्य दीपक'* का प्रकाशन सन 1862 में गुजराती में हुआ। दो वर्ष बाद बन्द हो गया।

इन्दुप्रकाश

'इन्दुप्रकाश' का प्रकाशन सन 1862 में मुम्बई से हुआ। इसका सम्पादन जनार्दन सखाराम गाडगिल करते थे। 'इन्दुप्रकाश' जब द्विभाषी-मराठी और अँगरेजी-पत्र बना तब उसके मराठी भाग के सम्पादन की जिम्मेदारी विष्णु परशुराम पंडित ने संभाली। सन 1864 में सेवानिवृत्त होने पर विष्णु शास्त्री पुणे से मुम्बई आकर सम्पादक हो गए। सामाजिक समस्याओं पर उनका दृष्टिकोण सुधारक का था। उनके लेखों के कारण 'इन्दुप्रकाश' लोकप्रिय हुआ। 'इन्दुप्रकाश' के अँगरेजी भाग का सम्पादन न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे ने नवम्बर 1862 से मार्च 1863 तक किया। सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं पर रानडे के अनेक विचारोत्तेजक लेख 'इन्दुप्रकाश' में प्रकाशित हुए। छह वर्ष तक नारायण गणेश चंदावरकर सम्पादक रहे। राजनीतिक गतिविधियों के कारण उन्हें सम्पादन कार्य छोड़ना पड़ा। 'इन्दुप्रकाश' स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, नारी उद्धार जैसे सुधारों के समर्थन में खड़ा रहता था और नरम दल वालों का पत्र माना जाता था। 'इन्दुप्रकाश' सन 1862 से सन 1924 तक प्रकाशित हुआ। 'इन्दुप्रकाश' के सम्पादकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नारायण महादेव, विष्णु कृष्ण भाटवडेकर, जनार्दन सुंदरजी कीर्तिकर और हाईकोर्ट के न्यायाधीश नारायण गणेश चंदावरकर शामिल हैं।

3 मार्च 1884 के 'इन्दुप्रकाश' की टिप्पणी पठनीय है- ''अँगरेज हमेशा कहते हैं कि उनके राज्य में छोटे-बड़े सभी को एक-सा न्याय मिलता है। परन्तु देखा गया है कि अमीर लोग पैसा खर्च करके न्याय प्राप्त कर लेते हैं और गरीब को अन्याय सहन करके भी चुप बैठना पड़ता है।''

'इन्दुप्रकाश' की कुछ अन्य टिप्पणियाँ- ''हिन्दुस्थान दिन प्रति दिन दरिद्र क्यों हो रहा है? एक कारण यह है कि यह देश परकीय सत्ता के अधीन है। और अँगरेज बड़े व्यापारी वृत्ति के हैं इसलिए गरीबी बढ़ती जा रही है।''[1]

''हमारा राष्ट्र परकीय सत्ता आने के पहले जितना सुखी था उसके एक दशांश भी अभी सुखी नहीं है। पर अँगरेजों का शासन होने के कारण रेलगाड़ी, तारायंत्र, छापाखाना, समाचारपत्र, कारखाने, विद्या प्रसार आदि सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं। इसके लिए अँगरेज सरकार का आभार मानना चाहिए।''[2]

''यथार्थ रूप से देखा जाए तो राष्ट्र में कलह समाप्त करना, शासक और प्रजा में एकता कायम करना, यह समाचारपत्र कर्ताओं का मुख्य दायित्व है। यह बात सभी विद्वान जानते हैं, फिर भी कितने ही पत्रकर्ता अपना व्यवहार इसके विपरीत करते हैं। वे ऐसे लेख लिखते हैं जिससे चीटी का हाथी बन जाता है और शासक और प्रजा के मन में एक दूसरे के प्रति विरोध उत्पन्न करने वाले लेख लिखते हैं। यह देखकर बहुत दु:ख होता है। ऐसे लेखक अधिकतर अँगरेज हैं, देशी लोग नहीं।''[3]

समाचारपत्र

''समाचारपत्र राज्य की बड़ी शक्ति है। यह राष्ट्र का सुखसाधन है, देशोन्नति का मूल है। राजनीतिक विषय में राजकर्ताओं को शिक्षा देने वाला एक उत्कृष्ट गुरू है और राजनीति में सलाह देने वाला उत्तम सलाहकार है। यह राजा का दिल से, सच्चे प्रेम से, सच्चा हित जानने वाला और राजा के हितार्थ संघर्ष करने वाला चतुर, होशियार और प्रवीण ऐसा सच्चा प्रेमी राजनिष्ठ मित्र है। यह लोकसमाज का एक नायक है, यह लोगों का उत्तम गुरू है। जनसमूह की सच्ची लगन इसके अलावा और किसी को नहीं होती। लोगों की स्थिति को सुधारकर देश का उत्कर्ष साधने वाला भी यही है। लोगों के सच्चे दु:ख दर्द को राजा के सम्मुख रखकर उन्नतिप्रद दान माँगने वाला यही है। लोगों को यह एक राजनीतिक, सामाजिक, व्यावहारिक, नैतिक, शास्त्रीय, धार्मिक, विद्या आदि विषयों में उत्तम ज्ञान उपलब्ध कराने वाला उत्तम गुरू है। यह लोगों का सच्चा मित्र है। सही भक्ति से देशहितार्थ स्व तन,मन, धन अर्पण करके बड़े दिल से और निष्ठा से देश की निरंतर सेवा करने वाला यह एक सच्चा देशसेवक है। देशोद्धार का महत्वपूर्ण कार्य इन चतुर और होशियार स्वदेशभक्तों पर लोक समाज ने सौंपा है। देश में जैसी जैसी समाचारपत्रों की वृद्धि होती है वैसी वैसी राष्ट्र की शक्ति में वृद्धि होती है। पत्र चालकों पर देश की बड़ी जिम्मेदारी है। पत्र सम्पादकों ने अपना सही दायित्व निभाया तो देश की अवस्था उत्कर्ष की होगी।

---

1. इन्दुप्रकाश, 12 मई 1884
2. वही, 19 मई 1884
3. वही, 21 जुलाई 1884

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र सम्पादक को अपने कर्तव्य में प्रामाणिक रहना चाहिए। स्व-कर्तव्य का पालन करते हुए देशहितार्थ कार्यरत उत्तम पत्र की कीर्ति अजर अमर होती है।''[1]

'इन्दुप्रकाश' मार्च, 1898 से सप्ताह में दो बार प्रकाशित होने लगा- सोमवार और गुरूवार। अंतिम समय में प्रो. नरहर रघुनाथ फाटक 'इन्दुप्रकाश' के सम्पादक थे। 'इन्दुप्रकाश' सन 1902 में दैनिक हो गया। 'इन्दुप्रकाश' सुबह और 'इंदु ऑफ बाम्बे' शाम को निकलते थे। सन 1924 तक 'इन्दुप्रकाश' चलता रहा परंतु उसमें पहले जैसा जोश फिर नहीं आया। स्वामित्व भी बार-बार बदलता रहा। 'इन्दुप्रकाश' को दत्तात्रय गणेश सावरकर के 'लोकमान्य' पत्र में समाहित कर दिया गया। 'लोकमान्य' पत्र का भी अस्त हो गया।

सन 1862 में *'खोजा दोस्त'* नामक एक पत्र के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है। ढाका से 1862 में हरिश्चन्द्र मित्रा के सम्पादन में साहित्यिक मासिक पत्रिका *'अवकाश रंजनी'* निकली। सन 1862 में *'अमावस्या'* का प्रकाशन हुआ। जैसोर से सन 1862 में पाक्षिक पत्रिका *'अमृत प्रवाहिनी'* का प्रकाशन किया गया। बसंत कुमार घोष इस बंगला पत्रिका के सम्पादक थे। यह पत्रिका साहित्य, विज्ञान तथा कृषि आदि विषयों पर लेख छापती थी। कोलकाता से मासिक पत्रिका *'शिल्पकला लतिका'* सन 1862 में प्रकाशित हुई। इस बंगला पत्रिका का मुद्रण न्यू बंगाल प्रेस से होता था। अभयनंद बंद्योपाध्याय इसके सम्पादक थे। यह प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित विषयों की पत्रिका थी।

बाम्बे कन्नडीज वर्नाकुलर सोसायटी ने 6 जून 1862 को मंगलूर से द्विभाषी पाक्षिक पत्र *'विचित्र वर्तमान संग्रह'* का प्रकाशन किया। इसी का दूसरा नाम *'इलस्ट्रेटेड कन्नडीज जर्नल'* था। रेवरेंड फर्डिनेड किटेल और मेक्स इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक थे। यह अँगरेजी और कन्नड दो भाषाओं में छपता था।

1863

गुजरात मित्र

सन 1863 में सूरत से *'गुजरात मित्र'* तथा *'गुजरात दर्पण'* का प्रकाशन हुआ। यह गुजराती भाषा का साप्ताहिक अखबार था। मूलतः सन 1861 में 'सूरत मित्र' का प्रकाशन हुआ था, जिसने सन 1863 में 'गुजरात मित्र' नाम धारण किया और 'गुजरात दर्पण' के विलय के बाद इसका नया नाम 'गुजरात मित्र तथा गुजरात दर्पण' हो गया। इस पत्र ने अपनी जन्म शताब्दी मनाई। इसका प्रकाशन जारी है। सन 1936 में 'गुजरात मित्र' को साप्ताहिक से दैनिक पत्र कर दिया गया। इसका समाचार पक्ष और विचार पक्ष अर्थात लेखादि स्तरीय हुआ करते थे। इसलिए पाठकों के बीच इस अखबार की अच्छी लोकप्रियता थी। इसे दैनिक समाचारपत्र के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय प्रवीणकान्त उत्तमराम रेशमवाला को जाता है, जो नए स्वरूप में 'गुजरात मित्र' के पहले सम्पादक हुए।

जनवरी 1863 में साप्ताहिक *'आयुर्वेद पत्रिका'* द्वारकानाथ दास के सम्पादन में निकली। मुर्शिदाबाद से जनवरी 1863 में बंगला साप्ताहिक *'संवाद भारत बंधु'* प्रकाशित किया गया। हरिनाथ मजूमदार के सम्पादन में मासिक पत्रिका *'ग्रामवार्ता प्रकाशिका'* अप्रैल 1863 में निकली। उन्नीस वर्ष तक इसी रूप में प्रकाशित होने के बाद इसका पाक्षिक संस्करण निकलने लगा। एक साल पश्चात ही 'ग्राम वार्ता' साप्ताहिक हो गई। बाद में जलधर सेन और अक्षय

---
1. इन्दुप्रकाश, 14 अक्टूबर 1895

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमार मित्रा ने इसके सम्पादन-प्रकाशन की जिम्मेदारी सम्हाली। बिहारीलाल चक्रवर्ती ने मई 1863 में मासिक पत्रिका *'साहित्य संक्रान्ति'* निकाली। यह बंगला की साहित्यिक पत्रिका थी। साप्ताहिक *'भारत परिदर्शन'* शांतिपुर से जदुनाथ तर्कभूषण के सम्पादन में निकला। यह बंगला पत्र एक वर्ष तक प्रकाशित हुआ। दिसम्बर 1864 में यह पुराण संग्रह प्रेस चित्तपुर से *'परिदर्शन'* नाम से मासिक स्वरूप में निकलने लगा। सुलभ प्रेस ढाका से जुलाई 1863 में बंगला साप्ताहिक *'ढाका दर्पण'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक हरिश्चन्द्र मित्रा थे।

बंगला में महिलाओं के लिए अगस्त 1863 में मासिक पत्रिका *'बामा बोधिनी'* निकाली गई। इसका सम्पादन उमेशचन्द्र दत्त करते थे। कोलकाता से प्रकाशित होने वाली यह पत्रिका सन 1923 तक प्रकाशित हुई। सुकुमार दत्त, पंडित तारा कुमार कविरत्न, सूर्यकुमार चट्टोपाध्याय, संतोष कुमार दत्त ने भी इस पत्रिका का सम्पादन किया। इसके सम्पादकों में एक विदुषी महिला ऊषा प्रभा दत्त भी रही हैं।

मासिक *'अबोध बन्धु'* का प्रकाशन सन 1863 में जोगेन्द्रनाथ घोष के सम्पादन में हुआ। बंगला की इस साहित्यिक पत्रिका ने बिहारीलाल चक्रवर्ती के निसर्ग संदर्शन, बंग सुन्दरी, सुरबाला, काव्य तथा हेमचंद्र बंद्योपाध्याय की इन्द्र सुधापान जैसी कृतियों का प्रकाशन कर लोकप्रियता अर्जित की। सन 1863 में बर्दाप्रसाद राय ने *'उद्योग विधायिनी'* का प्रकाशन किया। यह पत्रिका ढाई साल तक निकली। सन 1863 में गोड़ीय वैश्य सम्प्रदाय की ओर से धार्मिक पत्रिका *'भगवद् भक्ति प्रदायिनी'* उड़िया में निकली। सचित्र मासिक पत्र *'रहस्य सन्दर्भ'* कोलकाता से सन 1863 में निकला। इसके सम्पादक राजेन्द्रलाल मित्रा थे। अंजुमन इस्लामी कोलकाता ने पत्रिका *'अंजुमन इस्लामी'* का प्रकाशन सन 1863 में किया था। आगरा से सन 1863 में *'लोकमित्र'* निकला।

1864

नेटिव ओपिनियन

मुम्बई से चार जनवरी 1864 में प्रकाशित होने वाला *'नेटिव ओपिनियन'* एक महत्वपूर्ण आंग्ल दैनिक था। इसका प्रकाशन विश्वनाथ नारायण मांडलिक ने किया था। पत्र के सम्पादक नारायण महादेव थे। वार्षिक शुल्क 15 रु. था। दो वर्ष तक 'नेटिव ओपिनियन' अँगरेजी में निकला। एक जुलाई 1866 से यह अँगरेजी एवं मराठी का द्विभाषी पत्र हो गया। यह पत्र सन 1908 तक चला। राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं के प्रति मध्यमार्गी नीति थी। शुल्क 15 रु. से घटाकर 11 रु. कर दिया। इस पत्र का आकार 50 गुणित 35 से.मी. था। कुल आठ पृष्ठ होते थे। प्रथम दो पृष्ठ अँगरेजी भाषा के थे। अँगरेजी का सम्पादकीय पृष्ठ दो के कालम एक पर होता था। तीसरे पृष्ठ से मराठी भाषा की सामग्री होती थी। मराठी का सम्पादकीय पृष्ठ 3 के किसी भी कालम से प्रारम्भ हो जाता था। यह जरूरी नहीं था कि दोनों भाषाओं के सम्पादकीय एक ही विषय पर लिखे जाएं। प्रायः इनके विषय अलग अलग होते थे। मराठी की सामग्री अनुपात में अधिक होती थी। यह पत्र बाद में गांधी-विचारधारा का प्रमुख प्रवक्ता बन गया और गांधीजी ने स्वयं भी इसमें लिखा।

'इन्दुप्रकाश' व 'नेटिव ओपिनियन' दोनों अपने समय के महत्वपूर्ण पत्र थे। मुम्बई में गुजराती 'रास्त गोफ़्तार' की बिक्री सबसे अधिक यानी 1650 प्रतियाँ थीं, 'इन्दुप्रकाश' की 1200 और 'नेटिव ओपिनियन' की लगभग 1000 प्रतियाँ बिकती थीं। यह पत्र 1908 में बंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

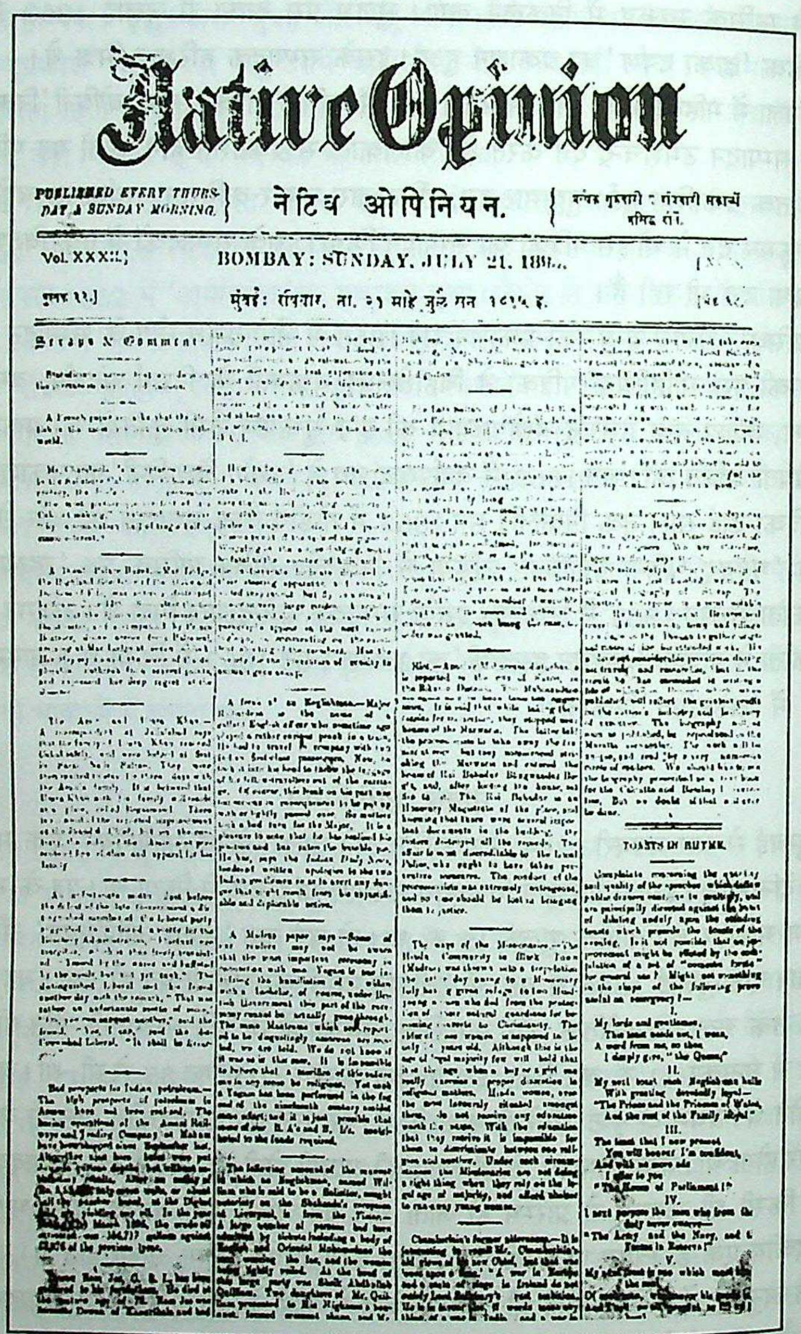

नेटिव ओपीनियन, मुम्बई 4 जनवरी 1864

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया।

ढाका से हरिश्चन्द्र मित्रा के सम्पादन में जनवरी 1864 में बंगला मासिक *'काव्य प्रकाश'* का प्रकाशन किया गया। मित्रा 'ढाका दर्पण' पत्र का भी सम्पादन करते थे। इस साहित्यिक पत्रिका में कौरवदूत काव्य, विलाप तरंगिनी, कौतुक कलोलिनी जैसी कृतियाँ प्रकाशित हुई थीं। जनवरी 1864 में बंगला मासिक *'रचनावली'* का प्रकाशन रंगपुर दिक्‌प्रकाश कार्यालय से हुआ।

20 फरवरी 1864 को जिला रोहतक के झज्जर नामक स्थान से साप्ताहिक *'निज़ाम-उल-अख़बार'* निकला। प्रत्येक बुधवार को सुलेमानी प्रेस से छपता था। इसमें चार पृष्ठ होते थे। प्रकाशक गुलाम अहमद खाँ थे। वार्षिक मूल्य पाँच रुपये तेरह आना था। शासन तथा रियासतों के शासकों से दस रुपये तथा रईसों से नौ रुपये वार्षिक लिए जाते थे। पवना से मार्च 1864 में बंगला मासिक *'पवना दर्पण'* का प्रकाशन रामसुन्दर राय एवं काशीनाथ मित्रा के सम्पादकत्व में हुआ।

अप्रैल 1864 में हुगली से बंगला मासिक *'शिक्षा दर्पण'* का प्रकाशन भूपेन्द्र चन्द्र मुखोपाध्याय ने किया। इस पत्रिका में शिक्षा विषयक सामग्री का प्रकाशन किया जाता था। इसके अलावा नील उत्पादकों एवं जमींदारों के सम्बन्ध में भी जानकारी छापी जाती थी। ढाका से बंगला मासिक *'चित्तरंजिका'* का प्रकाशन 14 मई 1864 को शारदाकांत ने किया। ब्रह्मधर्म प्रचारिणी सभा ने मई 1864 में बंगला मासिक पत्रिका *'धर्म प्रचारिणी'* निकाली। इसके सम्पादक अविनाश चन्द्र मुखोपाध्याय और राजेन्द्रनाथ गुहा थे।

वेद व्यास द्वारा सन 1864 में चेन्नै से प्रकाशित *'तत्व बोधिनी'* उल्लेखनीय तेलुगु पत्रिका है। इस पत्रिका ने न केवल ऋग्वेद को श्रृंखलाबद्ध प्रकाशित किया, साथ ही तेलुगु भाषा में उसे समझाते हुए शब्दों के सही उच्चारण और भावार्थों को आम पाठक के लिए सरल रूप में प्रस्तुत भी किया। यह पत्रिका सामाजिक समस्याओं पर पाठकों का ध्यान आकर्षित करती थी। 'तत्व बोधिनी' पत्रिका से तेलुगु में निबंध लेखन का आरम्भ माना जाता है।

'स्त्रीभूषण' का प्रकाशन सन 1866 में हुआ। यह पत्र 1866 तक निकला। यह मासिक पत्र था। इसमें स्त्री जीवन से सम्बन्धित लेखादि छापे जाते थे। बेलगाँव से चार जुलाई 1864 को *'बेलगाँव समाचार'* मराठी साप्ताहिक पत्र निकला। यह सोमवार को प्रकाशित किया जाता था। भिकाजी पंत सामंत इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। शंकरराव परुलेकर 30 वर्ष तक इसे निकालते रहे। मलयालम की पत्रिका *'पधिममतारिका'* सन 1864 में निकली।

इंडियन डेली न्यूज

जार्ज रोए फेनविक ने दैनिक *'इंडियन डेली न्यूज'* का प्रकाशन एक अगस्त 1864 को कोलकाता से किया। इसमें व्यापार और खेल समाचारों को महत्व दिया जाता था। प्रारम्भिक अंकों को देखने से ज्ञात होता है कि यह दैनिक पत्र 66 गुणित 44 सेमी. आकार में प्रकाशित होता था। इसमें 8 कालम होते थे। इसके दो संस्करण- नगर संस्करण और डाक संस्करण- छपते थे। नगर संस्करण का माहवारी शुल्क दो रुपये आठ आना और डाक संस्करण का माहवारी शुल्क चार रुपया आठ आना था। पूरा प्रथम पृष्ठ छोटे छोटे विज्ञापनों से भरा रहता था। कुछ समय बाद इसे जेम्स विल्सन ने खरीद लिया। वे ही इसका सम्पादन करते थे। बाद में 'इंडिया गजट' भी इसमें समाहित हो गया। सन 1925 में जब देशबन्धु चितरंजनदास ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'फार्वर्ड' निकाला, तब वह पत्र इसमें समाहित हो गया।

अक्टूबर 1864 में *'धर्मतत्व'* बंगला पत्रिका कोलकाता से निकली। इसी वर्ष कोलकाता से हाजी मोहम्मद हुसैन और बरकतउल्ला खां ने साप्ताहिक *'बरकती'* का प्रकाशन किया। सन 1864 में सिरपुर (मैमनसिंह) से साहित्यिक मासिक पत्रिका *'विद्योन्नति साधनी'* प्रकाशित हुई। विद्योन्नति साधनी सभा की परिचर्चाओं के अलावा इसमें बंगला और अँगरेजी साहित्य, भाषा, धर्म, राजनीति एवं सामाजिक विषयों पर भी सामग्री प्रकाशित की जाती थी। सन 1864 में *'भारत खण्डामृत'* निकला। आगरा से उर्दू में *'आबेहयात'* सन 1864 में निकला। इसके सम्पादक-प्रकाशक पं. बंशीधर थे। यह धार्मिक पत्र था। वंशीधर वाजपेयी आगरा से प्रकाशित होने वाले 'भारत खण्डामृत' के सम्पादक थे। वे आगरा नार्मल स्कूल में अध्यापक थे। मलयालम पत्रिका *'विद्यासंग्रहम्'* सन 1864 में प्रकाशित हुई। यह मासिक पत्रिका थी।

1865

मठ पत्रिका

चेन्नबसप्पा जब डेप्युटी शिक्षा अधिकारी थे तब बम्बई-कर्नाटक सीमा प्रान्तों में बहुसंख्यकों के लिए प्राथमिक पाठशालाओं का प्रारंभ करने के साथ-साथ सन 1865 में उन्होंने मासिक *'मठ पत्रिका'* का प्रकाशन किया। बेलगाँव के समाचार मुद्रणालय में 'मठ पत्रिका' में शिक्षण प्रभाग सम्बन्धी परिपत्रों, शिक्षकों के स्थानांतरण, अभियुक्तों के लिए शिक्षा, नियुक्तियाँ आदि समाचार होते थे। 18 वीं सदी का अन्तिम चरण कन्नड़ भाषा के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। सन 1865 में गंगाधर मडिवाकेश्वर तुरमरि ने केशीराज के 'शब्द मणि दर्पण' पर व्याख्या प्रस्तुत की। सन 1874 में उनकी रचना 'व्याकरण भाषा दर्पण', साथ ही वाणभट्ट की कादंबरी का कन्नड अनुवाद भी इसी पत्रिका में छपा था।

चेन्नप्पा और तुरमरि के बाद जो संपादक आये, वे भी कन्नड भाषा के विद्वान रहे। वे अपनी असाधारण कृतियों के द्वारा शिक्षकों एवं आम जनता के मन को जीतने में सफल रहे।

सन 1867 में पत्रिका का नाम 'शाला' हुआ। सन 1871 में यह 'कन्नड शाला' बन गई और सन 1929 में 'कन्नड प्राथमिक शिक्षण' नाम धारण किया। सन 1956 से पत्रिका 'जीवन शिक्षण' के नाम से जानी जाती है। 'जीवन शिक्षण' पत्रिका ने 8 अप्रैल 1989 को अपनी 125 वीं जयन्ती मनाई। कन्नड पत्रकारिता के इतिहास में 100 वर्ष से अधिक कालावधि वाली पत्रिकाओं में 'जीवन शिक्षण' सबसे ऊपर है।

जगमोहन तर्कालंकार के सम्पादन में जनवरी 1865 में ब्रह्म समाज बहू बाजार कोलकाता की ओर से बंगला मासिक *'सत्य निशान'* का प्रकाशन हुआ। सैयद मोहम्मद क़ासिम वकील तथा आग़ा ईद-उल-ग़नी वकील ने सीतापुर से 16 पृष्ठों के साप्ताहिक *'ग़ालिब-उल-अख़बार'* का प्रकाशन एक मार्च 1865 को किया। यह पत्र हर सोमवार को नादिरा प्रेस में छपता था। इसका वार्षिक मूल्य ग्यारह रुपये था। बंगला साप्ताहिक *'विज्ञापनी'* का प्रकाशन मार्च 1865 में ढाका से हुआ। कृष्णचन्द्र मजूमदार इसके सम्पादक थे। सन 1866 में प्रेस के मेमनसिंह स्थानांतरित हो जाने पर यह पत्र भी वहीं से निकला। सन 1868 तक प्रकाशित हुए 'विज्ञापनी' का सम्पादन अंतिम दो वर्षों में जगन्नाथ अग्निहोत्री ने किया। मार्च 1865 में बंगला साप्ताहिक *'हिन्दू हितैषिणी'* का प्रकाशन ढाका से हुआ। हिन्दुओं के धर्म, रीति-रिवाज और मान्यताओं के प्रचार तथा शिक्षण के उद्देश्य से ढाका हिन्दू हितैषिणी सभा ने इसका प्रकाशन किया था। हरिश्चन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रा और उनके बाद आनन्दचरण सेनगुप्ता ने पत्र का सम्पादन किया।

कोलकाता से रामगोपाल बसु ने 17 अप्रैल 1865 को बंगला साप्ताहिक *'राजनीति संग्रह'* का प्रकाशन किया। यह पत्र राजनीति केन्द्रित था। एक मई 1865 को क्षेत्र मोहन चट्टोपाध्याय ने बंगला मासिक *'रंगभूमि'* का प्रकाशन किया। *'वीकली रिपोर्ट'* का प्रकाशन गया से एक मई 1865 को किया गया था। यह उर्दू साप्ताहिक था। बंगला त्रैमासिक *'सत्यज्ञान प्रदायिनी'* कोलकाता के ब्रह्म समाज ने जुलाई 1865 में निकाली।

भोपाल से प्रकाशित होने वाला सर्वप्रथम पत्र 'उम्दतुल अखबार' माना जाता रहा है। परन्तु 'अख़्बार शहंशाही' के अनुसार भोपाल से प्रकाशित होने वाला पहला पत्र साप्ताहिक *'आफ़ताब-ए-क़ुदरत'* था जिसका प्रकाशन सन 1865 में हुआ था। इसके सम्पादक अब्दुल करीम अंसारी, स्वामी क़ुदरत उल्ला तथा मुद्रक अब्दुल वाहिद उस्मानी थे। क़ुदरत उल्ला भोपाल रियासत में स्टाम्प विभाग के प्रबन्धक थे।

शायर मुंशी मोहम्मद क़ासिम 'नज़्म' ने सन 1865 में बेंगलूरु से *'क़ासिम-उल-अख़बार'* निकाला था। स्तरीय लेखों तथा सुन्दर छपाई के कारण यह लोकप्रिय अख़बार था। आठ पृष्ठों के इस पत्र में कभी कभी अपने समकालीन पत्रों से लेख साभार छापे जाते थे। इसके सम्पादकीय भी प्रेरक होते थे। दो अगस्त 1875 को प्रकाशित सम्पादकीय का एक अंश- "चूँकि रोज़-ब-रोज़ अंगरेजी मदरसे ही इजरा होते हैं (खुलते हैं) इसलिए लोगों को गुमान होता है के सरकार का इरादा हम सबको ज़बान अँगरेजी में तालीम देकर सरकारी खिदमतें (सेवाएं) देने का है इस ख्याल से खास ओ आम अँगरेजी पढ़ना शुरू करते हैं इसमें उनके औक़ात सर्फ होते हैं (समय खर्च होता है) हुनर नहीं सीखते। फिर जब के सरकारी खिदमतें उनको नहीं मिलती हैं ग़रीब व मुफ़लिस हो जाते हैं। हमको याद है के चंद रोज पेश्तर एक आफिसर साहब कहते थे के इन दिनों अँगरेजी पढ़े लिखे लोग जिस आसानी से मिलते हैं घोड़े का काम करने के लिए उस आसानी से साईस नहीं मिलते। जबके अभी यह हालत है तो आइंदा क्या होगी।"

'मेरठ गज़ट' का प्रकाशन सन 1865 में मेरठ से किया गया था। सम्पादक मुंशी वजाहत अली खां थे। मुंशीजी पूर्व में 'अख़बार-ए-आलम' के सम्पादक थे। इस पत्र के स्वामी हकीम मुक़र्रब हुसैन खां थे। मतबा दारुलउलूम में मुद्रण होता था। इस साप्ताहिक पत्र का प्रत्येक पृष्ठ दो कालमों में बँटा होता था। पृष्ठ संख्या चार थी।

देहली सोसायटी ने पत्रिका *'रिसाला देहली सोसायटी'* का प्रकाशन सन 1865 में किया था। शुरू में यह पत्रिका केवल सोसायटी की गतिविधियों को प्रकाशित करती थी। मई 1872 से इसका प्रतिमाह नियमित प्रकाशन किया जाने लगा। इसका उद्देश्य समाज से कुरीतियाँ मिटाना, महिलाओं में शिक्षा का विकास, फ़ारसी, अरबी तथा संस्कृत की पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद तथा अन्य सुधार कार्यों को प्रोत्साहित करना था।

पायनियर

'पायनियर' का प्रकाशन इलाहाबाद से हुआ। यद्यपि यह शासन समर्थक समाचारपत्र था परन्तु इसमें प्रकाशित समाचारों को देश के तत्कालीन सभी समाचारपत्र उद्धृत करते थे। समाचारों की प्रस्तुति रुचिकर होती थी। 'पायनियर' में प्रकाशित भारतीय कला और कारीगर शीर्षक समाचार 'टाइम्स आफ इण्डिया' के 15 दिसम्बर 1870 के अंक में उद्धृत किया गया था- "स्मरणीय है कि बाम्बे स्कूल आफ आर्ट्स के किपलिंग को भारत सरकार ने देशी निर्माताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

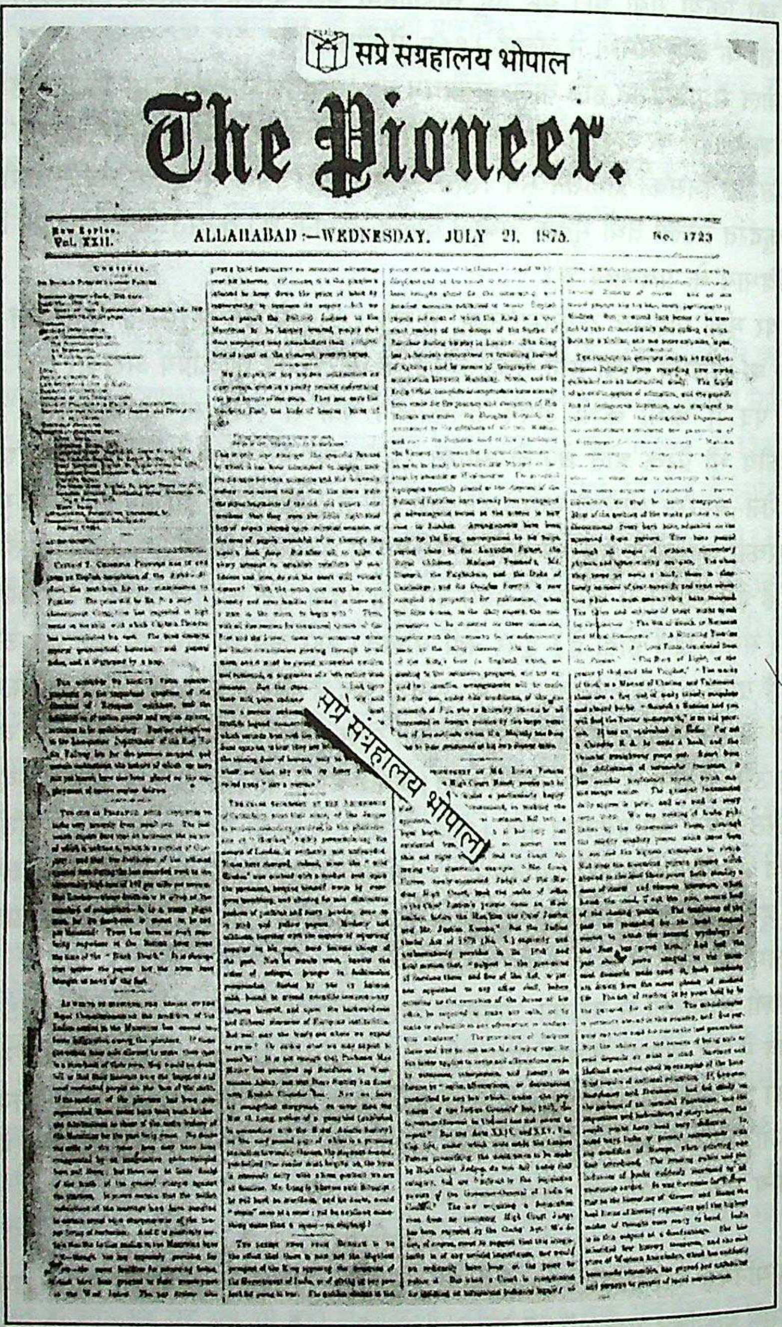
सप्रे संग्रहालय भोपाल

The Pioneer.

New Series. Vol. XXII. | ALLAHABAD:—WEDNESDAY, JULY 21, 1875. | No. 1723

सप्रे संग्रहालय भोपाल

पायनियर, इलाहाबाद, 2 जनवरी 1865

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की कला के अक्स उतारने का जिम्मा सौंपा, जिन्हें अन्तरराष्ट्रीय प्रदर्शनी में इस देश की कारीगरी के रूप में प्रदर्शित किया जाए। इस काम के लिए किपलिंग ने देश के प्रमुख उद्योग केन्द्रों का दौरा किया। अमृतसर दौरे में उन्होंने 26 रेखांकन भी तैयार किए।''

''दो कदम – सही दिशा में[1]

समय की माँग और उसके अनुरूप काम करने की दिशा में मद्रास सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में जो दो कदम उठाए हैं, वे सही हैं। एक है महिलाओं के लिए चिकित्सा शिक्षा के द्वार खोलना और दूसरा है मद्रास विश्वविद्यालय के पुनरीक्षित पाठ्यक्रम को अमलीजामा पहनाने के लिए प्रेसीडेंसी कालेज में फिजिकल प्रयोगशाला की इमारत के निर्माण के लिए 20 हजार रुपयों की स्वीकृति। प्रयोगशाला से यहाँ के नवयुवक मूल निवासियों को अपने दिल और दिमाग को नया प्रशिक्षण ग्रहण करने के अवसर प्रदान होंगे। इससे उनके ज्ञान में वृद्धि होगी और वे स्वयं नई खोज करने के लिए प्रोत्साहित भी होंगे।''

कर्नाटक प्रकाशिका

बेंगलूरु से कन्नड भाषा का पहला साप्ताहिक *'कर्नाटक प्रकाशिका'* सन 1865 में निकला। इस समाचारपत्र ने साहित्यिक और अन्य क्षेत्रों के प्रबुद्ध तबकों में जल्दी ही स्थान बना लिया। इसकी गद्य शैली खासी लोकप्रिय हुई। तथापि वित्तीय संकट के कारण कुछ ही वर्ष बाद इसे बंद करना पड़ा। सन 1874 में संस्कृत, कन्नड और अँगरेजी के विद्वान टी.सी. श्रीनिवासाचार्य एवं भाष्यम तिरूमलाचार्य ने 'कर्नाटक प्रकाशिका' का पुनर्प्रकाशन किया। तब यह कन्नड और अँगरेजी का द्विभाषी पत्र हो गया था। सन 1898 में इसका प्रकाशन बंद हो गया।

<u>1866</u>

उत्कल दीपिका

उड़िया साप्ताहिक *'उत्कल दीपिका'* सन 1866 में कटक से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक गौरीशंकर राय थे। कटक प्रिंटिंग कम्पनी इसकी प्रकाशक थी। इसका प्रकाशन सन 1937 तक हुआ। 'उत्कल दीपिका' ने उड़िया भाषा की अस्मिता के लिए जोरदार अभियान किया, क्योंकि बंगला के वर्चस्व से उसकी उपेक्षा का संकट पैदा हो गया था। यह पत्र सरकारी, गैर सरकारी चूकों की मुखर आलोचना करता था। समाचारों के अलावा साहित्यिक लेख और किताबों के विज्ञापन छपते थे। स्थानीय उड़िया नौजवानों को सरकारी नौकरियों में वरीयता देने की माँग इस पत्र ने उठाई थी। सन 1937 के शुरू में 'उत्कल दीपिका' दैनिक समाचारपत्र के रूप में निकला, परन्तु इसी वर्ष उसका प्रकाशन बन्द हो गया। धनसिंधु प्रेस बहरामपुर से सन 1865 में बंगला पाक्षिक *'ज्योतिर्मयी'* का प्रकाशन हुआ।

मेडिकल कालेज कोलकाता से जनवरी 1866 में चिकित्सा छात्रों की सहायता के लिए बंगला मासिक *'चिकित्सक'* का प्रकाशन किया गया था। विज्ञान एवं साहित्य की पत्रिका *'सर्वार्थ संग्रह'* फरवरी 1866 में निकली। मार्च 1866 में बाओलिया धर्म सभा ने श्रीनाथ सिंह राय के सम्पादन में मासिक *'हिन्दू रंजिका'* का प्रकाशन किया।

अख़बार साइंटिफिक सोसाइटी

30 मार्च 1866 को सर सैयद अहमद की प्रेरणा से *'अख़बार साईंटिफिक सोसाइटी'* का प्रकाशन अलीगढ़ से किया गया। यह पत्र पहले साप्ताहिक था, फिर इसे अर्द्धसाप्ताहिक कर दिया

1. पायनियर, 30 अगस्त 1895

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। आठ पृष्ठों का यह पत्र शुक्रवार को निकलता था। सम्पादक मौलवी मोहम्मद इस्माइल तथा प्रकाशक हाफ़िज़ अब्दुल रज़्ज़ाक थे। इंस्टीट्यूट प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क पन्द्रह रुपये था। एक कालम अँगरेजी में तथा दूसरे कालम में उर्दू रहती थी। कभी कभी कुछ लेख उर्दू और अँगरेजी में अलग अलग भी होते थे। प्रारम्भ में सर सैयद इसमें राजनीति पर लेख एवं घटनाओं पर टिप्पणियाँ लिखते थे। उनकी एक टिप्पणी-"अँगरेजी अख़बार नवीस हिन्दुस्तान में इस क़दर फिरक़े से नाराज़ नहीं हैं जिस क़दर वे हिन्दुस्तानी अख़बार नवीसों की आज़ादी से। इस वजह से उन्होंने कभी हिन्दुस्तानी अखबारों पर खुशामद का इल्ज़ाम लगाया है कभी बग़ावत का इल्ज़ाम साबित किया है कभी हिन्दुस्तानी राजाओं की झूठी तरफ़दारी का ख्यालेख़ाम पकाया है। मगर हम खूब जानते हैं के यह इल्ज़ाम उनकी उस क़ल्बी हरारत से पैदा होते हैं जो अब उनके दिलों में हिन्दुस्तानी अखबारों की निहायत बरजस्ता और सच्ची रायों के देखने से पैदा होती है और हरचंद वह अपने खयालात को निहायत खूबसूरत सूरत में ज़ाहिर करने का मक़सद करते हैं। मगर इस क़ौमी हरारत के सबब एक नोअ की सोख़्तगी उस अच्छी सूरत पर भी ज़ाहिर हो ही जाती है।"[1]

'मैसूर गजट' 7 अप्रैल 1866 को निकला। इसमें प्रशासन सम्बन्धी सूचनाएँ और समाचार तथा नोटिस आदि प्रकाशित किए जाते थे। यह द्वि-भाषी पत्र था जो अँगरेजी तथा कन्नड में छपता था। मैसूर राज्य के इस सरकारी गजट का सम्पादन एल. रिके करते थे।

मासिक पत्रिका *'रिसाला अंजुमन फ़ैज़-ए-आम'* गुजरांवाला से सन 1866 में अंजुमन फ़ैज़-ए-आम ने प्रकाशित किया। आठ पृष्ठों के इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक मुंशी दीवानचंद थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। यह पत्र ज्ञानचंद प्रेस में छपता था। इलाहाबाद से 30 जून 1866 को *'सदर्न क्रास ऑर इण्डियन चर्च गजट'* का प्रकाशन हुआ।

अरुणोदय

ठाणे से प्रकाशित होने वाला पहला मराठी समाचारपत्र *'अरुणोदय'* है। इसे काशीनाथ विष्णु फड़के ने 22 जुलाई 1866 को प्रकाशित किया। प्रारम्भ में 'अरुणोदय' के सम्पादक रघुनाथ शंकर शास्त्री थे। सन 1877 में स्वयं काशीनाथ विष्णु फड़के सम्पादन करने लगे। 1903 से 1909 तक उनके पुत्र धोंडो काशीनाथ फड़के सम्पादक रहे। 'अरुणोदय' में लेखकों को मानदेय देने की व्यवस्था थी- "जो गृहस्थ हमारी ओर उपयुक्त विषयों पर निबंध लिखकर भेजेंगे उन्हें हर कालम के निबंध के लिए हम ढाई रुपये भेजेंगे।"[2] सन 1908 में लोकमान्य तिलक पर राजद्रोह का मुकदमा चला था। 'अरुणोदय' को भी शिकार बनाया गया और यह पत्र बंद हो गया। सन 1908 में 'अरुणोदय' के 5 अप्रैल के अंक में प्रकाशित लेख के कारण मुकदमा हुआ। इस लेख का शीर्षक था- महत्त्वाची इशारत। फड़के को पाँच-पाँच हजार रुपये की दो जमानतों पर छोड़ा गया था। मुकदमे का निर्णय जून 1909 में हुआ और धोंडो फड़के को सजा हो गई। सन 1909 में 'अरुणोदय' बंद हो गया।

एक अगस्त 1866 को साप्ताहिक *'सिंध सुधार'* प्रकाशित हुआ। यह सिंधी भाषा का पहला साप्ताहिक पत्र था जो कराची से निकला। इसकी लिपि फारसी थी। कालान्तर में सिंधी की उच्च कोटि की साहित्यिक पत्रिका में रूपान्तरित हुआ। सन 1884 में साधु हीरानन्द आडवाणी ने

---

1. अखबार सांइटिफिक सोसाइटी, 10 मार्च 1876, जिल्द 11, नं. 18
2. अरुणोदय, 27 मई 1883

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादन दायित्व सम्हाला। इसी के साथ पत्रिका में सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण और राष्ट्रीय चेतना से सन्दर्भित सामग्री का प्रकाशन होने लगा। कोलकाता से बंगला की साहित्यिक मासिक पत्रिका *'नव प्रबंध'* सितम्बर 1866 में निकली। साहित्य, विज्ञान और इतिहास पर लेखादि के अलावा इसमें पुस्तक समीक्षा भी की जाती थी। ब्रह्म समाज की वर्धमान शाखा ने सितम्बर 1866 में *'वर्धमान मासिक पत्रिका'* की शुरूआत की।

मुर्शिदाबाद से दिसम्बर 1866 में पाक्षिक पत्र *'मुर्शिदाबाद संवाद सार'* प्रकाशित हुआ। सन 1866 में दिल्ली से हकीम महमूद खाँ ने *'अकमल-उल-अख़बार'* निकाला। इसके सम्पादक मुंशी बिहारीलाल 'मुश्ताक़' थे। उर्दू के समकालीन अखबारों में अपनी उत्कृष्टता के लिए पहचाना जाता था। सन 1866 में जोधपुर से उर्दू का *'मुहिब्बे मारवाड़'* पत्र निकला। सन 1866 में मुरादाबाद से साप्ताहिक *'रुहेलखण्ड अख़बार'* निकला, जिसके प्रकाशक मुंशी श्यामस्वरूप तथा सम्पादक हरनाम स्वरूप थे।

ईसाई धर्म प्रचारकों ने सन 1866 में हिन्दी *'सत्यदीपक'* का प्रकाशन किया। यह मासिक पत्र मुम्बई से प्रकाशित होता था। सन 1866 में जोधपुर से *'मरुधर मित्र'* प्रकाशित हुआ। इसमें सामान्य समाचार और लेखादि प्रकाशित होते थे। सन 1866 में जोधपुर से *'मारवाड़ गज़ट'* प्रकाशित किया गया था। पृष्ठ के आधे भाग में हिन्दी तथा आधे भाग में उर्दू रहती थी। इसके पहले सम्पादक हीरालाल थे। बाद में डोरीलाल सम्पादक हुए। इसमें सरकारी विज्ञप्तियाँ, रियासत की आज्ञाएँ, राज्य के आन्तरिक एवं बाहर के समाचार प्रकाशित होते थे। वस्तुतः यह पत्र शासन की रीति-नीति का प्रचारक था। सन 1912 तक इसका प्रकाशन हुआ। ब्रह्म समाज ने अपने विचारों के प्रतिपादन के लिए लाहौर से सन 1866 में *'ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका'* प्रकाशित की थी। प्रथम वर्ष यह द्विभाषी- हिन्दी और उर्दू में छपती थी। सन 1867 से केवल हिन्दी में निकलने लगी।

संस्कृत साहित्य पर केन्द्रित बनारस कालेज की मासिक पत्रिका *'काशी विद्या सुधानिधिः पंडित'* का प्रकाशन जून 1866 में हुआ। यह संस्कृत भाषा की पत्रिका थी। ई.जी.लाजरस एण्ड कम्पनी इसकी स्वामी-मुद्रक-प्रकाशक थी। मेडिकल हाल प्रेस बनारस से बीस पृष्ठ की इस पत्रिका का मुद्रण होता था। इसका आकार 30 गुणित 20 से.मी. था। पत्रिका में संस्कृत के अलावा अँगरेजी के अनुवाद भी प्रकाशित किए जाते थे।

लगभग एक दशक बाद 'पंडित' के प्रकाशन की जो नई श्रृंखला मिलती है उसमें यह पत्रिका 22 गुणित 14 से.मी. आकार में प्रकाशित होती थी। यह पत्रिका सन 1917 तक प्रकाशित हुई। इसका वार्षिक शुल्क नौ रुपये था।

1867

विविध ज्ञान विस्तार

मराठी भाषा में जितने मासिक पत्र निकले उसमें सबसे महत्वपूर्ण *'विविध ज्ञान विस्तार'* माना गया। विविधता और विचारशीलता में जैसा यश 'विविध ज्ञान विस्तार' ने अर्जित किया वैसा अन्य किसी मासिक पत्रिका को नहीं मिला। इस मासिक का प्रकाशन रामचंद्र भिकाजी गुंजीकर ने जुलाई 1867 में किया। ललित और विचारोत्तेजक साहित्य इसमें दिया जाता था। प्रारम्भ में पृष्ठ सँख्या 16 थी जो धीरे-धीरे बढ़कर 48 हो गई। वार्षिक शुल्क प्रारम्भ में तीन रुपये और एक अंक का मूल्य छह आना था। पहले दो वर्ष रामचंद्र नीलकंठ मोघे का नाम प्रकाशक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

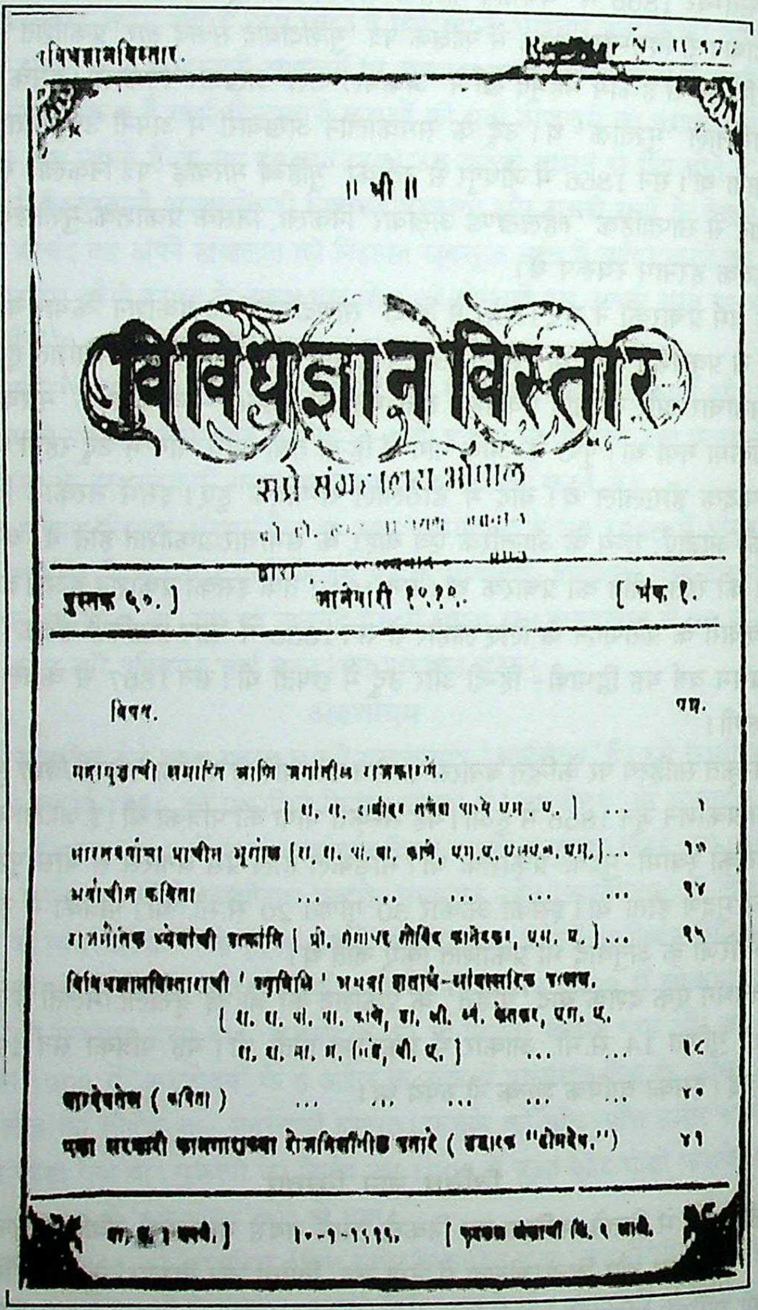

विविध ज्ञान विस्तार (मराठी) जुलाई, 1867

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में छापा जाता था। तीसरे वर्ष से गणपतराव जगन्नाथ दलवी का नाम दिया गया और कार्यालय का पता मकान नं. 76 लोहार चाल, मुम्बई था। 1874 में प्रकाशक पुरुषोत्तम गोविंद नाडकर्णी हुए। उन्होंने प्रसिद्ध ग्रंथकारों की मराठी पुस्तकों का प्रकाशन कर मराठी वाङ्मय को समृद्ध बनाया। सन 1900 में रावसाहेब अनंत आत्माराम मोरमकर ने प्रकाशन का दायित्व सम्भाला। मोरमकर सन 1914 से अपने लक्ष्मीनारायण प्रेस में पत्रिका की छपाई करने लगे थे। सन 1925 से इसी छापाखाने से 'विविध वृत्त' साप्ताहिक प्रकाशित हुआ। गुंजीकर ने सात वर्ष तक सम्पादन किया।

भौतिक, आध्यात्मिक, धर्मशास्त्र, गणित और ज्योतिष, इतिहास और इतिहास संशोधन, पुरातत्वशास्त्र एवं इंडोलॉजी, भाषा एवं व्याकरण शास्त्र से संगीत तक सभी विषयों पर सैकड़ों लेख 'विविध ज्ञान विस्तार' में छापे गए। संस्कृत साहित्य और साहित्यिकों का परिचय प्रचुरता से छापा गया। सन 1916 में यह पत्र गोवा से भी निकला। परन्तु एक वर्ष चल कर बंद हो गया। फरवरी 1919 के अंक में 'सम्पादक की सूचनाएं' शीर्षक से छपा- ''चालू वर्ष 'विविध ज्ञान विस्तार' का पचासवाँ वर्ष है। इतने वर्ष तक सतत उच्च दर्जे का साहित्य प्रकाशित करने का मान 'विस्तार' के अलावा अन्य किसी मराठी मासिक को नहीं जाता। गत 50 वर्षों में महाराष्ट्र साहित्य की अभिवृद्धि और उस अवधि में 'विस्तार' द्वारा किया गया कार्य दशनि वाला, एक स्वतंत्र ग्रंथ प्रकाशित करने की योजना बनायी है। इसलिए इस सरस्वती महोत्सव को यथासंभव सहायता देने के संबंध में महाराष्ट्रीय विद्वानों से निवेदन किया गया है।'' सन 1937 में इस मासिक पत्र का प्रकाशन बंद हो गया।

एक जनवरी 1867 को ईसाई मत के प्रचार के लिए बंगला पत्रिका *'तत्व विकासिनी'* का प्रकाशन हुआ। विक्रमपुर (पूर्वी बंगाल) से ग्रामीण जीवन के पुनरुत्थान पर केन्द्रित बंगला मासिक *'पल्ली विज्ञान'* जनवरी 1867 में निकला। ठाणे से *'सूर्योदय'* सन 1867 में प्रकाशित हुआ। इस मराठी पत्र के प्रकाशक गोपाल गोविंद दाबक थे। 'अरुणोदय' के साथ प्रतिस्पर्धा में सूर्योदय निकाला गया था। *'मित्रोदय'* 16 जनवरी 1867 को मुम्बई से प्रकाशित हुआ। कुछ समय बाद 'हिन्दू रिफॉर्मर' का इसमें विलय हो गया और 'मित्रोदय' नाम से पत्र चलने लगा। 31 मार्च 1867 को आरा से त्रैमासिक पत्र *'नहर उल फ़वायद'* का प्रकाशन हुआ।

विदर्भ का पहला समाचारपत्र *'वहार्ड समाचार'* है। यह पत्र सन 1867 में साप्ताहिक के रूप में निकला। 'वहार्ड समाचार' पत्र प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय भावना का था। खंडेराव बालाजी फड़के ने इसे अकोला से प्रकाशित किया। सन 1919 अर्थात लगभग 50 वर्ष तक 'वहार्ड समाचार' निकला।

'कल्पतरु' सन 1867 में अण्णाजी गोविंद इनामदार सोलापुर से निकालते थे। 'आनन्दवृत्त' का प्रकाशन बलवंत नारायण काकड़े करते थे। इनामदार ने अपना छापाखाना और पत्र काकड़े को सौंप दिया, तब काकड़े ने 'कल्पतरू' और 'आनंदवृत्त' को सन 1874 से निकालना प्रारम्भ किया। यह पत्र रानडे-गोखले के विचारों का समर्थन करता था।

मलयालम की राजनीतिक चेतना की पत्रिका *'संदिष्टवादी'* सन 1867 में निकली। 'संदिष्टवादी' पर शासन ने पाबंदी लगा दी थी। अक्टूबर 1867 में साहित्यिक बंगला मासिक *'अवकाश बंधु'* का प्रकाशन कोलकाता से आशुतोष मुखोपाध्याय के सम्पादन में हुआ। यह सामाजिक-साहित्यिक विषयों की पत्रिका थी। जम्मू से साप्ताहिक *'बुद्धि विलास'* का प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबिबचनसुधा।

जिल्द १। सं० १९२४ आश्विन शुद्ध १५। । नंबर २

दाम पेशगी साल।

महसूल सहित साल	१)
बिनामहसूल	१॥)

दाम बाद साल।

महसूल सहित	१॥)
बिनामहसूल	१)

श्रीयुत बाबू हरिश्चन्द्र जी की आज्ञाऽनुसार।

बनारस।

लाइट छापेखाने में गोपीनाथ पाठक ने मुद्रित किया।

कविवचन सुधा, काशी, 15 अगस्त 1867

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1867 में किया गया। यह 8 पृष्ठ का था। पंडित वेंकटराम शास्त्री प्रकाशक थे। बुद्धि बिलास प्रेस में छपता था। हिन्दी तथा उर्दू में शनिवार को निकाला जाता था। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था।

सन 1867 में अमृतसर से गुरुमुखी का पहला समाचारपत्र *'अखबार श्री दरबार साहिब'* प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक मुंशी हरिनारायण और प्रकाशक प्यारेलाल थे। क्रिश्चियन मिशनरियों के सनातन धर्म विरोधी प्रचार का प्रतिकार यह अखबार करता था। अदालत तथा सरकार के नोटिस पत्र में छपा करते थे। मुख्यत: यह धार्मिक पत्र था। धर्म और संस्कृति के साथ-साथ समाज सुधार विषयक सामग्री दी जाती थी। फिरंगी हुकूमत और सरकारी अधिकारियों के प्रति इसका रवैया प्राय: सराहना का था। सुरेन्द्र मिश्र ने उड़िया भाषा का पत्र *'भुवनश्री'* सन 1867 में निकाला। सन 1867 में चेन्नै से आंग्ल दैनिक *'मेल'* शुरू हुआ। प्रारम्भ में इसका नाम 'मद्रास मेल' था।

कवि वचन सुधा

हिन्दी पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य को संस्कारित करने वालों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम अग्रणी है। हिन्दी गद्य के तो वे जनक ही माने जाते हैं। हिन्दी के बोलियों में बँटे स्वरूप को एक राष्ट्रभाषा के रूप में गढ़ने की ठोस नींव भारतेन्दु ने ही रखी और आज भी वही हिन्दी लेखन का आधार है। उनके यशस्वी और कालजयी अवदान का सम्मान करने के लिए 20 सितम्बर 1880 की 'सार सुधा निधि' में एक प्रस्ताव बाबू हरिश्चंद्र को 'भारतेन्दु' की उपाधि से विभूषित करने के लिए प्रकाशित किया गया। सभी हिन्दी समाचारपत्रों के सम्पादकों और अन्य विद्वानों ने इस प्रस्ताव से सहमति प्रगट की और उन्हें विभूषित किया गया। तब से उन्हें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सम्बोधित किया जाने लगा। हिन्दी साहित्य में जहाँ एक कालखण्ड 'भारतेन्दु युग' के नाम से जाना जाता है, वहीं हिन्दी पत्रकारिता में भी भारतेन्दु परम्परा सुपरिभाषित है जिसका परवर्ती पीढ़ियों ने अनुसरण किया।

'कविवचन सुधा' का प्रकाशन हरिश्चन्द्र ने 15 अगस्त 1867 को काशी से किया। कविता पर केन्द्रित इस मासिक पत्र में भारतेन्दु ने हिन्दी के नए और पुराने श्रेष्ठ कवियों की रचनाओं का प्रकाशन किया। 'कविवचन सुधा' ने प्रवेशांक में अपनी दिशा का संकेत कर दिया था-

> ''खल जनन सों सज्जन दुखी मति होहि, हरिपद मति रहै।
> अपधर्म छूटै, स्वत्व निज भारत गहै, सब दुख बहै।।
> बुध तजहि मत्सरि नारि नर सम होंहि, जग आनंद लहै।
> तजि ग्राम कविता, सुकविजन की अमृतवानी सब कहै।।''

उपरोक्त काव्य पंक्तियों में 'स्वत्व निज भारत गहै' और 'नारि नर सम होंहि' जैसी स्पष्टोक्तियाँ उनके सोच की दर्पण हैं।

'कविवचन सुधा' की बानगी इस टिप्पणी से मिलती है- ''यह बात सिद्ध है कि पश्चिमोत्तर देश की कदापि उन्नति नहीं होगी, जब तक यहाँ की स्त्रियों की भी शिक्षा न होगी क्योंकि यदि पुरुष विद्वान होंगे और उनकी स्त्रियाँ मूर्खा तो उनमें आपस में कभी स्नेह न होगा और नित्य कलह होगी।'' भारतेन्दु स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देते थे। पत्रकारिता पर पाबन्दियों का शिकंजा कसे जाने के बावजूद 'कविवचन सुधा', जो केवल साहित्यिक पत्रिका नहीं थी, ने साहित्य, समाचार, यात्रा, ज्ञान विज्ञान आदि पक्षों का सम्पादन-कौशल के साथ भलीभाँति निर्वाह किया। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका लोकप्रिय हुई, फिर उसकी आवृत्ति मासिक से पाक्षिक और साप्ताहिक हो गई। धर्म, राजनीति और समाजनीति विषयक लेख भी इसमें प्रकाशित होते रहे।

हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में 'कविवचन सुधा' की यह सम्पादकीय टिप्पणी (1870) उल्लेखनीय है- ''प्राय: लोग कहते हैं कि हिन्दी कोई भाषा ही नहीं है। हमको इस बात को सुनकर बड़ा सोच होता है यदि कोई अँगरेज ऐसा कहता तो हम जानते कि वह अज्ञानी है इस देश का समाचार भलीभाँति नहीं जानता। पर अपने स्वदेशियों को हम क्या कहें। हम नहीं जानते कि उनकी ऐसी हत बुद्धि क्यों हो गई कि वे अपने प्राचीन भाषा का तिरस्कार करते हैं। क्या भारतखंड निवासी महाराज विक्रमादित्य और भोज के समय में भी लखनऊ की सी बोली बोलते थे। एक महाशय लिखते हैं कि 'यवन लोगों के आगमन के पूर्व इस देश में प्राकृत भाषा प्रचलित थी परन्तु उसके अनन्तर उस भाषा में विशेष करके अरबी और फारसी शब्द मिश्रित हो गए। अब उस नवीन भाषा को चाहै हिन्दी कहो, हिन्दुस्तानी कहो, बृजभाषा कहो, खड़ी बोली कहो, चाहै उर्दू कहो।'' परन्तु वही यह भी कहते हैं कि मुसलमान लोगों ने अपने आगमनान्तर अपनी फारसी अर्थात फारस देश की भाषा के सन्मुख प्राकृत का नाम हिन्दी अर्थात् हिन्द की भाषा रक्खा।'' ''प्राचीन रीत्यानुसार चलने वाले इसी को हिन्दी भाषा कहते हैं और इसी की वृद्धि चाहते हैं।'' परन्तु वे महाशय एक और स्थान में कहते हैं कि ''भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसको सम्पूर्ण लोग बे प्रयास समझ जायें'' और आप ही ऐसे ऐसे क्लिष्ट शब्द लिखते हैं कि फारसीदाओं के अतिरिक्त और लोगों को यूनानी भाषा जान पड़े हम नहीं जानते कि वे यहाँ की भाषा किस को ठहराते हैं। कितने लोग कहते हैं हिन्दी उस भाषा का नाम है जिसमें संस्कृत शब्द विशेष हैं कितने लोग कहते हैं वह भाषा है जिसमें फारसी और अरबी शब्दों की अधिकता हो हम लोग भी इसी वर्ग के हैं और सदा अपने हिन्दी ही की उन्नति चाहते हैं। आप लोग जानते होंगे कि प्रयाग में एक यूनीवर्सिटी अर्थात प्रधान शिक्षालय नियत कराने के हेतु लोग बड़ा श्रम कर रहे हैं। बहुतेरों ने इस विषय में अपनी सम्मति प्रकट की है- परन्तु प्रोग्रेस के सम्पादक को यह बात पसन्द नहीं है। इस विषय पर हम लोग अवकाश के समय अधिक ध्यान देंगे।''

'कविवचन सुधा' में एक नियमित स्तम्भ रहता था सूचना का, जिसका स्वरूप लोगों को आगाह करने का था। ऐसी एक सूचना नकली अशर्फियों के सन्दर्भ में दृष्टव्य है- ''आजकल किसी ने बहुत से झूठी अशरफियां बनाकर चलाई हैं। यद्यपि हम लोगों ने चाहा सविस्तार वृत्तांत लिखें परन्तु हमको अभी ठीक समाचार नहीं मिला, आशा है कि भविष्य नम्बर में कुछ लिखें।''[1] हैजा के प्रकोप से बचने के लिए सलाह देते हुए सूचना प्रकाशित की गई- 'हैजे से कैसे बचें'। ''इन हैजे का उपद्रव बहुतायत से फैल जाता है इस हेतु लोगों को उचित है कि नीचे लिखा हुआ उपाय करें निश्चय है कि इस उपाय से बड़ा लाभ होगा। ''सब लोग छोटे या बड़े एक एक ताम्बे का पैसा या अधेला या तांबे का जन्तर या तावें का कोई टुकड़ा डोरे में पिरोकर गले में इस चाल से पहिरे कि वह छाती के नीचे लटकता रहे और धूप में बहुत न फिरै और भोजन दस बजे तक कर लें और घर में मैलापन न रखैं और हैजे की चर्चा बहुत न करैं। निश्चय ही जो लोग यह उपाय करेंगे उनको ईश्वर उस बुरे रोग से बचावेगा। हरिश्चंद्र''[2]

प्रकाशन के द्वितीय वर्ष में जहाँ 'कविवचन सुधा' पाक्षिक हो गई थी, वहीं 5 सितम्बर

1. कवि वचन सुधा, वर्ष 2 अंक 8
2. कवि वचन सुधा, वर्ष 2, अंक 15

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1873 से इसका प्रकाशन साप्ताहिक के रूप में होने लगा। उसकी भाषा साधारण बोलचाल की हिन्दी रहती थी। इसमें प्रकाशित एक समाचार है- ''गत बुढ़वा मंगल में एक बात ऐसी अपूर्व हुई थी, सर्वदा स्मरण रहै, वह यह है कि शुक्र के दिन वायु इस वेग से बहती थी कि उसने सब मेला इधर-उधर कर दिया और रामनगर के नीचे नावों का पहुँचना असम्भव हो गया। वरन श्रीमहाराज विजयनगर के कच्छे इसी पार रह गये। परन्तु श्री महाराज काशीराज ने जब देखा कि कच्छे आगे नहीं हटते तब अपने हाथियों को बुलवा भेजा। आज्ञा होते ही बड़े-बड़े मतंग नंगधड़ंग घूमते हुए एक संग गंगाजी में हल गये। कोई तो अपने दाँतों से दबाता था और कोई सिर से ठोकर देता था और कोई पुट्ठे का बल लगाता था और कोई अपने दाँतों से कच्छों की कोर पकड़ कर खींचता था। निदान यह कौतुक और शोभा देखने के योग्य थी, लिखी नहीं जा सकती।''

'कविवचन सुधा' की दो टिप्पणियाँ बड़ी सारगर्भित हैं[1]-

(1)

''कुछ काल पहले अँगरेज लोग जब हिन्दुस्थान के विषय में व्याख्यान देते थे तब यही प्रकट करते थे कि हम लोग इस देश के लाभ अर्थ राज्य करते हैं यही चिल्ला चिल्ला कर सर्वदा कहा करते कि हम सदैव हिन्दुस्तान की वृद्धि के निमित्त विचार करते हैं कि हम लोग इस देश की वृद्धि करेंगे और यहाँ के निवासियों को विद्यामृत पिलावैंगे और राज्य का प्रबन्ध किस भाँति करना यह ज्ञान प्रजा को स्वत: हो जायेगा तब हम लोग हिन्दुस्तान का सब राज्य प्रबन्ध यहाँ के निवासियों को स्वाधीन कर देंगे और अंत को सब राम राम कह कर जहाज पर पैर रख स्वदेश गमन करैंगे। यह वार्ता हम लोग अपनी गढ़ी हुई नहीं कहते। पर इन्हीं अँगरेजों की और मुख्य करके पादरियों के जो व्याख्यान प्रसिद्ध हुए हैं उनसे स्पष्ट प्रगट होता है यह प्रकार पाठकों के देखने में निस्संदेह आया ही होगा इसमें संदेह नहीं।''

(2)

''अँगरेजों ने हम लोगों को विद्यामृत पिलाया और उस्से हमारे देश बान्धवों को बहुत लाभ हुए इसे हम लोग अमान्य नहीं करते परन्तु उन्हीं के कहने के अनुसार हिन्दुस्तान की वृद्धि का समय आने वाला हो सो तो एक तरफ रहा पर प्रतिदिन मूर्खता, दुर्भिक्षता और दैन्य प्राप्त होता जाता है। अँगरेजों ने उनको अपने विद्या की रुचि लगा कर राजनीति में उनके चित्त को आकर्षक किया और सच्ची विद्या उन्हें न दिया और यही कारण है कि हम लोग इनकी माया से मोहित हो गये और हम लोगों को अपनी हानि दृष्ट न पड़ी।''

'कविवचन सुधा' की आर्थिक विषय पर टिप्पणी देखिये- ''सरकारी पक्ष का कहना है कि हिन्दुस्तान में पहले सब लोग लड़ते भिड़ते थे और आपस में गमनागमन न हो सकता था। यह सब सरकार की कृपा से हुआ। हिन्दुस्तानियों का कहना है कि उद्योग और व्यापार बाकी नहीं। रेल आदि से भी द्रव्य के बढ़ने की आशा नहीं है। रेलवे कंपनी वाले जो द्रव्य व्यय किया है उसका ब्याज सरकार को देना पड़ता है और उसे लेने वाले बहुधा विलायत के लोग हैं। कुल मिलाकर 26 करोड़ रुपया बाहर जाता है।''[2]

विज्ञान और तकनीकी प्रगति में भी भारतेन्दु की अभिरुचि थी। वे समाचारों के माध्यम से

1. कवि वचन सुधा, 8 फरवरी 1874
2. वही 8 फरवरी 1874

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन विधाओं के प्रति जनता की जागरूकता बढ़ाने का प्रयत्न करते थे–

"(विलायत में) एक लक्ष बइलर है, भाप के यंत्र हैं और एक एक की शक्ति 40 घोड़ों की है। एक घोड़े की शक्ति आठ मनुष्यों के बराबर है तो इस हिसाब से चालीस लाख घोड़े अर्थात् तीन करोड़ बीस लाख मनुष्यों का काम इन यंत्रों के द्वारा होता है मनुष्य तो काम करते थक जाते हैं पर ये यंत्र कभी नहीं थकते और मनुष्यों के समान चार आना आठ आना रोज नहीं देना पड़ता केवल इनमें अग्नि प्रदीप करने से चलने लगते हैं– परदेश के कला कौशल्य ने इस देश पर चढ़ाई किया ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।"[1]

आठ वर्ष तक 'कविवचन सुधा' का सम्पादन-प्रकाशन करने के बाद भारतेन्दु ने अपने मित्र चिंतामणि के कहने पर पत्रिका उन्हें सौंप दी। मानसेवी दंडाधिकारी का पद त्याग दिया और अँगरेज अफसरों से मिलना तक छोड़ दिया। 'कविवचन सुधा' से भी नाता तोड़ लिया। कृतघ्नता की पराकाष्ठा कि सन 1883 में जब भारतेन्दु का निधन हुआ, तब इस शोक समाचार और श्रद्धांजलि तक को 'कविवचन सुधा' में स्थान नहीं मिला। सन 1886 में यह पत्रिका हो गई।

1. कवि वचन सुधा, 9 मार्च 1874

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषान्तरण से कानून को मात

1868

रत्न प्रकाश

जनवरी 1868 में *'रत्न प्रकाश'* रतलाम (मालवा) से प्रकाशित किया गया था। यह साप्ताहिक पत्र था। इसके स्वामी तथा सम्पादक सैयद मोहम्मद निज़ामुद्दीन थे। मुद्रक और प्रकाशक पंडित बीकाजी रामचंद्र थे। इसे रतलाम प्रेस में मुद्रित किया जाता था। इस साप्ताहिक का आकार 30 गुणित 20 से.मी. था। इसमें 12 पृष्ठ होते थे। पृष्ठ के दो कालम हुआ करते थे-एक हिन्दी तथा दूसरा उर्दू का। इसका वार्षिक शुल्क 12 रुपये था। सन 1873 से हिन्दी में 'रत्न प्रकाश' अलग से प्रकाशित किया जाने लगा। कभी-कभी 'अवध अखबार' और 'अखबार-ए-आलम' में रत्नप्रकाश से लेख उद्धृत किए जाते थे। 'अखबार-ए-आलम' ने इसके सम्पादन तथा शैली की प्रशंसा की है। इस साप्ताहिक में देश और विदेश के समाचार संक्षेप में दिए जाते थे।

फरवरी 1868 में बंगला मासिक *'हित साधक'* प्रियचरण सरकार के सम्पादन में निकला। इसका प्रकाशन एक साल तक हुआ। बंगला मासिक *'ज्ञान रत्न'* फरवरी 1868 में प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक सुन्दरलाल सोम थे, बाद में गुरुचरण गुप्ता हुए।

अमृत बाजार पत्रिका

'अमृत बाजार पत्रिका' भारत का ऐसा पहला राष्ट्रीय समाचारपत्र है, जिसने अनेक मोर्चों पर अँगरेजों और अँगरेजी विचारधारा से लड़ाई लड़कर भारतीय पत्रकारिता के लिए मौलिक मानदंड स्थापित किए। इस पत्र की शुरूआत 20 फरवरी 1868 को जैसोर जिले के अमृत बाजार गाँव से बंगला भाषा के साप्ताहिक पत्र के रूप में हुई। शिशिर कुमार घोष और उनके भाई ने एक लकड़ी का प्रेस तीन सौ रुपये में खरीद कर इसका मुद्रण प्रारम्भ किया था। शिशिर कुमार घोष इसके सम्पादक थे। प्रकाशन प्रारम्भ होने के चार माह बाद ही जब एक अँगरेज अधिकारी ने एक भारतीय महिला से छेड़-छाड़ की तो इस पत्र ने कठोर भाषा में इस घटना की भर्त्सना की। फलस्वरूप समाचारपत्र के मुद्रक और समाचार लिखने वाले पत्रकार को सजा हो गई। अगले वर्ष, 25 फरवरी 1869 से यह पत्र द्विभाषी (अँगरेजी, बंगला) साप्ताहिक हो गया। सन 1871 में इसका प्रकाशन कोलकाता से होने लगा। भारतीय भाषाओं के पत्रों की आवाज पर अंकुश लगाने के लिए लार्ड लिटन ने सन 1878 में वर्नाकुलर प्रेस एक्ट के माध्यम से प्रतिबंध लगाया। 'अमृत बाजार पत्रिका' ने कानूनी प्रतिबन्धों से बचने के उद्देश्य से 21 मार्च 1878 से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Amrita Bazar Patrika

India Becomes Republic

The Flag Proves Its Worth —National Flag Becomes Flag Of The Republic

FUNDAMENTAL RIGHTS IN INDIAN REPUBLIC'S CONSTITUTION

THE CREDO

U. P. Premier's Message

THE PLEDGE REDEEMED

अमृत बाजार पत्रिका, कोलकाता, 20 फरवरी 1868

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'अमृत बाजार पत्रिका' को अँगरेजी साप्ताहिक के रूप में परिवर्तित कर दिया। 19 फरवरी 1891 में यह पत्र अँगरेजी दैनिक हो गया। तब इसका सम्पादन शिशिर कुमार घोष और मतिलाल घोष कर रहे थे।

दैनिक पत्र के रूप में इसका प्रकाशन पत्रिका प्रेस, बाग बाजार स्ट्रीट, कोलकाता से होता था। इसके प्रकाशक और मुद्रक डी. के. विश्वास थे। यह पत्र सन 1909 में 12 पृष्ठों का प्रकाशित होता था और इसका आकार 36 गुणित 54 सेंटीमीटर था। इसके प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापन प्रकाशित होते थे। अंतिम दो पृष्ठ भी विज्ञापनों से भरे रहते थे। एक पृष्ठ में 5 कालम और एक कालम की चौड़ाई 6.5 सेंटीमीटर होती थी। पृष्ठ 6 पर चौथे और पाँचवें कालमों पर किसी एक या दो सामयिक विषयों पर अग्रलेख प्रकाशित होता था। 'अमृत बाजार पत्रिका' के देश के प्रमुख स्थानों पर और विदेशों में भी संवाददाता थे। देश के विभिन्न शहरों के सम्वाददाता तार द्वारा समाचार भेजते थे। कोलकाता और कोलकाता शहर के आस-पास के गाँव-नगरों के समाचार प्रत्येक अंक में छापे जाते थे। इस पत्र की एक विशेषता यह थी कि न्यायालयों में जनता से सम्बन्धित जो प्रकरण चलते थे उनकी कार्यवाही अवश्य प्रकाशित होती थी। एक प्रति की कीमत एक आना थी और अग्रिम वार्षिक शुल्क कोलकाता वालों के लिए 20 रुपये और कोलकाता से बाहर के लोगों के लिए 25 रुपये था। जो व्यक्ति पुरानी प्रतियाँ लेने आते थे उनसे एक प्रति का छह आना लिया जाता था। 'अमृत बाजार पत्रिका' का साप्ताहिक संस्करण काफी लोकप्रिय था। इस संस्करण में विविध रुचियों वाले पाठकों के लिए सामग्री प्रकाशित की जाती थी। साप्ताहिक संस्करण की दरें अलग थीं। अनेक व्यक्ति केवल साप्ताहिक संस्करण ही खरीदते थे, साप्ताहिक संस्करण की एक प्रति की कीमत तीन आना थी। विज्ञापनों के साथ विज्ञापित वस्तु की फोटो भी छपती थी जैसे घड़ी, लालटेन, सायकल, अँगूठियाँ आदि।

देश-विदेश के समाचारपत्रों से प्रमुख समाचार उद्धृत किए जाते थे। इस प्रकार यह समाचारपत्र समाचारों के मामले में सम्पूर्ण अखबार था। राष्ट्रीयता की भावना के खिलाफ यदि किसी समाचारपत्र में कोई समाचार प्रकाशित होता था, तब उसका प्रतिवाद अवश्य किया जाता था। पाठकों के पत्र शीर्षक से अनेक विषयों पर नागरिकों के विचार छापे जाते थे। नागरिकों की सुविधाओं से सम्बन्धित छोटी-छोटी जानकारियाँ प्रकाशित करने के कारण यह पत्र सर्वाधिक प्रचलित था। जैसे हावड़ा पुल पर यातायात बंद रहने की सूचना, बैंक ऑफ बंगाल की ब्याज दर, मौसम की सूचना आदि। प्रतिवाद भी बेहिचक प्रकाशित किए जाते थे।

'अमृत बाजार पत्रिका' ने प्रारम्भ से यह आवाज उठायी कि शासकीय सेवाओं के सभी पदों पर भारतवासियों को समुचित प्रतिनिधित्व दिया जाय। जब आई.सी.एस. 1863 की पहली परीक्षा में सत्येन्द्रनाथ टैगोर उत्तीर्ण हो गये तब अँगरेजों को भारतवासियों की योग्यता का आभास हुआ और वे इससे घबरा भी गए। तब अँगरेजों ने परीक्षा के नियमों में ही परिवर्तन कर दिया। इसके बाद 1869 की परीक्षा में भी चार भारतवासी उत्तीर्ण हुए। इस पत्र ने उन सभी बुनियादी मुद्दों पर विचार व्यक्त किए जो भारतीय जनता के हित में थे। इसने न केवल तत्कालीन न्यायिक और पुलिस प्रशासन में आमूल सुधार पर विचार व्यक्त किए, वरन यह भी महसूस किया कि देश में राष्ट्रीय आंदोलन संचालित करने के लिए एक प्रभावशाली राजनीतिक संस्था की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से शिशिर कुमार घोष ने 23 सितंबर 1875 को कोलकाता में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इण्डियन लीग की स्थापना की। इसका उद्देश्य राजनीतिक शिक्षा और राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा देना था।

'अमृत बाजार पत्रिका' के प्रारम्भिक अंकों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह राजनीतिक पत्र होने के साथ ही समाज सुधार के कार्यों की आवश्यकता पर विशेष जोर देता था। चूँकि शिशिर कुमार घोष ब्रह्म समाज के सक्रिय सदस्य थे, अत: उनमें प्रगतिशील सामाजिक दृष्टि थी। इसीलिए उन्होंने सती प्रथा, वेश्यावृत्ति, बाल विवाह आदि कुरीतियों के खिलाफ लिखा है। 'पत्रिका' विधवा विवाह की पक्षधर थी।

'अमृत बाजार पत्रिका' ने भारतीय पत्रकारिता को नई दिशा दी। इसने उसकी दृष्टि का विस्तार किया और उसमें निडरता के बीज बोए। कांग्रेस की स्थापना के समय से ही पत्रिका ने खुलकर इसकी गतिविधियों पर निगाह रखी और सभी राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर रचनात्मक सुझाव दिए। पत्रिका देश के सभी भागों में पढ़ी जाती थी और देश के सभी राजनीतिक नेता इसका आदर करते थे। देश के अन्य समाचारपत्रों के लिए भी यह अनुकरणीय मानी जाती थी। सन 1917 में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने 'अमृत बाजार पत्रिका' और उसके सम्पादक शिशिर कुमार घोष के बारे में लिखा- ''उस समय स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता करने के दिन थे। उन्होंने अकेले लड़ाई लड़ी और उनकी आत्मा ने ही उन्हें रास्ता बतलाया। वे दुनिया को संदेश देना चाहते थे और इसे उन्होंने धर्म समझा। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में उन्होंने बंगाल को रास्ता बतलाया। मुझे याद है कि 40 वर्ष पूर्व मेरे राज्य (महाराष्ट्र) में 'पत्रिका' पढ़ने के लिए लोग कितने उत्सुक और उत्साही रहते थे। उनकी व्यंग्यात्मक शैली में लिखी गई टिप्पणियाँ सरल और सुबोध होते हुए कितनी प्रभावशाली होती थीं। मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ कि 'पत्रिका' पढ़ने के लिए लोग डाकिए की किस उत्सुकता से राह देखते थे।''

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में बंगाल में दो ही प्रमुख पत्र थे- 'अमृत बाजार पत्रिका' और 'बंगाली'। 1905 में जब बंगाल का विभाजन हुआ, तभी देश की प्रथम समाचार एजेन्सी एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इण्डिया (ए.पी.आई.) अस्तित्व में आई। पूरे देश के समाचारपत्रों ने लार्ड कर्जन के बंग-भंग निर्णय का घोर विरोध किया। इस समय 'पत्रिका' का सम्पादन मोतीलाल घोष कर रहे थे और 'बंगाली' के सम्पादक सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे। इन दोनों पत्रों ने बंगाल विभाजन के खिलाफ ऐसी मुहिम चलाई, जिसकी परिणति जन-आंदोलन के रूप में हुई। 'पत्रिका' का कार्यालय राजनीतिज्ञों के विचार-विमर्श का केन्द्र बन गया। फलस्वरूप बंगाल में क्रान्तिकारी आंदोलन की शुरूआत हुई। अंतत: शासन को अपना निर्णय रद्द करना पड़ा। 'पत्रिका' की अगुवाई के कारण ही अँगरेजों को मुँह की खानी पड़ी। 'पत्रिका' की निडरता को जन समर्थन प्राप्त था। इसीलिए 'पत्रिका' के सम्पादकीय में व्यक्त विचार जनता के विचार माने जाते थे।

लार्ड कर्जन के बाद जब लार्ड मिन्टो गवर्नर जनरल हुए तब तक देश में राष्ट्रीय आंदोलन ने जड़ें जमा ली थीं। राष्ट्रीय प्रेस के विस्तार के कारण सरकार चिंता में थी। सन 1910 में ऐसा कानून बना जिसके द्वारा मजिस्ट्रेट समाचारपत्रों से जमानत की राशि जमा करा सकते थे। इस प्रकार कार्यपालिका को समाचारपत्रों पर अंकुश लगाने का हथियार मिल गया। इस कानून का पहला शिकार 'पत्रिका' को ही होना पड़ा। मई 1913 में 'पत्रिका' ने जब असम के सम्भागीय आयुक्त की एक रिपोर्ट के सम्बन्ध में टिप्पणी लिखी, तब पत्रिका से 5000 रुपये की जमानत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राशि जमा करने के लिए कहा गया। इसी वर्ष 'पत्रिका' पर कई प्रकरण भी चले, परन्तु 'पत्रिका' का स्वर यथावत बना रहा। न्यायालय की मानहानि के सम्बन्ध में भी एक विधेयक लेजिस्लेटिव कौंसिल में प्रस्तुत किया गया, जिसमें यह व्यवस्था की गई कि समाचारपत्र के प्रत्येक अंक पर सम्पादक का नाम अंकित किया जाए। शासन यही चाहता था कि किसी प्रकार सम्पादक की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया जाए। इसी बीच प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हो जाने से यह मामला टल गया। 'पत्रिका' का कवरेज व्यापक था। इसकी निगाह से ऐसा कोई समाचार नहीं छूट पाता था जिससे स्वतंत्रता आंदोलन को बल मिलता हो। इंग्लैण्ड के हाऊस ऑफ कामन्स में सर हेनरी काटन ने 31 दिसम्बर, 1908 के प्रस्ताव में यह जानकारी माँगी कि भारत में एक जनवरी 1907 तक देशद्रोह सम्बन्धी लेखन और भाषणों पर कितने लोगों पर कार्रवाई की गयी। लंदन से प्रकाशित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पत्र 'इण्डिया' ने यह जानकारी प्रकाशित की। 'पत्रिका' ने 2 जुलाई 1909 के अंक में उसे उद्धृत करते हुए लिखा-"एक जनवरी, 1907 से उकसाने वाले जिन 58 लेखों और भाषणों पर मुकदमे चलाए गए, उनका विवरण दिया गया। इससे यह तथ्य उजागर हुआ कि दो साल से भी कम अरसे में 50 से 60 भारतीय पत्रकारों को कैद की सजा हुई और इन सब सजाओं की मियाद 150 साल होती है। भारी जुर्मानों की रकम इसके अलावा रही। कुछ प्रकरणों में तो प्रेस भी राजसात कर लिया गया। यह पता चला कि इन सजा पाए पत्रकारों में कई युवा ही थे और उनमें से अधिकांश को सश्रम कारावास की सजा मिली। कुछ को देश निकाला दिया गया। कहना न होगा कि ये मुकदमे ऐसे ताबड़तोड़ ढंग से चलाए गए कि वे भारत में अशान्ति के जनक बने।"

इस प्रकार खुलकर टिप्पणी लिखना निर्भीक सम्पादकों के ही बस की बात थी। 'पत्रिका' का यही चरित्र था, जिसके कारण उसने स्वर्णिम इतिहास रचा। 'अमृत बाजार पत्रिका' अपने ऐतिहासिक स्कूप के लिए जाना जाता है। 7 दिसम्बर 1936 के अंक में यह स्कूप प्रकाशित हुआ, जिसे पत्र के लंदन स्थित संवाददाता ने घटना के चार दिन पूर्व भेजा था। यह स्कूप आठवें किंग एडवर्ड के अपहरण से सम्बन्धित था और इसे पढ़कर सारी दुनिया अचम्भित हो गई थी। उस समय पत्र के सम्वाददाता रेमसे मेकडोनाल्ड थे, जो बाद में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री हुए।

शिशिर कुमार घोष के सबसे छोटे पुत्र तुषारकान्ति घोष ने 30 वर्ष की उम्र में, सन 1928 में समाचारपत्र का कार्य भार सम्हाला। तुषारकान्ति घोष बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनमें दूरदृष्टि थी, वे कल्पनाशील और मेहनती भी थे। उनके सम्पादकत्व में पत्र ने निरन्तर प्रगति की। सन 1932 में न्यायालय की मानहानि के एक प्रकरण में सम्पादक तुषार बाबू और मुद्रक पर 500-500 रुपये जुर्माना हुआ। यह प्रकरण मिदनापुर के जिला दंडाधिकारी डगलस की हत्या के सम्बन्ध में न्यायालय द्वारा सुनाए गए निर्णय को प्रकाशित करते समय लगाए गए शीर्षक और टिप्पणी को आधार बनाकर चलाया गया था। सन 1935 में भी सम्पादक और मुद्रक पर न्यायालय की मानहानि का मुकदमा चलाया गया जिसमें सम्पादक को तीन माह और मुद्रक को एक माह की कैद की सजा हुई।

जब समाचारपत्र की प्रसार सँख्या काफी अधिक हो गई तब 1939 में नई रोटरी मशीन पर अखबार प्रकाशित होने लगा। पृष्ठ सँख्या 16 से बढ़कर 36 हो गई। द्वितीय महायुद्ध के दौरान इसकी प्रसार सँख्या काफी बढ़ी। उत्तर भारत के पाठकों की माँग पूरी करने के लिए दिसम्बर 1943 से इलाहाबाद से *'नार्दर्न इण्डिया पत्रिका'* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जिसके प्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक तुषारकांति घोष ही थे। इसके बाद इलाहाबाद से ही इसी समाचारपत्र समूह के हिन्दी दैनिक 'अमृत प्रभात' का प्रकाशन हुआ। इस समाचारपत्र ने राष्ट्रीय विचारधारा का प्रारम्भ से ही खुलकर समर्थन करते हुए अँगरेजी शासन और अँगरेज परस्त समाचारपत्रों से भी लड़ाई लड़ी। स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान इस पत्र के सम्पादक के देश के सभी नेताओं महात्मा गांधी, सरदार पटेल, डा. बी.सी. राय, आदि से व्यक्तिगत सम्बन्ध थे। लम्बी लड़ाई के बाद जब भारत को स्वतंत्रता मिली तब 15 अगस्त 1947 को 'पत्रिका' का मुख पृष्ठ चटक लाल रंग में प्रकाशित हुआ।

स्वतंत्रता के बाद जब समाचारपत्रों का ध्येय मिशन न होकर व्यवसाय हो गया तब प्रतिस्पर्धा में 'पत्रिका' को अनेक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जब इसकी प्रसार सँख्या 70 हजार से भी अधिक थी तब समाचारपत्र मई 1991 से सितम्बर 1994 तक बंद रहा। अक्टूबर 1994 में इसका पुन: प्रकाशन आरम्भ हुआ परन्तु इसके पूर्व ही 'पत्रिका' के यशस्वी सम्पादक तुषारकान्ति घोष का 96 वर्ष की उम्र में 29 अगस्त 1994 को देहावसान हो गया। इसी के साथ देश की पत्रकारिता का एक प्रमुख स्तम्भ ढह गया।

मासिक *'ज़खीरा बाल गोविंद'* का प्रकाशन एक मार्च 1868 को मोहल्ला पीपल मंडी आगरा से किया गया था। यह 22 पृष्ठ की पत्रिका थी। इसके मालिक एवं सम्पादक बालगोविंद माथुर थे। आगरा उर्दू अख़बार प्रेस में छपता था। इस सचित्र मासिक में ज्ञान, विज्ञान, नई खोज, अध्यात्म तथा रोजगार सम्बन्धी लेख छपते थे। सन 1868 में अमरावती से *'प्रबोध सिंधु'* नाम का मराठी पत्र यशवंतराव केसकर और उनके पुत्र रामराव केसकर निकालते थे।

पाक्षिक *'अख़बारुल अख़ियार'* का प्रकाशन मुजफ़्फ़रपुर (बिहार) से सन 1868 में हुआ। इसमें 16 पृष्ठ होते थे। वार्षिक शुल्क 12 रुपये था। मतबा चश्म-ए-नूर में मुद्रित कराया जाता था। इसके प्रथम सम्पादक अयोध्या प्रसाद थे। एक अक्टूबर 1870 से मुंशी क़ुरबान अली सम्पादक हो गए। यह बिहार की साइंटिफिक सोसायटी का मुखपत्र था।

अंजुमन तहज़ीब लखनऊ ने मासिक पत्रिका *'मुरक़्क़ा तहज़ीब'* का प्रकाशन सन 1868 में किया था। एक अक्टूबर 1873 से पत्रिका प्रति सप्ताह प्रकाशित होने लगी। इसके प्रकाशक पंडित शिवनारायण थे। सम्पादक मुंशी चिराग़ अली थे। बाद में मुंशी गोकुल प्रसाद सम्पादक हुए। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन मुरादाबाद का मुख पत्र *'गंजीना-ए-उलूम'* अक्टूबर 1868 में मुरादाबाद से निकला। गंगाप्रसाद सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

मराठी का *'खानदेश वैभव'* सन 1868 में प्रकाशित हुआ। लिथो पद्धति से छपने वाला यह पत्र 72 वर्ष से ज्यादा समय तक धुले से प्रकाशित हुआ। चार पृष्ठों के इस पत्र में हर पृष्ठ पर चार कालम होते थे। इसके प्रकाशक गणपतराव बहालकर वैद्य और सम्पादक बलवंत जनार्दन करंदीकर थे। इसमें सरकारी अधिकारियों के दौरे, तबादले, दरबार, पदवी दान आदि खबरों को स्थान मिलता था। सामाजिक समस्याओं पर भी चर्चा होती थी। करंदीकर के बाद यादव बालकृष्ण उर्फ तात्यासाहेब बहालकर सम्पादक हुए। प्रारम्भ में इसकी नीति कांग्रेस के समर्थन की थी। बाद में मध्यमार्गी हो गया। 1940 में बंद हुआ।

महाराष्ट्र मित्र

सन 1868 में सतारा से महादेव गणेश कोल्हटकर ने *'महाराष्ट्र मित्र'* का प्रकाशन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आठ पृष्ठ का अखबार था। इसकी नीति का खुलासा निम्नलिखित सम्पादकीय विचारों से होता है- ''समाचारपत्र स्वदेशाभिमान और स्वराज नीति का बहुत बड़ा खजाना है। समाचारपत्र प्रजा प्रेम व्यक्त करने वाला एक सुलभ यंत्र है। समाचारपत्र नाश के विशाल सागर से निर्भयता से राज्य रूपी नाव को ले जाने वाला मुख्य नाविक है। इसलिए वर्तमान भारत में इनका जितना अधिक प्रचार होगा उतना अच्छा है। इसका उपयोग गरीब और अमीर सबके लिए होना चाहिए। इसलिए इसका शुल्क कम रखा है। 30 वर्ष तक सालाना 5 रु. रखने के बाद अब केवल सालाना 2 रु. कर दिया गया है।''

'महाराष्ट्र मित्र' राष्ट्रीयता से ओतप्रोत था। सम्पादक गणपतराव कोल्हटकर का लेखन चुभनेवाला होता था। उनके 'इंग्रेज-हिंदू-संवाद' के लेख राष्ट्रीय भावना से भरपूर थे। सन 1882 में कोल्हापुर के दीवान बर्वे के प्रकरण में 'केसरी-मराठा' का समर्थन करने के कारण मानहानि के दावे में 'महाराष्ट्र मित्र' भी फँस गया। राजनीतिक मामलों में उग्र विचार लिखने वाले गनपतराव कोल्हटकर सामाजिक समस्याओं के मामले में सनातनी विचारों के थे।

सन 1868 में *'हिन्दी दीप्ति प्रकाश'* कोलकाता से निकला। बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री इसके सम्पादक थे। यह साहित्यिक अभिरुचि का साप्ताहिक था। सन 1872 में इसका नाम 'दीप्ति प्रकाश' हो गया तथा यह साप्ताहिक के स्थान पर मासिक स्वरूप में निकलने लगा। कटक से कलीपद बंद्योपाध्याय के सम्पादन में उड़िया साप्ताहिक *'उत्कल हितैषिणी'* निकली।

फकीर मोहन सेनापति ने सन 1868 में पाक्षिक पत्र *'बोधदायिनी'* निकाला। सन 1874 में इस उड़िया अखबार को साप्ताहिक कर दिया गया। उड़िया अस्मिता के लिए समर्पित इस पत्र के सम्पादक बाद में गोविन्दचन्द्र पटनायक हुए। सन 1872 में यह *'बालेश्वर संवाद वाहिका'* नाम से निकलने लगा।

सन 1868 में *'वृत्तान्त दर्पण'* के प्रकाशन के साथ इलाहाबाद में हिन्दी पत्रकारिता की हलचल शुरू हुई। सदासुख लाल इसके सम्पादक थे। यह विविध विषयों की पत्रिका थी। दो वर्ष बाद इसका स्वरूप बदला और यह कानून विषय पर केन्द्रित हो गई। सन 1868 में पुणे से *'विज्ञानसुधा'* नाम का मासिकपत्र भी निकला था। बेसल मिशन ने सन 1868 में कन्नड मासिक *'सभापत्र'* का प्रकाशन किया। इसी के परिशिष्ट के रूप में युवा पाठकों के लिए *'बालपत्र'* प्रकाशित हुआ।

1869

राजपूताना अख़बार

अजमेर से जनवरी 1869 में साप्ताहिक *'राजपूताना अख़बार'*[1] का प्रकाशन किया गया था। प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित होने वाले इस पत्र के सम्पादक वज़ीर अली, प्रकाशक दीवान बूटासिंह थे। पत्र में राजपूताना के समाचारों के साथ-साथ भोपाल, लखनऊ, मुरादाबाद, मुम्बई, मथुरा आदि नगरों के समाचार भी प्रकाशित किए जाते थे।

20 मार्च 1875 के अखबार में मुख पृष्ठ पर अँगरेजी में 'राजपूताना आफीशियल गज़ट' गोलाकार में लिखा है तथा इसके बीच में अँगरेजी सरकार का मोनोग्राम है। उसके ठीक नीचे हिन्दी में राजपूताना सरकारी गजट तथा बाईं ओर उर्दू में अख़बार का नाम लिखा है। उसके बाद हिन्दी में 'राजपूताना के एजेन्ट-गवर्नर जनरल साहिब बहादुर की आज्ञानुसार आफिशियल गजट

1. जयपुर से 1856 में प्रकाशित होने वाले राजपूताना अखबार से यह भिन्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छपा' लिखा है। दोनों भाषाओं में अँगरेज अधिकारियों की छुट्टियों और नियुक्तियों की सूचनाएं छपी हैं। भारत सरकार के राजपत्रों की विज्ञप्तियां उद्धृत की गई हैं। अंत में अनाजों के भाव दिए गए हैं। एक अलग पन्ने पर अँगरेजी में 'राजपूताना आफिशियल गज़ट' छपता था। अंत में सम्पादक का नाम दीवान बूटासिंह लिखा है।

जग हितेच्छु प्रेस से रावजी श्रीधर गोंधलेकर ने *'जग हितेच्छु'* पत्र का प्रकाशन एक मार्च 1869 को किया। वे ही इसके सम्पादक थे। 18 पुराणों का मराठी अनुवाद करने के अनुष्ठान ने गोंधलेकर को विशेष प्रतिष्ठित किया था। पत्र में खबरें खूब रहती थीं। इस वजह से पाठकों में इसका अच्छा प्रसार था। सन 1905 में यह मराठी पत्र बंद हो गया।

नासिक से त्र्यंबक हरि काले ने नवम्बर 1869 में साप्ताहिक *'नासिक वृत्त'* का प्रकाशन शुरू किया। यह शनिवार को प्रकाशित होता था। राजनीतिक और सामाजिक घटनाओं का इसमें प्रकाशन किया जाता था। 'नासिक वृत्त' की पृष्ठ संख्या चार थी। एक पृष्ठ में तीन कालम होते थे। एक अंक का मूल्य चार पैसे था। वार्षिक शुल्क अग्रिम 2 रु., और वर्ष की समाप्ति पर 3 रु. था। इसका वर्ष 1886 का एक अंक उपलब्ध है जिसमें प्रथम पृष्ठ पर आमचा प्रवास शीर्षक के अंतर्गत पुणे शहर का रोचक वर्णन है। एक दिलचस्प सूचना यह भी छपी मिलती है- "यह पत्र लंदन के लोगों को आक्सफोर्ड स्ट्रीट घर नं. 78 प्रोफेसर हालोने के लायब्रेरी में मुफ्त पढ़ने को मिलेगा।"

'सुज्ञानबोधक' शीर्षक दैनिक पत्र सन 1869 में निकला था। परन्तु आर्थिक व्यवस्था ठीक न होने के कारण बाद में वह अर्द्धसाप्ताहिक हो गया।

पाक्षिक *'चश्म-ए-इल्म'* का प्रकाशन एक जनवरी 1869 को पटना से किया गया। आठ पृष्ठों के इस पत्र का वार्षिक शुल्क सात रु. था। इसके प्रकाशक सैयद मोहम्मद अकबर शाह तथा सम्पादक सूरजमल थे।

'आगरा एजूकेशनल गजट' महीने में तीन बार-हर 10, 20 तथा 30 तारीख को प्रकाशित होता था। एक जनवरी 1869 को जारी विज्ञप्ति में समाचारपत्र के सम्बन्ध में बताया गया-"हर मामलात में तहरीर साफ होगी ख्वाहिश इंसाफ होगी। सच पूछो तो हिन्दुस्तान में आज़ादी फैलाना है, अखबार नवीसी तो सिर्फ एक बहाना है।" चार पृष्ठ का समाचारपत्र आगरा से मौलवी ख़्वाजा यूसुफ़ अली खां ने प्रकाशित किया। पत्र का सालाना शुल्क नौ रुपये था।

सज्जन कीर्ति सुधाकर

सन 1869 में उदयपुर गजट का प्रकाशन आरम्भ हुआ जो सन 1879 में मेवाड़ के शासक महाराणा सज्जन सिंह के नाम से *'सज्जन कीर्ति सुधाकर'* के रूप में सामने आया। केवल हिन्दी में प्रकाशित होने वाला यह पहला शासकीय गजट था जिसमें राजाज्ञाओं के साथ-साथ सामाजिक, पुरातात्विक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक महत्व के विचारोत्तेजक लेख भी प्रकाशित किए जाते थे।

'ग्वालियर गजट'[1] ने इसके बारे में लिखा है- "ये अख़बार पांजदह (पन्द्रह) रोज़ावार हर यकुम व 15 तारीख़ को बख़्त हिन्दी बज़बान भाषा उर्दू आमेज़ रियासत उदेपुर मेवाड़ में बा एहतमाम पंडित वंसीधर जी बाजपेई व मज़ामीन दिलचस्प व तीब अंगेज शाया होता है पहिले बार 15 मार्च का अख़बार तबादिला में पहुँचा जो हमने देखा तो दिल को निहायत इफ़्तराह पैदा

1. ग्वालियर गजट, 28 मार्च 1880

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ हम इनसाफ़न लिखते हैं कि ये अख़बार अपने मतालिब माफ़ी उल ज़मीर में निहायत ख़ूबी के साथ कामियाब है-इस अख़बार का कागज़ वलायती दबीज़ बहुत उम्दा-छापा टैप का निहायत साफ़ मज़ामीन इल्मी नफ़े व बख़्श आम निहायत खूब व मर्गूब इस के एडीटर इल्म व फ़ज़ल में कामिलबाई हमें ख़ूबी पौने सात रुपया सालाना क़ीमत-यक़ीनन हज़रात हिन्दी ख़्वां को ये अख़बार निहायत सूदमंद व ख़िरद आमोज़ है।''

इसमें प्रकाशित सामग्री सुरुचिपूर्ण रहती थी। साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों पर लेखों के अलावा देश-विदेश के दिलचस्प समाचार, खेल कूद प्रतियोगिताओं की सूचनाएं, जन्म-मरण कीं खबरें तथा बाजार भाव आदि प्रकाशित होते थे। समाचारों का काफी अंश बाहर के पत्रों से उद्धृत किया जाता था। राजस्थान राज्य के निर्माण के समय तक इस पत्र का प्रकाशन जारी रहा। 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' के जुलाई, 1923 के अंकों में प्रकाशित ये समाचार उसकी सम्पादन कला की बानगी पेश करते हैं-

''नया कानून बड़ौदा राज्य में[1]

''कानूनी कठिनाइयों को कम करने के लिए बड़ौदा राज्य ने एक नया कानून बनाया है जिसके अनुसार प्रत्येक ब्याह और तलाक की रजिस्ट्री करानी होगी। इस कानून से किसी सामाजिक या धार्मिक रीतियों में बाधा नहीं पहुँचेगी। ब्याह और तलाक जिस दिन हो उसके एक पक्ष के भीतर रजिस्ट्री होनी चाहिए। रजिस्ट्री कराने का भार बालिका और बालक के पिता और अभिभावकों पर है। यदि कानून से कोई ब्याह वा तलाक जायज नहीं होगा तो केवल सर्टिफिकेट से जायज नहीं समझा जाएगा, मुसलमानों को छोड़कर दूसरों के सम्बन्ध में रजिस्ट्रार का काम कानूनी बातों को देखना नहीं है। जो रजिस्ट्री नहीं कराएगा, उस पर 10 रुपये तक जुर्माना हो सकता है।''

''मारवाड़ी विवाह में धोखा[2]

''बिसाऊ के भोलारामजी पोद्दार ने आषाढ़ बदी द्वादशी को विवाह करने का निश्चय किया था। आपकी अवस्था 42 वर्ष की है, रामजीलाल शर्राफ द्वारा विवाह की बात पक्की हुई, विवाह के सम्बन्ध में कुछ लोग विरुद्ध थे, भोलारामजी से प्रार्थना की गई कि विवाह करने का विचार छोड़ दें। कुछ लोगों के हैंडबिल बाँटने और समझाने पर वे मान गए, शुक्रवार को कुछ लोगों को मालूम हुआ कि भोलारामजी का विवाह आज रात को नासिक में होगा, इसे रोकने के लिए मारवाड़ी अग्रवाल जाति के 7 व्यक्ति पंजाब मेल से नासिक गए। वहाँ धर्मशाला में तीन स्त्रियों सहित कुछ और आदमी भी उतरे हुए थे। उनमें भोलारामजी के नौकर भी थे। अनुमान से समझ लिया कि यही लोग कन्या पक्ष के हैं, परन्तु उनकी वेशभूषा देख सुनकर उक्त सज्जनों ने जान लिया कि वे मारवाड़ी जाति के नहीं हैं। पीछे यह भी मालूम हुआ कि विवाह आज नहीं होगा। भोलारामजी अभी नहीं आए। रहन-सहन से यह भी पता लगा कि यह लोग (कन्या पक्ष से) आचार भ्रष्ट हैं, उन स्त्रियों की जाँच की तो मालूम हुआ कि वे अग्रवाल नहीं हैं। पहले वे लोग अपने बनावटी नाम और सम्बन्ध को बताते रहे, परन्तु अन्त में मालूम हुआ कि जिस लड़की के साथ सेठ भोलाराम जी के विवाह की बात पक्की हुई थी वह धीमर की विधवा स्त्री है। दो स्त्रियाँ जो लड़की की माँ और बहिन बनी थीं, वे गिनोदिया जाति की हैं। उनका आपस में

1. सज्जन कीर्ति सुधाकर, 9 जुलाई 1923
2. वही, 23 जुलाई 1923

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई सम्बन्ध नहीं है। लड़की के चाचा दिल्ली के कन्हैयालाल ने सर्वप्रथम इसका भण्डाफोड़ किया, उन्होंने कह दिया कि हमें रामजीलाल शर्राफ ने कुछ लालच देकर ऐसा करने के लिए कहा था। लड़की के बनावटी मामा और भाई ने भी अपने बयान में यही बात कही। गत रविवार को यह सब बातें प्रकट करने के लिए बम्बई प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सभा की ओर से एक सभा हुई थी, उसमें हनुमानप्रसाद जी पोद्दार ने इसका सविस्तार वर्णन कह सुनाया, सभा में उक्त तीनों स्त्रियाँ और उनके बनावटी सम्बन्धी उपस्थित थे। कई वक्ताओं ने वृद्ध विवाह का बड़े जोर से विरोध कर कहा, कि इस प्रकार के विवाह से वर्णसंकरता के फैलने का समाज को भारी भय है। इससे समाज के अगुआ सावधान रहें।''

सन 1869 में दिल्ली से द्विभाषी साप्ताहिक पत्र *'इन्द्रप्रस्थ प्रकाश'* का प्रकाशन वैद्यनाथ ने किया। इसका सम्पादन-दायित्व पं. रुद्रदत्त शर्मा को सौंपा गया। हिन्दी लेख पं. रुद्रदत्त शर्मा और उर्दू के मजमून पं. जयन्तीप्रसाद लिखते थे। एक वर्ष चल कर यह साप्ताहिक पत्र बन्द हो गया।

ब्रह्म समाज के तत्वावधान में भगवतीचरन दास ने सन 1869 में उड़िया मासिक *'उत्कल शुभकरी पत्रिका'* प्रकाशित की। कटक से सन 1869 में अँगरेजी साप्ताहिक समाचारपत्र *'कटक स्टैण्डर्ड'* आरम्भ किया गया। कटक से ही सन 1869 में अँगरेजी साप्ताहिक *'कटक स्टार'* प्रकाशित हुआ। सन 1869 में जयपुर से उर्दू पत्र *'नैयरे राजस्थान'* का प्रकाशन हुआ।

<u>1870</u>

तहज़ीब-उल-अख़लाक़

सन 1858 में सर सैयद अहमद इंग्लैण्ड गये और 1870 में वहाँ से लौटे तो जनता के सोच में बदलाव लाने के लिए ठोस पहल करने का संकल्प उनके मन में था। इसके लिए उन्होंने समाचारपत्र को उपयुक्त माध्यम माना। इसी पृष्ठभूमि में *'तहज़ीब-उल-अख़लाक़'* का प्रकाशन 24 दिसम्बर 1870 को किया गया। इसके दो नाम छपते थे- अँगरेजी में 'मोहम्मडन सोशल रिफार्मर' तथा उर्दू में 'तहज़ीब-उल-अख़लाक़'। कभी 8 और कभी 12 पृष्ठ का यह पत्र अच्छे कागज़ पर सुन्दर टाइप में छपता था। इसका वार्षिक शुल्क साढ़े चार रुपये था। मुस्लिम समाज में सुधार का सर सैयद अहमद का नजरिया निम्नलिखित उद्धरण से प्रकट होता है-

''मज़हब और आम तालीम

''वे प्रत्येक विद्या को ग्रहण करते थे- दर्शन शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, गणित, काव्य तथा साहित्य आदि का अध्ययन करते थे तथा इसके साथ अपने धर्मशास्त्रों का अध्ययन भी करते थे। शासन दूसरे धर्म का है वह इस प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं कर सकता है। ऐसी दशा में पहले कुछ शिक्षा शास्त्री एवं प्रबुद्ध जन विचार विमर्श करें तथा वर्तमान में स्थितियों एवं आधुनिक विद्या के स्वरूप को ध्यान में रखकर यह बताएँ कि हमारी शिक्षा किस प्रकार की होनी चाहिए तथा उसके सिद्धांत क्या हों। उसके पश्चात प्रत्येक ज़िले में वहाँ के लोग कम से कम एक ऐसा मदरसा स्थापित करें जिससे हर प्रकार का मन्तव्य प्राप्त हो सके उदाहरण के रूप में यदि कोई व्यक्ति मौलवी मुहद्दिस-रफ़ीक़हा बनना चाहे तो मौलवी बनने के अवसर उसे प्राप्त हों और यदि कोई व्यक्ति बड़ा गणितज्ञ बनना चाहे तो वह भी अपना ध्येय उसमें प्राप्त कर सके। और यदि कोई अँगरेजी भाषा में प्रवीणता प्राप्त करना और सरकार में ऊँचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद प्राप्त करने का अभिलाषी हो तो वह भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके, जब इस प्रकार का प्रबन्ध हो जाएगा तो मुसलमानों का सही प्रशिक्षण और धार्मिक तथा सांसारिक उन्नति की आशा की जा सकती है।''

'तहज़ीब-उल-अख़लाक़' तीन वर्ष के पश्चात बंद हो गया। कुछ समय बाद पुन: प्रकाशित हुआ और दो वर्ष पाँच माह बाद फिर बंद हो गया। तेरह-चौदह वर्ष बाद फिर इसका प्रकाशन हुआ, जो तीन साल तक चला।

जनवरी 1870 में शाहजहाँपुर से मासिक *'आर्य दर्पण'* का प्रकाशन किया गया था। इसके सम्पादक मुंशी बख्तावर सिंह मूलत: शिक्षक तथा जिला आर्य सभा के सचिव थे। यह आर्यभूषण प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये छह आना था। सन 1906 तक 'आर्य दर्पण' का प्रकाशन हुआ।

सन 1870 में अकोला से *'वैदर्भ'* नाम का मराठी पत्र प्रकाशित हुआ। सम्पादक व्यंकटराव मुधोलकर थे। उनका अपना छापाखाना अमरावती में था। सन 1885 की 'आनन्द कादम्बिनी' में इस पत्र का उल्लेख है-''कादम्बिनी के परिवर्तन में 'वैदर्भ' पत्र मिला।'' इसका अर्थ है कि सन 1885 तक यह पत्र निकलता रहा। *'सत्यसदन'* मराठी पत्र कुलाबा, रायगढ़ से सन 1870 में रावजी हरी आठवले ने निकाला।

सुलभ समाचार

ब्रह्म समाज के नेता केशवचन्द्र सेन ने सन 1870 में कोलकाता से *'सुलभ समाचार'* अखबार निकाला। 'सुलभ समाचार' उन लोगों के लिए निकाला गया था जो अखबार पर ज्यादा खर्च नहीं कर सकते थे। सन 1912 में 'सुलभ समाचार' इण्डियन मिरर प्रेस से निकलने लगा था। 'अमृत बाजार पत्रिका' में बालेन्द्र नारायण सिन्हा ने सम्पादक के नाम एक पत्र लिखकर सवाल उठाया- ''सुलभ समाचार का प्रकाशन 14 अप्रैल 1911 से होगा और स्वाभाविक है कि यह बंगला लिपि में प्रकाशित होगा। परन्तु क्या इस तथ्य पर भी कोई विचार किया गया है कि बिहार, छोटा नागपुर और उड़ीसा की अधिकांश जनता बंगला लिपि नहीं जानती और शासन के सहयोग वाला यह समाचारपत्र उनके लिए उपयोगी न होगा। अत: शासन का मुखपत्र यह समाचारपत्र केवल अपना उद्देश्य अधूरा ही पूरा कर सकेगा। क्या शासन हिन्दुस्तानी भाषा के एक अन्य सुलभ समाचार के लिए 62500 रुपये प्रति वर्ष और उड़िया के 'सुलभ समाचार' के लिए भी इतनी ही रकम खर्च करेगा या बिहार, छोटा नागपुर और उड़ीसा की जनता की राजनीति यों ही चलती रहेगी?''

केशवचन्द्र सेन पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव किया था। सन 1873 में 'सुलभ समाचार' में उन्होंने इस विषय पर लिखा- ''यदि भाषा एक न होने के कारण भारतवर्ष में एकता न हो तो उसका क्या उपाय है? उसका उपाय है समस्त भारतवर्ष में एक भाषा का व्यवहार करना। इस समय भारत में जितनी भाषाएँ प्रचलित हैं उनमें हिन्दी भाषा प्राय: सर्वत्र प्रचलित है। इस हिन्दी भाषा को यदि भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनाया जाय तो यह कार्य अनायास ही शीघ्र सम्पन्न हो सकता है। एक भाषा के बिना एकता नहीं हो सकती।'' केशवचन्द्र सेन के अनुरोध पर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी में आर्य धर्म का प्रचार शुरू किया था। पहले वे संस्कृत में उपदेश दिया करते थे।

सन 1870 में दीपावली के अवसर पर *'आर्य मित्र'* का प्रकाशन किया गया। यह पुणे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

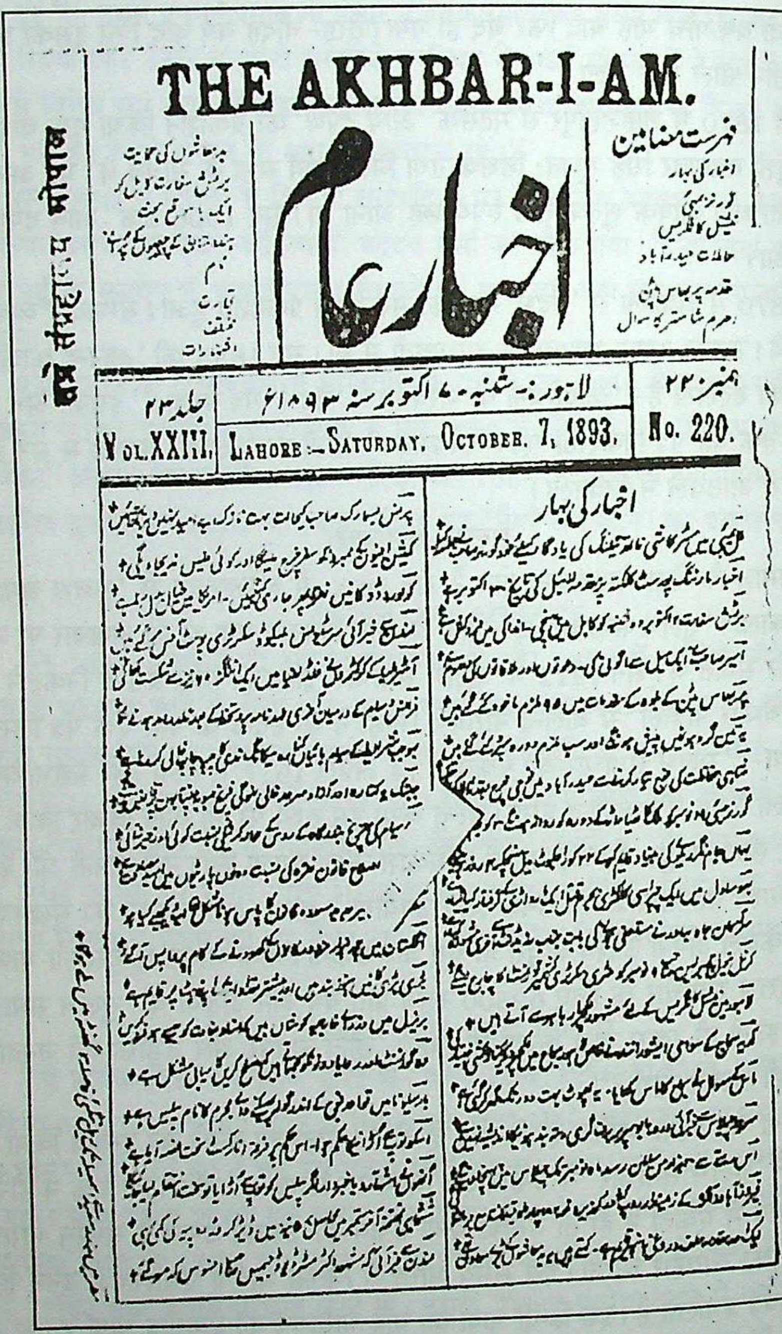

THE AKHBAR-I-AM.

اخبار عام

فہرست مضامین

جلد ۲۳ — VOL. XXIII.

لاہور ۔ شنبہ ۷ اکتوبر سنہ ۱۸۹۳ء — LAHORE :—SATURDAY, OCTOBER 7, 1893.

نمبر ۲۲۰ — No. 220.

اخبار کی بہار

अखबार-ए-आम, लाहौर, सन 1870

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित होने वाला मराठी मासिक पत्र था, जिसके सम्पादक वामन एकनाथ शास्त्री केलकर थे। सन 1870 में दिल्ली से अँगरेजी की त्रैमासिक पत्रिका *'यू.एस.आई.जर्नल'* निकली। मदुरै से द्वि-भाषी तमिल, तेलुगु पत्र *'सतिय वर्तमानी'* का प्रकाशन सन 1870 में हुआ। राजमुंदरी हाईस्कूल के हैडमास्टर बासे ने सन 1870 में *'गोदावरी विद्या प्रबोधिनी'* का सम्पादन-प्रकाशन किया। इसी तेलुगु मासिक पत्रिका से प्रख्यात पत्रकार कंदकूरि वीरेशलिंगम की पत्रकारिता आरम्भ हुई।

1871

उम्दतुल अख़बार

शाहजहाँ बेगम के शासन काल में 24 मार्च 1871 को भोपाल से *'उम्दतुल अख़बार'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके सम्पादक हकीम असगर हुसैन तथा संचालक अब्दुल मजीद थे। मतबअ सिकंदरिया में छपता था। बारह पृष्ठों के इस पत्र का प्रत्येक पृष्ठ दो कालमों में बँटा होता था। मुख पृष्ठ के ऊपर के आधे भाग में शीर्षक तथा नीचे कोई महत्वपूर्ण समाचार अथवा विज्ञप्ति मुद्रित की जाती थी। यह समाचारपत्र अपने सुन्दर गेटअप, साफ छपाई और ताज़े समाचारों के कारण न केवल भोपाल में लोकप्रिय था, वरन इसकी माँग भोपाल से बाहर भी थी। इसके संवाददाता और प्रतिनिधि देश के प्रमुख स्थानों से समाचार भेजते थे। अँगरेजी के समाचारपत्रों से खबरों का अनुवाद भी प्रकाशित किया जाता था। इस पत्र में प्रकाशित सूचनाओं का नमूना प्रस्तुत है-

''इश्तिहार

''लाहौर- साहब डिप्टी कमिश्नर बहादुर लाहौर ने इश्तिहार दिया है के साहिबान अँगरेज जो मस्जिद शाही को देखने को तशरीफ़ लाया करें और कुत्ता वगैरह हमराह (साथ) न हो और कबूतर का शिकार न करें।

''मुक़दमा

''अदालत हाईकोर्ट लखनऊ में एक मुक़दमा जेल का पेश हुआ है जिसमें चार या तीन हज़ार रुपये के बिगड़े हुए स्टाम्प पकड़े गए हैं।

छह जनवरी 1871 को आगरा से दैनिक *'देहली गजट'* का प्रकाशन शुरू हुआ। यह पूर्व में इसी नाम से निकले साप्ताहिक 'देहली गजट' से भिन्न था। इसका वार्षिक शुल्क 42 रु., अर्द्ध वार्षिक 21 रु. और तिमाही शुल्क 15 रु. था। इसके प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापन और नोटिस आदि छपा करते थे। समाचार, लेख आदि का प्रकाशन तीसरे पृष्ठ से किया जाता था।

अख़बार-ए-आम

'अख़बार-ए-आम' के प्रकाशक पंडित कलंदर राम तथा सम्पादक पण्डित गोपीनाथ थे। इन दोनों ने तीन समाचारपत्र प्रकाशित किए थे, पहला 'हुमा-ए-पंजाब' था जो एक अप्रैल 1870 को निकाला गया था। सन 1870 में 'मित्र विलास' नामक हिन्दी का दूसरा समाचारपत्र प्रकाशित किया था जो 20 वर्ष तक प्रकाशित होता रहा। उसके पश्चात एक जनवरी 1871 को 'अख़बार-ए-आम' का प्रकाशन किया। प्रारम्भ में यह साप्ताहिक पत्र था जिसे कुछ समय के पश्चात सप्ताह में तीन दिन निकाला जाने लगा। आकार 25 गुणित 15 से.मी. तथा पृष्ठ सँख्या 8 थी। इसका वार्षिक शुल्क ढाई रुपये तथा एक प्रति का मूल्य एक पैसा था। इसका दृष्टिकोण जानने के लिए पत्र में प्रकाशित एक टिप्पणी प्रस्तुत है- ''उर्दू पढ़ने वालों के लिए इससे बहतर अख़बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

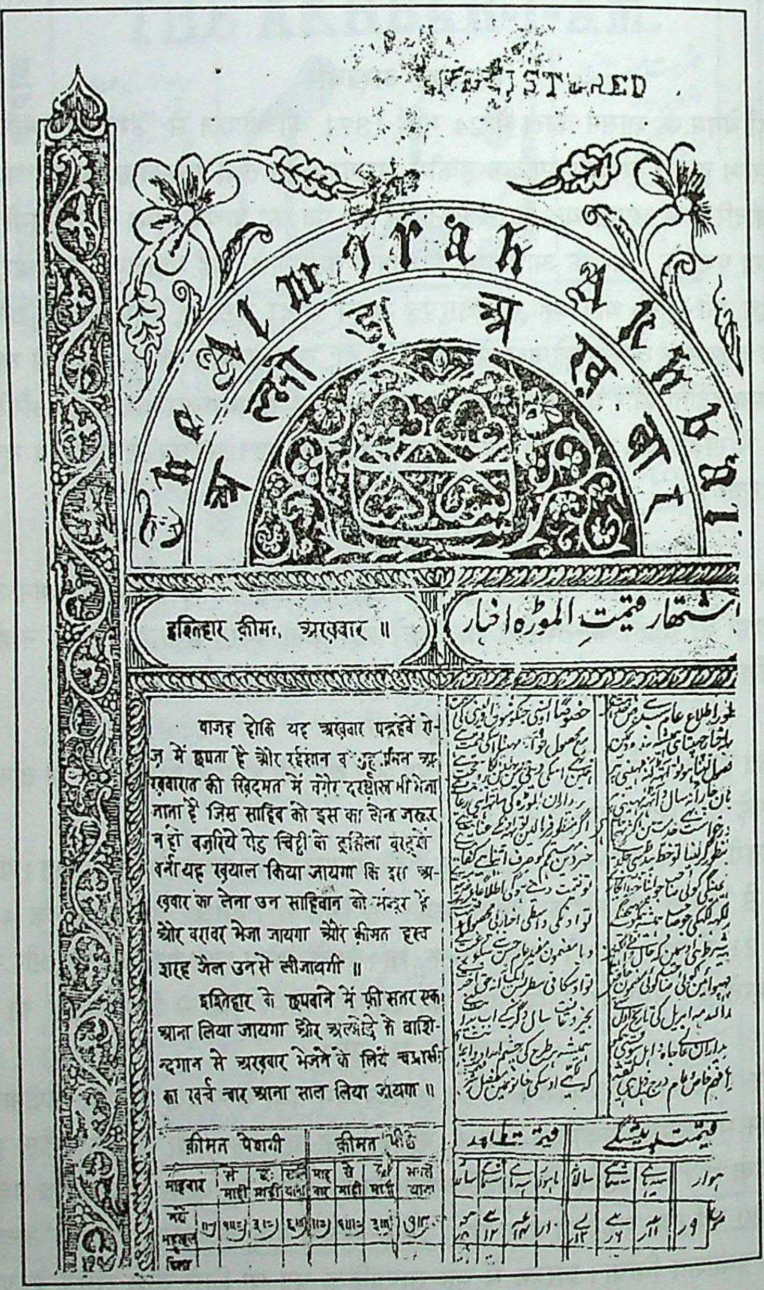
REGISTERED

The Almorah Akhbar

अलमोड़ा अखबार

इश्तिहार क़ीमत अख़बार ॥

اشتہار قیمت المورہ اخبار

वाजह होकि यह अख़बार पन्द्रहवें रोज़ में छपता है और रईसान व [illegible] अख़बारात की ख़िदमत में बग़ैर दरख़्वास्त भी भेजा जाता है जिस साहिब को इस का लेना जरूर न हो बज़रिये पेड चिट्ठी के इत्तिला बख़्शें वर्ना यह ख़याल किया जायगा कि इस अख़बार का लेना उन साहिबान को मंज़ूर है और बराबर भेजा जायगा और क़ीमत हस्ब शरह जैल उनसे लीजावगी ॥

इश्तिहार के छपवाने में फ़ी सतर एक आना लिया जायगा और अल्मोड़े के वाशिन्दगान से अख़बार भेजने के लिये चपरासी का ख़र्च चार आना साल लिया जायगा ॥

क़ीमत पेशगी				क़ीमत पीछे			
माहवार	से माही	छः माही	सालयाना	माहवार	से माही	छः माही	सालयाना
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अलमोड़ा अखबार, 1871

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान में कोई नहीं जो उनवान मज़ामीन के मुक़र्रर हैं वह नगीने की तरह जड़े हुए हैं। (लेखों आदि के लिए जो स्तम्भ रखे गए हैं वे रत्नों के समान हैं) यह अख़बार इस खूबी का है के रोज़ाना (दैनिक) होना बेहतर है। क़दर ओ मंज़िलत इसकी मुल्क में बहुत पाई गई है। (देश में इसे बहुत सम्मान और लोकप्रियता प्राप्त हुई है) इसका मुख़्तसिर और दुरुस्त अहवाल और फ़सीह इबारत पढ़ने का सब का शौक है। इस अख़बार को यक़ीन जानिए जो कोई देखता है मुहब्बत की नज़र से देखता है और इसका ढंग बहुत से देशी अखबारों बल्कि अँगरेजी अख़बारों पर भी तरज़ीह के क़ाबिल है। यह अखबार अपने मन्सब को पूरा करने के लिए सिर्फ एक पैसा चाहता है।

विज्ञापन प्रकाशित करने की जो शर्तें इस पत्र ने निर्धारित की थीं, उनमें से तीन नियम 'अख़बार-ए-आम' के उत्कृष्ट स्तर की गवाही देते हैं- 1. अश्लील तथा व्यर्थ के विज्ञापन, शुल्क देने पर भी नहीं छापे जाएंगे। 2. दवाओं का विज्ञापन यदि सभ्य भाषा में लिखा होगा तो निर्धारित दर से एक चौथाई अधिक लेकर छापा जाएगा। 3. सच्चे तथा वास्तविक व्यापारियों का माल यदि पसंद आएगा और उपयोगी होगा तो उनसे विज्ञप्ति प्रकाशन का निर्धारित मूल्य न लेकर माल खरीद लिया जाएगा।

इसके सम्पादकीय लेख संक्षिप्त तथा सरल भाषा में लिखे जाते थे जो ज्यादा असरदार होते थे- ''हम सुनते हैं कि यूनिवर्सिटी पंजाब ज़बान फ़ारसी से दस्तबरदार होती है (पंजाब विश्वविद्यालय में फ़ारसी भाषा समाप्त की जा रही है) मेम्बरों का इस मामले में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। मुमालिक एशिया जब फ़ारसी ज़बान से दस्त बरदाए हुए (एशिया के देशों ने जब फ़ारसी भाषा को छोड़ दिया) तो वह कौन सी ज़बान बाक़ी रही जो देसी लोगों को कारआमद हो और उसके लिए यूनिवर्सिटी सही मुन्बदल करे (ठीक उसी जैसी दूसरी भाषा प्रयुक्त करे) अगर ऐसा हुआ तो हमें इस बाब में (विषय पर) बहुत कुछ लिखना पड़ेगा।''

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'अख़बार-ए-आम' ने दैनिक समाचारपत्र का रूप धारण कर लिया। कुछ वर्षों के पश्चात इसका त्रिदिवसीय प्रकाशन हुआ। फिर यह बंद हो गया।

अलमोड़ा अख़बार

सन 1871 में डेवोटिंग क्लब ने '*अलमोड़ा अख़बार*' का प्रकाशन आरम्भ किया। 'सम्मेलन पत्रिका'[1] में 'अलमोड़ा अख़बार' की प्रकाशन तिथि एक अप्रैल 1871 दी गई है।

बालमुकुन्द गुप्त ने इस पत्र के बारे में हिन्दी पत्रों के इतिहास में लिखा- ''जिस स्थान से वह निकलता है, उसके अनुसार उसकी भाषा है। तीस साल पहले के उर्दू सरकारी दफ्तरों की जैसी भाषा होती थी, वैसे ही उसकी भाषा कभी-कभी होती है, कभी ख़ासी हिन्दी भी होती है। इसका विशेष कारण यह है कि वह आसपास के दो-चार जिलों का स्थानीय अख़बार है, स्थानीय समाचार उसमें बहुत होते हैं। उनसे जब कुछ जगह बच जाती है तब वह इधर उधर की बातें लिखता है। प्रांतिक समाचारपत्रों को उचित भी यही है कि वे अपने प्रांत के समाचारों पर अधिक जोर दें। 'अल्मोड़ा अख़बार' के इस गुण की हम प्रशंसा करते हैं। उसमें एक विशेष गुण यह है कि वह किसी से, किसी बात पर लड़ता-झगड़ता नहीं। निरीह साधु लोगों की भाँति जीवन बिताता है। वह हिन्दू है, क्योंकि ऊपर श्रीगणेश की मूर्ति छपती है और समाज सुधारक भी है क्योंकि अब्दुल गफूर के धर्म्मपाल होने पर प्रसन्न होता है और विधवा विवाह का बड़ा

1. सम्मेलन पत्रिका, सन 1914, भाग-1, अंक-1, पृष्ठ- 174

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमी है, साथ ही साधु भी है क्योंकि स्वामी विवेकानंद और उनके मठ पर उसकी बड़ी श्रद्धा है।''

'अलमोड़ा अख़बार' की भाषा और शैली का एक नमूना-

''महारानी की घोषणा

''कई उत्कट कारणों से तथा आत्मिक और सांसारिक मंत्रियों और प्रजा प्रतिनिधियों की सम्मति से हमने यह ठाना है कि भारतवर्ष का राज्य जिसको आज तक हमारी ओर से ईस्ट इंडिया कम्पनी किया करती थी अब से हम अपने ही हाथ में ले लेवें। अब इस पत्र द्वारा हम पूर्वोक्त राज्य कर्मचारियों की सम्मतिपूर्वक यह प्रकट करती हैं कि उक्त राज्य आगे से हमने अपने हाथ में ले लिया और इस राज्य के भीतर रहने वाली सारी प्रजा के लिए हमारी यह आज्ञा है कि वह सच्ची राज्य भक्त रहे। और हमारी तथा हमारे उत्तराधिकारियों की अनुरक्त और अनुसेवी बनी रहे और जिन मनुष्यों को हम अपने नाम से अपनी ओर से उक्त राज्य में प्रभुता करने के लिए भेजें सर्वथा उनकी आज्ञा का पालन करें।

''हम अपने विश्वासपात्र और प्रिय चचेरे भाई और मंत्री लार्ड कैनिंग की राज्यभक्ति, योग्यता और न्याय परायणता पर पूरा भरोसा रखकर उनको अपना पहला वायसराय अर्थात् प्रतिनिधि शासक नियत करती हैं कि उक्त राज्य में हमारे नाम पर और हमारी ओर से सब प्रकार का शासन प्रबंध करें। परन्तु उक्त वायसराय उन आज्ञा और नियमों के अधीन रहेंगे जो समय समय पर हमारे प्रधानमंत्रियों के द्वारा उनके नाम पर भेजे जावेंगे ईस्ट इंडिया कम्पनी की ओर से जो पुरुष इस राजकाज के पद पर इस समय प्रतिष्ठित हैं उसको हम भी उसी पद पर अधिष्ठित रखेंगे परन्तु यह आगे से हमारे अधिकार में होगा और नियम-कानून हमारी ओर से प्रचलित होंगे उनके अधीन रहेगा।

''हम भारतवर्ष के देशी राजा और सरदारों को सूचना देती हैं कि जो संधि और अहद पैगाम उनके संग ईस्ट इंडिया कम्पनी ने किए हैं उनको हम भी अंगीकार करती हैं। जितना राज्य हमारा इस समय है उसको और बढ़ाना नहीं चाहतीं, हम न तो अपने राज्य व अधिकार पर किसी को हाथ डालने देंगी और न औरों के अधिकारों पर किसी दूसरे को हस्तक्षेप करने देंगी। हम देशी राजा और महाराजाओं के स्वत्व और गौरव और प्रतिष्ठा को भलीभाँति मानेंगी और हम यह भी अभिलाषा करती हैं कि वे और हमारी भारतीय प्रजा उस सम्पत्ति और लौकिक उन्नति की भागी होवे जो केवल राजकाल में अमन चैन और सुन्दर प्रबंध से प्राप्त होती है। हम अपनी भारतवासी प्रजा के निमित्त अपना कर्त्तव्य वैसा ही श्रेष्ठ जानती हैं जैसा और प्रजा के लिए और सर्वसामर्थी परमेश्वर की कृपा से हमें आशा है कि हम इस कर्त्तव्य को सच्चाई एवं ईमानदारी के साथ निभाएंगी।

''हमको ख्रिस्त मत पर पूर्ण विश्वास है और इस मत से जो शांति हमको मिली है उसके लिए हम बड़ी कृतज्ञ हैं। परन्तु हमारा कदापि यह विचार नहीं है कि हमारा मत और हमारा निश्चय किसी हमारी प्रजा के सिर बलात्कार से रखा जावे। हम अपनी राजकीय इच्छा और अभिलाषा प्रकट करती हैं कि अपने धर्म एवं मत एवं रीति के कारण किसी पुरुष पर न तो अनुग्रह किया जाय और न कोई सताया या छेड़ा जाय। और सब किसी को आइन कानून की ओर से बराबर रक्षा और छाया मिला करे और हमारे नीचे जितने अधिकारी और राज्य कर्मचारी हैं उन सबको हम ये स्पष्ट आज्ञा देती हैं कि हमारी प्रजा से किसी जन के मत संबंधी निश्चय और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपासना के ढंग पर कभी हस्तक्षेप न करे। यदि कोई ऐसा करेगा तो उससे हम अत्यन्त अप्रसन्न होंगी।

''ये भी हमारी इच्छा है कि जहाँ तक संभव हो हमारी प्रजा के लोग चाहे वे किसी जाति और धर्म के हों बिना रोक टोक के हमारे राजकाज के उन सब पदों पर नियत किये जाएँ जिनको ईमानदारी से निबाहने के लिये शिक्षा योग्यता से भली-भाँति समर्थ हों। हम ये भली भाँति जानती हैं कि भारतवासी अपनी बपौती भूमि और जायदाद पर बड़ा प्रेम रखते हैं और हम इन चित्तवृत्तियों को सराहती हैं और जहाँ तक राजकाज की आवश्यकता और राजप्रबंध के संग संभव हो उक्त भूमि और जायदादों को बहाल रखना चाहती हैं और हमारी इच्छा है कि नये आइन और कानून बनाने में भारतवर्ष के पुराने स्वप्न और रीति और व्यवहारों का भलीभाँति विचार किया जावै।

''हमको इस बात का बड़ा शोक है कि कई असंतोषी लोगों ने झूठे गौगे उड़ाकर अपने देशवासियों को बहकाया और उनसे बलवा करवाया जिससे भारत वर्ष पर बड़े बड़े दुःख और बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ पड़ीं। रणभूमि में उपद्रवियों को परास्त करने से हमने अपनी सामर्थ तो दिखा दी है। अब हम उन लोगों को जो अनजाने बहकावट में आये और अब फिर अपने कर्त्तव्यों पर स्थिर होना चाहते हैं क्षमा करके अपनी दया भी दिखाना चाहती हैं।''

'अलमोड़ा अख़बार' के पहले सम्पादक बुद्धिबल्लभ पंत थे। यह लिथो प्रेस पर छपता था। साप्ताहिक 'अलमोड़ा अख़बार' का वार्षिक शुल्क पौने सात रुपये था। पंत के पश्चात मुंशी इम्तियाज अली, लीलानंद जोशी, सदानंद सनवाल सम्पादक हुए। सन 1913 में सम्पादन का दायित्व बदरीदत्त पांडे ने सम्हाला। यह पत्र सन 1918 तक निकला। जब पत्र ने अँगरेजों पर प्रहार किए तब अँगरेज जिला दंडाधिकारी ने प्रेस पर रोक लगा दी। एक हजार रुपये की जमानत माँगी गई। इसी द्वन्द्व में 47 वर्ष तक प्रकाशित होने के उपरांत 'अलमोड़ा अखबार' बंद हो गया।

अगस्त 1871 से *'रिसाला अंजुमन मनाज़रा'* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। यह बीस पृष्ठों का निकलता था। अंजुमन की ओर से लार्ड मेऊ की स्मृति में एक और पत्र *'मेऊ गज़ट'* अप्रैल 1872 में निकाला गया। इसके सम्पादक नसीर अली थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये आठ आना था।

10 अक्टूबर 1871 को मराठी मासिक *'दम्भहारक'* का प्रकाशन हुआ। पत्रिका मिशनरियों पर प्रहार करती थी। सन 1876 में पत्रिका बंद हो गई। *'लोक कल्याणेच्छु'* मराठी पत्र पुणे से 28 अक्टूबर 1871 को निकला।

अख़बार अंजुमन पंजाब

अंजुमन इशाअत मतालिब ने पत्रिका 'रिसाला अंजुमन इशाअत मतालिब मुफ़ीद पंजाब' का प्रकाशन किया। सम्पादक मौलाना मोहम्मद हुसैन आज़ाद थे। पत्रिका में संस्था की गतिविधियों के अतिरिक्त साहित्यिक एवं शैक्षिक लेख भी छापे जाते थे। सन 1870 में इस पत्रिका का प्रकाशन बंद हो गया तथा इसका स्थान *'अख़बार अंजुमन पंजाब'* ने ले लिया। यह साप्ताहिक पत्र था, जिसका प्रकाशन सन 1871 में आरम्भ हुआ।

'अख़बार अंजुमन पंजाब' शुक्रवार को प्रकाशित होता था। इसमें सोलह पृष्ठ होते थे। क़िताबत और छपाई साफ एवं सुन्दर थी। इसमें शिक्षाप्रद लेख, उद्धृत सामग्री, सम्पादक के नाम पत्र, अरबी, अँगरेजी समाचार पत्रों के अनुवाद तथा नवाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर पंजाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

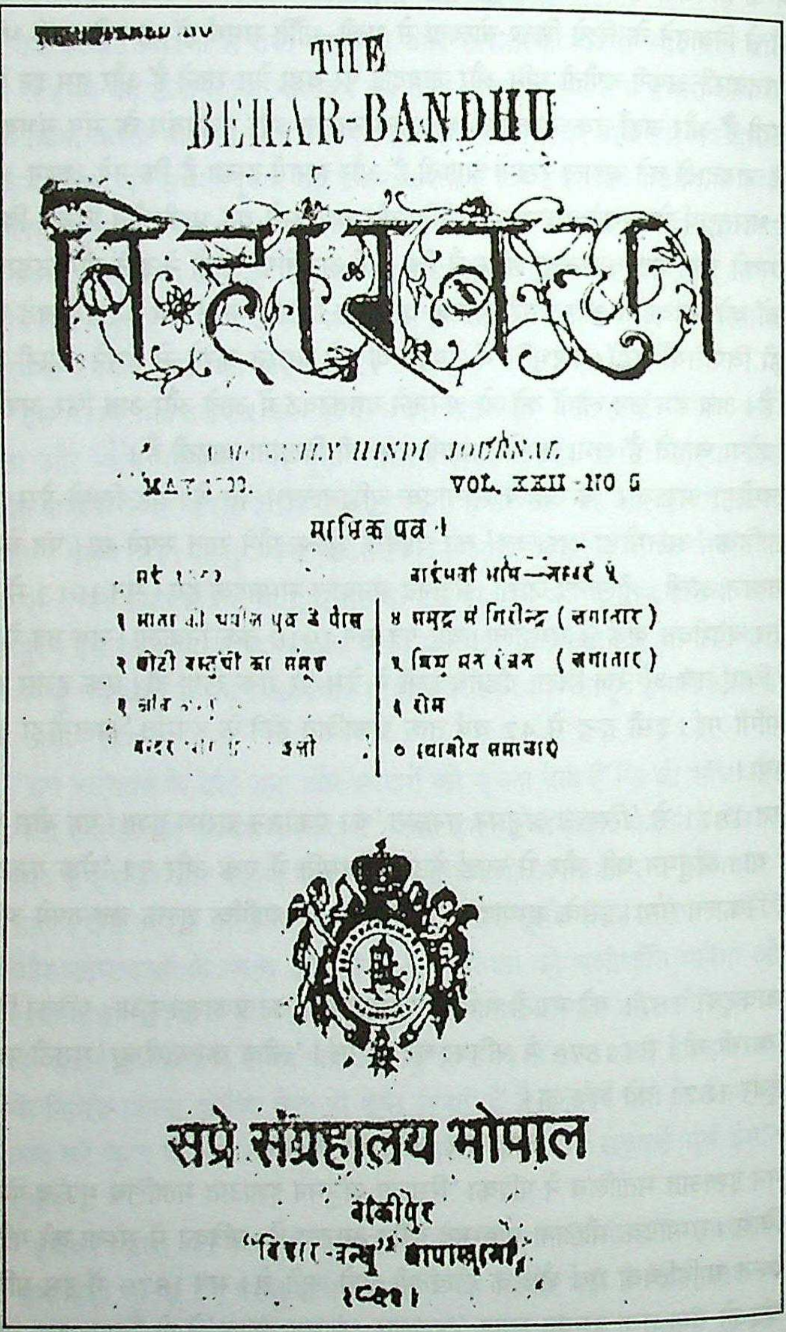
THE
BEHAR-BANDHU

बिहारबन्धु

MONTHLY HINDI JOURNAL

VOL. XXII NO 5

मासिक पत्र।

२ छोटी वस्तुओं का संग्रह	४ समुद्र में गिरीन्द्र (लगातार)
	५ ... (लगातार)
	६ रोम
	७ स्थानीय समाचार

सप्रे संग्रहालय भोपाल

बांकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना में

बिहार बन्धु, कोलकाता/पटना, सन 1872

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आदेश आदि छपते थे। समाचारों के शीर्षक नहीं दिए जाते थे। कभी कभी मनोरंजक शीर्षक देकर समाचार छापे जाते थे।

आंध्र भाषा संजीवनी

सन 1871 में *'आंध्र भाषा संजीवनी'* का प्रकाशन चेन्नै से हुआ। इस तेलुगु मासिक पत्र के सम्पादक कोवकोंडा वेंकटरत्नम थे। समसामयिक प्रसंगों पर दो टूक प्रतिक्रिया के लिए यह पत्रिका जानी जाती थी। सन 1883 में इसका प्रकाशन बंद हो गया। सन 1892 में पुन: प्रकाशित हुई और 1899 तक निकली। सन 1871 में गया से उर्दू मासिक पत्र *'गुलदस्ता नज़ाइर'* का प्रकाशन हुआ। कार्तिकप्रसाद खत्री ने सन 1871 में *'प्रेम-विलासिनी'* नामक मासिक पत्रिका कोलकाता से निकाली। इसी वर्ष उन्होंने *'हिंदी प्रकाश'* का भी प्रकाशन किया।

अरब सराय सोसायटी ने पत्रिका *'रिसाला अरब सराय सोसायटी'* सन 1871 में दिल्ली से निकाली। सम्पादक लाला चिरौंजीलाल थे। सन 1871 में मुज़फ़्फ़रपुर से उर्दू पत्र *'शुजा महर'* का प्रकाशन हुआ। दिल्ली से सन 1871 में अँगरेजी पाक्षिक *'इण्डियन विटनेस'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ।

हैदराबाद से सन 1871 में *'हैदराबाद गज़ट'* का प्रकाशन किया गया था। यह रियासत हैदराबाद का सरकारी पत्र था जिसमें सरकारी समाचार छपते थे। रियासत के क़ानूनों में संशोधन, न्यायालय के आदेश, मौसम, रियासत में फ़सलों की स्थिति, पशुओं के सम्बन्ध में जानकारी, अनाज के अलग अलग मंडियों के भाव, रियासत के अधिकारियों द्वारा निकाले जाने वाले नोटिस तथा रियासत की आय-व्यय के आँकड़े प्रकाशित किए जाते थे।

सुबोधिनी

एक मार्च 1871 को कन्नड का वास्तविक अर्थों में प्रथम समाचारपत्र *'सुबोधिनी'* प्रकाशित हुआ। इसके पहले जितने भी पत्र निकले, उनका मुख्य उद्‌देश्य धार्मिक प्रचार था। उनके प्रकाशक भी मिशन थे। परन्तु 'सुबोधिनी' लोगों तक समाचार और सूचनाएँ सम्प्रेषित करने के उद्‌देश्य से ही निकला था। यद्यपि इस पत्र का मुद्रण बहुत अच्छा नहीं था, लेकिन लेखन और सम्पादन स्तरीय था। यह पत्र 28 वर्ष तक प्रकाशित हुआ।

1872

बिहार बन्धु

बिहार में हिन्दी पत्रकारिता का सूत्रपात जिस *'बिहार बन्धु'* से होता है, वह पत्र आरम्भ में कोलकाता से निकला। एक वर्ष बाद पटना से प्रकाशित होने लगा। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार का उद्देश्य लेकर इस साप्ताहिक अखबार का प्रकाशन किया गया था। केशवराम भट्ट तथा मदनमोहन भट्ट ने सन 1872 में 'बिहार बन्धु' का प्रकाशन कोलकाता से किया। इसके प्रथम सम्पादक मुंशी हसन अली थे, जो हिन्दी, उर्दू तथा फारसी के विद्वान थे। 'बिहार बन्धु' के प्रकाशन के लिए मदनमोहन भट्ट तथा केशवराम भट्ट ने बिहार में पहला हिन्दी प्रेस सन 1874 में कायम किया। इसी प्रेस से 'बिहार बन्धु' का मुद्रण-प्रकाशन पटना से होने लगा।

'बिहार बन्धु' का ध्येय वाक्य था- ''सत्ये नास्ति भयं क्वचित्''। सन 1875 में 'बिहार बन्धु' का सम्पादन स्वयं केशवराम भट्ट करने लगे। उन्होंने तीस वर्षों तक इस पत्र के माध्यम से हिन्दी की महत्वपूर्ण सेवा की। वे भारतेन्दु से प्रभावित थे और उन्हीं का अनुसरण कर रहे थे। 'बिहार बन्धु' के मई 1893 के अंक से उसकी विषय वस्तु की झलक मिलती है। (भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

22 सँख्या 5) (1)माता की अपील (2)छोटी बस्तुओं का समूह (3)जीव जन्तु (4)समुद्र में गिरीन्द्र (5)शिशु मनरंजन (6)रोम (7)स्थानीय समाचार। प्रिण्ट लाइन इस प्रकार छपती थी- ''बांकीपुर 'बिहार बन्धु' छापाखाना 1893 प्रतिखंड का नकद दाम नव (नौ) पैसा''।

भाषा के प्रयोग को लेकर 'बिहार बन्धु' और 'भारतमित्र' में शास्त्रार्थ छिड़ा, जो उस समय के पत्रों में प्राय: होता रहता था। 'बिहार बन्धु' ने टिप्पणी की- ''लिखावट अभी इतनी उम्दे नहीं है लेकिन उम्मीद है कि थोड़े दिनों के बाद लिखावट अच्छी हो जायगी।'' यह टिप्पणी 'भारतमित्र' की भाषा शैली के बारे में थी। 'भारतमित्र' ने 'बिहार बन्धु' की आलोचना को पहले तो यह कहते हुए टाल दिया कि ''उसकी अपनी भाषा शैली दोषपूर्ण है।'' फिर 'भारतमित्र' ने चौथे अंक में तीखी प्रतिक्रिया की- ''कवि वचन सुधा' कहते तो कुछ कह भी सकते थे। यह तो वोही कहावत है कि सूप बोले तो बोले चलनी भी बोले जिस्में बहत्तर छेद।''

'कविवचन सुधा' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पत्रिका थी। उस समय वे हिंदी के सर्वमान्य पत्रकार थे जिनके कृतित्व को आदर्श मानकर हिन्दी के सम्पादक चल रहे थे। छटवें अंक में 'भारतमित्र' ने पुन: इस सबंध में एक टिप्पणी छापी- 'बिहार बन्धु' कहते हैं कि ''साफ कहना कैसा कडुवा मालूम होता है साफ कहने से कष्ट होता है सही परन्तु साफ़ कहने में यदि सत्य का लेशमात्र भी होय अर्थात झूठ न होय तो कष्टदायक होना तो किनारे रहा परंच वो साफ़ कहना आनन्ददायक ही होता है परन्तु जो सत्यप्रिय नहीं है जिनको अपना दोष बिन्दुमात्र भी दिखाई नहीं पड़ता अथवा जो सबसे प्रशंसा पाने की इच्छा सर्वदा करते जो अपना दोष सुधारने के पहले साफ कहके दूसरों का दोष सुधारना चाहते हैं या दूसरों पर अपवाद लगाने उनका उत्तर पाने पर क्रोधांध होने ऐल फैल बक देते हैं, उन्हीं को साफ कहना कडुवा मालुम होता है। बिहार बन्धु के संपादक महाशय यथार्थ विवेचना करके देखिए तो आपने अपने 17 जुलाई के पत्र में ठीक ऐसा ही अनुकरण किया है कि नहीं?''

'बिहार बन्धु' के प्रकाशन के साथ बिहार में हिन्दी का वातावरण बना और हिंदी का प्रयोग बढ़ा। सन 1915 में भट्ट तथा उनके परिवार के अन्य सदस्य प्लेग के शिकार हो गए। भट्ट की मृत्यु हो जाने तथा प्रेस पर कर्ज चढ़ जाने के कारण 'बिहार बन्धु' बंद हो गया। लगभग सात वर्षों के विराम के बाद अप्रैल 1922 में पटना से प्रमोदशरण पाठक ने इसे पुनर्प्रकाशित किया। यह पत्र सन 1923 तक प्रकाशित हुआ।

हिन्दू पंच

साप्ताहिक *'हिन्दू पंच'* का प्रकाशन 21 मार्च 1872 को गोपाल गोविन्द दाबक ने किया था। यह मराठी समाचारपत्रों की समकालीन प्रकृति के विरुद्ध एक नई दिशा दिखाने वाला व्यंग प्रधान पत्र था। 'हिन्दू पंच' उपहास, विसंगति, अतिशयोक्तिपूर्ण लेखन सचित्र प्रस्तुति के साथ करता था। 'हिन्दू पंच' ने अँगरेजी व्यंग्य पत्र 'पंच' का अनुकरण किया था। 'हिन्दू पंच' को सरदार गोपाल हरि देशमुख तथा वामन बालकृष्ण रानडे से भरपूर सहायता मिली। सन 1892 तक दाबक ने इसे निकाला। जब वे रायगढ़ चले गए तब उन्होंने गणेश कृष्ण शहाणे और आपाजी गोपाल गुप्ते को पत्र दे दिया। सन 1904 तक दोनों ने मिलकर इस पत्र का प्रकाशन किया। सन 1904 में सूर्योदय और 'हिन्दू पंच' का स्वामित्व 'अरुणोदय' पत्र के स्वामी फड़के के पास गया। धोंडोपंत 'अरुणोदय' के सम्पादक थे, फड़के के द्वितीय पुत्र कृष्णाजी काशीनाथ फड़के 'हिन्दू पंच' के सम्पादक बने। बाद में 'अरुणोदय' पत्र 'हिन्दू पंच' में समाहित हो गया। सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1908 में लोकमान्य तिलक पर मुकदमा चला और उन्हें छह वर्ष की सजा हुई। इस सम्बन्ध में नामदार गोखले पर दोषारोपण करने वाला लेख 'हिन्दू पंच' ने छापा, जिस पर गोखले ने कोर्ट में दावा किया। हाईकोर्ट का निर्णय सन 1909 में गोखले के पक्ष में हुआ। 'हिन्दू पंच' का छापाखाना सरकार ने जब्त कर लिया।

'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट' का प्रकाशन 22 जून 1872 को शिमला से हुआ था। आगरा से 1845 में 'मोफस्सिलाइट' निकलना आरम्भ हुआ। सन 1876 में इसका विलय 'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट' में कर दिया गया। लाहौर स्थानान्तरित होने के पश्चात यह दैनिक पत्र के रूप में प्रकाशित होने लगा। ई.के. राबिन्सन इसके सम्पादक थे।

अजमेर से अगस्त 1872 में अंजुमन रिफाए आम राजपूताना ने मुख पत्र के रूप में *'रिसाला अंजुमन राजपूताना'* प्रकाशित किया था। इसका प्रथम अंक 82 पृष्ठ का था, जो कोहेनूर प्रेस लाहौर से छपा था। सितम्बर 1872 से इसे त्रैमासिक पत्रिका के रूप में निकाला जाने लगा।

सन 1872 में कोलकाता से प्रकाशित *'ज्ञानांकुर'* का विवरण दो साहित्यिक कृतियों के प्रकाशन के सन्दर्भ में मिलता है। यह बंगला की साहित्यिक पत्रिका थी। तारकनाथ गांगुली की 'स्वर्णलता' अक्टूबर 1872 में 'ज्ञानांकुर' में प्रकाशित हुई। इसी तरह गुरुदेव रवीन्द्र का आठ पर्वों में लिखा खण्डकाव्य 'बनफूल' सन 1876 में कृष्णदास द्वारा सम्पादित बंगला मासिक 'ज्ञानांकुर' में प्रकाशित हुआ। *'असम मिहिर'* नामक साप्ताहिक पत्रिका गुवाहाटी से सन 1872 में प्रकाशित हुई थी। इसके प्रकाशक एवं सम्पादक चिदानंद चौधरी थे। वे असम के पहले असमिया पत्रकार थे। इस पत्रिका का प्रकाशन लगभग एक साल तक हुआ था।

'देश सुधारणेच्छु' गोवा से सन 1872 में निकला। इसका प्रकाशन तोमाज मौराव मार्सेज पाल्यश नामक पोर्तगाली ने किया था। ओरिएंटल छापाखाने में 3 जनवरी 1877 से यह साप्ताहिक पत्र के रूप में निकला। यह मराठी और पोर्तुगीज दोनों भाषाओं में निकलता था। इसके सम्पादक आत्माराम नारायण थे। 7 जनवरी 1878 को यह साप्ताहिक बंद हो गया। सन 1872 में मुंगेर से उर्दू साप्ताहिक *'नादिर उल अख़बार'* का प्रकाशन हुआ। वर्ष 1872 में *'पुरुषार्थ प्रदायिनी'* मछलीपत्तनम से निकला। इसके सम्पादक कंदकूरि वीरेशलिंगम थे। यह तेलुगु मासिक पत्र सुधारवादी सोच का प्रवक्ता था। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के पक्ष में इस पत्र ने वातावरण बनाया।

बंगदर्शन

सन 1871 में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के मन में मासिक पत्र के प्रकाशन का विचार आया। तदनुसार 1872 में एक विज्ञापन *'बंगदर्शन'* के प्रकाशन के लिए जारी हुआ। सम्पादक के रूप में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का नाम था। जिन अन्य लेखकों के नाम दिए गए थे, उनमें दीनबंधु मिश्र, हेमचंद्र वंद्योपाध्याय, जगदीशनाथ राय, ताराप्रसाद चट्टोपाध्याय, कृष्णकमल भट्टाचार्य, रामदास सेन और अक्षयचंद्र सरकार सम्मिलित थे। सन 1873 के वैशाख माह में 'बंगदर्शन' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। साप्ताहिक संवाद प्रेस भवानीपुर से इसका मुद्रण होता था तथा प्रकाशक ब्रजमाधव बसु थे। इसका प्रथम लेख 'पत्र-सूचना' सम्पादक के सोच का परिचय देता है। साथ ही बंगला भाषा के लिए उनकी तड़प की बानगी भी पेश करता है- ''जो लोग बंगला भाषा में ग्रंथ या पत्र निकालने में प्रवृत्त होते हैं, उनका विशेष दुर्भाग्य है। वे चाहे जितना यत्न क्यों न करें देश के पढ़े-लिखे विद्वान प्रायः उनकी रचना पढ़ने में विमुख देख पड़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँगरेजी प्रिय विद्वानों में प्राय: यह स्थिर ज्ञान पाया जाता है कि उनके पढ़ने के योग्य कुछ भी बंगला भाषा में नहीं लिखा जा सकता। उनकी समझ में बंगला भाषा के लेखक मात्र या तो विद्या-बुद्धि-विहीन और लिपि-कौशल शून्य हैं, अथवा अँगरेज़ी के ग्रंथों का अनुवाद करने वाले हैं। उन्हें विश्वास है कि बंगला भाषा में जो कुछ लिखा जाता है वह या तो अपाठ्य होता है अथवा किसी अँगरेज़ी के ग्रंथ की छायामात्र है।

''अँगरेज़ी के भक्तों का यह हाल है। उधर संस्कृतज्ञ पांडित्याभिमानी लोगों को भाषा पर जैसी श्रद्धा है, उसके बारे में बहुत लिखने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग कामकाजी हैं, उनके लिए सभी भाषाएँ बराबर हैं। उन्हें किसी भाषा की पुस्तक पढ़ने का अवकाश नहीं है। लड़के को स्कूल में भर्ती कर दिया है, पुस्तक पढ़ने का और न्यौते-बुलावे आदि में जाने का भार लड़के के ऊपर है। अतएव इस समय बंगला के ग्रंथ और पत्र केवल नार्मल स्कूल के छात्रों, देहाती पाठशालाओं के पंडितों, लड़कियों और कुछ निष्कर्मा रसिक व्यवसायी लोगों के ही हाथों में जाते हैं और उन्हीं के आदर की सामग्री होते हैं। शायद ही कोई दो-एक विद्वान सदाशय महात्मा बंगला ग्रंथों के विज्ञापन या भूमिका तक पढ़ लेते हैं, और उतने ही से विद्योत्साही के नाम से प्रसिद्धि पाते हैं।

''लिखने-पढ़ने की बात तो दूर रही, इस समय भव्य नव्य-संप्रदाय के लोग कोई काम बंगला में नहीं करते, विद्या की आलोचना तो अँगरेज़ी में करते ही हैं, उसके सिवा सर्वसाधारण से संबंध रखने वाले काम, मीटिंग, लेक्चर, एड्रेस, प्रोसीडिंग आदि सब अँगरेज़ी में होता है। अगर दोनों आदमी अँगरेज़ी जानते हैं तो साधारण बातचीत भी अँगरेज़ी में ही होती है-कभी सोलहों आने अँगरेज़ी में और कभी बारह आने अँगरेज़ी में। बातचीत चाहे जिस भाषा में हो, मगर चिट्ठी-पत्री तो कभी बंगला में नहीं लिखेंगे। हमने कभी नहीं देखा कि जहाँ दोनों आदमी अँगरेज़ी कुछ भी जानते हैं वहाँ कभी बँगला में पत्र लिखा गया हो। हमें ऐसी भी आशा है कि विशेष-विशेष लोग दुर्गापूजा, देवपूजा आदि के समय मंत्र आदि भी अँगरेजी में ही पढ़ेंगे।

''इस जगत में कुछ भी निष्फल नहीं है। एक सामयिक पत्र का क्षणिक जीवन भी निष्फल न होगा। जिन सब नियमों के बल से आधुनिक सामाजिक उन्नति हुआ करती है, इन सब पत्रों का जन्म, जीवन और मृत्यु, उसी की प्रक्रिया है। इन सब क्षणिक पत्रों का जन्म भी अलंघ्य सामाजिक नियम के अधीन है। मृत्यु भी उसी नियम के अधीन है और जीवन का परिणाम भी उसी अलंघ्य नियम के अधीन है। ये सब पत्र काल-प्रवाह के जल के बुलबुले मात्र हैं। यह बंगदर्शन भी काल-स्रोत में नियमाधीन जल-बुदबुद के समान प्रकट हुआ है। उसी नियम के बल से विलीन भी हो जायगा, इसलिए इसके विलीन होने में हम संतप्त या हास्य के पात्र न होंगे। इसका जन्म कभी निष्फल न होगा। इस संसार में जल बुदबुद भी निष्कारण या निष्फल नहीं है।''

सन 1873 में 'बंगदर्शन' में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का ग्रंथ 'विषवृक्ष' प्रकाशित हुआ। 'बंगदर्शन' में ही बंकिम बाबू की कृतियाँ इंदिरा, चन्द्रशेखर, कमलाकांतेर दफ्तर, रजनी, राधारानी, आनंदमठ, देवी चौधरानी आदि प्रकाशित हुईं।

बाबू बंकिमचन्द्र सन 1876 तक 'बंगदर्शन' के सम्पादक रहे। सन 1878 में इसका संपादन संजीव चन्द्र करने लगे। सन 1884 के माघ महिने में 'बंगदर्शन' बंद हो गया। 'बंगदर्शन' के बंद हो जाने के दो कारण थे-एक, आंतरिक विरोध और दूसरा लेखकों द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिश्रमिक की माँग करना। बंकिम बाबू ने लेखों की खरीद-फरोख्त को अस्वीकार करके पत्र बंद कर दिया।

बंकिम बाबू ने 'बंगदर्शन' के अन्तिम अंक में लिखा था-''चार साल बीते जब 'बंगदर्शन' निकलना आरम्भ हुआ था। जब मैं इसे निकालने में प्रवृत्त हुआ था तब मेरे कई विशेष उद्देश्य थे। जो उद्देश्य व्यक्त हुए थे और जो अव्यक्त रहे थे, उनमें से अधिकांश इस समय सिद्ध हो चुके हैं। इस समय 'बंगदर्शन' के रखने का प्रयोजन नहीं है।''

सामाजिक उत्थान के प्रति बंकिम बाबू के मुखर सोच का परिचय 'बंगदर्शन' में स्त्री-शिक्षा पर उनकी इस टिप्पणी से मिलता है- ''इस समय सब लोग स्वीकार करते हैं कि लड़कियों को कुछ लिखाना-पढ़ाना अच्छा है किन्तु इस समय भी प्रायः अपने मन में यह कोई नहीं सोचता कि मर्दों की तरह औरतें भी अनेक प्रकार के साहित्य, गणित, विज्ञान, दर्शन आदि की शिक्षा क्यों न प्राप्त करें? जो लोग पुत्र के एम.ए. पास न होने से विषपान करने की इच्छा करते हैं वे ही कन्या के कथा-माला (छोटी कक्षा की पुस्तक) समाप्त कर लेने से कृतार्थ हो जाते हैं। कन्या भी पुत्र की तरह एम.ए. क्यों नहीं पास करेगी, इस प्रश्न को वे एक बार भी अपने मन में स्थान नहीं देते।

''वास्तव में बंगदेश में, भारत वर्ष भर में भी कह सकते हैं, स्त्रियों को पुरुषों की तरह लिखना-पढ़ना सिखाने का उपाय नहीं है। बंगवासी लोग अगर सचमुच स्त्री-शिक्षा की अभिलाषा रखते, तो उसका उपाय भी होता। वह उपाय दो प्रकार का है। एक तो यह कि स्त्रियों के लिए अलग स्कूल खोलना। दूसरा है पुरुषों के स्कूल में स्त्रियों को शिक्षा दिलाना। दूसरे उपाय का नाम सुनते ही बंगाली लोग जल उठेंगे। वे निःसंदेह अपने मन में सोचेंगे कि मर्दों के स्कूल में स्त्रियाँ पढ़ने लगेंगी तो लड़कियों का अधःपात तो होगा ही, अधिक यह होगा कि लड़के भी मनमाना आचरण करने लगेंगे।

''स्त्री-शिक्षा उचित है या नहीं? शायद सभी उसको उचित कहेंगे। इसके बाद प्रश्न होता है किसलिये उचित है? इसके उत्तर में यह कोई नहीं कहेगा कि नौकरी के लिए। जान पड़ता है इस देश के सभी सुशिक्षित लोग उत्तर देंगे कि स्त्रियों को नीति सिखाने के लिए, उनका ज्ञान बढ़ाने के लिए, उनकी बुद्धि परिमार्जित करने के लिए उन्हें लिखना-पढ़ना सिखाना उचित है। चार वर्ष हुए, बंगदर्शन की पत्र-सूचना में मैंने बंगदर्शन को काल-स्रोत का जल-बुदबुद कहा था। आज वह जल बुदबुद जल में विलीन हो गया।''

'बंगदर्शन' का सन 1901 में पुनर्प्रकाशन हुआ। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिशिरचंद्र मजूमदार के सहयोग से 'बंगदर्शन' का प्रकाशन किया। वे स्वयं इसका सम्पादन करते थे।

उर्दू '*मंशूर मोहम्मदी*' का प्रकाशन सन 1872 में मोहम्मद शरीफ़ ने बेंगलूरु से किया। इसके प्रकाशन का उद्देश्य उत्तरी हिन्दुस्तान में ईसाई प्रचारकों द्वारा निकाले गए 'कोकबे हिन्द' तथा 'नूरअफ़शां' समाचारपत्रों के माध्यम से इस्लाम के विरुद्ध किए जा रहे प्रचार का विरोध करना था। समाचारपत्र बारह पृष्ठों का था। धर्मरक्षण को प्रमुखता देने वाला मराठी पत्र '*शिवाजी*' सन 1872 में पुणे से निकला। एक और पत्र '*दक्षिण तारा*' इसी समय निकला। सन 1872 में धौलपुर से '*धौलपुर गजट*' का प्रकाशन किया गया। इसी वर्ष वामनराव दीक्षित का मराठी पत्र '*बोध सुधाकर*' निकला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबोध पत्रिका

प्रार्थना समाज का मुख पत्र *'सुबोध पत्रिका'* चार मई 1873 को प्रकाशित हुई। धार्मिक सुधार के उद्देश्य से इसे निकाला गया था। 'सुबोध पत्रिका' का ध्येय वाक्य था- 'सत्यमेव जयते'। आठ पृष्ठों की इस पत्रिका का मूल्य केवल एक पैसा था। पत्रिका प्रति रविवार प्रकाशित होती थी। मराठी के साथ-साथ 'सुबोध पत्रिका' का गुजराती संस्करण भी निकला। जयशंकर भट्ट मराठी और गुजराती संस्करण के व्यवस्थापक थे। कुछ समय बाद गुजराती संस्करण बंद हो गया। सदानन्द बालकृष्ण पालेकर ने व्यवस्था सम्हाली। पालेकर के समय पत्रिका अँगरेजी और मराठी भाषा में निकलने लगी। सन 1893 में रामभाऊ माडगावकर व्यवस्थापक हुए। तदनन्तर मोरोपंत वालवेकर का 'सुबोध प्रकाश' इसमें समाहित हुआ। नौ साल बाद सदाशिव पांडुरंग केलकर का 'कामगार' भी इसमें सम्मिलित हो गया। 'सुबोध पत्रिका' का सम्पादन मामा परमानन्द ने योग्यतापूर्वक किया। 'सुबोध पत्रिका' के दूसरे सम्पादक द्वारकानाथ गोविंद वैद्य हुए। अगस्त 1897 से सम्पादकीय प्रभार उन्होंने ग्रहण किया। सन 1940 में वैद्य के निधन के बाद ग.ल.चंदावरकर ने सम्पादन की जवाबदारी स्वीकारी।

दुर्गाप्रसाद शुक्ल ने जनवरी 1873 में *'मर्यादा परिपाटी समाचार'* नामक एक धार्मिक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आगरा से किया। इसका वार्षिक मूल्य छह रुपये छह आना था। फरवरी 1873 में छपे इश्तिहार सँख्या 1 के अनुसार, ''यह समाचार पत्र प्रत्येक महीना की संक्रांति पर अँगरेजी महीना के अनुसार छपकर धर्म जिज्ञासु लोगों के आलोकन में पहुँचता है।'' इसमें हिन्दी के अलावा संस्कृत, अँगरेजी एवं उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग रहा करता था।

जबलपुर से पहला समाचारपत्र एक मार्च 1873 को *'जबलपुर समाचार'* के नाम से निकला। यह द्विभाषी मासिक पत्र था। हिन्दी और अँगरेजी में छपता था। इसकी एक प्रति की कीमत चार आना थी। यह बनारस के मेडिकल हाल प्रेस से मुद्रित होता था और इसके सम्पादक कृष्णराव होशंगाबाद में निवास करते थे। सन 1873 में रेल कर्मचारियों के लिए *'इंडियन रेलवे सर्विस गजट'* भी प्रकाशित हुआ।

21 अप्रैल 1873 से इंदौर से साप्ताहिक *'होलकर सरकार गजट'* का प्रकाशन प्रति सोमवार आरम्भ हुआ। इस साप्ताहिक में सरकारी आदेश, विज्ञापन, बाजार भाव, पंचांग एवं निजी नोटिस प्रकाशित किए जाते थे। प्रारम्भ में गजट मराठी भाषा में प्रकाशित होता था। परन्तु बाद में मराठी के साथ अँगरेजी और हिन्दी में छापा जाने लगा।

देहली एसोसिएशन ने उर्दू मासिक पत्रिका *'रिसाला देहली एसोसिएशन'* सन 1873 में निकाली थी। इस वर्ष में इसका केवल एक अंक छपा था। इसी अंक में इसे वर्ष में तीन बार प्रकाशित करने की घोषणा भी छापी गई थी। 48 पृष्ठ की इस पत्रिका के सम्पादक लाला रामजीदास थे।

धारवाड़ से मराठी में *'धारवाड़ वृत्त'* नाम का साप्ताहिक पत्र अंताजी रामचंद्र जोगलेकर ने सितम्बर 1873 में निकाला। यह पत्र सन 1907 तक चला। अक्टूबर, 1873 में अक्षयकुमार सरकार के सम्पादकत्व में *'साधारणी'* का प्रकाशन हुआ। बंगाल के शिक्षित समुदाय का यह लोकप्रिय पत्र था। ब्रिटिश सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों की नजर में यह खटकता था। जब (1878 में)वर्नाकुलर प्रेस एक्ट के समर्थन में तर्क दिए जा रहे थे, उस समय अँगरेजों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'साधारणी' से बहुत से ऐसे उद्धरण मिले जिनको वे सरकार के लिए खतरनाक मानते थे। अन्ततः यह बंगला पत्र वर्नाकुलर प्रेस एक्ट की बलि चढ़ गया।

हरिश्चन्द्र मैगजीन

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'कविवचन सुधा' के बाद *'हरिश्चन्द्र मैगजीन'* का प्रकाशन किया। 15 अक्टूबर 1873 को काशी से प्रकाशित 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' के सम्पादक और प्रकाशक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वयं थे। इसका मुद्रण मेडिकल हाल प्रेस से होता था। इसके मुखपृष्ठ पर नाम और विवरण अँगरेजी में छपा करता था। इसका कागज एवं छपाई उत्तम थी। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' के मुखपृष्ठ पर लिखा रहता था कि यह 'कविवचन सुधा' से सम्बद्ध है। इस पत्र ने हिन्दी भाषा और हिन्दी पत्रकारिता का उन्नयन किया। हिन्दी को न्यायालयों की भाषा बनाने के लिए आन्दोलन किया।

पत्रिका का प्रथम अंक 24 पृष्ठों का प्रकाशित हुआ। हर अंक में अँगरेजी भाषा के तीन से छह पृष्ठ रहते थे। इनमें सामयिक मुद्दों का विश्लेषण होता था। प्रत्येक पृष्ठ में दो कालम होते थे। एक पृष्ठ की लम्बाई 27 से.मी. और चौड़ाई 21 से.मी. थी। वार्षिक शुल्क छह रुपये अग्रिम लिया जाता था। प्रत्येक माह की 15 तारीख को पत्रिका प्रकाशित होती थी। इसमें साहित्य, विज्ञान, राजनीति, धर्म, पुरातत्व, इतिहास आदि विषयों पर लेखों के साथ ही कविताएँ, हास्य-व्यंग्य आदि सामग्री भी रहती थी। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' के अंकों में शतरंज के चित्र और चालों के प्रकाशन से इस बात की पुष्टि होती है कि रुचिकर समाचारों का ध्यान रखा जाता था। सरकार मैगजीन की 100 प्रतियाँ खरीदती थी। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'कविवचन सुधा' से भी अधिक लोकप्रिय हो गई थी। भारतेन्दु अपने लेखकों को सहायक सम्पादकों की संज्ञा देते थे। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' के आठ अंक निकले, जिनमें कुल 113 रचनाएँ प्रकाशित हुईं। सन 1873 में आरा से उर्दू साप्ताहिक *'ज़िया-उल-अख़बार'* प्रकाशित हुआ।

मैसूर अखबार

'मैसूर अखबार' का प्रकाशन सन 1873 में बेंगलूरु से किया गया था। इसका शुल्क बहुत कम था। इसके सम्पादकीय लेख ज्ञानवर्धक होते थे। इसी कारण यह काफी लोकप्रिय था। स्वतंत्र पत्रकारिता के सम्बन्ध में प्रकाशित इसका सम्पादकीय उल्लेखनीय है[1]– "समाचारपत्रों तथा प्रेस को स्वतंत्रता प्रदान करना शासन की समझदारी का प्रमाण है इससे केवल पत्रकारों का ही लाभ नहीं है अपितु सरकार भी इससे लाभान्वित होगी। सत्य को सामने लाना, अधिकारियों की गतिविधियों से शासन को अवगत कराना, प्रजा के कष्ट तथा कठिनाइयाँ एवं शासन की त्रुटियों को इंगित करना पत्रों की स्वतंत्रता के बिना संभव नहीं। यदि समाचारपत्रों को स्वतंत्रता न दी जाए तो शासन एवं प्रजा को जो लाभ अब मिल रहे हैं वे कदापि नहीं मिलते। बंधनयुक्त समाचारपत्रों से क्या आशा की जा सकती है? यही कि सत्य पर पर्दा पड़ा रहे, पूरा पत्र चापलूसी से भरा रहे, काम की एक भी बात न लिखी हो, प्रजा पर अत्याचारों और अनाचारों का पहाड़ टूटता रहे, षड्यंत्र रचे जाएं और पत्रकार उनको बिलकुल विपरीत अवस्था में, अत्याचारों को न्याय और षड्यंत्रों को राष्ट्र सहयोग के रूप में प्रकाशित करें........।"

'व्यवहार तरंगिणी' मासिक पत्रिका थी। इसके सम्पादक वंकीपुरम् राघवाचार्युलु थे। यह तेलुगु पत्रिका चेन्नै से प्रकाशित हुई। गणपतराव कोल्हटकर ने *'विनोद प्रतोद'* नाम का व्यंग्य

1. मैसूर अखबार, 2 जून 1875

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र सन 1873 में सतारा से निकाला।

धार रियासत की ओर से सन 1873 में साप्ताहिक अखबार *'वृत्तधारा'* का प्रकाशन धार से हुआ। इसके सम्पादक वासुदेव त्र्यंबक कापशे थे। सन 1893 तक यह पत्र निकला। 'वृत्तधारा' से धार रियासत में शिक्षा के प्रसार पर प्रकाश पड़ता है- धार इलाकयांतील विद्यालये (धार प्रदेश के विद्यालय)- ''पुना के डेक्कन कालेज के अंडरग्राजुएट रामचंद्र चिंतामण डिके को इस कार्य के लिये ढाई वर्ष से नियुक्त किया है। धार सरकार ने बड़े बड़े गाँवों को पुस्तक आदि सामान देकर स्कूल खुलवाए जो अँगरेजी, मराठी, फारसी और उर्दू के थे।''

सन 1893 तक इसके प्रकाशन का उल्लेख मिलता है। कुछ वर्षों बाद इसका पुनर्प्रकाशन हुआ और सन 1948 में जब धार रियासत का मध्यभारत में विलय हुआ तब तक यह निकलता रहा। इसके अंतिम सम्पादक जगन्नाथप्रसाद शुक्ल थे।

वर्ष 1873 में *'स्वधर्म प्रकाशिनी'* निकला। यह तेलुगु पत्र मछलीपत्तनम से प्रकाशित हुआ था। इसके संस्थापक द्वैतम कोटेश्वर शर्मा थे। नैनीताल प्रेस से हिन्दी पाक्षिक *'समय विंनोद'* सन 1873 में निकला। आठ पृष्ठों के इस पत्र का वार्षिक शुल्क तीन रुपये बारह आना था।

बालेश्वर के उत्कल प्रेस से इन्द्रवल्लभ भट्टाचार्य और बैकुण्ठनाथ देव ने सन 1873 में *'उत्कल दर्पण'* निकाला। यह उड़िया भाषा का मासिक पत्र था। सन 1877 में इसे पाक्षिक और जनवरी 1878 से साप्ताहिक पत्र के रूप में निकाला जाने लगा। राधानाथ राय और मधुसूदन दत्त प्रभृति विद्वान इसमें नियमित रूप से लिखा करते थे। घाटा बढ़ते जाने की वजह से 'उत्कल दर्पण' का प्रकाशन बंद करना पड़ा।

सन 1873 में कटक प्रिंटिंग कम्पनी से उड़िया पाक्षिक *'उत्कल पुत्र'* का प्रकाशन प्यारीमोहन आचार्य ने किया। उड़िया भाषा की विभिन्न पांडुलिपियों, उड़ीसा प्रान्त के समाचारों, समाज को दिशा देने वाले लेखों का प्रकाशन इसमें होता था।

भक्त कवि मधुसूदन राव ने सन 1873 में उत्कल प्रिंटिंग प्रेस बालेश्वर से उड़िया मासिक पत्रिका *'धर्मबोधिनी'* का प्रकाशन किया। इस पत्र को कुछ समय तक *'शिक्षक'* और *'धर्मबोधिनी'* नाम से भी निकाला गया। इस पत्र में धर्म और अध्यात्म विषयक सामग्री रहा करती थी। उड़िया और अँगरेजी में प्रकाशित होने वाला द्वि-भाषी पाक्षिक पत्र *'विदेशी'* सन 1873 में निकला। दीनबंधु बंद्योपाध्याय इसके सम्पादक थे। यह सामान्य संवाद पत्र था। इसमें निबंध और कविताएं प्रकाशित होती थीं। सन 1873 में ही कानपुर से *'नूर-उल-अख़लाक़'* का प्रकाशन हुआ।

<u>1874</u>

बाला बोधिनी

भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने महसूस किया कि स्त्रियों के लिए अलग से एक स्त्री शिक्षोपयोगी मासिक पत्रिका होनी चाहिए। इसी सोच को कार्य रूप प्रदान करते हुए उन्होंने जनवरी 1874 में *'बाला बोधिनी'* नामक पत्रिका का प्रकाशन किया। यह डिमाई साइज की आठ पृष्ठों की पत्रिका थी। ''बाला बोधिनी'' के प्रथम अंक में सम्पादक ने आग्रह किया-''मैं तुम लोगों से हाथ जोड़कर और आँचल खोलकर यही माँगती हूँ कि जो कभी कोई भली बुरी कड़ी नरम कहनी अनकहनी कहूँ उसे मुझे अपनी समझकर क्षमा करना क्योंकि मैं जो कुछ कहूँगी सो तुम्हारे हित की कहूँगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बाला बोधिनी'' हिन्दी भाषा में स्त्रियों पर केन्द्रित पहली पत्रिका थी। ''बाला बोधिनी'' में महिलाओं के लिए उपयोगी रचनाएँ ही अधिकतर छपती थीं, साथ ही इतिहास, साहित्य, राजनीति पर सामयिक लेख भी प्रकाशित किए जाते थे। यह पत्रिका चार वर्षों तक प्रकाशित हुई। ''बाला बोधिनी'' स्त्रियों में नैतिक शिक्षा के प्रसार पर जोर देती थी। ''हे सुमति, जब बालक तुम्हारा भली प्रकार बातचीत करने लगे तो उसको वर्णमाला याद कराती रहो फिर उन्हीं को पट्टी पै लिख के अभ्यास कराओ और रातों को गिनती और सुन्दर-सुन्दर श्लोक और छोटे स्त्रोत याद कराओ। इस व्योहार में कई एक बातें सुन्दर प्राप्त होंगी। प्रथम तो बालक को खेल ही खेल में अक्षर ज्ञान हो जावेगा दूसरे उसका काल भी व्यर्थ नहीं जाने का फिर इस अवसर का पढ़ा लिखा विशेष करके याद रहता है।'' जब 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' और 'बाला बोधिनी' को सरकारी सहायता बन्द हो गई, तब पत्रिकाएं आर्थिक संकट में घिर गईं और बंद हो गईं।

विष्णु कृष्ण चिपलूणकर ने जनवरी 1874 में *'निबंधमाला'* का प्रकाशन किया। सन 1881 तक इस मासिक पत्रिका के 84 अंक निकले। यह ज्ञानप्रद लेखों की पत्रिका थी। 8 मार्च 1878 को पटना से सैयद अबू मोहम्मद साहब रईस ने मासिक पत्रिका *'रिसाला अंजुमन मज़ाकिरा इल्मिया'* का प्रकाशन किया। इसकी पृष्ठ सँख्या 32 थी। हाजी सैयद मीर पत्रिका के संस्थापक तथा मुंशी अली हसन सम्पादक और प्रबन्धक थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। मतबा बिहार में छपती थी।

रावजी हरी आठवले ने अप्रैल 1874 में *'सर्वमित्र'* नाम का मराठी पत्र अलीबाग से शुरू किया। इसका मूल्य दो पैसे था।

दिल्ली से पाक्षिक *'सफ़ीर-ए-हिन्द'* पत्र सन 1874 में निकला था। पृष्ठ सँख्या चार थी। शासन, राजा, नवाब आदि के लिए वार्षिक शुल्क 24 रुपये, रईसों से 12 रुपये तथा जनता से छह रुपये लिया जाता था। सम्पादक बुलाक़ी दास तथा प्रकाशक ज़ाकिर हुसैन थे। अप्रैल 1874 में *'भ्रमर'* नामक पत्रिका प्रकाशित हुई।

श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका

'श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' का प्रथम अंक जून 1874 में प्रकाशित हुआ। 'श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' की भाषा उस युग के हिसाब से परिष्कृत हिन्दी थी। इसमें विविध विषयों पर सामग्री का प्रकाशन होता था। 1874 में 'श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के होली अंक में प्रकाशित होली गीत अपने आप में प्रखर अभिव्यक्ति का अन्यतम उदाहरण है-

''होली। भारत में मची है होरी।।
इक ओर आग अभाग
एक दिसी होय रही झकझोरी।
अपनी अपनी जय सब चाहत
होड़ परी दुँहू ओरी।।
दुंद सखि बहुत कठोरी।।
धिक वह माता पिता जिन तुमसो कायर पुत्र जन्योरी।
धिक वह घरी जनम भयो जामे यह कलंक प्रगटोरी।।
जनमतहिं क्यों न मरोरी।।
अलस में कछु काम न चलि है सब कछु तो विनसोरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कित गयो धन बल राजपाट सब कोरो नाम बचोरी।।
तउ नसि सुरत करोरी।।
होली! है दुर्दशा न थोरी, कहाँ खेलें हम होरी?
रह्यो न राज हमारो तिल भर करत चाकरी कोरी।
पराधीनता में सुख मानत, तानत लम्बी वोरी।।
अब विद्या रंग रंगोचित में गुण गुलाब प्रघटोरी
अनल अबीर कुरीति कुंकुमा देहु भूमि में कोरी।
निडरता उफ धुधकोरी।।
कर उत्साह राह में आओ मैं भ्रम सब बिसरोरी
स्वाधीनता करो सम्पादन भारत जै उचरोरी।
राधिका चरणचहोरी।''

'श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में हठीकृत राधासुधा शतक, भारतेन्दु का धनजंय विजय, गदाधर सिंह कृत कादम्बरी, लाला श्रीनिवास दास कृत तप्तासंवरण नाटक आदि लघु पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुईं। यह पत्रिका हिन्दी जगत में बहुत सराही गई। 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' का प्रकाशन छः वर्षों तक हुआ।

'श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' घाटे में थी। भारतेन्दु के मित्र मोहनलाल पंड्या एक पत्रिका निकालना चाहते थे। उन्होंने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सामने प्रस्ताव रखा कि यदि वे अपनी 'चन्द्रिका' उन्हें सौंप दें तो वे इसे मोहन और हरिश्चन्द्र की चन्द्रिका के नाम से निकाल देंगे। बाबू हरिश्चन्द्र ने सहज अनुमति दे दी। इस प्रकार सन 1880 में 'मोहन चन्द्रिका' के नाम से पत्रिका निकली, जिसके सम्पादक दामोदर शास्त्री थे। उन्होंने अपनी संस्कृत पत्रिका 'विद्यार्थी' को भी सन 1881 में इसी में समाहित कर दिया।

मोहनलाल पंड्या जब उदयपुर राज दरबार में नौकर हो गए, तब चन्द्रिका उदयपुर चली गई। वहाँ से उसका नाथद्वारा स्थानांतरण हो गया। एक वर्ष बाद इसका प्रकाशन स्थान काशी से बदलकर नाथद्वारा कर दिया गया। हरिश्चन्द्र ने जब देखा कि चन्द्रिका पहले जैसी पत्रिका नहीं रही तो उन्होंने काशी लौटकर 'नवोदित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' नाम से इसका पुन: प्रकाशन प्रारंभ किया, परन्तु दो अंक निकालने के बाद ही उनकी अंतिम घड़ी आ पहुँची। 'नवोदित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' का आकार हरिश्चन्द्र चन्द्रिका से छोटा था। पृष्ठ सँख्या 52 थी। तीसरा अंक निकलते ही मोहनलाल पंड्या ने हरिश्चन्द्र के छोटे भाई गोकुलचन्द्र को नोटिस दे दिया कि भारतेन्दु ने चंद्रिका हमें सौंपी थी, उस पर कानूनन हमारा अधिकार है, आप उसे छापने का उद्योग न करें, परिणामत: नवोदित चंद्रिका भी बंद हो गई।

26 जून 1874 को इलाहाबाद से नाटक पर केन्द्रित मासिक पत्र *'नाटक प्रकाश'* वकील रतनचन्द्र ने निकाला। अंजुमन *'रिसाला मुफ़ीद-ए-आम'* का प्रकाशन अगस्त 1874 में क़सूर से हुआ। उर्दू की यह मासिक पत्रिका क़ादरी प्रेस में छपती थी। इसमें सहित्य, ज्ञान-विज्ञान, शिल्प तथा शिक्षा विषयक लेख छापे जाते थे। *'कष्ट विलासिनी'* अक्टूबर 1874 में शुरू हुआ। इस पत्र के सम्पादक विट्ठल पांडुरंग उर्फ अण्णा सोहोनी थे। दिसम्बर 1878 में यह मराठी मासिक पत्र बंद हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1874 में *'ब्रह्मांड रंजनी'* चेन्नै से मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित हुई। यह तेलुगु पत्रिका विषयवस्तु, सम्पादन और मुद्रण सभी दृष्टियों से अच्छी पत्रिका थी। 1890 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया। सन 1874 में *'लोकरंजनी'* पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके संस्थापक काकर्ला सुब्बय्या थे। चेन्नै से इस तेलुगु मासिक का प्रकाशन हुआ था। *'विद्वन्मनोहारिणी'* का प्रकाशन सन 1874 में हुआ। इसके प्रकाशक-सम्पादक मीर शुजाअत अली खां थे। यह तेलुगु मासिक नरसापुरम से प्रकाशित होता था। कुछ समय पश्चात 'विवेकवर्द्धिनी' में इसका विलय हो गया। सन 1874 में *'सुधि रंजनी'* का प्रकाशन ओगिराला जगन्नाथम ने किया था। इसके सम्पादक कानुकुर्ति भुजंगराव थे। यह तेलुगु मासिक कोकिनाड से निकलता था।

सन 1873 में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और कुछ अन्य विद्वानों ने तदीय समाज की स्थापना की। समाज ने सन 1874 में *'भगवत् भक्ति तोषिणी'* पत्रिका निकाली।

हर दसवें दिन निकलने वाला *'रियाज़-उल-अख़बार'* सीतापुर जिले के खैराबाद से सन 1874 में मुंशी सैयद रियाज़ अहमद तथा हाफ़िज निज़ाम अहमद 'अंदाज' ने प्रकाशित किया था। बाद में यह गोरखपुर से लाला शीतला बख़्श के सम्पादन में निकलता रहा। आठ पृष्ठ के इस अख़बार का वार्षिक शुल्क बारह रुपये तेरह आना था। रियाज़-उल-अख़बार प्रेस में छपता था। चार पृष्ठ के *'सफ़ीर-ए-सग़ीर'* को आरा से सन 1874 में सैयद फ़रज़ंद अहमद 'सग़ीर' बिलग्रामी ने निकाला था। इस उर्दू पत्र के सम्पादक सैयद खुर्शीद अहमद थे। *'चिराग़े राजपूताना'* (अजमेर अख़बार) का प्रकाशन 1874 में अजमेर से हुआ। सन 1874 में *'जयपुर अख़बार'* निकला। सैयद हुसैन बिलग्रामी के सम्पादन में सन 1874 में उर्दू पत्रिका *'मख़जन-ए-फ़वायद'* प्रकाशित हुई।

1874 में लाला श्रीनिवासदास ने दिल्ली से *'सदादर्श'* निकाला। सम्मेलन पत्रिका में इसका विवरण इस प्रकार मिलता है- ''बहुत दिन हुए, जब दिल्ली भारतवर्ष की राजधानी नहीं हुई थी, तब सन 1874 में हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक लाला श्रीनिवासदास ने वहाँ से 'सदादर्श' नामक साप्ताहिक समाचारपत्र निकाला था, जो केवल दो वर्ष चला था। तब से दिल्ली के राजधानी बनने के समय तक हिन्दी का कोई अख़बार नहीं निकला।''

सन 1874 में पंडित शिवराखन शुक्ल ने मासिक पत्रिका *'प्रयाग धर्म प्रकाश'* निकाली। उड़िया भाषा में पुरी के भक्ति प्रदायिनी प्रेस से सन 1874 में पाक्षिक *'चन्द्रिका'* का प्रकाशन हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

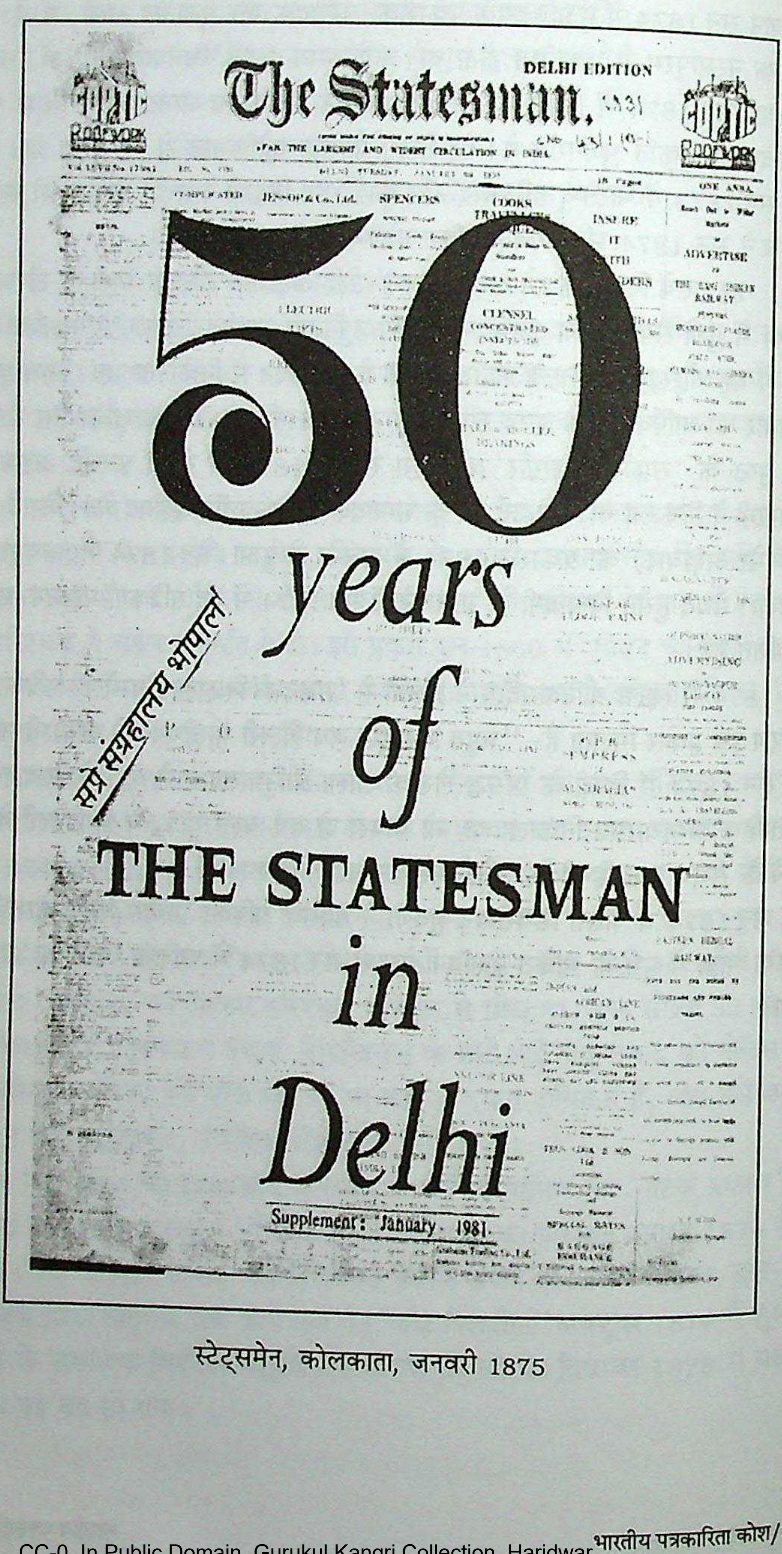

DELHI EDITION

The Statesman,

FOR THE LARGEST AND WIDEST CIRCULATION IN INDIA

ONE ANNA

50 years of THE STATESMAN in Delhi

Supplement: January 1981.

सप्रे संग्रहालय भोपाल

स्टेट्समेन, कोलकाता, जनवरी 1875

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम श्रृंखला पत्र

1875

स्टेट्समेन

'वन आना पेपर' के नाम से मशहूर रहे '*स्टेट्समेन*' का प्रकाशन जनवरी, 1875 में राबर्ट नाइट ने कोलकाता से आरम्भ किया। जब आम तौर पर समाचारपत्रों की एक प्रति का मूल्य चार आना हुआ करता था तब 'स्टेट्समेन' ने अपनी कीमत न केवल एक आना रखी, बल्कि वर्षों तक इसी मूल्य पर बिकता भी रहा। समाचारपत्रों के विकासक्रम में 'स्टेट्समेन' को देश का प्रथम श्रृंखला पत्र होने का गौरव प्राप्त है, जो कोलकाता और दिल्ली से एक साथ प्रकाशित हुआ। अँगरेजी दैनिक 'स्टेट्समेन' देश का ऐसा पहला अख़बार है जिसने कम्पोजिंग के लिए टाइपसेटिंग मशीन और मुद्रण के लिए रोटरी मशीन की व्यवस्था की।

जनवरी 1875 में सेवा से पृथक होकर राबर्ट नाइट ने समाचारपत्र 'इंडियन स्टेट्समेन' की नींव डाली और उसका सम्पादन करने लगे। आठ माह पश्चात शीर्षक से 'इंडियन' शब्द हटा दिया गया और पत्र का नाम 'स्टेट्समेन' हो गया। सन 1877 में 58 वर्ष से प्रकाशित हो रहे 'फ्रेण्ड आफ इंडिया' का 'स्टेट्समेन' में विलय हो गया। तब इसका शीर्षक 'स्टेट्समेन एंड फ्रेण्ड आफ इंडिया' कर दिया गया। इस समाचारपत्र की प्रतिस्पर्धा मुख्य रूप से 'इंग्लिशमैन' और 'इंडियन डेली न्यूज' के साथ थी, जो पहले से ही जमे हुए थे।

सन 1890 में राबर्ट नाइट का निधन होने के बाद उनके पुत्र पॉल और राबर्ट जूनियर संचालक बने जिन्होंने लगन और कल्पनाशीलता के साथ इसे भारत का लोकप्रिय समाचारपत्र बना दिया। सन 1922 में स्टेट्समेन लि. नाम से एक कम्पनी बनाई, जो पत्र का संचालन करने लगी। 'स्टेट्समेन' का दिल्ली संस्करण 20 जनवरी 1931 को आरम्भ हुआ। कोलकाता और दिल्ली से प्रकाशित दैनिक 'स्टेट्समेन' के पीछे एक लम्बी परिपाटी है। इसने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। यह पत्र देश के राजनीतिक संघर्ष का प्रत्यक्षदर्शी है और अपनी स्वयं की नीतियों और विचारों को इस पत्र ने कैसे समय के साथ ढाल लिया, यह भी इसके पुराने अंकों को पढ़ने से स्पष्ट होता है।

दिल्ली संस्करण के पहले सम्पादकीय का शीर्षक था 'हमारा दिल्ली संस्करण'। इसमें सम्पादक ने 'स्टेट्समेन' की पूरी जीवन यात्रा को संक्षिप्त में बताते हुए आशा व्यक्त की थी कि अब समय आ गया है जब हमें अतिवादिता को त्यागकर स्वतंत्रता पाने की तैयारी में जुट जाना है। उस समय तक दिल्ली में कोई भी दैनिक समाचारपत्र नहीं था। कोशिश यह की गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी कि जिस प्रकार कोलकाता में 'स्टेट्समेन' प्रतिदिन प्रात: पाठकों को सभी प्रकार के ताजे समाचारों और टिप्पणियों से अवगत कराता था, उसी प्रकार दिल्ली का 'स्टेट्समेन' भी उत्तर भारत के पाठकों को प्रतिदिन ताजी सामग्री उपलब्ध कराए। दिल्ली में प्रारम्भ से ही कई संस्करण छपते थे जो लाहौर, कानपुर, आगरा, मेरठ आदि स्थानों को भेजे जाते थे। दिल्ली संस्करण प्रारम्भ करने की योजना कई दिनों से चल रही थी। दिल्ली संस्करण के सम्पादक अलफ्रेड हेनरी वाट्सन थे।

उन दिनों दिल्ली की आबादी 3.50 लाख से कुछ कम थी। 14.50 करोड़ रुपयों में नईदिल्ली को राजनीतिक राजधानी बनाकर तैयार किया गया था। आदर्श नगर नियोजन का यह उत्कृष्ट नमूना था। फरवरी, 1931 के दूसरे सप्ताह में नई दिल्ली का उद्घाटन हुआ। छह दिन तक चले उद्घाटन समारोह में वायसराय हाउस में नागरिक सम्मान, जनता- मेला, हाकी का प्रदर्शन मैच, फैन्सी ड्रेस, सफदरजंग में विमानों के करतब आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। 1931 में दिल्ली विश्वविद्यालय नौ वर्ष का था और उसे पुरानी वायसरीगल लाज में स्थायी घर मिल गया था। जब दिल्ली का 'स्टेट्समेन' प्रारम्भ हुआ तब उसके कार्यालय में एक सप्ताह में फोन लग पाया। कोलकाता से इसी फोन पर दिन भर समाचार प्राप्त होते थे। प्रवेशांक में लंदन में हुए गोलमेज सम्मेलन में ब्रिटिश प्रधानमंत्री रेम्से मेकडोनाल्ड के समापन भाषण की रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी। उस समय गांधीजी यरवदा जेल में थे। प्रवेशांक में लाहौर से एक रपट थी, जिसका शीर्षक था-'अफगान सीमा पर सोवियत आक्रमण'।

पहले ही दिन सभी स्थानीय समाचारपत्र विक्रेताओं ने बड़ी सँख्या में प्रतियों के आदेश दिए थे और सभी प्रतियाँ बिक गईं। बधाई संदेशों की बाढ़-सी आ गई। मुफस्सिल क्षेत्रों से भी उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया मिली।

'स्टेट्समेन' ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 28 दिसम्बर, 1935 को एक विशेष पृष्ठ पर कांग्रेस के महान नेताओं- डब्ल्यू.सी. बनर्जी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और गोपालकृष्ण गोखले के चित्र छापकर कांग्रेस का इतिहास और प्रमुख व्यक्तियों के भाषणों के अंश प्रकाशित किए। 'स्टेट्समेन' के स्वर्ण जयंती अंक (50 साल) में नई दिल्ली के निर्माण की रोचक कहानी दी गई है।

इआन मेलविल स्टीफेन्स ने सन 1937 में 'स्टेट्समेन' में सहायक सम्पादक की हैसियत से पदभार ग्रहण किया। एक अगस्त, 1942 को वे कार्यकारी सम्पादक हो गए और अप्रैल, 1943 में सम्पादक नियुक्त हुए। 'स्टेट्समेन' में आने के पूर्व वे शासकीय सेवा में इतिहासवेत्ता के रूप में आए थे। उन्हें लोक सूचना ब्यूरो का उप संचालक बनाया गया था।

जिआफ्री एडवर्ड पावेल, जो 1929 में कलकत्ता 'स्टेट्समेन' में संवाददाता और सह सम्पादक की हैसियत से आए थे, सन 1931 में कोलकाता से दिल्ली अपने अन्य चार साथियों के साथ स्थानान्तरित किए गए थे। सन 1933 से 36 के बीच वे 'स्टेट्समेन' के विशेष संवाददाता रहे। पावेल को सन 1952 में उप सम्पादक नियुक्त किया गया और सन 1962 में वे सम्पादक बने। 36 वर्षों की सेवा के बाद सन 1964 में उन्होंने अवकाश ग्रहण किया। सरकारी हलकों में इसे 'मित्र प्रेस' माना जाता था। इसके सम्पादकीय प्रतिदिन तार से कोलकाता से प्राप्त होते थे। उस जमाने का इसका दैनिक 'मिसलेनी कालम' बहुत लोकप्रिय था, जिसे हेनरी न्यूमेन लिखते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'स्टेट्समेन' के अंतिम अँगरेज सम्पादक अलफ्रेड ईवान केल्टन थे, जो सन 1936 में सह-सम्पादक के रूप में समाचारपत्र से जुड़े थे। सन 1950 तक वे सम्पादकीय विभाग के विभिन्न पदों पर रहे और सन 1950 में दिल्ली संस्करण के स्थानीय सम्पादक हो गए। उन्होंने समाचारपत्र में अनेक नए और उपयोगी स्तम्भ आरम्भ किए। 'यस्टरडे इन देलही' बहुत लोकप्रिय स्तम्भ था, जिसे संत निहाल सिंह से लिखवाना प्रारम्भ किया। वे सन 1964 में 'स्टेट्समेन' के सम्पादक नियुक्त हुए और सन 1967 में सेवानिवृत्त हो गए। उनके बाद प्राण चोपड़ा सम्पादक बने। उस समय 'स्टेट्समेन' के विशेष प्रतिनिधियों में भारतीय पत्रकारिता के तेजस्वी व्यक्तित्व महेश चन्द्र, प्रेम भाटिया, अजित भट्टाचार्य, इंदर मल्होत्रा, चंचल सरकार, कृष्णा भाटिया और निहाल सिंह आदि थे।

सन 1963 तक 'स्टेट्समेन' का मालिकाना हक अँगरेज परिवार के पास रहा, जिसने स्वतंत्रता के पूर्व और बाद में अभिव्यक्ति की आजादी के लिए बराबर संघर्ष किया। सन 1963 में इसका स्वामित्व भारत के चुने हुए 19 निगमों को हस्तांतरित हो गया। जून 1975 में आपात्काल लगने के पहले और इसके दौरान अनेक निगमों ने अपना मालिकाना हक लोक न्यासों को हस्तान्तरित कर दिया। कई निगमों ने अपना हिस्सा पत्र के कर्मचारियों को बेच दिया। अब 27 फीसदी से अधिक कम्पनी का हिस्सा, समाचार पत्र के कर्मचारियों के पास है।

विक्टोरिया प्रेस लाहौर से सन 1875 में हिन्दी मासिक पत्र *'हिन्दू बांधव'* का प्रकाशन हुआ। शिवनारायण अग्निहोत्री सम्पादक, प्रकाशक थे। यह एक विचार पत्र था।

उर्दू का तीसरा दैनिक पत्र *'रोजनामचा'* एक जनवरी 1875 को लाहौर से प्रकाशित हुआ। इसका विवरण 'अख़्तर शहंशाही' में मिलता है। ख़्वाजा अहमद हसन इसके प्रकाशक थे। लाहौर की हवेली काबुलीमल में पत्र का दफ्तर था। लाहौर से प्रकाशित होने वाला उर्दू का यह पहला दैनिक अख़बार था। यह चार पृष्ठों का था।

देवास से दो अगस्त 1875 को मराठी साप्ताहिक *'वृत्तलहरी'* प्रकाशित होने लगा। यह सत्सागर लिथो प्रेस में छपता था। पहले सम्पादक अँगरेजी के विद्वान महादेव कृष्ण चितले थे। उनके बाद कृष्णाजी गणेश अत्रे सम्पादक बनाए गए। यह साहित्य, राजनीति, वाणिज्य और समाचारों का साप्ताहिक पत्र था। दो से तीन कालम अँगरेजी और शेष भाग में मराठी अंश रहता था। प्रति सोमवार शाम को प्रकाशित होता था। 13 नवम्बर 1875 को वायसराय लार्ड नार्थब्रुक नीमच स्टेट रेलवे प्रारम्भ करने गए थे, यह खबर 'वृत्तलहरी' से मिलती है। 'वृत्तलहरी' का अंतिम अंक 19 जून 1876 को प्रकाशित हुआ।

इटावा बाज़ार कानपुर से त्रैमासिक पत्रिका *'रिसाला अंजुमन तहज़ीब'* अक्टूबर 1875 में निकली। 24 पृष्ठों की 'रिसाला अंजुमन तहज़ीब' के प्रकाशक मौलवी सैयद मोहम्मद मेहदी, सम्पादक हाफ़िज़ अब्दुल्ला बिलग्रामी तथा सहायक सैयद अब्दुल बसीर बिलग्रामी थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। मतबा निज़ामी में छपती थी।

हिन्दी मासिक पत्र *'आर्य विनय'* का प्रकाशन बाबू दुर्गाचरण और कालिकाप्रसाद के प्रयत्नों से आर्य समाज मुरादाबाद ने वर्ष 1875 में किया। इसमें धार्मिक विषयों का बाहुल्य था और आर्य समाज पर होने वाले आक्षेपों का समाधान होता था। सम्पादक रुद्रदत्त शर्मा स्वयं आर्यसमाजी थे और दिल्ली के साप्ताहिक *'इन्द्रप्रस्थ प्रकाश'* के हिन्दी विभाग के सम्पादक रह चुके थे। यह पत्र लगभग नौ वर्षों तक प्रकाशित हुआ। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आर्य विनय' का सिद्धांत था- ''शात्रोरपि गुणा वाचा दोषा वाच्या गुरोरपि''। अर्थात शत्रु के गुण और गुरु के दोष भी प्रकाशित कर देने चाहिए। इस मान्यता पर अमल के कारण 'आर्य विनय' पर मुसीबतें आईं और सम्पादक पर यह बंधन भी लगाया गया कि छापने के पहले प्रत्येक अंक की सामग्री डिप्टी कलेक्टर को पढ़वाई जाए।

चेन्नै से सन 1875 में तेलुगु मासिक *'जन विनोदिनी'* का प्रकाशन हुआ। इसके संस्थापक बी. कृष्णाचार्युलु थे। यह तेलुगु की प्रथम शैक्षिक बाल पत्रिका थी। इसमें बच्चों के लिए कहानियाँ, चुटकुले, कविताएँ आदि प्रकाशित की जाती थीं।

सन 1875 में चेन्नै से *'जरीदा रोज़गार'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके पहले सम्पादक सैयद मुर्तुज़ाशाह कादरी थे, फिर मोहम्मद अब्दुल लतीफ़ हुए। 16 पृष्ठों के इस उर्दू पत्र में निज़ाम राज्य के समाचारों को ज्यादा स्थान दिया जाता था। निज़ाम सरकार से इसे सहायता मिलती थी। 15 अप्रैल 1876 को इसके परिशिष्ट के रूप में 'ज़हीर-उल-इस्लाम' का प्रकाशन धर्म प्रचार हेतु किया गया। सन 1875 में विजयवाड़ा से तेलुगु मासिक *'तेलुगु बैप्टिस्ट'* का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक वेत्युला जार्ज थे।

बिहार हेरल्ड

बिहार के बांकीपुर (पटना) से साप्ताहिक *'बिहार हेरल्ड'* सन 1875 में निकला। इसके मुद्रक-प्रकाशक नारायणचन्द्र चक्रवर्ती थे। पत्र का आकार 33 गुणित 21 से.मी. था। इसका अपना प्रेस था। कुछ समय बाद यह सप्ताह में दो बार- बुधवार और शनिवार को प्रकाशित होने लगा। इसके संवाददाता अनेक स्थानों से तार से समाचार भेजते थे। प्रत्येक पृष्ठ पर दो कालम होते थे। 12 पृष्ठों के इस अखबार के प्रथम पृष्ठ पर कुछ समाचार और अधिकतर विज्ञापन छपते थे। दूसरे पृष्ठ के दूसरे कालम से सम्पादकीय दिया जाता था जो कभी कभी तीसरे पृष्ठ तक चला जाता था। विज्ञापनों के साथ वस्तुओं के चित्र भी छपते थे। इसमें फन एण्ड फेन्सी, समाचार संक्षेप, ताजे तार, स्थानीय और प्रान्तीय समाचार, लन्दन की खबरें और समाचार संजोए जाते थे। प्रख्यात वकील गुरुप्रसाद सेन इसके प्रथम सम्पादक थे। सन 1975 में इस पत्र का शताब्दी समारोह पटना में मनाया गया था।

हरिविष्णु सहस्त्रबुद्धे ने मराठी भाषा का *'नासिक समाचार'* सन 1875 में निकाला जो सन 1878 तक प्रकाशित हुआ।

मासिक *'रिसाला अंजुमन इस्लाम'* का प्रकाशन लखनऊ से अंजुमन के तत्वावधान में सन 1875 में किया गया था। यह 22 पृष्ठों की पत्रिका थी। इसके सम्पादक मंडल में सैयद इम्तियाज़ अली, मौलाना अब्दुल अज़ीज़, मुंशी सैयद तथा अब्दुल बशीर सम्मिलित थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। मतबा मजमुआ-उलूम में यह पत्रिका छपती थी।

सन 1875 में *'वर्हाड शाला पत्रक'* का प्रकाशन अमरावती से हुआ। इस मासिक पत्रिका में अधिकांश लेख समाजोपयोगी विषयों पर प्रकाशित होते थे। समाज शिक्षा के लिए समर्पित 'वर्हाड शाला पत्रक' में कविताएँ भी प्रकाशित की जाती थीं। 'वर्हाड शाला पत्रक' के सम्पादक अ.तु.वालके थे। इसका वार्षिक शुल्क ढाई रु. था।

'वेंगुर्ले वृत्त' नामक मराठी साप्ताहिक सन 1875 में विट्ठल गोविंद बाणावलीकर ने प्रकाशित किया। प्रति गुरुवार इसका प्रकाशन होता था। यह पत्र सन 1899 तक निकलता रहा। तदनन्तर 'लोकमत' में समाहित हो गया तथा सन 1903 तक प्रकाशित हुआ। सन 1875 में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'स्वदेशी' का प्रकाशन ब्रम्हपुर से हुआ। यह उड़िया मासिक था। सन 1875 में *'सत्यमित्र'* के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है। पंजाब में हिन्दी पत्रकारिता का प्रारम्भ सन 1875 में अमृतसर से हुआ, जब सरदार संतोषसिंह के सम्पादन में धर्म एवं साहित्य विषयक पाक्षिक *'सकल संबोधिनी पत्रिका'* हिन्दी में प्रकाशित हुई।

कंदकूरि वीरेशलिंगम ने महिलाओं के लिए पत्रिका *'हास्यवर्द्धिनी'* प्रकाशित की। इस पत्रिका ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ एकोपासना का पाठ पढ़ाया। इसी के बाद आन्ध्र में ब्रह्म समाज आन्दोलन ने गति पकड़ी। 'हास्यवर्द्धिनी' का प्रकाशन सन 1875 में कोक्कोंड वेंकटरत्नम के सम्पादन में हुआ। यह चेन्नै से प्रकाशित होने वाली तेलुगु मासिक पत्रिका थी। सन 1883 में इसका नाम 'सती हितबोधनी' हो गया और प्रकाशन राजमुंदरी से होने लगा।

तेलुगु मासिक *'ज्ञानविनोदिनी'* का प्रकाशन वर्ष 1875 में चेन्नै से हुआ। यह विज्ञान पत्रिका थी। इसके संस्थापक वी. वेंकट शास्त्री थे।

रहबर-ए-हिन्द

एक दिसम्बर 1875 को लाहौर से अर्द्ध साप्ताहिक *'रहबर-ए-हिन्द'* निकला। यह सप्ताह में दो बार मंगलवार और शुक्रवार को प्रकाशित किया जाता था। जनवरी 1885 से दो पृष्ठ का दैनिक निकाला गया। 25 गुणित 20 से.मी. आकार के दो पृष्ठ होते थे। 'रहबर-ए-हिन्द' की प्रसार सँख्या नहीं बढ़ी तब तीन जनवरी 1875 से दैनिक पत्र का प्रकाशन बन्द कर, सप्ताह में तीन दिन प्रकाशित किया जाने लगा।

इसी प्रकाशन संस्था से साप्ताहिक 'सेल्फ गवर्मेण्ट' भी प्रकाशित होता था। इसके प्रकाशक सैयद नादिर अली शाह सैफ़ी तथा सम्पादक मुंशी ख़ादिम अली थे। एक दिसम्बर 1885 तक यह प्रकाशित हुआ।

बेल्लारी से 1875 में कन्नड भाषा का पहला दैनिक पत्र *'भारती'* निकला। पहले यह मासिक था। डी.वी. गुण्डप्पा दैनिक भारती के सम्पादक थे। शुरूआत तो अच्छी हुई थी, फिर भी 'भारती' दीर्घजीवी नहीं हो सका।

सन 1875 में *'सुकाव्य संबोधनी'* प्रकाशित हुआ। इसकी भाषा हिन्दी-पंजाबी मिश्रित थी। चेन्नै से अखबार *'फख्रे दक्कन'* सन 1875 में निकला, जो हैदराबाद के अखबार 'जरीदा-ए-रोजगार' के जवाब में निकाला गया था। 'फख्रे दक्कन' निजामाबाद की अँगरेज परस्त नीति का जबरदस्त विरोधी था। हुकूमत ने इस पत्र को ज्यादा दिन नहीं चलने दिया।

सकल विद्याभिवर्द्धिनी

विशाखापत्तनम से सन 1875 में तेलुगु पत्रिका *'सकल विद्याभिवर्द्धिनी'* का प्रकाशन हुआ। सी.सुब्रमण्य शास्त्री, परवस्तु वेंकट रंगनाथ स्वामी और परवस्तु श्रीनिवास जगन्नाथ स्वामी इस मासिक पत्रिका के सम्पादक, प्रकाशक थे। यह पत्रिका विद्या और विवेक के सभी विषयों को समाहित करती थी। सन 1897 में यह पत्रिका बन्द हो गई। पत्रिका के सन 1892-97 के अंक ब्रिटिश म्युजियम लाइब्रेरी में सुरक्षित हैं।

1876

'अदीब-ए-आलम' का प्रकाशन मुरादाबाद से एक जनवरी 1876 को किया गया था। यह उर्दू साप्ताहिक प्रति शुक्रवार प्रकाशित किया जाता था। मतबअ हादीउल मताइब में मुद्रित होता था। इसका वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। प्रकाशक हकीम हादी हुसैन खां और सम्पादक मुंशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहम्मद अली खां 'यकता' थे।

उर्दू मासिक पत्रिका *'गंजीना-ए-नज़ायर'* का प्रकाशन एक जनवरी 1876 से लाहौर से किया गया था। यह 56 पृष्ठों की पत्रिका थी, जो 'इंडियन ला रिपोर्टर' की अनुवाद-प्रस्तुति थी। इसके प्रकाशक मुंशी हरसुख राय, अनुवादक ख़्वाजा हसन एवं प्रबन्धक चरणजी लाल थे। कोहनूर प्रेस में मुद्रित इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क उन्नीस रुपये चार आना था।

मुज़फ़्फ़रनगर जिले के क़स्बा बढ़ाना से एक जनवरी 1876 से उर्दू साप्ताहिक *'सफ़ीर'* का प्रकाशन किया गया। यह प्रत्येक बुधवार को निकाला जाता था। अमर प्रेस में छपने वाले इस पत्र के सम्पादक रामप्रसाद थे। वार्षिक शुल्क आठ रुपये दस आना था।

एक जनवरी 1876 से मासिक *'जर्नल आफ इण्डियन एग्रीकल्चर, मिनरलाजी एण्ड स्टेटिस्टिकस'* का प्रकाशन हुआ। 'इण्डियन इकानामिस्ट' का प्रकाशन बन्द होने से उत्पन्न शून्य को भरने के लिए यह पहल राबर्ट नाइट ने की थी। 'देहली गजट'[1] में इस सम्बन्ध में विज्ञापित घोषणा के मुताबिक, ''यह नया पत्र पुराने 'एग्रीकल्चरल गजट आफ इण्डिया' से बड़ा होगा और इसमें देश में कृषि के उत्थान के लिए किए जा रहे सभी प्रयासों को शामिल किया जाएगा। साथ ही इसमें खनिज साधनों के विकास की भी पूरी जानकारी रहेगी। इसका शुल्क 12 रुपये वार्षिक अग्रिम होगा।''

साप्ताहिक *'क़ासिद'* का प्रकाशन पटना के डाकखाना बांकीपुर से 2 जनवरी 1876 से किया गया था। प्रकाशक इक़बाल अली थे। वार्षिक शुल्क साढ़े चार रुपये था। काशी से *'आनंद लहरी'* नाम का मराठी साप्ताहिक 14 जनवरी 1876 को शुरू हुआ था। 14 जनवरी 1876 से *'अलबर्ट गज़ट'* का प्रकाशन लाहौर से किया गया। इस साप्ताहिक पत्र में 16 पृष्ठ होते थे। इसके प्रकाशक ख़्वाजा अहमद हसन थे जो इसे अलबर्ट प्रेस में छपवा कर शुक्रवार को जारी करते थे। इसका वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। दिल्ली से प्रकाशित 'नासिर-उल-अख़बार'[2] ने इस साप्ताहिक के बारे में लिखा है-''यह अख़बार जो लाहौर से निकला हमारी नज़र से गुज़रा, बहुत पसन्द आया। अभी से पुराने अच्छे अख़बारों से किसी तरह कम नहीं तो तरक़्क़ी करके खुदा जाने क्या बला होगा। जो बात अख़बार को चाहिए वह इसमें मौजूद है। ख़ासकर लिटरेचर बहुत माक़ूल है।''

जनवरी 1876 में मुम्बई के भिंडी बाज़ार से *'फ़रहत-उल एहबाब'* का प्रकाशन किया गया था। प्रकाशक मुंशी मो. मंज़ूर कुरैशी थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

साप्ताहिक *'मजमा-उल-फ़वायद'* का प्रकाशन मुंगेर से एक जुलाई 1876 को किया गया था। यह चार पृष्ठों का अख़बार था। प्रकाशक रामप्रसाद 'दिल' थे।

'आर्यावर्त' 5 अगस्त 1876 को शुरू हुआ। यह मराठी पत्र धूलिया से प्रति शनिवार प्रकाशित होता था। खानदेश के कवि और लेखक के.मो.पंडित सम्पादक थे। शंकर हरि जोशी भी कुछ समय सम्पादक रहे। राजनीति और सामाजिक समस्याओं पर पत्र में ज्यादा सामग्री दी जाती थी। लगभग 54 वर्ष तक यह पत्र चलता रहा। नारायण वासुदेव जोशी इसके अंतिम सम्पादक हुए। 'आर्य वैभव' नाम से पुनर्जीवित करके तुलसीदास गोविंद जोशी ने भी कुछ समय तक यह पत्र चलाया।

---

1. देहली गजट, 11 दिसम्बर, 1875
2. नासिर-उल-अखबार, 1 मार्च 1876

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठ पृष्ठीय साप्ताहिक *'बिहार पंच'* का प्रकाशन पटना से 26 नवम्बर 1876 को किया गया था। प्रकाशक मोहम्मद अक्सीर खां तथा सम्पादक नौरोज़ अली 'शैदा' थे। दैनिक *'अनीस-ए-बिहार'* का प्रकाशन पटना से 1876 में किया गया था। इसके स्वामी सैयद असग़र अली तथा सम्पादक सैयद फ़ज़ल करीम थे। मतबअ मुहम्मदी में छपता था। वार्षिक शुल्क अठारह रुपये था। यह चार पृष्ठों का उर्दू पत्र था।

बेलगांव में मुद्रण व्यवसाय के प्रवर्तक रावसाहेब आकाजीराव रामचंद्रराव सावंत ने सन 1876 में साप्ताहिक *'चिकित्सक'* शुरू किया। स्थानीय खबरों और घटनाओं को इसमें वरीयता दी जाती थी। पत्र के सम्पादक मंगेशराव तेलंग, मोरोपंत मराठे, कृष्णजीपंत दीक्षित आदि थे। सावंत की मृत्यु के बाद 'चिकित्सक' की जिम्मेदारी बी.ए. पवार एवं ए.पी. जाधव ने ली। परंतु कुछ समय बाद पत्र बंद हो गया। 'लोकमत' के वामनराव सावंत ने इसको पुनर्जीवित किया, परंतु अधिक समय तक नहीं चल पाया।

आठ पृष्ठीय साप्ताहिक *'जाम-ए-जमशेद'* का प्रकाशन 1876 में मुरादाबाद से हुआ। प्रत्येक शनिवार को आफ़ताब-ए-हिन्द प्रेस में छपता था। इसके प्रकाशक मुंशी सैयद क़ाजी जमशेद अली तथा सम्पादक सैयद मेहदी हसन थे। सन 1876 में *'तोहफ़ा-ए-कश्मीर'* का प्रकाशन श्रीनगर से किया गया। यह शनिवार को प्रकाशित होता था। इसके प्रकाशक राय सुखराय और सम्पादक मुंशी जमना प्रसाद थे।

'देहली गजट' के 18 जनवरी के अंक से पता चलता है कि मिर्जापुर के आर्यन स्कूल प्रेस से आंग्ल-हिन्दी मासिक पत्र *'आर्यन'* का प्रकाशन किया गया। इसमें धर्म, विज्ञान, राजनीति, इतिहास और सामाजिक जीवन पर लेख प्रकाशित किए जाते थे। सन 1876 में काशी से *'बनारस जर्नल'* का प्रकाशन हुआ। यह साप्ताहिक पत्र था। बाद में इसका नाम बदलकर *'कामन सेन्स'* कर दिया गया। उर्दू साप्ताहिक *'प्रिंस आफ वेल्स गज़ट'* का प्रकाशन कैम्प मेरठ से सन 1876 में किया गया था। आठ पृष्ठों का यह पत्र हर मंगलवार को निकाला जाता था। इसके प्रकाशक राय गणेशलाल, सम्पादक लाला खुशबख्त राय थे। वार्षिक शुल्क बीस रुपये था।

सन 1876 में नागपुर के लक्ष्मणराव कामाठी ने *'मणि प्रकाश'* पत्र शुरू किया। अल्पावधि में ही यह मराठी पत्र बंद हो गया। लखनऊ से आठ पृष्ठीय *'मंबा-उल-अहकाम'* का प्रकाशन सन 1876 में किया गया था। सम्पादक मुंशी खैरातीलाल 'ताहिर' थे। मतबा ख़ैरख़्वाह अवध में छपता था। वार्षिक शुल्क साढ़े चार रुपये था। यह विधि सम्बन्धी पाक्षिक था।

मुरादाबाद से सन 1876 में प्रकाशित चार पृष्ठीय साप्ताहिक *'रुहेलखंड पंच'* के प्रकाशक जमशेद अली तथा सम्पादक मेहदी हसन थे। आफताबे हिन्द प्रेस में मुद्रित होकर हर शनिवार को प्रकाशित किया जाता था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये बारह आना था।

दिल्ली से सन 1876 में पाक्षिक पत्रिका *'लिटन गजट'* का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था। इसके सम्पादक मुंशी बुलाक़ीदास थे। बाद में बाबू गणेशीलाल सम्पादक नियुक्त हुए। आठ पृष्ठ के इस पाक्षिक को मयूर प्रेस में मुद्रित कराया जाता था। इसका वार्षिक शुल्क छह रुपये था। यह पत्रिका सन 1913 तक प्रकाशित हुई। मुधोक संस्थान से 1876 में *'सन्मार्ग दर्शक'* नाम का पत्र निकला। पत्र लिथो प्रेस पर छपता था। *'मुधोल समाचार'* नाम का पत्र 1876 में निकलता था।

1876 में रोमन कैथलिक मिशनरियों ने धर्म प्रचार हेतु *'सत्यनाद कहलम्'* निकला। बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

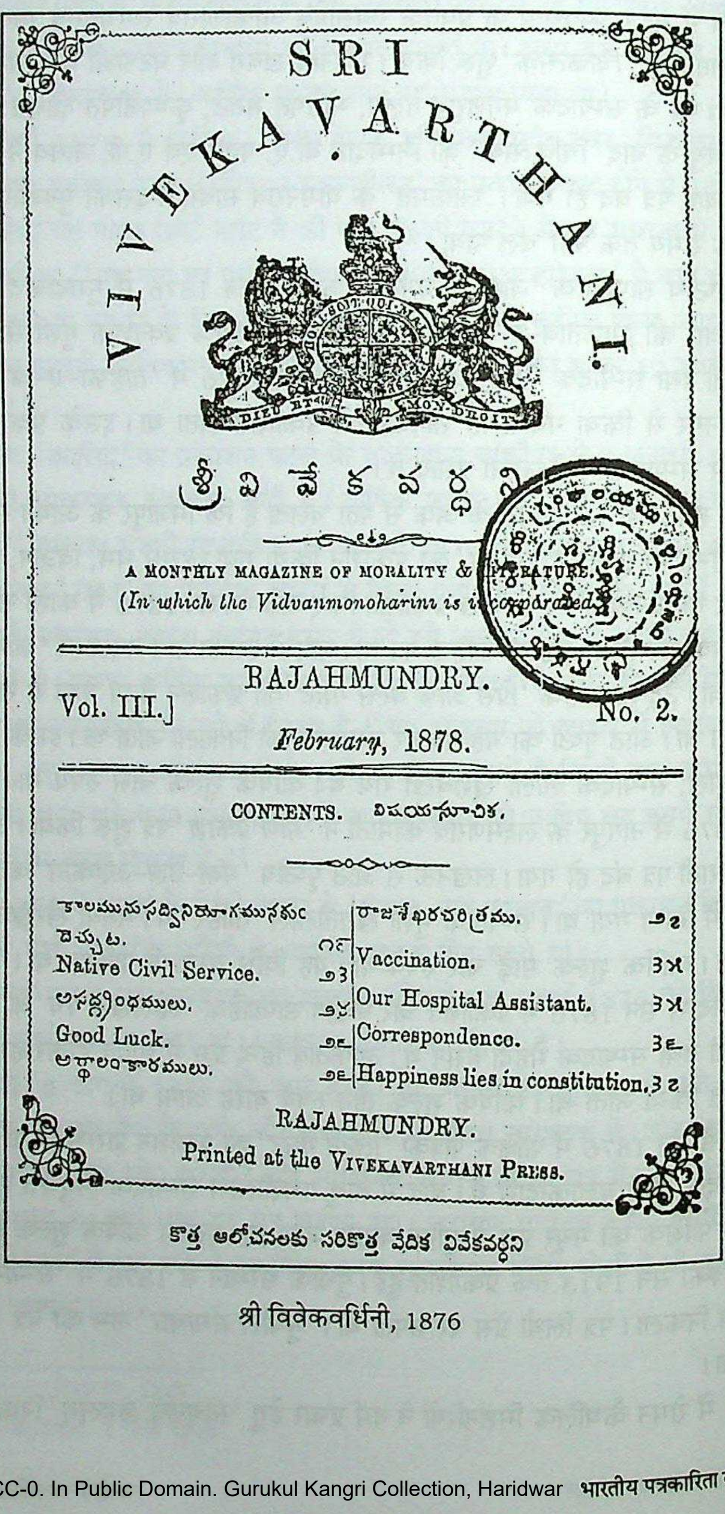

SRI
VIVEKAVARTHANI.

శ్రీవివేకవర్ధని

A MONTHLY MAGAZINE OF MORALITY & LITERATURE.
(In which the Vidvanmonoharini is incorporated.)

RAJAHMUNDRY.

Vol. III.] No. 2.

February, 1878.

CONTENTS. విషయసూచిక.

కాలమును సద్వినియోగమునకుం దెచ్చుట.	౧౯	రాజశేఖరచరిత్రము.	౨౭
Native Civil Service.	౨౩	Vaccination.	౩౫
అసద్గ్రంథములు.	౨౫	Our Hospital Assistant.	౩౫
Good Luck.	౨౮	Correspondence.	౩౬
అర్థాలంకారములు.	౨౮	Happiness lies in constitution.	౩౭

RAJAHMUNDRY.
Printed at the VIVEKAVARTHANI PRESS.

కొత్త ఆలోచనలకు సరికొత్త వేదిక వివేకవర్ధని

श्री विवेकवर्धिनी, 1876

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में इसका नाम 'सत्यनादम्' कर दिया गया। इर्नाकुलम से प्रकाशित मलयालम पाक्षिक के सम्पादक फादर लुइस थे।

मुम्बई से चार पृष्ठों के साप्ताहिक *'सैफ़-उल इस्लाम'* का प्रकाशन सन 1876 में प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक फ़तह मोहम्मद उर्फ नवाब थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। सन 1876 में *'सिंधुयुग्म'* नाम का साप्ताहिक रत्नागिरी से निकला। यह द्विभाषी पत्र मराठी और उर्दू में छपता था।

वर्ष 1876 में *'ज्ञानभानु'* का प्रकाशन हुआ। यह धार्मिक पत्रिका थी। इसके संस्थापक आनन सती थे। चेन्नै से प्रकाशित होने वाला यह तेलुगु मासिक पत्र था। सन 1876 में हिन्दी-पंजाबी में *'कवि चन्द्रोदय'* प्रकाशित हुआ। *'सांगली जिला गजट'* सन 1876 में निकला। मोढ़ी लिपि का प्रयोग करने वाला यह पहला पत्र था।

कंदकूरी वीरेशलिंगम ने जनवरी 1876 में राजमुन्दरी से तेलुगु मासिक *'विवेकवर्धिनी'* का सम्पादन-प्रकाशन किया। इस पत्र ने आंध्र के साहित्यिक और सामाजिक क्षेत्रों में नई चेतना जाग्रत की। कुछ समय बाद 'विवेकवर्धिनी' का प्रकाशन पाक्षिक किया जाने लगा। सन 1885 में यह साप्ताहिक हो गया।

1877

क़ैसर-उल अख़बार ए-हिन्द

साप्ताहिक *'क़ैसर-उल अख़बार ए-हिन्द'* का प्रकाशन इलाहाबाद से एक जनवरी 1877 को मुंशी सिराजउद्दीन अहमद खां ने किया था। हर इतवार को निकलता था। बारह पृष्ठ के इस पत्र का वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। एक नवम्बर 1877 से इसका प्रकाशन दैनिक कर दिया गया। खबरों में कभी-कभी कटाक्ष की झलक मिलती थी। एक उदाहरण- "अच्छी तरह इंसाफ तो शायद ही हो, क्योंकि एक मेम साहिबा मुद्दाअलिया होंगी सिवाये इसके दस या बारह औरतें और बच्चे हिन्दुस्तानी ज़ख्मी हुए हैं। दस पाँच हिन्दुस्तानियों का खून तो हर अँगरेज के लिए मुवाह है और इस मौक़े पर तो कोई हलाक़ नहीं हुआ।"[1]

सन 1877 में जब अँगरेजी समाचारपत्रों, उर्दू समाचारपत्रों पर विद्रोह तथा उपद्रवों को भड़काने वाले लेख एवं समाचार प्रकाशित करने का आरोप लगाते हुए प्रतिबंध लगाने की माँग की, तब 'क़ैसर-उल-अख़बार-ए-हिन्द' ने टिप्पणी की- "अब हम चंद वाक़्यात और उन पर उर्दू अख़बारों की बहस का ज़िक्र करते हैं जिसको यह अँगरेज अख़बार तरग़ीब फिसाद और बग़ावत ख्याल करते हैं। क्या अम्र लायक़ इसके नहीं है कि उर्दू अख़बार इस पर हर्फगीरी करें कि जब हिन्दुस्तानी, सिविल सर्विस का इम्तिहान दें और पास हो जाएं तो उनको ओहदे न मिलें और जब ओहदे भी बहज़ार दिक़्क़त मिलें तो वह बाद चंद ही अर्से के उनसे ख़्वाहमख़्वाह अलग किए जाएं। अगर जिले के हुक्काम चंद दर चंद ज्यादतियाँ और सरीह बेरहमियाँ बेकस हिन्दुस्तानियों पर करें और उर्दू अख़बार उस पर नुक्ताचीनी करें तो क्या यह फ़सादअंगेज़ी है? हाँ यह अलबत्ता फ़सादअंगेज़ी है के सबीले दाद ख्वाही का इंसेदाद किया जाए। बाबे अदालत रिआया पर बंद किया जाए, दादख्वाही सरकशी समझी जाए। अँगरेजी अख़बारों का यह मतलब है के हिन्दुस्तानी अँगरेजों को देवता समझें, तायेदारी में इस क़दर मुबालग़ा हो के इंसानियत से गुज़र जाएं। बड़े बड़े रईस आलीखानदान, साहिबे हुकूमत, छोटे छोटे अँगरेजों से सख़्त सख़्त

1. कैसर-उल-अखबार, 10 जनवरी 1878

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकलीफें और ज़िल्लतें उठाएं मगर दम न मारें वरना सरकशी और बेतहज़ीबी का इल्ज़ाम उन पर क़ायम हो।''[1] आगरा से एक जनवरी 1877 को *'चश्म-ए-इंसाफ'* प्रकाशित किया गया। इस साप्ताहिक पत्र में आठ पृष्ठ होते थे।

दीनबंधु

महात्मा ज्योतिबा फुले के प्रमुख सहयोगी कृष्णराव भालेकर ने *'दीनबंधु'* पत्र का प्रकाशन शुरू किया। पुणे में एक जनवरी 1877 को 'दीनबंधु' का पहला अंक निकला। छह माह बाद 'दीनबंधु' टाइप में निकालने लगा। भालेकर ने जब 'दीनबंधु' की जिम्मेदारी त्यागी तब सत्यशोधक समाज के कट्टर समर्थक और मुम्बई कामगार संगठन के प्रवर्तक नारायण मेघाची लोखंडे और रामजी संतुजी आवटे ने 'दीनबंधु' का दायित्व सम्भाला। सम्पादन की जिम्मेदारी लोखंडे की थी। उन्होंने पुणे छोड़ा और 9 मई 1880 को मुम्बई से 'दीनबंधु' का प्रकाशन किया। 'दीनबंधु' का वार्षिक शुल्क सवा रुपया था। सन 1897 में 'दीनबंधु' बन्द हो गया। सन 1905 के दशहरा से बड़ोदा नरेश सयाजीराव गायकवाड़ के समर्थन से दामोदर सावलराव यंदे और वासुदेव लिंगोजीराव बिर्जे ने 'दीनबंधु' को पुनर्जीवित किया। सन 1908 में बिर्जे बीमार हुए और उनका निधन हुआ। उनकी पत्नी तानुबाई ने कुछ वर्ष तक अच्छे ढंग से 'दीनबंधु' चलाया, परन्तु उनकी भी मृत्यु हो जाने पर 'दीनबंधु' बन्द हो गया। सन 1927 में डा. वि.मा. नवले ने 'दीनबंधु' पुणे से पुन: शुरू किया।

आगरा से आठ पृष्ठीय मासिक पत्रिका *'मैदन-उल-हिकमत'* का प्रकाशन एक जनवरी 1877 को हुआ था। प्रकाशक सादिक़ अली 'क़ैसर' थे। पत्रिका का वार्षिक शुल्क सवा रुपया था। यह चिकित्सा सम्बन्धी पत्रिका थी। कोलकाता से अर्द्ध साप्ताहिक *'मुहम्मदी'* का प्रकाशन एक जनवरी 1877 से किया गया था। यह द्विभाषी पत्र उर्दू और हिन्दी में छपता था। प्रकाशक मौलवी अब्दुल ख़ालिक थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये बारह आना था।

मुरादाबाद से तीन जनवरी 1877 को *'नैयर-ए-आज़म'* का प्रकाशन किया गया था। यह साप्ताहिक पत्र सोमवार को निकलता था। प्रकाशक मौलवी अमजद अली, सम्पादक क़ासिम अली 'जफा' तथा मुद्रक अशफाक़ अहमद थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। यह मतबअ-उल-उलूम में छपता था। इसके मुख्य कर्ताधर्ता मुंशी इब्ने अली 'नैयर' थे। वे अँगरेजी, फ़ारसी और अरबी भाषाओं के ज्ञाता थे। सन 1901 में उन्होंने पत्र का सम्पादन भार ग्रहण किया। इस दौरान पत्र की प्रसार सँख्या भी बढ़ी। बेबाक लेखन के कारण अख़बार मुकदमेबाजी में फँस गया, जो अन्तत: इसके अवसान का कारण बना।

पटना से जनवरी 1877 में साप्ताहिक *'नसीम-ए-सहर'* का प्रकाशन सैयद वजीर अली ने प्रारम्भ किया था। इसके सम्पादक सैयद मोहम्मद अली 'शाद' थे। प्रत्येक शुक्रवार को प्रकाशित होता था। आठ पृष्ठ के इस साप्ताहिक पत्र का मुद्रण मतअब सुबह सादिक में कराया जाता था। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। इलाहाबाद से एक मार्च 1877 को *'दबीर-ए-हिन्द'* का प्रकाशन किया गया था। यह 12 पृष्ठ का साप्ताहिक पत्र था। प्रकाशक मिर्ज़ा मोहम्मद हुसैन थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। 32 पृष्ठों की पाक्षिक पत्रिका *'अतालीक़ ज़मींदारान'* का प्रकाशन होशियारपुर से एक अप्रैल 1877 को किया गया था। प्रकाशक लाला नारायणदास वकील थे।

---
1. कैसर-उल-अखबार-ए-हिन्द, 16 सितम्बर 1877

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साप्ताहिक '*खुरशीद-ए-आलम*' का प्रकाशन लाहौर से एक जून 1877 को हुआ था। इसके सम्पादक मुंशी जियालाल तथा प्रकाशक मुंशी जगन्नाथ थे। आठ पृष्ठ का यह पत्र सोमवार को जारी किया जाता था। वार्षिक शुल्क चार रुपये दो आना था।

भारती

बंगला मासिक '*भारती*' का प्रकाशन द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर ने जुलाई 1877 में किया था। इसका सम्पादन रवीन्द्रनाथ टैगोर करते थे। 'भारती' में वे 'भानुसिंह' के नाम से कविताएँ, निबन्ध तथा आलोचनाएँ लिखा करते थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शेक्सपियर के 'मैकवैथ' का बंगला में पद्यानुवाद किया था, जो 'भारती' (1880-81) में प्रकाशित हुआ। मई 1881 में 'भारती' में धारावाहिक रूप से रवीन्द्रनाथ का नया उपन्यास 'बौ ठाकुरानीर हाट' प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। अक्टूबर 1884 में वे आदि ब्रह्म समाज के मन्त्री नियुक्त हुए। इसी समय उनका बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय से हिन्दुत्व के आदर्शों पर विवाद छिड़ गया। बंकिमचंद्र ने 'नवजीवन' और 'प्रचार' में इस सम्बन्ध में विचार प्रकट किए और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'भारती' में उनकी आलोचना की।

'जयाजी प्रताप'[1] में 'भारती' के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है-"श्रीमती सुवर्ण कुमारी देवी सहयोगी 'भारती' के सम्पादन कार्य से पृथक हो गई हैं। पत्र इस समय 39वर्ष का है। अब मुन्नीलाल गांगोली तथा सुरेन्द्रमोहन मुकर्जी ने सम्पादन कार्य सम्हाल लिया है।"

'श्रीमती सुवर्ण कुमारी देवी फिर सम्पादिका' शीर्षक से 'माधुरी'[2] ने लिखा- "स्वर्गीय श्रीराम भजदत्त चौधरी की धर्मपत्नी श्रीमती सुवर्ण कुमारी देवी बंगाल के सुप्रसिद्ध टैगोर परिवार की कन्या और सुशिक्षिता हैं। आप पहले सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'भारती' (बंगला) का संपादन बड़ी योग्यता के साथ करती थीं, अब फिर आपने उसके सम्पादन का कार्य अपने हाथ में लिया है। आपकी सम्पादकता में भारती का वैशाख का अंक बहुत सुंदर निकला है। इसमें संदेह नहीं कि आप भारतीय स्त्री-समाज के लिए गौरव स्वरूप हैं।"

'बंगला की सर्वप्रथम पत्र सम्पादिका का देहावसान' शीर्षक से सरस्वती[3] में खबर छपी- "अभी हाल में बंगला की सर्वप्रथम पत्र-सम्पादिका श्रीमती सुवर्ण कुमारी देवी का 75 वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया है। आप कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर की ज्येष्ठ भगिनी थीं। आपका अधिकांश जीवन साहित्य तथा समाजसेवा में ही व्यतीत हुआ है। बंगला के महिला-समाज में जो इतनी जागृति हुई है उसका बहुत कुछ श्रेय आपको ही है। आपने सन 1884 से 1895 तक और सन 1906 से 1920 तक 'भारती' जैसी उच्च कोटि की पत्रिका का बड़ी सफलता के साथ सम्पादन किया था।"

मुम्बई से '*अख़्तर-ए-हिन्द*' का प्रकाशन 18 अगस्त 1877 को किया गया था। यह चार पृष्ठ का साप्ताहिक पत्र था, जो मतबअ-क़ासिद में छपवाकर प्रत्येक शुक्रवार को प्रकाशित किया जाता था। पत्र के प्रकाशक गुलाम अली थे।

महादेव बल्लाल नामजोशी ने मुम्बई से साप्ताहिक '*किरण*' निकाला था। इसके प्रकाशन में केशव बल्लाल साठे और अण्णा साहेब पटवर्धन का सहयोग था। 'किरण' का पहला अंक

1. जयाजी प्रताप, 28 अप्रैल 1915
2. माधुरी, 1924
3. सरस्वती, 1932

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

26 अगस्त 1877 को प्रकाशित हुआ। 'किरण' में अग्रलेख, जरूरी सूचनाएँ, समाचार के साथ-साथ व्यापार सम्बन्धी समाचार, बाजार भाव, शास्त्रीय कला पर भी सामग्री होती थी। सन 1877-78 के अकाल के समय 'किरण' ने अकाल का सत्य चित्र लोगों और सरकार के सम्मुख पेश किया। सन 1878 में भाषायी अखबारों पर शिकंजा कसने वाला कानून लागू हुआ, परन्तु 'किरण' साफगोई के मार्ग पर चलता रहा। आर्थिक संकट के कारण यह पत्र अल्पावधि में बंद हो गया।

लखनऊ से एक सितम्बर 1877 को साप्ताहिक *'सरपंच-ए-हिन्द'* प्रकाशित किया गया था। इसके प्रकाशक मुंशी अम्बिका प्रसाद तथा सम्पादक अब्दुल ग़नी थे। प्रत्येक गुरुवार को आठ पृष्ठों का यह अख़बार मजमूउल उलूम प्रेस से छपकर जारी होता था। शुल्क सात रुपये था।

'मुशीर-ए-क़ैसर' 14 पृष्ठों का साप्ताहिक पत्र था। इसका प्रकाशन लखनऊ से एक सितम्बर 1877 को किया गया था। हर बुधवार को प्रकाशित होता था। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। इसके प्रकाशक एवं सम्पादक मौलवी गुलाम मोहम्मद खां 'तपिश' थे। बहरुल उलूम प्रेस में मुद्रित होता था। देश-विदेश के समाचारों के अतिरिक्त ऐतिहासिक तथा साहित्यिक लेख प्रकाशित किये जाते थे। तपिश पहले 'अवध अख़बार' के सम्पादक के पद पर काम कर चुके थे। लेकिन वैसी चमक 'मुशीर-ए-क़ैसर' में पैदा नहीं हो सकी।

पाक्षिक *'सत्यप्रकाश'* का पहला अंक 6 सितम्बर 1877 को मुम्बई से प्रकाशित हुआ। रेऊबेन अब्राहमजी कोरलेकर सम्पादक थे। सन 1884 तक चले इस पत्र में ज्यू धर्म ग्रंथ के कठिन अंशों का मराठी भावार्थ दिया जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता बम

हिन्दी प्रदीप

'हिन्दी प्रदीप' की स्थापना हिन्दी-प्रचार के उद्देश्य से हुई थी। सन 1875 में इलाहाबाद में हिन्दी वर्धिनी सभा की स्थापना हुई। संस्था के सदस्यों ने एक वर्ष तक हिन्दी प्रदीप का प्रकाशन करने का निश्चय किया और इसकी व्यवस्था के लिए चन्दा जमा किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र उन दिनों प्रयाग आए थे। उन्होंने पत्र के प्रकाशन में सहायता का आश्वासन दिया तथा सम्पर्क के लिए 'कवि वचन सुधा' के ग्राहकों की सूची भी भेजी। पत्र के सम्पादक बालकृष्ण भट्ट कायस्थ पाठशाला में संस्कृत के अध्यापक थे।

सितम्बर 1877 में 'हिन्दी प्रदीप' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसमें विचारोत्तेजक लेख और आलोचनात्मक टिप्पणियाँ प्रकाशित होती थीं। सात महीने बाद सन 1878 का वर्नाक्युलर प्रेस एकट पारित हो गया, जिसके अंतर्गत फिरंगी सरकार ने भारतीय भाषाओं के समाचारपत्रों पर अंकुश लगाने का अधिकार हासिल कर लिया। 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक और व्यवस्थापक को जिला मजिस्ट्रेट की अदालत में चक्कर काटने पड़े। जिन छात्रों के उत्साह से 'हिन्दी प्रदीप' का आरम्भ हुआ था, वे भी कन्नी काटने लगे। अन्ततः हिन्दी वर्धिनी सभा ने 'प्रदीप' को बन्द करने का निर्णय ले लिया, तब बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' की पूरी जिम्मेदारी स्वयं सम्हाल ली।

'हिन्दी प्रदीप' के मुख पृष्ठ पर ''विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास, साहित्य, दर्शन, राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में हर महीने की पहली को छपता है'', अंकित रहता था। इसके नीचे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित चार पंक्तियाँ प्रकाशित की जाती थीं-

''शुभ सरस देश सनेह पूरित, प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों, मणि दीप समथिर नहिं टरै।।
सूझै विवेक विचार उन्नति, कुमति सब या में जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै।''

'हिन्दी प्रदीप' देशोपकारक यंत्रालय से छपता था। इसका शुल्क अग्रिम तीन रुपये छह आने तथा बाद में देने वाले से चार रुपये छह आना लिया जाता था। संस्थाओं, पुस्तकालयों और विद्यार्थियों के लिए अग्रिम शुल्क एक रुपये दस आना था। 'हिन्दी प्रदीप' के कव्हर पृष्ठ रंगीन होते थे। पृष्ठ की लम्बाई 23.5 से.मी. और चौड़ाई 15 से.मी. थी। अप्रैल 1891 में यह सरस्वती यंत्रालय से छपने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

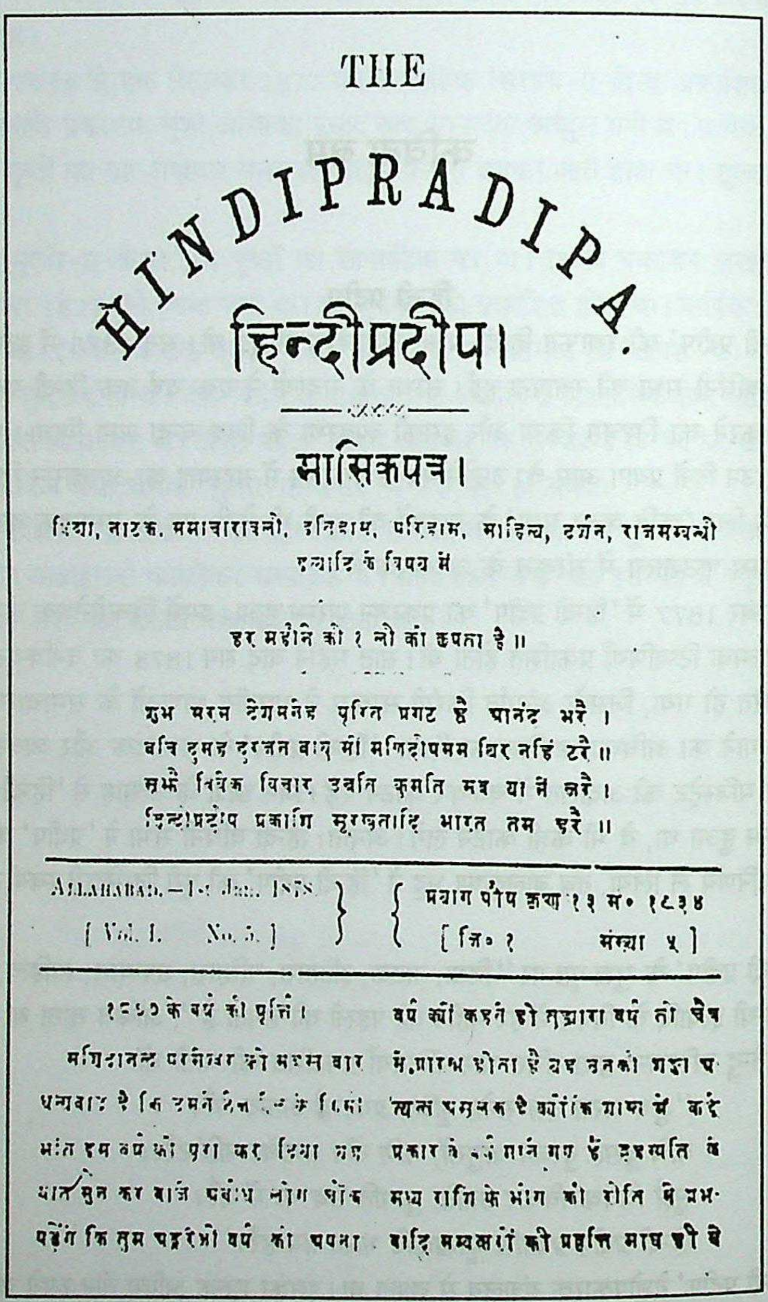

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है ॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट है आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st Jan. 1878. [Vol. I. No. 5.]

प्रयाग पौष कृष्ण १३ सं० १८३४ [जि० १ संख्या ५]

१८७७ के वर्ष की पूर्ति ।

सच्चिदानन्द परमेश्वर को सहस्र बार धन्यवाद है कि हमने [illegible] भांति इस वर्ष को पूरा कर लिया [illegible] [illegible] सुन कर बाजे [illegible] लोग [illegible] पढ़ेंगे कि तुम पहले भी वर्ष का अपना वर्ष क्यों कहते हो तुम्हारा वर्ष तो चैत्र में प्रारम्भ होता है यह उनको शङ्का प[illegible] [illegible] है क्योंकि शास्त्र में कई प्रकार के [illegible] माने गए हैं बृहस्पति के मध्य राशि के भोग की रीति से प्रभ- वादि संवत्सरों की प्रवृत्ति माघ ही से

हिन्दी प्रदीप, इलाहाबाद, सितम्बर 1877

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हिन्दी प्रदीप' के 14 वर्ष पूर्ण होने पर बालकृष्ण भट्ट ने लिखा- ''हमारे 14 वर्ष उस तरह नहीं बीते कि येनकेन किसी तरह दूसरों का उच्छिष्ट जूठा लेख लिखाय भरती का पत्र पूरा कर दिया गया हो, वरन् प्रथम अंक से आरम्भ कर आज तक कोई ऐसे अंक नहीं निकले जिस्में पाठकों के मन को विनोद देने वाली कुछ न कुछ सारगर्भित वस्तु न रही हो- यदि हमारे पढ़ने वालों का छोह हम पर ऐसा ही बना रहा, दूसरे यह कि देश काल कृत कोई कराल दुर्घटना का असर जो सम्पादकों के लिए इन दिनों बहुत अधिक सुलभ है, विशेषकर ऐसे नाजुक वक्त में जब बिन-बिन कर कुटिल काल एडीटरों को कलेवा करने के लिए मुस्तैद हो रहा है- इत्यादि दुर्घटनाओं से बचे रहे तो दूसरा भी एक ऐसा ही पन्द्रह वर्ष बिता देना कौन सा अचरज है....''

हिन्दी के पाठकों द्वारा खरीद कर नहीं पढ़ने की मनोवृत्ति पुरानी है। प्राय: सभी पत्रों को घाटा सहना पड़ता था। बारम्बार शुल्क भेजने की प्रकाशित की जाती थी। जब 'हिन्दी प्रदीप' ने 15 वर्ष पूरे कर लिए तब सितम्बर 1892 के अंक में शुल्क न भेजने वालों को सम्पादक ने फटकार लगाई- ''हम उन महाशयों को फिर भी धन्यवाद देते हैं और निसन्देह हम उनके एहसानमन्द हैं जो करावलम्ब की भाँति दो ही एक बार में माँगने में मूल्य भेज देते हैं पर उन चाण्डाल महापतियों को कौन सी उपाधि दें जो बरसों तक बराबर पत्र गटकते गए, माँगते-माँगते हैरान हो गए मूल्य न पाया, सांगता की भाँति दो आने और लगाए बी.पी. भेजा सो भी लौट आया तब उनके नाम सियापा गाय चुप हो बैठ रहे- विदित रहे हम आपसे पत्र किसी के पास नहीं भेजते जब तक माँग न आवै, जबसे उन बेईमानों का यह हाल देखा गया तो हमने भी यह नियम कर लिया कि अपरिचित नए लोगों को नमूने की एक कॉपी भेज चुप हो बैठ रहते हैं- हिन्दी के ऐसे भक्त और सच्ची चाह रखने वाले हैं कहाँ? जो केवल नमूने की कापी मात्र से प्रसन्न हो तत्काल मूल्य भेज पत्र लेने लगे, हरामी पिल्लों की जथा अलबत्ता जुदी है, जिनका मनसूबा यही रहता है कि साल भर पत्र लेने के उपरान्त निबुआ नोन चटा देंगे- चालाकों की इस चालबाजी से खिन्न हो हमने भी यही ठान लिया कि ग्राहकों की नामावली पतली और दुर्बल पड़ जाएगी बला से बिना पहले ही खूब ठोंक बजाय पत्र किसी को न देंगे।''

इलाहाबाद नगरपालिका में हिन्दी के प्रयोग की माँग उठाते हुए 'हिन्दी प्रदीप' ने लिखा था- ''सोचने से यही मन में आता है कि म्युनिसिपेल्टी या लोकल बोर्ड का जो कुछ है वह सब रियाया का है, जिसे सरकार पहले खुद करती रही पर-आत्मशासन-प्रणाली (लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट) की बुनियाद इस देश में जमाने के लिए उसे प्रजा को सौंप दिया- म्युनिसिपेल्टी की जान चुंगी में है जिसके देने वाले मुख्य कर महाजन दूकानदार सौदागर हैं जिनके बहीखाते बीजक चिट्ठी-पत्री आदि सब महाजनी और हिन्दी में रहते हैं- तो उर्दू म्युनिसिपेल्टी के दफ्तरों को क्यों सब ओर से आक्रमण किए हैं- यदि यह कहा जाए अदालतों में उर्दू जारी है- तो इसका उत्तर यही हो सकता है कि अदालत गवर्नमेंट चाहे तो सींग अपने माथे पर जमाले, हमें क्या पड़ी जो मना करें? हमारा कुछ दावा है- हमारे निज का हक हमें क्यों न दिया जाए- उर्दू अक्षरों के कारण चुंगी का महसूल देना अथवा फेर लेना व्यापारियों को कितना कष्टदायी होता है। कभी-कभी तो और का और पढ़ लिया जाता है- ऐसे अन्याय नागरी के स्वच्छ अक्षरों के प्रचलित होने से मिट जाएंगे जो लिखा रहेगा, वही पढ़ा जाएगा और सब तरह की आसानी होगी।''

'हिन्दी प्रदीप' ने हिन्दी को जातीय बनाने का बीड़ा उठाया था- ''यदि देश का कुछ भी अभिमान हमको है तो ऐसा उपाय हमें शीघ्र करना चाहिए कि जिससे हमारी एक जातीय भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाए यहाँ पर हमें अवश्य कहना चाहिए कि यद्यपि जातीय भाषा हम लोगों की कोई नहीं परन्तु जातीय अक्षर है और जो कोई हमारी जातीय भाषा कभी होवेगी इसके अक्षर भी वे ही होने चाहिए जिनमें कि इस समय जातीयता है- वे अक्षर देवनागरी के हैं- और भारतवर्ष की वर्तमान भाषाओं में एक भाषा भी ऐसी है, जो इन उक्त अक्षरों में लिखी जाती है और वह भाषा ईश्वर की कृपा से हिन्दी है-और फिर यह भी है कि हिन्दी थोड़ी बहुत भारतवर्ष के सब भागों में बोली जाती है। दूसरे हमारी समझ में तो यही आता है कि यदि भारतवर्ष की कोई जातीय भाषा होगी तो वह वही हमारी प्यारी सर्वगुण आगरी-नागरी ही होगी और यथार्थ में इसी को ऐसा बनने का अधिकार है। ......शिष्ट और मानवीय पुरुषों की झुकावट इधर होनी चाहिए।''

कोई नया चलन होने पर उसके पक्ष-विपक्ष में बहस-विवाद का उठना स्वाभाविक है। नल जल योजना की शुरूआत में ऐसी ही बहस छिड़ी।

''सर आकलैण्ड कालविन और वाटरवर्क्स[1]

''हमारे लेफ्टिनेंट गवर्नर सर आकलैण्ड कालबिन साहब वाटरवर्क्स के पींछे बड़ी बदनामी उठा रहे हैं- कितने इस्के विरुद्ध भी हैं वे बजाय निंदा के उनकी इस काम के लिए प्रशंसा कर रहे हैं हम आज चाहते हैं कि इस बात को तै कर डालें कि कौन पार्टी ठीक और उचित कह रही है और उनके ऐसा कहने की दलीलें क्या हैं। एंग्लो इंडियन अख़बार तो यही कहते हैं कि यह काम जो उनकी हुकूमत का आखिरी काम है अत्यंत ही प्रशंसा योग्य है।' वे कहते हैं यहाँ के निवासियों का तो यह स्वभाव ही है कि किसी नई बात के जारी होने पर ये लोग बहुत भड़कते हैं जिसका कारण ये एंग्लो इंडियन यह बतलाते हैं कि यहाँ के लोग अभी सभ्यता में उतना आगे नहीं बढ़े हैं कि किसी नई बात को देख जिस्में जरा भी अकिल को जोर देने से तरक्की की गई है जारी होने से न भड़कें। पहले पहल इस देश में जब रेल चलाई गई तब लोगों ने क्या-क्या नहीं तूमार बाँधा और अजीब चंडूखाने की सी गप्पें उड़ी और दिहात के लोग तो बहुत दिनों तक इससे भड़का किए। नुकसान भी इतना हुआ कि सैंकड़ों जंगल कट कर उजाड़ दिए गए लाखों बिगहा खेत का नुकसान हुआ। इस्से कुछ संदेह नहीं रेल से प्रजा का थोड़ा सा नुकसान अवश्य हुआ पर अन्त को लाभ जो इस्से हुआ उसे हठधर्मी से चाहे कोई न माने किन्तु नुकसान से फायदा जरूर रेल के जारी होने से ज्यादह है इसी तरह यद्यपि अभी इस कल के पानी को लोग कम पसन्द करते हैं और इस्के कारण टैक्स देने का भी थोड़ा सा क्लेश सहना पड़ा है परन्तु आगे चलकर जब इस्का सुख लोग उठाएंगे तो इस्के फाइदे के आगे नुकसान को भूल जाएंगे।''

'हिन्दी प्रदीप' हिन्दी का ऐसा पहला पत्र है, जिसे एक राष्ट्रीय कविता छापने के कारण तीन हजार रुपये की जमानत न देने पर पत्र का प्रकाशन बन्द कर देना पड़ा। भारतीय पत्रकारिता पर सरकारी दमन के दो क़ानून अत्यन्त बदनाम रहे। एक था वर्ष 1878 का भारतीय भाषा प्रेस कानून (वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट) और दूसरा 1908 का भारतीय प्रेस (अपराध उत्तेजना) अधिनियम। इन दोनों कानूनों में सरकार को उन समाचारपत्रों से, जिन्हें वह आपत्तिजनक समझती हो, जमानत माँगने का अधिकार दिया गया था और यदि जमानत न दी जाए तो पत्र बन्द करना पड़ता था। बालकृष्ण भट्ट को 'हिन्दी प्रदीप' चलाने के लिए दोनों अधिनियमों का सामना करना पड़ा। दूसरे अधिनियम के कारण इस पत्र को जिसे भट्टजी ने अपनी 31 वर्ष की तपस्या से सींचा

---

1. हिन्दी प्रदीप, जुलाई 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, बन्द करना पड़ा।

'हिन्दी प्रदीप' के बन्द होने का कारण माधव शुक्ल की कविता 'बम क्या है?' बनी थी। वह कविता थी-

''कुछ डरो न केवल इसमें बुद्धि भरम है।
सोचो यह क्या है जो कहलाता बम है।
यह नहीं स्वदेशी आन्दोलन का फल है।
नहीं बायकाट अथवा स्वराज्य की कल है।।
जब-जब नृप अत्याचार महा करते हैं।
और प्रजा दुखी चिल्लाते ही रहते हैं।।
नहीं दीनों की जब कहीं सुनाई होती।
तब इतिहासों की बात सत्य ही होती।।
माधव कहता, यह किसका बुरा करम है।
सोचो यह क्या है जो कहलाता बम है।।''

'हिन्दी प्रदीप' से 3000 रुपये की जमानत माँगी गई जो दे पाना संभव नहीं था। तब तक प्रदीप को निकलते हुए 31 वर्ष हो चुके थे। बालकृण भट्ट की आँखों में मोतियाबिन्द हो जाने के कारण उन्हें दिखना बन्द हो गया था। 'हिन्दी प्रदीप' समय से नहीं निकल पा रहा था। पत्र का चल पाना कठिन हो गया। अन्ततः 1908 में इसे बन्द करना पड़ा।

लखनऊ से साप्ताहिक *'बोस्तान-उल-आशक़ीन'* का प्रकाशन सात दिसम्बर 1877 को किया गया था। आठ पृष्ठों का था। प्रकाशक बाबू मूलराज तथा सम्पादक लाला माधवप्रसाद थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। सन 1877 में मेरठ से *'अफज़ल-उल-अख़बार'* प्रकाशित हुआ। आठ पृष्ठों का अख़बार बुधवार को निकलता था। प्रकाशक हाफ़िज़ मोहम्मद अकबर तथा सम्पादक मुंशी अब्दुल समद खां थे। वार्षिक शुल्क साढ़े चार रुपये था।

अवध पंच

लंदन की हास्य व्यंग्य पत्रिका 'पंच' की तर्ज पर लखनऊ से सन 1877 में उर्दू का *'अवध पंच'* प्रकाशित हुआ। वैसे इसी तर्ज़ पर सन 1855 में रामपुर से 'मज़ाक' निकला था, लेकिन जो शोहरत 'अवध पंच' को मिली वह किसी अन्य को नहीं। सन 1859 में चेन्नै से 'मद्रास पंच', सन 1876 में मुम्बई से 'फरहत-उल अहबाब', फिर मुरादाबाद से 'रुहेलखण्ड पंच' और पटना से 'बिहार पंच' निकले। इसी श्रृंखला की अगली कड़ी में 'अवध पंच' सामने आया।

'अवध पंच' के सम्पादक मुंशी सैयद मोहम्मद सज्जाद हुसैन थे। फौज से उर्दू अध्यापक की नौकरी छोड़ कर उन्होंने 1877 में 'अवध पंच' का प्रकाशन शुरू किया। यह 35 वर्ष अर्थात सन 1912 तक प्रकाशित होता रहा। मिर्जा मच्छू बेग ने, जिनका असली नाम मोहम्मद मुर्तज़ा था, 'सितम ज़रीफ़' के नाम से एक नियमित स्तम्भ 'अवध पंच' में 33 वर्ष तक लिखा। नवाब सैयद मोहम्मद आज़ाद के उपन्यास 'नवाबी दरबार' का प्रकाशन 'अवध पंच' में हुआ, और वे हास्य-व्यंग्य के लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। अवध पंच की नीति के आधार बिन्दु थे- (1)हिन्दू-मुस्लिम एकता, (2)भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन, (3)अँगरेजी हुक्मरान तथा देशी शासकों के कामकाज की समालोचना, (4)पश्चिमी सभ्यता का विरोध और (5)स्व-शासन की पहल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

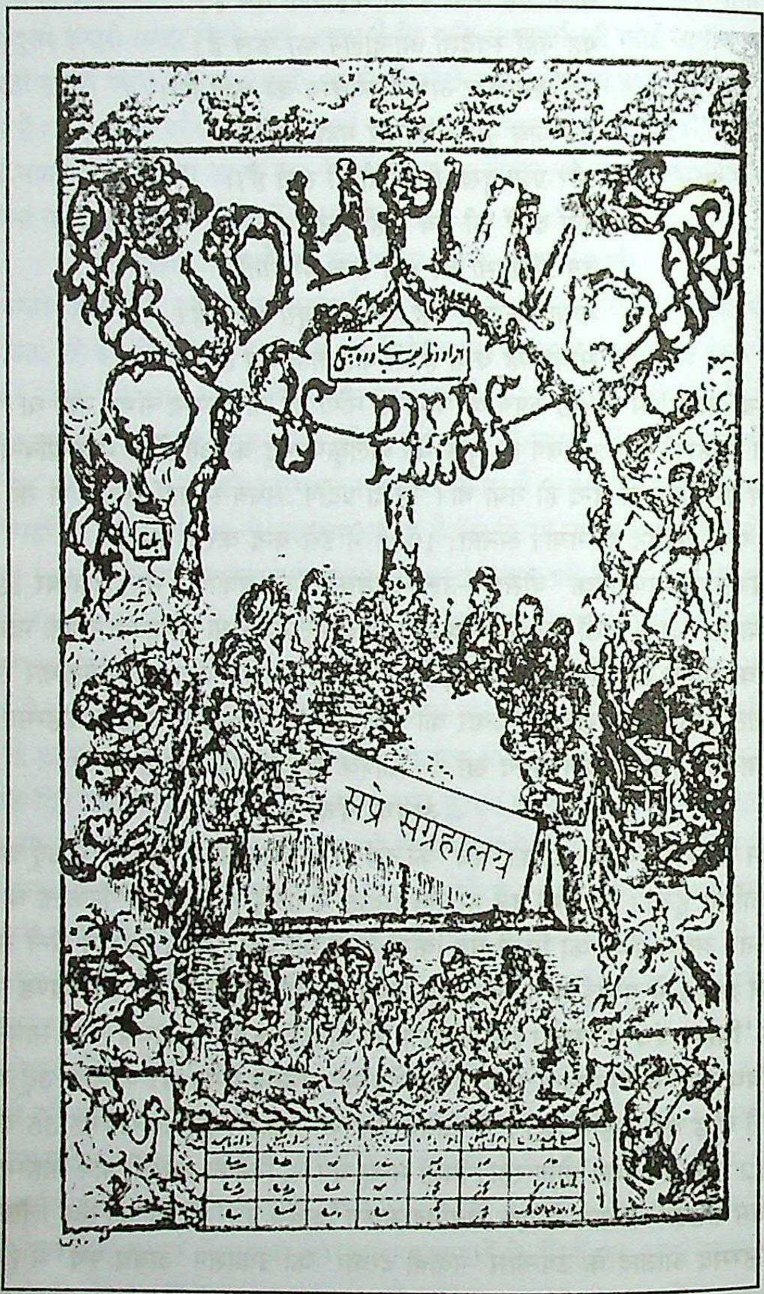

अवध पंच, लखनऊ, सन 1877

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अवध पंच' की सामाजिक भूमिका का विश्लेषण करते हुए 'उर्दू अदब में तन्ज़ोमिज़ाह' में वज़ीर आग़ा ने लिखा है- ''अवध पंच अपने जमाने की इंक़िलाबी तब्दीलियों के खिलाफ रद्देअमल के तौर पर जारी हुआ था। यह वह जमाना था के 1857 के हंगामे ने ज़िंदगी से शुगुफ़्तगी आसाइश छीन ली थी और उसके चेहरे पर संजीदगी की त्यौरियाँ पैदा कर दी थीं। सियासी, समाजी और अदबी माहौल में संजीदगी और इन्हिमाक का दौर दौरा था। इंतहापरस्ती अपने जोबन पर थी और ऐसा मालूम होता था गोया हर शख़्स इस तूफानी बहाव के साथ एक तिनके की तरह बहता चला जाएगा। ऐसे में 'अवध पंच' ने खुद को रोक कर उसके हाथ में एक आईना थमा दिया। 'अवध पंच' ने क़ौम के तूफानी दरिया को किनारों से छलकने और यूँ तबाही और बर्बादी फैलाने से वरवक़्त रोकने की इन्तहाई कोशिश की और इस दरिया से तन्ज़ोज़राफत की बेशुमार छोटी नहरें निकाल कर उसकी तुग़यानी में धीमापन पैदा करने का क़ाबिले रश्क़ काम सरंजाम दिया।''

ब्रजनारायण चकबस्त लिखते हैं- ''अवध पंच' जराफ़त का सरचश्मा था और आम तौर पर लोग इसके फिकरों और लतीफों पर लोट रहते थे। जो फब्ती इसमें निकल जाती थी, महीनों ज़बान पर रहती थी और दूर दूर तक मशहूर हो जाती थी।''

'अवध पंच' की लेखनी और शैली का परिचय निम्नांकित उद्धरण से बखूबी मिल जाता है- ''मुबारक वह काले जो सताए जाते हैं क्योंकि आसमान की राहत उन्हीं के वास्ते है। मुबारक वह जो सिविल सर्विस के लिए रंजीदा हैं क्योंकि सरकार से ज़बानी तसल्ली दी जाएगी। मुबारक वह जो क़हत के भूके प्यासे हैं क्योंके पादरियों की बदौलत मसीही मज़हब से मुशर्रिफ होंगे। मुबारक वह जो संगदिल हैं क्योंके बाज़ खुशामदी अख़बार रहमदिल कहेंगे। मुबारक वह जो रास्तबाज़ी के लिए धमकाए जाते हैं क्यों के उनके सच्चाई के दरख़्त की जड़ मज़बूत हो जाएगी।''[1]

ऐसी ही एक और टिप्पणी ''क्यों यारो क्या इरादा है? सुना है रूस चढ़ा चला आता है कहो कुछ हाथ पाँव हिलाओगे या मुँह की खाओगे। यार हम तो अपनी सरकार पर निसार होने को मौजूद हैं मगर क्या करें सिपहगिरी के फन हम भूल गये। चंद हथियारों के नाम सुने हैं। शक्ल नहीं देखी। कोसने देने को अब भी मोजूद हैं- मुए ख़ोजे पेशे यहाँ क्यों आते हैं। इलाही उनके पाँव कट जाएँ। इलाही उनकी बंदूकों में कीड़े पड़ें। इलाही यह अपने जिन्दड़े जान से जाएं जो हमारे अमन में ख़लल डालने को आएं।''[2]

50 गुणित 25 से.मी. आकार के आठ पृष्ठों के इस अख़बार में हर पृष्ठ पर तीन कालम और हर कालम में 35 पंक्तियाँ होती थीं। इसके मुख पृष्ठ पर अँगरेजी में ध्येय वाक्य छापा जाता था- ''लाइफ इज प्लेजर''। अँगरेजी में 'अवध पंच' का नाम इस तरह मुद्रित किया जाता था कि उसके हर शब्द से एक कार्टून बनता था। एक छोटी पट्टी में पत्र के क्रय नियम छपते थे। एक बाक्स में उर्दू में लिखा होता था- 'आज़ाद ज़रीफ़ अवध पंच'। अन्दर के पृष्ठों में पहले लेख, फिर गज़लें और शेर छपते थे। समाचार छापने के लिए दो स्तम्भ शीर्षक प्रयोग में लाए जाते थे- 'लोकल' शीर्षक के अन्तर्गत मनोरंजक ढंग से स्थानीय खबरें दी जाती थीं और अंत में 'तारवर्की' शीर्षक के तहत राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय समाचार प्रकाशित किए जाते थे। अंदर

1. अवध पंच, 11 सितम्बर 1877
2. वही, 17 मार्च 1877

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के पृष्ठों में भी कार्टून दिए जाते थे। कभी कभी पूरे पृष्ठ का कार्टून छपता था। 'अवध पंच' ने उर्दू पत्रकारिता को हास्य व्यंग्य की चुलबुली भाषा दी। प्रभावशाली अभिव्यक्ति के लिए कार्टूनों को माध्यम बनाया।

गारसां दतासी ने अपनी पुस्तक हिन्दुस्तानी ज़बान व अदब सन 1877 के अंतिम पृष्ठों में लिखा है ''कुछ नए हिन्दुस्तानी समाचारपत्रों के नाम रह गए थे उन्हें अब लिखता हूँ। *'अख़्तर-ए-हिन्द'* भोपाल से निकलता है।''

मुंशी बख़्तावर सिंह ने शाहजहाँपुर से *'आर्यभूषण'* निकाला था। सन 1877 में प्रकाशित यह पत्र स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों का प्रतिपादक था।

मासिक *'कलीद इम्तिहान मिडिल स्कूल व इंट्रेंस'* का प्रकाशन गुजरांवाला से सन 1877 में किया गया था। यह 24 पृष्ठों का था। सम्पादक महबूब आलम थे। ख़ादिम-उल-तस्लीम प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था।

दिल्ली से सन 1877 में *'ज़िया-उल-इस्लाम'* निकला। दस दिन के अंतराल से 8 पृष्ठों का यह पत्र प्रकाशित किया जाता था। इसके प्रकाशक सैयद मीर हसन रिज़वी तथा सम्पादक शहज़ादा मिर्ज़ा अब्दुल ग़नी 'अरशद' थे। रिज़वी प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

16 पृष्ठों के साप्ताहिक *'दबदबा-ए-क़ैसरी'* का प्रकाशन सन 1877 में बरेली से किया गया था। प्रत्येक सोमवार को प्रकाशित होता था। इसके प्रकाशक बाबू रुद्र सहाय, प्रबन्धक मुंशी ठाकुर प्रसाद तथा सम्पादक मौलवी इंतिज़ाम अली थे। क़ैसरी प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क सात रुपये था।

मासिक पत्रिका *'धर्म-प्रकाश'* का प्रकाशन गुजरांवाला से सन 1877 में हुआ। 16 पृष्ठ की इस पत्रिका के सम्पादक मुंशी ब्रजलाल थे। ज्ञान प्रेस में छपती थी एवं वार्षिक शुल्क एक रुपया दो आना था। 28 जनवरी 1886 से साप्ताहिक के रूप में कस्बा संभल से भी निकलने लगा। 10 पृष्ठ के इस पत्र के प्रकाशक गौर सहाय अग्रवाल तथा सम्पादक मुंशीधर थे। इसका वार्षिक मूल्य छह रुपये चौदह आना था। कन्हाड से *'पंचानन'* नाम का पत्र सन 1877 में निकला।

सन 1877 में पं. मुकुन्दराम के सम्पादन में प्रकाशित *'मित्र विलास'* अपने समय का अच्छा मासिक पत्र था। सन 1898 में इसकी प्रसार सँख्या 500 थी। यह सनातनी पत्र था। इसने 'भारतेन्दु सम्वत्' प्रचलित करने का प्रयत्न किया था। चार पृष्ठों के इस मासिक का वार्षिक शुल्क साढ़े तीन रुपये था। 'मित्र विलास' सन 1900 तक निकलता रहा।

सन 1877 में बाबू तोताराम ने अलीगढ़ से *'भारत बंधु'* का प्रकाशन आरम्भ किया। हर शुक्रवार को प्रकाशित होने वाले इस पत्र के शीर्षक पर संस्कृत का एक श्लोक अंकित रहता था और उसके नीचे यह आदर्श वाक्य छापा जाता था-

''विद्या बुधि नय नीति त्रय पावन परम उदार,
दिन दिन 'भारत बंधु' यह करत देश उपकार।''

इस साप्ताहिक पत्र में साहित्य, विज्ञान, समाचार, राजनीति विषयक सामग्री दी जाती थी। इसका वार्षिक मूल्य साढ़े सात रुपये था। यह पत्र सन 1895 तक निकला। 'भारत बंधु' में सरकार की गलत रीति-नीति के खिलाफ टिप्पणी की जाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1877 में *'मीडिएटर'* नाम का आंग्ल-मराठी पाक्षिक अलीबाग से निकला था। धार्मिक पत्रिका *'रायबारी'* का प्रकाशन सन 1877 में हुआ। ईसाई मिशनरी द्वारा प्रकाशित यह तेलुगु मासिक चागल्लू से निकलता था।

खंडवा से सन 1877 में 'रेलवे समाचार' निकला। यह हिन्दी, उर्दू तथा मराठी भाषाओं का पत्र था। इसमें रेलवे की समय सारणी तथा अन्य सम्बंधित जानकारियाँ एवं विज्ञापन प्रकाशित किए जाते थे। यह पत्र सन 1886 में बंद हुआ।

चेन्नै से सन 1877 में रामचन्द्र अय्यर ने *'मद्रासी'* का प्रकाशन किया। कुछ ही दिनों में यह पत्र विवाद में फँस गया और पत्रिका का अवसान हो गया। सन 1877 में मिर्ज़ा काज़िम गाज़ी ने उर्दू पत्र *'खुर्शीद दकन'* का प्रकाशन किया। यह एक वर्ष तक निकला। इसी समय सदासुख लाल ने चुनार से *'नागरी पत्रिका'* निकाली।

1878

नसीम-ए-आगरा

एक जनवरी 1878 को मुंशी सोहनलाल के प्रबंध में *'नसीम-ए-आगरा'* का प्रकाशन हुआ। इसका वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। साप्ताहिक के रूप में प्रकाशन के पूर्व इसे हर दसवें दिन आठ पृष्ठों में निकाला जाता था। देश विदेश के समाचारों के प्रकाशन के साथ-साथ यह ईसाई मिशनरियों द्वारा किए जा रहे छल कपट का भंडाफोड़ करता था।

एक जनवरी सन 1878 को छपरा से साप्ताहिक *'नसीम-ए-सारन'* का प्रकाशन हुआ। अमृतसर से *'मजलिस-ए-अखलाक़िया'* प्रत्येक दसवें दिन-महीने की 2, 12 और 22 तारीखों को प्रकाशित किया जाता था। इसका प्रकाशन एक जनवरी 1878 से प्रारम्भ हुआ। बिशनदत्त राय सम्पादक और मौलवी शाह विलायत प्रकाशक थे। चश्मा-ए-नूर प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये तेरह आना था।

साप्ताहिक *'सफ़ीर-ए-हिन्द'* का प्रकाशन एक जनवरी 1878 को अमृतसर से किया गया था। इसमें 16 पृष्ठ होते थे। 'सफ़ीर-ए-हिन्द' प्रेस में छप कर शनिवार को प्रकाशित होता था। वार्षिक शुल्क तेरह रुपये था। संपादक पादरी रज्जब अली थे। उन्होंने कई पत्र निकाले थे। उनकी पत्रकारिता के कौशल के बारे में मुंशी दीन साहब 'फ़ौक' ने लिखा है- ''पादरी रज्जब अली मरहूम जिनका रिसाला 'पंजाब रिव्यू' ग़ालिबन सबसे पहला आला दर्जे का अदबी रिसाला था- निहायत क़ाबिल अहले क़लम थे। ईसाइयों में वह पहले शख़्स थे जिनको उर्दू की लिट्रेरी पब्लिक में इस क़दर रसूख़ और विक़ार हासिल था। हिन्दुस्तान में बहुत कम लोग उनकी बराबरी कर सकते थे।''

'अहसन-उल-अख़बार' का प्रकाशन हाजी मोहम्मद कबीर उल हक़ ने इलाहाबाद से 6 जनवरी 1878 को किया था। समकालीन समाचारपत्रों की तुलना में किताबत और छपाई अच्छी थी। इसकी नीति मध्यमार्गी थी। संभवत: इसका कारण सन 1878 में वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट लागू होना था। पत्र टीका-टिप्पणी करने से बचता था। उर्दू के समाचारपत्रों और प्रेसों ने क़ानून से बचने के लिए अख़बार के आधे भाग में अँगरेजी मजमून छापना प्रारम्भ कर दिया था। अखबार का एक नमूना- ''लायसेंस टैक्स के विरुद्ध व्यापारियों ने काफ़ी गड़बड़ मचाई। टैक्स के नोटिसों को उखाड़ कर कुओं में डाल दिया तथा लोगों ने विरोध में प्रदर्शन किया और पुलिस को बेबस कर दिया। चार दिनों तक शहर में पूर्ण हड़ताल रही। एक अँगरेज मजिस्ट्रेट का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपमान किया गया, एक व्यक्ति मारा गया तथा कई घायल हुए।''[1] यह समाचार इसलिए उल्लेखनीय है, क्योंकि उन दिनों इस प्रकार का प्रदर्शन नई घटना थी।

अहसन-उल-अख़बार की.ख़बरों का एक और उद्धरण-

''सबसे बड़ा गुब्बारा

''फ्रांस की राजधानी पेरिस में एक इतना बड़ा गुब्बारा बनाया गया है जिसमें पाँच आदमी बैठकर आसमान की सैर कर सकते हैं। यह गुब्बारा सब गुब्बारों से बड़ा बना है। इसलिए अजायबात (आश्चर्यों) में दाखिल है।''[2]

15 जनवरी 1878 को द्विभाषी पाक्षिक *'काशी पत्रिका'* बनारस से प्रकाशित हुई। 32 पृष्ठ की इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क छह रुपये बारह आना था। बालेश्वर प्रसाद इसके सम्पादक-प्रकाशक और रामानंद प्रबंधक थे। सन 1882 में 'काशी पत्रिका' का प्रबंध लक्ष्मी प्रसाद मिश्र ने सम्भाला, तब यह साप्ताहिक पत्र के रूप में निकलने लगा। इसकी भाषा हिन्दी और उर्दू थी। चन्द्रप्रभा प्रेस से हर शुक्रवार को इसका प्रकाशन होने लगा। दाम भी बढ़ाकर सात रुपये दस आना कर दिया गया। इस पत्रिका को सरकार की सहायता प्राप्त थी, कई वर्ष तक निकलने के बाद सरकार का संरक्षण हटने के कारण यह बंद हो गई।

'मजमुआ नज़ायर-ए-हिन्द' विधि सम्बन्धी मासिक पत्रिका थी। इसका प्रकाशन गया जिले के क़स्बा साहबगंज से 30 जनवरी 1878 को किया गया था। इसके प्रबन्ध सम्पादक हरिसुन्दर बोस थे। इसमें 24 पृष्ठ रहते थे। इसको मतबअ गुलदस्ता नज़ायर में मुद्रित कराया जाता था। वार्षिक शुल्क छब्बीस रुपये था। पत्रिका में कोलकाता, इलाहाबाद, चेन्नै तथा मुम्बई हाईकोर्ट की लॉ रिपोर्ट का उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया जाता था।

विधि सम्बन्धी मासिक पत्रिका *'नज़ायर कानून-ए-हिन्द'* जनवरी 1878 में इलाहाबाद से प्रकाशित हुई थी। इसमें 48 से 100 पृष्ठ तक होते थे। प्रबन्ध सम्पादक लाला शंभुदयाल थे जो इसे नज़ायर क़ानून-ए-हिन्द प्रेस में छापते थे। वार्षिक शुल्क पच्चीस रुपये चार आना था। बारह पृष्ठीय साप्ताहिक *'आसिफ-उल-अख़बार'* का प्रकाशन हैदराबाद से एक फरवरी 1878 को किया गया था। इसके प्रकाशक नारायण स्वामी थे। मुफ़ीद-ए-आम प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क नौ रुपये था।

लाहौर से यूनानी उपचार पद्धति सम्बन्धी मासिक पत्रिका *'हाफिज़-ए-सेहत'* का प्रकाशन एक फरवरी 1878 को किया गया था। इसमें आठ पृष्ठ होते थे। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक हकीम गुलाम नबी थे। पंजाबी·प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क एक रुपया चौदह आना था। पत्रिका में स्वास्थ्य के लिए भोजन, वस्त्र, स्वप्न, निद्रा सहित उन उपायों का वर्णन रहता था जो मौसम बदलने के समय किए जाना चाहिए। साधारण बीमारियों के लक्षण, उनकी पहचान तथा उपचार सम्बन्धी जानकारी दी जातीं थी।

---

1. अहसन-उल-अखबार, 14 मार्च 1878
2. वही, 7 अप्रैल 1878

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवशम्भु के चिट्ठे

1878

भारत मित्र

कोलकाता से प्रकाशित होने वाले '*भारतमित्र*' ने हिन्दी भाषियों को दुनियाभर की हलचलों से अवगत कराने के लिए सम्पूर्ण अख़बार की अवधारणा को कार्यरूप में परिणित किया। 'भारतमित्र' की नीति थी ''समाचारपत्र प्रजा का प्रतिनिधि स्वरूप होता है।''

दुर्गाप्रसाद मिश्र ने छोटूलाल मिश्र के सहयोग से 'भारतमित्र' का प्रकाशन 17 मई 1878 को आरम्भ किया। 'भारतमित्र' शुरू में दो पन्नों का छपता था। 'भारतमित्र' का प्रकाशन पाक्षिक पत्र के रूप में हुआ। प्रवेशांक में 'भारतमित्र' ने नीति वक्तव्य में कहा- ''समाचारपत्रों से जो उपकार होता है, वो बंबई और बंगाले को देखने से साफ जान पड़ेगा, इसलिए इस विषय में बहोत लिखने का कुछ प्रयोजन नहीं है, क्योंकि जहाँ तक जिस देश में जिस भाषा में और जिस समाज में समाचारपत्र का चलन नहीं है तब तक उसकी उन्नति की आशा भी दुराशा मात्र है, कारण ये वो चीज है कि जिस घर में कोठड़ी भीतर बैठ के सारी दुनिया को हथेली पर देखलो अर्थात् भूमण्डल में जहाँ जो कुछ विशेष बात होती है वो इसी के द्वारा प्रकाश होती है और अपना दुःख-सुख प्रधान राज्याधिकारियों को सुनाने और प्रार्थना करने का ये ही मुख्य उपाय है यदि समाचारपत्र नहीं होय तो राजा को अपने प्रजा का कुछ हाल नहीं मालूम हो सके ऐसी दशा में राज्य शासन भी अच्छी तरह से नहीं हो सकता इसीलिए प्रजा हितैषी राजा लोग समाचारपत्रों को स्वाधीनता दे के उत्साहित करते हैं।

''इस्से राजा प्रजा दोनों को सुख प्राप्त होता है, कारण राजा को बिना परिश्रम वेतन के संसार के दूत मिल जाते हैं जो सर्वदा राजा को नाना तरह की खबरों से सावधान किया रहे हैं और प्रजा को राजा तक अपना कष्ट और अभाव के निवेदन कर्ने का मुख्य उपाय और सुगम रास्ता यही है, क्योंकि समाचारपत्र प्रजा का प्रतिनिधि स्वरूप होता है और मुख्य तो हृदय संस्कार करने को जैसा ये समर्थ है वैसा तो और कोई भी नहीं है।

''प्रथम तो समाचारपत्र राज्य का प्रधानमंत्री और मध्यस्थ होता है, दूसरे वाणिज्य का तो जीवन स्वरूप है, जो कुछ वाणिज्य की उन्नति और बढ़ती दिखाई देती है वो इसी के प्रसाद से है, क्योंकि आजकल हिन्दुस्तान में सबसे बढ़कर वाणिज्य की उन्नति बंबई वालों ने करी है, यद्यपि कलकत्ता राजधानी है, और वाणिज्य भी होता है तो भी नफा और लाभ उन्हीं लोगों को है जिनकी भाषा में समाचारपत्र प्रचलित हैं। यहाँ के वनज व्योपार में जितना लाभ अँगरेज यहूदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक भारतमित्र।

सामाहिक भारतमित्र।

The Dainik Bharatamitra

सप्रे संग्रहालय भोपाल

कलकत्ता।

रोगियोंका सूचना

दैनिक भारत मित्र, कोलकाता, 17 मई 1878

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारस लोगों को होता है इसका क्या कारण है? हमारी समझ से तो खबर का कागज ही इसका प्रधान कारण है। क्योंकि इस द्वारा देश देशान्तर के माल का भाव और आमदनी रफ्तनी की खबरों से माल की स्थिति और (इस्टाक) जानने से और सब देश और समय की घटना मालूम होने से वाणिज्य का भविष्यत अनुमान होय है, और तदनुसार काम करने से विशेष लाभ होना संभव है।

''तीसरे इसे प्राय कृतविद्य देशहितैषी लोग अपने-अपने चित्त का भाव लिख के प्रकाश करते हैं उस द्वारा बिना पूछे भी अच्छे लोगों की परामर्श और सलाह मिलती है।

''चौथे इसमें बहोत से ऐसे विषय रहते हैं जिस्को पा मनुष्य बहुदर्शी और गुणवान हो जाते हैं। इसलिए उनको सभी काम सुगम हो जाए हैं और क्रम से उन्नति होके बहोत लाभ होता है।

''परन्तु बड़े दु:ख का विषय है कि ऐसा उपकारी और देशहितकारी समाचारपत्र हिन्दुस्तान की राजधानी जो कि अब कलकत्ता है इसमें हिन्दुस्तानी महाजनों के पढ़ने लायक कोई भी नहीं है इससे लोगों की बहोत हानी होती है।

''बड़े आश्चर्य की बात है कि आज तक ऐसा कोई समाचारपत्र नहीं प्रचारित हुआ जिससे हियां के हिन्दुस्तानी लोग भी पृथ्वी के दूसरे लोगों की तरह अपने अक्षर अपने बोली में पृथ्वी की समस्त घटना को जान सकें क्या यह बड़ी पछतावे की बात नहीं है जबकि इस 19वीं सदी में बंगाली तथा अन्यान्य जाति के आदमी अपनी-अपनी बोली में केवल एक समाचारपत्र की उन्नति से विद्या में ज्ञान में दिन दिन उन्नत हुए जाते हैं और हमारे हिन्दुस्तानी भाइ केवल अज्ञान खटिया पर पैर फैलाए हुए पड़े हैं और ऐसा कोई नहीं जो इनको उस खटिया पर से उठा के ज्ञान की किरण उनके अन्त:करण में प्रकाश करे बहोत दिनों से हम आशा कर्ते थे कि कोई विद्वान बहुदर्शी आदमी इस अभाव को दूर कर्ने की चेष्टा करेंगे परन्तु यह आशा परिपूर्ण न हुई।

''इस आशा के परिपूर्ण न होने से और बहोत से हिन्दुस्तानियों को सांसारिक खबर जानने के लिए बंगालियों का मुँह ताकते देखकर हमारे चित्त में यह भाव उत्पन्न हुआ कि यदि एक ऐसा समाचारपत्र प्रचलित हो कि जिसको हमारे हिन्दुस्तानी और मारवाड़ी लोग अच्छी तरह से पढ़ सकें और समझ सकें तो इससे हमारे समाज की अवश्य उन्नति होगी।

''दूसरे कई एक मित्रों ने भी हमको इस भारी काम को कर्ने की परामर्श दी और उन्हीं की परामर्श से हमने इसको सर्वसाधारण के समीप भेजने के लिए स्थिर किया। ''किन्तु एक बार यह चिन्ता हमारे चित्त को उत्साहित कर्ती थी दूसरी बार यह चित्त में आता था कि इस भारी काम में प्रवृत्त होना हमारे ऐसे अयोग्य और मूर्ख का केवल सर्वसाधारण के आगे अपनी हँसी कराना है परन्तु अंत को कई एक मित्रों की सहायता से और सर्वसाधारण की सहायता पाने की आशा से हम इस भारतमित्र को सर्वसाधारण के पास प्रेरणा कर्ते हैं (और जिसमें सब आदमी इसको ले सकें इसलिए इसका मूल्य केवल दो पयसा है) अब सब से हमारी यह प्रार्थना है कि इस भारतमित्र को अपना देशी समझ कर ग्रहण करें।''[1]

पाक्षिक 'भारतमित्र' दसवें अंक के बाद साप्ताहिक हो गया और हर गुरूवार को प्रकाशित होने लगा। इसके संचालक दुर्गा प्रसाद मिश्र और सम्पादक छोटूलाल मिश्र एवं हरमुकुंद शास्त्री थे। 'रायल' आकार के इस अख़बार का मूल्य कोलकाता शहर में वार्षिक डेढ़ रुपया और बाहर साढ़े तीन रुपये था। अख़बार पर डाक महसूल पहले आधा आना था, परन्तु

1. भारत मित्र, 17 मई 1878

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लार्ड रिपन ने एक पैसा कर दिया। अतः बाहरी ग्राहकों के लिए वार्षिक शुल्क घटाकर ढाई रु. कर दिया गया। 'भारतमित्र' में विचारपरक आलेख, राजनीतिक टिप्पणियाँ, कोलकाता शहर और दुनिया के ताजे समाचार, तार से प्राप्त खबरें, कोलकाता के बाजारों के भाव और सरकारी रेलवे कम्पनी तथा सौदागरों के नोटिस छपते थे। प्रमुख व्यक्तियों के चित्र भी छापे जाते थे।

विज्ञापन के मामले में 'भारतमित्र' भाग्यशाली रहा। साप्ताहिक 'भारतमित्र' में विज्ञापन की दरें इस प्रकार थीं- दो माह तक प्रति हफ्ता प्रति पंक्ति- एक आना, छह माह तक प्रति हफ्ता प्रति पंक्ति- दो पैसा, नौ माह तक प्रति हफ्ता प्रति पंक्ति- एक पैसा तथा साल भर तक प्रति हफ्ता प्रति पंक्ति- एक पैसा। उस जमाने में विज्ञापनों की तकनीक बिल्कुल भिन्न थी। बाबू देवकीनंदन खत्री के प्रसिद्ध उपन्यास-चंद्रकान्ता के विज्ञापन का नमूना दृष्टव्य है-

"चन्द्रकान्ता

"आज तक पाठकों ने बहुरूपियों के नाम सुने होंगे। मगर वे कैसे होते हैं क्या फ़न जानते हैं इसको बहुत कम लोग जानते हैं- किसी जमाने में वे लोग अय्यार कहलाते थे। दर्बारों में रहकर बात-बात में इनाम व इज्जत पाते थे- बिना लड़े-भिड़े राजाओं की लड़ाई खतम कर देते थे, इसका हाल इस उपन्यास में पूरे तौर से लिखा गया है। सिवाय इसके पहाड़ी के घाटियों, दर्रो जंगल की पूरी-पूरी छटा (सीनरी) दिखलाई है, अभी तक हिन्दी में इस जोड़ की कोई पुस्तक नहीं छपी है, इसके बनाने वाले बाबू देवकीनंदन खत्री हैं। देखने से मालूम होगा कि इस पुस्तक में क्या काम किया। मैं और कुछ न कहूँगा, सुहबत से चालाकी को राजदर्बारों के कायदे को कूट-कूट के भरे हैं। दाम-कम। (आठ आना डाक में-)

पन्नालाल कम्पनी
मोहल्ला लाहोटी टोला
बनारस सिटी"

19 दिसम्बर 1878 से डिमाई आकार के दो पन्नों का 'भारतमित्र' पूर्ण चन्द्रोदय प्रेस में मुद्रित होने लगा। एक वर्ष में कई स्थानों पर संवाददाताओं की व्यवस्था हो गई। आठ मई 1879 से 'भारतमित्र' अपने प्रेस में छपने लगा और पृष्ठ सँख्या चार हो गई।

सन 1879 में सदानन्द मिश्र ने 'सार सुधानिधि' के प्रकाशन का निश्चय किया। उस समय तक दुर्गाप्रसाद मिश्र 'भारतमित्र' से पृथक हो चुके थे। वे 'सार सुधानिधि' में सहयोगी हो गए। 'भारतमित्र' की गणना अच्छे समाचारपत्र के रूप में होने लगी थी। पठनीय सामग्री और भाषा की दृष्टि से पत्र उत्कृष्ट था। लेकिन विज्ञापन की अधिकता से पठनीय सामग्री की कमी खलने लगी थी।

छोटूलाल मिश्र ने, जो 'भारतमित्र' के आदि सम्पादक और जन्मदाता थे, सन 1883 तक 'भारतमित्र' का अवैतनिक सम्पादन किया। 1884-85 में हरमुकुन्द शास्त्री इसके वैतनिक सम्पादक नियुक्त किए गए, जिन्होंने दो वर्ष तक बड़ी कुशलता से 'भारतमित्र' का सम्पादन किया। पश्चात जगन्नाथ चतुर्वेदी सम्पादक और प्रबन्धक बनाए गए। 14 सितम्बर 1887 से अमृतलाल चक्रवर्ती ने सम्पादन का दायित्व सम्हाला। वे सन 1889 के अन्त तक इस पद पर रहे। जनवरी 1890 में राधाकृष्ण चतुर्वेदी सम्पादक नियुक्त हुए। 12 मार्च 1891 से रामदास वर्मा 'भारतमित्र' के सम्पादक बने। वे इसके पहले लखनऊ से मासिक 'दिनकर प्रकाश' निकालते थे, जिसका 'भारतमित्र' में विलय कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालांतर में अख़बार बाबू जगन्नाथ दास के प्रबंधन में आ गया और 1913 में भारतमित्र लि. कम्पनी के बनने तक रहा। रुद्रदत्त शर्मा सम्पादक बने, जो 10 वर्ष तक इस पद पर रहे। उनका भाषा पर अच्छा अधिकार था।

रुद्रदत्त शर्मा के बाद राधाकृष्ण चतुर्वेदी एक बार फिर सम्पादक बने। उनके पश्चात प्यारेलाल ने यह दायित्व सम्हाला और जब वे वकालत पढ़ने के लिए ब्रिटेन चले गए, तब ब्रह्मानन्द को सम्पादक नियुक्त किया गया।

साप्ताहिक 'भारतमित्र' ने सबसे चुनौतीपूर्ण काम यह किया कि हुंडियों का रात को होने वाला भुगतान बंद करवा दिया था। कोलकाता में महाजनों की हुंडियों का भुगतान रात 12 बजे तक होता था। बैंक भी रात को भुगतान मँगाया करता था। इससे कोठियों के कर्मचारियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था। रात को लूट और जमादार या बैंक के हरकारों या रकम लाने वाले आदमियों की जान जाने तक का डर बना रहता था। बंगाल बैंक के बड़े मुंशी शिवगोपाल तिवारी के सहयोग से 'भारतमित्र' इस आंदोलन में सफल हो सका। सन 1894 में 'भारतमित्र' के आंदोलन के फलस्वरूप पानी का जुआ सरकार ने बंद करा दिया। पानी बरसने अथवा नहीं बरसने का जुआ अफीम चौरस्ते पर होता था और बहुत से लोग इसमें तबाह हो जाते थे।

'भारतमित्र' ने 'लड़ाई की खबर' नाम से विशेष दैनिक परिशिष्ट का प्रकाशन एक अप्रैल 1895 को किया। इसका उद्देश्य स्पष्ट किया गया, ''यद्यपि साप्ताहिक पत्रों से युद्ध के थोड़े बहुत समाचार मालूम हो जाते हैं, परन्तु यह सब पुराने और सारांश मात्र मिलते हैं, क्योंकि हफ्तेवार अख़बार में उन सब समाचारों का ज्यों का त्यों छपना असम्भव है। इस ही कारण हमने हर रोज 'भारतमित्र' का विशेष पत्र छापने का प्रयास किया है। इसमें प्रतिदिन के तार समाचार वैसे ही हिन्दी भाषा में छपा करेंगे जैसे अँगरेजी पत्रों में छपते हैं। इसके सिवाय दलाल और व्यापारियों के सुबीते के वास्ते प्रतिदिन का बाजार दर भी इसमें छपा करेगा। नगद दाम एक पत्र का एक पैसा। अग्रिम मासिक छह आने मात्र है। मुफस्सिल के ग्राहकों को बारह आने मासिक देने से यह दैनिक पत्र प्रतिदिन डाक द्वारा प्राप्त हो सकता है। मैनेजर, भारतमित्र 222 नं. हरीसन रोड बड़ा बाजार कलकत्ता।

सन 1897 में 'भारतमित्र' को दैनिक समाचारपत्र का स्वरूप दिया गया। साप्ताहिक 'भारतमित्र' का प्रकाशन भी पूर्ववत जारी रहा। लेकिन विज्ञापनों के अभाव में दैनिक संस्करण छह महीने से ज्यादा नहीं चल सका। तदनन्तर एक जनवरी 1898 से फिर चार पृष्ठ का दैनिक पत्र शुरू हुआ, लेकिन एक जनवरी 1899 को दैनिक 'भारतमित्र' बंद कर दिया गया। इस दैनिक का वार्षिक मूल्य बारह रुपये था। पाठकों से अपेक्षित ग्राहक सहयोग नहीं मिल सका।

बालमुकुन्द गुप्त ने 'हिन्दी बंगवासी' से इस्तीफा दिया। 'भारतमित्र' के संचालक जगन्नाथ दास ने उन्हें बुला कर पत्र के सम्पादन का दायित्व सौंप दिया। 'भारतमित्र' राजनीति प्रधान पत्र था, तथापि गुप्तजी ने भाषा, व्याकरण, व्यंग्य, लेखादि लिखकर उसे एक सम्पूर्ण पत्र की प्रतिष्ठा प्रदान की। 'भारतमित्र' को लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाने वाले सम्पादक बालमुकुन्द गुप्त का कार्यकाल 16 फरवरी 1899 से 14 सितम्बर 1907 तक रहा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रभृति महापुरुषों के लेख 'भारतमित्र' में छपा करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव शम्भू के चिट्ठे' के रूप में 'भारतमित्र' में छपे गुप्तजी के आलेख धारदार व्यंग्य के कालजयी उदाहरण हैं। लार्ड कर्जन शिवशम्भू के चिट्ठे का अँगरेजी अनुवाद सुनता था। शिव शम्भू के चिट्ठे की पहली किस्त के कुछ अंश-

''बनाम लार्ड कर्जन

''आपने माई लार्ड! जबसे भारतवर्ष में पधारे हैं, बुलबुलों का स्वप्न ही देखा है या सचमुच कोई करने योग्य काम भी किया है? आपकी भारत में स्थिति की अवधि के पाँच वर्ष पूरे हो गये। अब यदि आप कुछ दिन रहेंगे तो सूद में, मूलधन समाप्त हो चुका। हिसाब कीजिये नुमाइशी कामों के सिवा काम की बात आप कौनसी कर चले हैं और भड़कबाजी के सिवा ड्यूटी और कर्तव्य की ओर आपका इस देश में आकर कब ध्यान रहा है? इस बार के बजट की वक्तृता ही आपके कर्तव्य काल की अन्तिम वक्तृता थी. जरा उसे पढ़ तो जाइये फिर उसमें आपकी पाँच साल की किस अच्छी करतूत का वर्णन है? आप बारम्बार अपने दो अति तुमतराक से भरे कामों का वर्णन करते हैं। एक विक्टोरिया मेमोरियल हाल और दूसरा दिल्ली दरबार। यह दोनों काम 'शो' हुए या 'ड्यूटी'? पहला तो चन्द पेट भरे अमीरों के एक-दो बार देख आने की चीज होगा। उससे दरिद्रों का कुछ दुःख घट जावेगा या भारतीय प्रजा की कुछ दशा उन्नत हो जावेगी, ऐसा तो आप भी न समझते होंगे।

''अब दरबार की बात सुनिये कि क्या था? आपके ख्याल से वह बहुत बड़ी चीज था। पर भारतवासियों की दृश्टि में वह बुलबुलों के स्वप्न से बढ़कर कुछ न था। जहाँ-जहाँ से वह जुलूस के हाथी आये, वहीं वहीं सब लौट गये, जिस हाथी पर आप सुनहली झूलें और सोने का हौदा लगवा कर छत्र-धारण-पूर्वक सवार हुए थे, वह अपने कीमती असबाब सहित जिसका था, उसके पास चला गया। आप भी जानते थे कि वह आपका नहीं और दर्शक भी जानते थे कि आपका नहीं। दरबार में जिस सुनहरी सिंहासन पर विराजमान होकर आपने भारत के सब राजा महाराजाओं की सलामी ली थी, वह भी वहीं तक था और आप स्वयं भलीभाँति जानते हैं कि वह आपका न था। -यह सब चीजें खाली नुमायशी थीं। जिस पद पर आप आरूढ़ हुये वह आपका मौरूसी नहीं-नदी नाव संयोग की भाँति है। आगे भी कुछ आशा नहीं कि इस बार छोड़ने के बाद आपका इससे कुछ सम्बन्ध रहे। किन्तु जितने दिन आपके हाथ में शक्ति है, उतने दिन कुछ करने की शक्ति भी है। जो कुछ आपने दिल्ली आदि में कर दिखाया उसमें आपका कुछ भी न था, पर वह सब कर दिखाने की शक्ति आप में थी। इसी प्रकार जाने से पहले, इस देश के लिये कोई असली काम कर जाने की शक्ति आप में है। इस देश की प्रजा के हृदय में कोई स्मृति-मंदिर बना जाने की शक्ति आप में है। पर यह तब हो सकता है कि वैसी स्मृति की कुछ कदर आपके हृदय में भी हो। स्मरण रहे कि धातु की मूर्तियों के स्मृति चिन्ह से एक दिन किले का मैदान भर जायेगा, महारानी का स्मृति मन्दिर मैदान की हवा रोकता था या न रोकता था, पर दूसरों की मूर्तियां इतनी हो जावेंगी कि पचास-पचास हाथ पर हवा को टकरा कर चलना पड़ेगा। जिस देश में लार्ड लैसडौन की मूर्ति बन सकती है उसमें और किस किस की मूर्ति नहीं बन सकती। माई लार्ड! क्या आप भी चाहते हैं कि उसके आसपास आपकी वैसी ही मूर्ति खड़ी हो? यह मूर्तियाँ किस प्रकार की स्मृति चिन्ह है? इस दरिद्र देश के बहुत से धन की एक ढेरी है, जो किसी काम नहीं आ सकती।''

'शिव शम्भू के चिट्ठे' के अलावा 'शाइस्ता खां के खत' और 'टेसू' के माध्यम से भी गुप्तजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के करारे राजनीतिपरक व्यंग्य भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन को मुखर बनाने में प्रेरक सिद्ध हुए। 'कर्जन फुलर' शीर्षक 'टेसू' दृष्टव्य है-

''नानी बोली टेसूलाल, कहती हूँ तुझसे सब हाल।
मास नवम्बर कर्जन लाट, उलट चले शासन की खाट।
किया मातरम् बंदे बंद, और सभायें रोकी चंद।
जोर स्वदेशी का दबवाया, जगह जगह पर लठ चलवाया।''

'भारतमित्र' में गुप्तजी के जो तीखे व्यंग्य प्रकाशित हुए हैं वे बेजोड़ थे। इसी का एक उद्धरण 'मेले का ऊँट' यहाँ प्रस्तुत है- ''भारतमित्र' सम्पादक। जीते रहो-दूध बताशे पीते रहो। भांग भेजी सो अच्छी थी, फिर वैसीही भेजना। गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्रमें टटोलते हुए 'मोहनमेले' के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आपकी दृष्टि पर अफसोस हुआ। पहली बार आपकी बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई! आपकी दृष्टि गिद्ध की सी होना चाहिये, क्योंकि आप सम्पादक हैं। किन्तु आपकी दृष्टि गिद्ध की सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की सी निकली जिसने ऊँचे आकाश में चढ़े-चढ़े भूमि पर एक गेहूँ का दाना पड़ा देखा, पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न सूझा। यहाँ तक कि उस गेहूँ के दाने को चुगने से पहले जाल में फँस गया।

''मोहनमेले में आपका ध्यान दो पैसे की एक पूरी की तरफ गया। न जाने आप घर से कुछ खाकर गये थे या यों ही। शहर की एक पैसे की पूरी के मेले में दो पैसे हों तो आश्चर्य न करना चाहिये, चार पैसे भी हो सकते थे। यह क्या देखने की बात थी? तुमने व्यर्थ बातें बहुत देखीं, काम की एक भी तो देखते? दाईं ओर जाकर तुम ग्यारह सौ सतरों का एक पोस्टकार्ड देख आये पर बाईं तरफ बैठा हुआ ऊँट भी तुम्हें दिखाई न दिया। बहुत लोग इस ऊँट की ओर देखते और हँसते थे। कुछ लोग कहते थे कि कलकत्ते में ऊँट नहीं होते इसी से मोहनमेले वालों ने इस विचित्र जानवर का दर्शन कराया है।

''संसार का जब यही रंग है तो ऊँट पर चढ़ने वाले सदा ऊँट ही पर चढ़ें यह कुछ बात नहीं। किसी की पुरानी बात यों खोलकर कहने से आजकल के कानून से हलक-इज्जत हो जाती है। तुम्हें खबर नहीं कि अब मारवाड़ियों ने 'एसोसीयेशन' बनाली है। अधिक बलबलाओगे तो वह रिजोल्यूशन पास करके तुम्हें मारवाड़ से निकलवा देंगे। अत: तुम उनका कुछ गुणगान करो जिससे वह तुम्हारे पुराने हक को समझें और जिस प्रकार लार्ड कर्जन ने किसी जमाने के 'ब्लैकहोल' को उस पर लाठ बनवा कर और उसे संगमरमर से मढ़वाकर शानदार बनवा दिया है उसी प्रकार मारवाड़ी तुम्हारे लिये मखमली काठी, जरी की गद्दियाँ, हीरे पन्नों की नकेल और सोने की घण्टियाँ बनवाकर तुम्हें बड़ा करेंगे और अपने बड़ों की सवारी का सम्मान करेंगे।''

सन 1900 में अमृतलाल चक्रवर्ती जब 'हिन्दी बंगवासी' से पृथक हुए तब गुप्तजी उन्हें 'भारतमित्र' में ले आए। बालमुकुन्द गुप्त का देहावसान होने पर 1907 से 10 तक चक्रवर्ती 'भारतमित्र' के सम्पादक रहे। उनके बाद शिवनारायण सिंह सम्पादक बनाए गए। 26 जनवरी 1911 से 7 अगस्त 1919 तक अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने 'भारतमित्र' का सम्पादन किया। दिल्ली दरबार के प्रसंग में 'भारतमित्र' का दैनिक संस्करण 15 नवम्बर 1911 को निकला और 19 मार्च 1912 से वह नियमित रूप से दैनिक हो गया। वाजपेयी ने बाबूराव विष्णु पराड़कर को 'भारतमित्र' के सम्पादकीय विभाग में आमंत्रित किया। सन 1911-12 में कलकत्ता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े बाजार में रुई (कपास) के जुए की बहुत-सी दुकानें खुल गई थीं, जिनमें अमेरिकी रुई के आगामी भावों पर दाँव लगाए जाते थे। 'भारतमित्र' ने इसके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा, जिस पर वायसराय लार्ड हार्डिंग्स ने अध्यादेश जारी कर प्रतिबंध लगाया। उपनिवेशों में भारत से बँधुआ मजदूरों और कुलियों की भर्ती के खिलाफ भी 'भारतमित्र' ने सतत अभियान चलाया और अन्तत: 1918 में लार्ड हार्डिंग्स ने इस प्रथा को भी बन्द करा दिया।

जब अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी 'भारतमित्र' में गए थे, तब यह तय हुआ था कि जो आमदनी होगी उसमें छह आने अखबार मालिक जगन्नाथ दास के, छह आने सम्पादक (वाजपेयी) के और चार आने मैनेजर नवलकिशोर गुप्त के होंगे। लेकिन ऐसा हो नहीं पाया, उलटे 'भारतमित्र' का जो संचित धन था, वही खप गया। 1906 से 1911 तक बाबूराव विष्णु पराडकर 'भारतमित्र' के संयुक्त सम्पादक रहे। उनकी सम्पादकीय टिप्पणियों के दायरे में उद्योग, जनसँख्या नियोजन, विधवा विवाह, अर्थनीति, राष्ट्रभाषा आदि प्राय: सभी महत्वपूर्ण मुद्दे आते थे। पराडकरजी का सबसे बड़ा पत्रकारीय योगदान समाचारों के संकलन, सुचारु सम्पादन और सुरुचिपूर्ण प्रस्तुति की परम्परा स्थापित करना है।

जुलाई, 1919 में स्वास्थ्य खराब होने के कारण अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने 'भारतमित्र' से इस्तीफा दे दिया। उनके स्थान पर लक्ष्मण नारायण गर्दे सम्पादक बनाए गए। इस जवाबदारी से पहले वे प्रमुख संवाददाता के रूप में कार्य कर रहे थे। 1915 में जब महात्मा गांधी काशी आए तब गर्दे ने उनसे भेंटवार्ता ली थी। हिंदी पत्रकारिता में साक्षात्कार विधा का सूत्रपात करने का श्रेय उन्हें जाता है। उन्होंने मौलाना अबुल कलाम आजाद, देशबन्धु चितरंजन दास से भी भेंटवार्ता ली। 'यंग इण्डिया' में प्रकाशित होने वाले गांधीजी के लेख 'भारतमित्र' में भी छपा करते थे। गर्देजी के अग्रलेखों के अनुवाद मद्रास के 'स्वराज्य', कोलकाता के 'सर्वेण्ट' तथा उर्दू 'प्रताप' और लाहौर के 'कलेण्डर' में छापे जाते थे।

1925 में 'भारतमित्र' का स्वामित्व वर्णाश्रम संघ के हाथों में आ गया। लक्ष्मण नारायण गर्दे को इस्तीफा देना पड़ा। तब 'माधुरी' ने सवाल उठाया था- ''भारतमित्र इस समय हिन्दी का सबसे पुराना दैनिक पत्र है। इसने हिन्दी की जैसी सेवा की है वह सब पर प्रगट है। इसके भूतपूर्व सम्पादकों में हिन्दी के बड़े-बड़े यशस्वी लेखक रहे हैं। हाल में यह पत्र अपने पहले के मालिकों के हाथ से निकलकर वर्णाश्रम संघ के हाथ में आ गया है। वर्णाश्रम संघ के हाथों में आने के पहले जिन लक्ष्मण नारायण गर्दे के हाथ में इस पत्र का संपादन भार था, उनको इस्तीफा देना पड़ा है। हमारी जिज्ञासा है कि यदि पत्र की नीति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होने जा रहा है, तो गर्दे का सम्बन्ध विच्छेद क्यों हुआ?'' 'जयाजी प्रताप'[1] के अनुसार 'भारतमित्र' के सम्पादक से 250 रुपये की जमानत और 250 रुपये का मुचलका माँगा गया है और मुद्रक को 100 रुपये की जमानत दाखिल करने की आज्ञा दी गई है।''

गर्दे की विदाई के बाद कृष्णनारायण पांडेय, नन्दलाल अटल 'भारतमित्र' के सम्पादक हुए। अंतिम दिनों में मोतीलाल मिश्र और जगन्नाथ मिश्र सम्पादक थे। सन 1934 में दैनिक 'भारतमित्र' का प्रकाशन बन्द हो गया। इसके बाद शंभूराम ने साप्ताहिक के रूप में पत्र को चलाने का प्रयत्न किया परन्तु चार-पाँच अंक ही प्रकाशित हो पाए। तदनन्तर प्रेस की सारी सामग्री वर्णाश्रम संघ को सौंप दी गई और 'भारतमित्र' की यात्रा कथा पर पूर्णविराम लग गया।

---

1. जयाजी प्रताप, 10 जून 1926

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरा से *'नैरंग-ए-मज़ामीन'* का प्रकाशन 23 मार्च 1878 को किया गया था। यह एक पाक्षिक पत्रिका थी जिसमें 10 पृष्ठ होते थे। इसके प्रकाशक सुमितराय शुक्ल तथा सम्पादक लाला रामनारायण थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये छह.आना था।

सन 1878 में कटक प्रिंटिंग कम्पनी से कृष्णचन्द्र पटनायक ने साहित्यिक पत्रिका *'उत्कल मधुप'* का प्रकाशन किया। रामशंकर राय पत्रिका के सहायक सम्पादक थे। उपन्यास 'सौदामिनी' धारावाहिक रूप में इस पत्रिका में छपा था। सन 1878 में इलाहाबाद से हिन्दी में *'कायस्थ समाचार'* निकला। उड़िया की पाक्षिक पत्रिका *'मयूरभंज पत्रिका'* सन 1878 में बारीपदा से प्रकाशित हुई। कोलकाता से बच्चों के पाक्षिक *'बालक बन्धु'* का प्रकाशन सन 1878 में हुआ। यह बंगला भाषा में निकलता था। *'विद्याविनोद'* अख़बार लखनऊ से हिन्दी भाषा में निकला। सन 1878 में प्रकाशित इस पत्र का शुल्क ढाई रु. था। यह साप्ताहिक अखबार था, जिसमें खबरें और लेख छपा करते थे। मुद्रण सुन्दर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

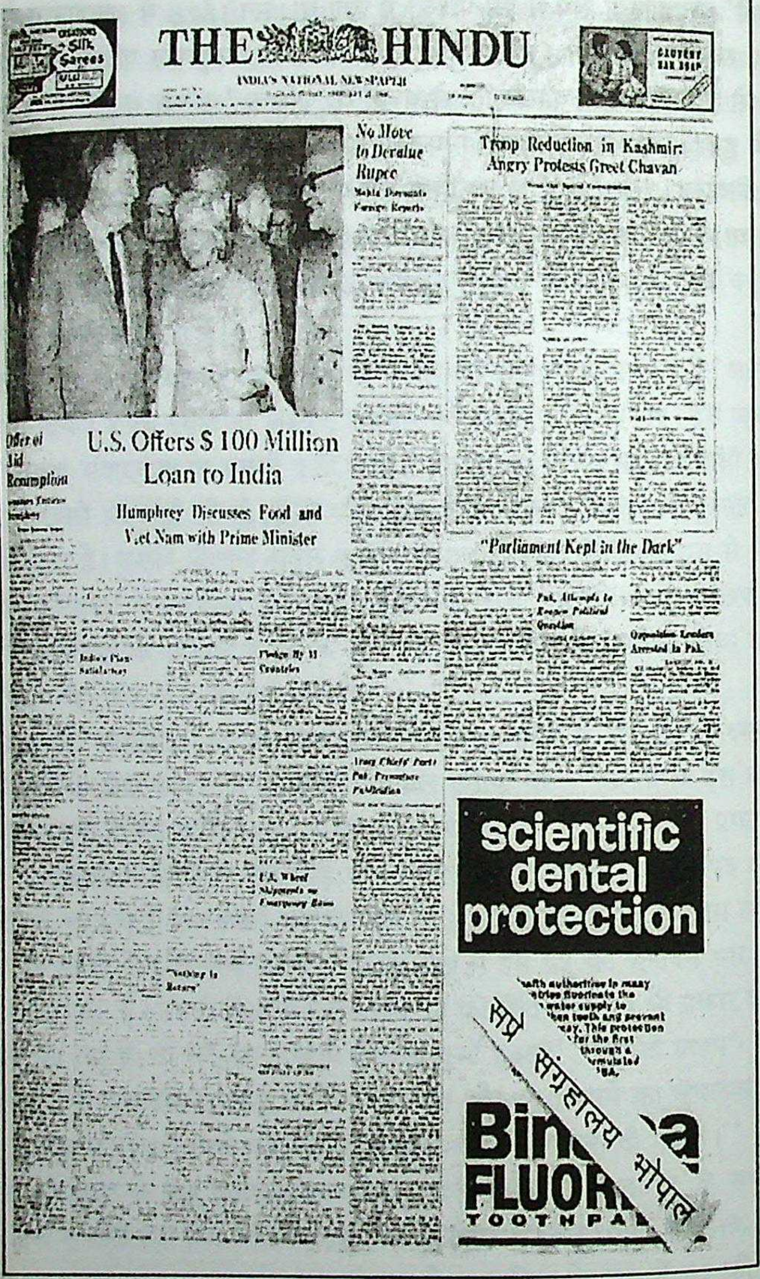

THE HINDU

INDIA'S NATIONAL NEWSPAPER

U.S. Offers $ 100 Million Loan to India

Humphrey Discusses Food and Viet Nam with Prime Minister

No Move to Devalue Rupee

Troop Reduction in Kashmir: Angry Protests Greet Chavan

"Parliament Kept in the Dark"

Opposition Leaders Arrested in Pak.

scientific dental protection

Binaca FLUORIDE TOOTHPASTE

सप्रे संग्रहालय भोपाल

हिन्दू, चेन्नै, 20 सितम्बर 1878

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानक अखबार

1878

हिन्दू

चेन्नै के छह साहसी नवयुवकों ने जब 20 सितम्बर, 1878 को साप्ताहिक 'हिन्दू' की शुरूआत की तब किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि यह पत्र दक्षिण भारत में पत्रकारिता, जनसेवा और राजनीति की अलख जगाने में कामयाब होगा। ये छह नवयुवक थे- जी. सुब्रमण्य अय्यर, एम. वीर राघवाचार्या, टी.टी. रंगाचार्या, पी.व्ही.रंगाचार्या, डी. केशवराव और एन. सुब्बाराव पंतुलु, जिन्होंने मद्रास नेटिव एसोसिएशन को पुनर्जीवित किया और व्ही. बास्यम अय्यंगार को इसका अध्यक्ष बनाया गया। उस समय शासकीय अधिकारियों के राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने पर प्रतिबन्ध नहीं था। अत: इस संस्था में अनेक सरकारी अधिकारी भी सदस्य थे। चेन्नै नेटिव एसोसिएशन 'फ्रीसेण्ट' नामक एक पत्र भी निकालता था, जो 1886 में बंद हो गया था। उधर दमनात्मक नीति के कारण जनता में असन्तोष फैल रहा था। अत: चेन्नै के सार्वजनिक जीवन में सक्रिय प्राय: सभी भारतीय नेताओं ने मिलकर सन 1884 में एक नई संस्था मद्रास महाजन सभा गठित की. पी रंगय्या नायडू को अध्यक्ष बनाया गया। इसी संस्था की छत्रछाया में राजनीतिक गतिविधियाँ जोर पकड़ने लगीं। मद्रास महाजन सभा का कार्यालय 'हिन्दू' कार्यालय के परिसर में ही स्थित था। 'हिन्दू' इन गतिविधियों के 'वाहक' के रूप में सामने आने लगा। सन 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद जब पूरे देश में कांग्रेस की गतिविधियों का प्रसार होने लगा तब मद्रास में महाजन सभा के रूप में कांग्रेस को एक सहयोगी मिल गया, दोनों के उद्देश्यों में समानता थी।

जिन छह नवयुवकों ने 'हिन्दू' की स्थापना की थी उनमें से केवल दो को जीवन की व्यावहारिक कठिनाइयों का अनुभव था-जी. सुब्रमण्य अय्यर और एम. वीर राघवाचार्य। इन्हीं दो पर अन्तत: 'हिन्दू' को चलाने की जिम्मेदारी आई और बाद में ये दोनों ही 'हिन्दू' के स्वामी भी हुए।जी. सुब्रमण्य अय्यर 'हिन्दू' की स्थापना (1878) से 20 वर्षों (सितम्बर 1898) तक इसके सम्पादक रहे। उन्होंने 'मद्रास स्टेण्डर्ड' (अँगरेजी) और तमिल समाचारपत्र 'स्वदेशमित्रन' की भी स्थापना की।

'हिन्दू' का प्रकाशन एक अक्टूबर 1883 से साप्ताहिक के बजाय सप्ताह में तीन बार होने लगा। अब स्वयं के प्रिंटिंग प्रेस की आवश्यकता महसूस होने लगी। कार्य भी बढ़ गया और स्टाफ भी। तब 'हिन्दू' का कार्यालय 100 माउन्ट रोड पर स्थानान्तरित कर दिया गया और यहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिंटिंग प्रेस की भी स्थापना की गई। जब सन 1885 में मुंबई में कांग्रेस का पहला अधिवेशन हुआ तब चेन्नै के कांग्रेस नेताओं का नेतृत्व जी. सुब्रमण्य अय्यर ने ही किया। इस प्रकार 'हिन्दू' चेन्नै की राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु बन गया। सप्ताह में तीन दिन प्रकाशन के बाद, इसके पाठक इसमें प्रतिदिन की घटनाएं पढ़ना चाहते थे। अत: अय्यर और वीर राघवाचार्य ने 'हिन्दू' को एक जनवरी 1889 से दैनिक कर दिया। इसी बीच 1889 में ही विजयनगरम के महाराजा का स्वर्गवास हो गया। वे 'हिन्दू' के संरक्षकों में से थे। 'हिन्दू' की वित्तीय स्थिति डाँवाडोल होने लगी। उधर सम्पादक जी. सुब्रमण्य अय्यर राजनीतिक गतिविधियों में अधिक व्यस्त रहने लगे। फलस्वरूप भागीदारी समाप्त हो गई और इसके एकमात्र मालिक एम. वीर राघवाचार्य रह गए। उपसम्पादक करुणाकर मेनन को सम्पादक बना दिया गया।

दैनिक समाचारपत्र प्रकाशित करना उस जमाने में बड़े जीवट का कार्य था। समाचारपत्र की आयु भी 20 वर्ष हो चुकी थी। एक ज्वाइंट स्टाक कम्पनी जिसका नाम हिन्दू लि. था, 1901 में बाजार में उतरी कि 'हिन्दू' और उसके प्रेस को खरीद ले। परन्तु यह सम्भव न हो सका, क्योंकि तत्कालीन शासन परोक्ष रूप से 'हिन्दू' का विरोधी था। अत: वीर राघवाचार्य ही इसे चलाते रहे। 1903 में 'हिन्दू' की रजत जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। कस्तूरी रंगा अय्यंगार पहले से ही (1895 से) 'हिन्दू' के सलाहकार थे। कस्तूरी रंगा अय्यंगार ने अपने मित्रों से 'हिन्दू' खरीदने की सलाह ली। कुछ ने तो सहमति दी पर कुछ ने विरोध किया। अन्तत: कस्तूरी रंगा एक अप्रैल 1905 को 'हिन्दू' के मालिक हो गये। साथ ही वे सम्पादक भी हुए और सम्पादक करुणाकर मेनन को संयुक्त सम्पादक बना दिया गया। अभी एक माह ही बीता था कि संयुक्त सम्पादक ने त्यागपत्र दे दिया। बाद में करुणाकर मेनन ने अपना स्वयं का समाचारपत्र 'इंडियन पेट्रियट' प्रकाशित किया। सम्पादकीय तथा व्यवस्था का पूरा भार कस्तूरी रंगा अय्यंगार को वहन करना पड़ा, क्योंकि वीर राघवाचार्य भी निवृत्त हो गए थे।

सन 1905 देश में उथल-पुथल का वर्ष था। बंगाल विभाजन से पूरे देश में रोष था। जनता में विद्रोह की भावना प्रबल हो रही थी। चेन्नै के एंग्लो-इंडियन समाचारपत्र 'मद्रास मेल' और 'मद्रास टाइम्स' अँगरेजों का साथ दे रहे थे। 'हिन्दू' चेन्नै का एकमात्र समाचारपत्र था जिसमें जन भावना मुखरित होती थी। 'हिन्दू' ने रायटर की समाचार सेवाएं लीं। अनेक प्रमुख शहरों में 'हिन्दू' के संवाददाता नियुक्त हो चुके थे। 'हिन्दू' प्रतिदिन 18 पृष्ठों का छपता था।

'हिन्दू' की साज-सज्जा पर लगातार ध्यान दिया जाता था। इसके स्तम्भ विचारपूर्वक प्रारम्भ किए गए थे। पृष्ठ तीन पर 'सम्पादक के नाम पत्र' कालम बहुत पढ़ा जाता था। प्रतिदिन चुने हुए चार-पाँच विभिन्न ज्वलंत विषयों पर प्राप्त पत्रों को स्थान दिया जाता था। कानून, मौसम, कैलेंडर, संसद में भारत, सम्पादकीय आदि ऐसे स्तम्भ थे जो खबरों के अलावा होते थे। सम्पादकीय बहुत चुस्त, विद्वतापूर्ण और परामर्शी शैली में लिखा जाता था। अँगरेजों और उनकी संस्थाओं के अवैध और अहितकारी कार्यों का भंडाफोड़ करने में कभी नहीं चूकता था। अँगरेजों द्वारा सम्पादित और संचालित समाचारपत्रों से भी लड़ाई लड़नी पड़ती थी। चेन्नै में 'हिन्दू' के खिलाफ 'मद्रास टाइम्स' और 'मद्रास मेल' तो थे ही, 'हिन्दू' की बातों को ये समाचारपत्र न केवल काटते थे वरन 'हिन्दू' को झूठा साबित करने की कोशिश करते रहते थे।

'हिन्दू' के पुराने अंक पलटने पर ज्ञात होता है कि इस समाचारपत्र ने भारत की अस्मिता के संरक्षण के लिए कितनी लड़ाइयाँ लड़ी हैं। जब मद्रास सरकार ने 'स्वदेशमित्रन' के सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी. सुब्रमण्य अय्यर जो चेन्नै के सर्वाधिक सम्मानित पत्रकार थे और तमिल साप्ताहिक 'इंडिया' के सम्पादक एम. श्रीनिवासन के खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा चलाया, उन्हें गिरफ्तार किया और समाचारपत्रों के कार्यालय की तलाशी ली तब 'हिन्दू' चुप नहीं बैठा, उसने पुरजोर आवाज उठाई।

कस्तूरी रंगा ने 'हिन्दू' के माध्यम से भारतीय सम्पादकों को आत्मसम्मान के साथ पत्रकारिता करने के लिए प्रोत्साहित किया। सर हालेज के बाद जब कार्मीचेल मद्रास के गवर्नर होकर आए तब दिसम्बर 1911 में 'दिल्ली दरबार' का जलसा हुआ। मौका था पंचम जार्ज के भारत का राजा होने का। कस्तूरी रंगा को भी दरबार का निमंत्रण मिला। परन्तु उन्हें जब यह ज्ञात हुआ कि भारतीय और अँगरेज सम्पादकों में भेद किया जा रहा है-एंग्लो इण्डियन सम्पादकों को जाने-आने का किराया दिया जाएगा और भारतीय सम्पादक स्वयं के व्यय पर जाएंगे, तो कस्तूरी रंगा ने दरबार में जाने से मना कर दिया। परन्तु जब गवर्नर ने विश्वास दिलाया कि भेदभाव नहीं होगा, तभी वे जाने को तैयार हुए।

जब जुलाई 1914 में प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ तो अँगरेज सरकार को भारत में प्रेस को दबाने का अच्छा मौका मिल गया और कुंठित अँगरेज अफसरों का गुस्सा फूट पड़ा। सैन्सरशिप के कानून बने। 1910 में रायल कमीशन ने अधिकारों के विकेन्द्रीकरण के लिए भारत में पंचायतों की स्थापना की सिफारिश की थी-परन्तु मद्रास सरकार के राजस्व मंडल ने इस रिपोर्ट को दबा दिया था। 'हिन्दू' में कस्तूरी रंगा ने सम्पादकीय लिखकर राजस्व मंडल को आड़े हाथों लिया। शासन को यह नागवार गुजरा कि एक गोपनीय प्रतिवेदन की सिफारिशों पर कैसे लिखा गया? शासन के राजस्व सचिव लायोनेल डेविडसन ने 'हिन्दू' के सम्पादक को 11 नवम्बर 1915 को पत्र लिखकर स्पष्टीकरण माँगा- ''आपके पत्र के एक तारीख के अंक में 'सिंचाई बोर्ड' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें बोर्ड की पाँच साल पहले की कार्यवाही का हवाला दिया गया है। मुझे आपसे यह पूछने का निर्देश हुआ है कि किस कार्यवाही से आपने यह उद्धरण लिया है और बताएँ इसका प्रकाशन कहाँ हुआ?

उपर्युक्त पत्र में समाचार का स्रोत बताने को कहा गया है, परन्तु पत्रकारिता में यह परिपाटी नहीं है। समाचार यदि गलत हो तो प्रतिवाद किया जा सकता था। कस्तूरी रंगा ने राजस्व सचिव डेविडसन के पत्र का माकूल उत्तर 13 नवम्बर 1915 को दिया- ''मुझे आपका अर्द्धशासकीय पत्र क्र. 2794सी/15-1 मिला और आश्चर्य हुआ कि बोर्ड की संदर्भित कार्यवाही शासन की जानकारी में नहीं है। जबकि प्रकाशित विवरण बोर्ड के अधिकारियों के लिए सुविदित है। साथ ही उन अशासकीय व्यक्तियों को भी इसकी जानकारी है, जिनकी बोर्ड की कार्यवाही के विकेन्द्रीकरण की ग्राम पंचायतों सम्बन्धी रिपोर्ट के अंश में दिलचस्पी है। मैं इस विषय में और अधिक जानकारी देने की स्थिति में नहीं हूँ।

कस्तूरी रंगा अय्यंगार
सम्पादक''

जब प्रथम महायुद्ध निर्णायक दौर में था-तब ब्रिटिश सूचना मंत्री लार्ड बीवरबुक ने ब्रिटिश साम्राज्य के प्रमुख पत्रकारों को यूरोप में युद्ध की विभीषिका का अवलोकन करने के लिए बुलाया। भारत से अगस्त 1918 में 5 सम्पादकों-जे.ए. सेंटब्रुक (इंग्लिशमेन-कोलकाता), कस्तूरी रंगा अय्यंगार (हिन्दू-चेन्नै), हेमेन्द्र प्रसाद घोष (बसुमती-कोलकाता), गोपालकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देवधर (ज्ञान प्रकाश- पुणे) और महबूब आलम (पैसा अख़बार-लाहौर) के सम्पादक को बुलाया गया था। उधर ये सम्पादक इंग्लैण्ड जा रहे थे और इधर भारत के चार राष्ट्रीय विचारधारा के समाचारपत्रों का ब्रिटेन में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया था। ये अख़बार थे- 'हिन्दू, एनी बेसेण्ट का 'न्यू इण्डिया', 'बाम्बे क्रानिकल' और 'अमृत बाजार पत्रिका'।

ऐसे अनेक प्रकरण हैं जब देश के राष्ट्रीय समाचारपत्रों और उनके सम्पादकों ने अँगरेजी शासन और उनके अधिकारियों को प्रजातांत्रिक तरीकों से बाध्य किया और झुकाया। 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग कांड हुआ। अमृतसर में जनरल डायर की अराजकता का नंगा नाच देखकर सभी दंग रह गए। समाचारपत्रों पर कड़ी सेंसरशिप लगा दी गई जिससे वास्तविकता को छिपाया जा सके। पं. मदनमोहन मालवीय की अध्यक्षता में 20 अप्रैल 1919 को मुम्बई में कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई और विदेश सचिव एवं वायसराय को भेजने के लिए प्रतिवेदन तैयार करने के उद्देश्य से एक उपसमिति गठित की गई। घटना की सही जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से देश के प्रमुख सम्पादकों ने पंजाब के मुख्य सचिव को एक तार भेजा-इनमें सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, सम्पादक, 'बंगाली', एनी बेसेण्ट, सम्पादक, 'न्यू इण्डिया', मतिलाल घोष, सम्पादक, 'अमृत बाजार पत्रिका', कस्तूरी रंगा अय्यंगार, सम्पादक, 'हिन्दू', सी.वाई. चिंतामणि, सम्पादक, 'लीडर' एवं सैयद हुसैन, सम्पादक, 'इण्डिपेण्डेण्ट' थे।

तार में लिखा गया- ''हम, अधोहस्ताक्षरकर्ता सी.एफ. एण्डूज को पंजाब प्रवास के लिए नियत करते हैं, जो भारतीय प्रेस को उस राज्य की वास्तविक दशा का प्रतिवेदन देंगे, चूँकि पंजाब के हालात का कोई अशासकीय प्रतिवेदन उपलब्ध नहीं है, खास तौर से मार्शल-ला प्रशासन के विशेष संदर्भ में। हमारा विश्वास है कि पंजाब सरकार हमारे प्रतिनिधि को प्रान्त के दौरे की अनुमति प्रदान करेगी और जाँच कार्य के लिए सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराएगी।'' परन्तु एन्डूज को पंजाब में प्रवेश की अनुमति देना तो दूर रहा, एक आदेश जारी कर उनके प्रवेश पर ही प्रतिबंध लगा दिया गया। पूरे देश में रोष व्याप्त था। इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौन्सिल से भारतीय सदस्य इस्तीफा दे रहे थे। जगह-जगह बैठकें आयोजित की जा रही थीं। चेन्नै में भी विरोध में आम सभा हुई। इस आम सभा में 'हिन्दू' के सम्पादक कस्तूरी रंगा अय्यंगार ने एक गैर पंजीकृत समाचारपत्र 'सत्याग्रही' की प्रतियाँ प्रकाशित कराकर अँगरेजी, तमिल और तेलुगु भाषाओं में हस्ताक्षर के साथ नीलाम कराईं।

पाँच मई को महाजन सभा हाल चेन्नै में फिर एक आम सभा हुई जिसे लाहौर से आए गोवर्धनदास ने सम्बोधित कर पंजाब की वस्तुस्थिति से जनता को अवगत कराया। 'हिन्दू' ने गोवर्धनदास का पूरा भाषण छापा और 8 मई को सम्पादकीय लिखा। मद्रास सरकार 'हिन्दू' और उसके सम्पादक से खफा थी। उसने 'हिन्दू' का सम्पादकीय और आम सभा के समाचार को पर्याप्त आधार मानकर 'हिन्दू' से जमानत जमा करने को कहा। सिटी मजिस्ट्रेट ने 'हिन्दू' को 2000 रुपये जमानत जमा करने का आदेश दिया। गांधीजी ने 'यंग इंडिया' में और ऐनी बेसेण्ट ने 'न्यू इण्डिया' में जमानत माँगने के आदेश का विरोध किया।

'हिन्दू' से जमानत जमा करने के आदेश के बाद तमिल दैनिक 'स्वदेशमित्रन' से 2,000 रुपये की जमानत जमा करने को कहा गया क्योंकि इस समाचारपत्र ने दो पुस्तिकाएँ प्रकाशित की थीं, जिन्हें सरकार ने आपत्तिजनक माना। एक अन्य तमिल समाचारपत्र 'हिन्दू नेशन' से 1000 रुपये की जमानत जमा करने को कहा गया क्योंकि उसमें प्रकाशित एक लेख को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आपत्तिजनक समझा गया। इसके पूर्व 'न्यू इण्डिया' और 'देशभक्तन' से ऐसी जमानत माँगी जा चुकी थी।

इसी दौरान सरकार ने मोन्ट चेम्सफोर्ड सुधारों की तैयारी की। सुधार की बातें तो सद्‌भावना के वातावरण में ही सम्भव थीं, अतः सरकार ने सामान्य क्षमादान की घोषणा कर जिन समाचारपत्रों से प्रेस एक्ट के तहत जमानत की राशि जमा कराई थी, उन सभी को उनकी राशि लौटा दी।

प्रथम विश्व युद्ध और उसके बाद असहयोग आंदोलन के दौरान 'हिन्दू' की प्रसार सँख्या बढ़कर 17000 प्रतियों तक पहुँच चुकी थी। बढ़ी हुई माँग के कारण 'हिन्दू' के कार्यालय और प्रेस का विस्तार जरूरी था। चेन्नै में सर्वप्रथम 'हिन्दू' ने रोटरी प्रिंटिंग मशीन लगाई। आधुनिक कम्पोजिंग मशीनें भी लगाई गईं। कव्हरेज को प्रभावशाली बनाने के लिए समाचारों को टेलीग्राम से बुलाने की व्यवस्था हुई। नए केन्द्र खुले और मुद्रित समाचारपत्र की प्रतियाँ पाठकों तक शीघ्र पहुँचाने की व्यवस्था को चुस्त किया गया।

'हिन्दू' के यशस्वी सम्पादक कस्तूरी रंगा अय्यंगार बीमार रहने लगे। 12 दिसम्बर 1923 को उनका निधन हो गया। उनके साथ दक्षिण भारत की राष्ट्रीय पत्रकारिता के युग पुरुष का अवसान हो गया। कस्तूरी रंगा अय्यंगार के निधन के बाद उनके भतीजे ए. रंगास्वामी अय्यंगार 'हिन्दू' के सम्पादक बने। इस समय लंदन में 'हिन्दू' के विशेष संवाददाता सुप्रसिद्ध लेखक और पत्रकार संत निहाल सिंह थे। वे अँगरेज़ी में अधिकारपूर्वक लिखते थे। जब इंग्लैण्ड में प्रथम लेबर सरकार फरवरी-1924 में बनी, उसके तुरंत पहले संत निहाल सिंह ने मनोनीत प्रधानमंत्री मैक्डॉलैंड का एक संदेश 'हिन्दू' को भेजा। इस संदेश में मैक्डॉलैंड ने कहा- "मैं भारत के सभी मित्रों का आह्वान करूँगा कि वे हमारे नजदीक आएँ, हमें समझें और हमारी सद्‌भावना पाएँ। मैं यहाँ कुछ वर्गों में पाई जा रही प्रतिगामी भावना की निंदा करता हूँ, और अब कोई गुमराह न कराए। मेरी अपील, इस प्रकार न केवल भारतीयों, बल्कि ब्रिटिश अधिकारियों के लिए भी है।" इस संदेश से इंग्लैंड में तहलका मच गया। सभी को आश्चर्य था कि 'हिन्दू' को यह संदेश कैसे मिल गया।

सन 1925 में 'हिन्दू' के कलेवर और साज सज्जा में अभिवृद्धि हुई। प्रथम बार खेल समाचारों का पन्ना अलग निर्धारित किया गया। यह स्तम्भ जनता में सराहा गया। 'साहित्य-कला-दर्शन' का अलग पृष्ठ निर्धारित किया गया। मुद्रण और टाइप में भी आकर्षण आया। विदेशों के समाचारों को प्रमुखता दी गई और रायटर की विशेष सेवा ली जाने लगी। भारत के समाचारों को विस्तारपूर्वक देने पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।

पत्रकारिता और 'हिन्दू' दोनों को तब धक्का लगा जब केवल तीन वर्ष सम्पादन करने के बाद, 22 अक्टूबर 1926 को 'हिन्दू' के सम्पादक ए. रंगास्वामी आयंगर का 40 वर्ष की उम्र में देहांत हो गया। एक होनहार सम्पादक नहीं रहा। ए. रंगास्वामी ने 'हिन्दू' के माध्यम से एंग्लो-इंडियन समाचारपत्र 'मद्रास मेल' और उसके सम्पादक अर्ल वेल्बी को खूब छकाया। जब कभी भी 'मद्रास मेल' में जनहित या देशहित के खिलाफ छपता था तब 'हिन्दू' खुलकर कड़े परन्तु संयत शब्दों में उसका प्रतिवाद करने से नहीं चूकता था।

सितम्बर 1928 में 'हिन्दू' पचास साल का हो गया। स्थापना दिवस के इस अवसर पर 'हिन्दू' ने लिखा-"हम गौरव के साथ अपनी उच्चतम परम्पराओं और उन दो महान व्यक्तियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जी. सुब्रमण्य अय्यर और कस्तूरी रंगा अय्यंगार की स्मृति से स्फूर्ति और प्रोत्साहन प्रति क्षण प्राप्त कर कठिन जिम्मेदारियों को निभाते रहकर उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। चेन्नै की जनता ने 'हिन्दू' के माध्यम से उन्हें जो स्थायित्व प्रदान किया है, वह हमारी धरोहर है।''

'हिन्दू' अपने पाठक-वर्ग की अभिरुचि का पूरा ध्यान रखकर पठनीय सामग्री जुटाता था। महिला कल्याण और शिक्षा का एक साप्ताहिक पृष्ठ निकलने लगा था। लंदन स्थित विशेष संवाददाता द्वारा प्रेषित व्यापार और उद्योग की साप्ताहिक रिपोर्ट छपने लगी थी। यूरोप के हर देश की राजधानी में जैसे बर्लिन, पेरिस, जिनेवा में 'हिन्दू' के संवाददाता हो गए थे। पृष्ठ के अंत में सचित्र हास्य-व्यंग्य का फीचर दिया जाने लगा था। सामयिक चित्र तो छपते ही थे।

जनवरी 1928 में ए. रंगास्वामी अय्यंगार 'हिन्दू' के सम्पादक बनकर आए और के. श्रीनिवासन को सम्पादक के अतिरिक्त कार्य से मुक्त किया। के. श्रीनिवासन प्रशासन और व्यवस्था का कार्य देखते थे। ए. रंगास्वामी की सहायता के लिए मंजे हुए सहायक सम्पादक थे- व्ही.एस. रामास्वामी शास्त्री, के.पी. विश्वनाथ अय्यर और एन. रघुनाथ अय्यर। तीनों अपने-अपने विषय और कार्यों में दक्ष थे। 'हिन्दू' की समाचार व्यवस्था में मुख्य संवाददाता बहुत अहम व्यक्ति हुआ करता था। उसके सहायक 'हिन्दू' की जान थे। 'हिन्दू' का रिपोर्टिंग स्टाफ सशक्त, सजग और स्रोत सम्पन्न था।

'हिन्दू' की निष्पक्षता उसका मुख्य गुण था। विरोधियों की अच्छाइयों को प्रगट करने में भी कोताही नहीं करता था। जब मद्रास के एंग्लो-इंडियन पत्र 'मद्रास मेल' ने अपने जीवन के 60 वर्ष (दिसम्बर 1928 में) पूरे किए तब 'हिन्दू' ने लिखा-

''हम 'मद्रास मेल' की टिप्पणियों और विचारों से प्राय: असहमत रहते हैं, तथापि इसकी आलोचना सदैव निष्पक्ष और उदार भाव से लेते हैं।'' इस उपलक्ष्य में चेन्नै में आयोजित एक समारोह में 'हिन्दू' के सम्पादक ए. रंगास्वामी आयंगर ने भी भाग लिया। इस समारोह में 'मद्रास मेल' के सम्पादक ए.ए. हेल्स ने अपने भाषण में कहा-''वे 'हिन्दू' को भारत का सर्वश्रेष्ठ पत्र मानते हैं। अपने लेखों और सज्जा में यह किसी भी पहली श्रेणी के पाश्चात्य पत्र के समकक्ष ठहरता है।''

'हिन्दू' कभी भी सही और स्पष्ट विचार व्यक्त करने में पीछे नहीं रहा। यद्यपि वह कांग्रेस की मूल नीतियों का समर्थक था, परन्तु ऐसा नहीं कि उसने कांग्रेस के सभी निर्णयों को सराहा। जब अहमदाबाद में 15 फरवरी, 1930 को कांग्रेस कार्यकारिणी ने गांधीजी को अहिंसक नागरिक अवज्ञा आंदोलन आरम्भ करने के लिए अधिकृत किया तब 'हिन्दू' ने इसे असमय का निर्णय बताया और लिखा कि लोक मानस अभी इसके लिए तैयार नहीं है।

'हिन्दू' ने अपने एक वरिष्ठ सहायक सम्पादक के.पी. विश्वनाथ अय्यर को डांडी मार्च को रिपोर्ट करने अहमदाबाद भेजा, जिन्होंने दिन-प्रतिदिन की समाचार-रपट भेजी। 10 अप्रैल को अय्यर ने गांधीजी से एक साक्षात्कार में पूछा कि यदि पुलिस वाले किसी स्वयंसेवक के हाथ से नमक जबरन छीनने का प्रयत्न करें तब क्या स्वयंसेवक इसका बलप्रयोग से प्रतिकार कर सकता है? गांधीजी ने उत्तर दिया-''यह उसका कर्तव्य है कि जिस तरह वह प्राणों की रक्षा करता है, वैसे ही नमक की रक्षा करे, बशर्ते वह प्रतिपक्षी पर हिंसा नहीं कर रहा, उसी प्रकार जैसे एक माँ अपने बच्चे को उससे छीनने के प्रयासों से बचाती है, वैसे ही सत्याग्रही अपने नमक की रक्षा करें।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय समाचारपत्रों ने सत्याग्रह का भरपूर प्रचार किया, जिससे अँगरेजी शासक नाराज हो गए। 28 अप्रैल, 1930 को एक अध्यादेश के द्वारा प्रेस एक्ट को पुनर्जीवित कर समाचारपत्रों में आन्दोलन के प्रचार को दबाने की कोशिश की गई। सन 1931 के प्रारम्भ में रोलेट एक्ट के खिलाफ देश में हड़तालें और आम सभाएँ हुईं। मार्च, 1931 में शहीदे आजम भगतसिंह और उनके दो साथियों को लाहौर में फाँसी देने से स्थिति और बिगड़ गई थी। कानपुर के हिन्दू-मुसलमान दंगों में सिद्ध अहिंसक गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा मुसलमानों को बचाने में प्रदर्शित साहस अद्वितीय था। 'हिन्दू' के इलाहाबाद संवाददाता ने गणेशशंकर विद्यार्थी के बारे में जो विवरण भेजा वह इस प्रकार था- ''वे निःशस्त्र और सुरक्षा विहीन ही दंगाग्रस्त इलाकों में जा पहुँचे और दोनों समुदायों के पीड़ितों का बचाव किया। किन्तु मुस्लिम दंगाइयों ने उन्हीं को मार डाला, इस तथ्य के बावजूद कि एक मुस्लिम स्वयंसेवक, जो उनके साथ था, ने हिंसक भीड़ से कहा भी कि वे एक दिव्य आत्मा हैं जिन्होंने 150 दंगा पीड़ित मुसलमानों की रक्षा की। विद्यार्थी ने दंगाई भीड़ के सामने छाती खोल दी और उन्हें मार डाला गया और उनका शव जलते हुए मकान में फेंक दिया गया।''

4 फरवरी, 1934 का दिन 'हिन्दू' के लिए दुःखदायी रहा। इस दिन 'हिन्दू' के यशस्वी सम्पादक ए. रंगास्वामी अय्यंगार की 57 वर्ष की आयु में असामयिक मृत्यु हो गई। वे छह वर्षों तक 'हिन्दू' के सम्पादक रहे और 'हिन्दू' की नीतियों को स्पष्टता के साथ राष्ट्रीय विचारधारा से जोड़े रखा। अपने सम्पादक को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देते हुए 'हिन्दू' ने 'देश का महान सपूत' शीर्षक से ए. रंगास्वामी अय्यंगार पर सम्पादकीय लिखा।

ए. रंगास्वामी अय्यंगार

''तंजावर जिले के किसान नरसिंह अय्यंगार के ज्येष्ठ पुत्र ए. रंगास्वामी ने मद्रास सचिवालय में लिपिक की हैसियत से अपना जीवन प्रारम्भ किया था। कस्तूरी रंगा अय्यंगार उनके मामा थे। वकालत पास कर वे तंजावर में वकील हो गए। जब 1905 में कस्तूरी रंगा अय्यंगार ने 'हिन्दू' का प्रबंध सम्भाला तब अपनी मदद के लिए उन्होंने रंगास्वामी को 'हिन्दू' में बुला लिया। अपनी तीव्र बुद्धि और संवैधानिक ज्ञान और भाषा प्रावीण्य के कारण उन्होंने 'हिन्दू' में विशेष स्थान बना लिया और सहायक सम्पादक हो गए। भाषायी पत्रकारिता को परिमार्जित करने के लिए उन्होंने 1915 में 'हिन्दू' छोड़ दिया और 'स्वदेशमित्रन' के संस्थापक जी. सुब्रमण्य अय्यर ने उन्हें 'स्वदेशमित्रन' का सम्पादक बना दिया। भाषा पर अधिकार और अभिव्यक्ति की स्पष्टता के कारण पत्र की प्रतिष्ठा बढ़ी। वे अच्छे सम्पादक और सम्माननीय राजनेता के रूप में उभरे, तमिल और अँगरेजी दोनों भाषाओं के वे ओजस्वी वक्ता थे। 1928 में रंगास्वामी अय्यंगार को 'हिन्दू' में सम्पादक के रूप में बुला लिया गया।''

अय्यंगार के निधन के बाद के. श्रीनिवासन को सम्पादक बनाया गया। वे 6 फरवरी, 1934 को 'हिन्दू' के प्रबंध सम्पादक बने।

24 नवम्बर 1939 को 'हिन्दू' का कार्यालय 100 माउंट रोड से 201 माउंट रोड पर निर्मित विशाल भवन में स्थानांतरित हो गया। इसी के साथ 'हिन्दू' ने अपनी हीरक जयंती भी मनाई। वैसे तो 'हिन्दू' ने अपने साठ साल 1938 में पूरे कर लिए थे। पर हीरक जयंती को एक वर्ष बाद नई इमारत में मनाने का फैसला किया गया। इस अवसर पर 'हिन्दू' ने 48 पृष्ठ का विशेष परिशिष्ट भी सात दिसम्बर 1939 को प्रकाशित किया जो संग्रहणीय दस्तावेज रहा। अपने 61वें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापना दिवस पर 'हिन्दू' ने एक बार पुनः भारत की जनता की सेवा और पत्रकारिता के उत्कृष्ट मापदंडों के संरक्षण के संकल्प को दोहराया। प्रेस की भूमिका के संदर्भ में 'हिन्दू' ने लिखा- ''यह प्रेस का कर्तव्य है कि वह पर्याप्त कारणों के बिना न समर्थन करे और न विरोध। प्रत्येक मामले में इसे केवल लोकहित के विचार से ही निर्देशित होना चाहिए।''

'हिन्दू' का यह भी मत था कि ''भारत में जहाँ पढ़ने वालों की सँख्या पश्चिम की तुलना में बहुत कम है, किन्तु यहाँ सार्वजनिक मुद्दों पर समझदारीपूर्ण बहस होती है, जो कि दीर्घ पत्रकारीय परम्परा और और पढ़े-लिखे समुदाय की बहुलता के बावजूद इंग्लैण्ड में नहीं होता।''

मद्रास विधानसभा में यूरोपीय समूह के नेता डब्ल्यू.के.एम. लांगले ने 'हिन्दू' की समाचार व्यवस्था के बारे में ठीक ही कहा है- ''हिन्दू' इसलिये पढ़ता हूँ, क्योंकि-
(1) इसके समाचार स्तम्भ इतने व्यवस्थित होते हैं कि आपको पता होता है कि आपको कहाँ कौन से समाचार मिलेंगे। (2) समाचार समुचित अनुपात में दिए जाते हैं। शीर्षक उपयुक्त होते हैं। (3) इसके सम्पादकीय अग्रलेख सचमुच अग्रलेख होते हैं, जनमत के पिछलग्गू नहीं होते। (4) इसमें एक खेल पृष्ठ होता है, जिससे बेहतर दुनिया के किसी अखबार का खेल पृष्ठ नहीं होता (5) मुख्य संवाददाता डा. जानसन के उदाहरण से प्रेरित हैं और हमें उत्कृष्ट समाचार सामग्री परोसता है।''

'हिन्दू' का खेल पृष्ठ के. गोपालन के समय बहुत लोकप्रिय हुआ। देश और विदेश के नामी खिलाड़ी और खेल समीक्षक इसमें लिखते थे। देश की हाकी, क्रिकेट या फुटबाल की टीमें जब विदेशों में खेलती थीं तब उसके कव्हरेज की विशेष व्यवस्था की जाती थी। रेस के कव्हरेज में 'हिन्दू' को महारत प्राप्त थी। इसके माहिर एस. पार्थसारथी बेंगलूरु में 'हिन्दू' के अंशकालिक संवाददाता थे।

सन 1928-38 की अवधि में 'हिन्दू' के समाचार कक्ष और व्यवस्था विभाग का काफी विस्तार हुआ। न केवल देश में वरन विदेशों में भी 'हिन्दू' के शाखा कार्यालय खुले। 'हिन्दू' ने रायटर, ए.पी.आई. और यू.पी.आई. की सेवाएँ लीं। सन 1928 में देश में 'हिन्दू' के केवल 80 प्रतिनिधि थे, जो 1938 में बढ़कर 150 हो गए। लंदन की प्रसिद्ध फलीट स्ट्रीट में 'हिन्दू' का कार्यालय जुलाई 1933 में खुल गया। 'हिन्दू' ने अपने कव्हरेज को व्यापकता और विविधता प्रदान करने के उद्देश्य से ब्रिटेन के राष्ट्रीय समाचारपत्र जैसे टाइम्स, टेलीग्राफ, मैनचेस्टर गार्जियन, न्यूज क्रानिकल और डेली हेरल्ड से ऐसी व्यवस्था की कि उनसे 'हिन्दू' को तार और डाक से प्रमुख समाचार मिलने लगे और विख्यात विशेष प्रतिनिधि उन समाचारों की व्याख्या भेजने लगे। इनके साथ फोटो, नक्शे, ग्राफ आदि भी प्राप्त होते थे जिनसे समाचारों का महत्व और प्रस्तुतीकरण श्रेष्ठ हो जाते थे। 'हिन्दू' ने अनुभवी और योग्य पत्रकारों को देश की राजधानी दिल्ली और राज्यों की राजधानियों में संवाददाता नियुक्त किया।

सन 1940 और उसके बाद भारत छोड़ो आन्दोलन तक दिल्ली में और देश में राजनीतिक गतिविधियाँ तेजी से बढ़ रही थीं। मुस्लिम लीग के जिन्ना उभरकर आगे आ गए थे। कांग्रेस संविधान सभा की माँग कर रही थी। वायसराय लार्ड लिनलिथगो बीच का रास्ता अपनाना चाहते थे। रियासतों की ओर से कांग्रेस के प्रस्ताव का विरोध हो रहा था। उधर लाहौर अधिवेशन में 22 मार्च 1940 को मुस्लिम लीग ने अप्रत्यक्ष रूप से पहली बार पाकिस्तान की माँग उठाई। भारत-सचिव एमरी चाहते थे कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग आपस में तय कर सहमति का एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्ताव रखें। कांग्रेसाध्यक्ष मौलाना आजाद ने प्रस्ताव किया कि केन्द्र में एक राष्ट्रीय सरकार हो। जिन्ना ने इसे यह कहकर ठुकरा दिया कि भारत के मुसलमानों का विश्वास मौलाना खो चुके हैं। युद्ध चल रहा था। अत: वायसराय ने सात अगस्त 1940 को युद्ध सलाहकार परिषद की घोषणा कर दी और कहा कि युद्ध समाप्त होने के बाद भारतीयों के प्रतिनिधियों की एक समिति का गठन कर दिया जाएगा जो नए संविधान का प्रारूप प्रस्तुत करेगी। गांधीजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह की घोषणा कर दी। सत्याग्रह के समाचारों के प्रकाशन पर शासन से सेंसरशिप लागू कर दी। नेता गिरफ्तार होने लगे। वातावरण गरमा गया। चार फरवरी 1941 को अ.भा. समाचारपत्र सम्पादक सम्मेलन ने एक प्रस्ताव पास किया जिसमें शासन से निवेदन किया गया-''सामान्यत: महात्मा गांधी द्वारा जारी वक्तव्यों के प्रकाशन पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाए और ऐसे प्रकरणों में जहाँ ऐसा कदम उठाया जाना हो, उन्हें केन्द्रीय प्रेस सलाहकार समिति से परामर्श करके ही कोई आदेश पारित करना चाहिए।''

'हिन्दू' ने बहुत व्यावहारिक और प्रजातांत्रिक सुझाव देते हुए 11 फरवरी, 1941 को लिखा, ''वायसराय को चाहिए कि वे प्रान्तों के प्रधानमंत्रियों और भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों की बैठक बुलाकर उनसे सुझाव लें ताकि राजनीतिक गतिरोध समाप्त हो सके।'' उसने लिखा-''यदि ऐसा किया गया और सभी प्रान्तों में निर्वाचित सरकारें बहाल की गईं, परिणामत: राज्यों के प्रधानमंत्री स्वत: संवैधानिक मशीनरी की रूपरेखा निर्धारित करने वाली समिति में शामिल हो जाएंगे, जो जन-भावनाओं के मुताबिक भारत के लिए अच्छे संविधान का निर्धारण कर सकेगी।''

कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने वर्धा में 14 जुलाई, 1942 को सम्पन्न बैठक में ब्रिटेन से भारत छोड़कर चले जाने को कहा। यह प्रस्ताव 1700 शब्दों का था। सरकार कांग्रेस के प्रस्ताव के खिलाफ डटी हुई थी। उसने इलाहाबाद स्थित अ.भा. कांग्रेस कमेटी के कार्यालय से कांग्रेस कार्यसमिति के लिए गाँधीजी के प्रस्ताव और उस पर हुई चर्चा के कागजात जब्त कर उन्हें शासकीय विज्ञप्ति के साथ समाचारपत्रों में प्रकाशन के लिए छह अगस्त, 1942 को भेजा, जिसे 'हिन्दू' ने प्रकाशित करने से मना कर दिया। आठ अगस्त की देर रात्रि और नौ अगस्त को प्रात: कांग्रेस नेतागण गिरफ्तार कर लिए गए। पूरे देश में आन्दोलन भड़क उठा। सरकार ने प्रेस सेंसरशिप लागू कर दी।

'हिन्दू' ने लिखा-''रक्षा कानून के अन्तर्गत कांग्रेस के होने वाले जन-आन्दोलनों के सम्बन्ध में समाचारों के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगाने संबंधी आदेश जारी करने में भारत सरकार ने प्रेस की आजादी में सरकारी हस्तक्षेप की मर्यादाओं का उल्लंघन किया है, जो कि सभी लोकतांत्रिक देशों में भली-भाँति मान्य है।''

सभी प्रान्तीय सरकारों ने उपर्युक्त प्रतिबंधों के प्रकाश में कार्रवाई प्रारम्भ कर दी। तलाशियों और सम्पादकों की गिरफ्तारियों का दौर चल पड़ा। पाँच अक्टूबर को मुम्बई में कस्तूरी श्रीनिवासन की अध्यक्षता में अखिल भारतीय समाचारपत्र सम्पादक सम्मेलन की बैठक हुई, जिसमें प्रि-सेंसरशिप और अन्य प्रतिबंधों की निंदा करते हुए माँग की गई कि पाबंदियों को वापस लिया जाए।

विश्वयुद्ध के कारण कागज की कमी का असर 'हिन्दू' पर भी पड़ा। यह केवल छह पृष्ठों में निकल पा रहा था। अनेक स्तम्भों का आकार छोटा करना पड़ा। सम्पादकीय दो कालम से अधिक में नहीं छप पाता था। भाषणों की रिपोर्टिंग भी संक्षिप्त करनी पड़ी। अन्य मुद्रण सामग्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की कीमतें बढ़ जाने से कम पृष्ठों के बाद भी जनवरी, 1942 से 'हिन्दू' की कीमत बढ़ानी पड़ी। कीमत बढ़ाने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए 'हिन्दू' ने अपने पाठकों को बताया, ''उत्पादन सामग्री की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि होने पर भी उसका भार हमने अभी तक उठाया, परन्तु अब यह संभव नहीं है अत: इसका कुछ भार पाठकों पर डालना ही पड़ेगा। कीमत पहले एक आना से डेढ़ आना की गई थी परन्तु अप्रैल 1943 से दो आना करनी पड़ी, क्योंकि सरकार ने पृष्ठों के अनुसार कीमत रखने का बंधन लगा दिया था और 'हिन्दू' ने प्रति सप्ताह 32 पृष्ठ का शेड्यूल अपनाया था। यदि कीमत डेढ़ आना ही रखी जाती तब सप्ताह में केवल 24 पृष्ठ ही प्रकाशित किए जा सकते थे। देश के अन्य जाने माने पत्रों ने ऐसा ही किया था।''

प्रेस की स्वतंत्रता को कुचलने में सरकार ने तनिक भी कसर नहीं रखी। 1942 के अन्तिम दिनों में जब प्रो. भंसाली ने, म.प्र. के दो गाँवों में सैनिकों द्वारा नागरिकों पर किए गए अत्याचारों के खिलाफ आमरण अनशन प्रारम्भ किया तब सरकार ने इससे संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया। तब कस्तूरी श्रीनिवासन ने अ.भा. समाचारपत्र सम्पादक सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक दिसम्बर में मुम्बई में बुला ली ताकि इस प्रतिबंध से उपजी स्थिति पर विचार किया जा सके। स्थायी समिति की बैठक में मुख्य प्रेस सलाहकार भी उपस्थित हुए। जब समिति ने शासन से अपना प्रतिबंध वापस लेने का प्रस्ताव पारित किया तब मुख्य प्रेस सलाहकार ने बताया कि शासन ऐसा नहीं कर पाएगा। इस पर समिति ने कड़ा रुख अपनाते हुए शासन से असहयोग करने का प्रस्ताव पारित किया और समाचारपत्रों का आह्वान किया कि विरोध स्वरूप वे एक दिन पत्रों का प्रकाशन स्थगित रखें। साथ ही जब तक प्रतिबन्धात्मक आदेश वापस नहीं लिया जाता तब तक- (1) राज भवनों के कोई परिपत्र प्रकाशित न करें, (2) नव वर्ष सम्मान सूची, (3) ब्रिटिश सरकार, भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारों के सदस्यों के भाषणों के उन भागों को छोड़कर जो निर्णयों और घोषणाओं से सम्बन्धित हों, कोई भाग प्रकाशित न ही किए जाएं।

इन निर्णयों का 'हिन्दू' ने एक जनवरी, 1943 से शब्दश: पालन करना प्रारम्भ कर दिया। फलस्वरूप मद्रास सरकार ने जवाबी कार्रवाई करते हुए 'हिन्दू' के संवाददाताओं को दी जाने वाली समाचार-सुविधाएँ वापस ले लीं। 'हिन्दू' ने तीन जनवरी, 1943 को मुख्य सचिव के दिनाँक दो जनवरी के उस पत्र को जो 'हिन्दू' को लिखा गया था, ज्यों का त्यों प्रकाशित कर दिया। वह इस प्रकार था-''मुझे यह सूचित करने के लिए निर्देशित किया गया है कि आपने नव वर्ष के सम्मानों की सूची प्रकाशित नहीं की है, अत: राज्य शासन ने निर्णय लिया है कि आपके प्रतिनिधियों को सचिवालय जाकर पत्र-ज्ञप्तियाँ, प्रेस नोट और प्रेस को शासकीय तौर पर दी जाने वाली अन्य सामग्री प्राप्त करने सम्बन्धी सुविधा वापिस ले ली जाए। यह निर्णय तत्काल प्रभाव से लागू समझा जाए।'' इसी के तुरन्त बाद चार जनवरी को 'हिन्दू' ने अपने पाठकों को यह भी सूचित किया कि मद्रास सरकार ने उनके प्रतिनिधि को हवाई हमलों के स्थल तक जाने के लिए जो पहचान पत्र जारी किए थे, उन्हें निरस्त कर दिया गया है। देश के अन्य पत्रों के साथ 'हिन्दू' ने भी छह जनवरी, 1943 को अपना प्रकाशन स्थगित रखा। 13 जनवरी को समाचारपत्रों की शासन से लड़ाई समाप्त हुई जब कस्तूरी श्रीनिवासन ने यह घोषणा की कि मध्यप्रान्त सरकार ने प्रो. भंसाली के अनशन से सम्बन्धित समाचारों के प्रकाशन पर लगाई गई रोक का आदेश वापस ले लिया है। सरकार ने प्रो. भंसाली की यह माँग भी स्वीकार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ली कि सेना के सिपाहियों की ज्यादतियों की जाँच कराई जाएगी।

इस बीच गांधीजी ने जेल में तीन सप्ताह के उपवास की घोषणा कर दी। उनका कहना था कि उन्हें और उनके साथियों को बिना शर्त छोड़ दिया जाना चाहिए। परन्तु सरकार तो 1942 के आन्दोलन को कुचलना चाहती थी और गांधी को छोड़ने के पक्ष में नहीं थी। वायसराय कार्यकारी परिषद के तीन सदस्यों-एम.एस.अड़े, एच.पी. मोदी और एन.आर. सरकार ने इस मुद्दे पर 18 फरवरी को इस्तीफा दे दिया। हिन्दू ने इस कदम का स्वागत किया। 'हिन्दू' ने लिखा, ''सरकार के हिमायती चाहे कितनी कोशिश करें परन्तु उन्हें दुनिया भर में फैले इस विश्वास को असत्य करने में कोई सफलता नहीं मिलेगी कि इन तीनों सदस्यों के इस्तीफों का महत्व कितना अधिक है या उनका भारत में विद्यमान स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।'' इस पूरी स्थिति पर 'हिन्दू' ने 23 फरवरी के अंक में 'आन द ब्रिंक' (मरणासन्न) शीर्षक के अन्तर्गत लिखा-''भारत आज सर्वनाश की कगार पर है।'' इसी समय गांधीजी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जो शासकीय विज्ञप्ति जारी की गई, उसमें बताया गया कि यदि गाँधी ने अनशन तत्काल समाप्त नहीं किया तब उन्हें बचाने में देर हो जाएगी। इस पर भी सरकार अडिग रही। 'हिन्दू' के बार-बार लिखने पर भी सरकार के कानों पर जूँ नहीं रेंगी। 25 फरवरी को कस्तूरी श्रीनिवासन ने पुणे के आगाखाँ पैलेस में जाकर गांधीजी से भेंट की। इस भेंट का समाचार 'हिन्दू' में इस प्रकार प्रकाशित हुआ- ''गांधीजी ने श्रीनिवासन को अपने पास चारपाई पर बैठने को कहा और उनसे तीन मिनट तक बात की। उन्होंने उनसे कहा कि वे सम्पादक सम्मेलन और दिल्ली सम्मेलन की कार्रवाई का अनुपालन कर रहे हैं।'' गांधीजी ने अपना उपवास पूरे तीन सप्ताह के बाद तीन मार्च को ही तोड़ा। सभी देशवासियों ने राहत की साँस ली। गांधीजी ने 15 मई, 1943 को ब्रिटिश नरमदल के नेता विस्काउंट सेमुअल को 'हिन्दू' में आठ अप्रैल को प्रकाशित उनके भाषण की कतरन के साथ पत्र लिखा जिसमें लार्ड सेमुअल ने हाऊस आफ लार्ड्स में गांधीजी के उपवास की आलोचना की थी। अपने पत्र में गांधीजी ने अपने उपवास की स्थितियों को समझाते हुए उसे न्यायोचित बताया। परन्तु भारत सरकार ने गांधीजी के इस पत्र को इंग्लैंड जाने से ही रोक दिया।

कस्तूरबा गांधी का 22 फरवरी 1944 को बन्दी के रूप में आगाखां पैलेस में निधन हो गया। गांधीजी को जब मई, 1944 में (कैद में) मलेरिया हो गया तब पूरे देश में उनकी मुक्ति की माँग उठ खड़ी हुई। 'हिन्दू' ने सम्पादकीय लिखकर यह आरोप लगाया कि गांधी के स्वास्थ्य के बारे में जनता को सही जानकारी नहीं दी जा रही है। अंततः गांधीजी को सात मई, 1944 को बीमारी के कारण बिना शर्त रिहा कर दिया गया। परन्तु अन्य कांग्रेस नेताओं को इसलिए नहीं छोड़ा जा रहा था कि वे 'अगस्त प्रस्ताव' को वापस नहीं ले रहे थे और उनका कहना था कि उनकी गिरफ्तारी के बाद हुई हिंसा के लिए वे जिम्मेदार नहीं हैं। उधर जिन्ना और राजगोपालाचारी की बातचीत में प्रगति नहीं हो पा रही थी। बंगाल के नेता विभाजन के फार्मूले से अधिक खिन्न और उत्तेजित थे, क्योंकि कर्जन के जमाने में हुए बंगाल के विभाजन की आग में वे भुक्तभोगी रह चुके थे। अगस्त 1944 में गांधीजी मुम्बई में जिन्ना से मिले। यह वार्ता कई हिस्सों में कई सप्ताह चली। दोनों के बीच की चर्चा की प्रगति गुप्त थी। 'हिन्दू' के मुम्बई प्रतिनिधि ने यह समाचार भेजा, ''शायद राजगोपालाचारी के प्रस्ताव के आसपास ही वार्ता की जा रही है। जैसी कि गांधीजी ने प्रेस से अपील की है कि बातचीत की प्रगति के बारे में कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अटकल न लगाएं, सिवाय उनके चेहरों पर उम्मीद पढ़ने के मैं वार्ता के रुख के बावत् कुछ नहीं कहता।'' परन्तु कोई नतीजा नहीं निकल सका। इस पर राजगोपालाचारी ने एक अन्य सुझाव दिया कि अन्तरराष्ट्रीय मध्यस्थता से मामला हल किया जा सकता है। नवम्बर, 1944 में 'हिन्दू' ने लिखा-''यदि ब्रिटेन सचमुच भारत से अपनी जिम्मेदारियों से मुक्ति पाना चाहता है और उसे लगता है कि आपसी बातचीत से निकट भविष्य में कोई हल संभव नहीं है, तब वह इन मुद्दों को मध्यस्थों के एक बोर्ड को क्यों नहीं सौंप देता। यह बोर्ड उन व्यक्तियों का हो सकता है जिनमें भारत के प्रमुख दलों और उसका स्वयं का विश्वास हो।'' इस बीच रूजवेल्ट ने विलियम फिलिप को अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा। उसने भी अपना प्रस्ताव रखा, परन्तु कोई नतीजा नहीं निकला। गांधीजी के राष्ट्रीय सरकार के प्रस्ताव को भारत मंत्री एमरी ने अस्वीकृत कर दिया। उधर सात मई, 1945 को यूरोप का युद्ध समाप्त हो गया। 'हिन्दू' की पैनी निगाह दुनिया की उन सभी घटनाओं पर थी जो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से भारत को प्रभावित करती थीं। उसने पत्रकारिता के माध्यम से अपने पाठकों को न केवल सूचित किया वरन् उन्हें सोचने-समझने का वह आधार भी दिया जिससे उनकी दृष्टि परिमार्जित हुई।

जब 14 जून, 1945 को लार्ड बावेल ने सुरक्षा को छोड़कर वायसराय की कार्यकारी परिषद का भारतीयकरण करने के प्रस्ताव की घोषणा की, तब 'हिन्दू' ने लिखा-''जैसा अपर्याप्त सरकार का प्रस्ताव है, यह प्रतीत होता है कि देश के सर्वोत्तम हित में यह होगा कि कांग्रेस और लीग को चाहिए कि वे सरकार के वायदे के दृष्टिगत ऐसी कार्ययोजना पर काम करें जिससे शीघ्रातिशीघ्र संभव समय में देश की पूर्ण स्वतंत्रता सुनिश्चित हो। स्पष्टत: हमें कोई और विकल्प नजर नहीं आता।''

इसी प्रस्ताव के लिए शिमला में बैठक हुई परन्तु उसमें कांग्रेस और मुस्लिम लीग में सदस्य सँख्या पर सहमति नहीं हो सकी और बैठक 14 जुलाई तक के लिए स्थगित कर दी गई। परन्तु साथ ही बैठक में भाग लेने वाले दलों से कहा गया कि वे अपने-अपने दलों के नामों की सूचियाँ वायसराय को प्रस्तुत करें ताकि उनमें से वे नामों का चयन कर सकें। इसके बाद कांग्रेस की कार्यसमिति की बैठक मौलाना आजाद की अध्यक्षता में शिमला में हुई जिसके बारे में 'हिन्दू' ने लिखा- ''कांग्रेस के हलकों में सम्मेलन के अनुकूल परिणाम को लेकर आशा की लहर है। कांग्रेस नेता सोचते हैं कि वर्तमान प्रस्ताव भारत के नए संविधान की संरचना के लिए निकट भविष्य में संविधान सभा का आधार तैयार करने के लिए उपयुक्त है।'' परन्तु 'हिन्दू' ने सही स्थिति जनता के सामने रखते हुए 10 जुलाई को लिखा-''वायसराय तो पूरी मुस्लिम जनता के हितों के संरक्षण के लिए चिंतित हैं-उन्हें मुस्लिम लीग की साख या प्रभाव से कोई मतलब नहीं, क्योंकि वह तो देश के मुसलमानों की अनेक संस्थाओं में से एक है।'' क्योंकि जिन्ना अपनी शर्तें मनवाना चाहते थे और वायसराय इसके लिए तैयार नहीं थे, अत: जब मौलाना आजाद वायसराय से मिले तब इसकी रिपोर्टिंग 'हिन्दू' ने इस प्रकार की-''आजाद को बता दिया गया कि मुस्लिम लीग के रवैये को देखते हुए एक स्वीकार्य कार्यकारी परिषद का गठन असंभव है और ऐसे में सम्मेलन की कार्यवाही जारी रखने से गतिरोध की समाप्ति का कोई हल निकलने वाला नहीं है। और ऐसा ही हुआ, शिमला सम्मेलन समाप्त हो गया। वहाँ भारत के साथ-साथ दुनिया भर के पत्रकारों का जमावड़ा था। किसी के हाथ कुछ नहीं लगा। पर एक धारणा यह जरूर घर कर गई कि कुछ भारतीय नेताओं ने, जिनमें गांधीजी और नेहरू भी थे, विदेशी पत्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिनिधियों को अलग से साक्षात्कार दिए। कहा यह गया कि यह उनकी हीनभावना का द्योतक था जिसका नेहरू ने प्रतिवाद किया। जुलाई 1945 के अंत में ब्रिटेन के चुनावों में चर्चिल और उनकी पार्टी हार गई। लेबर पार्टी जीती। 'हिन्दू' ने इस जीत का स्वागत किया और पूरे देश की आशाओं को प्रतिबिम्बित करते हुए लिखा-''जब तक लेबर पार्टी स्वतंत्रता की दिशा में आगे नहीं बढ़ती और जब तक स्वतंत्रता तुरन्त सभी लोगों को हासिल नहीं हो जाती, वह विश्व शान्ति और समृद्धि का अपना मूल उद्देश्य प्राप्त नहीं कर सकती।'' 'हिन्दू' ने बिना समय गँवाए भारत के राजनीतिक बंदियों को तत्काल रिहा करने की अपील भी की। इसी बीच अमेरिका ने हिरोशिमा और नागासाकी को एटमबम से तहस नहस कर दिया। इस पर 'हिन्दू' चुप कैसे रहता? उसने लिखा-''अमेरिकियों ने विध्वंसक हथियारों की लंबी सूची में एटमबम को भी जोड़ दिया। यह भयंकरता और नहीं तो क्या है कि शासकों की मूर्खता से जापानियों को हजारों टुकड़े कर उड़ा दिया जाए।''

नए ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने 19 फरवरी, 1946 को तीन व्यक्तियों का एक केबिनेट मिशन भारत भेजने की लंदन में घोषणा कराई-(क्रिप्स, पेथिक लारेन्स और ए.व्ही. अलेक्जेण्डर)। इसी के बाद 17 मार्च को एटली ने घोषणा की ''सरकार की इच्छा भारत में अन्तरिम सरकार की स्थापना करने की है। जहाँ, नई सरकार की रूपरेखा का निर्धारण किया जा रहा है, अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों की भावनाओं को कुचलने की अनुमति नहीं दी जाएगी।'' 'हिन्दू' ने देश के अल्पसंख्यकों को सलाह दी कि वे भी स्वीकार्य संविधान बनाने में सहभागिता करें। 'हिन्दू' ने देश में ऐसा वातावरण बनाने में योगदान दिया जिसमें संविधान की तैयारी सामंजस्य के वातावरण में पूरी हो सके। केबिनेट मिशन 24 मार्च 1946 को दिल्ली पहुँचा। इसी समय 'स्वदेशमित्रन' के सम्पादक सी.आर. श्रीनिवासन ने 'हिन्दू' में केबिनेट मिशन के बारे में एक सुन्दर शब्द चित्रण किया। उन्होंने लिखा-''दिल्ली इस समय अटकल नगरी बनी हुई है। केबिनेट मिशन का हर शब्द और व्यवहार गम्भीरता से लिखा जा रहा है, उसकी व्याख्या की जा रही है।'' मिशन की बैठकें दिल्ली और शिमला में हुई परन्तु अंतरिम सरकार पर कोई सहमति न होने से सरकार ने स्थिति पर स्वयं निर्णय लेना ठीक समझा और अपना स्वयं का प्रस्ताव रखा। कांग्रेस ने 26 जून के इस प्रस्ताव से एकमात्र दीर्घकालीन योजना को मान्य किया और अंतरिम सरकार के गठन को अमान्य किया। परन्तु इसी कांग्रेस ने 12 सदस्यों की अंतरिम सरकार जिसके मुखिया नेहरू हुए, पर सहमति दे दी। मुस्लिम लीग पहले तो इसमें शामिल नहीं हुई पर अक्टूबर, 1946 में शामिल होने के लिए तैयार हो गई। बंगाल में दंगे भड़क गए। पूरा घटनाक्रम तेजी से करवटें ले रहा था। नौ दिसम्बर को संविधान सभा की बैठक हुई और डा. राजेन्द्र प्रसाद उसके अध्यक्ष चुने गए।

जब अँगरेजों ने 20 जनवरी, 1947 को यह घोषणा की कि वे जून, 1948 के पहले भारत छोड़कर चले जाएंगे, तब 'हिन्दू' ने इस समाचार को मुख्य पृष्ठ पर बड़े टाइप में बड़ा शीर्षक-''ब्रिटेन टू क्विट इंडिया बाइ जून 1948'' देकर प्रकाशित किया। इस निर्णय का कारण यह था कि भारत के जिम्मेदार अधिकारियों ने अँगरेजों को यह बता दिया था कि 1948 के बाद भारत में राज करना असम्भव हो जाएगा।

इसी के बाद पंजाब में दंगे भड़क उठे, जिसके पीछे मुस्लिम लीग का हाथ था। आठ मार्च 1947 को कांग्रेस की कार्यकारिणी सभा की बैठक हुई, जिसमें पंजाब को दो प्रान्तों में बाँटने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का निर्णय हुआ और यहीं से पाकिस्तान बनने के सोच को जड़ें मिल गईं। 24 मार्च, 1947 को लार्ड बावेल के स्थान पर लार्ड माउंटबेटन वायसराय हो गए।

इस समय गांधीजी बिहार के दंगाग्रस्त इलाकों का दौरा कर रहे थे। नए वायसराय ने गांधीजी को दिल्ली बुलाया। पटना के एक पत्र ने प्रकाशित कर दिया कि गांधीजी ने वायसराय को उत्तर भेज दिया है। गांधीजी इससे खफा हो गए। जब 'हिन्दू' के प्रतिनिधि ने गांधीजी से वस्तुस्थिति जानना चाही तो गांधीजी ने कुछ भी कहने से इंकार कर दिया। इस पर 'हिन्दू' ने गांधीजी को भी आड़े हाथों लिया और लिखा-''इस घटना से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिन अपराधों के लिए राजनीतिज्ञ अधिकतर प्रेस-प्रतिनिधियों को कोसते हैं वे अपराध बहुधा राजनीतिज्ञों द्वारा पूरी सच्चाई उजागर न करने के कारण ही होते हैं। प्रेस प्रतिनिधि तब तो अच्छा माध्यम हो जाता है जब कोई नेता अपने विचार जनता तक पहुँचाना चाहता है, परन्तु वही उस समय अभिशाप बन जाता है जब नेता जानकारी छिपा लेते हैं और पत्रकार को अंदाज लगाकर लिखना पड़ता है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि पत्रकार को नेता की गोपनीय बातों को जानने का अधिकार है, परन्तु उसे यह अधिकार तो है ही कि जब उसे जानकारी न दी जाए तो वह जनता को उन सम्भावनाओं की जानकारी दे जो सच तक पहुँच रही है।''

गांधीजी अंत तक विभाजन के खिलाफ रहे-वे चाहते थे कि पहले अँगरेज भारत छोड़कर चले जाएँ। परन्तु ऐसा न हो सका। कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने तीन जून को वायसराय को यह सहमति दे दी कि वे विभाजन के लिए तैयार हैं। अँगरेजी शासन ने इसे मंजूर करते हुए 15 अगस्त, 1947 का दिन विभाजन और स्वतंत्रता के लिए नियत कर दिया। गांधीजी को दोनों पक्षों ने दरकिनार कर दिया।

साप्ताहिक *'अख़बारों का क़िबलागाह'* का प्रकाशन लाहौर से सन 1878 में किया गया था। इसके संस्थापक मौलवी फ़तहउद्दीन 'बिस्मिल' थे। प्रकाशक मौलवी फ़ीरोज़उद्दीन 'घायल' एवं सम्पादक मौलवी निहालउद्दीन थे। तेलुगु साप्ताहिक *'जन्म भूमि'* का प्रकाशन 1878 में विजयवाड़ा से हुआ।

जयपुर गजट

वर्ष 1878 में जयपुर से *'जयपुर गजट'* निकला। यह पत्र काफी दिनों तक प्रकाशित हुआ। लेकिन सरकारी पत्र होने के कारण उसका प्रभाव नहीं बन सका। बालमुकुन्द गुप्त ने पत्रकारिता के इतिहास में उसकी समीक्षा करते हुए लिखा था-''जयपुर में प्रेस चलाने की स्वाधीनता नहीं है। इससे वहाँ कोई प्रेस नहीं खोल सकता। बड़ी मुश्किल से बालचन्द्र नाम का एक प्रेस खोला गया है, पर वह पराधीन है, कोई अख़बार उसमें नहीं छप सकता। राजनीतिक चर्चा से जयपुर दरबार बहुत घबराता है। इससे कोई आदमी जयपुर में स्वाधीन समाचारपत्र नहीं निकाल सकता। बाबू कांतिचन्द्र बड़े राजनीति विशारद होने पर भी अख़बारों के शत्रु थे। किसी आदमी को स्वतंत्रता से बोलने की मजाल न थी। वह समय अब चला गया है तथापि जयपुर के हाकिम लोग अब भी स्वतंत्रता को पसंद नहीं करते। पुरानी संकीर्णता को अपने साथ घसीट रहे हैं। जयपुर दरबार चाहे तो 'जयपुर गजट' अब भी उन्नत हो सकता है। वहाँ अच्छे लेखकों का अच्छा समागम है।'' 'चांद' पत्रिका में उल्लेख है-''महाराज रामसिंह बहादुर का शासन-काल रामराज्य कहलाता था। उन्होंने जयपुर नगर बसाया, और प्रेस खोलकर अर्द्ध साप्ताहिक पत्र निकलवाया। इसके सम्पादक महेन्द्रनाथ सेन थे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंद्रनाथ बनर्जी ने 1878 में चिनसुरा से *'पंचानंद'* नाम का एक व्यंग्य मासिक शुरू किया था। कुछ दिन बन्द रहकर यह मासिक कोलकाता से पाक्षिक स्वरूप में निकलने लगा। यह पत्र 1882 में बन्द हुआ।

भारत सुदशा प्रवर्तक

आर्य समाज की स्थापना के बाद 1878 में फर्रुखाबाद से *'भारत सुदशा प्रवर्तक'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। प्रारम्भ में सम्पादक गोपाल हरि पुणतांबेकर थे। बाद में गणेशप्रसाद शर्मा ने सम्पादन किया। पत्र का आकार 25 गुणित 15 से.मी. था। इसका वार्षिक मूल्य दो रुपये था। 'भारत सुदशा प्रवर्तक' के 1881-82 के अंकों में विभिन्न नगरों में आर्य समाज की स्थापना तथा स्वामी दयानंद सरस्वती के भ्रमण का वृत्तांत छपता रहा। इसी के आधार पर स्वामीजी के देशाटन वृत्तांत को प्रामाणिक रूप देने में सहायता मिली। विभिन्न मतावलम्बियों से होने वाले शास्त्रार्थों तथा गोरक्षा आन्दोलन विषयक लेख तथा सूचनाएँ इस पत्र में छपती थीं। यह पत्र राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रबल समर्थक था। इस पत्र में साहित्य समालोचना का स्तंभ रहता था। इसके अंतर्गत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के ग्रंथों की समीक्षा छपी। भारतेन्दु के मित्र तथा अनुयायी, गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य तथा स्वामी दयानंद के प्रशंसक राधाचरण गोस्वामी की दो पुस्तकों-'नापित स्तोत्र' तथा 'दामिनी दीपिका' की समालोचना भी 'भारत सुदशा प्रवर्तक' ने प्रकाशित की थी। उस युग के प्रमुख हिन्दी पत्रों- 'ब्राह्मण' (सम्पादक प्रतापनारायण मिश्र), आनंद कादम्बिनी (सम्पादक बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन) तथा राधाचरण गोस्वामी द्वारा सम्पादित 'भारतेन्दु' का परिचयात्मक विवरण इस पत्र में छपा था। जुलाई 1912 में इसे साप्ताहिक का रूप दिया गया। अप्रैल 1915 तक यह पत्र प्रकाशित होता रहा। 'भारत सुदशा प्रवर्तक' के बंद होने की सूचना 'हिन्दी सर्वस्व' तथा 'जयाजी प्रताप'[1] के अंक में छपी थी- ''आजकल हिन्दी के ऊपर शनिग्रह की दृष्टि बड़ी क्रूर पड़ रही है, इसके दो साप्ताहिक पत्र 'भारत सुदशा प्रवर्तक' और 'सद्धर्म प्रचारक' बंद हो गए हैं।''

बिहार का पहला संस्कृत पत्र *'विद्यार्थी'* सन 1878 में पटना से निकला। यह मासिक पत्र सन 1880 तक पटना से नियमित निकलता रहा और बाद में उदयपुर चला गया जहाँ से पाक्षिक रूप में प्रकाशित होने लगा। कुछ समय के बाद यह पत्रिका श्रीनाथद्वारा से प्रकाशित होने लगी। संस्कृत भाषा के इस पहले पाक्षिक के सम्पादक दामोदर शास्त्री थे। इसमें विद्यार्थियों की आवश्यकता और हित को ध्यान में रखते हुए सामग्री प्रकाशित की जाती थी। विद्यार्थी पत्रिका आठ पृष्ठों की थी।

1879

सार सुधानिधि

13 जनवरी 1879 को *'सार सुधानिधि'* का प्रकाशन सदानंद मिश्र के सम्पादन में हुआ। दुर्गाप्रसाद मिश्र की सम्पादन-प्रकाशन में मुख्य भूमिका थी। गोविंद नारायण मिश्र और शंभुनाथ मिश्र सहयोगी थे। यह उत्कृष्ट साप्ताहिक पत्र था। इसके तेवर फिरंगियों की कुचालों के विरोध में तीखे रहते थे। 'यमलोक की यात्रा' और 'मार्जार मूषक' जैसे लेखों के माध्यम से 'सारसुधानिधि' ने अँगरेजों की रीति-नीति पर तीखे प्रहार किए। सम्पादकीय टिप्पणियाँ प्रखर होती थीं। यह पद्यांश एक उदाहरण है-

1. जयाजी प्रताप, सितम्बर 1915

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

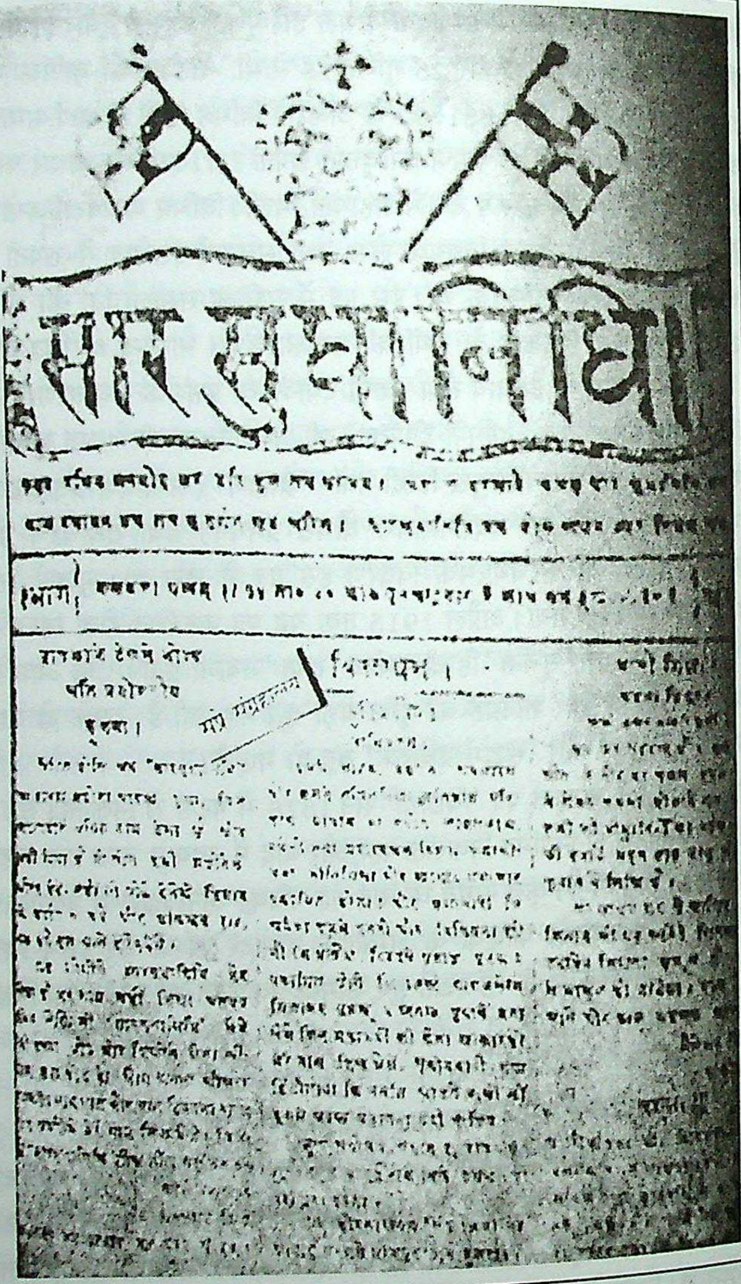

सार सुधानिधि

सार सुधानिधि, जनवरी 1879

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भीतर भीतर सब रस चूसै, बाहर से तन मन धन मूसै
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि साजन? नहिं अँगरेज।।"

कोलकाता से प्रकाशित 'सारसुधा निधि' ने समसामयिक राजनीतिक-सामाजिक विषयों पर लेख तथा टिप्पणियों के माध्यम से स्वतंत्र एवं निर्भीक विचार व्यक्त किए।

'सारसुधा निधि' में साहित्य, दर्शन, विज्ञान, राजनीति, वाणिज्य आदि सभी विषयों का समावेश रहता था। इसके प्रकाशन पर 'भारतमित्र' ने लिखा था- "जब तक किसी भाषा में बहुत-सी पुस्तकें और समाचारपत्र प्रकाशित नहीं होते तब तक उस भाषा की उन्नति नहीं होती। आजकल की अवस्था से जान पड़ता है कि हमारी हिन्दी भाषा भी इतने दिनों तक जिसका निरादर होता था, उसका भी अब सौभाग्य-सूर्य उदित होना चाहता है। आज कई सप्ताह से यहाँ पर 'सारसुधा निधि' नामक एक हिन्दी भाषा का समाचारपत्र हमारे मित्रवर श्रीयुक्त पं. सदानन्द मिश्र द्वारा प्रकाशित होता है। इसके प्रस्तावक अति उत्तम और उनको पढ़ने से बहुत-सा लाभ हो सकता है। ईश्वर करे यह पत्र दीर्घ आयु होकर अपना कर्तव्य साधन में बलवान होय।"

पटना के 'बिहार बन्धु' ने लिखा- "विषय इसमें हर तरह के साहित्य, विज्ञान और राजनीति के छपते हैं। भाषा में बंगलेपन की बू के सिवा कोई एब नहीं है। खैर जो हो इनके पढ़ने वाले इससे बहुत सी बातें सीखेंगे, इसमें तिलभर भी शक नहीं है। ईश्वर इसे चिरंजीव रखे।"

अलीगढ़ से प्रकाशित 'भारत बन्धु' ने लिखा- "आज हम अपने भाग्य की कहाँ तक सराहना करें जिधर को अपनी मेज़ पर दृष्टि डालते हैं किसी न किसी नवीन पत्र के हमको दर्शन होते हैं- हमारी हिन्दी भाषा के कुछ दिन अच्छे ज्ञात होते हैं- कि इसमें अब समाचारपत्रों की दिन दिन वृद्धि होती है। 'सारसुधा निधि' नामक नवीन हिन्दी भाषा का पत्र हमारे सम्मुख वर्तमान है। भाषा इसकी उत्तम और मधुर है, विषय भी सब अच्छे हैं। कलेवर भी बड़ा है, मूल्य अधिक नहीं है। ईश्वर इसकी दिन दिन वृद्धि करे। हम अपने 'भारत बन्धु' को बदले में समर्पण करते हैं।"

'सारसुधा निधि'[1] ने 'जहाँ लखी वहाँ होरी' के माध्यम से तत्कालीन स्थिति का चित्रण किया- "हिन्दुस्तान में आगे क्या था? होली, आनंद से चंदन, केशर कपूरों की बौछार पड़ा करती थी, गाने बजाने का ठाठ जुड़ता था जहाँ देखिए वहाँ आनंद बरसता था, युद्धों के सहारे पूर्व पुरुषगण केसरिया सजे, हाथों में कंगन बांधे मतवाले झूमझूम कर बंदूकों की पिचकारी और गोले के कुमकुमे चलाते थे और सब शत्रुओं को स्वाहा करके कहते थे होली है। और भारतवर्ष का नाश भी इसी से हुआ। लोगों में फूट हुई, मुसलमान बुलाए गए, जयचंद के मुँह में चोआ चंदन पोता गया होली है।-और भला काबुल में क्या हो रहा है? होली। पतझार हो गर्म लोगों के मुँह पर सरसों फूली है खास।"

'सारसुधा निधि' के बारे में 'ग्वालियर गजट'[2] ने लिखा- "कलकत्ता, हम निहायत खुशी से लिखते हैं कि यह अखबार जो चंद रोज किसी वजह से मौकूफ रहा, फिर जारी हुआ है ब ग़र्ज तबादला हमारे पास पहुँचा। बड़ी खुशी से उसको देखा कौन सी खूबी इस अखबार में नहीं है जिसकी निसवत तारीफ़ न की जाय क्या क्या उम्दा आर्टीकल रिफ़ाह व फ़िलाह आम के दर्ज होते हैं और फिर कागज़ वैसा ही पुर्कार- छापा टैप वैसा ही साफ़ ज़बान भाषा संस्कृत

1. सार सुधानिधि, 3 मार्च 1878, आठवाँ अंक
2. ग्वालियर गजट, 15 अप्रैल, 1880

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमेज़-अडीटर इस अखबार के सदानन्द जी मिश्र बड़े लायक़ फायक और इल्म संस्कृत में दस्तगाह कामिल रखते हैं- इस उम्दा अख़बार को देखकर हम दुआ करते हैं कि पाक परवर दिगार इस नये पौदे को जो मुद्दत बाद सरसब्ज हुआ है नाक़दरदानी की बाद तुन्द से महफूज रखे और रोज़विह सरबलन्दी व ताज़गी नसीब करके समेर बखुश मालिक व नाज़रीन करे।''

'सारसुधा निधि' की खबरों का एक नमूना- ''सैदपुर जिला गाजीपुर इस परगने के रामपुर नामी गोदाम में 'जान जून साहब ने' एक किरानी क्रिस्तान को 100) मासिक वेतन पर अपने यहाँ गोदाम के बन्दोबस्त के लिए नियत कर रक्खा है, वह किरानी ऐसा अत्याचारी है कि जहाँ गाय को देखा झट गोली चढ़ाकर मारा वह उसी जगह प्राण त्याग कर देती है सुनने में आया कि नरुद्दीपुर के किसी एक असामी की गाय को गोली मारी है वह असामी पुलीस में इत्तिला करके मजिस्ट्रेट गाजीपुर के यहाँ नालिश की है और वह गाय सैदपुर के डाक्तरखाने में आई थी और उसके जांघ में से गोली भी निकाली गई है हाय रे अत्याचार। पूर्ण आशा है कि परगने सैदपुर के सब रईस इसके सहायक होंगे और मजिस्ट्रेट गाजीपुर इस का भलीभाँति सुविचार करेंगे और गोरक्षणी सभा इस ओर ध्यान देकर अवश्य अपनी राय प्रकट करेगी, क्योंकि बहुत अत्याचार के पश्चात यह नालिश हुई है और गोरक्षिणी सभा गाजीपुर का ध्यान देना तो अति ही आवश्यक है।''[1]

अपनी उग्र टिप्पणियों, सरकार की नाराजगी तथा आर्थिक कठिनाई के कारण सन 1890 में 'सारसुधा निधि' का प्रकाशन बन्द हो गया।

सन 1879 में गुड़ी पड़वा के दिन बुरहानपुर से आरम्भ होकर खण्डवा में स्थापित होने वाले '*सुबोध सिंधु*' ने साठ साल की जीवन यात्रा पूरी की। पत्र के संस्थापक लक्ष्मण अनंत प्रयागी थे। यह मराठी पत्र लिथो मुद्रण से छपता था। सन 1905 से टाइप पर निकलने लगा। बीच में कुछ पृष्ठ हिन्दी में दिए जाने लगे। सन 1911 से 'सुबोध सिंधु' हिन्दी का पत्र हो गया। सन 1940 में बंद हो गया। यह हर बुधवार को छपता था। वार्षिक मूल्य दो रुपये था।

कोलकाता से मासिक पत्रिका '*कलकत्ता पंच*' का प्रकाशन जनवरी 1879 में किया गया था। यह आठ पृष्ठ की पत्रिका थी। प्रकाशक मौलवी दायमउल्ला तथा सम्पादक गुलाम सुबहान खां थे। पत्रिका का वार्षिक शुल्क एक रुपया चौदह आना था।

12 पृष्ठ के मासिक '*आइना-ए-रियाज़ी*' का प्रकाशन जनवरी 1879 में शाहजहाँपुर से हुआ। प्रकाशक लाला बख़्तावर सिंह थे। सम्पादक अवधबिहारी शरण मिश्र थे। आर्यभूषण प्रेस में छपने वाले इस पत्र का वार्षिक शुल्क बारह आना था। सियालकोट से 6 पृष्ठीय मासिक पत्रिका '*ख़िज़्र-ए-हिन्द*' जनवरी 1879 में प्रकाशित हुई। इसके प्रकाशक मुंशी दीवानचंद तथा सम्पादक लाला हजारीलाल थे। रिफ़ाएआम प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क एक रुपया चौदह आना था। जनवरी 1879 में गुजरांवाला से विधि सम्बन्धी मासिक '*आईन-ए-हिन्द*' का प्रकाशन किया गया। सम्पादक मौलवी फ़ाख़र हुसैन वकील तथा प्रबन्धक मुंशी ब्रजलाल थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया दो आना था। बारह पृष्ठ का यह पत्र ज्ञानप्रेस में छपता था।

32 पृष्ठों की आर्य समाजी मासिक पत्रिका '*आर्य समाचार*' मेरठ से जनवरी 1879 में निकली। सम्पादक आनन्दलाल तथा प्रबन्धक मुंशी कल्याणराय थे। विद्यादर्पण प्रेस में छपने वाली इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क एक रुपया चौदह आना था। कुछ साल बंद रहने के बाद

1. सार सुधानिधि, 19 अगस्त 1889

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू घासीराम ने सन 1917 में 'आर्य समाचार' पुन: प्रकाशित किया। इस पत्र के प्रत्येक अंक के प्रथम पृष्ठ पर वेदमंत्रों की व्याख्या की जाती थी।

बनारस से 16 जून 1879 को चार पृष्ठ का साप्ताहिक पत्र *'सुबह बनारस'* निकला। यह पत्र सोमवार को प्रकाशित होता था। इसके प्रकाशक भूतनाथ तथा सम्पादक मिर्ज़ा मोहम्मद हुसैन फ़ायज़ थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये दस आना था। साप्ताहिक *'मुंबई पंच'* 20 जुलाई 1879 को प्रकाशित हुआ।

सीतापुर से सैयद मोहम्मद सादिक़ वकील ने मासिक पत्रिका *'तहज़ीब-उल आसार'* का प्रकाशन एक सितम्बर 1879 को किया था। इसके सम्पादक मुंशी मुन्नीलाल बिलग्रामी थे। 16 पृष्ठ की यह पत्रिका सादिक़ प्रेस में छपती थी। वार्षिक शुल्क एक रुपया दो आना था। इस पत्र में समाज सुधार, मसलन शादी-विवाह में कम खर्च करने तथा विधवा विवाह आदि पर प्रेरक सामग्री प्रकाशित की जाती थी। इसी पत्रिका का मासिक परिशिष्ट 'ज़ख़ीरा अशरफ़' एक अप्रैल 1881 को लखनऊ से निकला जिसके सम्पादक हाजी सैयद मोहम्मद अशरफ नक़वी थे।

सीतापुर से शैक्षिक मासिक पत्रिका *'ख़ज़नियत-उल उलूम'* का प्रकाशन सितम्बर 1879 में किया गया था। मुंशी मुन्नीलाल इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। सादिक़ प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क एक रुपया दो आना था। आगरा से सन 1879 में मासिक पत्रिका *'आस्तान-ए-हिकमत'* का प्रकाशन किया गया। इसके प्रकाशक सैयद अल्ताफ़ अली थे। मेडिकल प्रेस में छपने वाले इस पत्र का वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। विष्णु जनार्दन ठाकुर ने *'गंगालहरी'* का प्रकाशन सन 1879 में किया।

मासिक पत्रिका *'तेरहवीं सदी'* का प्रकाशन आगरा से अक्टूबर 1879 में किया गया था। मौलवी नासिर अली प्रकाशक थे। इसे आगरा प्रेस में मुद्रित कराया जाता था। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। यह पत्रिका बीस पृष्ठों की थी। पत्रिका में शिक्षा तथा ज्ञान-विज्ञान, इतिहास सम्बन्धी सामग्री का प्रकाशन किया जाता था। राजनीति पर कम ही लेख छपते थे। पत्रिका के दो सम्पादक थे। गद्य का सम्पादन नासिर अली तथा पद्य का सम्पादन रहीम उल्ला 'सबा' अकबराबादी करते थे। 'तेरहवीं सदी' उर्दू की श्रेष्ठ पत्रिका थी।

'धार दरबार गजट' का प्रकाशन सन 1879 में हुआ। यह धार रियासत का सरकारी गजट था, जिसमें आदेश, नोटिस, परिपत्र छापे जाते थे। 1879 में अँगरेजी साप्ताहिक *'डेक्कन स्टार'* निकला। आगे चलकर 'डेक्कन स्टार' पत्र का विलय 'मराठा' में किया गया। 'डेक्कन स्टार' के सम्पादक-प्रकाशक नामजोशी थे।

कोलकाता से मौलवी वासिमउल्ला तथा गुलाम सुबहान ने 1879 में उर्दू पत्र *'बशीरी'* का प्रकाशन किया। दस दिन के अन्तराल से प्रकाशित होने वाला *'मज़हर-उल-अजायब'* चेन्नै से सन 1879 में निकला। इसके प्रकाशक मौलवी अबुल हामिद सुल्तान महमूद हन्फी 'हम्द' एवं सम्पादक गुलाम दस्तगीर थे। वार्षिक शुल्क दस रुपये दो आना था।

सन 1879 में *'महर नीमरोज़'* का प्रकाशन बिजनौर से किया गया था। यह उर्दू साप्ताहिक 12 पृष्ठ का था। इसके प्रकाशक और सम्पादक हाफ़िज़ करीमउल्ला थे। करीम प्रेस में छपता था। इसका वार्षिक शुल्क नौ रुपये आठ आना था। पत्र की गणना गम्भीर पत्रों में होती थी। इसमें ज्ञान विज्ञान के उत्तम लेख प्रकाशित होते थे। सर सैयद अहमद के विचारों का समर्थक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। शिक्षा के सम्बन्ध में उनके विचारों से सहमत था, किन्तु इस्लामी दृष्टिकोण पर उनसे मतभेद रखता था। खास तौर से अलीगढ़ कालेज पर बढ़ते अँगरेजी प्रभाव का विरोधी था और इसे क़ौम के लिए अहितकारी मानता था।

1879 में तेलुगु मासिक '*मंदार मंजरी*' प्रकाशित हुई। यह साहित्यिक पत्रिका थी, जिसे ओगिराज जगन्नाथ प्रकाशित करते थे। कटक से सन 1880 में उड़िया पत्रिका '*कोहिनूर*' प्रकाशित हुई। इसी वर्ष पुरी से '*पुरुषोत्तम पत्रिका*' निकली।

मौलाना अमजद अली 'अशहरी' ने भोपाल से सन 1879 में साहित्यिक पत्रिका '*वालाजाही*' का प्रकाशन किया था। इसमें नवाब सिद्दीक़ हसन खां तथा उनके दरबारियों की उर्दू और फ़ारसी की शायरी का प्रकाशन किया जाता था। धर्म प्रदायनी सभा कपूरथला द्वारा साप्ताहिक '*सभा कपूरथला*' का प्रकाशन सन 1879 में किया। यह सोलह पृष्ठ का पत्र था। इसके सम्पादक मुंशी बरकतअली शौकत थे। वार्षिक शुल्क ग्यारह रुपये था।

सन 1879 में काशी से ढुण्ढिराज शास्त्री के सम्पादन में '*कामधेनु*' पत्रिका हिन्दी में निकली। गुजराती साप्ताहिक '*भरुच समाचार*' का प्रकाशन सन 1879 में भरुच से हुआ।

थियासोफिस्ट

मुम्बई से अक्टूबर 1879 में मासिक पत्र '*थियासोफिस्ट*' का प्रकाशन किया गया। अँगरेजी भाषा का यह जर्नल पूरब के दर्शन, कला, साहित्य और अध्यात्म विषयों पर केन्द्रित था। इसका आकार 31 गुणित 20 से.मी. था। 32 पृष्ठों के इस पत्र का मुद्रण इंडस्ट्रीयल प्रेस, मुम्बई से होता था। इसकी प्रकाशक थियासोफिकल सोसायटी थी। 'थियासोफिस्ट' की विज्ञापन दर 16 पंक्तियों के लिए एक रुपया निर्धारित थी। इस पत्र के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य यह भी था कि अमेरिका, यूरोप और एशिया के देशों में विद्यमान सोसायटी की शाखाओं और सदस्यों के बीच संवाद का नियमित सिलसिला बना रहे। 'थियासोफिस्ट' में सोसायटी के दर्शन पर प्रकाश डाला जाता था, वैदिक धर्म, स्वामी दयानंद सरस्वती के आर्य समाज का मंतव्य, बौद्ध धर्म, समाज में महिला की महत्ता, योग आदि विषयों पर गवेषणापूर्ण आलेखों का प्रकाशन किया जाता था। भारतीय दर्शन और अध्यात्म की चर्चा करते हुए संस्कृत के श्लोकों और वांड.मय को उद्धृत किया जाता था।

सन 1879 में बारीपदा से राजा कृष्णचंद्र भंज ने उड़िया पत्रिका '*मयूरभंज*' का प्रकाशन कराया। अँगरेजी और उड़िया भाषा में समाचार, लेखादि प्रकाशित किए जाते थे। एक अक्टूबर 1879 को मुम्बई से मराठी पत्रिका '*आर्यभिषक*' का प्रकाशन हुआ। यह द्वैमासिक पत्रिका थी। इसके सम्पादक वैद्य शंकर शास्त्री थे। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विज्ञान की पत्रिका थी। पृष्ठ सँख्या 24 थी। इन्दु प्रकाश प्रेस से मुद्रण होता था। वार्षिक शुल्क सवा रुपया था।

1880

गुजराती

छह जून 1880 को मुम्बई से गुजराती भाषा के समाचारपत्र '*गुजराती*' का प्रकाशन हुआ। इसकी विषय वस्तु में आशीर्वचनम्, उद्योग-हुनर, कविता, चित्र, रागमूर्ति, जीवन चरित्र एवं प्रसंग, तत्वज्ञान, नाटक, निबंध, सामाजिक, प्रासंगिक, बाल विनोद, भाषा साहित्य, वार्ता, संगीत आदि का समावेश रहता था। पचास वर्ष पूरे करने पर 'गुजराती' की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई। तब इसका सम्पादन मानकलाल देसाई कर रहे थे। इच्छाराम सूर्यराम देसाई इस पत्र के सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। आरम्भिक कठिनाई के दौर में सर फीरोजशाह मेहता ने पत्र की मदद की। गुजराती साहित्य के पुनरुद्धार और ऐतिहासिक ग्रन्थों के प्रकाशन में इस पत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसके दीपावली अंक सुरुचिपूर्ण और संग्रहणीय होते थे।

एक जुलाई 1880 को साप्ताहिक *'बंगाल पंच'* का प्रकाशन कोलकाता से किया गया था। प्रकाशक असफंदयार खां तथा सम्पादक गुलाम हज़रत खां थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

मासिक विधि पत्रिका *'नज़ायर कानून-ए-हिन्द'* का प्रकाशन लाहौर से एक जनवरी 1880 को किया गया था। प्रकाशक हरिसुख राय तथा अनुवादक जवाद अली शाह थे। कोहेनूर प्रेस से छपती थी। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। बांकीपुर (बिहार) से द्विभाषी (उर्दू-हिन्दी) साप्ताहिक *'मुशीर-ए-बिहार'* का प्रकाशन सात जनवरी 1880 को किया गया था। हर गुरुवार को निकलता था। सम्पादक बाबू गोविंदचरण वकील थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। विधि सम्बन्धी अँगरेजी मासिक पत्रिका *'लीगल रिफरेन्सेज'* इलाहाबाद से जनवरी 1880 में प्रकाशित की गई। प्रकाशक सैयद अकबर हुसैन थे। जलाली प्रेस में छपती थी। पृष्ठ सँख्या 32 थी। लाहौर से मासिक पत्रिका *'तकमील-उल-हिकमत'* का प्रकाशन किया गया। इसके प्रकाशक हकीम अहमद अली तथा सम्पादक डा. सैयद अकबर शाह थे। यह चिकित्सा सम्बन्धी पत्रिका थी। लखनऊ से एक मई 1880 को 12 पृष्ठों का साप्ताहिक *'इंडियन पंच'* मुंशी नौरोज़ 'शैदा' ने प्रकाशित किया। प्रत्येक गुरुवार को प्रकाशित किया जाता था। छह दिसम्बर 1882 से राय श्रीकृष्ण चंद्र 'क़ैसर' ने इसका सम्पादन-प्रकाशन किया। वार्षिक शुल्क सात रुपये आठ आना था। कोलकाता से 16 पृष्ठों के साप्ताहिक *'तिजारत-उल-अख़बार'* का प्रकाशन एक मई 1880 को किया गया था। प्रकाशक एहसानउल्ला तथा सम्पादक मथुरा प्रसाद 'समर' थे। वार्षिक शुल्क नौ रुपये था।

लाहौर से एक जून 1880 को मुंशी हुसैन अली फरहत देहलवी ने *'देहली पंच'* का प्रकाशन किया। प्रकाशक मुंशी अल्लादीन, सम्पादक मौलवी फ़ज़लउद्दीन थे। वार्षिक शुल्क दस रुपये था। पृष्ठ संख्या 12 थी। इस साप्ताहिक की प्रकृति का परिचय प्रवेशांक में की गई घोषणा से मिलता है- ''यह विनोदी पत्र देश के लिए हास्य विनोद के फूलों का एक गुच्छा है। इसका एक सशकत वाक्य देश का मत बदलवा देता है और खुशी खुशी प्रजा और शासन की मैत्री का दम भरता है। कभी मीठे राग छेड़ कर जन साधारण को मदहोश बनाता है। विनोदपूर्ण पंक्तियों से शासन तथा देश को जगाता है। इसके प्रत्येक वाक्य में नई बात होती है। अधिक शब्दों का प्रयोग नहीं करता। चापलूसी भरे तथा अर्थहीन लेखों को स्थान नहीं देता। भावों को प्रकाश में लाने के लिए केवल लेखनी का प्रयोग ही नहीं करता, अपितु भाव को चित्र के वेष में प्रस्तुत करता है जिसमें सैकड़ों लेखों का आनन्द आता है।''

उचित वक्ता

हिन्दी पत्रकारिता के उन्नायकों में दुर्गाप्रसाद मिश्र का नाम अग्रगण्य है। 'भारतमित्र' और 'सारसुधा निधि' जैसे पत्र उन्हीं की मेधा और श्रम-स्वेद के प्रतिफल हैं। तथापि, जल्द-जल्द उन्हें इन पत्रों से किनारा कर लेना पड़ा। तब उन्होंने अपना पत्र *'उचित वक्ता'* सात अगस्त 1880 को कोलकाता से निकाला। यह साप्ताहिक अखबार हर शनिवार को सरस्वती यंत्रालय कोलकाता से छपता था। इसका वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। यह मुख्यत: राजनीतिक और सामाजिक चेतना का पत्र था। एक जागरूक समाचारपत्र की कसौटी पर पूरी तरह खरा उतरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

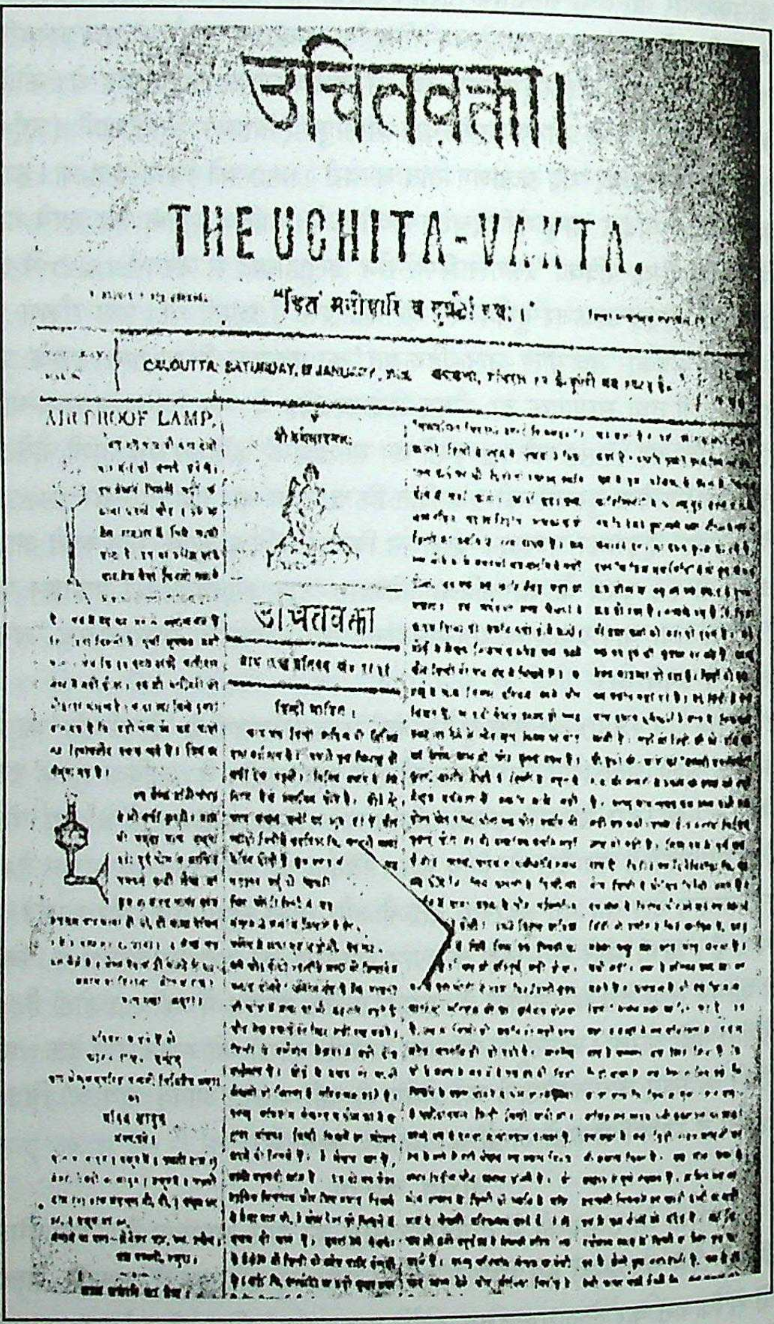

उचितवक्ता।

THE UCHITA-VAKTA.

"हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।"

CALCUTTA: SATURDAY,

AIR PROOF LAMP.

उचितवक्ता

हिन्दी साहित्य।

उचित वक्ता, कोलकाता, 7 अगस्त 1880

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। इसका ध्येय वाक्य था-''हितं मनोहारि च दुर्लभ वचः''।'उचित वक्ता' की सम्पादकीय नीति में बेबाक टिप्पणियों का खास स्थान था। इसी वजह पत्र ने अल्प समय में एक प्रखर समाचारपत्र की पहचान बना ली थी। फिरंगी हुकूमत की दुर्नीतियों और काली करतूतों पर 'उचित वक्ता' खुलकर प्रहार करता था। 'उचित वक्ता' की भाषा और शैली, उसके तेवर तथा चिन्तन-दायरे का अहसास उसकी टिप्पणियों से होता है। गो-माँस के विक्रय पर 'उचित वक्ता' ने लिखा- ''हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं का जरा भी ख्याल न कर हिंदुओं के मोहल्ले में गोमाँस की बिक्री की जाती है। कोई भी अपने धर्म पर आघात सहन कैसे कर सकता है? यदि कोई हिंदू अँगरेजों के गिरजे के बगल में देवमूर्ति-स्थापन करके उसकी पूजा के हेतु शंख, घंटा-घड़ियाल, नगारा आदि वाद्योद्यम करे तो क्या ख्रीष्ट धर्मोपासकगण कभी भी यह सह सकते हैं? कदापि नहीं। और क्या मुसलमान लोग उसी प्रकार से हमारी देवमूर्ति नव प्रतिष्ठित देख अथवा उनके धर्म विरुद्ध शूकरमाँस का विक्रय होते देख कभी भी चुपचाप रह सकते हैं? अतएव हिंदू लोग यदि इस प्रकार के धर्म विरोधी कार्य को रोकने की चेष्टा करते हैं तो इसमें अन्याय क्या है? ऐसे धर्म विरुद्ध काम को बंद करने की चेष्टा राजपुरुषगणों को करनी चाहिये।''[1]

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की एक टिप्पणी पर 'उचित वक्ता' भड़क उठा। उसने लिखा- ''खुशामद ने हमारे राजा साहब को भी बहुत दिनों से अपना चेला बना रखा है और उसी खुशामद के प्रसाद में आज राजा साहब का ऐसा सम्मान है और अँगरेजी वर्णमाला के कतिपय अक्षरों (सी.एस.आई.) का पुछल्ला नाम के पीछे फहरा रहा है और इसमें संदेह नहीं कि राजाजी भेड़ प्रतिनिधि होने में समर्थ हुए हैं और आज समग्र भारतवासियों को भेड़ बनाकर आप उनमें श्रेष्ठ बन गालियों की बोछाड़ प्रकाश्य काउंसल में करते हैं। हम सर्व साधारण से यह प्रार्थना करते हैं कि इनके स्थानापन्त्र करने के निमित्त एक प्रतिनिधि निर्वाचन करें और इंडिया गवर्नमेंट से प्रार्थना करके इनकी बदली करा दें नहीं तो किसी दिन इनके द्वारा बड़ी क्षति होगी। कुशल वो इतनी हुई कि यह महापुरुष रिपन के समय कार्उसिल के मध्य हुए यदि लिटन के समय होते तो सोना सुगन्ध हो जाता और अभी कौन कह सकता है कि रिपन के बाद एक महालिटन नहीं आ सकते हैं।''[2]

'उचित वक्ता' ने भाषायी पत्रों के सम्पादकों की दशा पर लिखा- ''हम भारतीय पत्र सम्पादकों की जैसी हीन और मलीन दशा है वह किसी से अविदित नहीं है। ये लोग सदैव अपने देश की भलाई के लिए उद्यत रहते हैं इसी से सदैव गवर्मेण्ट के समीप राजभक्ति-विहीन और अधम गिने जाते हैं, क्षुद्र हाकिमों से लगाकर उच्चतर विचार पतियों तक का इन पर आक्रोश बना रहता है। ये लोग क्षुद्र हाकिमों के गुप्त रहस्य प्रकट करने के कारण अधिकांश हजूरों के चक्षु-शूल हो जाते हैं और औसर पाने पर इनको हजूर लोग भी भलीभाँति धर चपेटते हैं। अब हम लोगों का प्रधान कर्तव्य यह है कि सब समाचारपत्रों के सम्पादक एक उत्तम सभा-स्थापन करें, जिसमें कि सब पत्रों के सम्पादक नियुक्त रहें और अपनी अवस्थानुसार मासिक चन्दा दिया करें। जब किसी देशीय पत्र के सम्पादक पर किसी हाकिम महाशय का अनर्थक क्रोध होय तो उसके निवारणार्थ- वह संचित द्रव्य व्यय हुआ करे और सम्पादक समाज उसकी सब प्रकार से सहायता में तत्पर रहें।''[3]

1. उचित वक्ता, 21 मई 1881
2. वही, 23 दिसम्बर 1882
3. वही, 13 मार्च 1881

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उचित वक्ता' ने सम्पादकों को ललकारा- ''देशीय संपादकों! सावधान। कहीं जेल का नाम सुनकर कर्तव्यविमूढ़ न हो जाना। यदि धर्म की रक्षा करते हुए, गवर्नमेंट को सद्परामर्श देते हुए जेल जाना पड़े तो क्या चिंता है। इससे मानहानि नहीं होती। हाकिमों के जिन अन्याय आचरणों से गवर्नमेंट पर सर्वसाधारण की अश्रद्धा हो सकती है, उनका यथार्थ प्रतिवाद करने में जेल तो क्या यदि द्वीपांतरित भी होना पड़े तो क्या बड़ी बात है? क्या इस सामान्य विभीषिका से हम लोग अपना कर्तव्य छोड़ बैठें?''[1]

जब कोलकाता हाईकोर्ट के अँगरेज जज नोरिस ने भगवान शालिगराम की प्रतिमा को बाकायदा शपथ लेकर गवाही देने के लिए अदालत में तलब किया, तब 'बंगाली' के सम्पादक सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने अपने पत्र में कड़ी टिप्पणी लिखी। इस पर उन्हें दो माह की कैद में डाल दिया गया। इस अन्याय को 'उचित वक्ता' ने बर्दाश्त नहीं किया। सम्पादकीय टिप्पणी लिखी- ''कर्तव्य के अनुरोध से, धर्म के भय से एवं अत्याचार प्रपीड़ित हो, सत्य वार्ता के प्रकाश में लाने को बाध्य होना ही पड़ता है। इसी सत्य वार्ता को प्रकाशित करने के कारण हमारे सहयोगी सुरेन्द्र बाबू विपदापन्न हो रहे हैं। इनका दोष केवल इतना ही है कि अदालत में विष्णु प्रतिमा के उपस्थित कराने से हिन्दू समाज जैसा क्षुब्ध अपमानित व मर्माहत हुआ था, इसी को सुरेन्द्र बाबू ने गवर्नमेंट की शुभ चिन्ता कर अपने पत्र में प्रकाश कर दिया है। इसी को कहते हैं कि हवन करते हाथ जले।''[2]

'उचित वक्ता' सात अगस्त 1880 से फरवरी 1887 तक निकलता रहा। फिर 10 मार्च 1889 से सात जुलाई 1889 तक निकला। तीसरी बार 26 मई 1894 से 10 नवम्बर 1894 तक निकला। उसके बाद भी कभी-कभार निकलता रहा।

'उचित वक्ता' में 'समाचारावली' स्तम्भ छपा करता था। पहले ही अंक का स्तम्भ बतौर उदाहरण प्रस्तुत है- ''धर्मशाला नामक नगर में एक मनुष्य ने एक सन्यासी को नानासाहिब समझकर पुलिस में पकड़ा दिया था परंतु वह नानासाहिब न था यह जानकर 500 रुपये की जमानत पर पुलिस ने उसे छोड़ दिया..... अमरीका के एक डाक्तर ने लिखा है कि मानसिक पीड़ित मनुष्यों के शयनगृह में सुगन्धि पुष्प रखने से अनेक शांति होती है..... मध्य भारतवर्ष और राजपुताने के स्वास्थ्य और शस्य की अवस्था अच्छी है..... एक हिन्दू रमणी का एक पुत्र अपनी माँ के संदूक से 1064 रुपये का अलंकार निकालकर काशी चला गया। इधर उसकी माँ ने उसके नाम वारंट जारी कर बनारस में पकड़ मँगाया विचार होने पर 6 महीने की सजा हुई।''

'उचित वक्ता' की टिप्पणी से सम्पादक के भाषा सम्बन्धी विचार प्रगट होते हैं- ''आजकल हिन्दी साहित्य की विचित्र दशा वर्तमान है। इसकी कुछ स्थिरता ही नहीं देख पड़ती। विविध प्रकार के रंग-बिरंगे लेख प्रकाशित होते हैं। कोई तो संस्कृत शब्दों पर झुक रहे हैं और ज्यों ही किसी ने कह दिया कि आपकी भाषा कठिन होती है, कुछ सरल कीजिए कि पट पलटकर उर्दू की खिचड़ी पकाने लग गए, फिर ज्यों ही किसी ने कह दिया कि केवल संस्कृत शब्दों के गिनाने से या उर्दू शब्दों के प्रयोग से भाषा पुष्ट न होगी, बस चट बदल गए और दोनों प्रकार के शब्दों को मिलाने में उतारू हो गए। सारांश यह कि ग्राहकों की खोज में भाषा को भी भटकाते रहते हैं और लेख प्रणाली को स्थिर नहीं रख सकते। हिन्दी के वर्तमान लेखकों

---

1. उचित वक्ता, 12 मई 1883
2. वही, 18 मई 1883

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में यही दोष वर्तमान है। अधिकांश लेखनदास लोग घर से सतुआ बाँधकर हिन्दी लिखने का व्यापार करने को निकलते हैं। ये लेखक क्या हैं, मानो बहुरूपी स्वांग हैं। इनको जब जैसा मालिक मिला और जिस प्रकार लिखने में उद्यत हो जाते हैं। सुतराँ ऐसे लेखों से भी हिन्दी की यथेष्ठ हानि हो रही है।''[1]

ढाका से वकील रामचंद्र भौमिक ने अगस्त 1880 में मासिक पत्रिका *'नव व्यवहार संहिता'* का प्रकाशन किया। इसमें बंगला भाषा में कानूनों के अनुवाद, परिपत्र तथा सरकारी विज्ञापन गवर्मेण्ट गज़ट से उद्धृत करके छापे जाते थे। 12 पृष्ठों के उर्दू साप्ताहिक *'अहसन-उल-अख़बार'* का प्रकाशन सन 1880 में अमरोहा से किया गया था। गुरुवार को उमदत-उल-मतबअ में छाप कर प्रकाशित किया जाता था। प्रकाशक सैयद अली हसन खां और सम्पादक सैयद अबूहसन थे। साप्ताहिक *'अख़बार-ए-हिन्द'* लखनऊ से सन 1880 में निकला। हर सोमवार को प्रकाशित होता था। प्रकाशक गौरीशंकर तथा सम्पादक मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन थे। सोलह पृष्ठ के इस अखबार का वार्षिक शुल्क तेरह रुपये बारह आना था।

वर्ष 1880 में *'अनल्प जल्पिता कल्पवल्ली'* का प्रकाशन रामुलु ने किया। यह तेलुगु मासिक मछलीपत्तनम से प्रकाशित होता था। 40 पृष्ठ की पाक्षिक पत्रिका *'ख़जीना-उल-क़वानीन'* का प्रकाशन लाहौर से सन 1880 में किया गया था। इसके प्रकाशक-सम्पादक सैयद नादिरअली शाह 'सैफी' थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। पत्रकारिता की दृष्टि से पिछड़े समझे जाने वाले छोटा नागपुर क्षेत्र से पहला पत्र *'घर बंधु'* सन 1880 में प्रकाशित हुआ था। गोस्नर एवं एवेंजेलिकल लूथर्न चर्च द्वारा प्रकाशित यह मासिक पत्र शतायु हुआ।

'पुणे वैभव' का प्रकाशन सन 1880 में हुआ था। इसके सम्पादक-प्रकाशक शंकर विनायक केलकर थे। यह पत्र प्रत्येक रविवार को प्रकाशित होता था। यह बड़े आकार का पाँच कालम का पत्र था। वार्षिक शुल्क एक रुपये था। सप्रे संग्रहालय में उपलब्ध अंक से पता चलता है कि लेख छोटे-छोटे हैं। उनमें विषयों की विविधता रहा करती थी। यह अखबार स्त्री शिक्षा का विरोधी था और विदेश प्रवास पर एतराज उठाता था।

वर्ष 1880 में *'प्रबंध कल्पवल्ली'* साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। पेद्दापुरम से प्रकाशित होने वाले इस तेलुगु मासिक के संस्थापक जी. श्रीराममूर्ति थे। बंगला समाचारपत्र *'प्रभाती'* 1880 में कोलकाता से निकला। लगभग छह वर्ष तक प्रकाशन के बाद 1885 में बंद हुआ। इसके बंद होने की सूचना 13 जुलाई 1885 के 'हिन्दू पेट्रियट' में छपी थी।

बनारस से साप्ताहिक *'फ़रोग'* का प्रकाशन सन 1880 में किया गया था। इसके प्रकाशक सैयद मोहम्मद सुलतान 'आक़िल' देहलवी थे। आठ पृष्ठ का यह अखबार हर बुधवार को छपता था। सन 1880 में नारायण राव थोरात ने *'वर्धा लहरी'* पत्र निकाला। यह मराठी भाषा में निकलता था। सन 1880 *'विद्या-धर्म-दीपिका'* नामक हिन्दी मासिक देवकीनन्दन ने प्रयाग से निकाला।

सिलहट से सन 1880 में विपिनचन्द्र पाल और राधानाथ चौधरी के उद्यम से बंगला पत्र *'परिदर्शक'* का प्रकाशन हुआ। पाल इसके सम्पादक थे।

1. उचित वक्ता, 12 जनवरी 1895

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

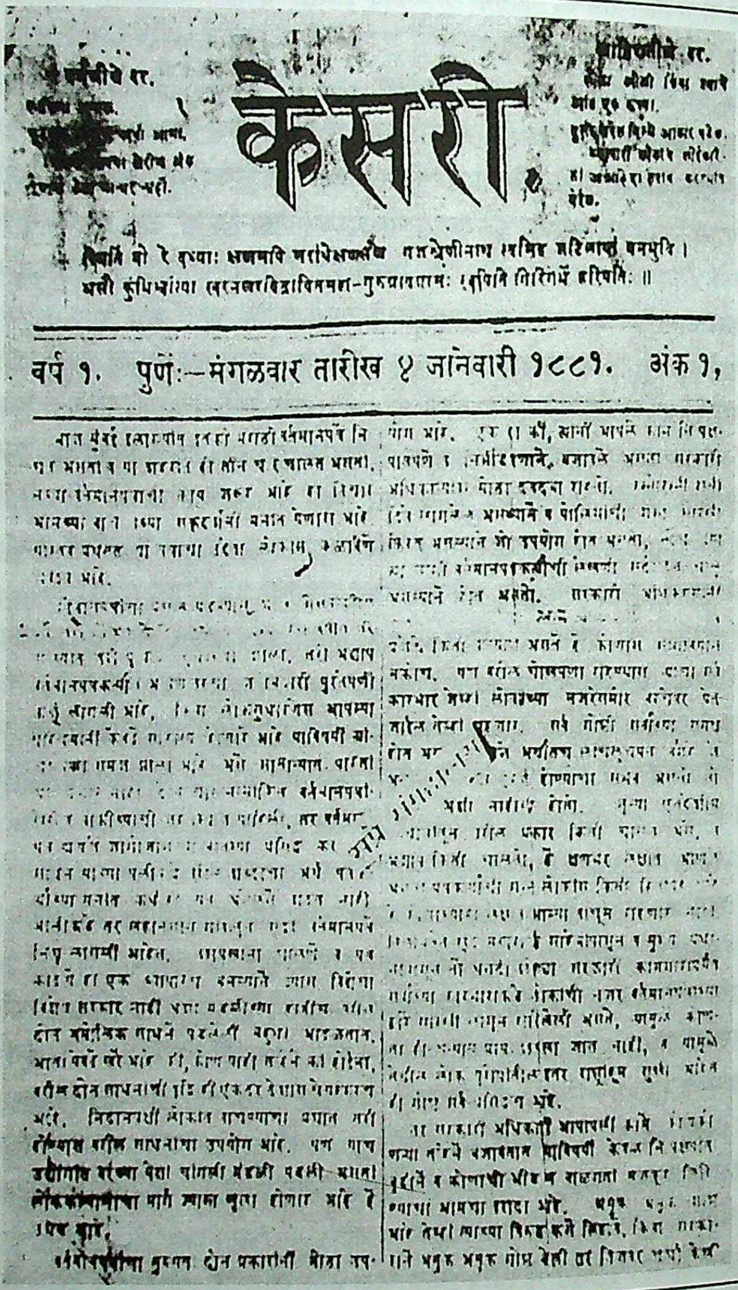

केसरी

वर्ष १. पुणें:—मंगळवार तारीख ४ जानेवारी १८८१. अंक १,

केसरी (मराठी), पुणे, जनवरी 1881

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वराज्य का उद्घोष

1881

केसरी / मराठा

राष्ट्रीय चेतना के ओजस्वी प्रवर्तक लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के राजनीतिक गुरु विष्णु शास्त्री चिपलूणकर ने तिलक, गोपाल गणेश आगरकर, वामन शिवराम आपटे तथा केलकर प्रभृति देशभक्त तरुणों को साथ लेकर सन 1880 में पुणे में 'न्यू इंग्लिश' स्कूल की स्थापना की। कुछ दिनों के बाद उनको समाचारपत्र निकालने की जरूरत महसूस हुई। महादेव वल्लभ नामजोशी और आगरकर ने इस पर अधिक जोर दिया था। नामजोशी पूर्व में 'किरण' का प्रकाशन कर चुके थे और आगरकर लेखन में रुचि रखते थे। '*केसरी*' का उद्देश्य पत्र विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, बालगंगाधर तिलक, वामन शिवराम आपटे, गणेश कृष्ण गर्दे, गोपाल गणेश आगरकर और महादेव वल्लभ नामजोशी के हस्ताक्षरों से 1880 की विजयादशमी को मुम्बई के 'नेटिव ओपीनियन' में प्रकाशित कराया गया।

उद्देश्य पत्र में घोषित किया गया था, ''इस पत्र में अन्य समाचारपत्रों के समान समाचार, राजनीतिक घटनाएं, व्यापारिक खबरें आदि विषय तो आएंगे ही, किन्तु साथ ही साथ इसमें लोगों की दशा पर निबन्ध, नवीन ग्रंथों की समालोचनाएँ आदि का भी समावेश किया जाएगा। इसके अलावा विलायत में जिन राजनीतिक प्रश्नों की चर्चा होती है उनका अपने लोगों को समझना आवश्यक होने के कारण उन्हें भी संक्षिप्त में संकलित करने का हमारा विचार है। उपर्युक्त तीन विषयों पर यानी देश-स्थिति, मातृभाषा के ग्रंथ तथा विलायत की राजनीतिक हलचल के सम्बन्ध में जितना पर्याप्त विवेचन होना चाहिए था, उतना किसी भी समाचारपत्र में नहीं हुआ है, ऐसा कहने में कोई हानि नहीं अतः इस भारी न्यूनता को दूर करने का हमने निश्चय किया है। ''इस समाचारपत्र में प्रत्येक विषय का जो विवेचन किया जाएगा वह बिना पक्षपात-बुद्धि के तथा हमें जो ठीक जँचेगा उसके अनुसार ही करेंगे, ऐसा हमारा कृत संकल्प है। इधर शाही अमल के आरम्भ से चापलूसी करने की प्रथा बहुत कुछ बढ़ने लगी है, इसमें सन्देह नहीं। यह प्रथा अत्यन्त अश्लाघ्य तथा देशहित के लिए हानिकारक है, यह कोई भी निर्भीक मनुष्य स्वीकार करेगा। अतः इस पत्र में लेख उसके नाम के अनुसार ही निकलेंगे। इसका विश्वास रखिएगा।''

'केसरी' के प्रकाशन का निश्चय तो हो गया, लेकिन छापाखाने के लिए पूँजी की समस्या थी। अन्ततः नामजोशी को एक युक्ति सूझ गई। केशव बल्लाल साठे नामक एक सज्जन का 'किरण' छापाखाने पर 24,000 रुपये का ऋण था। अपना रुपया प्राप्त करने के लिए उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस छापाखाने की सब सामग्री गिरवी में ले ली थी और उसे शिवाजी नामक छापाखाने में रख दिया था, जो वहाँ बेकार पड़ी थी। नामजोशी, शालिग्राम नामक सज्जन को साथ लेकर साठे के पास पहुँचे और उनसे 'केसरी' के लिए छापाखाना देने की बात कही। साठे ने उनसे एक ऋण-पत्र लिखवा कर और रुपये किश्तों में लेना स्वीकार कर उक्त छापाखाने की सामग्री उन्हें दे दी। वे छापाखाने की यंत्र-सामग्री मोरोबा दादा के बाड़े में स्थित न्यू इंग्लिश स्कूल की इमारत में ले आए। छापाखाना के प्रबन्ध का काम सोहोनी को सौंप दिया गया। उन्होंने इस छापाखाने का आर्यभूषण नाम से सरकार के समक्ष घोषणापत्र प्रस्तुत किया।

चार जनवरी 1881 को पुणे से साप्ताहिक 'केसरी' का प्रति मंगलवार प्रकाशन आरम्भ हुआ। 'केसरी' के लिए उपयुक्त श्लोक भी विष्णु शास्त्री चिपलूणकर ने जगन्नाथ पंडितराज के काव्य में से ढूँढ निकाला। यही श्लोक पत्र के मुखपृष्ठ पर छापा गया-

''स्थितिं नो रे दध्याः क्षणमपि मदांधेक्षणसखे-
गजश्रेणीनाथ त्वमिह जटिलायां वनभुवि।
असौ कुंभिभ्रांत्या खरनखरविद्रावितमहा-
गुरूग्रावग्रामः स्वपिति गिरिगर्भे हरिपतिः।।''

'केसरी' का आकार 34 गुणित 25 से.मी. था। पृष्ठ में तीन कालम होते थे और हर कालम की चौड़ाई 6.5 से.मी. रहती थी। केसरी की पृष्ठ सँख्या आठ थी। इसका मूल्य प्रथम पृष्ठ पर इस प्रकार अंकित रहता था-अग्रिम एक रुपया, एक अंक छह पैसा, मुंबई के लिए एक रुपया चार आना। विज्ञापन सभी तरह के रहा करते थे। विज्ञापन दर 16 पंक्तियों तक एक रुपया थी, बाद में हर पंक्ति का डेढ़ आना। इसके पृष्ठ सात और आठ पर विज्ञापन रहा करते थे।

उस समय पुणे के अन्य मराठी समाचारपत्रों का वार्षिक मूल्य दो रुपया होने के कारण भी 'केसरी' का प्रसार बढ़ने लगा था। एक वर्ष के भीतर 'केसरी' की ग्राहक-सँख्या एक हजार तक पहुँच गई। सन 1882 के प्रारम्भ में केसरी की ग्राहक सँख्या करीब 1800 थी। कोल्हापुर के बर्वे-प्रकरण और कोल्हापुर राज्य के कामकाज पर लिखते समय 'केसरी' में राज्य के तत्कालीन दीवान माधवराव बर्वे के सम्बन्ध में कथित अपमानजनक लेख प्रकाशित हुए थे। बर्वे ने तिलक और आगरकर पर मुकदमा चलाया, जिसमें इन दोनों को चार महीने की क़ैद की सजा हो गई। बाद में अच्छे बर्ताव के कारण उन्हें 19 दिन की छूट मिली और वे 26 अक्टूबर 1882 को 107 दिन की सजा काटकर जेल से मुक्त हुए।

'केसरी' में राजनीतिक विषयों की चर्चा, व्यापारिक खबरें, ग्रन्थों की समालोचनाएं, विलायत की राजनीतिक हलचल आदि पर सामग्री प्रकाशित होती थी। आगरकर अर्थशास्त्र, इतिहास तथा सामाजिक विषयों पर और तिलक धर्मशास्त्र और कानून पर लिखा करते थे। 'केसरी' में व्यंग्य लेख भी छपते थे। सामाजिक दोषों तथा राजनीतिक विसंगतियों को समाचारपत्रों द्वारा बार-बार जनसमुदाय के सम्मुख रखना चाहिए, ऐसा 'केसरी' के सम्पादक का मानना था। आगरकर के सामाजिक तथा धार्मिक मत तिलक आदि के मतों से विपरीत थे। यद्यपि उस समय 'केसरी' का कोई प्रधान सम्पादक न था, तो भी आगरकर का पत्र संचालन में विशेष प्रभाव होने के कारण वे अपना मत निर्बाध रूप से प्रकाशित किया करते थे। पुनर्विवाह जैसे सामाजिक और धार्मिक प्रश्न छिड़ने पर मुम्बई और पुणे की सभाओं में वाद-विवाद होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे। फलस्वरूप तिलक और आगरकर दोनों में इस सम्बन्ध में मतभेद हो गए, जिसका अन्तिम परिणाम यह हुआ कि आगरकर को 'केसरी' से अपना सम्बन्ध तोड़ लेना पड़ा। आगरकर बुद्धिवादी तथा कठोर सुधारक थे और वे समाज या शास्त्र-पुराणों की तनिक भी परवाह न कर सामाजिक सुधारों की आवश्यकता का प्रतिपादन करते थे। तिलक का यह मानना था कि ऐसे सुधार एकदम करना असम्भव तथा अनिष्टकर है। अतएव वे शास्त्र और पुरानी परम्परा का ख्याल कर तथा समाज को नये सुधारों के लिये तैयार कर ही अमल में लाने के पक्ष में थे।

मराठी 'केसरी' के साथ फिरंगी शासकों तथा अन्य प्रान्तों के लोगों तक अपनी भावनाएं पहुँचाने के लिए दो जनवरी, 1881 से अँगरेजी साप्ताहिक 'मराठा' का प्रकाशन आरम्भ किया गया। डिमाई आकार में आठ पृष्ठों के 'मराठा' का वार्षिक मूल्य आठ रुपये और विज्ञापन दर प्रति 12 पंक्ति के लिए एक रुपया थी। 'मराठा' के मुखपृष्ठ पर 'डेक्कन स्टार सम्मिलित' छापा जाता था। मराठा घाटे में ही चलता रहा। तीन सितम्बर 1891 तक वासुदेवराव केलकर मराठा के सम्पादक रहे। तदन्तर 'मराठा' पूर्णत: बालगंगाधर तिलक के अधिकार में आ गया। 'डेक्कन स्टार' माधवराव नामजोशी का पत्र था, जो 'मराठा' के प्रकाशन के साथ बन्द कर दिया गया। तीन सितम्बर 1891 से 12 सितम्बर 1897 तक 'मराठा' में सम्पादक के रूप में बालगंगाधर तिलक का नाम जाता रहा।

'केसरी' का आकार प्रथम 26 अंक तक डिमाई रहा और पृष्ठ सँख्या चार थी। 27वें अंक से रायल आकार हो गया। सन 1884 से केसरी का आकार डबल क्राउन कर दिया गया। 1884-85 में केसरी की प्रसार सँख्या 4,500 हो गई थी। आगरकर 25 अक्टूबर, 1887 तक केसरी के सम्पादक रहे। मराठी, संस्कृत और अँगरेजी भाषा और साहित्य पर उनका अच्छा अधिकार था। उनके सम्पादन-काल तक 'केसरी' में अधिकांश लेख उन्हीं के लिखे होते थे। तिलक तब अधिकतर 'मराठा' में लिखा करते थे।

सातवीं वर्षगाँठ के मौके पर प्रकाशित समीक्षात्मक लेख में 'केसरी' ने लिखा-''समाचारपत्रों का प्रसार होने के कारण दो हैं-(1) लोगों की पढ़ने में रुचि और (2) समाचारपत्र का कम मूल्य। समाचारपत्र सस्ता हो तो अधिक लोगों के हाथ में पहुँचने से उसकी लोकप्रियता और बढ़ती है। इसलिए हमारा पहले से ही संकल्प है-कम कीमत में अधिक समाचार देना। प्रारम्भ में जितनी सामग्री हम देते थे, उससे दुगुनी सामग्री हम दे रहे हैं। ज्ञान प्रसार और राष्ट्रोन्नति का कितना समीप का संबंध है, यह ध्यान में रखकर, इसका परिणाम अच्छा ही होगा, यह हमें विश्वास है।''[1]

दूसरी सूचना 'केसरी' को दैनिक बनाने की है-''दैनिक अखबार के लिए डाक व्यय के साथ लगभग 12 रुपये वार्षिक शुल्क देना होगा। इतना शुल्क देने वाले पर्याप्त ग्राहक मिलने की संभावना जब तक नहीं, तब तक 'केसरी' दैनिक नहीं होगा। पत्र का आकार बढ़ाकर ग्राहकों का पैसा कागज वाले को देने के बजाए वर्तमान कागज में अधिक सामग्री देना हम पसंद करते हैं। विलायत के समाचारपत्रों का यही इतिहास है और देशी समाचारपत्रों को भी इसी प्रकार करना पड़ेगा। मराठी बारीक टाइप पढ़ने की आदत अभी लोगों को नहीं, परन्तु पैसा और श्रम की दृष्टि से यह सुधार ज्यादा अच्छा लगेगा। अभी जो टाइप हम उपयोग में ला रहे हैं उसको थोड़ा मोटा बनाने का काम हो रहा है।''

1. केसरी, 4 जनवरी 1888

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'केसरी' से पृथक होने के पश्चात आगरकर ने 'सुधारक' नामक साप्ताहिक अखबार निकाला। इस पत्र में वे पुरातनपंथियों (और तिलक पर भी) के विरुद्ध कलम चलाने लगे। सोमवार को 'सुधारक' प्रकाशित होता और मंगलवार को 'केसरी' उसका जवाब देता। तिलक-आगरकर के बीच इस पत्र-युद्ध ने उस समय बड़ी हलचल मचा रखी थी। तथापि सम्पादकद्वय का व्यक्तिगत स्नेह सम्बन्ध बना रहा।

10 अप्रैल, 1888 को 'केसरी' ने भारतीय भाषाओं की महत्ता प्रतिपादित करते हुए लिखा- ''भावी बलशाली और स्वतंत्र हिन्दू राष्ट्र में देशी भाषाओं का प्रसार और व्यवहार होना चाहिए। पत्रकारिता का दिशा निर्देश करते हुए 'केसरी' कहता है-''संवाददाता अपना काम ईमानदारी से करता हो और उस पर यदि मिथ्या आरोप लगते हैं तो उसे दृढ़तापूर्वक नकारना ही चाहिए। स्वयं का मनोरंजन हो और दुनिया का हाल भी मालूम हो, इस प्रकार की प्रवृत्ति पढ़े लिखे की होना स्वाभाविक है। इसलिए पाठकों की सँख्या के साथ समाचारपत्रों की सँख्या बढ़ रही है। समाचारपत्रों में जो लेख आते हैं वे व्यक्तिगत न होते हुए जातिसम्मत (समष्टिगत) होना चाहिए। इसीलिए 'हम' कहा जाता है। इसलिए समाज के प्रतिनिधि के रूप में समाज के हित की बात हमें लिखनी है-यह विचार हमेशा संवाददाता और सम्पादक को रखना चाहिए। टीका करना हो तो मित्र भाव से करना चाहिए।''

29 दिसम्बर 1895 के 'केसरी' में भारत सरकार की एक अधिसूचना प्रकाशित की गई, जो इंदौर के होलकर नरेश और सर लिपेल ग्रिफिन के राज्य प्रबन्ध के संबंध में 'ईस्टर्न हेरल्ड' नामक अख़बार में लेख प्रकाशित होने के कारण जारी की गई थी। अधिसूचना इस प्रकार है- (मराठी से हिन्दी अनुवाद)-

''कोई भी समाचारपत्र, मासिक या विज्ञापन जिस पर सरकारी जानकारी या उस पर टीका-टिप्पणी लिखी हो, बिना पोलिटिकल एजेण्ट की लिखित अनुमति के प्रकाशित नहीं की जा सकती। यदि कोई व्यक्ति ऐसा पत्र मासिक पुस्तक आदि छापेगा तो उसे सात दिन के अन्दर राज्य सीमा से बाहर कर दिया जाएगा। सात दिनों में यदि वह बाहर नहीं निकलेगा तो उसे धक्के मारकर बाहर निकाल दिया जाएगा।''

सहवास-वय-विधेयक का वाद, हिन्दू-मुसलमान दंगे, गणेशोत्सव, शिवाजी-उत्सव, अकाल आदि घटनाओं पर तिलक के लेखों के कारण 'केसरी' की लोकप्रियता बढ़ने लगी। सन 1897 में पुणे में प्लेग के प्रकोप से उत्तेजित दामोदर हरि चाफेकर द्वारा तत्कालीन प्लेग आफीसर रेंड का खून करने के बाद जब तिलक पर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया था, तब 'केसरी' की ग्राहक सँख्या 7000 के लगभग पहुँच गई थी। राजद्रोह के इस मुकदमे में हरिभाऊ के बाद आर्यभूषण प्रेस के मैनेजर केशवराव बाल पर भी 'केसरी' के प्रिंटर के नाते अभियोग लगाया गया था। इसमें तिलक को सज़ा हुई किन्तु केशवराव बाल को अदालत ने निर्दोष मान कर छोड़ दिया। 10 अगस्त 1897 तक केसरी में ''हे पत्र पुणें येथें आर्यभूषण छापाखान्यांन्त हरि नारायण गोखले यांनी छापिलें व बालगंगाधर तिलक यांनी प्रसिद्ध केलें'' प्रिंट लाइन छपती थी। इसके अगले (17 अगस्त के) अंक में तिलक को सज़ा सुनाई जाने तक उस पर तिलक का नाम प्रकाशक के नाते और केसरी के प्रिंटर बलवंत कृष्ण कोलांगड़े का नाम मुद्रक के रूप में छपने लगा। तिलक के जेल जाने के बाद गोखले 'केसरी' को छापने में हिचकिचाने लगे। अन्ततः उन्होंने इसे छापने से इंकार कर दिया और केसरी के मैनेजर धोडोंपन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अखबार बंद करने की सलाह दे डाली। तब नरसिंह चिन्तामणि केलकर 'केसरी' में काम करने के लिए आए। खाडिलकर इसी वर्ष 'केसरी' से जुड़े। धोडोंपन्त ने 'केसरी' और 'मराठा' के प्रकाशन का उत्तरदायित्व सम्हालकर उनके छापने का प्रबन्ध श्री विट्ठल छापाखाने में किया। श्री विट्ठल में 'केसरी' के 21 सितम्बर 1897 से 8 मार्च 1898 तक के 24 अंक निकले। 14 मार्च को यह छापाखाना आग लग जाने से नष्ट हो गया। तब आगे के 5 अंक जगत्-हितेच्छु प्रेस में छापे गए। तदन्तर तिलक के लिखने पर आर्यभूषण प्रेस के स्वामियों ने केसरी को छापना स्वीकार किया और वह 19 अप्रैल, 1898 से फिर उसी छापाखाने में छपने लगा।

राजद्रोह के आरोप में डेढ़ साल की कैद की सजा काटने के बाद सितम्बर 1898 में तिलक जेल से मुक्त हुए। दस हजार लोग उनकी अगवानी के लिए एकत्रित हुए थे। चार जुलाई 1899 से तिलक पुनः 'केसरी' के सम्पादक हो गए। इस बीच 'केसरी' के 91 अंक केलकर के सम्पादन में निकले।

'केसरी' पर सरकार की कोप दृष्टि एक स्थायी प्रक्रिया बन गई और उतना ही तीव्र आवेग 'केसरी' की हुंकार में आता गया। 'केसरी' अधिक स्पष्टता के साथ अपना ध्येय बताने लगा- "लोगों में जागृति, संघ शक्ति और उत्साह उत्पन्न करना यही पत्रकार की दृष्टि से हमारा मुख्य कर्तव्य है, ऐसा हम मानते हैं। हम लोग जो लेख लिखते हैं, वे राजकर्ता के लिए नहीं लिखते, परन्तु अपने मन के सब विचार, सारी उत्साह शक्ति और सम्पूर्ण आग पाठकों के मन में उतरे, इसी हेतु लिखते हैं। यदि हमारा निर्धारित किया हुआ परिणाम नहीं हुआ, तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम व्यर्थ गया।"

सन 1902 में 'केसरी' की पृष्ठ सँख्या दुगुनी हो गई-चार पृष्ठ पाठकीय सामग्री के और चार पृष्ठ विज्ञापन। वार्षिक शुल्क बढ़ा कर एक से डेढ़ रुपया कर दिया गया। उधर ग्राहक सँख्या सात हजार से बढ़ कर 12 हजार हो गई। विलायत से डबल फीडर मशीन मँगवाई गई और एक आयल इंजन खरीदा। आर्यभूषण प्रेस में कम्पोजिंग का काम होता था, जबकि केसरी का मुद्रण इस नई मशीन पर किया जाता था। सन 1906 में केसरी ने अपना छापाखाना कायम कर लिया। 27 नवम्बर 1906 से 'केसरी' अपने प्रेस में छपने लगा।

इसके बाद बंग-भंग, स्वदेशी आन्दोलन, राष्ट्रीय शिक्षा, स्वराज्य, बहिष्कार, बंगाल का बम काण्ड, क्रांतिकारियों की हत्या, सूरत कांग्रेस का झगड़ा आदि कई घटनाएँ ऐसी घटीं जिन पर तिलक के ओजस्वी और प्रभावपूर्ण लेख निकले। 1907-08 के स्वदेशी आन्दोलन के समय तिलक का प्रताप सूर्य तीव्रता से चमकने लगा। सन 1908 के राजद्रोह के मुकदमे के समय केसरी की प्रसार सँख्या 25 हजार हो गई थी। तिलक को देश निकाले की सजा के बाद, 28 जुलाई, 1908 से डेढ़ वर्ष तक खाडिलकर केसरी के सम्पादक-प्रकाशक रहे।

तिलक को सजा सुनाने के प्रसंग में केलकर ने 'केसरी' में तिलक को सूर्य और न्यायमूर्ति दावर को खद्योत करार दिया। इसी आधार पर केलकर को 29 सितम्बर 1908 को 1000 रुपये दण्ड, 200 रुपये कोर्ट खर्च और 14 दिन की कैद की सजा दी। तदन्तर शिवराम महादेव परांजपे को भी राजद्रोह के आरोप में 19 महीने की सख्त कैद की सजा दी गई। उन्हें अहमदाबाद के साबरमती जेल में रखा गया।

सन 1909 में ग्वालियर तथा इंदौर रियासत ने 'केसरी' पर प्रतिबंध लगा दिया। सन 1910 में निज़ाम हैदराबाद ने भी अपनी रियासत में केसरी का प्रवेश रोक दिया। सन 1910 में प्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक्ट लागू हो जाने के बाद सरकार ने 'केसरी' से 5000 रुपये की जमानत माँगी। 'मराठा' से भी एक हजार रुपये की जमानत तलब की गई।

मांडले की जेल में रहते हुए भी तिलक को अपने समाचारपत्रों की चिन्ता थी। उन्होंने सम्पादकों को सलाह लिख भेजी-''कानून के दायरे में रहना तुम्हारा कर्तव्य है, चाहे वह कितना भी कठोर हो। जो कुछ भी स्वतंत्रता हो, उसका पूरा-पूरा उपयोग कर लेना चाहिए। वस्तुस्थिति के अनुसार ही चलना चाहिए, आपको ऐसा नहीं समझना चाहिए कि शासन की कार्रवाई के खिलाफ हाईकोर्ट में आपको न्याय मिलेगा। ऐसे भ्रम में मत रहो।'' 21 अगस्त, 1909 को तिलक ने केलकर को कार्यनीति सम्बन्धी मार्गदर्शन भी भेजा- ''(1) 'केसरी' में अधिक सामग्री खाडिलकर को लिखना चाहिए, क्योंकि कई वर्षों से वे 'केसरी' के लिए लेख लिख रहे हैं। (2) इसी कारण से 'मराठा' के लिए अधिक सामग्री केलकर को लिखना चाहिए। (3) दोनों समाचारपत्र शब्दशः एक ही विचार के न दिखते हों तो भी चलेगा परन्तु उनकी गति एक ही दिशा की ओर होनी चाहिए। इन तीनों बातों में अपनी संस्था का अभी हित है।'' केलकर और खाडिलकर में सम्पादक के पद हेतु संघर्ष चल रहा था। इस सन्दर्भ में तिलक ने लिखा- ''किस पत्र का सम्पादक कौन है, यह मुख्य समस्या नहीं है। समाचारपत्र पुरानी नीति के अनुसार चल रहे हैं या नहीं यह देखना ही महत्व का है। दो आँखों की अपेक्षा चार आँखें अच्छी, इसलिये खाडिलकर के बाद केलकर को भी देखना चाहिए।''

'लंदन टाइम्स' के संवाददाता वेलेन्टाइन चिरोल ने भारत का दौरा करने के बाद लिखी अपनी पुस्तक 'इण्डियन अनरेस्ट' में बालगंगाधर तिलक को 'फादर आफ इण्डियन अनरेस्ट' (भारत में असंतोष के जनक) सम्बोधित किया। तिलक की साठवीं वर्षगांठ पर एक तरफ उन्हें एक लाख रुपये की थैली भेंट की गई, वहीं उसी दिन पुणे के जिला दण्डाधिकारी ने 20 हजार रुपये का मुचलका भरने और 10-10 हजार की दो जमानतें माँग लीं।

सन 1914 में जेल से छूटने के बाद तिलक ने केसरी का सम्पादन अपने हाथ में नहीं लिया। महायुद्ध के जमाने में तो केसरी की बिक्री लगभग 40 हजार तक पहुँच गई थी, जिसमें सिर्फ मुम्बई की खुदरा बिक्री ही 15 हजार से अधिक थी। महायुद्ध के कारण काग़ज का भाव बढ़ने लगा। तब सन 1916 में केसरी का चंदा दो रुपये किया गया और दूसरे ही वर्ष वह तीन रुपये हो गया। जब काग़ज का भाव कम हो गया, तब शुल्क कम करने के बजाए 'केसरी' की पृष्ठ सँख्या बढ़ाकर 16 कर दी गई। सन 1917 में वायसराय ने प्रेस एक्ट को रद्द करने की माँग ठुकरा दी, तब केसरी ने टिप्पणी की ''प्रेस एक्ट स्वतंत्रता विनाशक है, अदूरदर्शी है और अधिकारी वर्ग के हाथ में अनियंत्रित सत्ता देने के लिए है।''

'केसरी' ने सम्पादक के लिए ये पाँच गुण आवश्यक माने-(1) देशभक्ति, (2) चरित्र, (3) विद्वता, (4) भाषा पर अधिकार और (5) जनसम्पर्क। इनमें से यदि एक भी गुण कम रहा तो सम्पादक उतना कम सफल रहेगा। स्वयं के लिए फकीरी और जनता के लिए सर्वस्व अर्पण का आदर्श केसरी के सम्पादकों ने स्वयं भी अपनाया।

अगस्त, 1929 में 'केसरी' अर्द्ध साप्ताहिक हो गया और सन 1950 में सप्ताह में तीन दिन छपने लगा। आठ अक्टूबर 1962 को दशहरा के दिन से केसरी दैनिक समाचारपत्र बन गया। सन 1963 में केसरी को उत्कृष्ट मुद्रण और साज-सज्जा का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन 1950 में जयंत तिलक 'केसरी' के सम्पादक हुए। सन 1956 में 'केसरी' के अमृत महोत्सव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उन्होंने एक प्रकार से लोकमान्य तिलक की मान्यताओं को ही स्वर दिया। उन्होंने कहा- ''केसरी किसी भी पक्ष का नहीं, वह राष्ट्रीय वृत्ति का है। राष्ट्रीय वृत्ति की उपासना करने के लिए केसरी किसी पर टीका करने में डरा नहीं। केसरी केवल वृत्त पत्र नहीं। वह एक राजनीतिक तत्व ज्ञान की पीठ भी है और सामाजिक कार्य का केन्द्र है। केसरी का मुख्य कार्य जनमत शिक्षित करना है। सरकारी कृपा केसरी की शक्ति नहीं, जन शक्ति केसरी का आधार है।''

आजादी की लड़ाई का योद्धा यह अखबार जिसने दसियों बार जेल-जब्ती-जुर्माने की प्रताड़ना झेली, परन्तु कभी अपने कर्म पथ से नहीं डिगा, अपने प्रकाशन का प्रथम शतक गौरवपूर्वक पूर्ण कर निरन्तर प्रकाशित हो रहा है।

अँगरेजी विधि मासिक *'इंडियन-ला-रिपोर्टर'* का प्रकाशन नसीम-ए-हिन्द प्रेस फतहपुर से एक जनवरी 1881 को किया गया था। इसके प्रकाशक कुंजबिहारी लाल वकील तथा सम्पादक लाला अम्बिका प्रसाद थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये आठ आना था। साप्ताहिक *'नैयर-ए-हिन्द'* का प्रकाशन एक जनवरी 1881 को इलाहाबाद से किया गया था। वार्षिक शुल्क आठ रुपये था। मौलवी अब्दुल लतीफ़ प्रकाशक थे।

तीन जनवरी 1881 को जलगांव से मराठी भाषा की *'प्रबोध चन्द्रिका'* का प्रकाशन हुआ। हरि नरसिंह फडणीस ने कर्ज लेकर छापाखाना लगाया और 'प्रबोध चन्द्रिका' निकालना शुरू किया। प्रारम्भ में पत्र के सम्पादन के साथ-साथ उन्हें और हरि नरसिंह फडणीस को लिथो मुद्रण के लिए पत्थर घिसना, मशीन चलाना जैसे कार्य भी खुद करने पड़ते थे।

जनवरी 1881 में *'नज़्म-उल-हिन्द'* का प्रकाशन मुरादाबाद से किया गया था। यह उर्दू साप्ताहिक मतबा 'नज़्म-उल-हिन्द' में 12 पृष्ठों का छपता था। प्रकाशक पंडित औतार कृष्ण 'नज़्म', सम्पादक पंडित प्रताप कृष्ण 'आन' थे। वार्षिक शुल्क 12 रुपये था। मासिक *'रियाज़-उल-अशआर'* का प्रकाशन जनवरी 1881 में लखनऊ से हुआ। डा. मोहम्मद यूसुफ़ प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क एक रुपये तेरह आना था।

ट्रिब्यून

'ट्रिब्यून' का प्रकाशन लाहौर से दो फरवरी 1881 को किया गया। साप्ताहिक *'ट्रिब्यून'* के संस्थापक सरदार दयालसिंह मजीठिया थे। उस समय उत्तर भारत में एक अच्छे समाचारपत्र की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। मजीठिया ने इसके लिए सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की सहायता ली, जिन्होंने संरक्षक की भूमिका निभाई। प्रिंटिंग प्रेस खरीदने और प्रथम सम्पादक के रूप में ढाका के शीतलकान्त चटर्जी के चयन में सहयोग किया।

प्रवेशांक में पत्र के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सम्पादक ने लिखा, ''ट्रिब्यून अपने नाम के अनुरूप जनता के मंच के रूप में अपनी सेवाएं देगा तथा संतुलित एवं निष्पक्ष भाव से उनके मुद्दों का समर्थन करेगा।''

'ट्रिब्यून' का बारह पृष्ठ के साप्ताहिक के रूप में प्रकाशन आरम्भ हुआ। प्रत्येक पृष्ठ में तीन कालम हुआ करते थे। 16 अक्टूबर, 1886 से इसे अर्द्ध साप्ताहिक किया गया और जनवरी 1898 से सप्ताह में तीन बार प्रकाशित किया जाने लगा। शीतलकान्त चटर्जी के बाद शीतलचन्द्र मुखर्जी, विपिनचन्द्र पाल (पाँच माह), अलफ्रेड नन्दी और नरेन्द्रनाथ गुप्त ने सम्पादक का दायित्व निभाया। 12 दिसम्बर 1917 से कालीनाथ राय सम्पादक हुए। वे एक निर्भीक और स्वतंत्र चेता सम्पादक थे। सन 1919 में जलियाँवाला बाग त्रासदी के कारण उत्पन्न राष्ट्रव्यापी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Tribune.

VOL LI. NO. 70 — LAHORE, WEDNESDAY, MARCH 25, 1931. — Price One Anna

BHAGAT SINGH, RAJGURU AND SUKHDEV EXECUTED.

NO "LAST INTERVIEW" WITH RELATIONS.

Shouts Emerge From Jail.

DEAD BODIES SECRETLY DISPOSED OF

Removed to Distant Place.

TRUCE TERMS NOT BEING CARRIED OUT.

Congressmen's Feeling.

GRIEVANCES AGAINST GOVERNMENT.

TWISTED WRECKAGE OF ROYAL SPOT.

Fastest Trade in World.

BHAGAT SINGH

SILENT DEMONSTRATION.

Gandhiji's Advice.

ट्रिब्यून, लाहौर, 2 फरवरी 1881

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध की स्थितियों में, जब राय ने फिरंगी हुकूमत की करतूतों पर प्रहार किया, तब उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। तीन माह की सजा काट कर जब वे वापस लौटे तब पुन: सम्पादन का दायित्व सम्हाल लिया। सन 1944 तक वे इस पद पर रहे। इस दौरान 'ट्रिब्यून' प्रसार, प्रतिष्ठा और लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचा।

साप्ताहिक 'ट्रिब्यून' का आकार 45 गुणित 25 से.मी. था। पृष्ठ सँख्या 12 और एक प्रति का मूल्य चार आना था। प्रथम दो पृष्ठों में देश-विदेश के समाचार छापे जाते थे। अर्द्ध साप्ताहिक होने पर पृष्ठों की सँख्या आठ और आकार बढ़ाकर 45 गुणित 30 इंच कर दिया गया था। प्रत्येक बुधवार तथा शनिवार को प्रकाशित होता था। पत्र को सुरुचिपूर्ण बनाने की दृष्टि से सन 1888 में इसमें कुछ विनोदपूर्ण सामग्री का प्रकाशन शुरू किया गया। एक जनवरी 1898 से इसे मंगलवार, गुरुवार तथा शनिवार को प्रकाशित किया जाने लगा।

एक जनवरी 1906 से 'ट्रिब्यून' दैनिक हो गया। इसका मूल्य कम करके एक प्रति का मूल्य दो आना कर दिया गया। अक्टूबर 1922 से इसे और कम करके डेढ़ आना कर दिया गया था। सन 1923 में पृष्ठ सँख्या बढ़ा कर 12 तथा सन 1927 में 16 कर दी गई। जनवरी 1928 में एक प्रति का मूल्य एक आना हो गया। सन 1935 में रविवार को चार पृष्ठीय परिशिष्ट पृथक से निकलने लगा। वर्तमान 'ट्रिब्यून' बीस पृष्ठों का निकलता है। एक सर्वांगीण समाचारपत्र के रूप में इसकी प्रतिष्ठा और लोकमान्यता है। 'ट्रिब्यून' के प्रकाशन के 126 साल पूरे हो गए हैं।

'ट्रिब्यून' का प्रकाशन लाहौर से 15 अगस्त 1947 तक हुआ। उस समय वहाँ हुए सांप्रदायिक दंगे के कारण इसमें कार्यरत लोगों को लाहौर छोड़ना पड़ा। प्रेस तथा उसकी समस्त सम्पत्ति, जिसमें इसका रिकार्ड भी था, वहीं छोड़ दी गई, जिसे बाद में सरकार ने भारत मँगवाया। इसके कारण 'ट्रिब्यून' का प्रकाशन चालीस दिन बंद रहा। 27 सितम्बर 1947 से इसका पुनर्प्रकाशन शिमला से किया गया तब यह दो पृष्ठ का निकलता था। किन्तु जनवरी 1948 तक हालत सुधरने पर इसका प्रकाशन आठ पृष्ठों में किया जाने लगा। 12 मई 1948 को प्रेस और कार्यालय अंबाला ले जाया गया। सन 1969 में 'ट्रिब्यून' का कार्यालय चंडीगढ़ स्थानान्तरित हुआ और इसका प्रकाशन यहाँ से शुरू हो गया।

जब पत्र लाहौर से प्रकाशित होता था तब इसकी प्रसार सँख्या 29,500 थी। विभाजन के पश्चात सन 1948 में घटकर 10,304 रह गई थी। किन्तु सन 1958 में प्रसार सँख्या बढ़ कर 25,519 हो गई जो सन 1978 में 1,46,618 तक पहुँच गई। जून 1980 में प्रसार सँख्या 1,76,111 थी। रविवारीय 'ट्रिब्यून' की प्रसार सँख्या बढ़ कर 1,85,120 हो जाती थी। 'ट्रिब्यून' ने पूरे उत्तर भारत में संवाददाताओं का सशक्त नेटवर्क कायम किया है। इसका प्रसार पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली तथा जम्मू-कश्मीर में है।

मुरादाबाद से मौलवी मोहम्मद अशरफ अली ने 12 पृष्ठ के साप्ताहिक *'ऐन-उल-अख़बार'* का प्रकाशन एक अप्रैल 1881 को किया था। मतबअ इमदतुल हिन्द में छपकर शनिवार को जारी किया जाता था। वार्षिक शुल्क सात रुपये दस आना था। ग़ाज़ीपुर से साप्ताहिक *'विक़ा-ए-आलम'* का प्रकाशन चार अप्रैल 1881 को मुंशी सिराजुद्दीन अहमद खां मुहम्मदाबादी ने किया था। पहले आठ और बाद में चार पृष्ठ का छापा जाने लगा। वार्षिक शुल्क सात रुपये था। साप्ताहिक *'आईना-ए-सिकन्दरी'* का प्रकाशन मुरादाबाद से एक मई 1881 को किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। इसके प्रकाशक मुंशी अहमद बख्श और सम्पादक शेख निज़ामउद्दीन थे। वार्षिक शुल्क नौ रुपये था।

साप्ताहिक *'दारुल सल्तनत'* कोलकाता से चार मई 1881 को प्रकाशित किया गया था। इसके प्रकाशक शेख एहसानउल्ला सौदागर देहलवी तथा सम्पादक मथुरा प्रसाद 'समर' थे। कुछ समय तक यह पत्र सप्ताह में दो बार (शनिवार तथा बुधवार को) भी निकाला गया। सन 1887 में मोहम्मद नादिर अली ने इस साप्ताहिक को खरीद लिया तथा सम्पादन का दायित्व अपने पुत्र मौलवी अब्दुल करीम को सौंप दिया। इस साप्ताहिक में विज्ञान, साहित्य, कला, उद्योग एवं इतिहास पर लेख प्रकाशित किए जाते थे। समाचार भी दिए जाते थे।

बेलगांव से *'कर्नाटक मित्र'* पाँच मई 1881 को शुरू हुआ। उसी समय *'ज्ञानबोधक'* निकला था। यह कन्नड पत्र था। सन 1881 में कश्मीर नरेश के संरक्षण में *'जम्मू प्रकाश'* पत्र के प्रकाशन की योजना बनी। इसके सम्पादन का दायित्व दुर्गाप्रसाद मिश्र को सौंपा जाना था। 'उचित वक्ता' में 21 मई 1881 को छपे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पत्र से इतना ही संदर्भ मिलता है।

साप्ताहिक *'सुबह-वतन'* का प्रकाशन पटना से एक जून 1881 को किया गया था। प्रकाशक मुंशी हसन अली, सम्पादक मौलवी सैयद रहीमउद्दीन तथा प्रबंधक अब्दुल क़ादिर थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। मासिक पत्रिका *'ताईद-उल-इस्लाम'* का प्रकाशन 29 जून 1881 को मुरादाबाद से किया गया था। इसके प्रकाशक मौलवी अमजद अली तथा सम्पादक मौलवी क़ाज़ी एहतशामउद्दीन थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था।

अर्द्ध साप्ताहिक *'इंडियन क्रानिकल'* एक जुलाई 1881 को निकला। पटना से बुधवार और शनिवार को इसका प्रकाशन किया जाता था। सम्पादक मुंशी रहमतउल्ला तथा प्रबंधक विशेश्वर सिंह थे। वार्षिक शुल्क बीस रुपये था। कुछ समय पश्चात यह साप्ताहिक हो गया। शुल्क भी कम करके बारह रुपये कर दिया गया था। 30 सितम्बर 1881 से मुम्बई से *'इस्रायली धर्मदीप'* नाम का पत्र निकला।

साप्ताहिक *'बाबा आदम'* का प्रकाशन बनारस से 12 अक्टूबर 1881 को हुआ। बुधवार को निकलता था। सम्पादक डा. अशफ़ाक़ हुसैन थे। आठ पृष्ठों के इस पत्र का वार्षिक शुल्क आठ रुपये था। इसका हास्य परिशिष्ट *'बनारस पंच'* के नाम से निकाला जाता था। जालंधर से साप्ताहिक *'आफ़ताब-ए-हिन्द'* का प्रकाशन सन 1881 में हुआ था। आठ पृष्ठ का अख़बार सोमवार को निकलता था। इसके सम्पादक-प्रकाशक मुंशी बरकत अली 'शौकत' थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये तेरह आना था। जबलपुर से अंजुमन-ए-इस्लाम ने अपना मुख पत्र *'अंजुमन-ए-इस्लाम'* नाम से सन 1881 में प्रकाशित किया था।

कोचीन से सन 1881 में *'केरल मित्रम्'* का प्रकाशन कंदातिल वर्गीज मप्पिलई ने किया। गुजराती सज्जन देवजी भीमजी इसके प्रकाशक थे। (वर्गीज ने ही बाद में 'मलयाला मनोरमा' की स्थापना की।) यह मलयालम भाषा का पत्र था।

वर्ष 1881 में *'चिंतामणि'* का प्रकाशन वाविलाल वासुदेव शास्त्री ने राजमुंदरी से किया। यह तेलुगु मासिक पत्रिका थी। सन 1891 में यह साहित्यिक पत्रिका सुब्बराव के सम्पादन में निकलने लगी। सन 1897 में इसका प्रकाशन चेन्नै से होने लगा। सन 1881 में तासगांव से विनायकराव कौलगीकर ने *'चंद्रांशु'* नाम का पत्र निकाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक *'तूती-ए-हिन्द'* का प्रकाशन सन 1881 में मेरठ से हुआ। पत्र के सम्पादक मोहम्मद मुर्तुज़ा 'बयान' यज़दानी तथा सम्पादक सैयद क़र्रार हुसैन 'रुहानी' थे। बयान यज़दानी ने *'लिस्सान-उल-मुल्क'* पत्रिका भी निकाली, जिसमें कविताएँ प्रकाशित की जाती थीं।

'तूती-ए-हिन्द' के परिशिष्ट के रूप में *'मेरठ पंच'* का प्रकाशन किया जाता था। चार पृष्ठों का यह पत्र हर शुक्रवार को प्रकाशित होता था। इसका वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। 15 नवम्बर 1881 को मुम्बई से बाबाजी पांडू मोरे ने पाक्षिक *'अरण्य पंडित'* का प्रकाशन आरम्भ किया। इस पत्र में धर्म, न्याय, नीति, व्यवहार, चातुर्य, राजनीति विषयक लेख प्रकाशित किए जाते थे।

साप्ताहिक *'दबीर-उल मुल्क'* का प्रकाशन नवम्बर 1881 में भोपाल से किया गया था। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलाना अमजद अली अशहरी थे। आठ पृष्ठ का यह अखबार रविवार को निकलता था। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

मेरठ से सन 1881 में *'देवनागरी प्रचारक'* प्रकाशित हुआ। लखनऊ से 12 पृष्ठ के साप्ताहिक *'बतियान-उल-अख़बार'* का प्रकाशन 1881 में किया गया था। मंगलवार को जारी होता था। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलाना मोहम्मद अली थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

बालबोध

सन 1881 में *'बालबोध'* नामक मराठी बाल मासिक पत्रिका मुम्बई से निकली। यह पत्रिका चौबीस पृष्ठों की थी। वार्षिक शुल्क ग्यारह आना था। इसमें प्रौढ़ वर्ग के लिए भी सामाजिक सुधार, प्रौद्योगिकी सम्बन्धी लेख प्रकाशित किए जाते थे। जो लेख विशेष रूप से बच्चों के लिए होते थे, उनकी भाषा सरल होती थी। 'लोग क्या कहते हैं' शीर्षक से एक पृष्ठ अंत में होता था, जिसमें महीने भर के सामाजिक-राजनीतिक-घटनाचक्र की जानकारी संक्षेप में दी जाती थी। मासिक का उद्देश्य प्रथम अंक में प्रकट किया गया-''जो बातें स्कूल में नहीं जानी जा सकतीं, लेकिन जिन्हें जानना तुम्हारे लिए जरूरी है, लाखों बातें हैं, उनमें से थोड़ी-थोड़ी बातें हर बार तुम्हें सरल भाषा में बता कर तुम्हारा मनोरंजन करने तथा तुम्हारी पवित्रता बढ़ाने के लिए हम प्रयत्न करते हैं।''

सम्पादक ओक के संकल्प के बल बूते पर यह मासिक 38 वर्ष तक चला। 'बालबोध' में ओक के ही लिखे 400 निबंध, 400 चरित्र तथा 800 लेख प्रकाशित हुए। सम्पादक के निधन के साथ यह पहला मराठी बाल मासिक बंद हो गया। 'सरस्वती' (1915) ने 'बालबोध' पर टिप्पणी छापी-''यह पत्र 34 वर्ष से लगातार निर्णय सागर प्रेस से निकल रहा है। आरम्भ से मृत्यु पर्य्यन्त इसका सम्पादन अकेले ओक महाशय ने ही किया। यह पत्र सदा समय पर निकला। गत अक्टोबर का यह अंक हमें 17 अक्टोबर को मिला था। सबसे बड़ी बात इस पत्र के सम्बन्ध में यह है कि इसका सारा मज़मून, अथ से इति पर्य्यन्त, ओक ही लिखते थे। इन्होंने पत्र पर कभी अपना नाम नहीं दिया। इस पत्र की भाषा बड़ी ही मधुर, स्वाभाविक और सरल होती रही है। इसमें चुन चुन कर ऐसे विषयों पर ओक महाशय लेख और नोट देते रहे हैं कि उनसे पढ़ने वालों की कुछ न कुछ ज्ञान-वृद्धि प्रायः होती ही थी। हर अङ्क में एक नई कविता, एक सचित्र जीवन चरित, एक शास्त्रीय लेख अवश्य ही प्रकाशित हुआ है। यह है तो बालकों के लिए, पर प्रौढ़ों और वृद्धों ने भी इससे लाभ उठाया है। हमने स्कूल भी न छोड़ा था तभी से हम इस पत्र को पढ़ते आये हैं। इससे हमारी अज्ञता बहुत कुछ दूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई है। इसके कई लेखों का अनुवाद हम सरस्वती में भी प्रकाशित कर चुके हैं। इस ग्यारह आना वार्षिक मूल्य के मासिक पत्र ने एक वर्ष में ग्यारह रुपये से भी अधिक मूल्य का ज्ञानोपदेश किया है। पर अब ओक महाशय का शरीरान्त हो गया है।''

बंगवासी

लार्ड रिपन के कार्यकाल में वर्नाकुलर प्रेस कानून रद्द हो जाने के बाद बंगला भाषा में कुछ महत्वपूर्ण राजनीतिक पत्र निकले, जिन्होंने बंगला पत्रकारिता को प्रखर तेवर प्रदान किए। इसी श्रृंखला में सन 1881 में योगेन्द्रचन्द्र बसु के सम्पादन में कोलकाता से '*बंगवासी*' निकला। 'विशाल भारत'[1] में रवीन्द्रनाथ के जीवन की झाँकी शीर्षक से लिखा मिलता है-''सन 1886 में बंगवासी (जो उन दिनों साप्ताहिक था) में ब्रह्म-समाज के आदर्शों एवं सिद्धांतों पर आक्षेप करते हुए कई लेख प्रकाशित हुए जिनका जवाब आपने 'संजीवनी' नाम के बंगला साप्ताहिक में दिया।'' बंगला 'बंगवासी' कुछ भिन्न प्रकार का था। यह सनातनी हिन्दू पक्ष का समर्थक था। यह काफी लोकप्रिय हुआ और इसके साथ 'हिन्दी बंगवासी' प्रकाशित हुआ। 'बंगवासी' दैनिक भी हो गया।

राजपूताना गजट

साप्ताहिक '*राजपूताना गजट*' का प्रकाशन सन 1881 में अजमेर से किया गया था। यह हिन्दी और उर्दू का द्विभाषी पत्र था। पृष्ठ सँख्या आठ थी। प्रत्येक सोमवार को मतबअ चिराग़ अजमेर में छपता था। इसके सम्पादक मुराद अली 'बीमार' थे। 'राजपूताना पंच' इसके परिशिष्ट के रूप में निकलता था। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। इस समाचारपत्र ने राजस्थान में जन सामान्य पर केन्द्रित पत्रकारिता का सूत्रपात किया था। सम्पादक निर्भीकतापूर्वक कलम चलाते थे। इसी वजह से सम्पादक मुराद अली 'बीमार' को जेल भी जाना पड़ा था। उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी पत्नी मोती बेगम ने पत्र का प्रकाशन जारी रखा। सन 1912 में इसका प्रकाशन बंद हो गया। लाहौर से सन 1881 में गुरुदत्त विद्यार्थी और आर्य पथिक लेखराम के सम्पादन में अँगरेजी मासिक '*वैदिक मैगजीन*' निकली।

सन 1881 में '*सुजन प्रमोदिनी*' का प्रकाशन हुआ। यह तेलुगु पत्र आ. वेंकटराव सांख्यायन शर्मा ने निकाला था। सन 1881 में '*शफ़क़*' नामक चार पृष्ठों के साप्ताहिक का प्रकाशन हैदराबाद से किया गया था। इसके प्रकाशक सैयद हसन रिज़वी थे। इतवार को छपता था। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। हर दस दिन में प्रकाशित होने वाला '*हयात-ए-जाविदां*' आगरा से सन 1881 में निकला। इसके प्रकाशक बाबू झब्बीलाल तथा प्रबन्धक मौला बख्श थे। सालाना शुल्क चार रुपये था।

सन 1881 में गंगादशमी को खड्गविलास प्रेस पटना से '*क्षत्रिय पत्रिका*' का प्रकाशन महाराज रामदीन सिंह के सम्पादकत्व में हुआ। क्षत्रियों की एकजुटता और स्वाभिमान का लक्ष्य लेकर यह पत्रिका निकाली गई थी। इस मासिक पत्रिका का मूल्य छह रुपये था। इसमें विविध विषयों पर ज्ञानवर्द्धक लेखों का प्रकाशन किया जाता था। 'काम की बातें' और 'समाचारावली' नियमित स्तम्भ थे। सन 1881 में इलाहाबाद से पँडित जगन्नाथ प्रसाद वैद्य ने मासिक '*आरोग्य दर्पण*' निकाला।

---

1. विशाल भारत, जनवरी 1942, पृष्ठ 143

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिल पत्रकारिता का आदर्श

1882

स्वदेशमित्रन

सन 1882 में तमिल भाषा में निकलने वाले समाचारपत्र '*स्वदेशमित्रन*' ने तमिल पत्रकारिता में कई मायनों में इतिहास रचा। तमिल पत्रों में यह पहला अखबार था जो समय पर प्रकाशित होता था। जी.सुब्रमण्य अय्यर इसके संस्थापक थे। सन 1878 में उन्होंने 'हिन्दू' के प्रकाशन में भी सहयोग दिया था और वे उसके संपादक भी थे। वे अँगरेजी भाषा में प्रकाशित 'हिन्दू' और तमिल पत्र 'स्वदेशमित्रन' दोनों का सन 1898 तक सम्पादन करते रहे। इसके बाद उन्होंने 'हिन्दू' छोड़ दिया और 'स्वदेशमित्रन' को पूरा समय देकर सन 1899 में इसे दैनिक पत्र में बदल दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कई तमिल पत्रिकाएँ निकली और उनको वी.वी.एस. अय्यर, सुब्रमण्यम भारती, टी.वी.कल्याणसुन्दर मुदालियार, टी.आर. चोकलिंगम, डा. पी.वरदराजुलू नायडू, सी.आर. राजगोपाल जैसे प्रसिद्ध लेखकों का सहयोग प्राप्त हुआ। किन्तु वे अधिक समय तक प्रकाशित नहीं हुई। किन्तु 'स्वदेशमित्रन' ऐसा दैनिक पत्र रहा जो निरंतर समय पर प्रकाशित हुआ।

सन 1915 में इस पत्र के संपादक ए. रंगास्वामी अय्यंगार बने। उन्होंने इसके प्रबन्धन पर अधिक ध्यान दिया। इसके पूर्व वे 'हिन्दू' में वरिष्ठ सह संपादक के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने इस पत्र के समाचारों एवं अन्य सामग्री को सुसम्पादित कर उत्कृष्ट एवं पाठकों के लिए अधिकाधिक सुरुचिपूर्ण बनाया। उनके कार्यकाल में ही 'स्वदेशमित्रन' की प्रसार संख्या बढ़ी एवं इसके आर्थिक साधनों की भी बढ़ोतरी हुई। उनके प्रयत्नों के कारण ही यह पत्र प्रथम श्रेणी के पत्रों की गणना में आया। 1928 में वे इसे छोड़कर पुनः 'हिन्दू' में चले गए। तमिल पत्रों में जिस उत्कृष्टता और दृढ़ता के दर्शन आज होते हैं, उनकी नींव वास्तव में 'स्वदेशमित्रन' ने ही रखी थी। नये शब्दों की रचना जो समाचारपत्रों में समाचारों, राजनीतिक एवं अन्य विषयों में अँगरेजी पत्रों के प्रयोग किए जाते थे, के समान शब्द रचकर इस पत्र ने तमिल पत्रकारिता को समृद्ध किया। प्रख्यात कवि सुब्रमण्यम भारती जो 'इंडिया' नामक पत्र के संपादक भी रहे, ने इस पत्र में भी सेवाएं दीं।

ए.रंगास्वामी के इस पत्र को छोड़ने के बाद भी इस पत्र में कोई फर्क नहीं आया क्योंकि उनके बाद भी इस पत्र को योग्य संपादकों की सेवाएं प्राप्त होती रहीं। इस पत्र के इतिहास में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया अध्याय उस समय जुड़ा जब सी.आर.श्रीनिवासन इसके संपादक बने। उनके कार्यकाल में यह पत्र और भी बेहतर हुआ। देश की स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्ष के समय इस पत्र का रुख गंभीर रहा। उन्होंने आधुनिक संसाधन जुटाने पर ध्यान केन्द्रित किया। व्यावसायिक पक्ष को भी मजबूत किया। उनके कार्यकाल में ही इंग्लैंड से रोटरी छपाई मशीन बुलाई गई। सन 1962 में उनकी मृत्यु के पश्चात भी 'स्वदेशमित्रन' तमिल पत्रों की अग्रिम पंक्ति का दैनिक पत्र रहा।

'रोजनामचा' लखनऊ से एक जनवरी 1882 को प्रकाशित किया गया। यह चार पृष्ठ का दैनिक समाचारपत्र था। प्रकाशक खुदाबख़्श बनारसी तथा सम्पादक सैयद अब्दुल बसीर हुज़ूर बिलग्रामी थे। मतबअ गुलज़ारे अदब में छपता था। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। एक जनवरी 1882 को *'रिफार्मर'* का प्रकाशन लाहौर से किया गया था। यह साप्ताहिक पहले ब्रह्मसमाज प्रेस में छपता था। सन 1883 में मुफीद-ए-आम प्रेस में तथा सन 1884 से 'आर्य प्रेस' में छपने लगा। इसके प्रकाशक मुंशी शालिगराम तथा सम्पादक पंडित हरगोपाल थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। पृष्ठ सँख्या आठ थी।

बुलंद शहर से आठ पृष्ठ वाले साप्ताहिक *'ग्रूस गजट'* का प्रकाशन एक जनवरी 1882 को किया गया था। इसके सम्पादक-प्रकाशक बाबू गंगा सहाय थे। वार्षिक शुल्क बाईस रुपये था। एक जनवरी 1882 को साप्ताहिक *'शमीम'* का प्रकाशन इलाहाबाद से किया गया था। गोविन्दप्रसाद प्रकाशक थे। धर्म प्रकाश प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क सवा पाँच रुपये था। मासिक *'मेहर-ए-इन्तिख़ाब'* का प्रकाशन 15 जनवरी 1882 को कोलकाता से हुआ। इसके प्रकाशक अब्दुल हमीद 'हमीद' थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये छह आना था। साप्ताहिक *'सैयारा-ए-अवध'* लखनऊ से 29 जनवरी 1882 को निकला। 16 पृष्ठ के इस पत्र के प्रकाशक सैयद मीर हसन तथा सम्पादक सैयद मोहम्मद हुसैन 'अग़लब' थे।

54 पृष्ठ की पत्रिका *'नतीजा-ए-सुख़न'* कोलकाता से 15 फरवरी 1882 को प्रकाशित हुई। इसके प्रकाशक शेख मोहम्मद वज़ीर तथा सम्पादक अब्दुल समद कानपुरी थे। दीन प्रेस में छपने वाली पत्रिका का वार्षिक शुल्क दो रुपये बारह आना था। इसमें ऐतिहासिक घटनाएँ, यूरोप, इंग्लैण्ड तथा हिन्दुस्तान के शासकों के चित्रों के साथ छापी जाती थीं। कविताओं को अधिक स्थान दिया जाता था। कोलकाता से प्रकाशित होने वाले आठ पृष्ठीय अर्द्ध साप्ताहिक *'अमीर-उल-अख़बार'* का प्रकाशन एक अप्रैल 1882 को हुआ था। अमीर-उल-मतबअ में छपने वाले इस पत्र के प्रकाशक गुलाम हज़रत 'ख़स्ता' थे। वार्षिक शुल्क आठ रुपये था।

कानपुर जिले के शिवराजपुर से *'मुख़बिर-ए-हक़ीक़ी'* का प्रकाशन एक अप्रैल 1882 को किया गया। यह पाक्षिक पत्र उर्दू तथा हिन्दी में प्रकाशित किया जाता था। प्रकाशक मुंशी राजबहादुर 'ज़ख़्मी' थे। एक साल बाद बंद हो गया। मासिक *'सवान्ह उम्री'* का प्रकाशन लाहौर से एक अप्रैल 1882 को किया गया था। मुंशी नत्थूराम 'आनन्द' सम्पादक-प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये तीन आना था। इसमें देश विदेश के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक व्यक्तियों तथा सुधारवादियों की जीवनियाँ प्रमुखता से छापी जाती थीं। नौ अप्रैल 1882 को *'जानहिदश नॉव्हश कोफीस्तश'* पत्र पार्से से निकला। यह साप्ताहिक पोर्तुगीज तथा मराठी भाषा में निकलता था। सम्पादक गोविंद भास्कर पार्सेकर थे। सन 1886 में यह पत्र बंद हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्नौज से 14 अप्रैल सन 1882 को मासिक पत्रिका 'पयामे आशिक़' निकली। बीस पृष्ठीय इस मासिक पत्रिका के सम्पादक भग्गूखां रहीम थे। मतबअ रहीमी में छपने वाले इस मासिक का वार्षिक शुल्क एक रुपया था। इसमें समस्यापूर्ति तथा अन्य गज़लें, लेख, कहानियाँ, चुटकुले आदि सचित्र छापे जाते थे।

देश हितैषी

'देश हितैषी' एक अप्रैल 1882 में प्रकाशित हुआ। यह आर्य समाज अजमेर का मुख पत्र था। अजमेर के फ्रेण्ड आफ राजपूताना यंत्रालय से छपने वाले इस मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क दो रुपये था। पत्रिका का आकार 24 गुणित 14 से.मी. था। आर्य समाज की इकाइयों की गतिविधियाँ एवं स्वामी दयानंद के देश-भ्रमण के समाचार इसमें प्रमुखता से छपते थे। नीति सम्बन्धी मत-मतांतर पर उन दिनों अखबार में कटाक्ष हुआ करते थे। लाहौर का 'मित्र विलास' आर्य समाज की प्रगतिशील सामाजिक सोच का आलोचक था। 'देश हितैषी' इसे प्रतिगामी मानता था।

भारत में स्वदेशी आन्दोलन खड़ा होने से काफी पहले-अक्टूबर 1882 में 'देश हितैषी' ने एक पत्र छापा-''जितनी वस्तु इस शरीर की रक्षा, पोषण व कार्य में आवश्यकीय होय, सब देश की ही बनी होय। यहाँ तक विचार रखिए कि अन्य देश का बना हुआ सूत तक वस्त्रों में न हो। द्वितीय जितने पुत्र होयें उन प्रत्येक को एक-एक ही प्रकार की शिल्प विद्या में निपुण कराकर देशीय या विलायतीय यंत्रालयों में निज विद्या की कारीगरी सिखलाइए।'' 'देश हितैषी' में कविता, लेख, देश-विदेश के समाचार, ग्रंथ समीक्षा छपा करते थे। 'देश हितैषी' हिन्दी भाषा का प्रबल समर्थक था। उसका मानना था कि जन भाषा होने से हिन्दी में छपने पर किताबें ज्यादा लोगों को लाभ पहुँचा सकती हैं। दिसम्बर 1882 के अंक में अदालतों में हिन्दी को स्वीकृति प्रदान करने के लिए हण्टर कमीशन को भेजे गए ज्ञापन की खबर छापी गई। इस प्रार्थना पत्र पर अजमेर के 1550 नागरिकों ने हस्ताक्षर किए थे, जिनमें हिन्दुओं के अलावा 27 पारसियों और 35 मुसलमानों ने भी सहमति में हस्ताक्षर किए थे।

साप्ताहिक *'इस्लाम'* का प्रकाशन मेरठ से 15 अप्रैल 1882 को किया गया था। यह मजलिसे इस्लामिया का मुख पत्र था। मजलिस के सचिव मौलवी सैयद मीर वकील शुक्रवार को निकालते थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये तेरह आना था। कविताओं की मासिक पत्रिका *'बहार-ए-अंजुमन'* का प्रकाशन पाँच मई 1882 को फैज़ाबाद से हुआ था। यह 48 पृष्ठों की पत्रिका थी। अंजुमन-तहज़ीब फ़ैजाबाद इसका प्रकाशन करती थी। सम्पादक अब्बास मिर्ज़ा 'होश' थे। क़ादरी प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

14 मई 1882 को रत्नागिरी से *'बकुल'* प्रकाशित हुआ। इस मराठी पत्र के सम्पादक गांधी थे। यह साप्ताहिक समाचारपत्र था। साप्ताहिक *'शोख़ अवध'* का प्रकाशन लखनऊ से 23 मई 1882 को हुआ। प्रत्येक शुक्रवार को निकलता था। प्रकाशक सैयद अहमद हसन थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये था। 24 मई 1882 को मासिक *'मज़हर-उल-ज़राअत'* का प्रकाशन हकीम मुक़र्रब हुसैन ने मेरठ से किया था। मतबअ दारुलउलूम में छपता था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। यह कृषि सम्बन्धी पत्रिका थी। लाहौर से अप्रैल 1882 में *'भारत हितैषी'* निकला था।

चार पृष्ठों का साप्ताहिक *'गुलदस्ता बनारस'* एक जुलाई 1882 को बनारस के सलीमपुरा से निकाला गया था। इसके प्रकाशक हकीमउद्दीन तथा फ़िदा हुसैन थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। 12 पृष्ठ का साप्ताहिक पत्र *'नूर-ए-बदायूँ'* का प्रकाशन मौलवी अली अमजद हुसैन ने एक जुलाई 1882 को बदायूँ से किया था। यह गुरुवार को निकलता था। कुछ समय पश्चात बांसबरेली जिले के आँवला से हकीम वारिस अली खां ने प्रकाशित किया। वार्षिक शुल्क छह रुपये दस आना था।

पुणे से 24 जुलाई 1882 को *'शौकत-उल-इस्लाम'* का प्रकाशन हुआ। यह साप्ताहिक प्रत्येक सोमवार को निकलता था। कुछ समय बाद इसका प्रकाशन मुम्बई से होने लगा। इसके सम्पादक जामी करतान थे। सन 1884 में यही पत्र हैदराबाद स्थानांतरित हो गया। शुरू में चार पृष्ठ का था। बाद में पृष्ठ सँख्या बढ़ा कर बारह कर दी गई थी। जब रियासती शासन ने समाचारपत्रों से किसी अधिकारी की आलोचना नहीं करने का शपथ पत्र माँगा, तब (सन 1891 में) 'शौकत-उल-इस्लाम' ने उसका कड़ा विरोध किया। बीच में कुछ काल के लिए 'शौकत-उल-इस्लाम' का प्रकाशन बंद रहा। 1918 में मोहम्मद बशीर अहमद क़ादरी ने नये सिरे से अखबार का प्रकाशन किया। इसका वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

धार्मिक विषयों के पाक्षिक *'धर्म प्रचारक'* का प्रकाशन फतेहगढ़ से एक अगस्त 1882 को किया गया था। प्रकाशक अम्बाप्रसाद तथा सम्पादक मुंशी सिद्दीक़ हसन 'मित्रत' थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया आठ आना था।

सुरमय रोजगार

साप्ताहिक *'सुरमय रोजगार'* का प्रकाशन एक अगस्त 1882 को आगरा से हुआ। यह आठ पृष्ठ का था। मंजर-ए-तिलिस्म प्रेस में छपता था। प्रकाशक सैयद इशरत हुसैन थे। पत्र का वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था।जुर्रियात हुसैन रिज़वी सम्पादक थे। यह एक तरह से देसी रियासतों का मुख पत्र था जिसमें अधिकतर रियासतों के राजा, महाराजा एवं नवाबों के बारे में समाचार प्रकाशित होते थे।

यह अख़बार आज़ादी की लड़ाई लड़ने वालों की मुख़ालफत करता था। इसका प्रमाण इस सम्पादकीय टिप्पणी से मिलता है- ''देश के असली नेताओं ने गोलमेज़ कांफ्रेन्स को असफल बनाने के प्रयासों के भयंकर परिणामों का जो अनुमान लगाया था वह आज प्रत्यक्ष रूप से देश के विभिन्न क्षेत्रों में सामने आ रहा है। असहयोग आंदोलन के विनाशकारी परिणामों के व्यावहारिक रूप को आज देखा जा सकता है। शोलापुर में तीन सिपाहियों को जला कर उनकी हत्या कर देना सत्याग्रह का वास्तविक चित्रण है। देश के तथाकथित नेताओं द्वारा असहयोग आंदोलन को अहिंसात्मक रूप से चलाने की नीति बताना देश के साथ धोखा करना है। असहयोग करने के दौरान हिंसा नहीं होना असम्भव है। वास्तव में यह कुछ स्वार्थी लोगों के हाथ का चालू हथियार है जो ग़रीब हिन्दुस्तानियों पर वे चला रहे हैं जिसके कारण निर्दोष कृषकों एवं छात्रों का जीवन बरबाद हो रहा है। महात्माजी अथवा उनके अनुयायियों को इससे कोई हानि नहीं पहुँच रही है। वे लोग तो 'ए' अथवा 'बी' श्रेणी के कमरों में शांति से अपना समय निवाड़ के पलंगों पर बैठ कर व्यतीत करेंगे किन्तु वे ग़रीब हिन्दुस्तानियों को देश की स्वतंत्रता का स्वप्न दिखाकर उन्हें बरबादी के अंधे कुंए में ढकेल रहे हैं। हम मानते हैं कि हिन्दुस्तान की स्थिति ठीक नहीं है किन्तु क्या उसके यही सब कारण हो सकते हैं? देश के हर कोने से उपद्रव और हत्याओं का शोर उठ रहा है क्या उन घायलों की कराहें और विधवाओं एवं अनाथों का चीत्कार देश को स्वतंत्रता दिला सकता है?-बिल्कुल नहीं। सबसे पहले देश के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औद्योगिक विकास एवं शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता है, उस प्रसार के स्थान पर स्कूलों और कॉलिजों का त्याग करने को कहा जा रहा है। वास्तव में देशवासियों के लहू के छींटों से उन नेताओं के वस्त्रों पर रंगीन बेलबूटे बन गये हैं किन्तु वे इसे राजनीतिक होली से अधिक महत्व नहीं देते। इस खूनी अध्याय को जल्दी बंद करने की अति आवश्यकता है तथा देश के वास्तविक नेताओं का कर्तव्य है कि वे शासन के साथ सहयोग करके गोलमेज़ कांफ्रेन्स को सफल बनाने का प्रयास करें। इससे भी अधिक इस बात की आवश्यकता है कि गोलमेज़ कांफ्रेन्स में देश के वास्तविक नेताओं और देश के प्रति सही भावनाएँ रखने वाले प्रतिनिधियों को ही उसमें भाग लेने के लिए भेजा जावे। गोलमेज़ कांफ्रेन्स को असफल बनाने के प्रयास देश के भविष्य को अन्धकारमय बना देंगे कारण कि बहिष्कार आंदोलन के समय कौसिलों का बायकॉट करने के परिणामों से काफी अनुभव प्राप्त हो चुका है कि देश का प्रतिनिधित्व करने वे कौसिलों में गये थे और क्या किया। उसके परिणामों से पढ़े लिखे लोग पूरी तरह से अवगत हैं। अब पुन: वही गलती की जा रही है जिसके दुष्परिणाम देशवासियों को भुगतना पड़ेंगे।"

बदायूँ से 16 अगस्त 1882 को *'अंजुमन इल्मी'* प्रकाशित हुई। 16 पृष्ठों की यह उर्दू मासिक पत्रिका अख़्तर प्रेस लखनऊ में छपती थी। एक वर्ष का शुल्क एक रुपया बारह आना था। मासिक पत्रिका *'उर्वर वंश प्रकाश'* का प्रकाशन फ़ैज़ाबाद से एक सितम्बर 1882 को हुआ। पत्रिका 16 पृष्ठ की थी। बाबू कुक्कूमल वकील प्रकाशक थे। नरायनी प्रेस में छपती थी। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। चार पृष्ठ का पाक्षिक *'नफ़ीस-उल-अख़बार'* एक सितम्बर 1882 को फतेहगढ़ से निकला। प्रकाशक मुंशी सिद्दीक़ 'मित्रत' तथा प्रबन्धक अम्बाप्रसाद थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये दस आना था। साप्ताहिक *'महर-ए-ज़राफत'* का प्रकाशन लखनऊ से एक सितम्बर 1882 को हुआ। इसके प्रकाशक लाला पूरनचन्द तथा सम्पादक लाला रामसहाय 'तमन्ना' थे। तमन्नाई प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क छह रुपये आठ आना था। यह आठ पृष्ठों का था।

साप्ताहिक *'आईना-ए-तहज़ीब'* गाज़ीपुर जिले के सैयदपुर से 10 सितम्बर 1882 को प्रकाशित हुआ। प्रकाशक बाबू शिवप्रसाद तथा प्रबन्धक मौलवी मोहम्मद यासीन 'शफ़क़' थे। बारह पृष्ठ के इस पत्र का वार्षिक शुल्क छह रुपये था। इसके परिशिष्ट के रूप में आठ पृष्ठीय साप्ताहिक 'सरपंच' का प्रकाशन 10 सितम्बर 1882 को हुआ था। पहले इसका नाम 'नारा मस्ताना' था, जो सोमवार को निकलता था। आठ पृष्ठों का साप्ताहिक *'उरूज मुहम्मदी'* इलाहाबाद से 21 सितम्बर 1882 को निकला। इसके प्रकाशक इरशाद हुसैन खां तथा प्रबन्धक राहत हुसैन खां थे। उरूज मुहम्मदी प्रेस इलाहाबाद में छपता था। वार्षिक शुल्क छह रुपये आठ आना था।

महीने में तीन बार- एक, दस तथा बीस तारीख को निकलने वाले *'ख़ैरख़्वाह-ए-इस्लाम'* का प्रकाशन मुम्बई से एक अक्टूबर 1882 को किया गया था। बाद में हैदराबाद से मोहम्मद इब्राहीम ने, कानपुर से मोमिन सज्जाद ने, इलाहाबाद से हाफिज़ मोहम्मद इब्राहीम ने प्रकाशित किया। तदनन्तर कराची से भी प्रकाशित किया गया। प्रकाशक मदरसा अंजुमन इस्लाम के सहायक शिक्षक शेख रज़ीउद्दीन थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। साप्ताहिक *'नज़ायर वीकली नोटिस'* सैयदपुर से एक अक्टूबर 1882 को प्रकाशित हुआ। सोलह पृष्ठ का यह कानून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयक पत्र सोमवार को निकलता था। प्रकाशक बाबू शिवप्रसाद तथा मौलवी मोहम्मद यासीन 'शफ़क़' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये आठ आना था।

15 अक्टूबर 1882 को लखनऊ से *'इमामिया'* का प्रकाशन हुआ। सोलह पृष्ठ का पत्र दस दिन के अन्तराल से छपता था। प्रकाशक सैयद इबाद अली तथा प्रबन्धक आबिद अली रिज़वी थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। मज़हर उल अजायब प्रेस में छपता था। 24 पृष्ठों का मासिक *'गुलदस्ता-ए-सुख़न'* आगरा से 15 अक्टूबर 1882 को प्रकाशित किया गया था। प्रकाशक अहमद खां सूफ़ी तथा प्रबन्धक वज़ीर खां थे। कविताओं की यह पत्रिका मुफ़ीद आम प्रेस में छपती थी। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। कोलकाता से एक नवम्बर 1882 को *'मलिक-उल अख़बार'* का प्रकाशन हुआ। यह चार पृष्ठों का दैनिक पत्र था। इसके प्रकाशक मिर्ज़ा मोहम्मद सईद और सम्पादक 'नफ़ीस' कानपुरी थे। वार्षिक शुल्क 10 रुपये था।

दिल्ली से 24 पृष्ठों की मासिक पत्रिका *'हिन्दुस्तानी उर्दू लुग़ात'* का प्रकाशन एक नवम्बर 1882 को किया गया था। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक ज़िला फ़ारसी मिडिल स्कूल दिल्ली के शिक्षक मुंशी सैयद अहमद देहलवी थे। इसमें उर्दू शब्द कोश का धारावाहिक प्रकाशन किया जाता था। मासिक *'मथुरा समाचार'* का प्रकाशन एक दिसम्बर 1882 को हुआ। प्रबन्धक पंडित रामनारायण भार्गव थे। मथुरा प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क एक रुपया आठ आना था। यह स्थानीय आर्य समाज का पत्र था। पृष्ठ सँख्या 20 थी।

लखनऊ के मदरसा ईमानिया ने पाक्षिक *'अख़बार-उल-अख़बार'* सन 1882 में निकाला। इसमें 10 पृष्ठ होते थे। सात रुपये दस आना वार्षिक शुल्क था। सैयद मोहम्मद अली सम्पादक थे। मुम्बई से 28 पृष्ठों के उर्दू-अँगरेजी मासिक *'उर्दू इन्स्ट्रक्टर'* का प्रकाशन 1882 में किया गया। प्रकाशक मुंशी शेख हाजी गुलाम मोहम्मद थे। वार्षिक शुल्क 10 रुपये था।

वर्ष 1882 में तेलुगु पत्रिका *'कल्पनिधि'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक पुलपर्ति शांतय्या थे। प्रकाशन काकिनाड से होता था। सन 1882 में मडगांव से मासिक *'गोवामित्र'* निकला। साप्ताहिक *'तहज़ीब'* का प्रकाशन मुरादाबाद से 1882 में किया गया था। बारह पृष्ठ का यह अखबार प्रत्येक सोमवार को निकलता था। प्रकाशक राहत अली खां थे। वार्षिक शुल्क 12 रुपये था।

सन 1882 में *'नज़्म-उल-अख़बार'* का प्रकाशन इटावा से हुआ था। पहले यह छोटे आकार के बारह पृष्ठों में निकलता था, फिर चार बड़े पृष्ठों का निकलने लगा। नवाब मुमताज़ अली खां इसके संस्थापक, हाफिज़ रुहउल्ला खां प्रकाशक एवं ख्वाज़ा बशीरउद्दीन अहमद सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। उन दिनों मेरठ से 'तूती-ए-हिन्द' भी निकलता था, जिसमें बशीरउद्दीन के लेख सर सैयद अहमद की विचारधारा के विरोध में प्रकाशित होते रहते थे। नवाब मुमताज़ अली खां ने इटावा से सर सैयद के विरोध के लिए ही 'नज़्म-उल-अख़बार' निकाला था। बशीरउद्दीन को इटावा बुलाकर पत्र का सम्पादक नियुक्त कर दिया। सन 1897 तक वे इस पत्र के सम्पादक रहे। सन 1898 में सर सैयद अहमद से उनकी पहली मुलाकात हुई। इस भेंट से उनके विचारों में परिवर्तन आया। उन्होंने सम्पादक का पद त्याग दिया। फरवरी 1899 में उन्होंने अपना समाचारपत्र *'अल बशीर'* शुरू कर दिया, जो लगभग 50 साल तक प्रकाशित होता रहा।

सन 1882 में मुरादाबाद से अर्द्ध साप्ताहिक *'नूर-उल-अख़बार'* प्रकाशित हुआ। बारह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ का यह पत्र बुधवार तथा शनिवार को प्रकाशित किया जाता था। प्रकाशक मुंशी नूर उल्ला तथा प्रबन्धक अज़ीजउल्ला थे। वार्षिक शुल्क पन्द्रह रुपये था।

प्रयाग समाचार

1882 में इलाहाबाद से *'प्रयाग समाचार'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। देवकीनंदन तिवारी सम्पादक थे। स्थानीय समाचार अधिक रहते थे। इलाहाबाद से 'हिन्दी प्रदीप' के बाद यह दूसरा महत्वपूर्ण पत्र प्रकाशित हुआ। यह साप्ताहिक पत्र दो पृष्ठों का था। मूल्य एक पैसा था। जब 'प्रयाग समाचार' के संचालन में कठिनाई महसूस होने लगी तब उसे वैद्यराज जगन्नाथ शर्मा को सौंप दिया। उनके बाद जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल सम्पादक हुए। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, अमृतलाल चक्रवर्ती, बाबू शशिभूषण, गोपालराम गहमरी की पत्रकारी दीक्षा भूमि 'प्रयाग समाचार' ही था। भाषा के सवाल पर जैसी बहस कभी 'सरस्वती' और 'भारतमित्र' में छिड़ी थी, वैसा ही प्रसंग 'प्रयाग समाचार' में तब सामने आया जब कविता की मान्यता के प्रश्न पर श्रीधर पाठक और कामता प्रसाद गुरु के बीच शास्त्रार्थ छिड़ा।

'भारतभ्राता'[1] में यह समाचार मिलता है-'प्रयाग समाचार के सम्पादक पर आपत्ति'- ''सहयोगी प्रयाग समाचार के सम्पादक पर राधाकृष्ण नामक एक ब्राह्मण ने मानहानि की नालिश की है सो हमारे पाठकगण इस पत्र के किसी पूर्व्व अंक में देख चुके होंगे तो भी उन्हें पुनः स्मरण दिलाने के लिए हम इतना कह देना आवश्यक समझते हैं कि सामाजिक अनेकता के एक लेख में सहयोगी ने वादी की माता को कुछ भला बुरा कहा था। हमारे कालाकांकर के सहयोगी को मारनिङ्ग पोस्ट से विदित हुआ है कि प्रयाग समाचार के सम्पादक महाशय जमानत पर छोड़े गए हैं। हमारा कालाकांकर का सहयोगी निरूपण करता है- ''हमको खेद है कि हमारे सहयोगी प्रयाग समाचार के सम्पादक ने अपनी सम्पादकीय शक्ति की निर्बलता से स्वयं अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारी है।'' दु:ख समय पर ऐसा निरूपण जले पर नमक छिड़कना है। डूबने में यह कहना कि यह मूर्ख पानी में क्यों गया नीतियुक्ति नहीं है। उस समय उसका प्राण बचाने का यत्न करना ही उचित है, फिर धमकी भभकी पीछे देना लोगों की मति है। हमको बड़ा हर्ष होता यदि हिन्दोस्थान कुछ इस प्रकार की सलाह दिया होता कि प्रयाग समाचार से अपराध हो ही गया है तो उसे चाहिए कि वादी से क्षमा माँग उसे राजी कर लेवे क्योंकि अपने अपराध को स्वीकार कर लेना कोई छोटी बात नहीं है। हम आशा करते हैं कि राधाकृष्ण अवश्य क्षमा कर देंगे। हम तो अपनी ओर से यही सलाह देते हैं।''

'प्रयाग समाचार' की दो खबरें बतौर नमूना प्रस्तुत हैं-

- ''कलकत्ते के पोस्ट मास्टर ने नए बने हुए सोने के सिक्कों को चलाने की व्यवस्था की है। आपने कहा है 15 रु. उससे अधिक के मनी आर्डर को सोने के सिक्कों ही में चुकाओ। सो अब पोस्ट मैन धड़ाधड़ सोने के सिक्के बाँटने लगे हैं।''[2]
- ''राबर्ट्स ने बोअरों के बिना जीते ही किम्बरली छुड़ा ली। क्रोंजी को पकड़ लिया. लेडी स्मिथ ले ली और 53 मील उनके राज्य में धंस गए। पहले जो राबर्ट्स की निन्दा करते थे, वह अब उनकी चालाकी देख कर प्रशंसा करने लगे और जुबर्ट की तारीफ रही लेडी स्मिथ छोड़ने में। लेडी स्मिथ के व्हाइट साहब ने न जाना, बुल्लर साहब ने भी न जाना पर जुबर्ट तब तक

1. भारत भ्राता, 30 दिसम्बर 1892
2. प्रयाग समाचार, 15 मार्च 1900

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेडी स्मिथ के चारों ओर से अपनी सेना हटा कर अँगरेज राज्य में लार्ड राबर्ट्स से लड़ने को चले गए। छह तोपें के लाने में क्रोजी पकड़ा गया। लेकिन जुबर्ट छह तोपें लेकर लेडी स्मिथ से बेखटके चले गए और किसी अँगरेज सेना ने उनको न पकड़ पाया' जुबर्ट की तारीफ रही लोभ छोड़ने में। 'जुबर्ट ने सोचा यदि घर में घुसे हुए शत्रु से जीत जावें तो एक लेडी स्मिथ क्या, सौ लेडी स्मिथ मिल जावेंगी। लार्ड राबर्ट्स ने बोअरों की एक बाजी मात कर दी, आशा है दूसरे को भी मात करेंगे।[1]

सन 1882 में मासिक पत्रिका *'बालदर्पण'* का प्रकाशन हुआ। यह बच्चों का सबसे अधिक चलने वाला पुराना पत्र रहा। सन 1882 में चेन्नै से तेलुगु भाषा का पत्र *'युधवाणी'* प्रकाशित हुआ।

जलसा ख़ैरख़्वाह-ए-हिन्द ने हैदराबाद से *'मुअल्लिम शफ़ीक़'* का प्रकाशन 1882 में किया। शुरू में यह मासिक पत्र था। अगस्त 1884 में साप्ताहिक बना दिया गया। इसके प्रकाशक मुहम्मद हुसैन तथा सम्पादक मुहिब हुसैन थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। पत्रिका में प्राचीन विद्याओं तथा आधुनिक विद्याओं पर तुलनात्मक सामग्री प्रकाशित की जाती थी। बाद में मेहंदी अली खां ने 'मुअल्लिम शफ़ीक़' को *'मुअल्लिम-ए-निस्वां'* के नाम से प्रकाशित किया, जिसमें महिलाओं के विकास, पर्दा प्रथा का विरोध तथा समाज सुधार विषयक लेख प्रकाशित किए जाते थे।

सन 1882 में पेशावर से वार्षिक पत्रिका *'रिसाला अंजुमन पेशावर'* का प्रकाशन हुआ था। मुंशी हुसैन बख्श इसके सम्पादक थे। पाक्षिक *'रेख़्ता'* दिल्ली से सन 1882 में प्रकाशित हुआ। आठ पृष्ठ का यह पत्र महीने की आठ तथा 24 तारीख को निकाला जाता था। प्रकाशक मुंशी महानारायण थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

1882 में शैक्षिक पत्रिका *'विद्यार्थी कल्पद्रुममु'* का प्रकाशन नेल्लूर से हुआ। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक उल्लि गोंडमु रामचन्द्राव थे। संस्कृत मासिक पत्र *'विद्योदय'* पंजाब विश्वविद्यालय के संस्थापक डा. लाइटनर ने सन 1882 में लाहौर से आरम्भ किया। सम्पादक पंडित हृषिकेश भट्टाचार्य शास्त्री थे। उन्होंने 44 वर्षों तक पत्रिका का सम्पादन-संचालन किया। सन 1913 में पत्रिका बंद हो गई। इसमें साहित्यिक तथा सम सामयिक प्रसंगों पर सारगर्भित आलेख होते थे।

अम्बिकादत्त व्यास ने सन 1882 में काशी से *'वैष्णव पत्रिका'* का प्रकाशन किया। इसमें वैष्णव धर्म के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित की जाती थी। सन 1882 में कृष्णकुमार मित्र के सम्पादन में *'संजीवनी'* का प्रकाशन हुआ। यह पत्र ब्रह्म समाज के सुधारवादी दृष्टिकोण का समर्थक था। मालवण से सन 1882 में मराठी साप्ताहिक *'विचारशील'* निकला। गणेश विश्राम पाटकर इसके सम्पादक और प्रकाशक थे। हर सोमवार को लिथो प्रेस से छापकर जारी किया जाता था। सन 1882 में बालेश्वर से साप्ताहिक *'प्रजाबंधु'* का प्रकाशन हुआ। यह उड़िया भाषा का अखबार था। कुछ ही समय बाद बन्द हो गया।

'देश हितैषी' के प्रवेशांक (अप्रैल 1882) में मार्च 1882 में पेशावर से 'धर्म्मोपदेश' नामक उर्दू मासिक पत्र के प्रकाशन की सूचना इस प्रकार दी गई है- ''बड़े हर्ष की बात है कि 'देश हितैषी' के जन्म लेने से एक माष प्रथम ही इसके भ्राता *'धर्म्मोपदेश'* ने पंचाल देश

1. प्रयाग समाचार, 15 मार्च 1900

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेशावर में जन्म धारण किया। क्यों न होय जहाँ देशहितैषिता का प्रारंभ होने को होता है वहाँ स्वयम् धर्म्मोपदेश उपस्थित हो जाते हैं। परन्तु हमको यह कहना अवश्य हुआ कि जो धर्म्मोपदेश भाषा में होता तो अति उत्तम था कारण उर्दू में पत्र प्रचार से प्राय: आर्य्य भाषा की उन्नति होना एक प्रकार से दुर्लभ है। परन्तु इस पर भी हमारा मन फूला नहीं समाता कि धर्म्मोपदेश के संपादक जी ने उर्दू भाषा में भी आर्य्य शब्दों का बहुधा प्रयोग किया है जिससे समझने, पाठ करने में कुछ कठिनता नहीं पड़ती। वास्तव में उर्दू के रसिक जनों को यह पत्र अतीव उपकारी है। इसका मूल्य भी उपकार दृष्टि से डाक महसूल सहित एक रुपये ग्यारह आना रखा गया है जो जिन महाशयों को इस पत्र के दर्शन की अभिलाषा होय- लेखराम मंत्री आर्य्य समाज पेशावर को लिखकर मंगवा लें।''

असम न्यूज

गुवाहाटी से 'असम न्यूज' नामक द्विभाषी समाचारपत्र सन 1882 में प्रकाशित हुआ। हेमचन्द्र बरुआ पत्र के सम्पादक थे। '*असम न्यूज*' गुवाहाटी से प्रकाशित होने वाला पहला अखबार था। इसकी भाषा असमिया और अँगरेजी थी। यह साप्ताहिक अखबार था जिसने असमी भाषा के पठन-पाठन और लिखने की रुचि पनपाई। इसके लेख विषयवस्तु, भाषा और शैली की दृष्टि से उत्तम होते थे। 'असम न्यूज' के 900 ग्राहक थे। जुलाई 1885 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

<u>1883</u>

धर्म जीवन

लाहौर से पाक्षिक '*धर्म जीवन*' का प्रकाशन 13 जनवरी 1883 को हुआ। इसके प्रकाशक पंडित शिवनारायण अग्निहोत्री तथा सम्पादक सत्यानन्द अग्निहोत्री थे। आठ पृष्ठ के पत्र का वार्षिक शुल्क एक रुपया आठ आना था। यह पत्रिका राजा राममोहन राय के विचारों का समर्थन करती थी। इसके मुख पृष्ठ पर मोटे मोटे अक्षरों में छपता था- 'धर्म जीवन प्राप्त करो, धर्म से बढ़कर अन्य कोई वस्तु नहीं है, धर्म सबके लिए मधुर है।' दो जनवरी 1887 से साप्ताहिक होकर रविवार को प्रकाशित किया जाने लगा। वार्षिक शुल्क चार रुपये हो गया।

सन 1886 के कांग्रेस अधिवेशन की कार्यवाही तथा उसमें पारित प्रस्तावों के सम्बन्ध में 'धर्म जीवन'[1] में लिखा गया- ''लार्ड मैकाले की मोहूम उम्मीद पूरी हुई। नेशनल कांग्रेस का जलसा एक ऐसा वाक़या है कि हिन्दुस्तान की पोलिटिकल तारीख में एक नया ज़माना समझा जाएगा और हमेशा याद रहेगा। पिछले साल बम्बई में इस क़िस्म का जल्सा हुआ था मगर उससे यह दूसरी दफ़ा का जल्सा बहुत बढ़ चढ़ कर हुआ। इंडिया के हर एक सूबे से डेलीगेट शामिल हुए। पंजाब, सिंध, अज़लाअ मग़रिबी व शुमाली, अवध, बम्बई, मद्रास, वस्तहिन्द और बंगाल से जिस क़दर डेलीगेट कांग्रेस में शरीक़ हुए उनकी तादाद तक़रीबन चार सौ होगी। हर मुल्क के आदमी वजअ- क़तअ तरीक़ बरताओ और मजहब वग़ैरह के एतबार से बिल्कुल मुख्तलिफ थे लेकिन पोलिटिकल तआल्लुक़ और मुल्क के आम नफ़आ और नुक़सान के एतवार से एक थे और इसी इत्तिफ़ाक ने उन्हें सैकड़ों कोसों से लाकर इकट्ठा कर दिया था।

''टाउन हाल में हजारों का मजमा था। इस क़िस्म का बड़ा जल्सा आज तक कलकत्ता में नहीं हुआ इंडिया के मुख्तलिफ़ हिस्सों से सदहा आदमियों का खर्च करके और सैकड़ों मील

1. धर्म जीवन, 9 जनवरी 1887

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सफ़र तय करके सिर्फ़ मुल्क की भलाई के लिए इकट्ठा होना और आम पोलिटिकल भलाई और अपने कुल तफ़र्रुकों को भूल जाना और बिला ख्याल मिल्लत, ज़ात और बिरादरी इत्तिफ़ाक़ करके एक जगह शामिल मुल्क की पोलिटिकल इस्लाह के बारे में तदबीरें सोचना, ऐसे मुल्क में जहाँ फूट का मेवा घर घर पैदा होता है क्या अजब बात नहीं? क्या मुल्क की हालत और आइंदा की भलाई और आने वाली नस्लें एक निहायत उम्मीद बख़्श फ़ाल और अलामत नहीं? बेशक यही वजह थी के टाउन हाल के जल्से में क्या डेलीगेट और क्या आम हाज़रीन सब में एक क़िस्म का क़ौमी जोश पाया जाता था। इस आलीशान जल्से में अव्वल डा. राजेन्द्र लाल साहब मित्रा एल.एल.डी.सी.आई. ही जल्से के मीर मजलिस क़रार पाए जिन्होंने खड़े होकर अपनी तक़रीर में मुल्क में एक नई क़ौम बनने की इब्तिदा में निहायत खुशी ज़ाहिर की और मुबारकबाद दी और कुल डेलीगेट लोगों को कलकत्ते के बाशिंदगान की तरफ़ से 'वेलकम' कहा। जिसके बाद कांग्रेस के जल्सों के लिए दादाभाई नौरोजी प्रेसीडेन्ट मुन्तख़िब किए गए।''

28 दिसम्बर 1886 को ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन के भवन में कांग्रेस की पहली बैठक आयोजित की गई। दादाभाई नौरोजी जिनको पूर्व में ही इन बैठकों की अध्यक्षता हेतु चुना गया था, ने अध्यक्षता की। इस बैठक में जो बहस हुई तथा प्रस्ताव पारित किए गए, वे हैं-

''प्रथम- यह कांग्रेस जिसमें पूरे देश के प्रतिनिधि शामिल हैं। अत्यन्त विनीत भाव से एवं निष्ठा से 'हर मोस्ट क्रिएशन मेजिस्ट्री क्वीन एम्प्रेस' की सेवा में उनके द्वारा अत्यन्त कुशलता एवं उदारतापूर्वक राज्य करने के लिए बधाई देते हैं एवं कामना करते हैं कि वे भविष्य में भी श्रेष्ठ ब्रिटिश राज्य की इसी प्रकार शासक बनी रहें।

''द्वितीय- यह कांग्रेस हिन्दुस्तान में दिन ब दिन बढ़ती हुई ग़रीबी को देखकर एक ओर सहानुभूति प्रकट करती है तथा दूसरी ओर इससे भयभीत भी है तथा यह जानते हुए कि शासन इस ओर से असावधान नहीं है एवं इसे मिटाने के कुछ न कुछ उपाय अवश्य खोज रहा है अपने इस विश्वास को लिखने से नहीं हिचकती कि रिप्रिजेन्टेटिव इन्स्टीट्यूशन उन आवश्यक एवं उचित उपायों में से एक है जिससे ग़रीबी दूर करने में सहायता मिलेगी।

''तृतीय- यह कांग्रेस सन 1885 में आयोजित कांग्रेस में पारित तीसरे प्रस्ताव का ज़ोरदार समर्थन करती है तथा स्पष्ट रूप से यह प्रकट करती है कि सुप्रीम एवं लोकल दोनों प्रकार की कौंसिलों में सुधार एवं उनको व्यापक बनाने की जो मुहिम शुरू की गई है वह इंगलैण्ड तथा हिन्दुस्तान दोनों के लिए लाभकारी होने से आवश्यक हो गई है।''

16 पृष्ठों की क़ानूनी मासिक पत्रिका *'मफ़्ताह-उल-क़वानीन'* का प्रकाशन अजमेर से 13 जनवरी 1883 को किया गया था। इसके प्रकाशक मुंशी नन्दकिशोर थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये आठ आना था। सन 1885 में यह आगरा से निकलने लगा। मेरठ से 20 जनवरी सन 1883 को साप्ताहिक *'शहना-ए-हिन्द'* का प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशक एवं सम्पादक मौलवी अहमद हसन 'शौकत' थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये था। 'शहना-ए-हिन्द' पर टिप्पणी करते हुए जबलपुर के उर्दू अख़बार 'तबलीग़' ने लिखा- ''निहायत बरजस्ता और पुरज़ोर अख़बार है, इसका एडीटर बड़ा लायक़ फ़ायक मशरिक़ी व मग़रिबी उलूम से खूब माहिर है पोलिटिकल व सोशल मामलात पर मुहिक़क़ाना आर्टिकल देता है उर्दू लिट्रेचर व एशियाई शायरी को उम्दगी के साथ इस्लाह करता है। इबारत आराई व इंशापरदाजी में यदतूई रखता है। वक़्तन-फ़वक़्तन मसायल दीनिया की तहक़ीक़ात भी शाया करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मासिक *'वॉयस आफ इण्डिया'* का प्रकाशन जनवरी 1883 में मुम्बई से हुआ था। इसका आकार 22 गुणित 32 से.मी. था। इसका वार्षिक शुल्क दस रुपया अग्रिम था। यह पत्र भारतीय भाषाओं के समाचारों और विचारों का सारांश इस उद्देश्य से प्रकाशित करता था कि अँगरेज अफसरों और अँगरेजी के पाठकों तक देश के विभिन्न हिस्सों में निवास कर रही जनता की आवाज पहुँचाई जा सके। पत्र प्रकाशन के तुरन्त बाद पुणे के पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने एक मराठी कमेटी बनाकर यह निर्णय लिया कि वे सभी मराठी समाचारपत्रों में प्रकाशित सामग्री का सारांश अँगरेजी में तैयार कर इस पत्र को प्रकाशन के लिए भेजा करेंगे। समाचारपत्र ने इसका स्वागत करते हुए अन्य समाचारपत्र केन्द्रों से भी ऐसे ही सहयोग की अपेक्षा की थी। राष्ट्रीय पुस्तकालय के कैटलाग के अनुसार सन 1886 तक यह पत्र निकला। फिर, सन 1902 से न्यू सीरीज में प्रकाशित हुआ।

मुम्बई से साप्ताहिक *'अल्ताफ़'* का प्रकाशन जनवरी 1883 में किया गया था। इसके प्रकाशक हकीम अल्ताफ़ हुसैन खां रामपुरी थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये आठ आना था। मुम्बई से जनवरी 1883 में *'अरमुग़ान'* का प्रकाशन आरम्भ किया गया। यह सप्ताह में तीन बार निकलता था। छह पृष्ठ के इस पत्र के सम्पादक मुंशी अबुल हसन जौहर तथा प्रकाशक सईद मोहम्मद अरबी थे। यह मजीदी प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये दस आना था। पत्र अंजुमन दरखशां द्वारा निकाले गए। इसी संस्थान ने 'दबदबा-ए-इस्लाम' का भी प्रकाशन किया था। आठ पृष्ठ के साप्ताहिक *'लॉयल गजट'* का प्रकाशन एक फरवरी 1883 से कैम्प मेरठ से हुआ। सुलतान-उल-मतबअ में छपने वाले इस साप्ताहिक के प्रकाशक बाबू खुशराय थे। हर गुरुवार को निकाला जाता था।

साप्ताहिक *'ख़ैरख़्वाह ख़लाइक़'* का प्रकाशन एक जनवरी 1883 को हुआ। यह हिन्दी और उर्दू में आठ पृष्ठों में निकाला जाता था। गाज़ीपुर से प्रकाशित इस पत्र के प्रकाशक और सम्पादक मुंशी मोहम्मद अली खां थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। इसका साप्ताहिक परिशिष्ट 'आज़ाद' प्रत्येक शुक्रवार को निकलता था।

मासिक *'आईना-ए-हिन्द'* का प्रकाशन एक जनवरी 1883 को लाहौर से किया गया था। इसके प्रकाशक लाला रंगीराम मुख़्तार थे। आर्य प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये छह आना था। मासिक पत्रिका *'कलीद-ए-क़वानीन'* लाहौर से एक जनवरी 1883 को प्रकाशित हुई। लाला रतीराम इस विधि पत्रिका के सम्पादक थे। शिक्षा सम्बन्धी मासिक पत्रिका *'गुलशन-ए-रियाज़ी'* आगरा से एक जनवरी 1883 को निकली। इसके प्रकाशक मौलवी ख़्वाजा यूसुफ़ तथा मुंशी अमीरउद्दीन थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। शेर और शायरी की मासिक पत्रिका *'मुशायरा'* दिल्ली से एक जनवरी 1883 को प्रकाशित हुई। यह 24 पृष्ठ की पत्रिका थी। मिर्ज़ा याक़ूब बेग 'आमिल' प्रकाशक और सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये चौदह आना था। मासिक पत्रिका *'रौनक़-ए-हिन्द'* का प्रकाशन उर्दू तथा हिन्दी भाषा में कानपुर से एक जनवरी 1883 को किया गया था। प्रकाशक गंगाप्रसाद थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

उर्दू-हिन्दी भाषाओं में छपने वाला आठ पृष्ठीय मासिक *'सत्य प्रकाश'* एक जनवरी 1883 से निकला। सम्पादक राय किशनलाल तथा सह सम्पादक पंडित छेदीलाल थे। दबदबा-ए-क़ैसरी प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। ज्ञान, अध्यात्म तथा नीतिशास्त्र सम्बन्धी सामग्री प्रकाशित करता था। रावलपिण्डी से मासिक *'सुखदायक सभा'* का प्रकाशन एक जनवरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1883 को हुआ था। 40 पृष्ठ की पत्रिका गुलशन पंजाब प्रेस में छपती थी। सम्पादक हरिचंद साहनी थे। इलाहाबाद से मौलवी सैयद फ़रीदउद्दीन अहमद खां ने चार पृष्ठ के साप्ताहिक *'हामी-ए-हिन्द'* का प्रकाशन एक जनवरी 1883 से किया था। सन 1885 से पृष्ठ सँख्या बढ़ा कर 16 कर दी गई थी। वार्षिक शुल्क चार रुपये था।

लखनऊ से चार जनवरी 1883 को साप्ताहिक *'सुलतान-उल-ज़ुर्फा'* का प्रकाशन हुआ। इसमें आठ पृष्ठ होते थे। इसका दूसरा नाम 'मिस्टर पंच' था। सम्पादक इसहाक़ खान थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। यह हास्य-विनोद का साप्ताहिक पत्र था। बिहार शरीफ से आठ पृष्ठ के साप्ताहिक *'शर्फ़-उल-अख़बार'* का प्रकाशन चार जनवरी 1883 को हुआ। प्रत्येक गुरूवार को निकलता था। सम्पादक मक़बूल हुसैन थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। लखनऊ से आठ पृष्ठ के साप्ताहिक *'लखनऊ पंच'* का प्रकाशन आठ जनवरी 1883 को हुआ। इसके प्रकाशक गौरीशंकर, प्रबंधक अवध बिहारीलाल तथा सम्पादक 'आशिक़' लखनवी थे। अख़बारे हिन्द प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये चार आना था।

हिन्दुस्तानी

साप्ताहिक *'हिन्दुस्तानी'* का प्रकाशन एक फरवरी 1883 को लखनऊ से किया गया था। इसके प्रकाशक गंगाप्रसाद वर्मा तथा प्रबन्धक लाला भगवानदास थे। कुछ समय पश्चात इसका प्रकाशन सप्ताह में दो बार किया जाने लगा। 16 पृष्ठ होते थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। सम सामयिक प्रसंगों और समस्याओं, राजनीतिक हलचल तथा अन्य विषयों पर गंभीर लेख तथा टीका प्रकाशित की जाती थीं।

सन 1888 में जब सर सैयद अहमद और राजा शिवप्रसाद ने कांग्रेस के विरोध की मुहिम चलाई तब लखनऊ में 'अवध पंच' और 'हिन्दुस्तानी' ने कांग्रेस का समर्थन किया था। इसी प्रकार सन 1896 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लखनऊ में होने वाला था और मुसलमान उसका विरोध कर रहे थे, उस समय 'हिन्दुस्तानी' तथा 'एडवोकेट' ने मुसलमानों के विरोध को शान्त करने का प्रयत्न किया था। जब पंडित बिशन नारायण विलायत से शिक्षा प्राप्त कर स्वदेश लौटे तो उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया गया। किसी कवि ने इस पर एक कविता लिखी, जिसका प्रकाशन 'हिन्दुस्तानी' के 23 अगस्त 1888 के अंक में हुआ था, उसका एक अंश-

''जहाजों पे चढ़कर जगन्नाथ जाना
वहाँ साथ ग़ैरों के खाना उड़ाना
शराबों के कंटर के कंटर लुटाना
तवायफ़ से मुँह वक़्ते सोहबत मिलाना
हुआ सब यह मरजावही के धरम से
यह क़ैदें छुटीं सब उसी के करम से।।''

मासिक *'अख़बार-उल-निसार'* बंदायूँ से 10 फरवरी 1883 को निकला। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक मौलवी अली अमजद हुसैन थे। ग़ाज़ीपुर जिले के सैयदपुर से मासिक पत्रिका *'गुलकदा शफ़क़'* का प्रकाशन 28 फरवरी 1883 को किया गया था। इसमें 16 पृष्ठ होते थे। प्रकाशक बाबू शिवप्रसाद थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण

15 मार्च 1883 को प्रतापनारायण मिश्र ने *'ब्राह्मण'* का प्रकाशन किया। 'ब्राह्मण' के प्रवेशांक में उन्होंने लिखा-''हम क्यों आए हैं? यह न पूछिए। कानपुर इतना बड़ा नगर, सहस्रविधि मनुष्यों की बस्ती पर नागरी पत्र एक भी नहीं। भला यह हम से कब देखा जाता है। कभी राज्य सम्बन्धी, कभी व्यापार सम्बन्धी विषय भी सुनायेंगे, कभी-कभी गद्य-पद्य मय नाटक से भी रिझाएंगे।'' 'ब्राह्मण' के पहले अंक में कुल 12 पृष्ठ थे। 'ब्राह्मण' की तीखी टिप्पणियाँ, उसकी प्रखरता, सामाजिक सरोकार, राष्ट्रीय चेतना और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में दृढ़ आस्था की परिचायक हैं। गलत बात की आलोचना करने से 'ब्राह्मण' चूकता नहीं था। देखिए ब्राह्मणों पर एक कटाक्ष-''सरस्वती तो हमारे पेट में बसती है...जो सबका सर्वस्व हमारे पेट में ठाँस-ठाँस कर न भरे वही नास्तिक। जो हमारी बेसुरी तान पर वाह! वाह! न किए जाए वह कृश्तान और हमसे जो चूँ भी न करे वह दयानन्दी।''

गोरे अफसरों की उद्दंडता पर 'ब्राह्मण' ने लिखा-''साहब बहादुर ने उन कलूटों को खूब पिटवाया, मारा और दण्ड दिया सो बहुत अच्छा। उन्हें तो इसीलिए बनाया गया है। काले रंग वालों को मारना भी कोई जुर्म है? कौए को सभी उड़ा देते हैं। काले बाल सभी कोई कटा देते हैं। कोयला सभी कोई आग में झोंक देते हैं। इसमें साहब ने क्या बुरा किया?''

मुफ्तखोरी हिन्दी के पाठकों की पुरानी बीमारी है। 'ब्राह्मण' जैसे उत्कृष्ट पत्र के भी सिर्फ 200 ग्राहक बने और वे भी शुल्क भेजने से मुँह चुराते थे। प्रतापनारायण मिश्र ने चार महीने और फिर आठ माह बीतने पर अनोखे अंदाज में ऐसे ग्राहकों को स्मरण कराया-

एक-

''चार महीने हो चुके 'ब्राह्मण' की सुधि लेहु।
गंगा माई जै करें, हमें दक्षिणा देहु।।
जो बिन माँगे दीजिए, दुहुँ दिशि होय आनन्द।
तुमको निचिंत हम करें, माँगन की सौगन्ध।''

दो-

''हर गंगा............
आठ मास बीते जजमान
अब तो करौ दक्षिणा दान। हर.....।
आज काल्हि जो रुपया देव,
मानो कोटि यज्ञ करि लेव। हर......।
माँगत हमको लागे लाज,
पै रुपया बिन चले न काज। हर......।
तुम अधीन 'ब्राह्मण' के प्राण,
ज्यादा कौन बकै जजमान। हर......।
जो कहूँ दैहो बहुत खिझाय,
यह कौनिह भलमंसी आय। हर.....।''

'ब्राह्मण' की भाषा मुहावरेदार और प्रवाहमयी थी। मिश्रजी ने आंचलिक बोलियों तथा संस्कृत, अँगरेजी, उर्दू, फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्रे संग्रहालय भोपाल

१

ब्राह्मण

मासिकपत्र

नीति निपुण नर धीर वीर कंह्व सुजसु कहोकिन,अथवा निन्दाकोटि करौ दुर्जन छिन ही छिन॥
सम्पतिहू चलिजाहु रहो अथवा अगणित धन । अबहि मृत्यु किन होहु होहु अथवा निश्चलतन॥
पर न्याय वृत्तिको तजत नहि जो विवेक गुण ज्ञान निध।
यह संग सहायक रहत नित देत लोक परलोक सिध॥

खण्ड १	१५ मार्च सन १८८३ ई०	संख्या १

विज्ञापन

१ यह पत्र प्रति अंगरेजी मास की १५ ता० को प्रकाशित होगा॥

२ अग्रिम देने वालों से वार्षिक मूल्य १) रु० पश्चात २) रु० लिया जायगा॥

३ एक प्रति का मू० =) डाक व्यय ग्राहकों से न लिया जायगा जो वर्ष से कम के ग्राहक होंगे उनसे =) प्रति के दाम लिये जायगे जो सज्जन इसकी एक प्रति को कृपा करके स्वीकार करेंगे वे ग्राहक गिने जायगे और उन्हें मूल्य देना होगा॥

४ तीन महीने तक मूल्य भेज देंगे वे महाशय अग्रिम मू० दाता समझे जायँगे॥

५ जो महाशय सच्चे समाचार सदैव भेजेंगे उनको एक पत्र विना मू० भी दिया जायगा॥

६ जो लेख सर्वसाधारण के हित कारी होंगे वुह बिना मूल्य छाप दिये जायंगे और निज के हित के लेख का ⁊ प्रति पंक्ति लिया जायगा॥

७ जिन भाइयों को अपना कोई दुःख निवेदन हमारी नीति वली सर्कार से इस पत्र द्वारा सूचित करना हो वुह सच्चाई के साथ यदि हमको अपना लेख देंगे और इस पत्र सम्बन्धी कमेटी उसे छापने योग्य समझेगी तो वुह लेख इस पत्र में छाप दिया जायगा॥ यदि वुह इस पत्र में अपना नाम प्रकट न किया चाहेंगे तो उनका नाम प्रकट न किया जायगा॥

-गोपीनाथ खन्ना मैनेजर ब्रा० पं०
सवाईसिंह का हाता
कानपुर

ब्राह्मण, कानपुर, 15 मार्च 1883

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचारपत्र का उद्देश्य क्या है? इस प्रश्न पर विचार करते हुए प्रताप नारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' में लिखा-''जब हम अपने कर्तव्य पर दृष्टि करते हैं तो एक पहाड़-सा दिखाई पड़ता है, जिसका उल्लंघन करना अपनी शक्ति से दूर जान पड़ता है। सहस्रों विषय विचारणीय हैं, किस किस पर लिखें और यदि लिखें भी तो यह आशा बहुत कम है कि कोई हमारी सुनेगा, परन्तु क्या करें? काम तो यह उठाया है। यदि अपने ग्राहकों को यह समाचार दें कि अब गर्मी बहुत पड़ने लगी या फलाने साहब की बारात बहुत धूम से उठी या हमारे जिले के मजिस्ट्रेट, तहसीलदार साहब और कोतवाल साहब इत्यादि धर्म न्याय के रूप ही हैं तो हमारा पत्र तो मर ही जाएगा, पर किसी जीवन का कुछ लाभ न होगा और यदि सच सच वह असह्य दुःख जो हमको प्राप्त होते हैं वह लिखें तो वह हम पर क्रुद्ध होंगे। यही डर लगता है कि कहीं नमाज के बदले रोजा न गले पड़े। परन्तु हम भिखमंगे नहीं कि केवल ग्राहकों की खुशामद का ख्याल रखें। हम भाट नहीं कि बड़े आदमियों व राजपुरुषों की निरी झूठी स्तुति गाया करें। जो हो सो हो, हम ब्राह्मण हैं, इससे हमारा धर्म नष्ट होता है और हम पतित हुए जाते हैं, यदि हम अत्यन्त दीन और असमर्थ देश भाइयों पर अत्याचार होते सैकड़ों मनुष्यों से सुनें और फिर उसे सर्वसाधारण व सरकार पर विदित न करें?''

सन 1884 में प्रयाग में 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक बालकृष्ण भट्ट पर कुछ गुण्डों ने हमला किया था। इस पर 'उचित वक्ता' ने टिप्पणी लिखी- ''क्या प्रयागराज में अँगरेजी राज नहीं है?'' 'ब्राह्मण'[1] में प्रताप नारायण मिश्र ने जैसे अंगारे बिखेर दिए- ''हमारे परम सुयोग्य मननशील 'उचित वक्ता' भाई पूछते हैं- क्या प्रयागराज में अँगरेजी राज नहीं है? क्यों क्या वहाँ चुंगी नहीं है? वहाँ क्या दारिद्रय नहीं है? क्या वहाँ शराब नहीं है? क्या वहाँ गोरे रंग का अयोग्य पक्षपात नहीं है?..... जिन्हें 'प्रदीप' सम्पादक श्रीयुत पंडित बालकृष्ण भट्ट महाशय को थोड़े गुण्डों ने मारा यह सुनके हमारा भी कलेजा फट गया पर क्या करें यह जमाना ही ऐसा है. ......जब से अँगरेज को राज भयो बनि आई है नंगन-नंगिन की....... गुण्डों से किसकी चलती है उनका तो राज है। मरही तो भले-मानुष की है जिनके इज्जत होती है। हमें यह देख के आश्चर्य होता है जबकि हमारे चतुर चूड़ामणि 'उचित वक्ता' कहते हैं कि आश्चर्य का विषय है कि आज तक गवर्नमेंट ने ध्यान न दिया। क्या किसी के घर सोने की खान निकली है जो गवर्नमेंट ध्यान दे? क्या किसी ने बैंक का रुपया मारा है जो गवर्नमेंट ध्यान दे? क्या किसी गोरे को मारा है जो गवर्नमेंट ध्यान दे?......... हम गरीबों का खुदा फरियाद रस है। याद रहे अपनी इज्जत अपने हाथ है। कोऊ काहू को नहीं देखो ठोंक बजाय। गवर्नमेंट केवल मतलब की यार है।''

अँगरेज सरकार ने उपाधियाँ तथा आनरेरी मजिस्ट्रेट आदि के ओहदे देकर पिट्ठुओं की बड़ी जमात खड़ी कर रखी थी। इसके लिए किसी योग्यता की जरूरत नहीं थी। 'ब्राह्मण'[2] ने सवाल उठाया ''सरकार से कोई पूछे- दस रुपया महीने की पिसौनी करने वाले बाबू लोगों के लिए तो मिडिल कलास के पास की पंख लगी है। वह कैसे ही योग्य क्यों न हो, पर बिना सार्टीफिकेट नौकरी मिलना मुहाल है। परन्तु हमारे हाकिम आनरेरी मजिस्ट्रेट जिन पर हमारे सुख-दुख मानापमानादि निर्भर हैं, उनसे कोई यह भी नहीं पूछता कि क, ख, ग, घ, ए, बी, सी, डी, अलिफ

1. ब्राह्मण, 15 अक्टूबर 1884
2. ब्राह्मण, 15 मई 1885

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बे, हौआ कुछ जानते हो कि नहीं? इसका क्या कारण है?''

'ब्राह्मण' की आर्थिक दशा दिनों दिन और खराब होती जा रही थी। प्रतापनारायण मिश्र बारम्बार पाठकों/ग्राहकों से अपील कर रहे थे- ''क्या हमारे सहायकगण हमें दक्षिणा तभी देंगे, जब हमें हैरान कर लेंगे? .....तीन वर्ष से हमने तड़ातड़ी के साथ कभी तगादा नहीं किया, पर अब 'ब्राह्मण' की दशा बहुत ही बुरी है।''

सन 1887 में कुछ समय के लिए 'ब्राह्मण' बंद हो गया। तब महामना मदनमोहन मालवीय ने प्रतापनारायण मिश्र को कालाकांकर के दैनिक 'हिन्दोस्थान' में बुला लिया। सात वर्ष तक 'ब्राह्मण' का प्रकाशन हुआ। सातवें वर्ष के अन्तिम अंक में- 'अन्तिम संभाषण' शीर्षक लेख प्रताप नारायण मिश्र की पीड़ा को उजागर कर गया था- ''परम गूढ़ गुण रूप स्वभावादि सम्पन्न प्रेम देव के पद पदम को बारम्बार नमस्कार है कि अनेकानेक विघ्नों की उपस्थिति में भी उनकी दया से 'ब्राह्मण' ने सात वर्ष तक संसार की सैर कर ली, नहीं तो कानपुर तो वह नगर है जहाँ बड़े-बड़े लोग बड़ों-बड़ों की सहायता से आछत भी कभी कोई हिन्दी पत्र छ: महीने भी नहीं चला सके और न आसरा है कि कभी कोई हिन्दी एतादिष्यक कृत कार्यत्व लाभ कर सकेगा, क्योंकि यहाँ के हिन्दू समुदाय में अपनी भाषा और अपने भाव का ममत्व विधाता ने रखा ही नहीं फिर हम क्यों मान लें कि यहाँ हिन्दी और उसके भक्तजन कभी सहारा पाएंगे....... अन्त को यही जान पड़ा कि या तो हम देश की सेवा के योग्य नहीं हैं या देश हमारे गुणों को समझने की योग्यता नहीं रखता। ......समय का प्रभाव रोकना किसी का साध्य नहीं है, अत: छाती पर पत्थर रख के विदा होते हैं और कोई सुने या न सुने पर अपने धर्मानुसार चलते चलते कहे जाते हैं-

चहहु जो साँचहु निज कल्यान। तो सब मिलि भारत-सन्तान।।
जपौ निरन्तर एक जबान। हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान।''

'ब्राह्मण'[1] पर 'भारतमित्र' की टिप्पणी मननीय है- ''आजकल हिंदी पत्रों की जैसी दशा उपस्थित है वह किसी को अविदित नहीं है प्रत्येक हिन्दी पत्र के प्रचारक जिस प्रकार का श्रम करते और अर्थादि व्यय कर क्षतिग्रस्त होते हैं वह भी सभी पर विदित है। ......विचारे 'ब्राह्मण' को कानपुर सरीखे पश्चिमोत्तर के प्रधान शहर में सहायता न मिली और लुढ़कते पुढ़कते बंगाल (बिहार) में उसने क्षत्रिय खड्ग विलासाध्यक्ष श्रीमन्महाराज कुमार श्री रामदीन सिंह महोदय का आश्रय लिया। शोक! महाशोक! कि हिन्दी के प्रधान स्थान में हिन्दुओं के प्रधान नगर में- हिन्दुओं के यथार्थ शुभचिन्तक गुरू-गरीब 'ब्राह्मण' को मुष्ठि अन्न भिक्षा न मिली। धिक्कार है- हिन्दी के रसिकों को।''

आर्थिक कठिनाई के कारण 'ब्राह्मण' को ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रखा जा सका। हिन्दी पत्रकारिता और व्यंग्य के क्षेत्र में उसका असाधारण योगदान है। राष्ट्रीय भावना के प्रसार में भी उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'ब्राह्मण' का प्रकाशन बंद करने की घोषणा करते हुए प्रताप नारायण मिश्र ने लिखा-''ब्राह्मण' को बंद करने में परमेश्वर साक्षी है कि हमें पुत्र-शोक से कम शोक नहीं होगा। पर हत्यारे नादचिन्हों ने हमें लाचार कर दिया है।''

'ख़ादिम-ए-हिन्द' का प्रकाशन 17 मार्च 1883 को मुम्बई से किया गया था। यह चार पृष्ठों का दैनिक पत्र था। इसके प्रकाशक मुंशी किशन स्वरूप तथा सम्पादक लाला इंद्रस्वरूप

1. भारत मित्र, 17 दिसम्बर 1891

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये था। साप्ताहिक '*हज़ार दास्तान*' का प्रकाशन 15 अप्रैल 1883 को हैदराबाद से हुआ। हर गुरूवार को निकाला जाता था। इसके प्रकाशक सैयद अहमद ज़ैद बिलग्रामी तथा सम्पादक सैयद हसन 'जश्न' बिलग्रामी थे।

भारतेन्दु

'*भारतेन्दु*' का प्रकाशन राधाचरण गोस्वामी ने वृंदावन से किया था। मासिक भारतेन्दु का प्रथम अंक 22 अप्रैल 1883 को प्रकाशित हुआ। 'भारतेन्दु' के प्रत्येक अंक में हास्य विनोद की कोई कविता, प्रहसन, निबंध अथवा टिप्पणी अवश्य रहती थी। इसमें समाचार भी व्यंग्योक्ति में छपते थे। वृंदावन में हैजा फैलने पर 'भारतेन्दु' ने सूचना निकाली-

''इश्तहार!!!

बहुत से आदमी दरकार हैं।

जनाब नब्वाब हैज़ा खां बहादुर रिसालदार मलिकुल मौत इन दिनों शहर में तशरीफ लाए हैं, और हर रोज चार बजे सुबह से शाम तक अच्छे खूबसूरत जवानों को भरती करते हैं। जिस किसी को इनके रिसाले में भरती होना हो इनके हैड क्वार्टर दशाश्वमेध घाट या ध्रुव घाट पर जाकर नाम दर्ज रजिस्टर करावें।'' (ध्रुव घाट पर मथुरा का श्मशान स्थित है।)

'भारतेन्दु' में रेलवे स्तोत्र', 'कलयुग का सर्क्यूलर', 'इलवर्ट बिल पर स्यापा' जैसी हास्य रचनाएँ प्रकाशित और चर्चित हुईं। रेलवे स्तोत्र का एक अंश- ''हे धूम्रवाहिनी! तुम्हारे विषय अग्नि साक्षात् रूप से, वरुण जल रूप से, वायु धौंकनी रूप से, विष्णु व्यापक रूप से, लक्ष्मी खजाना रूप से, इन्द्र खिड़की रूप हजारों नेत्रों से, सूर्य सुर्ख लालटैन रूप से, चन्द्रमा श्वेत लालटेन रूप से, यमराज गार्ड रूप से, यमदूत चपरासी रूप से और भगवान सदाशिव मृत्यु को साथ लेकर गाड़ी के समय काल रूप से निवास करते हैं अतः हे सर्वदवानाम्प्रिये! हे सर्वतोभद्रचक्रे! तुम स्वर्ग, बैकुंठ, कैलाश, नरक सबकी आधार हो।''

हिन्दी के प्रश्न पर 'भारतेन्दु' के 22 जुलाई 1884 के अंक में लिखा- ''सरकार कचहरियों में हिन्दी को असभ्य भाषा समझती है। क्यों न हो? जिसमें व्याकरण, काव्य-कोश, न्याय, वेदांत, सांख्य, पातंजल, वेद उपवेद, पुरान, इतिहास, वैद्यक, ज्योतिष आदि की पुस्तकें एक हजार वर्ष से भी प्राचीन हों, वह परम असभ्य है। जो हिन्दी आधे से अधिक भारत वर्ष में व्याप्त हो, जिसे दस-बारह कोटि मनुष्य बोलते हों, वह महान-महान असभ्य है। वर्तमान रीति के अनुसार भी जिसमें सब विषय के दो-तीन हजार ग्रन्थ हों, चालीस से अधिक संवाद पत्र छपते हों, सैकड़ों विद्यार्थी पास होते हों, वह असभ्य चूड़ामणि भाषा है। सरकार को तो हिन्दी पर दया नहीं आयी। परमेश्वर को सुना है कि दयावान है। देखें परमेश्वर की दया कहीं दयानन्द के साथ सती तो नहीं हो गई।''

'भारतेन्दु' में एक पूरे पृष्ठ पर कार्टून छपा करता था, जिसमें सामयिक विषयों पर कटाक्ष होता था। इसमें समालोचना का स्तम्भ था। सन 1884 के अगस्त अंक में इस सम्बन्ध में सूचना प्रकाशित की गई-''समालोचना के लिए अनेक पत्र-पुस्तकें आई हैं। जब तक अक्षर-अक्षर पढ़ न जाएंगी, समालोचना नहीं हो सकती। आगामी बार तक प्रकाशक गण क्षमा करें।'' इसका वार्षिक शुल्क एक रु. था। हर महीने की एक तारीख को प्रकाशित किया जाता था।

आठ पृष्ठों की पाक्षिक पत्रिका '*कठेर पंच*' बदायूँ से एक मई 1883 को प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक एवं प्रकाशक मौलवी अली अहमद हुसैन थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मासिक पत्रिका *'फुनून'* का प्रकाशन हैदराबाद से एक मई 1883 को हुआ। इसके प्रकाशक मुश्ताक अहमद 'एहक़र' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये छह आना था। कृषि, व्यापार, उद्योग तथा उद्यानों पर केन्द्रित रहने के कारण जमींदारों, कृषकों, कारीगरों और वनस्पति, पशु तथा खनिज सम्बन्धी जानकारियों के लिए पत्रिका अत्यंत लाभप्रद थी। फरवरी 1887 के अंक में 'फुनून' ने लिखा- ''यदि अँगरेजी शासन प्राथमिकताओं के निर्धारण के समय कृषि शिक्षा को प्राथमिकता देकर स्थानीय भाषाओं में कृषि विज्ञान की पुस्तकें निकलवा कर छात्रों को उसका लाभ उठाने का अवसर प्रदान करता तो वह इतने बड़े क्षेत्र में गरीबी का फायदा उठाकर शासन नहीं करता और हिन्दुस्तानियों के इस प्रकार गले नहीं घोंटता और न उन्हें दर दर मारे मारे फिरने देता।''

बनारस से साप्ताहिक *'पब्लिक ओपीनियन'* का प्रकाशन चार मई 1883 को किया गया था। इसके प्रकाशक मोहम्मद हनीफ़ और सम्पादक सैयद मोहम्मद अशरफ़ 'अख्तर शहंशाही' के लेखक थे। यह द्विभाषी साप्ताहिक था, जो उर्दू और अँगरेजी में निकाला जाता था। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। शेर और शायरी का मासिक गुलदस्ता *'फैज़-ए-सुख़न'* लखनऊ से 14 मई 1883 को प्रकाशित किया गया था। प्रकाशक मिर्ज़ा अब्बास हुसैन 'होश' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये आठ आना था। मासिक पत्रिका *'दास्तान-ए-सैयाह'* का प्रकाशन 16 मई 1883 को हैदराबाद से किया गया था। यह 16 पृष्ठ की पत्रिका थी। सम्पादक सैयद इब्राहीम थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये बारह आना था।

साप्ताहिक *'अबू-उल-ज़ुरफा'* एक जून 1883 को मुम्बई से प्रकाशित हुआ। यह आठ पृष्ठ का पत्र था। प्रकाशक मुंशी अमीर अली थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। यह हास्य और विनोद का पत्र था। महीने में तीन बार अर्थात हर दसवें दिन प्रकाशित होने वाले आठ पृष्ठ के *'हामी-ए-इस्लाम'* का प्रकाशन दिल्ली से 10 जून 1883 को किया गया था। इसके प्रकाशक फ़ैज़ुल हसन तथा सम्पादक अब्दुल वहाब थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये था। मासिक *'गुलकदा मुश्ताक़'* हैदराबाद से 15 जून 1883 को प्रकाशित हुआ। 16 पृष्ठ की इस पत्रिका के प्रकाशक मुश्ताक़ अहमद थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये बारह आना था।

पयाम-ए-यार

मासिक *'पयाम-ए-यार'* लखनऊ से जून 1883 में प्रकाशित किया गया था। मुंशी निसार हुसैन इसके प्रकाशक थे। 'पयाम-ए-यार' का शुल्क साधारण लोगों से एक रुपया तथा रईसों और रियासतों के शासकों के लिए पाँच रुपये वार्षिक था। 'पयाम-ए-यार' पत्रिका में दो भाग होते थे-एक कविताओं का और दूसरा गद्य का। मुंशी निसार हुसैन ने 'पयाम-ए-यार' की उर्दू-सेवाओं का उल्लेख मार्च 1905 के अंक में किया है- ''आप जानते हैं के 'पयाम-ए-यार' ने इस बाईस तेईस साल की मुद्दत में आपके मुल्क, आपकी ज़बान और आपकी क़ौम की कैसी ख़िदमत की है। इसने शायरी को जिंदा रखा और उर्दू शेर के मज़ाक को तरक्क़ी दी-फिलहाल बहुत से नौजवान मिलेंगे जो इस पुरानी शायरी को बुरा कहते हैं मगर उन्हें याद रखना चाहिए कि उनके इस तग़ैय्युर पसन्द मुजहदाना मज़ाक को 'पयाम-ए-यार' की ही आग़ोश में परवरिश पाई है। और उसी को पढ़ पढ़ कर इस क़ाबिल हुए हैं के मुफ़ीद या ग़ैर मुफ़ीद और मुनासिब या ग़ैर मुनासिब तग़ैय्युर के ख़्वास्तगार हों। 'पयाम-ए-यार' ने ऐसे ऐसे मुक़ामात पर शैरगोई का चर्चा कर दिया जहाँ इससे पेश्तर ज़बान उर्दू का कोई जानने वाला भी कम था। बहुत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे लोग थे जो मौजूं भी नहीं जानते थे, उन्हें 'पयाम-ए-यार' ने उभारा और उभार कर शायर बना दिया।''

मौलाना हसरत मोहानी ने अपनी पत्रिका 'उर्दू-ए-मुअल्ला'[1] में 'पयाम-ए-यार' की प्रशंसा करते हुए लिखा है- ''पयाम-ए-यार' उर्दू ज़बान के क़दीम गुलदस्तों में अगरचे सबसे पुराना है मगर एक हैसियत से इसका मुकाबला कोई दूसरा रिसाला या गुलदस्ता नहीं कर सकता के यह वक़्ते इजराअ से आज तक आरज़ी तअवीक़ से क़ुतर नजर करके इसकी इशाअत कभी मौक़ूफ़ नहीं हुई। इसमें कोई शुबह नहीं के मौलवी निसार हुसैन मरहूम एडीटर पयाम-ए-यार उर्दू के सबसे पुराने खादिम थे।''

अब्दुल हलीम 'शरर' के पहले उपन्यास 'दिलचस्प' के दोनों भाग सन 1884 में 'पयाम-ए-यार' ने सबसे पहले प्रकाशित किए थे। सन 1894 में उनका उपन्यास 'फिरदोस-ए-बरीं' भी प्रकाशित किया जो उर्दू का श्रेष्ठ उपन्यास माना गया। उनके दो अन्य उपन्यास 'मुक़द्दस नाज़नीन' तथा 'फ़तह इंदलस' भी इसी पत्रिका ने छापे। उनके बाद मुंशी अकबर हुसैन ने 'पयाम-ए-यार' का प्रकाशन किया।

हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में छपने वाले पाक्षिक *'सत्य समाचार'* का प्रकाशन फ़तहगढ़ से एक जुलाई 1883 को किया गया था। प्रकाशक बाबू शिवप्रसाद थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। सैयद रियाज़ अहमद रियाज़ ने आठ जुलाई 1883 को गोरखपुर से *'फ़ितना'* साप्ताहिक का प्रकाशन किया। इसके सम्पादक हाफिज़ निज़ाम अहमद थे। यह सोलह पृष्ठ का पत्र था। वार्षिक शुल्क एक रुपया आठ आना था। 'फ़ितना' अपनी बेबाक टिप्पणियों के लिए पहचाना जाता था। इस पर कई मुकदमे चले। इसके सम्पादक पर हमला तक हुआ। फ़ितना के प्रकाशन के तीन महीने हुए थे कि शासन ने इसका नाम बदलने पर दबाव डाला। रियाज़ इसके लिए राजी नहीं हुए और कुछ दिनों के लिए प्रकाशन बंद हो गया। डेविस द्वारा ज़िम्मेदारी लेने पर इसका प्रकाशन पुनः प्रारम्भ हुआ और कई वर्षों तक होता रहा।

साप्ताहिक *'अतालीक़-ए-हिन्द'* का प्रकाशन 13 जुलाई 1883 को लखनऊ से किया गया था। गुरुवार को निकलता था। प्रकाशक मुंशी मोहम्मद अली खां 'अर्शी' थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। चार पृष्ठ के साप्ताहिक *'जाम-ए-जहाँनुमा'* का प्रकाशन एक अगस्त 1883 को लखनऊ से किया गया था। हर सोमवार को निकाला जाता था। प्रकाशक राय श्रीकृष्ण 'क़ैसर' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। एक अगस्त 1883 को मुज़फ़्फ़रपुर से *'लम्हा-ए-नूर'* का प्रकाशन हुआ।

1. उर्दू-ए-मुअल्ला, मई 1912

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

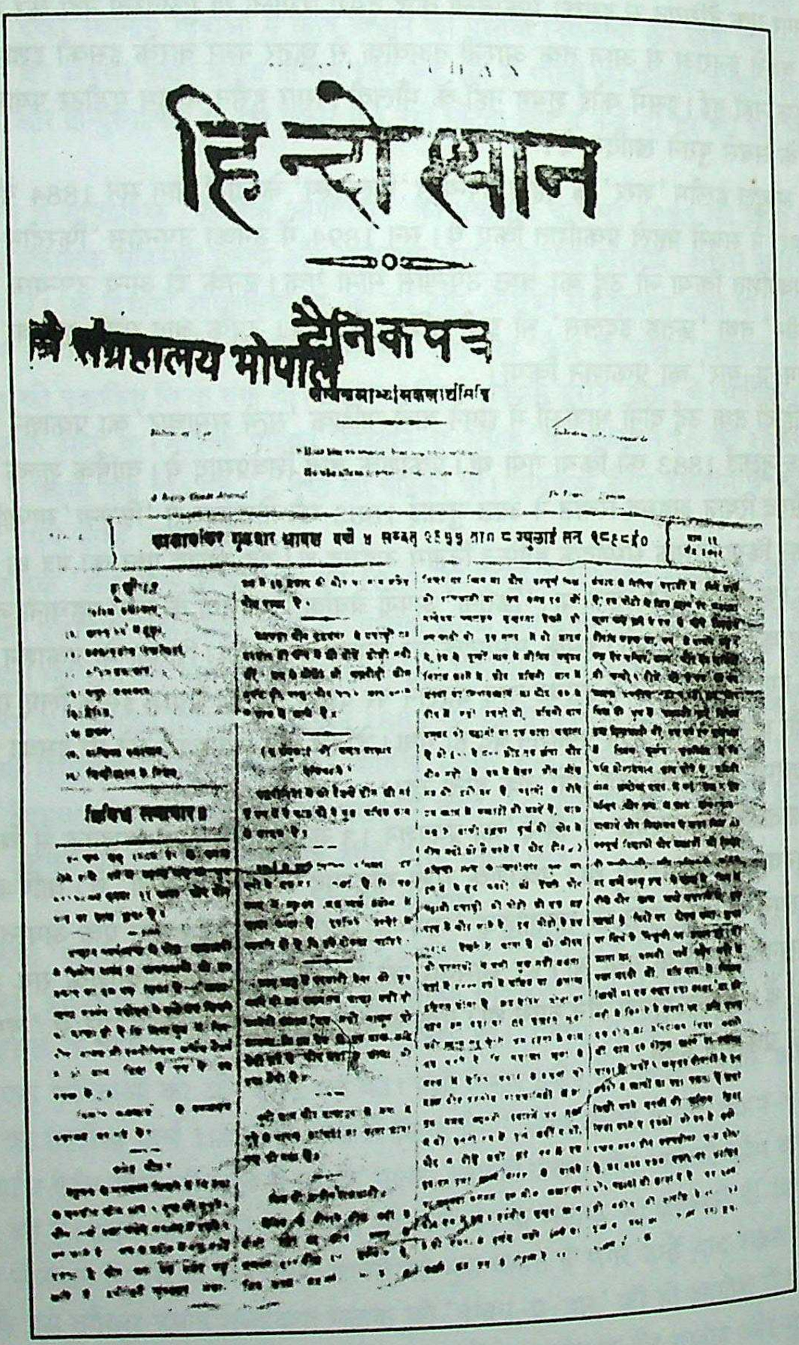

हिन्दोस्थान

दैनिकपत्र

संग्रहालय भोपाल

हिन्दोस्थान, कालाकांकर, सन 1885

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंदन से कालाकांकर

1883

हिन्दोस्थान

प्रतापगढ़ के ताल्लुकेदार राजा रामपाल सिंह ने लन्दन से त्रैमासिक *'हिन्दोस्थान'* का प्रकाशन अगस्त 1883 में किया। आरम्भ में 'हिन्दोस्थान' का प्रकाशन अँगरेजी-हिन्दी में हुआ। बाद में एक कालम में उर्दू, दूसरे में अँगरेजी और तीसरे में हिन्दी में सामग्री प्रस्तुत की जाने लगी। सोलह पृष्ठीय इस त्रैमासिक का वार्षिक शुल्क चार रुपये आठ आना था। त्रैमासिक के बाद यह मासिक पत्र बना। राजा रामपाल सिंह स्वयं इसके सम्पादक थे। सम्पादन में सहयोग के लिए जार्ज टेम्पल को नियुक्त किया गया। वे अँगरेजी अंश लिखते थे और राजा हिन्दी-उर्दू। लिथो प्रेस में छपा यह पत्र नवम्बर 1884 में साप्ताहिक होकर केवल अँगरेजी का पत्र रह गया। इस पत्र ने ब्रिटिश संसद में भारतीयों को प्रतिनिधित्व देने की माँग उठाई। उन्होंने पत्र के माध्यम से ब्रिटेन में रहने वाले भारतीयों को समझाया कि लंदन में बैठकर भारत पर राज कर रहे अँगरेज भारत की दुर्दशा को नहीं समझते, इसलिए उन्हें आन्दोलन करना चाहिए जिससे भारतीयों को ब्रिटिश संसद में प्रवेश मिले। जुलाई 1885 तक 'हिन्दोस्थान' लंदन से प्रकाशित होता रहा। फिर कालाकांकर स्थानांतरित हो गया। राजा रामपाल सिंह जब भारत आए तो अपने साथ जार्ज टेम्पल को भी ले आए। कालाकांकर आते ही उन्होंने हनुमत प्रेस की स्थापना की और 'हिन्दोस्थान' का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। 'हिन्दोस्थान' का अँगरेजी संस्करण 1885 से 1890 तक प्रकाशित होता रहा।

एक नवम्बर 1885 को 'हिन्दोस्थान' दैनिक पत्र हो गया जो विशुद्ध हिन्दी का पहला दैनिक था। 'हिन्दोस्थान' 25 गुणित 35 से.मी. आकार का पत्र था। उस समय की मुद्रण तथा वितरण व्यवस्था के सम्बन्ध में राजा रामपाल सिंह के पौत्र कुँवर सुरेश सिंह ने लिखा है- ''दो बड़े-बड़े हैण्ड प्रेस थे जिन पर पहले एक आदमी रोल से मैटर के ऊपर स्याही फेरता, फिर दूसरा कागज को मैटर पर रखता और तब प्रेसमैन हैण्डिल घुमाकर लोहे के भारी तख्ते से उसके ऊपर दबाव डालकर उसे पीछे हटा देता। इस प्रकार के परिश्रम के बाद कहीं एक पृष्ठ छपने की नौबत आती। इस प्रकार पाँच-छह घण्टे की कड़ी मेहनत पर 'हिन्दोस्थान' की चार-पाँच सौ प्रतियाँ निकल पाती थीं। उसके बाद वह पैक होता और उसे नाव पर लाद कर पाँच मील दूर गंगा के उस पार कुसरी घाट पहुँचाया जाता, जहाँ से वह फिर घोड़ागाड़ी पर आठ मील दूर सफर करके जब सिराथू रेलवे स्टेशन पर पहुँचता तब कहीं जाकर उसे रेल में चढ़ने का सौभाग्य प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता था।''

कालाकांकर में इस दैनिक पत्र के प्रकाशन के लिए तार आदि की जो भी सुविधाएँ उस समय तक उपलब्ध हो सकती थीं, उनका प्रबन्ध किया गया। हिन्दोस्थान का वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित 10 रुपये था।

'हिन्दोस्थान' के सम्पादकीय विभाग में उस समय की दिग्गज प्रतिभाओं को जोड़ा गया था। अमृतलाल चक्रवर्ती ने प्रयाग में हिन्दूसभा के वार्षिकोत्सव में भाषण दिया। उनके ओजस्वी भाषण से राजा रामपाल सिंह बेहद प्रभावित हुए और उन्हें एक सौ रुपये मासिक पर 'हिन्दोस्थान' का सहायक सम्पादक नियुक्त कर दिया। लेकिन वे ज्यादा दिनों तक वहाँ रहे नहीं।

सन 1886 की कोलकाता कांग्रेस में मदनमोहन मालवीय के ओजस्वी व्याख्यान ने 'हिन्दोस्थान' के सम्पादक की तलाश पूरी कर दी। उन्होंने मदनमोहन मालवीय के सामने 'हिन्दोस्थान' के सम्पादन का प्रस्ताव रखा। मालवीय जी ने उनके प्रस्ताव को दो शर्तों के साथ स्वीकार किया-(एक) राजा साहब उन्हें कभी भी नशे की हालत में नहीं बुलाएँगे और (दो) सम्पादन में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। राजा रामपाल सिंह ने दोनों शर्तें स्वीकार कर लीं। जुलाई 1887 में मदनमोहन मालवीय दैनिक 'हिन्दोस्थान' के प्रधान सम्पादक हो गए। प्रतापनारायण मिश्र, बाबू शशिभूषण, बालमुकुन्द गुप्त जैसे विद्वान सम्पादकीय सहयोगी थे। प्रारम्भ में मालवीयजी का मासिक वेतन 150 रु. निश्चित हुआ था, जो बाद में 250 रु. हो गया।

'हिन्दोस्थान' ने पत्रकारिता में कई स्वस्थ परम्पराएँ स्थापित कीं। मालवीय जी के कार्यकाल में 'हिन्दोस्थान' की प्रसार सँख्या 500 हो गई थी। गाँवों की समस्याओं को प्रमुखता देने के साथ-साथ विकास समाचार का प्रारम्भ इसी अख़बार से हुआ। मालवीय जी स्वतः सप्ताह में एक बार किसी ग्रामीण समस्या पर लिखा करते थे।

पं. मालवीय की सम्पादकीय नीति का मुख्य तत्व था- भारत के लिए स्वराज्य प्राप्ति और हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना। वे कहते थे-''भाषा की उन्नति करने में हमारा सर्वप्रधान कर्तव्य यह है कि हम स्वच्छ भाषा में लिखें। पुस्तकें भी ऐसी ही भाषा में लिखी जाएँ। ऐसा यत्न हो जिससे जो कुछ लिखा जाए, वह हिन्दी भाषा में लिखा जाए। जब भाषा में शब्द न मिलें तब संस्कृत से लीजिए या बनाइए।''

'हिन्दोस्थान' की हिन्दी का एक नमूना- **भारत में बूड़ा**

''हिन्दोस्थान के निवासियों के लिए दुर्भिक्ष, सूखा, अग्निकोप, अनावृष्टि और बूड़ा अत्यन्त ही हानिकारक आपत्तियाँ हैं, दुर्भिक्ष और सूखा कयतनों से भीख मँगाता है और कयतनों को गृहहीन करके जीविका के लिए देश परदेश पर्यटन कराता है। ग्रीष्म ऋतु में अग्निप्रकोप से कयातना घर जल जाते हैं, और गृह की कयतनी मूल्यवान सामग्रियाँ नष्ट हो जाती हैं। इसी प्रकार से बूड़ा भी यहाँ वालों के लिए बहुत ही क्षति दायक होता है, मध्य भारत वर्ष और मध्यप्रदेश के समान पहाड़ी और जंगली भागों में जबकि पहाड़ी नदियाँ जलप्रवाह से उमड़ आती हैं तो उनके किनारे पर के ग्रामीणों की दशा करुणोत्पादक होती है, सारा गाँव जलमय दिखाई देता है और झुण्ड के झुण्ड मनुष्य अपने अपने घरों को छोड़कर उन स्थानों में चले जाते हैं जहाँ पर बूड़ा नहीं आता होता है।''

मालवीयजी के तीन वर्षीय सम्पादन काल में 'हिन्दोस्थान' ने प्रगति की। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक सभी विषयों पर वे समान अधिकार से लिखते थे। शुद्धता के आग्रह के कारण वे कभी प्रूफ में इतना संशोधन कर देते थे कि नए सिरे से कम्पोज करना पड़ता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालमुकुन्द गुप्त भी 'हिन्दोस्थान' में रहे। इस संदर्भ में स्वयं उन्होंने लिखा है-''कालाकांकर के दैनिक 'हिन्दोस्थान' से कोई दो वर्ष हमारा भी सम्बन्ध था। उसका कारण हुई थी, पण्डित मदनमोहन मालवीय की कृपा। सन 1889 के आरम्भ में पं. दीनदयालुजी शर्मा के उद्योग से श्री भारत धर्म महामण्डल का दूसरा महाधिवेशन श्री वृन्दावन धाम में हुआ था। उस समय शीतकाल था। मालवीय जी महोदय उन दिनों 'हिन्दोस्थान' के सम्पादक थे। आप भी महामण्डल में पधारे थे। हमारा सम्बन्ध उस समय लाहौर के पुराने उर्दू पत्र 'कोहेनूर' से था। लाहौर में हम भी मण्डल में शरीक हुए थे। मालवीय जी से साक्षात् होने पर उन्होंने आज्ञा की कि आपको 'हिन्दोस्थान' पत्र में हमारे साथ काम करना चाहिए। कानपुर से श्री प्रतापनारायण जी मिश्र को भी हम बुलाते हैं।''

बालमुकुन्द गुप्त के समान मालवीय जी के अनुरोध पर प्रतापनारायण मिश्र ने भी 1889 में कालाकाँकर आकर कुछ समय तक सहायक सम्पादक के रूप में कार्य किया। 1890 तक वे 'हिन्दोस्थान' के सम्पादक मण्डल में रहे और साहित्य विभाग का कार्य देखते रहे।

जब मालवीयजी ने 'हिन्दोस्थान' का सम्पादन छोड़ा तब अखबार में फिर राजा रामपाल सिंह का नाम सम्पादक के रूप में छपने लगा। शशिभूषण पर अखबार के सम्पादन की जवाबदारी आई। वे केवल एक साल तक वहाँ रहे। उसके बाद शीतल प्रसाद सम्पादक हुए। फिर राजा रामपाल सिंह के बुलावे पर गोपालराम गहमरी कालाकाँकर पहुँचे। गोपालराम गहमरी का नाम उन दिनों जासूसी उपन्यासों, कहानियों के लिए तो प्रसिद्ध था ही, उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सेवा की।

जनवरी 1891 से प्रति रविवार 'हिन्दोस्थान' का एक अंक अँगरेजी में प्रकाशित होने लगा, फिर दो अंक अँगरेजी और चार अंक हिन्दी में निकलने लगे। अन्तत: सप्ताह में तीन बार 'हिन्दोस्थान' का अँगरेजी संस्करण निकलने लगा। इसका मूल्य छह रुपये वार्षिक था। 1906 में 'हिन्दोस्थान' अँगरेजी दैनिक के रूप में भी प्रकाशित होने लगा। 1891 में कांग्रेस पर पहली कविता 'हिन्दोस्थान' में छपी थी। पं. प्रतापनारायण मिश्र विरचित इस कविता का शीर्षक था- ''जय जयति भगवति कांग्रेस।''

'हिन्दोस्थान' के साथ 'सम्राट' नाम का पाक्षिक पत्र भी कालाकांकर से निकल रहा था। यह एक साहित्यिक पत्र था जिसका प्रकाशन 30 मार्च 1908 को रामनवमी के दिन आरम्भ हुआ था। बालकृष्ण भट्ट इसके सम्पादक थे। (उनका 'हिन्दी प्रदीप' कानून के शिकंजे में फँसकर बन्द हो चुका था।) 28 फरवरी, 1909 को राजा रामपाल सिंह का निधन हो गया। 'हिन्दोस्थान' भी तब बन्द हो गया। 'सम्राट' भी कुछ समय तक बन्द रहा। पश्चात 'हिन्दोस्थान' को 'सम्राट' में सम्मिलित करके इसे साप्ताहिक कर दिया गया।

पाक्षिक *'अनीस-ए-हिन्द'* आगरा से एक सितम्बर 1883 को निकला। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। इसके प्रकाशक मिर्ज़ा 'बज़्म' तथा सम्पादक सैयद लियाक़त अली थे। कुछ समय बाद मुंशी जंगबहादुर 'जंग' सम्पादक बने। आगरा से मासिक *'गुलकदा ज़ीनत सुख़न'* 15 सितम्बर 1883 को प्रकाशित हुआ। यह 16 पृष्ठ का था। प्रकाशक मिर्ज़ा इश्तियाक़ हुसैन 'बज़्म' और सम्पादक लियाक़त अली थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया आठ आना था।

44 पृष्ठ की मासिक पत्रिका *'मज़ाक़-ए-सुख़न'* का प्रकाशन 15 सितम्बर 1883 को हैदराबाद से किया गया था। प्रकाशक-सम्पादक मुश्ताक़ अहमद थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छह आना था। इसमें समस्यापूर्ति की गज़लें क़सीदे, लेख, अँगरेजी उपन्यास का अनुवाद तथा विनोदपूर्ण चुटकुले प्रकाशित किए जाते थे। साप्ताहिक *'अलसिद्दीक़'* का प्रकाशन फीरोज़पुर से एक अक्टूबर 1883 को किया गया था। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलवी वलीउल्ला थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था।

शेर और शायरी के मासिक *'गुलदस्ता-ए-अंजुमन'* का प्रकाशन लाहौर से एक अक्टूबर 1883 को किया गया था। इसके सम्पादक मौलवी सैफ़-उल-हक़ 'अदीब' थे। मासिक *'रौअना'* एक अक्टूबर 1883 को लखनऊ से निकला। इसके सम्पादक-प्रकाशक सैयद आशिक़ हुसैन 'आशिक़' थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। कानपुर से साप्ताहिक *'हबीब-ए-हिन्द'* एक अक्टूबर 1883 को प्रकाशित किया गया था। शनिवार को निकलता था। सम्पादक-प्रकाशक पंडित बिशननारायण थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। साहित्यिक मासिक पत्रिका *'ज़माना'* का प्रकाशन आगरा से नवम्बर 1883 में किया गया था। इसमें 40 पृष्ठ होते थे। पत्रिका 'तेरहवीं सदी' की श्रृंखला को बनाए रखने के लिए, (उसको बंद करने के बाद), निकाला गया था। प्रकाशक ख़्वाजा यूसुफ़ अली तथा सम्पादक मौलवी नासिर अली थे। पत्रिका में साहित्य, ज्ञान तथा इतिहास विषयक लेख होते थे। सप्ताह में दो बार प्रकाशित होने वाले प्रदर्शनियों से सम्बन्धित *'जरीदा नुमाइश'* का प्रकाशन कोलकाता से एक नवम्बर 1883 से फरवरी 1884 तक हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलवी फ़रीद-उल-नवी थे। मेरठ से साप्ताहिक *'मेडिकल पेपर'* का प्रकाशन एक नवम्बर 1883 को किया गया था। उर्दू और हिन्दी में 16 पृष्ठ के इस पत्र का वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

'रिफ़ा-ए-आम' एक नवम्बर 1883 को झज्जर से निकला। यह 16 पृष्ठों की पाक्षिक पत्रिका थी। प्रकाशक मौलवी गुलाम मोहम्मद खां तथा सम्पादक पंडित दीनदयाल थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये था। शेर और शायरी के मासिक गुलदस्ते *'शगूफ़ा'* का प्रकाशन 15 नवम्बर 1883 को हैदराबाद से किया गया था। प्रकाशक सैयद अहमद बिलग्रामी तथा सम्पादक सैयद हसन 'जश्न' बिलग्रामी थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। कोलकाता से साप्ताहिक *'गौहर'* का प्रकाशन 19 नवम्बर 1883 को किया गया था। पहले इसका नाम 'ग़ौहर-नजफ़ी' था, फिर 'गौहर-ए-शादाब' हुआ, बाद में 'गौहर' कर दिया गया। प्रकाशक अली नज़फ 'गौहर' रामपुरी तथा सम्पादक हकीम नाज़िर हुसैन 'नाज़िर' थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। कोलकाता से *'आईना-ए-नुमाइश'* का प्रकाशन 15 दिसम्बर 1883 को किया गया था। मासिक शुल्क एक रुपया दो आना था। प्रकाशक-सम्पादक गुलाम हमदानी थे। मासिक *'गुलदस्ता-ए-बिहार'* का प्रकाशन बिहार शरीफ से 27 दिसम्बर 1883 को हुआ।

सदाक़त

सन 1883 में भोपाल से उर्दू साप्ताहिक *'सदाक़त'* का प्रकाशन अब्दुल करीम 'औज' ने किया। यह अवामी अखबार था जिसने पहले पहल नवाबी हुकूमत की खामियों के खिलाफ कलम चलाई। इसकी कीमत उन्हें देश निकाले के रूप में चुकानी पड़ी। मोहम्मद यूसुफ क़ैसर ने 'नदीम' के रजत जयंती अंक में छपे अपने लेख में इस पर टिप्पणी की है- ''मुंशी अब्दुल करीम औज ने एक अख़बार सदाक़त के नाम से जारी करना शुरू किया जिसमें नवाब सिद्दीक़ हसन खां और निज़ामे हुकूमत पर शदीद नुक्ताचीनियां हैं और ऐसे इल्ज़ामात लगाए हैं जिससे दिल ओ दिमाग़ में गुस्से की आग भड़क जाए। मगर हैरत है के इन चीज़ों को तीन महीने तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवारा किया गया। आखिर वह वक़्त आ गया के हज़रत 'औज' का व यकबीनी दूरे गोश (अचानक) भोपाल से इख़राज (निष्कासन) कर दिया गया वह चंद घंटे की मसाफ़त (दूरी) तै करके होशंगाबाद पहुँच गए उनके अहलोअयाल (परिवारजन) तो भोपाल में ही रहे मगर उनका प्रेस और कुछ ज़रूरी सामान उनके पास किसी सूरत पहुँच गया। एक माह की खामोशी के बाद उन्होंने 'मौज-ए-नरबदा' नाम से दूसरा अखबार शाया (प्रकाशित) करना शुरू कर दिया, जिसकी पालिसी तो वही थी जो 'सदाक़त' की थी हरज़ह सराई (बकवास) के बजाए उसके मिक़ालात (लेखों) में किसी क़दर संजीदगी थी लेकिन बाज़वक़्त इससे भी गुज़र जाते थे (बढ़ जाते थे)। भोपाल और होशंगाबाद घर के सहन ओ दालान की तरह हैं इसीलिए वह दूसरे-तीसरे रोज़ भोपाल आकर एक दो दिन तक अपने घर में छुपे रहते और अपने जासूस नामानिगारों (संवाददाताओं) के ज़रिए से हर क़िस्म के हालात से वाक़िफ़ (अवगत) होकर चले जाते और उससे अपने अख़बार के सहफात (पृष्ठों) को रंगीन करते रहते। यह सूरत एक अरसे तक क़ायम रही मगर उनकी ज़िंदगी ने वफ़ा (साथ) नहीं की और उनका क़लम हमेशा के लिए खामोश हो गया।''

मासिक तिब्बी पत्रिका *'जामये मसाइल इल्मे तिब'* का प्रकाशन कपूरथला से सन 1883 में हुआ था। इसके प्रकाशक सरदार बूटासिंह और सम्पादक हकीम आशिक़ अली थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था।

कोलकाता से अँगरेजी साप्ताहिक *'इण्डियन नेशन'* का प्रकाशन सन 1883 में हुआ था। इसके संस्थापक-सम्पादक एन.एन. घोष थे। यह अँगरेजी का प्रभावी पत्र था। दिसम्बर 1899 में जब उमेशचंद्र दत्त को लखनऊ के 15वें कांग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया तब 'इण्डियन नेशन' ने लिखा- ''इससे बेहतर चुनाव हो ही नहीं सकता था। अपने ज्ञान, अनुभव, प्रतिष्ठा, शालीनता तथा निर्णय क्षमता के कारण उन्हें इस सम्मान के योग्य माना गया।''

लाहौर से आठ पृष्ठ का साप्ताहिक समाचारपत्र *'देश उपकारक'* सन 1883 में निकला। इसके प्रकाशक राय सालिगराम एवं सम्पादक पंडित हरगोपाल थे। वार्षिक शुल्क एक रुपये बारह आना था। स्थानीय आर्य समाज का मुखपत्र था। सन 1883 में साप्ताहिक *'नज्म-उल-अख़बार'* का मेरठ से प्रकाशन किया गया था। बुधवार को प्रकाशित किया जाता था। प्रकाशक अमीर अहमद 'ज़ैब' तथा सम्पादक मोहम्मद हयात थे। वार्षिक शुल्क नौ रुपये था।

पुणे से सन 1883 में *'पुणे पंच'* पाक्षिक शुरू हुआ। सन 1883 में *'यथार्थवादी'* मासिक का प्रकाशन हुआ। इस तेलुगु पत्रिका को गरुड कूर्मय्या ने विशाखापत्तनम से निकाला था। सन 1883 में मुम्बई से कालीचरण अवस्थी के सम्पादन में *'व्यापार बंधु'* साप्ताहिक अखबार निकला। परन्तु आर्थिक कारणों से इसे शीघ्र बंद करना पड़ा। मुम्बई से सन 1883 में प्रति रविवार प्रकाशित होने वाले *'वार्ताहर'* का वार्षिक शुल्क एक रुपया था जो बाद में दो रुपये हो गया तथा एक अंक का मूल्य दो पैसे था। पत्र का आकार 44 गुणित 28 से.मी. था। यह पत्र मुम्बई के फेमिली प्रिंटिंग प्रेस में छपता था। कुल पृष्ठ चार थे। पत्र में विविध विषयों की जानकारी दी जाती थी। पृष्ठ दो पर सम्पादकीय टिप्पणी रहती थी। इसके सम्पादक बालाजी रघुनाथजी और राजाराम शास्त्री थे।

जयपुर से शास्त्री बालचन्द्र शर्मा ने मासिक *'समाचार मार्त्तण्ड'* सन 1883 में प्रकाशित किया। नाथद्वारा से गोस्वामी गोवर्द्धनलाल के आश्रय में वल्लभ कुल सम्प्रदाय के मासिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सद्धर्म स्मारक प्रचारक' का सन 1883 में प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसमें वैष्णव सम्प्रदाय के सिद्धांतों तथा गतिविधियों का प्रकाशन किया जाता था। *'साहित्य सुधानिधि'* सन 1883 में प्रकाशित हुई। 'साहित्य सुधानिधि' के विषय में हिन्दी कोविद रत्नमाला (दूसरा भाग) में लिखा है-''बाबू जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' बी.ए. ने कई सहयोगियों के साथ 'साहित्य सुधानिधि' नाम का एक मासिक पत्र कई वर्षों तक निकाला था। इसमें प्राचीन तथा नवीन ग्रंथ छपते थे। यह काशी से प्रकाशित होती थी।''

जबलपुर से सन 1883 में साप्ताहिक *'शुभचिंतक'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। रामगुलाम अवस्थी पत्र के सम्पादक थे। 'शुभचिंतक' का साहित्य पूर्ति अंक पृथक से 'काव्य सुधा निधि' के नाम से प्रकाशित किया जाता था और इसका सम्पादन रघुवर प्रसाद द्विवेदी करते थे। इसका वार्षिक मूल्य चार रुपये था। इसमें मुख्य रूप से धार्मिक, पौराणिक आख्यान, लेख, कविता और समसामयिक सूचनाएं छापी जाती थीं।

चेन्नै से साप्ताहिक *'हाकिम'* का प्रकाशन सन 1883 में हुआ था। बड़े आकार के दो पृष्ठ के इस पत्र के प्रकाशक मोहम्मद अनवर थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये दो आना था। सन 1883 में औरंगाबाद से *'औरंगाबाद समाचार'* का प्रकाशन हुआ। यह मराठी पत्र था।

सन 1883 में कोल्हापुर से *'दक्षिण वृत्त'* का प्रकाशन शंकर शास्त्री गोखले ने किया। यह मराठी अखबार आर्य प्रबोध प्रेस से निकलता था। उड़िया भाषा का *'सेवक'* सन 1883 में कटक मिशन प्रेस से निकला। इस मासिक पत्रिका का सम्पादन भवग्राही दास करते थे। इसी प्रेस से बंगला और उड़िया भाषा में मासिक *'संस्कारक'* प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक चतुर्भुज पटनायक थे। द्वारिकानाथ दास और शिवनारायण नायक ने बालेश्वर से उड़िया पत्रिका *'धूमकेतु'* का सम्पादन-प्रकाशन किया।

1884

भारत जीवन

सन 1884 में रामकृष्ण वर्मा ने कोलकाता में एक प्रेस स्थापित किया। प्रेस में पहले ईसाई-मत-खंडन पुस्तक छापी। इस किताब की खूब बिक्री हुई और छापाखाना चल निकला। मार्च 1884 से उन्होंने *'भारत जीवन'* पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। 'भारत जीवन' के सोच का परिचय 13 अक्टूबर 1884 के अंक में प्रकाशित इस टिप्पणी से मिलता है- ''यदि देशी पत्र न होवें तो देश में एकदम अंधकार सा छा जाय। सरकार को कभी न जान पड़े कि प्रजा कैसी है और क्या करती है। जो सच पूछिए तो देशी समाचारपत्र सरकार के राज करने की भुजा है।''

'हिंदी कोविद रत्नमाला' के अनुसार- ''सन 1904 में बाबू गंगाप्रसाद गुप्त 'भारतजीवन' के संपादक हुए, परंतु पिता का देहांत हो जाने के कारण उसी वर्ष इन्हें इस कार्य से पृथक हो जाना पड़ा। सन 1905 के अंत में बाबू गंगाप्रसाद गुप्त ने पुनः भारत जीवन की संपादकता ग्रहण की।'' बाद में 'भारत जीवन' बंगाल से उठ कर उत्तर प्रदेश चला गया और सन 1914 में दैनिक हो गया। यह पत्र सन 1924 तक प्रकाशित होता रहा।

बरेली से आर्य समाज के तत्वावधान में जनवरी 1884 में *'आर्य पत्र'* के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है जो हिन्दी और उर्दू भाषा में छपता था। इसका वार्षिक शुल्क सवा रुपये था। पत्र के सम्पादक हकीम रघुवीर सहाय 'बिरियां' और प्रकाशक आर्य समाज के सचिव लाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजबहादुर थे। 1905 में सम्पादन की जिम्मेदारी पूरनमल को सौंपी गई। 32 पृष्ठ के इस मासिक-पत्र में सारगर्भित लेख और स्तरीय कविताएँ प्रकाशित की जाती थीं। 1915 तक इसका प्रकाशन हुआ।

साप्ताहिक *'जम्मू गज़ट'* का प्रकाशन श्रीनगर से एक जनवरी 1884 को किया गया था। सम्पादक सैयद निसार अली 'शोहरत' थे। सरकारी गज़ट था। आठ पृष्ठ का यह पत्र सन 1905 में बंद हो गया। मासिक पत्रिका *'जामय-उल-उलूम'* मुरादाबाद से जनवरी 1884 में प्रकाशित हुई। प्रकाशक मुंशी नारायणदास थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था।

मासिक *'तकमला'* का प्रकाशन आगरा से जनवरी 1884 में हुआ था। 'हामी-ए-इस्लाम' के सचिव मुंशी करामत अली खां इसके प्रबन्धक थे। मतबअ हुसैनी में छपता था। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था। इसमें स्वास्थ्य एवं उपचार संबंधी बातों का प्रकाशन होता था। हैदराबाद से जनवरी 1884 में चार पृष्ठ का पत्र *'पैक-ए-आसिफी'* प्रकाशित हुआ। प्रकाशक सैयद अहमद 'ज़ैद' बिलग्रामी एवं प्रबन्धक सैयद हसन 'जश्न' बिलग्रामी थे। मतबअ हज़ार दास्तान में छपता था। वार्षिक शुल्क 15 रुपये था।

बनारस से एक जनवरी 1884 को साप्ताहिक *'रफी-उल-अखबार'* का प्रकाशन हुआ। प्रकाशक सैयद गुलाम हुसैन और सम्पादक मुंशी करीम बख़्श 'आजाद' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। छह माही शुल्क एक रुपया तथा एक प्रति का मूल्य तीन आना था। प्रति बुधवार आठ पृष्ठों में 25 गुणित 20 से.मी. आकार का निकलता था। प्रथम पृष्ठ पर देश-विदेश के समाचार, दूसरे पृष्ठ पर सम्पादकीय तथा तीसरे पृष्ठ पर मुरासलात स्तम्भ के अंतर्गत सम्पादक को लिखे गए पत्र छापे जाते थे। इन पत्रों में विभिन्न घटनाओं पर प्रतिक्रिया होती थी, लेकिन पत्र भेजने वाले के नाम के स्थान पर शुभचिंतक, हितकारी आदि छापा जाता था।

पाँच जनवरी 1884 को मौलवी महरम अली चिश्ती ने लाहौर से *'रफ़ीक-ए-हिन्द'* का प्रकाशन आरम्भ किया था। वे इसके प्रकाशक और सम्पादक थे। 'रफीक-ए-हिन्द' ने अँगरेजी अखबारों की शैली को अपनाया था। इसमें तथ्यपूर्ण खबरें और लेख प्रकाशित किए जाते थे। 'रफीक-ए-हिन्द' ने सर सैयद अहमद द्वारा चलाए गए आंदोलन का खुल कर समर्थन एवं प्रचार किया। किन्तु जब पंजाब में सर सैयद अहमद के सिद्धांतों का विरोध प्रारम्भ हुआ तो यही पत्र उनके सबसे बड़े विरोधी के रूप में प्रकट हुआ। मौलवी नज़ीर अहमद ने तो पत्र पर मुक़दमा ही चला दिया था, अंत में 19 जून 1893 को मौलवी महरम अली को क्षमा माँगनी पड़ी। सन 1904 में 'रफीक-ए-हिन्द' का प्रकाशन बन्द हो गया।

अंजुमन इस्लामिया का अर्द्ध साप्ताहिक *'इत्तेहाद'* चेन्नै से सात जनवरी 1884 को प्रकाशित किया गया था। सम्पादक गुलाम ग़ौस थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। सन 1885 में इसे दैनिक कर दिया गया। लखनऊ से साप्ताहिक *'जोन्स गज़ट'* का प्रकाशन 8 जनवरी 1884 को किया गया था। आठ पृष्ठ का यह पत्र हर सोमवार को निकलता था। सम्पादक-प्रकाशक कृष्णचंद्र 'क़ैसर' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये बारह आना था। 13 जनवरी 1884 को साप्ताहिक *'दबीर'* का प्रकाशन चेन्नै से हुआ। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक सैयद हसन रज़ा 'आतिशी' थे। बारह पृष्ठ का यह साप्ताहिक मतबअ हसनी में छपता था। इसका वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

12 पृष्ठ की मासिक पत्रिका *'फिलासफ़र'* का प्रकाशन आगरा से 15 जनवरी 1884 को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया था। एक जुलाई 1885 से साप्ताहिक हो गई। मुंशी करामत अली 'कमाल' प्रबंधक थे। शुल्क कुछ नहीं था, केवल डाक टिकटों के लिए 12 पैसे लिए जाते थे। लखनऊ से साप्ताहिक *'बेनज़ीर'* का प्रकाशन 15 जनवरी 1884 को किया गया। इसके प्रकाशक जी.पी. दत्तात्रय तथा सम्पादक पंडित शिवनाथ थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये आठ आना था। कपूरथला से पाक्षिक *'मुहज़्ज़ब'* 15 जनवरी 1884 को प्रकाशित हुआ। यह अंजुमन हामिए क़ौम का मुखपत्र था। बहार-ए-जन्नत प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क एक रुपया आठ आना था। विजवारा (जिला होशियारपुर) से 20 जनवरी 1884 को साप्ताहिक *'गौरक्षा'* का प्रकाशन किया गया था। इसके प्रकाशक मुंशी संदी खान 'सफ़ी' तथा सम्पादक बाबा अर्जुन सिंह थे। सफीर पंजाब प्रेस में छपवाकर इसे प्रति बुधवार प्रकाशित किया जाता था। पृष्ठ सँख्या 12 थी। वार्षिक शुल्क चार रुपये था।

दिल्ली से शेर शायरी के मासिक गुलदस्ते *'सलाम'* का प्रकाशन 24 जनवरी 1884 को किया गया था। 16 पृष्ठों की इस पत्रिका के प्रकाशक अमीर सिंह थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। 31 जनवरी 1884 को लुधियाना से मासिक पत्रिका *'अंजुमन-रिफा-ए-आम'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक मिर्ज़ा अब्दुल्ला थे। अमेरिकन मिशन प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। जनवरी 1884 में *'बिहार पेट्रियट'* पटना से प्रकाशित हुआ। यह अँगरेजी का साप्ताहिक पत्र था। एक फरवरी 1884 को मुरादाबाद से सोलह पृष्ठ का साप्ताहिक *'आज़ाद'* निकला था। प्रकाशक इब्ने अली थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था।

36 पृष्ठ के मासिक *'रावी-ए-बेनज़ीर'* का प्रकाशन लाहौर से एक फरवरी 1884 को किया गया था। इसमें महापुरुषों का वृत्तांत विशेष तौर पर प्रकाशित किया जाता था। इसके प्रकाशक राय सालिगराम तथा सम्पादक पंडित शिवनाथ थे। आर्य प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। मासिक *'नाला-ए-उश्शाक़'* चेन्नै से 15 फरवरी 1884 को प्रकाशित किया गया था। प्रकाशक सैयद हसन रज़ा 'आतशी' तथा सम्पादक मुंशी मुहीउद्दीन हुसैन खां 'तस्नीम' थे। वार्षिक शुल्क बारह आना था। इसी वर्ष अजमेर से *'नाला-ए-उश्शाक़'* का प्रकाशन सैयद नज़र हसन सख़ा और अब्दुल गफ़्फ़ार 'शिफ़ा' ने किया था। निज़ाम-उल-मुल्क के राजगद्दी हासिल करने की स्मृति में साप्ताहिक *'निज़ाम-उल-अखबार'* मुरादाबाद से 15 फरवरी 1884 को निकला था। 12 पृष्ठ के इस पत्र के प्रकाशक क़ाजी फ़हीमुद्दीन तथा सम्पादक एवं प्रबन्धक क़ाजी एहतशामुद्दीन थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये तेरह आना था।

साप्ताहिक *'हरियाणा पंच'* का प्रकाशन 20 फरवरी 1884 को झज्जर (जिला रोहतक) से किया गया था। आठ पृष्ठ का यह पत्र बुधवार को निकलता था। प्रकाशक गुलाम अहमद खाँ थे। वार्षिक शुल्क आठ रुपये था। एक जुलाई 1884 से इसका नाम *'हरियाणा अखबार'* कर दिया गया था। इसका प्रकाशन मासिक तथा वार्षिक शुल्क एक रुपया तीन आना था। बाद में इसे *'झज्जर पंच'* के नाम से भी जाना गया।

24 फरवरी 1884 को लखनऊ से बीस पृष्ठ का मासिक *'मुरक्का निग़ार'* प्रकाशित हुआ। यह शायरी की मासिक पत्रिका थी। प्रकाशक ख़्वाजा वज़ीर तथा सम्पादक आशिक़ हुसैन 'आशिक़' थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। मुद्रण गुलज़ारी प्रेस में होता था। नागपुर से साप्ताहिक *'तर्जुमान'* का प्रकाशन एक मार्च 1884 को किया गया था। मंगलवार को उस्मानी प्रेस में छप कर प्रकाशित होता था। प्रकाशक उस्मान अली खां थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारह आना था। लखनऊ से पाक्षिक पत्रिका *'जामए-उल-अख़लाक़'* का प्रकाशन मार्च 1884 में किया गया था। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। प्रकाशक मौलवी सैयद मोहम्मद हुसैन मोहानी तथा सम्पादक सैयद निज़ाम अली थे।

'कर्नाटक पंच' माह में तीन बार अर्थात हर 10वें दिन निकलता था। चेन्नै से यह पत्र एक अप्रैल 1884 को प्रकाशित हुआ। मुंशी मुहीउद्दीन हसन खाँ प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। यह हास्य-विनोद का पत्र था। साप्ताहिक *'महशर'* का प्रकाशन लखनऊ से एक अप्रैल 1884 को किया गया था। इसके प्रकाशक अब्दुल वासित 'महशर' थे। मतबअ फ़ैज-ए-मोहम्मदी में छपता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। अंजुमन-ए-शौउरा के 12 पृष्ठ के मुखपत्र *'हदीक़-ए-शौउरा'* का प्रकाशन चेन्नै से पाँच अप्रैल 1884 को किया गया था। यह साप्ताहिक पत्र गुरूवार को निकलता था। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था। प्रकाशक मीर सादिक़ हुसैन तथा सम्पादक हकीम मोहम्मद हुसैन थे।

मासिक *'अंजुमन ज़राअत'* को एग्रीकल्चरल सोसायटी ने बिजनौर से 30 अप्रैल 1884 को निकाला था। कृषि सम्बन्धी इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क दो रुपये दो आना था। पंडित श्रीलाल सम्पादक तथा प्रबन्धक हाफिज़ करीमउल्ला थे। सम्पादक-प्रकाशक अब्दुल हक़ 'तहक़ीक' ने शेर शायरी का मासिक *'शम-ए-सुख़न'* बेंगलूरु से 30 अप्रैल 1884 को प्रकाशित किया था। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। प्रबन्धक गुलाम मोहम्मद शरीफ़ 'अदीब' थे। मासिक पत्रिका *'ज़िया-उल-हक़'* का प्रकाशन एक मई 1884 को दिल्ली से हुआ। 16 पृष्ठ की यह पत्रिका अंजुमन अंसारिया का मुखपत्र थी। प्रकाशक सैयद मुनव्वर अली थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

एक मई 1884 को फ़र्रुखनगर, जिला गुड़गांव से जैन समाज की मासिक पत्रिका *'जैन प्रकाश'* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। इसे आठ पृष्ठ में हिन्दी में निकाला जाता था। प्रकाशक मुंशी जियालाल थे। वार्षिक शुल्क ढाई रुपया था। 'जैन प्रकाश' हरियाणा से प्रकाशित होने वाला पहला हिन्दी पत्र है। 'जैन प्रकाश' के सम्बंध में 'भारतभ्राता'[1] ने लिखा था-"इस नाम का एक मासिक पत्र छः वर्ष से प्रकाशित होता है। इसके उत्तमोत्तम लेख नए नए समाचार देखने ही लायक होते हैं। आगामी मास का फल होनहार ज्योतिष के बड़े बड़े प्रसिद्ध ग्रन्थों से लिखा जाता है। सम्पूर्ण लेख प्रणाली निरपक्षता सहित होती है। पक्षपात का इसमें नाम तक नहीं। जनवरी सन 1890 से इसका आकार भी दूना बढ़ाकर वैद्यक का विषय विशेष कर दिया है जिससे नाना प्रकार के रोगों की पहचान और चिकित्सा करना शीघ्र आ जाय और यह देखने ही योग्य है विशेष क्या लिखें जिस को अपनी और अपने मित्रों की शरीर रक्षा चाहिए वे इस पत्र को अवश्य खरीदें। मूल्य भी थोड़ा केवल आठ आना वार्षिक है नमूने का परचा दो पैसे में बिना दाम पाये किसी को नहीं मिलेगा।"

12 पृष्ठ का साप्ताहिक *'सरवर क़ैसरी'* रामपुर से एक मई 1884 को प्रकाशित हुआ था। इसके संस्थापक हकीम अहमद रज़ा थे। सन 1888 में इसे पुनः हकीम हैदर अली खां 'हैदर' ने निकाला। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। अहसान उल्ला बादशाह कंपनी ने एक मई सन 1884 को चार पृष्ठों के दैनिक *'हुमा-ए बंगाल'* का प्रकाशन आरम्भ किया। वार्षिक शुल्क सोलह रुपये था। कविताओं की पत्रिका *'नामा-ए-यार'* दो मई 1884 को रतलाम से प्रकाशित

1. भारतभ्राता 1 फरवरी 1890

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुई। बीस पृष्ठ की मासिक पत्रिका के प्रकाशक फ़ैयाजुर्रहमान तथा सम्पादक मुशर्रफ़ यार खां थे। मतबअ रत्नप्रकाश में छपती थी। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

मौज-ए-नरबदा

अब्दुल करीम औज़ को उनके पत्र 'सदाक़त' में भोपाल के नवाब के विरुद्ध लिखे लेखों के कारण जब सन 1883 में भोपाल रियासत से निष्कासित कर दिया गया तो उन्होंने होशंगाबाद जाकर वहाँ से आठ मई 1884 से *'मौज-ए-नरबदा'* नामक पत्र का प्रकाशन शुरू कर दिया। सैयद मोहम्मद यूसुफ क़ैसर के अनुसार- ''उन्होंने इस अख़बार के पहले ही अंक में नवाब सिद्दीक़ हसन खां पर इतने गम्भीर आरोप लगाए कि उनके पास बैठने वाले लोग इस भय से काँप उठे कि अब इस व्यक्ति को न जाने कौन से दंड भुगतने पड़ेंगे।'' जबलपुर से प्रकाशित 'तबलीग़'[1] ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा- ''सेंट्रल प्राविन्स में उर्दू का यह पहला पर्चा है। कुछ अर्से तक इन अज़लाअ (जिलों) में इस मुअज़िज (प्रतिष्ठित) अख़बार की वह धूमधाम रही कि बायद औ शायद गलियों कूचों में इसकी पुकार थी। हिलाले ईद (ईद का चांद) की तरह इसको देखने के लिए आंखें इन्तज़ार करती थीं मगर चूँकि दुनिया की किसी बात को क़याम ओ बक़ा (स्थायित्व) नहीं और मुसलमानों में क़द्रदानी व रुतबाशनासी (मूल्यांकन करने एवं श्रेष्ठता की पहचान) ऐसी ही रह गई है जैसे आटे में नमक या उड़द पर सफेदी इसलिए यह क़ैफ़ियत देर पा न हुई (यह अवस्था अधिक समय तक नहीं रही) बल्कि चंद रोज़ के बाद हालत दिगर्दूं हो गई (बिगड़ गई) अब थोड़ी मुद्दत से फिर ज़ोश आया है और दम आना लगा है बज़ाहिर (ऊपरी तौर पर) आसार अच्छे मालूम होते हैं उम्मीद है कि साबिक़ (पिछले समय) से बढ़ कर तरक़्क़ी करेगा. मज़ामीन (लेखों) के लिहाज़ से इसका नाम मौज-ए-नरबदा रखना एक किस्म का ऐब और दाग़ लगाना है. बल्कि मौज-ए-समुन्दर या नील औ फ़रात (दो नदियों के नाम) कहा जाए तो बजा व ज़ेबा (ठीक एवं उपयुक्त) है।''

'मौज-ए-नरबदा' का परिशिष्ट जिसे 'मौज-ए-जराफ़त' के नाम से प्रकाशित किया जाता था, का नमूना सप्रे संग्रहालय में उपलब्ध है। प्रकाशन की दिनांक एक मई सन 1886 है। यह नमूना केवल तीन इंच लम्बा और पौने दो इंच चौड़ा है। इसके शीर्ष पर 786 का अंक छापा गया है। उसके नीचे 'ज़मीमा मौज-ए-नरबदा' अंकित है। परिशिष्ट का नाम 'मौज-ए-ज़राफ़त' नीचे प्रकाशन की तिथि सात सितम्बर 1887 के अंकन के पश्चात अंक क्र. 26 तथा जिल्द क्र. चार एवं इसके नीचे होशंगाबाद में मौज-ए-नरबदा प्रेस में छप कर प्रकाशित छपा हुआ है। दूसरे पृष्ठ पर बकरा ईद शीर्षक के अंतर्गत निम्नलिखित समाचार व्यंग्यात्मक शैली में छपा है- ''मिस्टर हैज़ा बहादुर ने तो इंसानी जानों का सफ़ाया बतलाया- अब बी बक़राईद खानम आईं तो वह जानवरों पर चहकीं, हज़ारों बकरों, मुन्डों, दुम्बों, गायों, ऊंटों के गलों पर छुरी फिरवा दी आज जिस मुसलमान को देखो वह क़साई की तरह कमर बांधे छुरी लिए हलाल करने को मौजूद- ए सुभानअल्ला।''

एक अन्य समाचार जिसका शीर्षक फिर बारिश है, दृष्टव्य है- ''इमसाल पीरे फ़लक (इस वर्ष-आकाश का पीर) हिन्दुस्तानियों की अबतर (ख़राब) हालत पर खूब अश्कबार (आँसू बहाता) रहा। चार महीने बराबर रोता रहा आँसू किसी रोज़ नहीं थमे। अगर यह न रोता तो इंसान

1. तबलीग, 3 जनवरी 1894

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोते। ख़रीफ़ पर आलमे शबाब है काश्तकारों की मेहनत का फल मिला। इस वक़्त जमींदारों को लगान बिला दिक़्क़त और जल्द वुसूल होगा। खैर तहसीलदारों की दुत्कार फटकार से तो बचेंगे।''

10 मई 1884 को शेर शायरी का मासिक *'तोहफा-ए-उश्शाक़'* लखनऊ से निकला। 28 पृष्ठ के इस मासिक के प्रकाशक जगोर के रईस मौलवी मासूम अली 'महशर' थे। 'तूती-ए-हिन्द' ने इस पत्रिका के बारे में लिखा- ''मौलवी मासूम अली 'महशर' के एहत्माम से माहवार शेरो सुखन का यह रिसाला, बख़त ख़ूब, तर्ज़ मरगूब शाया होता है। अगरचे जीनते सुखन व गुलदस्ता-ए-सुखन और पयामे यार, और क्या क्या खाके बला रिसाले शेरो सुखन के जारी हैं मगर हमारे नज़दीक लखनऊ के खानदानी शौअरा का जिस कदर टकसाली कलाम इस मजमुअे में है वह औरों में नहीं बल्कि तोहफहे आफ़ाक है।''[1]

लखनऊ से 15 मई 1884 को 32 पृष्ठ के *'इशराक'* का प्रकाशन किया गया था। यह पाक्षिक पत्रिका थी। प्रकाशक मिर्ज़ा मोहम्मद हादी 'रुस्वा' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। पाक्षिक *'एडवरटाइजर'* दिल्ली से एक जून 1884 को निकला। यह दिल्ली की 'एडवर्टाइजर्स कंपनी' का मुखपत्र था। लखनऊ से एक जून 1884 को मासिक *'निगम ओमायान'* का प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशक लाला देवीप्रसाद थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

बिजवाड़ा, ज़िला होशियारपुर से साप्ताहिक *'सफ़ीर-ए-पंजाब'* का प्रकाशन एक जून 1884 को हुआ था। चार पृष्ठों का यह साप्ताहिक हर बुधवार को निकलता था। इसके प्रकाशक सिंधी खाँ 'सैफी' थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। आठ पृष्ठों का साप्ताहिक *'हिदायत'* लाहौर से एक जून 1884 को प्रकाशित हुआ। शुक्रवार को गुलशन रशीदी प्रेस में छप कर जारी होता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। प्रकाशक मौलवी फ़ज़लउद्दीन 'वाइज़' एवं सम्पादक मौलवी गुलाम अली क़ुसूरी थे। पाक्षिक *'महर-ए-मुनव्वर'* का प्रकाशन 10 जून 1884 को बिहार के मुज़फ्फरपुर से किया गया था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये बारह आना था। प्रकाशक शेख मोहम्मद जान 'उरूज' तथा सम्पादक शेख मोहम्मद हसन 'ज़िया' थे। आठ पृष्ठ का था।

20 पृष्ठ का मासिक *'गुलदस्ता-ए-नाज'* 15 जून 1884 को मुम्बई से प्रकाशित किया गया था। शेर शायरी की इस मासिक पत्रिका की प्रकाशक बिल्क़ीसजहाँ बेगम 'नाज', सम्पादक नाज़िमा बेगम थे। वार्षिक शुल्क सवा रुपया था। मासिक पत्रिका *'नूर-ए-बसीरत'* कोलकाता से 15 जून 1884 को निकली। वार्षिक शुल्क तीन रुपये छह आना था। इसके प्रकाशक ज़फ़रयाब खाँ, सम्पादक गुलाम हज़रत थे। एक जुलाई 1884 को दिल्ली से मासिक पत्रिका *'कानून मुहायदे का रिसाला'* निकली। इसके प्रकाशक महताब राय वकील थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

आठ पृष्ठ का साप्ताहिक *'जरीदा-ए-वतन'* एक जुलाई 1884 को कोलकाता से प्रकाशित किया गया था। इसके प्रकाशक फ़रीदुल नबी थे। विटनरी डाक्टर मोहम्मद दीन ने *'तिब्बे-हैवानात'* नामक मासिक पत्रिका एक जुलाई 1884 को लाहौर से प्रकाशित की थी। पत्रिका में 24 पृष्ठ होते थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। इसमें पशुओं के रोग एवं उनकी चिकित्सा और निदान सम्बन्धी सामग्री प्रकाशित की जाती थी।

1. तूती-ए-हिन्द, 17 मई 1884

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

32 पृष्ठ की पाक्षिक पत्रिका *'तोहफा'* का प्रकाशन एक जुलाई 1884 को चेन्नै से किया गया था। प्रकाशक मौलवी ज़ैनुद्दीन थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। इस पत्रिका में कला, ज्ञान, विज्ञान तथा धार्मिक विषयों पर स्तरीय सामग्री प्रकाशित की जाती थी। इसके सम्पादक मीर मुनव्वर अली खां 'आली' थे। शिक्षा सम्बन्धी मासिक *'मुअल्लिम-ए-हिन्द'* का प्रकाशन एक जुलाई 1884 को लाहौर से किया गया था। पत्रिका 32 पृष्ठ की थी। मोहम्मद हुसैन 'अहसन' कलानूरी सम्पादक-प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क ढाई रुपये था। बरेली के कस्बा आँवला से मासिक *'चमन-ए-सुख़न'* प्रकाशित हुई। जुलाई 1884 में इसका प्रकाशन आरंभ हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलवी अली अमजद हुसैन थे। वार्षिक शुल्क एक रु. था।

महीने में तीन बार प्रकाशित होने वाली पत्रिका *'अख़बार-उल-निसाँ'* दिल्ली से एक अगस्त 1884 को निकली थी। प्रकाशक फारसी के शिक्षक मुंशी सैयद अहमद थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। महिलाओं की इस पत्रिका में घर गृहस्थी की बातें छपती थीं। आठ पृष्ठ के साप्ताहिक *'खालसा-पंजाब'* का प्रकाशन एक अगस्त 1884 को छावनी मुलतान से किया गया था। प्रकाशक मुंशी जगत नारायण तथा सम्पादक भाई फ़तहसिंह थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये छह आना था। शिक्षा सम्बन्धी मासिक *'रफ़ीक़-ए-दकन'* को हैदराबाद से एक अगस्त 1884 को निकला। वार्षिक शुल्क ढाई रुपये था। सम्पादक अज़ीज़उद्दीन फारसी थे।

दिनकर प्रकाश

लखनऊ से साप्ताहिक 'बुद्धिप्रकाश' के बन्द होने के बहुत बाद हिन्दी में एक पत्र और निकला जिसका नाम *'दिनकर प्रकाश'* था। वह सन 1885 में निकला। इस पत्र में समाज सुधार और राजनीतिक चेतना की भावना थी। 'दिनकर प्रकाश' की खबर का एक नमूना- ''पंडित विष्णुनारायण दत्त के विलायत से वारिस्टरी परीक्षा पास करके यहाँ आने पर उनकी बिरादरी में बड़ा गड़बड़ मचा है। इन दिनों खत्रियों की तरह कश्मीरियों में भी दो समुदाय हो रहे हैं। थोड़े से आदमी उनके मेल में हुए हैं बाकी लोग उन्हें बिरादरी में नहीं मिलाना चाहते हैं और उनके बिरादरी में शरीक होने में बाधा डाल रहे हैं। कहिए भारतवर्ष की दिन-प्रतिदिन यह दशा क्यों होती जाती? हमारे समाज में ऐसी ही बुद्धि के लोग इसके मूल कारण हैं। यह तो नहीं विचारते कि धन्य हैं विष्णुनारायणजी के साहस और विद्योत्साह को कि आज तक किसी कश्मीरी भाई को यह साहस नहीं हुआ था कि वह ऐसा करता। क्या यह जात के लिए एक गौरव और प्रतिष्ठा का कारण नहीं हुआ? पर हाय इस देश के बैरियों की बुद्धि में हम अपनी बुद्धि क्यों कर डाल दें कि उन्हें अपना भला बुरा सूझने लगे। यदि विलायत जाकर विद्याध्ययन का रास्ता बन्द किया जा सकता है तो बस अब वारिस्टर, सिविल सरजन, सिविल सर्विस इत्यादि जो बड़े-बड़े काम हैं उनकी आशा छोड़िए जो आपकी किस्मत में 20 रु., 25 रु., 50 रु. की गुलामी बदी है वह कीजिए।''

'हदीक़तुल अख़बार' का प्रकाशन टोंक से छह सितम्बर 1884 को हुआ था। यह साप्ताहिक पत्र था। आठ पृष्ठ के इस पत्र के प्रकाशक ग़ालिब खां थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये था। 20 पृष्ठ के शेर शायरी के मासिक *'करिश्मा-ए-दिलबर'* का प्रकाशन 10 सितम्बर 1884 को खैराबाद से किया गया था। मतबा गुलज़ारी में छपा करता था। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। प्रकाशक मुंशी इफ़्तिख़ार हुसैन 'मुज़्तर' थे। साप्ताहिक *'अख़बार चुनार'* मिर्ज़ापुर जिले के चुनार से अक्टूबर 1884 में प्रकाशित हुआ। प्रत्येक मंगलवार को निकलता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक रज्जब अली खाँ तथा सम्पादक मोहम्मद अली खाँ 'सईदी' लखनवी थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये एक आना था। साप्ताहिक *'ख़ैरख़्वाह-ए-कश्मीर'* का प्रकाशन अक्टूबर 1884 में लाहौर से किया गया था। आठ पृष्ठ का पत्र हर गुरुवार को निकलता था। प्रकाशक पंडित सालिगराम कौल थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था।

आठ पृष्ठ का *'नसीम-ए-सुबह'* लाहौर से एक अक्टूबर 1884 को प्रकाशित हुआ। प्रकाशक मुंशी फतह मोहम्मद एवं सम्पादक मुंशी सैफुल हक़ 'अदीब' थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। यह दैनिक पत्र था। दैनिक *'रोज़नामचा-ए-आलम'* का प्रकाशन एक अक्टूबर 1884 को इलाहाबाद से हुआ था। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलवी शेख रियाज़द्दीन अहमद थे। एक प्रति का मूल्य तीन पाई था।

साप्ताहिक *'मुअल्लिम दविस्तान-ए-कटरा'* का प्रकाशन पाँच अक्टूबर 1884 को कटरा (जिला इलाहाबाद) से किया गया था। इतवार को निकलता था। प्रकाशक शाह नबी अशरफ़ थे। वार्षिक शुल्क एक रुपये दस आना था। यह साप्ताहिक छोटे बच्चों को गणित, भूगोल तथा वाक्य विन्यास का ज्ञान कराने के लिए निकाला गया था। मासिक *'चमनिस्तान-ए-सुख़न'* 25 अक्टूबर 1884 को कानपुर से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक हाफ़िज अब्दुल हक़ 'हक़ीक़ी' थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। मासिक *'इन्तिख़ाब'* नवम्बर 1884 में लखनऊ से प्रकाशित किया गया था। सम्पादक-प्रकाशक मुंशी सख़ावत अली 'मौज' थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था।

एक नवम्बर 1884 को हैदराबाद से शिक्षा विषयक मासिक *'ज़ख़ीरा-ए-तालीम'* का प्रकाशन हुआ था। यह 48 पृष्ठ की पत्रिका थी। सम्पादक-प्रकाशक मौलवी अज़ीज़ुद्दीन थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। साप्ताहिक *'ताजुल अख़बार'* का प्रकाशन एक नवम्बर 1884 को रावलपिंडी से किया गया था। आठ पृष्ठ का यह पत्र हर बुधवार को निकलता था। प्रकाशक बाबू नारायण दास तथा सम्पादक मुंशी रामसहाय 'खलीक़' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये दस आना था।

गुजरांवाला से 15 नवम्बर 1884 को *'पंजाब लोकल सेल्फ गजट'* निकला। इसके सम्पादक-प्रकाशक मिर्ज़ा अनवर अली थे। वार्षिक शुल्क चौदह आना था। इसमें पंजाब की म्युनिस्पिल कमेटियों की गतिविधियाँ तथा रिपोर्ट छापी जाती थीं। लाहौर से साप्ताहिक *'आईना-ए-अख़लाक़'* का प्रकाशन एक दिसम्बर सन 1884 को किया गया था। हर बुधवार को आठ पृष्ठ का निकलता था। अब्दुल अज़ीज़ सम्पादक, प्रकाशक अब्दुल रहमान तथा प्रबन्धक मोहम्मद दीन थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। नवाबगंज बाराबंकी से साप्ताहिक *'मुख़्तार-उल-अख़बार'* का प्रकाशन एक दिसम्बर सन 1884 को हुआ था। हर इतवार को 20 पृष्ठ का छपता था। प्रकाशक मुंशी अहसान अली 'फ़सीह' तथा सम्पादक मोहम्मद यूसुफ़ थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

आनन्द कादम्बिनी

'आनन्द कादम्बिनी' हिन्दी की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका थी। सन 1884 में बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने इसका प्रकाशन-सम्पादन किया। विद्या, विज्ञान, साहित्य, राजकाज, समाज, धर्म, प्रजा और देश दशा पर लेख आदि का प्रकाशन किया जाता था। यह पत्रिका बनारस लाइट प्रेस से मुद्रित और मिर्ज़ापुर से प्रकाशित की जाती थी। शीर्षक 'आनन्द कादम्बिनी' अँगरेजी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

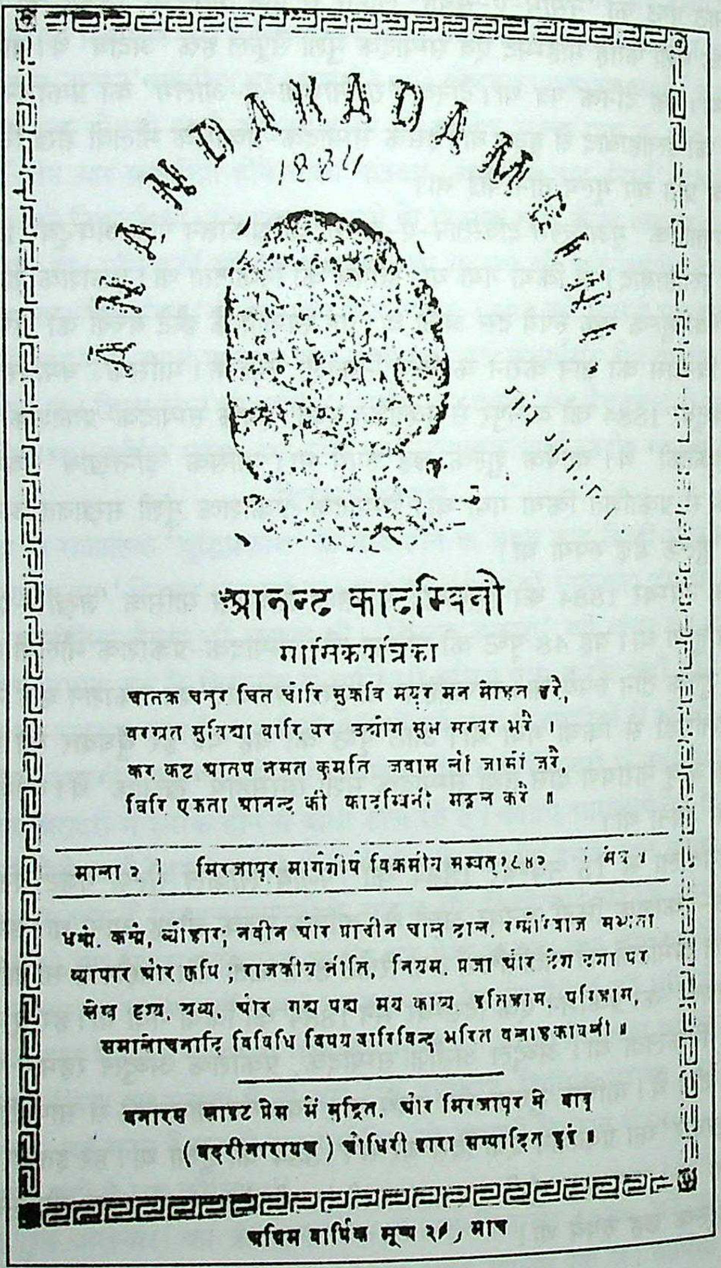
ANANDAKADAMBINI

1884

आनन्द कादम्बिनी

मासिकपत्रिका

चातक चतुर चित चोरि सुकवि मयूर मन मोहन करै,
बरसत सुरुचिया बारि वर उद्योग सुभ सस्य भरै।
कर कट आतप नसत कुमति जवास लों जासों जरै,
चिरि एकता आनन्द की कादम्बिनी मङ्गल करै॥

माला २] मिरजापुर मार्गशीर्ष विक्रमीय सम्वत् १९४२ [मेघ १

धर्म, कर्म, व्यौहार; नवीन और प्राचीन चाल ढाल, रस्मोरिवाज सभ्यता
व्यापार और कृषि; राजकीय नीति, नियम, प्रजा और देश दशा पर
लेख दृश्य, श्रव्य, और गद्य पद्य मय काव्य, इतिहास, परिहास,
समालोचनादि विविधि विषय वारिविन्द भरित यथावकाशवर्षी॥

बनारस लाइट प्रेस में मुद्रित, और मिरजापुर से बाबू
(बदरीनारायण) चौधरी द्वारा सम्पादित हुई॥

अग्रिम वार्षिक मूल्य २), मात्र

आनन्द कादम्बिनी, मिर्जापुर, सन 1884

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखा जाता था। प्रारम्भिक अंकों में शीर्षक के साथ पहले पंख फैलाकर नाचते हुए मयूर को मुद्रित किया जाता था। बाद के अंकों में नाचते मयूर के साथ आजू बाजू में दो मयूर और जोड़ दिए गए।

वर्ष दो अंक पाँच में कवर पृष्ठ पर सम्पादक की ओर से निवेदन छपा- ''यद्यपि कादम्बिनी की स्वाभाविक लहर बहर सब विदित और उसकी वृष्टि भागों से होनी थी सबी मानते, और कादम्बिनी नाम का यह प्रभाव भी प्राय: बहुत असम्भव नहीं पर तौ भी विलम्ब की (जिसका विशेष कारण 'कलिकाल तर्पण' हुआ अर्थात बहुतेरी ऐतिहासिक शङ्काओं के कारण अनेक ग्रंथों के अवलोकन में कुछ समय तो व्यय हुआ और कुछ सांसारिक झमेलों में यद्यपि पितृ पक्ष का अवसर बीत ही गया पर पितर प्रलाप की सम्बन्ध त्रुटि तो न हो। तर्पण अर्पण के विचार से विचारा लाचार पञ्चम मेघ रुका रहा) क्षमा प्रार्थना के उपरान्त विनय यह। पिछले मेघ भी यथा शक्य शीघ्र ही प्रेषित होंगे और यह मेघ केवल उन्हीं रसिकों की सेवा में जाता है जिनके स्वीकार पत्र आए, वा जो जाने हुए मित्र वर्ग हैं, परन्तु अब उन्हें भी स्वीकार पत्र भेजना उचित है। जिस्में उनसे भी न माफी माँगनी हो। क्योंकि बिना आदर के जाना कादम्बिनी अपनी मानहानि मानती है।''

'आनन्द कादम्बिनी' कभी 16 पृष्ठ और कभी 20 पृष्ठ की प्रकाशित हुआ करती थी। इसका आकार 23.5 गुणित 15 से.मी. था। अच्छे लेखकों को यह पत्रिका नि:शुल्क भेजी जाती थी। आदान-प्रदान में जो पत्र प्राप्त होते थे, उनकी प्राप्ति स्वीकार की जाती थी और उनमें से कुछ की समीक्षा भी छपती थी। कालाकांकर के हिन्दोस्थान के बारे में (माला दो मेघ पाँच संवत (1885) लिखा- ''नित्य आता है, लेख भी अच्छा है। क्योंकि ऐसे पत्र में बहुधा राजनीतिक विषय की विशेष आवश्यकता रहती है सो इसे यह खूब ही जानता है। और भी जो धर्म्म समाचारपत्र में होने चाहिए यह उनसे युक्त है......''

प्रथम पृष्ठ पर सम्पादकीय सम्मति समीर शीर्षक से सम्पादक समीक्षात्मक टिप्पणी करते थे। टिप्पणी बेबाक और स्पष्ट होती थी। 1906 के अंक (माला 6 मेघ 7) में सात टिप्पणियाँ हैं- 1.हमारे भविष्य प्रान्तिक प्रभु, 2.रत्न त्रय (तीन रत्न) हानि, 3.तिलक की जुबली, 4.सर बाम फील्ड फुलर का पद त्याग, 5.हमारा हाईकोर्ट, 6.श्रीमान गोखले का पुनरागमन, 7.विदेशीय शर्करा वा विलायती शक्कर। अंतिम टीप पाँच पृष्ठों में लिखी गई जिसमें भारतीय चीनी उद्योग को अँगरेजों ने कैसे बर्बाद कर दिया, यह सविस्तार बताया गया।

पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर स्थानीय समाचार दिए जाते थे जो गंगा की बाढ़, नवरात्रि का मेला, रामलीला के कार्यक्रम, पहलवानों के दंगल जैसे विविध विषयों से सम्बन्धित होते थे। आज के समान दुर्घटनाओं, झगड़े, चोरी, डकैती आदि के सनसनीखेज समाचार नहीं रहते थे।

सम्पादक का दृष्टिकोण सकारात्मक और समझाइश भरा होता था। 'सरस्वती' के सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदी और 'भारतमित्र' के सम्पादक बाबू बालमुकुन्द गुप्त के बीच जब विवाद उठ खड़ा हुआ, तब 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक ने लिखा- ''द्विवेदीजी का दोष यदि भारतेन्दु के दोषों को विशेष कर दूसरी बार का दिखलाना माना जाए, तो भारतमित्र की उपहासात्मक समालोचना शैली भी दूषणीय कही जायगी- यों ही उभय पक्ष का अप्रत्यक्ष रूप से खंडन-मंडन करना भी न्यून अनुचित न था।''[1]

सन 1885 में गदाधर सिंह ने 'आनन्द कादम्बिनी' में बंग विजेता के अनुवाद की आलोचना

1. आनन्द कादम्बिनी, माला 6 मेघ 5, 1906, पृष्ठ 87

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिखी। सन 1886 में बालकृष्ण भट्ट ने श्री निवासदास के संयोगिता स्वयंवर नाटक की समालोचना प्रकाशित की। उसी वर्ष प्रेमघन ने 'आनंद कार्दबिनी' में इक्कीस पृष्ठों में उसकी विस्तृत समालोचना की।

चेन्नै से सन 1884 में *'इत्तेफ़ाक़'* का प्रकाशन हुआ। पहले यह अर्द्ध साप्ताहिक था, सन 1885 से इसे दैनिक का रूप दिया गया। अंजुमन इस्लामिया प्रेस में छपने वाले 'इत्तेफ़ाक़' के सम्पादक मोहम्मद उबेदुल मुल्क 'मलिक' थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था।

सन 1884 में *'कविकुल कंज दिवाकर'* का प्रकाशन-सम्पादन रामनाथ शुक्ल ने किया। यह काव्य पर केन्द्रित मासिक पत्रिका थी। सन 1884 में फतहपुर से जातीय पत्रिका *'कायस्थ व्यवहार'* प्रकाशित हुई। सन 1884 में साप्ताहिक *'केरल संचारी'* का प्रकाशन सी.पी. गोविन्दन नायर के सम्पादकत्व में कालीकट से हुआ था। वे ही इसके प्रकाशक थे। यह मलयालम भाषा की पत्रिका थी।

केरल पत्रिका

सन 1884 में *'केरल पत्रिका'* कालीकट से प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक-प्रकाशक चेकलातु कुंजिरामा मेनन थे। वे शासन के कट्टर आलोचक थे। सम्पादक ने इस पत्र में सरल तथा सबकी समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया था। मलयालम पत्रकारिता में 'केरल पत्रिका' का महत्वपूर्ण स्थान है। यह राजनीति प्रधान पत्रिका थी जो स्वतंत्रता के विचार और आन्दोलन का समर्थन करती थी। परवर्ती अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने इसी मार्ग का अनुसरण किया।

इलाहाबाद से सन 1884 में मासिक *'गौर कायस्थ'* का प्रकाशन किया गया था। इस पत्रिका का वितरण केवल कायस्थ समाज के सदस्यों तक सीमित था। शकितनाथ झा के सम्पादन में *'चम्पारन हितकारी'* सन 1884 में निकला। इसी वर्ष बेतिया से बलराम मिश्र के सम्पादन में *'चम्पारन चन्द्रिका'* प्रकाशित हुई। सन 1884 में काशी से *'धर्म प्रचारक'* का प्रकाशन शुरू हुआ। राधाकृष्ण दास इसके सम्पादक तथा कृष्णप्रसन्न सेन संचालक थे। धर्म प्रचारक हिन्दी और बंगला में छपता था।

सन 1884 में धोंडोपंत देव ने *'नागपुर समाचार'* पत्र शुरू किया। सन 1890 में यह पत्र द्विभाषी (अँगरेजी-मराठी) हुआ। उसका नाम बदलकर 'नागपुर एण्ड बरार टाइम्स' किया गया। पत्र का मराठी विभाग गोपालराव रंगनाथ संभालते थे। अँगरेजी विभाग जे. बेली देखते थे। वर्ष 1884 में *'प्रकाशिका'* का प्रकाशन हुआ। विजयवाड़ा से प्रकाशित इस तेलुगु पाक्षिक को गुंडुगर्ति वेंकटरमनय्या ने निकाला था। बालेश्वर से उड़िया मासिक पत्रिका *'तारका'* का प्रकाशन हुआ।

सन 1884 में बडौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड़ ने समाचारपत्र के प्रकाशन की जिम्मेदारी दामोदर सदाशिव यंदे को सौंपी, जिन्होंने आवटे के सहयोग से *'बडौदा वत्सल'* पत्र निकाला। यह बडौदा राज्य का पहला समाचारपत्र था। 'बडौदा वत्सल' में मराठी के अलावा गुजराती और अँगरेजी के मजमून छपा करते थे। यह पत्र बीस साल तक प्रकाशित हुआ। 'बड़ौदा वत्सल' के बारे में 'ग्वालियर गज़ट'[1] में खबर है-''एडीटर को सज़ा-बडौदे में एक अखबार 'बडौदा वत्सल' के नाम से शाया होता है। इस अखबार ने पिछले दिनों रियासत हाजा के

1. ग्वालियर गजट, 15 फरवरी 1891

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलिट्री डिपार्टमेन्ट के आला अफसर की निसबत एक लायबिल मुश्तहार कीया था इसकी पादाश में अखबार के एडीटर को दो हजार रुपये जुरमाना और एक माह की क़ैद की सज़ा दी गई। एडीटर ने अपील कीया है। इसकी समाअत के लीये 19 फरवरी मुक़र्रर हुई है। बुह दो हजार दो सौ रुपये की ज़मानत पर रिहा है।''

सन 1884 में कुन्ही कृष्ण मेनन के सम्पादकत्व में कालीकट से साप्ताहिक *'मनोरमा'* का प्रकाशन किया गया। केरल महाजन सभा के मुखपत्र के रूप में इसे निकाला गया था। बाद में मेनन ने इसे अपने स्वामित्व में ले लिया।

दिल्ली से सन 1884 में *'मुफ़ीद-ए-हिन्द'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक तथा प्रकाशक अमीर सिंह थे। इसका वार्षिक शुल्क तीन रुपये बारह आना रखा गया। यह आठ पृष्ठ का होता था। हर पृष्ठ पर दो कालम रहते थे। समाचारों के साथ सम्पादक की राय भी दर्ज होती थी। एक नमूना- ''महाराजा दिलीप सिंह-हम इस खबर को आईना अख़लाक़ में देखकर बहुत हैरानो परेशान होते हैं के-मशहूर है के गवर्न्मेन्ट ने महाराजा दिलीप सिंह से यह शर्त बाँधी थी के अगर उनकी मौजूदगी हिन्दुस्तान में या हिन्दुस्तान के किसी भी हिस्से में भी किसी क़िस्म का फ़साद बर्पा हुआ तो गवर्न्मेन्ट महाराज साहब से क़ैदियों सा बर्ताव करेगी। हम नहीं कह सकते के यह खबर कहाँ तक सही है और पब्लिक के दिलों में कहाँ तक अपनी सच्चाई का असर पैदा करेगी क्योंकि अव्वल तो महाराजा साहब का आना ही मुहाल है और अगर आए भी तो बतौर नज़रबंद के रहेंगे या कोई खास निगरानी होगी और अगर यह भी न सही तो महाराजा साहब में इस क़दर कुव्वत व ताक़त कहाँ के वह फ़साद कर सकें या करने का इरादा करें यह सिर्फ ख़्याल ही ख़्याल है जो हम देसी एडीटरों के क़लम से ज़ाहिर होकर पब्लिक के दिलों को गवर्न्मेन्ट से बदज़न करता है। अगर महाराजा साहब की आयद आमद की आठ दस बरस तक यही गर्म बाज़ारी रही तो थोड़े ही रोज़ में रूस की आमद का सा मज़ा आना लगेगा।''

वर्ष 1884 में तेलुगु पाक्षिक *'राजहंस'* का प्रकाशन चेन्नै से हुआ। अंजुमन हिमायत-उल-इस्लाम ने लाहौर से सन 1884 में मासिक पत्रिका *'रिसाला हिमायत-उल-इस्लाम'* निकाली। इसमें अंजुमन की बैठकों की कार्यवाही तथा आय और व्यय का ब्यौरा छापा जाता था। ईसाइयों द्वारा प्रकट की गई आपत्तियों के उत्तर तथा मुसलमानों को उत्थान के लिए प्रेरित करने वाले लेख आदि छपते थे। 16 पृष्ठ का साप्ताहिक *'वजीर-ए-हिन्द'* सियालकोट से सन 1884 में निकला। हर रविवार को प्रकाशित होने वाले इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक मिर्ज़ा मोहिद जालंधरी थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था।

वैदिक धर्म की महत्ता के प्रतिपादन तथा वेदों के अनुशीलन पर केन्द्रित साप्ताहिक 'वेद प्रकाश' कानपुर से सन 1884 में राधाकृष्ण गुप्त के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। पश्चात सन 1897 में मेरठ से तुलसीराम स्वामी ने 'वेदप्रकाश' मासिक प्रारम्भ किया। इसमें उन्होंने सामवेद का भाष्य धारावाहिक प्रकाशित किया था। 'वेदप्रकाश' के कुल 180 अंक निकले। तदनन्तर दिल्ली से यह पत्र जगदीशचन्द्र विद्यार्थी के सम्पादन में निकला। सन 1884 में आरा से *'सफ़र-ए-सफ़ीर'* का प्रकाशन हुआ। मासिक पत्रिका *'सरस्वती विलास'* सन 1884 में जबलपुर से प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक एन. नारायण स्वामी थे। कुछ समय बाद यह नरसिंहपुर से निकलने लगी। मास्टर नन्हेलाल सम्पादक थे। वार्षिक मूल्य सवा दो रुपये था। प्रसार सँख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

200 थी। 'सरस्वती विलास' कुछ समय तक नागपुर से भी प्रकाशित हुई। सन 1884 में तेलुगु पाक्षिक '*सुजन मनोरंजनी*' निकला। जमगय्यपेट से प्रकाशित इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक गुड्लवल्लेति पेरराजू थे।

'*संस्कृत चन्द्रिका*' सन 1884 में कोल्हापुर से प्रकाशित हुई। बाद में मुम्बई से निकलने लगी। 'सरस्वती'[1] में 'संस्कृत चन्द्रिका' पर यह टिप्पणी प्रकाशित हुई थी - ''खुशी की बात है, वर्ष डेढ़ वर्ष बन्द रहकर 'संस्कृत चन्द्रिका' अब फिर निकलने लगी है। अब उसने अपना स्थान बदल दिया है। पहले वह कोल्हापुर से निकलती थी। अब वर्तमान एजन्सी, गिरगांव, बंबई से निकलती है। बंबई में छपाई का खर्च अधिक पड़ता है। इससे इस पत्रिका का मूल्य डेढ़ रुपये से दो रुपया कर दिया गया है। पन्द्रहवें वर्ष का पहला अंक जो बंबई से निकला है उसमें संस्कृत के महाकवि महेशचन्द्र तर्कचूड़ामणि का चित्र भी है। इस पत्रिका में बड़े ही उपयोगी और मनोहर लेख रहते हैं। संस्कृत इसकी ऐसी अच्छी होती है जिसकी प्रशंसा नहीं हो सकती। संस्कृत जानने वालों को इसे ज़रूर लेना चाहिए।''

सन 1884 में 12 पृष्ठ के साप्ताहिक '*शफ़ीक़-ए-हिन्द*' का प्रकाशन लाहौर से किया गया था। इसके प्रकाशक मुंशी हरबख्श तथा सम्पादक मौलवी सैफ़-उल-हक़ 'अदीब' थे। यह पत्र विक्टोरिया प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क दस रुपये था। इसके परिशिष्ट के रूप में '*शाम-ए-विसाल*' का प्रकाशन आरम्भ किया गया था, जो चार पृष्ठ का होता था।

ब्रह्मसमाज की ओर से नवम्बर 1884 में उड़िया मासिक '*नवविधान*' प्रकाशित किया गया। जनवरी 1884 में कोलकाता से '*जर्नल आफ इंडियन आर्ट*' नामक तिमाही पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। भारतीय कला के विकास तथा भारतीय शिल्प और शिल्पियों के व्यापार को बढ़ावा देना इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य था। इसका आकार 45 गुणित 25 से.मी. था। कीमत एक रुपये थी। इसका प्रकाशन सन 1916 तक हुआ।

1885

साप्ताहिक '*आईना-ए-तिजारत*' का प्रकाशन एक जनवरी 1885 को आगरा से किया गया था। प्रकाशक मिर्ज़ा अशफ़ाक हुसैन नज़्म तथा सम्पादक सैयद लियाक़त अली थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था। लाहौर से जनवरी 1885 में 12 पृष्ठ के मासिक '*इंजीनियर गाइड*' का प्रकाशन हुआ। सम्पादक-प्रकाशक मोहम्मद करीम बख़्श थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। लखनऊ से 16 पृष्ठ का साप्ताहिक '*क़यामत*' एक जनवरी 1885 को निकला। प्रकाशक ख़्वाजा मोहम्मद वज़ीर तथा सम्पादक ख़्वाजा आशिक़ अली थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। मतबअ गुलज़ार मोहम्मदी में छपता था। 12 पृष्ठ का '*जादू*' शेरो शायरी का मासिक था। दिल्ली से जनवरी 1885 में निकला था। मुर्तुजाई प्रेस में छपता था। प्रकाशक रुकनउद्दीन 'जादू' तथा सम्पादक मुंशी सैयद बदीउज़्ज़माँ 'शैवन' थे। साप्ताहिक '*दकन पंच*' एक जनवरी 1885 को चेन्नै से प्रकाशित हुआ। प्रकाशक मिर्ज़ा क़ासिम बेग तथा सम्पादक मुहीउद्दीन हुसैन 'तस्नीम' थे। एक जनवरी 1885 से साप्ताहिक '*नेटिव क्रिश्चियन पेपर*' का प्रकाशन भंडारा से हुआ। यह आठ पृष्ठ का था। सम्पादक सफ़दर अली ईसाई थे। उर्दू, फ़ारसी तथा रोमन में मजमून छापे जाते थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था।

साप्ताहिक '*रहनुमा*' एक जनवरी 1885 को लखनऊ से निकला। इसके सम्पादक-

---

1. सरस्वती, नवम्बर 1902

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक मुंशी मोहम्मद अहमद 'क़मर' थे। वार्षिक शुल्क 12 रुपये था। एक जनवरी 1885 से मासिक *'वज़ाइफ-ए-खुल्द'* मैसूर से प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक अब्दुल्ला खुशहाल बिन अहमद सेठ तथा सम्पादक अली मोहम्मद खां बेदार थे। मतबअ नबवी में छपता था। बारह पृष्ठों के मासिक *'सईद-उल-अख़बार'* का प्रकाशन बदायूँ से एक जनवरी 1885 को किया गया था। प्रकाशक अफ़ज़ल अली 'जू' तथा सम्पादक मोहम्मद जाफ़र 'नज़्म' थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। अफ़जल-उल मतबअ में छपता था। झेलम से साप्ताहिक *'सिराज-उल-अख़बार'* का प्रकाशन पाँच जनवरी 1885 को हुआ। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक मौलवी फ़क़ीर मोहम्मद थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। प्रत्येक सोमवार को निकलता था।

सात जनवरी 1885 को पटना से साप्ताहिक *'शेरे-बिहार'* का प्रकाशन हुआ। 12 पृष्ठ के साप्ताहिक *'ग़मख़्वार-ए-हिन्द'* का प्रकाशन सात जनवरी 1885 को किया गया था। शनिवार को छपता था। पंडित महाराज किशन 'ग़मख्वार' के प्रकाशक तथा अलीमुद्दीन सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। साप्ताहिक *'आसिफ़ी'* का प्रकाशन हैदराबाद से नौ जनवरी 1885 को किया गया था। हर शुक्रवार को निकाला जाता था। वार्षिक शुल्क सात रुपये था। इसके प्रकाशक सैयद सुल्तान 'आक़िल' देहलवी तथा सम्पादक सैयद अलताफ़ हुसैन 'क़ाबिल' थे। यह बारह पृष्ठ का रहता था।

लाहौर से पाक्षिक *'सैल्फ़ गवर्मेन्ट'* का प्रकाशन 15 जनवरी 1885 को किया गया था। प्रकाशक सैयद नादिर अली खां 'सैफ़ी' तथा सम्पादक मुंशी हरसुख राय थे। मतबअ सैफ़ी में छपता था। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। शेरो शायरी के *'रियाज़-ए-सुख़न'* का प्रकाशन 20 जनवरी 1885 को रामपुर से हुआ। प्रकाशक-सम्पादक अहमद अली खां 'शौक़' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। हर महीने की 20 तारीख को मतबअ नैयर-ए-आज़म में छपता था। *'रिपन गज़ट'* का प्रकाशन बाँसबरेली से 21 जनवरी 1885 को किया गया था। यह उर्दू, हिन्दी तथा अँगरेजी में छपता था। 16 पृष्ठ होते थे। प्रकाशक मुंशी बिशनलाल एम.ए. तथा सम्पादक राय किशनलाल थे। आर्य दर्पण प्रेस शाहजहाँपुर में छपता था। 30 जनवरी 1885 को लाहौर से चिकित्सा सम्बन्धी मासिक पत्रिका *'तबीब'* निकली। 20 पृष्ठ होते थे। सम्पादक हाफ़िज फ़ख़रुद्दीन थे। विक्टोरिया प्रेस में छपती थी। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। इसमें चिकित्सा सम्बन्धी उपयोगी लेख, डाक्टर तथा हकीमों के आजमाए हुए नुस्खे प्रकाशित किए जाते थे।

मुम्बई से प्रकाशित मासिक पत्रिका *'इण्डियन एण्टीक्वेरी'* में पुरातत्व सम्बन्धी जानकारियाँ प्रकाशित होती थी। इसके सम्पादक वर्गीज थे। उनके बाद जे.एफ. फ्लीट और कैप्टन आर.सी. टेम्पल सम्पादक हुए। भारतीय पुरातत्ववेत्ताओं की खोज और ज्ञान को यह पत्रिका महत्व देती थी। जनवरी 1885 के अंक में उसने कलकत्ता के डा. राजेन्द्रलाल मित्रा के शोध कार्य पर दोषारोपण तो प्रकाशित किया मगर इतनी हिम्मत नहीं की कि उनके द्वारा भेजा गया खंडन छाप दें। अतः विवश होकर उन्हें वस्तुस्थिति 'टाइम्स आफ इण्डिया' मुम्बई और 'स्टेट्समेन' कोलकाता में छपवानी पड़ी।

गुड़गांव जिले के फ़र्रुखनगर से पाक्षिक *'एचीसन गजट'* एक फरवरी 1885 को निकला। चौधरी जियालाल सरावगी इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। प्रत्येक दसवें दिन प्रकाशित होने वाले *'दरबार-ए-अकबरी'* का प्रकाशन दिल्ली से एक फरवरी 1885 को किया गया था। आठ पृष्ठ का था। अफ़जल-उल-मतबअ में छपता था। वार्षिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुल्क चार रुपये था। 16 पृष्ठ के शेरो शायरी के मासिक *'दामन-ए-गुलचीं'* को लखनऊ से एक फरवरी 1885 को प्रकाशित किया गया था। इसके संरक्षक 'अमीर' मीनाई थे। प्रकाशक मोहम्मद अहमद 'क़मर' और सम्पादक वाजिद अली 'बिस्मिल' थे। उर्दू प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। कुछ समय बाद बंद हो गया। सन 1898 में इसका पुनर्प्रकाशन लतीफ़ अहमद 'अख़्तर' मीनाई ने किया।

शोलापुर समाचार

3 फरवरी 1885 को नरसप्पा आवण्णा ने शोलापुर से साप्ताहिक *'शोलापुर समाचार'* का प्रकाशन किया। सन 1914 में विट्ठलराव ने सम्पादन-प्रकाशन का दायित्व संभाला। सन 1930 में यह दैनिक पत्र हो गया। सन 1935 में 'शोलापुर समाचार' ने पचास वर्ष पूरे किए। सन 1936 में बाबूराव जक्कल सम्पादक हुए। सन 1949 में पत्र ने टेलीप्रिण्टर से समाचार प्राप्त करने की व्यवस्था की। यह अखबार 98 वर्ष तक प्रकाशित हुआ। इसकी नीति में आक्रामकता नहीं थी। बल्कि संयमपूर्वक सबको साथ लेकर चलने की कोशिश करता था।

अल-पंच

साप्ताहिक *'अल-पंच'* का प्रकाशन मुंशी मोहम्मद आज़म ने पटना से पाँच फरवरी 1885 को किया था। पश्चात सैयद रहीमउद्दीन प्रकाशक हुए। हास्य-विनोद के इस साप्ताहिक में समाचारों को विनोदपूर्ण शैली में छापा जाता था। इसकी रुचि और रुझान की बानगी 'अल-पंच' की इस सूचना से मिल जाती है-"अख्खाह! मिस्टर अलपंच हैं क्या आपने अभी तक नहीं देखा, जरूर देखिए-अख़बार नहीं चलता हुआ जादू, ज़राफत का पुतला (हास्य-विनोद की मूर्ति) एक जुम्ला (वाक्य) पढ़ो और हँसते-हँसते बेखुद (बेहाल) न हो जाओ तो हमारा ज़िम्मा। एक खबर देखो और पेट न पकड़ो तो हम गुन्हगार, फिर यही नहीं के हा-हा-है-है के सिवा काम की बातें नहीं- पोलिटिकल, सोशल, मारल आर्टिकल से मालामाल, मुल्की तमद्दुनी, अख़लाकी (देश की सांस्कृतिक तथा नैतिक) मज़ामीन (लेखों) पर ज़बरदस्त चुटकियाँ लेने में गुरुघंटाल- इस पर ज़बान की सफ़ाई, मुहावरात की बंदिश (शब्द विन्यास तथा मुहावरों का उचित प्रयोग) का क्या कहना पढ़िए और लोटपोट हो जाइए। इन सब खूबियों पर क़ीमत पूछिए तो कुछ नहीं सिर्फ़ सफ़ेद सफ़ेद छह चेहरेशाही इरसाल कीजिए (केवल छह चांदी के सिक्के अर्थात छह रुपये भेजिए) और साल भर तक मज़े लूटिए- फ़्री परचा (एक प्रति) दो आने।"

सात फरवरी 1885 को साप्ताहिक *'खुर्शीद-ए-आफ़ाक़'* पीलीभीत से निकला। बुधवार को प्रकाशित होता था। सम्पादक-प्रकाशक हकीम मज़हर एहसन खां 'एहसन' थे। मतबअ मज़हरी में छपता था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। साप्ताहिक *'कटरा पंच'* का प्रकाशन इलाहाबाद से 14 फरवरी 1885 को हुआ। प्रत्येक शनिवार को निकलता था। सम्पादक-प्रकाशक हाफ़िज मोहम्मद इस्माइल थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। चार पृष्ठ का *'अमजद-उल अख़बार'* बदायूँ से 15 फरवरी 1885 को प्रकाशित हुआ। हर बुधवार को निकलता था। प्रकाशक मौलवी अमजद हुसैन, प्रबन्धक अली मोहम्मद खां तथा सम्पादक मौलवी अरशद हुसैन थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये दस आना था। 15 फरवरी 1885 को पाक्षिक *'गुलबन सुख़न'* का प्रकाशन मेरठ छावनी से किया गया था। इसके प्रकाशक बरकत अली 'अन्दाज़' तथा सम्पादक चिराग़उद्दीन 'लायक़' थे। मतबअ शगूफ़ा फ़ैज में छपता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक *'ज़रीफ़-ए-हिन्द'* दिल्ली से एक मार्च 1885 को प्रकाशित हुआ। शुक्रवार को निकलता था। प्रकाशक एवं सम्पादक अफ़ज़ल खां देहलवी थे। अफ़ज़ल-उल मतबअ में छपता था। वार्षिक शुल्क सवा रुपया था। आठ पृष्ठ होते थे। 32 पृष्ठ का मासिक *'मेडिकल रिफार्मर'* आगरा से एक मार्च 1885 को प्रकाशित किया गया था। सैयद औलाद अली इसके प्रकाशक-सम्पादक थे। मतबअ मुमताज़िया में छपवाया जाता था। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था।

एक मार्च 1885 से पाक्षिक *'वायस-आफ-इस्लाम'* का प्रकाशन कानपुर से किया गया था। अँगरेजी और उर्दू में निकलता था। हाफ़िज़ अब्दुल हक़ सौदागर प्रकाशक-सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। साप्ताहिक *'सहीफ़ा-ए-क़ुदुसी'* एक मार्च 1885 को दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। 16 पृष्ठ का यह पत्र हर गुरुवार को प्रकाशित किया जाता था। मौलवी अब्दुल क़ुद्दूस प्रकाशक तथा मुंशी गुलाम हुसैन सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क नौ रुपये था। साप्ताहिक *'आफ़ताब-ए-आलमताब'* का प्रकाशन छह मार्च 1885 को लाहौर से किया गया था। सोमवार को निकलता था। प्रकाशक दीवान आयासिंह तथा सम्पादक मुंशी रामसिंह थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था।

साप्ताहिक *'लाहौर गज़ट'* का प्रकाशन सात मार्च 1885 को लाहौर से किया गया था। क़िबला उल मतबअ में छपकर सोमवार को निकलता था। सम्पादक-प्रकाशक मुंशी दीदारबख़्श थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। 16 पृष्ठ का मासिक *'रियाज़ रंगीं'* प्रतापगढ़ से 15 मार्च 1885 को प्रकाशित किया गया। यह शेरो शायरी की पत्रिका थी। इसके प्रकाशक-सम्पादक हकीम मोहम्मद ताहिर थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। शेरो शायरी का मासिक *'खंजर-ए-इश्क़'* लखनऊ से 20 मार्च 1885 को प्रकाशित हुआ। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। अमीनाबाद से साप्ताहिक *'आज़ाद'* का प्रकाशन 25 मार्च 1885 को किया गया था। मतबअ उर्दू प्रेस में छपकर 12 पृष्ठ का यह पत्र हर मंगलवार को निकलता था। वार्षिक शुल्क सात रुपये तेरह आना था। इसके सम्पादक-प्रकाशक मुंशी अहमद अली 'शौक़' थे।

कोलकाता से 16 पृष्ठ के मासिक *'गुलज़ार-ए-जहाँ'* का प्रकाशन 31 मार्च 1885 को किया गया था। इस मासिक खेल पत्रिका के सम्पादक-प्रकाशक अमीर अली थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। क़न्नौज से शेरो शायरी के मासिक *'गुलज़ार-ए-खुल्द'* का मार्च 1885 में प्रकाशन हुआ। महीने की आठ तारीख को मतबअ रहीमी में छपता था। 18 पृष्ठ का था। भग्गू खाँ 'रहीम' इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

प्रबोध रत्न

मराठी साप्ताहिक *'प्रबोध रत्न'* मार्च 1885 में वार्शी (महाराष्ट्र) से प्रकाशित हुआ। 'प्रबोध रत्न' का अग्रिम वार्षिक मूल्य एक रुपया था। एक अंक का मूल्य एक आना था। विज्ञापन दर 10 पंक्तियों तक एक रुपये, बाद में प्रति पंक्ति डेढ़ आना रहती थी। पृष्ठ सँख्या आठ थी। सम्पादक-प्रकाशक पारलिंग प्रभुअय्या थे।

'प्रबोध रत्न' में सम्पादक के नाम पत्र भी दिए जाते थे। 11 जून के अंक में के. आर. साखरपेकर का पत्र प्रकाशित हुआ है जिसमें अँगरेज सरकार द्वारा रायगढ़ स्थित महाराज छत्रपति शिवाजी की छत्री की मरम्मत पर ध्यान न देने तथा जनता से इस सम्बन्ध में आगे आकर हाथ बँटाने का आग्रह किया गया है। 18 जून 1885 के अंक में तुर्की की राजधानी में तुर्की के सैनिकों की पत्नियों के रैली निकालने की खबर है, जो अपने पतियों को पुराना वेतन न मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विरोध में प्रदर्शन करती हुईं प्रधान सेनापति के निवास में घुस गई थीं। तब प्रधान सेनापति पीछे के दरवाजे से भाग खड़े हुए। 'प्रबोध रत्न' पाठकों को स्थानीय, देश तथा विदेश के समाचार प्रमुखता से देता था। पत्र में बाजार भाव, विज्ञापन तथा मौसम सम्बन्धी समाचार भी प्रकाशित होते थे।

आठ पृष्ठ के साप्ताहिक *'वीरवर'* का प्रकाशन दिल्ली से मार्च 1885 में किया गया था। शुक्रवार को अफ़जल उल मतबअ में छप कर जारी होता था। सम्पादक-प्रकाशक अफ़ज़ल खाँ थे। वार्षिक शुल्क चार रुपया था। साप्ताहिक *'अदीब-ए-हिन्द'* एक अप्रैल 1885 को रायपुर से निकला था। इसके प्रकाशक-सम्पादक हाफिज़ अहमद अली खां 'शौक़' थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपया था।

जिला बदायूँ के कस्बा सहसवाँ से 16 पृष्ठों के शेर शायरी के मासिक *'गुलकदा-ए-बहार'* का प्रकाशन एक अप्रैल 1885 को हुआ था। प्रकाशक-सम्पादक हाफ़िज मतीन थे। सालाना चंदा एक रुपया था। मतबअ नसीम-ए-सहर बदायूँ में छपता था। बीस पृष्ठ का मासिक *'गुलदस्ता-ए-मज़ामीन'* मथुरा से एक अप्रैल 1885 को निकला। प्रकाशक चौधरी श्यामलाल, सम्पादक गंगाप्रसाद मुख़्तार एवं प्रबन्धक बांकेलाल 'राज़ बदायूँनी' थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था।

बेंगलूरु से साप्ताहिक *'बाद-ए-सबा'* का प्रकाशन एक अप्रैल 1885 को हुआ। प्रकाशक मोहम्मद इब्राहीम 'तैश' तथा सम्पादक क़ादिर शरीफ़ 'साबिर' थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। मासिक *'लख़्ते जिगर'* का प्रकाशन 10 अप्रैल 1885 को कोलकाता से हुआ। वार्षिक शुल्क एक रुपया तेरह आना था। सम्पादक-प्रकाशक मौलवी सैयद अब्दुल रहीम थे।

'रसिक पंच' मासिक पत्र था, जो लखनऊ से 17 अप्रैल 1885 को प्रकाशित हुआ। प्रवेशांक के पृष्ठ आठ पर विशेष सूचना छपी थी-''पाठक वृन्द! यह पत्र अभी छोटा है क्योंकि पहले सभी कोई छोटा होता है यदि कुछ सहायता इसने पाई तो फिर देखिये कैसा भीमसेन सा मोटा हो बगल में सोंटा ले कुरीतियों का झोंटा पकड़कर निकालेगा आशा है कि सम्पादक समूह इसके जीवन रखने का उद्योग करेंगे। रसिक पञ्च के नियम थे- 1. रसिक पंच का दाम छह आना, डाक व्यय तीन आना एक मील से दूर डाक व्यय लिया जायगा। 2. विज्ञापन की छपाई प्रति पंक्ति तीन पैसे। बहुत दिन के लिए दूसरा नियम किया जायगा। 3. प्राप्त और प्रेरित स्तम्भों के लिए सम्पादक निरुत्तर है। 4. वैरिंग पत्रादि नहीं लिए जायंगे। 5. 'रसिक पंच' सम्बन्धी चिट्ठी पत्री रसिक पंच कार्य्याध्यक्ष राधाकृष्ण वर्म्मा के नाम से भेजने चाहिए।''

लखनऊ से 20 अप्रैल 1885 को 32 पृष्ठ का मासिक *'हरदिल अज़ीज़'* अस्तित्व में आया। इसके सम्पादक-प्रकाशक श्रीकृष्ण 'क़ैसर' थे। मूल्य चार रुपये वार्षिक था। इसी नाम का एक पत्र लाहौर से भी प्रकाशित हुआ था, जिसके प्रकाशक दीवान आयासिंह और सम्पादक रामसिंह थे। *'पैक-ए-सबा'* का प्रकाशन कोलकाता से 26 अप्रैल 1885 को हुआ। इसके प्रकाशक उमर मोहम्मद 'नाखुदा' तथा सम्पादक सैयद अब्दुल रहीम 'अब्द' थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था।

अप्रैल 1885 में श्रीमती सत्येन्द्रनाथ ने *'बालक'* नाम का मासिक पत्र निकालना शुरू किया। इसका सम्पादन रवीन्द्रनाथ टैगोर ने किया। 'बालक' के लिए आपने 'राजर्षि' नामक एक उपन्यास लिखा। धनाभाव के कारण 'बालक' अधिक दिन नहीं चल सका। कुछ दिनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद उसे 'भारती' में समाहित कर दिया गया।

शेरो शायरी का मासिक *'नौबहार'* टोंक से एक मई 1885 को निकला। सम्पादक-प्रकाशक गुलाम अली खाँ थे। लखनऊ से चार पृष्ठ के साप्ताहिक *'दर्द-ए-दिल'* का प्रकाशन 15 मई 1885 को किया गया था। जल्सा मुहम्मदी के अध्यक्ष नवाब अली खां इसके प्रकाशक तथा सम्पादक हुसैन खां थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। शेरो शायरी के मासिक *'बहारिस्तान-ए-शोख़ी'* का प्रकाशन 15 मई 1885 को बुलंद शहर से किया गया था। इसके प्रकाशक-सम्पादक गंगा सहाय थे। वार्षिक मूल्य एक रुपया था। साप्ताहिक *'बहार-ए-हिन्द'* कोलकाता से 15 मई 1885 को प्रकाशित किया गया था। वार्षिक शुल्क आठ रुपये तेरह आना था। हैदराबाद से शेर शायरी के मासिक *'जौहर-ए-सुख़न'* का प्रकाशन 19 मई 1885 को हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक अब्दुल्ला 'ज़ेग़म' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था।

जून 1885 के 'फुनून' में जो हैदराबाद से प्रकाशित होता था, *'अलमीज़ान'* के सम्बन्ध में प्रकाशित विज्ञापन से इस पत्र के प्रकाशन की पुष्टि होती है। ''यह अखबार महीने में दो बार आठ सफ़हात पर त्रिमुलकड़ी मद्रास से हकीम अब्दुल क़ादिर उर्फ क़ादिर हुसैन 'सईद' के एहतमाम से निकलने लगा है। जो अख़बारात मद्रास के मज़ामीन को अपने इंसाफ के तराज़ू में तोला करेगा। इसमें दूसरे मज़ामीन और खबरें भी दर्ज रहती हैं। आम ख़रीदारों से सालाना दो रुपये आठ आना, नवाबों और ज़ीफहम हज़रात से पाँच रुपये। नमूने का पर्चा दो आना।''

28 पृष्ठ का शेर शायरी का मासिक *'आशोब-ए-महशर'* फ़र्रुखाबाद से एक जून 1885 को निकला। प्रकाशक जगदम्बाप्रसाद, सम्पादक यूसुफ 'ज़रीफ़' थे। गुलज़ार हिन्द प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। शेर शायरी का मासिक *'आफ़ताब-ए-सुख़न'* बेंगलूरु से एक जून 1885 को प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक मोहम्मद इब्राहीम 'तेश' तथा सम्पादक अब्दुल क़ादिर थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

आगरा से विधि सम्बन्धी पाक्षिक *'किताब-मसाइल-ए-क़ानून'* का प्रकाशन एक जून 1885 को किया गया था। इसके सम्पादक-प्रकाशक बैजनाथ थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। साप्ताहिक पत्र *'मथुरा अखब़ार'* का प्रकाशन मथुरा से एक जून 1885 को हुआ। सम्पादक पंडित दीनदयाल थे। इसमें 12 पृष्ठ होते थे। 16 पृष्ठ के शेर शायरी के मासिक *'बहार-ए-सुख़न'* का प्रकाशन कानपुर से 15 जून 1885 को हुआ। सम्पादक-प्रकाशक इनायत हुसैन खाँ थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। दिल्ली से 20 पृष्ठ का मासिक *'अफ़साना-ए-अय्याम'* एक जुलाई 1885 को प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक मौलवी नुसरत अली खां क़ैसर थे। वार्षिक शुल्क दस रुपये था। उपचार सम्बन्धी 22 पृष्ठ के मासिक *'गुलदस्ता-ए-हिकमत'* का प्रकाशन लाहौर से एक जुलाई 1885 को किया गया था। इसके प्रकाशक हकीम अहमदुद्दीन बिन हकीमुद्दीन एवं सम्पादक मौलवी गुलाम हुसैन थे।

24 पृष्ठ का मासिक *'चिराग़-ए-काबा'* मुम्बई से एक जुलाई 1885 को निकला। इसकी प्रकाशक बिल्क़ीस जहाँ बेगम तथा सम्पादक नाज़िमा बेगम थीं। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। साप्ताहिक *'तावीज़'* का प्रकाशन मथुरा से एक जुलाई 1885 को किया गया था। सम्पादक-प्रकाशक लाला बांकेलाल थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया चार आने था। पाक्षिक *'तुग़रा-ए-एजाज़'* का प्रकाशन एक जुलाई 1885 को पटना से हुआ। शेर शायरी के इस पाक्षिक के सम्पादक तथा प्रबन्धक मौलवी अब्दुल जलील नोमानी थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया आठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आना था। मतबअ अहमदी में छपता था। लाहौर से एक जुलाई 1885 को साप्ताहिक '*नाज़िम-उल-हिन्द*' का प्रकाशन हुआ। प्रकाशक सैयद नाज़िर हुसैन 'नाज़िम' थे। वार्षिक शुल्क दस रुपये था। 12 पृष्ठ होते थे। इसका दूसरा नाम 'सफ़ीर-ए-गवर्मेन्ट' था। मुंशी ललताप्रसाद 'शाद' इसके सम्पादक थे।

शेर शायरी के मासिक पत्र '*बर्क़*' का प्रकाशन मुम्बई से एक जुलाई 1885 को हुआ। नवाब अली 'हसरत' लखनवी इसके प्रकाशक तथा मौलवी अबुलहसन 'जौहर' बरेलवी सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। साप्ताहिक '*अलीम-उल-अख़बार*' का प्रकाशन कोलकाता से दो जुलाई 1885 को किया गया था। 12 पृष्ठ का यह पत्र सोमवार को निकलता था। प्रकाशक मुंशी अलीमुद्दीन तथा सम्पादक इस्माइल खां 'शौकत' थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। बिहार शरीफ से 14 जुलाई 1885 को पाक्षिक '*सिदक़*' का प्रकाशन हुआ। इसमें चार पृष्ठ होते थे। सम्पादक-प्रकाशक मौलवी अब्दुल क़ादिर 'फ़िरदौसी' थे। शुल्क के बजाय केवल डाक खर्च छह आना लिए जाते थे। बाद में इसका नाम बदल कर '*बो कलमून सिदक़*' कर दिया गया था।

साप्ताहिक '*आर्य गजट*' 15 जुलाई 1885 को फीरोज़पुर से निकला। सोलह पृष्ठों का साप्ताहिक प्रति रविवार प्रकाशित किया जाता था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये छह आना था। सम्पादक मुंशी गोविन्दलाल सहारनपुरी थे। 24 पृष्ठ का मासिक '*काशिफ़-उल हक़ीक़त*' एक अगस्त 1885 को कपूरथला से निकला। प्रकाशक बाबू हरिचन्द्र तथा सम्पादक रघुवरदास थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। पाक्षिक '*परकाला-ए-आतिश*' का प्रकाशन क़न्नौज से एक अगस्त 1885 को हुआ। सम्पादक भग्गू खां 'रहीम' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। इस सचित्र पत्र में समाचार, लेख तथा टिप्पणियाँ हास्य एवं विनोद पूर्ण रहती थीं। व्यापार तथा कृषि से सम्बन्धित मासिक '*मुफ़ीद-उल-मुज़ारऐन*' का प्रकाशन एक अगस्त 1885 को कानपुर से किया गया था। इसके सम्पादक सैयद मोहम्मद हुसैन थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया छह आना था।

शेर शायरी के मासिक '*नामा-ए-उश्शाक़*' का प्रकाशन बनारस से 15 अगस्त 1885 को हुआ। 20 पृष्ठ होते थे। इसके प्रकाशक मुंशी फतह मोहम्मद रज़ी तथा सम्पादक मौलवी मोहम्मद उमर हक़ीम थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। 15 अगस्त 1885 को सोलह पृष्ठों की मासिक पत्रिका '*नामा-ए-दिलसोज़*' का प्रकाशन छावनी इंदौर से पंडित जगमोहन नाथ 'शौक़' ने किया। वे ही इसके सम्पादक भी थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। पाक्षिक '*फतहगढ़ पंच*' का प्रकाशन फर्रुखाबाद से 15 अगस्त 1885 में किया गया। प्रकाशक रतीराम तथा सम्पादक सिद्दीक़ हुसैन 'मित्रत' थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। इस्लाम सम्बन्धी मासिक '*इशाअत-ए-इस्लाम*' का प्रकाशन रावलपिंडी से अगस्त 1885 को किया गया था। सम्पादक-प्रकाशक मोहम्मद अमीन हन्फी क़ादरी थे। 16 पृष्ठ होते थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

36 पृष्ठों की मासिक पत्रिका '*फर्रुख़*' रामपुर से एक सितम्बर 1885 को प्रकाशित हुई। सम्पादक हकीम मोहम्मद रज़ा तथा प्रकाशक हकीम अहमद रज़ा थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। भोपाल से साप्ताहिक '*सफ़ीर-ए-आम*' एक सितम्बर 1885 को प्रकाशित किया गया। आठ पृष्ठ का यह साप्ताहिक हर गुरुवार को निकलता था। सम्पादक अब्दुल वाहिद थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक शुल्क छह रुपये था। बदायूँ से साप्ताहिक *'नसीम-ए-सहर'* का प्रकाशन 15 सितम्बर 1885 को किया गया था। प्रकाशक मौलवी इम्तियाज़ अहमद 'तआस्सुर' तथा सम्पादक अली अहमद खाँ 'असीर' थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये एक आना था। बनारस से साप्ताहिक *'सरोश'* का प्रकाशन 16 सितम्बर 1885 को हुआ था। आठ पृष्ठ का यह पत्र बुधवार को जारी होता था। प्रकाशक-सम्पादक मुंशी शेख वली मोहम्मद 'शिफ़ा' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

शेर शायरी का मासिक *'ख़्याल-ए-यार'* एक अक्टूबर 1885 को छाता, जिला मथुरा से निकला था। सम्पादक लाला देवीप्रसाद तथा सहायक लाला बांकेलाल थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। एक अक्टूबर 1885 को चिकित्सा विषयक पाक्षिक *'मयदुन-उल-अक्सीर'* का प्रकाशन कपूरथला से किया गया था। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलवी हकीम चिराग़उद्दीन थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये तेरह आना था। अंजुमन तहज़ीब मासिक *'सरमाया-ए-फ़रास्त'* एक अक्टूबर सन 1885 को भोपाल से निकला। सोलह पृष्ठ के इस मासिक के सम्पादक मौलवी गज़नफ़र हुसैन तथा सैयद इकरामुद्दीन थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। चिकित्सा सम्बन्धी मासिक *'हिरज़-ए-जाँ'* फतहगढ़ (भोपाल) से एक अक्टूबर 1885 को प्रकाशित हुआ। सम्पादक-प्रकाशक हकीम असग़र हुसैन थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

सियालकोट से छह अक्टूबर 1885 को साप्ताहिक *'शेख़चिल्ली'* का प्रकाशन हुआ। आठ पृष्ठ का अख़बार था। प्रकाशक-सम्पादक बालसिंह अहलुवालिया थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। लाहौर से मासिक *'कलीद-ए-जन्नत'* का प्रकाशन 15 अक्टूबर 1885 को किया गया। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था। सम्पादक-प्रकाशक सरदार अली अख़्तर थे। क़न्नौज से 27 अक्टूबर 1885 को *'अतारिद'* मासिक निकला। इसके संस्थापक मुंशी बालकिशन, प्रबन्धक मीर सैयद हसन, मुद्रक तहव्वुर अली 'तहव्वुर' तथा सम्पादक मुंशी सालिगराम 'अनवर' लखनवी थे। वार्षिक शुल्क सवा रुपया था। 16 पृष्ठों की शेर शायरी की मासिक पत्रिका *'फ़ीरोज़ निग़ार'* का प्रकाशन जिला अमरावती के खोला नामक स्थान से एक नवम्बर 1885 को किया गया था। सम्पादक मुंशी सादिक अली 'क़ैसर' तथा प्रबन्धक निसार अली थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

लाहौर से मासिक *'स्टुडेन्ट्स गाइड'* का प्रकाशन एक नवम्बर 1885 को हुआ। 34 पृष्ठ होते थे। प्रकाशक हरिभगत तथा सम्पादक अयासिंह थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। साप्ताहिक *'शौकत-ए-हिन्द'* मुम्बई से एक नवम्बर 1885 को प्रकाशित किया गया। प्रकाशक राहत अली 'मेहरकुन' और सम्पादक अज़मत अली सौदागर थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये तेरह आना था। आठ पृष्ठ के साप्ताहिक *'हुब्बुल वतन'* का प्रकाशन एक नवम्बर 1885 को कोलकाता से किया गया था। सम्पादक मोहम्मद ईसा थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। 16 पृष्ठ का मासिक *'नसरत-उल-सुन्नत'* बनारस से 10 दिसम्बर 1885 को प्रकाशित हुआ। प्रकाशक मौलवी मोहम्मद सईद थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। 25 दिसम्बर 1885 को मासिक *'आईना-ए-सुख़न'* का प्रकाशन अम्बाला से किया गया था। हर महीने की 25 तारीख को निकाला जाता था। अब्दुल हलीम 'नादिम' इसके सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। इस पत्रिका में अधिकतर नये कवियों की रचनाएँ छपती थीं। इसी नाम का मासिक पत्र जून 1886 में फतहपुर से सिद्दीक़ अहमद क़ादरी ने भी निकाला था।

'अमुद्रित ग्रंथ चिंतामणि' नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन सन 1885 में हुआ। गुंटूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रकाशित यह तेलुगु मासिक पत्रिका थी। पी. रामकृष्ण इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। इसमें आन्ध्र के समृद्ध अतीत के अनेक दस्तावेज प्रकाशित हुए। आठ पृष्ठों के साप्ताहिक *'अख़्तर-ए-अवध'* का प्रकाशन लखनऊ से सन 1885 में किया गया था। इसके प्रकाशक निसार हुसैन एवं सज्जाद हुसैन थे। सम्पादक मुंशी आशिक़ अली 'आशिक़' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। इसकी नीति देश में सुधार, सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति एवं उर्दू भाषा के विकास के लिए काम करने की थी। *'आरोग्य दर्पण'* का प्रकाशन सन 1885 में प्रयाग से हुआ। पण्डित जगन्नाथ वैद्य सम्पादक थे। 'आनन्द कादम्बिनी' में इसका परिचय इस प्रकार मिलता है-''यह पत्र बहुत ही उपयोगी और अपने चाल का अनूठा है। वैद्यक विषय से पूरित सर्वोपयोगी लेख रहा करते हैं। सम्पादक इस्के योग्य और चतुर मनुष्य मालूम होते हैं और जहाँ तक हमने देखा पसन्द किया इसलिए सधन्यवाद इस्को स्वीकार करते हैं।''

आन्ध्र प्रकाशिका

सन 1885 में आन्ध्र के पहले राजनीतिक साप्ताहिक *'आन्ध्र प्रकाशिका'* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस साप्ताहिक ने अँगरेजों की नीतियों की तीखी आलोचना की और देशहित में अनेक सुझाव प्रस्तुत किए। लगभग 25 वर्षों तक यह पत्र प्रकाशित हुआ। इसके कारण लोग राजनीतिक मुद्दों पर सोचने लगे और उन पर बहस होने लगी। यह तेलुगु पत्र चेन्नै से प्रकाशित होता था। ए.पी. पार्थसारथी नायडू सम्पादक थे।

सन 1885 में *'इल्म-उल-अख़बार'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। इसके सम्पादक वाइज़ुद्दीन अहमद थे। सन 1885 में *'कश्मीर-दर्पण'* प्रकाशित किया गया। इस हिन्दी पत्र के सम्पादक तेजबहादुर सप्रू थे। *'ख़ैरख़्वाह-ए-अख़लाक़'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। इसके प्रकाशक एवं सम्पादक अली असग़र थे। आठ पृष्ठ का साप्ताहिक *'ख़ैरख़्वाह-ए-आम'* गुजरात से प्रति बुधवार को निकलता था। इसका प्रकाशन सन 1885 में मुंशी रेलाराम ने किया था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये तीन आना था। सन 1885 में सारन से *'गुलदस्ता-ए-सारन'* निकला। सन 1885 में *'गौहर'* का प्रकाशन कोलकाता से हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक हकीम मोहम्मद नाज़िर हसन चिश्ती थे। सन 1885 से 1889 तक साप्ताहिक *'गोवात्मा'* प्रकाशित हुआ। व्यंकटेश रामचंद्र नायक इसके प्रकाशक और सम्पादक थे। हरदयाल शुक्ल द्वारा सम्पादित *'गोधर्म प्रकाश'* सन 1885 में निकला। इस पत्र में हिन्दू आदर्श एवं धर्म पर लेख होते थे।

मुम्बई से 1885 में *'ओरिएण्टल ट्रेवलर्स गजट'* का प्रकाशन हुआ। यह 16 पृष्ठ की मासिक पत्रिका थी। 1919 में इसकी पृष्ठ सँख्या बढ़ा कर 90 कर दी गई। पर्यटकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर इसमें उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाती थी। जहाजों के कार्यक्रम तथा विभिन्न शहरों के लिए किराये की दरें छापी जाती थीं। इसकी एक प्रति का मूल्य चार आना था। 'आनन्द कादम्बिनी' के मुताबिक *'दिनचर्या'* का प्रकाशन सन 1885 में नाथद्वारा से हुआ। 'आनन्द कादम्बिनी' में *'धर्म्म दिवाकर'* के प्रकाशन का भी उल्लेख मिलता है। 20 पृष्ठ के मासिक *'नाला-ए-उश्शाक'* का प्रकाशन पटना से 1885 में किया गया था। इसके सम्पादक-प्रकाशक आबिद हुसैन 'आबिद' थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

सन 1885 में *'नीतिदर्पणम्'* जुलुमूरु से प्रकाशित हुआ। यह तेलुगु मासिक बी. जम्मय्या शास्त्री ने निकाला था। सन 1885 में *'नीति प्रकाशिका'* नामक औद्योगिक और व्यापारिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका का प्रकाशन चेन्नै से हुआ। यह तेलुगु मासिक था। 36 पृष्ठ का मासिक *'नूर-उल-इस्लाम'* पटना से 1885 में निकला। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक मौलवी हसन अली थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया आठ आना था। 'आनन्द कादम्बिनी' के मार्गशीर्ष विक्रमीय सम्वत् 1942 (सन 1885) के अंक में *'पञ्जाब दर्पण'* के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है।

उर्दू साप्ताहिक 'कर्नेल' मुरादाबाद से निकलता था। इसी पत्र से *'भारत प्रकाश'* के प्रकाशन की जानकारी मिलती है। इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक पंडित बनवारीलाल मिश्र मुरादाबाद के प्रतिष्ठित परिवार के सदस्य थे। वे सनातन धर्म के अनुयायी थे। समाज सुधार में रुचि लेते थे। कर्नेल के अतिरिक्त उन्होंने मुरादाबाद से हिन्दी की मासिक पत्रिका 'भारत प्रकाश' भी निकाली थी जो आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार का खंडन करती थी। इस पत्रिका का विज्ञापन 'कर्नेल' के एक अक्टूबर 1884 के अंक में प्रकाशित किया गया है जिसमें 'भारत प्रकाश' को निकालने का अभिप्राय तथा उसके उद्देश्य का उल्लेख किया गया है। विज्ञापन इस प्रकार है-''भारत प्रकाश पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य धर्म की रक्षा करना है। नये नये संप्रदाय पवित्र सनातन धर्म के पालन में व्यवधान डालने का प्रयत्न कर रहे हैं। यद्यपि उनके भौंकने और चन्द्रमा पर धूल फेंकने से सनातन धर्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता फिर भी धर्म की रक्षा हमारा कर्तव्य है।''

'आनन्द कादम्बिनी' (सन 1885) के धन्यवाद स्तम्भ में 'भारत प्रकाश', *'भारतोद्धारक'*, *'शामे अवध'* और *'भारती विलास'* नामक पत्रिकाओं के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है। सन 1885 में कानपुर से लाला सीताराम ने कुछ समय तक *'भारतोदय'* नामक दैनिक पत्र निकाला था। *'राजपूताना मालवा टाइम्स'* सन 1885 में प्रकाशित हुआ। यह प्रशासनिक बुराइयों पर तीखे प्रहार करता रहा। मानहानि के मुकदमे में फँस जाने के कारण पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया था। चार पृष्ठ का दैनिक *'रोज़नामचा-ए-मुल्क'* का प्रकाशन 1885 में कोलकाता से हुआ था। इसके सम्पादक-प्रकाशक अली असग़र थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। सन 1885 में बलवन्त राव खटावकर ने *'वृत्तसुधा'* निकाला। खटावकर बंधु प्लेग की बीमारी के शिकार हो गए और यह पत्र बन्द हो गया।

वृत्तांत चिंतामणि

एम. वेंकटकृष्णैया को कन्नड पत्रकारिता का पितामह कहा जाता है। उन्होंने पत्रकारिता को जन जागृति का माध्यम मानते हुए जनता में स्वदेशी और स्वाभिमान की भावना का संचार किया। साप्ताहिक *'वृत्तांत चिंतामणि'* (1885) के माध्यम से उन्होंने अँगरेजी शासन की स्थानीय जनता के प्रति दुर्भावना उजागर की और मैसूर वासियों को अपने राज्य की उन्नति के लिए सजग किया।

सन 1885 में इंदौर में ब्रह्म समाज की स्थापना के साथ समाज के मुख पत्र के रूप में पाक्षिक *'सत्यबोधिनी'* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक देवाजीराव तंजावरकर थे। सन 1885 में *'सन्मार्ग दर्शिनी'* का प्रकाशन पिठापुरम से हुआ। यह तेलुगु भाषा का था। *'सुजन मनोल्लासिनी'* का प्रकाशन वर्ष 1885 है। तेलुगु भाषा का यह साहित्यिक मासिक चेन्नै से निकलता था। रियाज ख़ैराबादी ने गोरखपुर से सन 1885 में दैनिक *'सुलह कुल'* का प्रकाशन आरम्भ किया था। सम्पादक 'जालिब' देहलवी थे। वार्षिक शुल्क नौ रुपये बारह आना था।

सन 1885 में धार्मिक पत्रिका *'हिन्दू जन संस्कारिणी'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक मन्नव बुच्चय्या पंतुलु थे। यह तेलुगु मासिक चेन्नै से प्रकाशित होता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

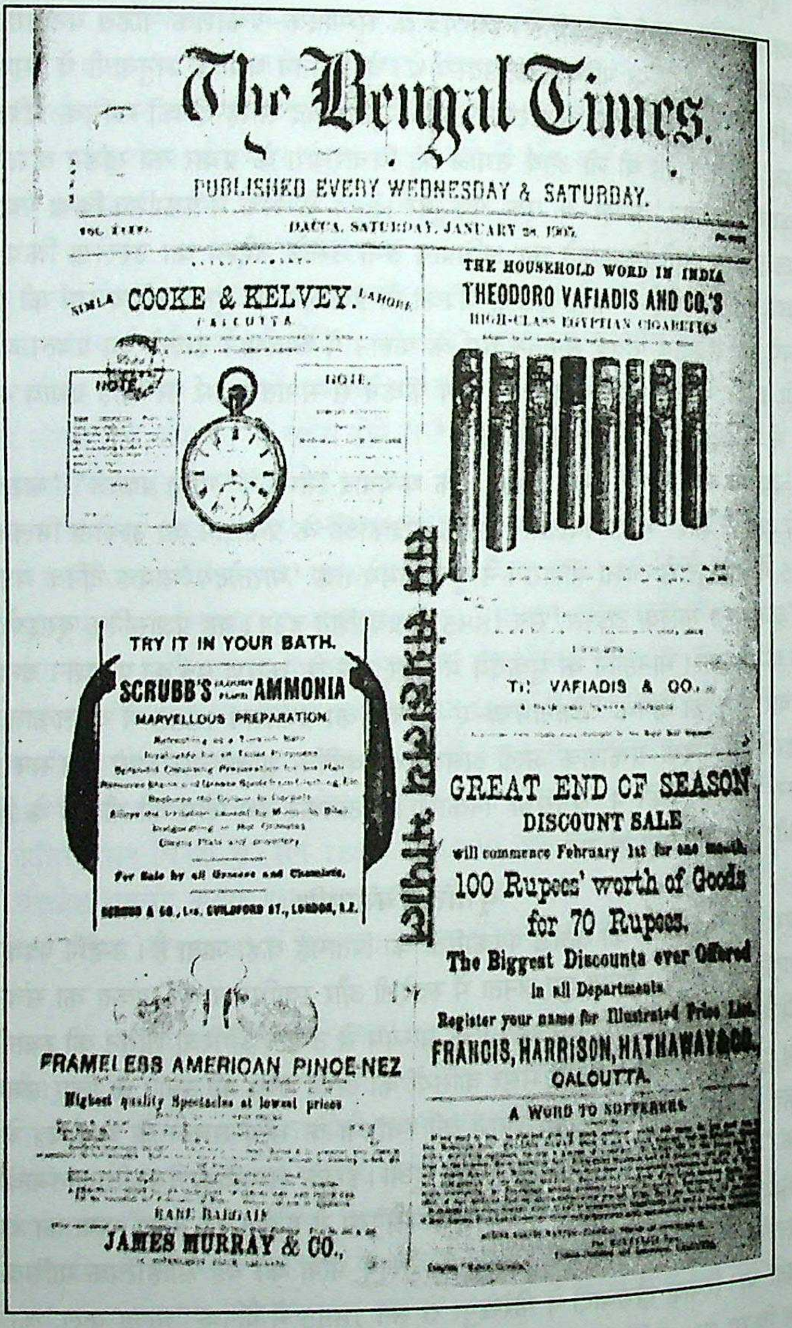

The Bengal Times.

PUBLISHED EVERY WEDNESDAY & SATURDAY.

SIMLA COOKE & KELVEY. LAHORE

CALCUTTA

TRY IT IN YOUR BATH.

SCRUBB'S AMMONIA

MARVELLOUS PREPARATION.

FRAMELESS AMERICAN PINCE-NEZ

Highest quality Spectacles at lowest prices

JAMES MURRAY & CO.,

THE HOUSEHOLD WORD IN INDIA

THEODORO VAFIADIS AND CO.'S

HIGH-CLASS EGYPTIAN CIGARETTES

TH. VAFIADIS & CO.

GREAT END OF SEASON

DISCOUNT SALE

will commence February 1st for one month.

100 Rupees' worth of Goods for 70 Rupees.

The Biggest Discounts ever Offered

in all Departments.

Register your name for Illustrated Price List.

FRANCIS, HARRISON, HATHAWAY & CO.

CALCUTTA.

A WORD TO SUFFERERS.

बंगाल टाइम्स, 1886, ढाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1885 में रघुवीर कामत पारसेकर के सम्पादन में गोवा से *'आर्यबंधु'* का प्रकाशन हुआ। बुरहानपुर से सन 1885 में मराठी साप्ताहिक *'आर्यवैभव'* निकला। रघुनाथ बालकृष्ण इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। सन 1885 में लाहौर से भाई गुरुमुख सिंह के सम्पादन में गुरुमुखी का *'ख़ालसा अखबार'* प्रकाशित हुआ।

हरदा से मराठी साप्ताहिक *'न्याय सुधा'* सन 1885 में प्रकाशित हुआ। सदाशिव पटवर्धन इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। कटक से उड़िया भाषा में मासिक *'प्रदीप'* सन 1885 में निकला। गंगाधर रायचौधुरी तथा शरदचन्द्र मुखर्जी इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। सन 1885 में धारवाड से *'राजहंस'* निकला। यह छोटे आकार का दैनिक पत्र था जो 1922 तक प्रकाशित हुआ। कड़ा (इलाहाबाद) से सन 1885 में मौलवी फ़रीदउद्दीन अहमद ने *'रिफ़ा-ए-आम कड़ा'* का प्रकाशन किया। इसके सम्पादक शेख निहाल अहमद अलवी हमीदी थे। इसी उर्दू साप्ताहिक का नाम बाद में बदलकर 'हामी हिंद कड़ा' हो गया। मधुसूदन दास के सम्पादन में कटक से 1885 में उड़िया मासिक *'शिक्षा बंधु'* निकला। सन 1939 तक अनियमित रूप से छपती रही। केन्द्रापड़ा से लक्ष्मीनारायण दासगुप्त के सम्पादन में अँगरेजी साप्ताहिक *'उड़ीसा स्टूडेण्ट'* निकला।

सन 1885 में भालेकर के सम्पादन में मुम्बई से *'शेतकन्यांचा कैवारी'* का प्रकाशन हुआ। शीर्षक के नीचे अँगरेजी में 'एडवोकेट ऑफ एग्रीकल्चरिस्ट' अंकित रहता था। यह मराठी साप्ताहिक था।

श्रीधर बरुआ के सम्पादन में असमिया पत्रिका *'असमतारा'* का प्रकाशन सन 1885 में हुआ। यह पत्रिका दो वर्ष तक प्रकाशित हुई। इसी वर्ष नगाँव से मासिक पत्र *'असम बन्धु'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। गुणाभिराम बरुआ इस पत्र के सम्पादक थे। दिसम्बर 1886 में बालीनारायण बोरा ने मासिक पत्रिका *'मौ'* निकाली।

1886

यंग इण्डिया

सन 1886 में अहमदाबाद से अँगरेजी पाक्षिक *'यंग इण्डिया'* का प्रकाशन हुआ। 'हिन्दू पेट्रियट'[1] में टिप्पणी मिलती है–''हमें नया पाक्षिक पत्र 'यंग इण्डिया' का प्रवेशांक प्राप्त हुआ। इसमें राजनीति के अलावा नैतिक, सामाजिक विषयों पर भी सामग्री दी जाएगी।'' 'भारतभ्राता'[2] में उल्लेख है–''यंग इण्डिया' नाम का एक छोटा सा अँगरेजी साप्ताहिक पत्र अहमदाबाद से प्रकाशित होने लगा है। इसका वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित एक रुपया ग्यारह आना है। पत्र अच्छा है और भविष्य में और भी अच्छे होने की आशा है। इससे पता चलता है कि पाक्षिक 'यंग इण्डिया' बाद में साप्ताहिक हो गया था।

ढाका से अँगरेजी अर्द्धसाप्ताहिक *'बंगाल टाइम्स'* का प्रकाशन सन 1886 में हुआ। इस पत्र के सम्पादक ई.सी. कैम्प थे। सप्ताह में दो बार- बुधवार और शनिवार को प्रकाशित होता था। प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापन दिए जाते थे। दूसरे पृष्ठ से समाचार तथा लेख एवं सम्पादकीय टिप्पणियाँ होती थीं। कुछ समय बाद इसे दैनिक कर दिया गया।

'अख़बार-ए-आलम' का प्रकाशन एक जनवरी 1886 को कानपुर से हुआ। इसमें

1. हिन्दू पेट्रियट, 11 जनवरी 1886
2. भारत भ्राता, 16 सितम्बर 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक, सामाजिक तथा व्यापारिक विषयों पर लेख आदि प्रकाशित होते थे। चित्र एवं मानचित्र भी प्रकाशित किए जाते थे। प्रकाशन के प्रथम वर्ष में यह मासिक पत्र रहा, किन्तु दूसरे वर्ष में साप्ताहिक के रूप में निकलने लगा। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। प्रकाशक तथा सम्पादक मुंशी मोहम्मद रहमत उल्ला 'रअद' थे। मेरठ से साप्ताहिक *'ज़रीफ़-उल-हिन्द'* का प्रकाशन एक जनवरी 1886 को किया गया था। इसके प्रकाशक मुंशी साबित अली तथा सम्पादक मुंशी हुसैन अली 'फ़रहत' देहलवी थे। प्रत्येक शुक्रवार को मतबअ शगुफ़ा-ए-फ़ैज में छप कर जारी होता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये चार आना था।

कानपुर से चिकित्सा विषयक मासिक *'अत्तार'* एक जनवरी 1886 को निकला। सम्पादक-प्रकाशक अब्दुल क़वी एवज बख़्श थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। गुजराँवाला जिले के फ़िरोज़ाबाद से कृषि विषयक मासिक *'जमींदार'* एक जनवरी 1886 को प्रकाशित हुआ था। सम्पादक-प्रकाशक मुंशी महबूब आलम थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। शेर शायरी का मासिक *'तस्वीर-ए-सुख़न'* एक जनवरी 1886 को मथुरा से निकला। 16 पृष्ठ का यह पत्र मथुरा प्रेस में छपता था। प्रकाशक वसीउल्ला 'शोख़' थे। साप्ताहिक *'दानिश-ए-हिन्द'* मुलतान से एक जनवरी 1886 को प्रकाशित हुआ। हर बुधवार को आठ पृष्ठ का निकलता था। प्रकाशक-सम्पादक पंडित राजनाथ तथा मोहम्मद दीन थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये दस आना था।

मासिक गुलदस्ता *'नसीम-ए-जन्नत'* एक जनवरी 1886 को आगरा से निकाला गया था। प्रकाशक सादिक़ अली क़ैसर तथा सम्पादक निसार अली थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। इलाहाबाद से साप्ताहिक *'फसीह-उल-अख़बार'* का प्रकाशन एक जनवरी 1886 को हुआ। 12 पृष्ठ का यह पत्र सोमवार को निकलता था। इसके सम्पादक-प्रकाशक फ़सीहउल्ला थे। वार्षिक शुल्क सात रुपये था।

लाहौर से *'मुल्की नामवर'* साप्ताहिक का प्रकाशन एक जनवरी 1886 को किया गया था। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक सैयद जव्वाद अली थे। शुक्रवार को प्रकाशित किया जाता था। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। इसी के साथ साप्ताहिक *'मुआयना'* लाहौर से एक जनवरी 1886 को निकला। सम्पादक सैयद जव्वाद अली थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। मतबअ जाफ़री में छपता था। आठ पृष्ठ का साप्ताहिक *'मुल्ला दो प्याज़ा'* लाहौर से एक जनवरी 1886 को निकला। इसके प्रकाशक-सम्पादक मियां अलाउद्दीन थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया बारह आना था। साप्ताहिक *'मुल्की शोहदा'* लाहौर से एक जनवरी 1886 को प्रकाशित हुआ। इसमें आठ पृष्ठ रहते थे। शनिवार को निकाला जाता था। इसका दूसरा नाम 'पोलिटिकल सिपाही' था। प्रकाशक-सम्पादक मौलवी फ़ज़लुद्दीन थे।

एक जनवरी 1886 को साप्ताहिक *'रियाज़-ए-हिन्द'* का प्रकाशन अमृतसर से किया गया था। सोमवार को आठ पृष्ठ का निकलता था। इसके प्रकाशक मोहम्मद हुसैन तथा सम्पादक नूर अहमद थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। साप्ताहिक *'वज़ीरुल मुल्क'* का प्रकाशन एक जनवरी 1886 को सियालकोट से किया गया था। पहले यह हर मंगलवार को निकलता था। अर्द्ध साप्ताहिक होने पर मंगलवार तथा शुक्रवार को निकलने लगा। प्रकाशक मिर्ज़ा गुलाम अहमद थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये दस आना था। 12 पृष्ठ का साप्ताहिक *'सुहेल'* आदमपुर (बनारस) से एक जनवरी 1886 को निकला। गुरुवार को प्रकाशित किया जाता था। सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीफ अहमद थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

साप्ताहिक *'एंग्लो इंडियन'* का प्रकाशन कोलकाता से दो जनवरी 1886 को हुआ था। यह 12 पृष्ठ का पत्र था। प्रत्येक पृष्ठ पर दो कालम होते थे। एक अंक की कीमत छह पैसे थी। समाचार के साथ ही इसमें साप्ताहिक समाचार सार और उन पर टीकाएँ दी जाती थीं। इसके प्रकाशक और मुद्रक बी.एन. हालदार थे। क्रिश्चियन समुदाय के जीवन, समस्याओं तथा उनके संरक्षण और हित चिन्तन के उद्देश्य को इसमें प्राथमिकता दी जाती थी। लाहौर से छह जनवरी 1886 को आठ पृष्ठों के साप्ताहिक *'तीसमार खां'* का प्रकाशन हुआ। हर शनिवार को निकलता था। प्रकाशक सरदार अली अख़्तर थे। लाहौर से आठ पृष्ठ का राजनीति प्रधान साप्ताहिक *'पाटे खाँ'* छह जनवरी 1886 को निकला। बुधवार को निकलता था। प्रकाशक मुंशी अब्दुल रहमान थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था।

कराची से 15 जनवरी 1886 को साप्ताहिक *'मुआविन-मजमए-मुहम्मदी'* का प्रकाशन हुआ। प्रकाशक मौलवी बख़्शउल्ला तथा सम्पादक शेख रियाज़उद्दीन अहमद बरेलवी थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। दिल्ली से पाक्षिक पत्रिका *'मुश्तहर'* जनवरी 1886 में निकली। लाहौर से एक फरवरी 1886 को आठ पृष्ठ के साप्ताहिक *'न्यू गाइड'* का प्रकाशन हुआ। अँगरेजी और उर्दू भाषा का यह पत्र सोमवार को निकलता था। इसके प्रकाशक गुलाम हुसैन तथा सम्पादक शेख़ करम अली थे। शुल्क ढाई रुपये था। आज़मगढ़ से चार पृष्ठों के साप्ताहिक *'आफ़ताब-ए-हिन्द'* का प्रकाशन एक फरवरी 1886 को हुआ। सोमवार को निकलता था। प्रकाशक कुदरत अली खां लखनवी थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

साप्ताहिक *'जल्वा-ए-एज़वी'* का प्रकाशन मेरठ से एक फरवरी 1886 को किया गया था। आठ पृष्ठों का यह पत्र सोमवार को निकलता था। प्रकाशक मोहम्मद ख़लील तथा मोहम्मद रफ़ी थे। वार्षिक शुल्क दस रुपये था। गोरखपुर से साप्ताहिक *'ज़ीनत-उल-अख़बार'* का प्रकाशन एक फरवरी 1886 को किया गया था। प्रकाशक कृष्णमोहन चटर्जी थे। मंगलवार को निकलता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये चार आना था। आरा जिले के कस्बा शाहबाद से 32 पृष्ठ के मासिक *'आफ़ताब-ए-आलम'* का प्रकाशन 15 फरवरी 1886 को हुआ। प्रकाशक मिर्ज़ा इनायत अली बेग तथा सम्पादक हकीम अब्दुल करीम थे। वार्षिक शुल्क सवा दो रुपये था। 16 पृष्ठों का साप्ताहिक *'इम्पीरियल पेपर'* लाहौर से 20 मार्च 1886 को निकला। सोमवार को छपता था। प्रकाशक सैयद रज्जब अली शाह तथा सम्पादक सैयद रहमत अली शाह थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। इसमें अँगरेजी उपन्यासों का अनुवाद प्रकाशित किया जाता था। नए एवं ताज़ा समाचार तथा घटनाओं का विवरण दिया जाता था। अमरावती जिले से शेर शायरी के मासिक *'तहज़ीब-ए-सुख़न'* का प्रकाशन मार्च 1886 में किया गया था। सम्पादक-प्रकाशक कृष्णलाल 'जोश' थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। आठ पृष्ठ का साप्ताहिक *'अलबेला'* बदायूँ से एक अप्रैल 1886 को निकला। प्रकाशक मौलवी अमजद अली 'ज़वार' तथा सम्पादक मौलवी अरशद हुसैन थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया तेरह आना था।

शेर शायरी के मासिक पत्र *'गुलदस्ता-ए-कलाम'* का प्रकाशन दिल्ली से एक अप्रैल 1886 को हुआ। प्रकाशक मुंशी अमीर सिंह थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। लाहौर से आठ पृष्ठ के मासिक *'मजमा-उलूम-व-फुनून'* का प्रकाशन एक अप्रैल 1886 को हुआ। सम्पादक मौलवी अब्दुल्ला खाँ थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। 15 अप्रैल 1886 को शेर शायरी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मासिक पत्र 'एतराज़' मुम्बई से प्रकाशित हुआ। 16 पृष्ठ के इस मासिक का वार्षिक शुल्क एक रुपया था। प्रकाशक उमराव अली थे। शेर शायरी का मासिक 'गुंचा-ए-मुराद' 15 अप्रैल 1886 को शिमला से निकला। प्रकाशक तथा सम्पादक अब्दुल क़ादिर 'नायब' थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया चौदह आना था। यह पत्रिका 32 पृष्ठ की थी। आठ पृष्ठ के साप्ताहिक 'पंजाब ओपीनियन' का प्रकाशन होशियारपुर से 15 अप्रैल 1886 को हुआ था। इसके प्रकाशक लाला मालिकराम 'शाद' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये चौदह आना था।

कानपुर ज़िले के शिवराजपुर से मासिक 'नाला-ए-ज़ख़्मी' का प्रकाशन अप्रैल 1886 में हुआ था। इसके सम्पादक लाला राजबिहारी 'ज़ख़्मी' थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। फ़तहगढ़ से शेर शायरी की मासिक पत्रिका 'अफ़सूँ' का प्रकाशन एक मई 1886 को किया गया था। प्रकाशक तथा सम्पादक जगदम्बा प्रसाद थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। आठ पृष्ठ का साप्ताहिक 'आरा गज़ट' एक मई 1886 को आरा से निकला। गुरुवार को निकलता था। प्रकाशक सैयद फरज़न्द अहमद 'सग़ीर' बिलग्रामी तथा सम्पादक सैयद खुर्शीद अहमद थे। वार्षिक शुल्क सवा रुपया था। गुरुसिंह सभा रावलपिंडी के मुखपत्र 'श्री गुरुमत प्रकाशक' का प्रकाशन एक मई 1886 को हुआ। यह मासिक पत्र गुरुमुखी तथा उर्दू में छपता था। बाबा खेमसिंह बेदी प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था। यह 28 पृष्ठ की धार्मिक पत्रिका थी।

साप्ताहिक 'मज़ाक का पुतला' का प्रकाशन मई 1886 में रामपुर से किया गया था। हास्य व्यंग्य की यह पत्रिका 16 पृष्ठ की थी। एक जून 1886 को आरा से 'स्टार ऑफ इंडिया' का प्रकाशन हुआ। लाहौर से साप्ताहिक 'खालसा गजट' का प्रकाशन 16 जून 1886 को किया गया था। सम्पादक-प्रकाशक भाई नन्दगोपाल थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये चार आना था। एक जुलाई 1886 को साप्ताहिक 'अज़ीज़-उल-अख़बार' का प्रकाशन चेन्नै से किया गया था। आठ पृष्ठ का यह पत्र हर गुरूवार को छपता था। वार्षिक शुल्क सात रुपये दस आना था। प्रकाशक मौलवी शाह अज़ीज़उद्दीन तथा सम्पादक सैयद हुसैन थे।

पटना से एक जुलाई 1886 को साप्ताहिक 'इंस्टीट्यूट' का प्रकाशन हुआ। अँगरेजी तथा उर्दू भाषा में छपता था। सम्पादक-प्रकाशक मौलवी मोहम्मद हुसैन थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। आठ पृष्ठ का पाक्षिक 'चमन-ए-हिन्द' एक जुलाई 1886 को शिमला से निकला। प्रकाशक अब्दुल क़ादिर 'नायब' थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। एक जुलाई 1886 से साप्ताहिक 'तर्जुमान-ए-हक़ीक़त' क़ुसूर, जिला लायलपुर से प्रकाशित किया गया था। 16 पृष्ठ का यह पत्र शुक्रवार को जारी होता था। सम्पादक मौलवी वलीउल्ला थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। 60 पृष्ठ की मासिक पत्रिका 'ईस्ट इंडियन रेलवे' 22 जुलाई 1886 को कोलकाता से प्रकाशित हुई। एच. डॉन प्रकाशक थे। इसमें रेल समय सारणी, टिकटों की दर आदि का प्रकाशन किया जाता था।

शेर शायरी के मासिक पत्र 'सहर-ए-बाबिल' का प्रकाशन फ़तहपुर से एक सितम्बर 1886 को हुआ था। 24 पृष्ठ के इस पत्र के प्रकाशक मौलवी निज़ामुद्दीन 'शोफ़ी' तथा सम्पादक बिंदा प्रसाद 'अज़ीज़' थे। गोरखपुर से 20 सितम्बर 1886 को साप्ताहिक 'मुबारक' का प्रकाशन हुआ। अँगरेजी एवं उर्दू भाषा में छपता था। प्रकाशक चार्ल्स जोजफ लकी, सम्पादक बाबू प्रभुदास ईसाई थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। शेर शायरी की मासिक पत्रिका 'नग़म-ए-बहार' लखनऊ से सितम्बर 1886 को प्रकाशित हुई। इसके प्रकाशक सैयद मेहदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हसन 'अक़ील' तथा सम्पादक याक़ूब अली खां 'नुसरत' थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। पृष्ठ सँख्या 24 थी।

गुजरात से साप्ताहिक *'गुजराती पंच'* एक अक्टूबर 1886 को निकला। सोमलाल शाह इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। वे अँगरेजी पत्र के समान पत्र निकालना चाहते थे। किन्तु साधनों के अभाव में अपने इरादों में कामयाब नहीं हो सके। 16 पृष्ठ का मासिक *'नग़मा-ए-अनादिल'* बनारस से एक अक्टूबर 1886 को निकला। प्रकाशक सैयद फ़िदा हुसैन थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था। एक अक्टूबर 1886 को साप्ताहिक *'नज्म-उल-हिन्द'* जौनपुर से प्रकाशित हुआ। सोमवार को छपता था। सम्पादक तथा प्रकाशक शेख मोहम्मद हसन थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। लखनऊ से एक अक्टूबर 1886 को पाक्षिक पत्र *'सहीफा-ए-नामी'* का प्रकाशन किया गया था। प्रकाशक अबू हसनात हाफ़िज तथा सम्पादक ख्वाजा अहमद हसन थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था।

गोरखपुर से 13 अक्टूबर 1886 को 12 पृष्ठ के साप्ताहिक *'लतीफ़-उल-अख़बार'* का प्रकाशन हुआ था। शुक्रवार को प्रकाशित किया जाता था। प्रकाशक अब्दुल लतीफ़ खां तथा सम्पादक ख़्वाजा मुहीउद्दीन लखनवी थे। वार्षिक शुल्क दस रुपये था। साप्ताहिक *'बहार-ए-शिमला'* 19 अक्टूबर 1886 को शिमला से निकला। इसके प्रकाशक अब्दुल क़ादिर 'नायब' थे। 24 अक्टूबर 1886 को आठ पृष्ठों का साप्ताहिक *'फ़ीरोज़पुर पंच'* फ़िरोज़पुर से प्रकाशित हुआ। प्रकाशक फ़िरोज़ुद्दीन थे। सोमवार को निकलता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। माह में तीन बार-10, 20 तथा 30 तारीख को निकलने वाले *'पंजाब समाचार'* का प्रकाशन 25 अक्टूबर 1886 को अदना, जिला होशियारपुर से किया गया था। आठ पृष्ठ का था। प्रकाशक सरदार प्रतापसिंह थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये चौदह आना था।

साप्ताहिक *'बाग़बान'* का प्रकाशन लाहौर से एक दिसम्बर 1886 को हुआ था। प्रकाशक मुंशी नूरुद्दीन फ़लक़ तथा सम्पादक अज़ीज़उद्दीन थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये बारह आना था। अम्बाला से साप्ताहिक *'मर्चेण्ट'* 16 दिसम्बर 1886 को निकला। सोमवार को छपता था। सम्पादक पंडित शिवप्रसाद थे। रांची से *'आर्यवृत्त'* का प्रकाशन सन 1886 में बिहार-बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आरम्भ हुआ था। सम्पादक ब्रह्मानंद थे। पश्चात बाल कृष्ण सहाय और श्यामजी शर्मा सम्पादक हुए। मासिक पत्रिका का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि के प्रति रुचि बढ़ाना था।

मुम्बई से आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से *'आर्यप्रकाश'* का प्रकाशन सन 1886 में प्रारम्भ हुआ। 'माधुरी' में उपलब्ध विवरण के अनुसार- ''आर्य प्रकाश बंबई आर्यप्रतिनिधि सभा का प्रभावशाली साप्ताहिक मुख-पत्र है और गुजराती में निकलता है। बंबई के साप्ताहिक पत्रों में इसका खास स्थान है। गत शिवरात्रि के उपलक्ष में इसका बड़ा सुंदर और दर्जनों चित्रों से अलंकृत विशेषांक निकला है। सभी लेख और कविताएँ मनन करने योग्य हैं। आर्य समाज के सभी विचारशील लेखकों के लेखों का इसमें संग्रह है। इस अंक का मूल्य एक रुपया है। ऐसा सुंदर अंक निकालने के उपलक्ष में हम संपादक श्री हरिशंकरजी विद्यार्थी को बधाई देते हैं।''

सन 1886 ई. में आरा से *'आलम आरा'* का प्रकाशन हुआ। वर्ष 1886 में साहित्यिक पत्रिका *'ग्रंथ प्रदर्शिनी'* तेलुगु भाषा में विशाखापत्तनम से निकली थी। पी. श्रीनिवास जगन्नाथ शास्त्री सम्पादक-प्रकाशक थे। भोपाल से सन 1886 में चार पृष्ठ का मासिक *'जरीदा-ए-*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इंतिजामिया' प्रकाशित हुआ। मासिक *'ज़िक्र-उल-हबीब'* सन 1886 में जयपुर से निकला। मौलवी सिराजुलहक़ सम्पादक थे।

सन 1886 में *'देशाभिमानी'* का प्रकाशन हुआ। यह प्रथम तेलुगु दैनिक था। यह राजनीतिक पत्र गुंटूर से निकला था। इसके सम्पादक-प्रकाशक देवगुप्तम शेष चलपति राव थे।

देहली गाइड

दस दिवस के अंतराल से प्रकाशित होने वाला *'देहली गाइड'* सन 1886 में दिल्ली से निकला। इसका वार्षिक शुल्क चार रुपये था। प्रकाशक एवं सम्पादक नवाब मिर्ज़ा देहलवी थे। इस पत्र का नाम पहले 'रहनुमा-ए-हिन्द' था। नाम में परिवर्तन का कारण 'रहनुमा-ए-हिन्द' में एक गर्भवती धोबन की डिप्टी कमिश्नर द्वारा पिटाई से हुई मौत का समाचार प्रकाशित होना था। डिप्टी कमिश्नर ने समाचारपत्र को नोटिस दे दिया। मजिस्ट्रेट दामोदर दास के यहाँ पेशी हुई। जब मिर्ज़ा से पूछा गया कि उनके पास क्या प्रमाण और साक्ष्य है कि उस धोबन की हत्या डिप्टी कमिश्नर ने की? तो मिर्ज़ा ने निर्भीकतापूर्वक कहा कि उनके पास उस घटना के साक्ष्य और प्रमाण मौजूद हैं। अंत में आपस में समझौता हो गया जिसमें उनसे कहा गया कि वे अपने पत्र का नाम बदल लें, तब इसका नाम 'रहनुमा-ए-हिन्द' से बदल कर 'देहली गाइड' कर दिया गया। इस पत्र में युद्ध तथा देश-विदेश के समाचारों के अतिरिक्त देशी रियासतों के शासकों के हालात तथा सूफी संतों आदि के विवरण प्रकाशित किए जाते थे।

यह पत्र सन 1892 में दैनिक हो गया किन्तु सन 1905 से पुन: दस दिन के अंतराल से छपने लगा। नवाब मिर्ज़ा पुराने पत्रकार थे। उनकी आयु का अधिकांश समय पत्रकारिता में ही बीता था। अपने पिता के प्रेस सितारा-ए-हिन्द को वे सन 1935 तक चलाते रहे। सन 1904 में एक अँगरेज के साझे में उन्होंने 'देहली टेलीग्राफ' निकाला जो अँगरेजी, उर्दू तथा हिन्दी तीन भाषाओं में निकलता था। यह पत्र सन 1924 तक प्रकाशित हुआ।

'मलयाली' मासिक पत्रिका सन 1886 में प्रकाशित हुई। क्विलोन से प्रकाशित इस पत्रिका के सम्पादक-प्रकाशक के. रामकृष्ण पिल्लै थे। इसकी साख बनाने का श्रेय माधव वारियर को जाता है, जिन्होंने इसका सम्पादन कई वर्षों तक किया था। पहले यह साप्ताहिक पत्र हुआ तथा बाद में दैनिक पत्र के रूप में निकलने लगा।

पाक्षिक *'मुख़बिर सुरूर'* सन 1886 में मुम्बई से निकला। प्रकाशक हाजी मौलाबख़्श तथा सम्पादक हाजी अब्दुल रहीम थे। मासिक पत्रिका *'मुरक़्क़ा-ए-आलम'* का प्रकाशन हरदोई से सन 1886 में हुआ था। इसके प्रकाशक-सम्पादक हकीम मोहम्मद अली ख़ाँ थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये आठ आना तथा एक प्रति का मूल्य पाँच आना था। इस मासिक में साहित्यिक, ऐतिहासिक एवं विज्ञान विषयक लेख छपते थे। इस लोकप्रिय मासिक का प्रकाशन सन 1905 में बंद हो गया था, किन्तु जुलाई 1912 से पुन: प्रकाशित किया जाने लगा।

सन 1886 में *'रसिकोल्लासिनी'* का प्रकाशन तेलुगु और अँगरेजी में द्विभाषी मासिक के रूप में हुआ था। गुंटूर से प्रकाशित इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक पालडुगु पनकल राव थे। सन 1886 में मासिक *'वकील एण्ड ला गज़ट'* का प्रकाशन हुआ। इसमें कानून सम्बन्धी समाचार प्रकाशित होते थे। इसने कुछ मुफस्सिल वकीलों की सेवाएँ भी प्राप्त की जो देहाती क्षेत्रों के रोचक मामलों की रिपोर्ट भेजा करते थे। भरतपुर से मासिक *'सहर आफ़्री'* का प्रकाशन सन 1886 में किया गया था। सम्पादक-प्रकाशक हैदर हुसैन 'आफ़्री' थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटक से सन 1886 में साहित्य और धर्म विषयक पत्र *'साम्यवादी'* का प्रकाशन हुआ। यह उड़िया भाषा का पत्र था। ललित मोहन चक्रवर्ती सम्पादक-प्रकाशक थे। सन 1886 में मुम्बई से *'एडवोकेट आफ इण्डिया'* का प्रकाशन हुआ। इस अँगरेजी पत्र का प्रकाशन फीरोजशाह मेहता ने किया था। सन 1915 में इस पत्र का विलय 'हिन्दुस्तान' में हो गया। मुम्बई से शोधपरक पत्रिका *'जर्नल आफ द बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी'* सन 1886 में निकली। यह अँगरेजी पत्रिका थी।

बालेश्वर से सन 1886 में उड़िया भाषा के *'नवसंवाद'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह ब्रह्म समाज का पत्र था। इसके सम्पादक भूपतिनाथ बसु थे। सन 1888 में *'उड़िया'* और *'नवसंवाद'* का विलय हो गया। इसमें समाचारों के साथ-साथ लेख, कविताएँ भी प्रकाशित होते थे। कटक से उड़िया पत्र *'शुभवार्ता'* भी निकला।

विद्या विलास

शंकर शास्त्री गोखले ने कोल्हापुर से सन 1886 में मराठी मासिक *'विद्या विलास'* निकाला। अगस्त 1888 में यह साप्ताहिक हो गया। पश्चात अर्द्ध साप्ताहिक और दैनिक हुआ। सन 1948 में 'विद्या विलास' का प्रकाशन बन्द हो गया। सन 1936 से सन 1947 के दरम्यान कोल्हापुर के राजनीतिक आन्दोलन में पत्र की सक्रिय भूमिका के कारण उसे जुर्माने का दण्ड भरना पड़ा। 'विद्या विलास' के सम्पादकों को तीन बार कारावास की सजा मिली।

1887

ईसाई मिशनरियों ने अमृतसर से एक जनवरी 1887 को *'पंजाब रिव्यू'* नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया था। इसके सम्पादक रज्जब अली थे। मतबअ वकील-ए-हिन्द में छपने वाली इस मासिक पत्रिका का वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। गुरुदासपुर से जनवरी 1887 में मासिक *'इन्तिख़ाब-उल-हिकमत'* का प्रकाशन हुआ। प्रकाशक-सम्पादक गयाराम तथा सह सम्पादक मौलवी नूरुद्दीन थे।

आगरा से मासिक *'कायस्थ रिफार्मर'* जनवरी 1887 में निकला। बाबू हरगोविंदनाथ तथा नारायण प्रसाद प्रकाशक थे। उन्नाव से साप्ताहिक *'क़ैसर-उल-अख़बार'* का प्रकाशन एक जनवरी 1887 को किया गया था। सम्पादक-प्रकाशक सैयद याकूब अली थे। त्रैमासिक पत्रिका *'ख़ादिम-उल-तुल्बा'* का प्रकाशन दिल्ली से जनवरी 1887 में किया गया था। 16 पृष्ठ रहते थे। प्रकाशक मौलवी ख़्वाजा अल्ताफ़ हुसैन हाली तथा सम्पादक ज़काउल्ला थे। पत्रिका में छात्रों के लिए उपयोगी लेख तथा परीक्षाओं के परिणाम प्रकाशित किए जाते थे। मुंशी ज़काउल्ला *'हामी-ए-हिन्द'* के भी सम्पादक थे। जिला कानपुर के कस्बा शिवराजपुर से जनवरी 1887 में मासिक *'रियाज़-उल नबवी'* का प्रकाशन किया गया था। यह नातिया मासिक था। इसके सम्पादक-प्रकाशक मुंशी राजबहादुर 'ज़ख़्मी' थे। इसका दूसरा नाम *'फ़रियाद-ए-ज़ख़्मी'* भी था।

साप्ताहिक *'हिम्मत'* एक जनवरी 1887 को गुजराँवाला से प्रकाशित हुआ। हर शुक्रवार को निकाला जाता था। सम्पादक-प्रकाशक मुंशी महबूब आलम थे। दिल्ली से हास्यरस के साप्ताहिक *'चलता पुर्ज़ा'* का प्रकाशन छह जनवरी 1887 को किया गया था। आठ पृष्ठ होते थे। मतबअ रिज़वी में छपता था। इसके प्रकाशक मीर हसन रिज़वी तथा सम्पादक मौलवी अब्दुल रहमान 'रासिख़' थे। मौलवी अब्दुल हलीम शरर ने 25 जनवरी 1887 को लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से *'दिलगुदाज़'* का प्रकाशन प्रारम्भ किया। वही सम्पादक थे। इस मासिक पत्रिका में ऐतिहासिक लेख अधिक होते थे। शरर ने जब से इस मासिक में उपन्यासों का धारावाहिक प्रकाशन करना प्रारम्भ किया तो लोगों की रुचि अधिकतर उस ओर हो गई थी तथा उपन्यासों के प्रकाशन की माँग बढ़ गई थी।

साप्ताहिक *'स्कूल मास्टर'* गुजराँवाला से एक फरवरी 1887 को प्रकाशित हुआ। आठ पृष्ठ का यह पत्र सोमवार को निकलता था। सम्पादक-प्रकाशक मुंशी महबूब आलम थे। साप्ताहिक शिक्षा के प्रसार तथा विकास के उद्देश्य से प्रकाशित किया गया था। दिल्ली से साप्ताहिक *'सदर पंच'* का प्रकाशन एक फरवरी 1887 से किया गया। इतवार को प्रकाशित किया जाता था। प्रकाशक अमजद थे। पाक्षिक *'जुबली पेपर'* लखनऊ से 16 फरवरी 1887 से प्रकाशित हुआ। सैयद जाफ़र जाह सम्पादक तथा सैयद अज़ीज़ हसन प्रकाशक थे।

शेर शायरी के *'मआनी'* का प्रकाशन जौनपुर से 28 फरवरी 1887 को हुआ। प्रकाशक शेख़ बशारत अली 'बशीर' तथा सम्पादक सैयद ग़ुलाम हुसैन थे। जावरा से 16 पृष्ठ का *'एहतशाम-उल-अख़बार'* एक मार्च 1887 से निकला। प्रकाशक सैयद निज़ामुद्दीन थे।

अमृतसर से साप्ताहिक *'फैज़-ए-आम'* एक मार्च 1887 से निकला। प्रकाशक मुंशी गंडाराम एवं सम्पादक लाला देवीदयाल थे। लाहौर से चार मार्च 1887 को आठ पृष्ठ के साप्ताहिक *'जाफर ज़टली'* का प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशक मुल्ला मोहम्मद बख़्श तथा सम्पादक मौलवी मोहम्मद हसन थे। मुल्ला साहब 'हंटर' के भी सम्पादक एवं प्रकाशक थे। ताजुल हिन्द प्रेस में ये दोनों पत्र छपते थे। इसी नाम का एक पत्र 1885 में झज्जर से भी निकला था। लाहौर से साप्ताहिक *'रोशनी'* 10 मार्च 1887 से प्रकाशित हुआ। आठ पृष्ठों का पत्र था। प्रकाशक शेर मोहम्मद थे।

दिल्ली से एक अप्रैल 1887 को साप्ताहिक *'अख़बार-उल-अख़बार'* का प्रकाशन हुआ। प्रकाशक मौलवी शेख़ मोहम्मद दीन तथा सम्पादक मुंशी हसीबुद्दीन अहमद 'सुजान' थे। अनवार मोहम्मदी प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। पत्र में शासन की बुराइयों और अनियमितताओं को उजागर करने की तड़प थी। देसी रियासतों की प्रजा की दीन हीन दशा का खुलासा, जो वहाँ के शासकों तथा रेज़ीडेन्ट की ज्यादती का शिकार हो रही थी, पत्र में इस लहजे में किया गया- ''देसी रियासतों की ख़राबी का बाइस फ़क़त रेसीडेन्ट की ख़फ़गी है, अगर रईस रेज़ीडेन्ट को खुदा कहने में ज़रा भी तआम्मुल करे, सत्यानाश होने में कुछ शुबह नहीं। कोई रियासत ऐसी नहीं के रेज़ीडेन्टों के आवुर्दों के हाथों सताई न गई हो। यह रेज़ीडेन्ट दुनिया भर के नालायक़ पस्त फ़ितरत, कमीना ख़स्साल, नासव्वाह, अफ़आल अश्ख़ास को रियासतों में ज़रूर जगह दिलवाते हैं। यह जब तक रज़ामंद हैं रईसों को नादिरी बल्के चंगेज़ी इख़्तियारात हासिल हैं। रियाया को लूटें मारें क़त्ल करें लेकिन उधर रेज़ीडेन्टों को नज़्र, भेंट, बेगार, दावत, फ़रमाइश, तोहफ़ा तहाइफ़ में फ़र्क उनके आवुर्दों की मदारात का सिलसिला जारी न रहा तो इधर रियाया को इस्तिग़ासों पर आमादा किया गया। अब अरायज़ का तांता लगा हुआ है। अगर रईस ने रज़ामंद कर लिया तब मुस्तग़ीसों को डंडे मारकर निकाल दिया। उधर रईस के और उनके मुदारुलमुहाम के आवुर्दों ने मुस्तग़ीसों के भिगो भिगो कर जूते लगाना शुरू किए। किसी की दाढ़ी मूँडी किसी को नंगा किया किसी को क़ैद किया गरज़ सब को चार दिन में ठीक बना लिया।''[1]

1. अखबार-उल-अखबार, 22 अक्टूबर 1888

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली से एक अप्रैल 1887 को साप्ताहिक *'दोस्त'* का प्रकाशन हुआ। हर शनिवार को प्रकाशित होता था। इसके प्रकाशक बाबू उमाशंकर तथा सम्पादक बाबू रिछपाल सिंह 'शैदा' देहलवी थे। इसका प्रकाशन अधिक समय तक नहीं हुआ। शैदा अच्छे शायर एवं योग्य पत्रकार थे। सन 1895 में आपने लुधियाना से प्रकाशित 'सिविल एंड मिलिट्री न्यूज़' नामक पत्र का सम्पादन किया। पश्चात लाहौर चले गए, जहाँ 'केसरी' तथा 'हिन्दुस्तान' के सम्पादक रहे। फिर दिल्ली में 'रियासत' के सम्पादन का दायित्व संभाला और काफ़ी लम्बी अवधि तक उसका सम्पादन करते रहे।

मिर्ज़ापुर से एक अप्रैल 1887 को मासिक *'नामा-ए-गंजूम'* का प्रकाशन किया गया था। 12 पृष्ठ का था। प्रकाशक बाबू हनुमान प्रसाद तथा सम्पादक पंडित दीनदयाल शर्मा थे। गोरखपुर से शेर शायरी का मासिक *'पैकर'* एक अप्रैल 1887 से प्रकाशित हुआ। प्रकाशक अब्दुल लतीफ़ खां तथा सम्पादक ख़्वाजा मुहीउद्दीन लखनवी थे। साप्ताहिक *'लमआत-उल-अख़लाक'* बरेली से एक अप्रैल 1887 को निकला। सोमवार को छपता था। प्रकाशक हकीम सैयद इमदाद हुसैन थे। लाहौर से साप्ताहिक *'रावी'* का प्रकाशन नौ अप्रैल 1887 को किया गया था। आठ पृष्ठ का पत्र मार्निंग स्टार प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। सम्पादक पंडित हरगोपाल थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THE BROTHER OF INDIA

भारतभ्राता

REWAH, 1TS APRIL 1889. | VOL. 3. NO. 10.

सूचना ॥

समाचारावली ॥

भारतभ्राता, रीवा, अप्रैल 1887

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलम और तलवार

1887

भारतभ्राता

एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में तलवार..... इस अनूठे चरित्र को साकार किया था लाल बलदेव सिंह ने, जो रीवा राज्य के सेनापति थे और 'भारतभ्राता' के सम्पादक। अप्रैल 1887 में आपने रीवा से हिन्दी पाक्षिक 'भारतभ्राता' का प्रकाशन किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय से उपाधि ग्रहण कर वापस रीवा लौटते समय वे छापाखाना भी साथ ले आए। और अप्रैल 1887 में इसी 'भारतभ्राता' प्रेस से अखबार निकालना शुरू कर दिया। महीने की एक और पन्द्रह तारीख को प्रकाशित होने वाले 'भारतभ्राता' की पृष्ठ सँख्या आठ तथा वार्षिक शुल्क चार रुपये था। यह पत्र 15 वर्ष तक प्रकाशित हुआ। इसकी प्रसार सँख्या भी अच्छी हो गई थी। 'भारतभ्राता' प्रमुखत: एक राजनीति प्रधान समाचारपत्र था। सामयिक प्रसंगों पर इसकी तीखी, सारगर्भित, विचारोत्तेजक और राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत टिप्पणियाँ गम्भीरता से ली जाती थीं और जन जागरण में अहम भूमिका निभा रही थीं।

'भारतभ्राता' के तेवरों का परिचय इस सम्पादकीय टिप्पणी से मिलता है- ''कांग्रेस का समय अब समीप आ गया है, केवल ढाई महीने और शेष रह गए हैं। इसी बीच उसके संरक्षकों को विशेष कार्यवाहियां पूर्ण करना है। यह अधिवेशन इस वर्ष पूना में होगा। प्रथम बार पूना में कांग्रेस की बैठक होगी। निश्चय ही मरहठे भाइयों को बहुत अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है कि वे अपनी देश हितैषिता भली-भाँति प्रगट कर सर्वसाधारण को विदित कर दें कि वे ही एकता के प्रबल प्रताप से हिन्दुस्तान का शासन किए। वे एकजुट होकर फिरंगियों को उखाड़ फेंके। कांग्रेस रूपी यह एक ही कार्य भारतवर्ष में है कि जिसको सम्पूर्ण भारतवासी जी से चाहते हैं। जबसे विदेशी शासन भारत पर हुआ तब से स्यात ऐसा कभी भी कोई कार्य नहीं था जिसमें कि सम्पूर्ण भारतवासी अपना हित समर्पण या उसके सम्पादन के लिए उद्योग करे। अत: जब ऐसा अद्भुत कार्य कांग्रेस का है तो उसको उत्तमतापूर्वक चलाना ही भारतवासियों को सर्वतो भाव उचित है।''[1]

हिंदी पत्र-पत्रिकाओं-पुस्तकों के समक्ष मूल्य देकर नहीं पढ़ने की प्रवृत्ति का संकट आरम्भ से ही रहा है। 'भारतभ्राता' को भी शुल्क के लिए तगादे करना पड़ते थे। एक नमूना प्रस्तुत

1. भारतभ्राता, 11 अक्टूबर 1890

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है- ''यद्यपि हमको विश्वास है कि हमारे पाठक वृन्दों में से दो तीन वर्ष से कटते-पिटते जो शेष रह गए हैं कोई......... आगामी वर्षारम्भ से आप लोगों के 'भारतभ्राता' में जोधपुरी भारत भानु भी सम्मिलित होकर दोनों अपने एकत्रित बल से देश में तत्पर होंगे। ऐसी दशा में इधर का हिसाब-किताब साफ कर डालना कैसा आवश्यक है सो आशा है हमें कहना नहीं होगा। -मैनेजर-भारतभ्राता- रीवा।''[1]

दादाभाई नौरोजी को जब ब्रिटेन की संसद का सदस्य चुना गया, तब 'भारतभ्राता' ने सम्पादकीय टिप्पणी की-''भारतवासी आज इस आनंद समाचार को सुन कर फूले नहीं समाएंगे कि लार्ड साल्सबरी का वही काला आदमी उनके एक भाई बंबई निवासी पारसी कांग्रेस के मुख्य नेता, भारत भूषण मिस्टर दादाभाई नौरोजी गत छ: जुलाई को पार्लियामेंट के मेम्बर चुने गए।

''यह प्रथम बार है कि जब पार्लियामेंट में एक हिन्दुस्तानी ने आसन पाया है। कौन जानता था कि कोई हिन्दुस्तानी, जिसे अपनी ओर से यहाँ की लेजिस्लेटिव कौसिल में भी मेम्बर भेजने का अधिकार नहीं है वही महासभा पार्लियामेंट का मेम्बर हो जाएगा। जिसमें श्रीमती महारानी विक्टोरिया के इतने बड़े राज्य के लिए, जिसमें सूरज कभी अस्त नहीं होता, शासन विधि बनाने और लेफ्टिनेंट गवर्नर और गवर्नर साहब तक नियत करने का अधिकार है परन्तु इसी पार्लियामेंट की मेम्बरी के लिए मिस्टर दादाभाई नौरोजी चुन ही लिए गए। ईश्वर नि:संदेह उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता में स्वत: तत्पर होते हैं।

''हम लोगों को असीम आनंद होता, यदि मिस्टर दादाभाई नौरोजी हमारी ओर से मेम्बर चुन कर भेजे जाते, परन्तु हमारी सरकार ने हम लोगों को आज तक यह अधिकार नहीं दिया है कि हम लोग एक भी मेम्बर भारत प्रजा की ओर से चुनकर ब्रिटिश पार्लियामेंट में भेज सकें। धन्य हैं सेन्ट्रल फिन्सबरी वाले, जिन्होंने मिस्टर दादाभाई नौरोजी की योग्यता का यहाँ तक सम्मान किया है कि निज देशीय अँगरेजों को छोड़ कर उन्होंने हमारे आदरणीय दादाभाई नौरोजी को ही अपनी ओर से मेम्बर चुनकर पार्लियामेंट महासभा में भेजा है। सेंट्रल फिन्सबरी वालों को हम अनेकश: धन्यवाद देते हैं और हमारे भारत निवासी भाइयों को भी उचित है कि वे अपने-अपने नगरों में इस आनन्द का उत्सव मनाएं और सेंट्रल फिन्सबरी वालों को धन्यवाद दें। परन्तु दादाभाई नौरोजी क्या मेम्बर पार्लियामेंट होकर भारत-निवासियों को भी कुछ लाभ पहुँचा सकेंगे? क्यों नहीं? वह निज अधिकार से हमारे लिए कुछ भी नहीं कर सकते, क्योंकि मेम्बर वह फिन्सबरी निवासियों के हैं, परन्तु मिस्टर ब्राडला भी हमारे मेम्बर नहीं थे। तो भी उन्होंने हमारे हितार्थ पार्लियामेंट में कितने काम किए, यह हम भारत निवासियों को स्पष्टत: विदित है। जब उन्होंने भारतीय प्रश्नों को लेना चाहा, तब पहले अपने नियोजकों से आज्ञा ली। मिस्टर दादाभाई भी इसी तरह अपने फिन्सबरी के नियोजकों से आज्ञा ले सकते हैं और फिन्सबरी वाले इतने उदारचित्त हैं कि दादाभाई को उन्होंने अपना मेम्बर बनाया है तो स्वप्न में भी हम क्यों कर आशा कर सकते हैं कि वे लोग निर्देशित प्रश्नों के लेने का अधिकार नहीं देंगे।

''मिस्टर दादाभाई नौरोजी को हमारी सलाह की आवश्यकता नहीं है तो भी अपना धर्म समझ कर हम इतना कहना आवश्यक समझते हैं कि उनका प्रथम ध्यान फिन्सबरी निवासियों के कार्य की ओर होना चाहिए जिनके कि वे वास्तविक मेम्बर हैं। तत्पश्चात उनकी आज्ञा लेकर

1. भारतभ्राता, 18 नवम्बर 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के यथासम्भव उन्हें अपने देश की दशा पर भी अवश्य ही ध्यान देना उचित है।

"यह भी अत्यन्त आनन्ददायक समाचार है कि मिस्टर केन और मिस्टर खान महाशय भी, जिनसे बढ़ कर मित्र, भारतवासियों के आज दिन भी अँगरेज जातियों में दूसरा कोई नहीं है, इसी नवीन पार्लियामेंट के मेम्बर चुन लिए गए हैं।"

"लार्ड साल्सबरी के काले आदमी और मिस्टर केन और मिस्टर खान आदि भारत हितैषी महाशयों को पार्लियामेंट में देखकर हम लोग क्यों न फड़क उठें। नि:संदेह ये सब भारत के भले दिन आने के चिन्ह हैं। ईश्वर हमारे हितैषियों को चिरंजीवी करे और हमारे सुख के दिन शीघ्र ही आएंगे।"[1]

अप्रैल 1895 में 'भारतभ्राता' ने लिखा-"हिन्दी की दीन हीन दशा सर्वसाधारण पर भली भाँति विदित है। सम्प्रति इसके पाठकगणों की जैसी रुचि और प्रेम हिंदी भाषा विषयक ग्रंथों तथा समाचारपत्रों के पठन-पाठन की ओर है, उसे अवलोकन कर कदापि कोई भलाई की आशा नहीं कर सकता। अतिरिक्त इसके सरकारी कर्मचारी की क्रूर दृष्टि समाचारपत्रों पर कितनी अधिक है कि जिससे उन्हें एक दिन सकुशल व्यतीत करना एक-एक कल्प के समान होता है। सरकारी नीति की बेड़ी पाँव में इस प्रकार भरी हुई है कि पाँव हिलाना तक कठिन है।"

'भारतभ्राता'[2] की तल्ख टिप्पणी थी- "जिसको पाँच रुपया मासिक भी न देना चाहिए, क्यों राजस्थानों से उसे राजे-महाराजे अथवा राज्य के संरक्षक पचास रु. दिला देते हैं। क्या देशी राजस्थान गवर्नमेंट का मुँह देखकर पाँच की जगह पचास रु. फेंकते हैं? क्या वे ग़वर्नमेंट के वाक्य को वेदों का वाक्य मानते हैं कि गवर्नमेंट यदि किसी पुरुष को भी योग्य लिखकर भेज देती है तो उसे सच्चे ही मानकर स्वीकार कर लेते हैं? गवर्नमेंट से प्रार्थना करने के अतिरिक्त स्वयं भी वे बहुत से परदेशियों को बुलाते हैं और राज्य सेवा देते हैं। देशी राजे-महाराजाओं को अपनी अधीनस्थ प्रजा की दीन दशा पर अवश्य ध्यान देना चाहिए और उनका स्वत्व देखना चाहिए कि वे राज्य सेवा के किस पद के योग्य योग्यता रखते हैं। योग्यतानुसार उन्हें कार्य सौंपना, उचित वेतन देना और भली-भाँति राज्य कार्य लेना नि:संदेह आवश्यक है। राज्य की प्रजा में शिक्षा अनिवार्य कर दी जाए और उन्हें राजनीतिक तथा सैनिक आदि प्रत्येक विषय की शिक्षा दी जाए।"

उपरोक्त टिप्पणी बताती है कि अनिवार्य शिक्षा की आवश्यकता 1895 में ही 'भारतभ्राता' के सम्पादक महसूस कर रहे थे। वे बाहर से लोगों को बुला कर ऊँचे पद और वेतन देने के खिलाफ थे तथा स्थानीय प्रतिभाओं को उनकी योग्यता के अनुरूप पद, आगे बढ़ने के अवसर एवं वेतन देने के पक्षधर थे।

सरकार के जन-विरोधी कदमों एवं निर्णयों की आलोचना करने में 'भारतभ्राता' चूकता नहीं था। जब आवेदन पत्रों पर स्टाम्प टिकिट लगाने का बंधन लागू किया गया, तब 'कचहरियों में अर्जी'[3] शीर्षक से लिखी गई सम्पादकीय टिप्पणी इस प्रकार थी- "स्टाम्प टिकिट लगाकर अर्जी देने की जो आज्ञा हुई है, इससे निश्चित ही प्रजा को बड़ी हानि पहुँच रही है। बहुधा ऐसे लोग

1. भारत भ्राता
2. भारतभ्राता, 24 मई 1895
3. भारतभ्राता, 23 अगस्त 1895

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, जिन्हें अवसर पर पैसा मिलना बहुत कठिन है इसके अतिरिक्त यहाँ सरकार ने यह आज्ञा दी है कि जो अर्जीनवीसों से अपनी अर्जी लिखवाकर न्यायालय में नहीं देंगे उनकी अर्जी नहीं ली जाएगी। विचाराधीन बात है कि दीन मनुष्य अर्जी की लिखाई और उसमें स्टाम्प का व्यय क्यों कर दे सकता है? इसका तात्पर्य उनका मुँह बन्द करना है, जो वास्तव में उनके ऊपर अत्याचार है। शीघ्र ही सरकार को यह आज्ञा उठा लेनी चाहिए।''

'भारतभ्राता' का वार्षिक मूल्य छः रुपये था। प्रसार सँख्या अच्छी थी। 1902 तक प्रकाशित होने के बाद इसका अवसान हो गया।

हैदराबाद से साप्ताहिक *'अफ़सर-उल-अख़बार'* एक मई 1887 से प्रकाशित हुआ। शनिवार को निकलता था। प्रकाशक मुश्ताक़ अहमद थे। वार्षिक शुल्क नौ रुपये था। आगरा से 24 पृष्ठ का मासिक *'खत्री हितकारी'* मई 1887 में निकला। सम्पादक दीनानाथ टंडन तथा प्रकाशक मुंशी दयालचंद थे।

दकन पंच/मुशीर-ए-दकन

साप्ताहिक *'दकन पंच'* हैदराबाद से एक जून 1887 को प्रकाशित हुआ। 12 पृष्ठ का था। प्रकाशक पंडित कृष्णराव तथा सम्पादक मौलवी ग़रीबउद्दीन थे। वार्षिक शुल्क 12 रुपये था। सन 1892 में यह दैनिक हो गया। नाम बदल कर *'मुशीर-ए-दकन'* कर दिया गया। पहले इसके सम्पादक मुजीबउल्ला तमन्नाई थे जिन्होंने काफ़ी दिनों तक इसका सम्पादन किया। फिर सरदार अली और अली अख्तर भी सम्पादक रहे। 'मुशीर-ए-दकन' अपनी संतुलित नीति के कारण सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। इसमें बड़े सम्पादकीय अग्रलेख के बजाय छोटे-छोटे सम्पादकीय विभिन्न विषयों पर लिखे जाते थे। जिनमें देश में शिक्षा की दशा, आर्थिक स्थिति, अँगरेज अधिकारियों द्वारा किए गए कुप्रबंध अथवा दोषपूर्ण बंदोबस्त और इस कारण देश को पहुँचने वाली आर्थिक हानि आदि विषयों पर लेख होते थे।

सम्पादकीय[1] का नमूना-''हमको यह सुनकर अफ़सोस हुआ कि मिस्टर पल्वडन रेसीडेंट बहादुर की नाक में बाइस्किल पर से गिरने से जो ज़ख्म नीलगिरी में आया वह अभी मुन्दमिल नहीं हुआ है। और इसके सदमे से आपको बुखार आ रहा है। साहब रेज़ीडेंट बहादुर को अगर रेसीडेन्स के मुक़ाबिले में अपनी नाक प्यारी है तो वह क्यों नहीं विलायत जाकर नाक का इलाज कराते? मुँह पर नाक का होना इससे बहतर है के रेसीडेन्स की आला खिदमत के मज़े लूटे जाएँ। अजब नहीं के अगर चंद दिन और आपकी नाक की यही हालत रही तो आपको मजबूरन सफ़र विलायत इख्तियार करना पड़े। बहरहाल हमको साहब बहादुर की नाक से दिली हमदर्दी है और आपकी सलामती के लिए हम दस्त-ब-दुआ हैं।''

''डॉक्टर लॉरी की हमशीरा साहिबा आजकल अफ़जलगंज अस्पताल की सुप्रिन्टेंडेन्ट हैं वह रुख्सत पर लंदन तशरीफ़ ले जा रही हैं। क्या यह मुमकिन नहीं है के उनको फिर यहाँ वापिस आना की तकलीफ़ न दी जाए और उनकी जगह कोई दूसरी लेडी कम तन्खाह की रखी जाए।''[2]

मासिक *'लिस्सान-उल-मुल्क'* का प्रकाशन मेरठ से 10 जून 1887 को किया गया। 20 पृष्ठ का था। प्रकाशक सैयद मुर्तुज़ा यज़दानी तथा सम्पादक मुंशी अहमद 'शफ़क़' थे। बैहर जिला शाहपुर से साप्ताहिक *'दोस्त-ए-हिन्द'* का प्रकाशन 23 जून 1887 से हुआ। गुरूवार

---

1. मुशीर-ए-दकन, फरवरी 1898
2. वही, सम्पादकीय, अप्रैल 1898

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आठ पृष्ठ का निकलता था। प्रकाशक बख्शी रामलुभाया तथा सम्पादक हकीम देवीदयाल थे। हैदराबाद से साप्ताहिक *'ख़्याल-ए-महबूब'* एक जुलाई 1887 को निकला। निज़ाम प्रेस में छपता था। सम्पादक-प्रकाशक मौलवी अब्दुल सलाम 'अर्शी' थे। लाहौर से 12 पृष्ठ का साप्ताहिक *'नग़मा-ए-हिन्द'* एक जुलाई 1887 को निकला। प्रकाशक एवं सम्पादक यूसुफ़ अली खाँ क़ज़लबाश थे।

साप्ताहिक *'नारोमन'* मेरठ से एक जुलाई 1887 को प्रकाशित हुआ। इतवार को निकलता था। प्रकाशक रामस्वरूप रायज़ादा तथा सम्पादक मुंशी फ़खरुद्दीन थे। नागपुर से चार जुलाई 1887 को साप्ताहिक *'पयाम'* का प्रकाशन हुआ। सम्पादक एवं प्रकाशक जहाँगीर खाँ थे। आठ पृष्ठ का था। बरेली से मासिक *'दाग़-ए-दिल'* का प्रकाशन 15 जुलाई 1887 को हुआ। प्रकाशक हकीम सैयद मोहम्मद तम्कीन थे। कानपुर से शेर शायरी के 16 पृष्ठ का मासिक *'तहज़ीब-ए-सुख़न'* जुलाई 1887 में प्रकाशित हुआ। प्रकाशक शेख अहमद अली अहमद थे।

बेंगलूरु से कन्नड साप्ताहिक *'बेंगलूरु अखबार'* का प्रकाशन जुलाई 1887 में किया गया था। चार पृष्ठ का था। कुछ समय पश्चात अर्द्ध साप्ताहिक हो गया और शनिवार तथा बुधवार को निकाला जाने लगा। वार्षिक शुल्क चार रुपये आठ आना था।

आठ पृष्ठ का साप्ताहिक *'मुशीर-ए-हिन्द'* जुलाई 1887 में लुधियाना से निकला। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। प्रकाशक शर्फुद्दीन 'शर्फ़' थे। एक अगस्त 1887 से 16 पृष्ठ का साप्ताहिक *'अम्बाला गजट'* अम्बाला से प्रकाशित किया गया था। प्रकाशक लाला हरवंश राय थे। वार्षिक मूल्य चार रुपये तेरह आना था। प्रकाश प्रेस में छपता था। दिल्ली से पाँच अगस्त 1887 को साप्ताहिक *'मुदब्बिर-ए-आलम'* का प्रकाशन किया गया। प्रकाशक तथा सम्पादक मुंशी मोहम्मद इस्माइल 'मुंसरिम' थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। मतबअ फारुक़ी में छपता था। सोमवार को निकलता था।

पटना से साप्ताहिक *'अनीस'* का प्रकाशन छह अगस्त 1887 को हुआ। चार पृष्ठ का यह पत्र अहसन-उल-मतबअ में छपता था। शनिवार को जारी किया जाता था। प्रकाशक मौलवी अब्दुल क़ादिर तथा सम्पादक आबिद हुसैन थे। मजलिस तहज़ीबे कायस्थान का साप्ताहिक *'जुबली गजट'* मेरठ से छह अगस्त 1887 को निकला। प्रकाशक मुंशी घासीराम तथा सम्पादक मुंशी किशन स्वरूप थे। उर्दू और हिन्दी में छपता था। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। 15 सितम्बर 1887 से पाक्षिक *'आफ़ताब-ए-महशर'* अलीगढ़ से प्रकाशित हुआ। बारह पृष्ठ होते थे। प्रकाशक लाला कुंदनलाल 'शरर' एवं सम्पादक लाला शकुन लाल थे।

भोपाल से 19 सितम्बर 1887 को *'हिलाल'* प्रकाशित हुआ था। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक अर्जुमन्द मुहम्मद खां सलीम तथा प्रबन्धक मोहम्मद हसन थे। 'नदीम' के सिल्वर जुबली अंक में विवरण मिलता है- ''नवाब यासीन मोहम्मद खां के बड़े साहिबज़ादे मियां अर्जुमन्द मोहम्मद खां सलीम ने एक पन्द्रह रोज़ा अख़बार 'हिलाल' के नाम से जारी किया।'' 16 पृष्ठों का मासिक *'नवेद-ए-उम्मीद'* कानपुर से सितम्बर 1887 में प्रकाशित हुआ। सम्पादक बी. नज़ीरा थीं। आगरा से मासिक *'वीकली रिपोर्ट'* का प्रकाशन सितम्बर 1887 में हुआ। प्रकाशक सैयद इशरत हुसैन तथा सम्पादक मिर्ज़ा ख़ादिम हुसैन थे। मासिक *'गुलज़ार-ए-सुख़न'* का प्रकाशन एक अक्टूबर 1887 को हैदराबाद से किया गया। मतबअ नूर-ए-दकन में छपता था। इसके प्रकाशक नूरुद्दीन तथा सम्पादक अब्दुल रहीम शर्फ़ थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक '*खुर्शीद*' का प्रकाशन 13 अक्टूबर 1887 को हुआ। 16 पृष्ठ रहते थे। हर गुरुवार को निकलता था। प्रकाशक-सम्पादक एवं कातिब शेख इल्हाम अली मोहानी तथा प्रबन्धक शाह मंसूर आलम थे। मासिक '*अदीब*' लखनऊ से अक्टूबर 1887 में प्रकाशित किया गया था। प्रकाशक हिदायत रसूल महवी थे। 24 पृष्ठों का निकलता था। लखनऊ से साहित्यिक मासिक '*बहार-ए-हिन्द*' अक्टूबर 1887 में प्रकाशित किया गया था। प्रकाशक असग़र अली तथा मोहम्मद अली और सम्पादक मिर्ज़ा मोहम्मद मुर्तुज़ा 'आशिक़' थे। हैदराबाद से शेर शायरी के 32 पृष्ठीय मासिक '*गुलो बुलबुल*' का प्रकाशन 11 दिसम्बर 1887 को हुआ। प्रकाशक सैयद अल्ताफ़ हुसैन 'क़ाबिल' तथा सम्पादक सैयद मोहम्मद अब्बास 'महजूर' थे।

'*आर्य सिद्धान्त*' का प्रकाशन सन 1887 में हुआ। इसके उपलब्ध अंक के मुख पृष्ठ पर छपा है-''आर्य सिद्धान्त मासिक पत्र जो पं. भीमसेन शर्म्मा द्वारा सम्पादित होता है प्रथमवार का छपा चुक जाने से द्वितीय वार सरस्वती यन्त्रालय-इटावा में तुलसी राम स्वामी के प्रबन्ध से छपा। पृष्ठ सँख्या 16 थी। सबसे ऊपर ओउम् लिखा रहता था। उसके नीचे पत्रिका का नाम तथा उसके नीचे संस्कृत का सूत्र वाक्य रहता था- ''उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।''

आर्यावर्त

'*आर्यावर्त*' सन 1887 में कोलकाता से प्रकाशित हुआ। यह समाचार प्रधान साप्ताहिक पत्र था, जो बाद में दानापुर स्थानान्तरित हो गया। सम्पादन दायित्व रुद्रदत्त शर्मा को सौंपा गया। भारत-नेपाल सीमा की चौकी तथा तारघर के प्रत्यक्ष हालचाल के आधार पर 'आर्यावर्त' में रुद्रदत्त शर्मा ने शब्द चित्र प्रकाशित किया। इस लेख का अँगरेजी अनुवाद कोलकाता हाईकोर्ट ने पटना की पुलिस को भेजा। पुलिस सुप्रिण्टेंडेंट दानापुर आयावर्त प्रेस से फाइल उठा कर ले गए। अभियोग चलाने की पूरी तैयारी कर ली गई। इसी बीच बाबू रामदीन सिंह सम्पादक को साथ लेकर कमिश्नर ग्रियर्सन के पास गए और उन्हें बताया कि यह शब्द चित्र प्रह्लाद और नरनारायंण के युद्ध की कथा के आधार पर लिखा गया है। हिन्दी प्रेमी ग्रियर्सन ने हिन्दी लेख और अँगरेजी अनुवाद पढ़ने के बाद माना कि आलेख आजकल की अनेक घटनाओं से मिलता है। परन्तु सरकार की ओर से इस पर अभियोग नहीं चल सकता, क्योंकि आपने मार्कण्डेय पुराण के श्लोकों से अपने लेख को मिला दिया है। 1891 में इसके सम्पादक क्षेत्रपाल शर्मा थे।

'आर्यावर्त' और 'हिन्दू धर्म्म' के विषय में 'भारतभ्राता'[1] ने लिखा था-''सहयोगी आर्यावर्त का एक लेख अपने पाठकों के अवलोकनार्थ आज इस पत्र के किसी स्तम्भ में उद्धृत है। सहयोगी को ऐसा कड़ा आक्षेप करने के अवसर देने वाले अँगरेज नहीं हैं, न मुसलमान है, न अरब है, न तुर्क है, न बौद्ध है-हैं यह उसी विश्वनाथपुरी काशी मिउनिसिपल्टी के धार्मिक हिन्दू ही जो कल्ह तक यह अभिमान रखते थे कि बौद्ध मत जब समस्त भारतवर्ष में फैल गया था तब भी काशी जी में उसकी दाल नहीं गलने पाई और जो शायद आज तक वैसे ही चन्दन तिलक लगाते और नाक दबाते हैं जैसे उनके बाप दादे करते थे। यदि यह टिक्कस मर्कार लगाये होता तो हम लोग बहुत कुछ समझाते बुझाते और प्रार्थना करते परन्तु इन हिन्दुओं से हम क्या कहें जो कुछ नहीं जानते।'' कुछ दिन तक यह पत्र भागलपुर से भी निकलता रहा।

1. भारतभ्राता, 30 दिसम्बर 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1887 में *'इतिहास मंजरी'* चेन्नै से प्रकाशित हुई। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक नोरि गुरुलिंग शास्त्री थे। कार्मल मिशनरियों ने सन 1887 में मन्नानम से *'नजरानि दीपिका'* का प्रकाशन शुरू किया। सन 1938 में उसका नाम बदल कर 'दीपिका' किया गया। सन 1939 में इसे कोट्टायम ले जाया गया। यह अखबार बाद में दैनिक समाचारपत्र बना।

पैसा अख़बार

सन 1887 में मुंशी महबूब आलम ने *'पैसा अख़बार'* निकाला। उत्कृष्ट सामग्री तथा कम दामों के कारण यह जनसाधारण में बहुत लोकप्रिय हुआ। लोगों ने उस गली का नाम जहाँ से यह निकाला जाता था, 'पैसा गली' रख दिया। इसमें मियां दीन मोहम्मद 'फ़ौक', लाला दीनानाथ तथा मीर जालिब जैसे नामी सम्पादक रहे। 'पैसा' साप्ताहिक पत्र आठ पृष्ठ का था। इसका आकार छोटा था। वार्षिक शुल्क केवल बारह आना था। डाक खर्च के लिए तेरह आना अतिरिक्त लिए जाते थे। इसी को फिरोज़वाला से लाहौर स्थानांतरित किया गया था। शताब्दी के अंत में जब इसे दैनिक पत्र में परिवर्तित किया गया तब इसकी लोकप्रियता और भी बढ़ गई। 'पैसा अख़बार' के साथ साप्ताहिक परिशिष्ट 'मफ़ाद' भी निकाला जाने लगा। लंदन में प्रकाशित होने वाले 'टिट बिट्स' के समान 'इंतिख़ाब-ए- लाजवाब' निकाला, जिसमें मनोरंजक चुटकुले, दिलचस्प उद्धरण, विज्ञान की जानकारी आदि प्रकाशित की जाती थी। बच्चों के लिए 'बच्चों का अख़बार' प्रकाशित किया जाता था। महिलाओं के लिए 'शरीफ़ बीबी', कृषि के विकास के लिए 'ज़मींदार' और बाद में 'बाग़बान' प्रकाशित किया जाने लगा। एक अन्य पत्रिका 'कलीदे इम्तिहान' के नाम से निकाली। विभिन्न विषयों पर लगभग सात सौ पुस्तकें छापीं, इनमें से पचास किताबें मुंशी महबूब आलम ने लिखी हैं। जब प्रेस और पत्र समूह का कार्य तरक्की के शिखर पर चल रहा था तो उनके कार्यालय और प्रेस में आग लग गई। लगभग दो लाख रुपये का नुक़सान हुआ। इसके बाद उन्हें हैदराबाद से ढाई हजार रुपये का वार्षिक वज़ीफा दिया जाने लगा, जो बीस साल तक प्राप्त होता रहा। महबूब आलम की मृत्यु सन 1933 में हुई। 'पैसा अख़बार' पहले ही बंद हो चुका था। अन्य पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति भी खराब हो चली थी। पहले 'इंतिख़ाब-ए-लाजवाब' का प्रकाशन बंद हुआ, फिर 'पैसा' बंद हुआ।

गोरखपुर से शेर शायरी की पत्रिका *'बहार-ए-सुख़न'* का प्रकाशन अगस्त 1887 में किया गया था। प्रकाशक मोहम्मद मुबीन 'जलीस' एवं सम्पादक हाफ़िज मोहम्मद 'नश्तर' थे। लतीफ़-उल-अख़बार प्रेस में मुद्रित कराया जाता था। बीकानेर से *'बीकानेर राजपत्र'* का प्रकाशन सन 1887 में हुआ। सन 1887 में *'मनोरंजनी'* का प्रकाशन तेलुगु मासिक के रूप में हुआ। तुनि से प्रकाशित यह सांस्कृतिक पत्रिका सम्पादक भागनगरम् गुरुलिंग देवर निकालते थे। औरंगाबाद से सन 1887 में *'मतला-ए-सुख़न'* प्रकाशित किया गया था। 16 पृष्ठ का रहता था। सम्पादक बशीरुद्दीन 'अफ़सर' थे।

राजस्थान पत्रिका

सन 1887 में *'राजस्थान पत्रिका'* अजमेर से प्रकाशित हुई। ग्वालियर गजट[1] में इसके विषय में विवरण मिलता है-''यह हिन्दी भाषा का वर्तमान पत्र साप्ताहिक अर्थात् प्रति बुधवार को अजमेर स्थान रविचन्द बन्सी यंत्रालय से अति उत्तम टैप में मुद्रित होता है, इसमें अनेक अनेक

1. ग्वालियर गजट, पृष्ठ 522, 15 नवम्बर 1896

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम प्रकार के विषय राजकीय व प्रजाहितकारिक प्रकाशित होते हैं। मूल्य वार्षिक बाहर के ग्राहकों को तीन रुपये छह आना, 6 माह के 2 रु., 3 मास के आठ आना, एक प्रति के दो आना पत्र व्यवहार-डाक्टर बक्षी लक्ष्मणदास शर्मा मालिक राजपूताना मालवा टाइम्स के नाम से होता था।'' 'राजस्थान पत्रिका' को जयपुर के दीवान कान्तिचन्द्र मुखर्जी का कोपभाजन बनना पड़ा। मानहानि के एक मामले में उसका छापाखाना नीलाम हो गया।

पंडित चंद्रशेखर मिश्र ने सन 1887 में *'विद्याधर्म दीपिका'* नाम की एक मासिक पत्रिका निकाली थी। इसे वे प्राय: गरीबों को बिना दाम ही बांटा करते थे। सन 1887 के अक्टूबर में नामजोशी ने मासिक *'शिल्पकला विज्ञान'* का प्रकाशन किया। अलीगढ़ से सन 1887 में *'शोर-ए-अनादिल'* पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशक बनवारीलाल वकील तथा सम्पादक लाला सुगनलाल थे।

श्री हरिश्चन्दकला

'श्री हरिश्चन्द्रकला' सन 1887 में खड्गविलास प्रेस बांकीपुर से निकली। इसका वार्षिक मूल्य छह रुपये था। यह मासिक पत्रिका थी।

'श्री हरिश्चन्द्रकला' के विषय में 'बाल मनोरंजन'[1] ने लिखा है-''हिन्दी प्रेमियों को यह बात मालूम होगी कि सन 1887 में स्वर्गीय बाबू रामदीन सिंहजी ने आधुनिक हिन्दी के जन्मदाता भारतभूषण भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी के स्मारक में 'श्री हरिश्चन्द्रकला' नाम की मासिक पत्रिका निकाली थी जिसमें कई वर्षों तक भारतेन्दु द्वारा रचित तथा संग्रहीत पुस्तक प्रकाशित होती रही। परन्तु कम सज्जनों को यह मालूम होगा कि उक्त ग्रंथों के प्रकाशित हो जाने पर भी खड्ग विलास प्रेस के मालिकों ने अन्यान्य उपयोगी पुस्तकें छाप कर अब तक उस पत्रिका को जीवित रखा है। कारण, उसमें प्रकाशित पुस्तकों का प्रचार स्वतंत्र पुस्तक रूप से ही होता आया है। अस्तु, सर्वसाधारण को यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि अब 'श्री हरिश्चन्द्रकला' को एकदम नये रङ्ग-ढङ्ग से प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई है। इसका पहला अङ्क आगामी जनवरी 1915 में निकलेगा। श्री नरेन्द्रनारायण सिंह जिन्होंने भारतमित्र, हिन्दी बङ्गवासी, सरस्वती, अभ्युदय, मर्यादा आदि अनेक प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं के सम्पादकीय विभाग में बहुत दिनों तक काम करके पत्र सम्पादन कला में पूर्ण योग्यता प्राप्त की है-इसके सम्पादक होंगे, और अनेक पुराने तथा प्रतिष्ठित साहित्य सेवियों के लेखों से यह विभूषित हुआ करेगी। इसमें काव्य, इतिहास, जीवन, चरित, विज्ञान, शिल्प, पुरातत्व, अर्थशास्त्र, गृह, प्रबन्ध, स्वास्थ्य रक्षा आदि उपयोगी विषयों के अतिरिक्त नियमित रूप से शिक्षा सम्बन्धी लेख एवं महापुरुषों के चित्र प्रकाशित हुआ करेंगे। लोगों की सुविधा के लिए इसका वार्षिक मूल्य भी 6 रुपये से घटाकर 3 रुपये कर दिया गया है। नमूने की प्रति का मूल्य छह आना होगा। अत: हिन्दी हितैषियों को शीघ्र ही ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा कर अपने सच्चे हिन्दी प्रेम का परिचय देना चाहिए।''

''श्री हरिश्चन्द्रकला' के बारे में 'जयाजी प्रताप'[2] ने लिखा-''बहुत समय बाद फिर हरिश्चन्द्रकला के दर्शन हुए हैं। पहिले-पहिले महाराजकुमार रामदीन सिंह ने बाबू हरिश्चन्द्र के स्मरणार्थ और उनके ग्रंथ प्रकाशित करने के लिए इस कला को प्रकाशित करना आरम्भ किया था। इसमें और बहुत दिनों तक बाबूजी के लिखे ग्रंथ प्रकाशित होते रहे। बाद को ग्राहकों

1. बाल मनोरंजन, अंक 3, पृष्ठ 43
2. जयाजी प्रताप, 28 अप्रैल 1915

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अभाव से कला को प्रकाशित करना बन्द कर दिया गया था। परन्तु अब फिर उसका आरम्भ हुआ है। भाग सँख्या पहिले के क्रम से ही 29 रक्खी गई है। और पहिला अंक जो चैत्र का निकला है वह हमारे सामने है। इस सँख्या में सात विषयों की आलोचना की गई है और आठ निबन्ध प्रकाशित किए गए हैं। सामयिक साहित्य की कुछ सूचनाएं भी प्रकाशित हुई हैं। अलावा इसके एक दो और लेख हैं। परिशिष्ट में चाणक्य के अर्थशास्त्र का अनुवाद भी 24 पृष्ठ में प्रकाशित किया गया है। कला के इस अंक में कुछ 64 पेज हैं। लेख सब अच्छे हैं। मूल्य वार्षिक 3 रु. है और बांकीपुर के खड्ग विलास प्रेस से प्राप्त हो सकती है।''

उड़िया और अँगरेजी भाषाओं में सन 1887 में *'उड़िया संवाद पत्र'* का प्रकाशन बालेश्वर के उत्कल प्रेस से हुआ। *'गोवा पंच'* का प्रकाशन सन 1887 में हुआ। इस मराठी पत्र के सम्पादक-प्रकाशक रामचन्द्र दत्तात्रय आजरेकर थे। यह सन 1899 तक प्रकाशित होता रहा।

मैसूर में सन 1840 में वेसले मिशन प्रेस स्थापित किया गया था, जिसमें अनेक साहित्यिक पुस्तकें छपी थीं। इसी प्रेस से सन 1887 में *'वृत्तान्त पत्रिका'* नामक समाचारपत्र निकला। सम्पादक हेनरी हेग थे। इस साप्ताहिक को स्पष्ट एवं गंभीर समाचारों, संतुलित विचारों एवं जनहित के लिए दिए गए सुझावों के कारण पसंद किया जाता था। इसका प्रकाशन सन 1942 में बंद हो गया।

वर्ष 1887 में जयपुर से *'अल-बयान'* का प्रकाशन हुआ। *'सफ़ीर-ए-टोंक'* का प्रकाशन टोंक से सन 1887 में हुआ। सन 1887 में क़ादिर शरीफ़ साबिर ने बेंगलूरु से *'दिलसोज़'* नामक पत्र निकाला था। इसमें टीपू सुल्तान और अँगरेजों के बीच हुए युद्ध पर आधारित एक उपन्यास का धारावाहिक प्रकाशन किया गया था। साप्ताहिक *'अनीस'* का प्रकाशन ग़ाजीपुर से ज़ाकिर हुसैन 'अंजुम' ने सन 1887 में किया था। यह लगभग बारह वर्ष तक प्रकाशित हुआ।

उडुपी से सन 1887 में प्रकाशित *'सुदर्शन'* मासिक पत्रिका थी। इस कन्नड पत्रिका के सम्पादक बैलूर रामाराव थे। 'सुदर्शन' का प्रकाशन नौ वर्ष तक हुआ। अदूरु नारायणराव और अमेबाल सुब्रय्या पै का लेखकीय सहयोग इस पत्रिका को उपलब्ध था।

1888

इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इंडिया

सन 1888 में बैनेट कोलमैन कंपनी ने सचित्र अँगरेजी साप्ताहिक *'इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इंडिया'* का प्रकाशन मुम्बई से किया। 30 गुणित 45 से.मी. आकार में प्रकाशित इस साप्ताहिक का मूल्य छह आना था तथा पृष्ठ सँख्या 44 थी। पहले यह 'टाइम्स आफ इंडिया' के सम्पादक की देखरेख में छापा जाता था। सन 1928 में साप्ताहिक के बढ़ते प्रसार एवं इसे अधिक सुन्दर और आकर्षक बनाने हेतु स्वतंत्र सम्पादक नियुक्त करने की आवश्यकता प्रतीत होने पर स्टेनले जेपसन को सम्पादक नियुक्त किया गया था। उसी समय से साप्ताहिक का स्थाई स्टाफ एवं सब कार्य अलग से किया जाने लगा। जेपसन ने साप्ताहिक की तरक़्क़ी के लिए बड़ा काम किया। चित्रांकन के लिए नई मशीनें आदि लगाकर इसे और उन्नत बनाया। उनके पश्चात सम्पादक माइकल ब्राउन ने चित्रों के लिए फोटो ग्रेव्योर पद्धति का प्रयोग शुरू कराया। सन 1935 तक इसमें केवल तिरंगे चित्र ही प्रकाशित होते थे। सन 1947 के बाद बहुरंगी चित्र प्रकाशित होने लगे। सन 1930 में इसमें बच्चों के लिए उपयोगी सामग्री छापी जाने लगी जिसे जेपसन की पत्नी 'आंटी विंडीज़' के नाम से लिखा करतीं थीं। यह पृष्ठ काफी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोकप्रिय हुआ। अपनी पचपनवीं वर्षगांठ पर इस पत्रिका ने शब्द पहेली छापना प्रारम्भ किया, जिसके सर्व शुद्ध हल पर पुरस्कार दिया जाता था। इस पहेली को लॉटरी बताते हुए याचिका दायर की गई थी। अदालत ने उसे अमान्य करते हुए शब्द पहेली को चतुराई की प्रतियोगिता करार दिया था। शब्द पहेली में भाग लेने वालों में विदेशों के लोग भी शामिल थे।

समय-समय पर पत्रिका के सम्पादक बदलते रहे और कलेवर में भी परिवर्तन होता रहा। माइकल ब्राउन ने सन 1948 में अवकाश ग्रहण किया। उनके स्थान पर सी.आर.जे.मांडी नियुक्त हुए, जिन्होंने लगभग 10 वर्ष तक सम्पादन किया। उनके पश्चात ए.एस. रमन सम्पादक हुए। रमन ने अपने कार्यकाल में साप्ताहिक में भारतीयता को प्रस्तुत किया। भारतीय चित्र कला, दर्शनीय स्थल एवं अनेक विषयों पर सचित्र सामग्री छापी। सन 1969 में सरदार खुशवंत सिंह तथा उनके बाद एम.वी. कामथ तथा प्रीतीश नंदी ने इस साप्ताहिक का सम्पादन किया। 1993 में अनिल धारकर सम्पादक हुए। कला, व्यक्तित्व, घटनाओं एवं सम सामयिक विषयों पर उत्तम सामग्री प्रकाशित करने वाली यह साप्ताहिक पत्रिका विशिष्ट थी, परन्तु प्रकाशकों ने इसे बन्द कर दिया।

सुलतानपुर (बरेली) से एक जनवरी 1888 को साप्ताहिक *'गुलज़ार-ए-अवध'* का प्रकाशन हुआ। 10 पृष्ठ का यह पत्र मंगलवार को प्रकाशित किया जाता था। सम्पादक-प्रकाशक मुंशी नरोत्तमदास थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। एक जनवरी 1888 को खेर, जिला अलीगढ़ से आठ पृष्ठ का पाक्षिक *'सरवर-ए-क़ैसरी'* निकला। सम्पादक सुखन लाल थे। मुरादाबाद से चार जनवरी 1888 को साप्ताहिक *'रहबर'* का प्रकाशन शुरू हुआ। हर बुधवार को निकलता था। प्रकाशक तथा सम्पादक पंडित प्रतापकृष्ण थे।

साप्ताहिक *'अमृतसर गज़ट'* अमृतसर से पाँच जनवरी 1888 को प्रकाशित हुआ। गुरुवार को निकलता था। प्रकाशक नियाज़ अली खाँ थे। 10 जनवरी 1888 को सोलापुर से *'मनोविहार'* का प्रकाशन हुआ। श्रीनिवास नारायण काकडे इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक थे। लखनऊ से पाक्षिक *'वकील क़ौमी'* 14 जनवरी 1888 को निकला। प्रकाशक मिर्ज़ा अब्दुल्ला 'हसरती' थे। वार्षिक शुल्क दस रुपये था। मुरादाबाद से साप्ताहिक *'बुलबुल-ए-हिन्द'* का प्रकाशन 16 जनवरी 1988 को हुआ था। प्रकाशक अहमद हसन बेग 'तस्ख़ीर' तथा सम्पादक मुंशी किशन स्वरूप थे। सोमवार को जारी होता था। वार्षिक मूल्य चार रुपये था।

मुरादाबाद जिले के सिरसी से 20 जनवरी 1988 को 28 पृष्ठ का मासिक *'आफ़ताब-ए-सुख़न'* प्रकाशित हुआ। प्रकाशक सैयद अहमद हसन 'मेहर' तथा सम्पादक सैयद अहमद 'बलीग़' थे। साप्ताहिक *'आईना-ए-रोज़गार'* जनवरी 1888 में ग़ाजीपुर से निकला। मासिक *'दाग़'* अजमेर से जनवरी 1888 में प्रकाशित हुआ। प्रकाशक माधवप्रसाद भार्गव थे। व्यापार सम्बन्धी मासिक *'मुअल्लिम-ए-तिजारत'* इंदौर से जनवरी 1888 में प्रकाशित किया गया। प्रकाशक अहमद अली खां 'शौक़' थे। लखनऊ से जनवरी 1888 में मासिक *'हामी-ए-इस्लाम'* निकला। 24 पृष्ठ की पत्रिका के प्रकाशक मौलवी शेख़ अब्दुल ग़फ़्फ़ार अंसारी थे।

'आगरा पंच' चार फरवरी 1888 को आगरा से प्रकाशित हुआ। यह साप्ताहिक पत्र था। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। पत्र के प्रकाशक मिर्ज़ा वहीद बेग अबुअलाई तथा सम्पादक अकबर हुसैन थे। यह हास्य-विनोद की पत्रिका थी। 'ग्वालियर गज़ट' में 'आगरा पंच' के दो अंकों पर प्रकाशित टिप्पणी इस प्रकार है-''यह ज़रीफ़ अख़बार पुरबहार आगरे में अर्से दो साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जारी है। बज़रिए तहरीर एडीटर साहब अख़बार मज़कूर वगरज़ तबादले हमारे पास पहुँचा। हमने उसको अव्वल से आख़िर तक देखा। वाकई यह अख़बार लताफ़त निगार मज़ामीन, ज़राफ़त व खुशख़ती आबो ताब व छपाई में एक उम्दा होनहार पर्चा है। हम बखुशी तबादला उसका ग्वालियर गज़ट से मंज़ूर करते हैं।''

साप्ताहिक *'सर मूर गज़ट'* अंबाला से एक मई 1888 को निकला। सोमवार को निकलता था। मुंशी सिराजुद्दीन सम्पादक-प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। इस पत्र के कलेवर के सम्बन्ध में 'दिलगुदाज़' लखनऊ ने, जिसके सम्पादक अब्दुल हलीम 'शरर' थे, लिखा है- ''सर मूर गज़ट एक बेमिसाल और ज़ोरदार पर्चा निकला है आज हिन्दुस्तान में कम अख़बार हैं जो इस वक़अत (प्रतिष्ठा) को पहुँचते हों। वह हिन्दुस्तान के बहुत बड़े बड़े अहम मामलात पर निहायत उम्दगी से बहस करता रहा और कर रहा है।

मासिक पत्रिका *'गुलशन-ए-दाग़'* रतलाम से जुलाई 1888 में निकली। महीने की पहली तारीख को प्रकाशित सोलह पृष्ठों की इस पत्रिका के प्रकाशक तथा सम्पादक अब्दुल रहीम 'सबा' थे। हैदराबाद से अगस्त 1888 में *'रिसाला हसन'* का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक हसन बिन अब्दुल्ला इमाद नवाज़ जंग थे। विशेष व्यक्तियों से वार्षिक 12 रुपये तथा साधारण लोगों से आठ रुपये शुल्क लिया जाता था। इस पत्र में जिस लेखक का लेख अथवा अनुवाद सबसे अच्छा होता था, उसे एक अशरफ़ी इनाम में दी जाती थी।

लखनऊ से सन 1888 में सासाहिक *'अशरफ गज़ट'* का प्रकाशन हुआ। प्रकाशक अख़्तरउद्दौला हाजी सैयद मोहम्मद अशरफ़ नक़वी, सम्पादक ख़्वाजा सैयद हसन खाँ तथा मुद्रक हकीम हाफिज़ मौलवी वारिस अली अल्वी थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये तथा पृष्ठ सँख्या 16 थी। इसी साल एक और साप्ताहिक *'अख़्तर-ए-हिन्द'* निकला। कोलकाता से शिर्ले ट्रेमीर्न ने व्यापारिक एवं वित्तीय विषयों पर केन्द्रित साप्ताहिक *'केपीटल'* का प्रकाशन 1888 में प्रारम्भ किया। इसमें *'इंडियन फायनेन्शियल रिव्यू'* भी समाहित था। यह पूँजीपतियों और नियोजकों के हितों को संरक्षित करने वाला पत्र समझा जाता था। इस दीर्घजीवी पत्र ने अनेक उपयोगी अंक प्रकाशित किए। स्वर्ण जयंती (1888-1938) और हीरक जयंती (1888-1948) अंक पठनीय हैं। सन 1888 में गंगाराम पंड्या ने गुजराती ब्राह्मणों के संगठन के उद्देश्य से *'गुर्जर हितकारी'* पत्र निकाला था। वर्ष 1888 में *'टीचर'* शैक्षिक पत्रिका का प्रकाशन विशाखापत्तनम से हुआ। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक सी. गोपालय्या थे।

एडवोकेट

'एडवोकेट' का प्रकाशन लखनऊ से बाबू गंगाप्रसाद वर्मा ने सन 1888 में किया। इसमें इलाहाबाद से प्रकाशित *'इंडियन यूनियन'* भी समाहित था। राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकाता के केटलाग में पृष्ठ 225 पर उल्लेख है-''बाबू गंगाप्रसाद को पत्रकारिता का अनुभव था, क्योंकि लखनऊ से वे सन 1883 से उर्दू साप्ताहिक प्रकाशित कर रहे थे।'' यह सप्ताह में दो बार गुरुवार और रविवार को छपने लगा। एक अंक की कीमत एक आना होती थी। यह बड़े आकार 50 गुणित 33 से.मी. में छपता था। भारत की गतिविधियों के सम्बन्ध में इंग्लैण्ड के समाचारपत्रों की प्रतिक्रिया से यह समाचारपत्र पाठकों को अवगत कराता रहता था। 15 अप्रैल 1926 के अंक में 'एडवोकेट' ने लिखा- वाइसराय द्वारा नमक कर के प्रमाणीकरण से देश उद्विग्न हो उठा। इस सम्बन्ध में 'एडवोकेट' ने 'क्राइसिस इन इण्डिया' शीर्षक से ब्रिटिश प्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की टीकाएँ लंदन से छापी और 'नेशन, 'सटरडे रिव्यू' तथा 'स्पेक्टेटर' की राय से पाठकों को अवगत कराया।

मेरठ से *'देवनागरी गज़ट'* सन 1888 में प्रकाशित हुआ। चंद्रशेखर मिश्र के सम्पादन में *'धर्म दीपिका'* पत्रिका सन 1888 में निकली।

नज़्म

लखनऊ से पाक्षिक पत्रिका *'नज़्म'* का प्रकाशन सन 1888 में हुआ। हर महीने की पाँच तथा बीस तारीख को निकलती थी। सम्पादक-प्रकाशक द्वारका प्रसाद 'उफ़क़' एवं सहायक सम्पादक रामसहाय 'तमन्ना' थे। पृष्ठ सँख्या 12 थी। वार्षिक शुल्क चार रुपये था।

पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों में चलने वाली आपसी नोक-झोंक एवं वाद-विवाद के सम्बन्ध में जिनमें मुक़दमेबाज़ी की नौबत आ गई थी, का उल्लेख करते हुए 'नज़्म' ने लिखा "हम अफ़सोस के साथ मुंदर्जाज़ेल मुक़दमात का ज़िक्र करते हैं जो एडीटरान उन अख़बार पर क़ायम उनकी हुर्मत उनकी आबरू पर धब्बा लगाते हैं। एडीटरान अख़बार मुल्की रिफार्मर समझे जाते हैं उनके वास्ते ऐसे मुक़दमात निहायत शर्मनाक हैं- (1) लाला हरवंस राय एडीटर व मालिक अख़बार 'अंबाला गज़ट' को फ़हश (अश्लील) लिखने पर एक माह क़ैद और चालीस रुपये जुर्माना हुआ। (2) देहली के पर्चे 'दोस्त' पर नॉलिश लॉयबल दाखिल हुई। (3) 'बुलबुल-ए-हिन्द' के एडीटर व मालिक ने अख़बार 'ख़ैरपुर' मुरादाबाद पर नालिश की।"

इसी अंक में दिल्ली में कांग्रेस की सभा की ख़बर दी गई- "10 सितंबर 1888 को देहली में एक बहुत बड़ा जल्सा कांग्रेस का टाउन-हॉल में हुआ। जिसमें ख़्वाजा अली मोहम्मद भीमजी रईस बम्बई और जनाब मुरलीधर साहब वकील, अंबाला और जनाब उमराव मिर्ज़ा साहब 'हैरत' ने निहायत उम्दा स्पीच यके बाद दीगरे ने दी। हाज़रीन निहायत खुश हुए और बड़ी बड़ी तारीफ़ें हुईं। जनाब 'हैरत' ने एक दर्दअंगेज नज़्म भी पढ़ी जिस पर नारा-ए-तारीफ़ बुलंद हुए थे। इस जल्से में तक़रीबन एक हज़ार मुअज़्ज़ि हिन्दू और पाँच सौ बाइज़्ज़त मुसलमान और बारह यूरोपियन मौजूद थे। जनाब हिफ़्ज़ुल्ला सा. कमिश्नर म्यूनिसिपल चेयरमैन थे।" यह पत्रिका चार साल तक प्रकाशित हुई। सन 1892 में इसका प्रकाशन बंद हो गया।

साप्ताहिक *'नसीम-ए-सम्भल'* सन 1888 में सम्भल (मुरादाबाद) से प्रकाशित किया गया था। प्रकाशक मुंशी अहमदउल्ला आज़िज़ थे। सन 1888 में सम्पादक कालीचरण मुखोपाध्याय ने कोलकाता से साहित्यिक-सांस्कृतिक मासिक *'बांसुरी'* का प्रकाशन किया। 24 पृष्ठ की मासिक *'भार्गव पत्रिका'* सन 1888 में जयपुर से प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक बाबू हरदयाल सिंह तथा प्रकाशक बाबू गौरीशंकर थे। पत्रिका भार्गव समाज के मुख पत्र के रूप में निकली।

भारत भानु

'भारतभ्राता'[1] में *'भारत भानु'* के प्रकाशन का विवरण मिलता है-"इसे अवश्य देखिए- सर्वसाधारण को विदित किया जाता है कि जो भारत भानु मासिक पत्र सन 1888 में उदयपुर (मेवाड़) से निकालना प्रारम्भ किया था, और वह किसी विशेष कारण से बन्द हो गया था अब वही भारत भानु, जोधपुरी भारत भानु, के नाम से, भारतभ्राता, रीवा, में साप्ताहिक रूप धारण करके 1 जनवरी सन 1893 से प्रकाशित होना प्रारम्भ होगा। हमारे परमप्रिय भारत भानु

1. भारतभ्राता, 18 नवम्बर 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के चाहक ग्राहक भारत भानु का उदय भारतभ्राता सम्मिलित देखकर अवश्य ही प्रसन्न होंगे। इसके लेख जिन लोगों ने देखे हैं वे पत्रों में इसके साथ सहानुभूति प्रकट कर चुके हैं इसलिए प्रशंसा करना अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना है। आशा है कि सर्वजन इसके ग्राहक बन कर एक पत्र में दो दो पत्र देख लिया करेंगे और उसके आनंद को उठाकर अपनी सम्मति प्रकाशित करेंगे। मूल्य इसका और भारतभ्राता का एक ही है और मैनेजर भारतभ्राता के पास ही भेजना चाहिए। यह वही भारत भानु भारतभ्राता से सम्मिलित किया जाता है कि जिसके लिए कई एक महाशय पुनः जीवित करने के लिए कई बार प्रेरण कर चुके हैं अब आशा है कि वे लोग इस हर्ष दायक समाचार को पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। इतिशम्

पण्डित देवराज पंचानन शास्त्री

एडिटर और मैनेजर भारत भानु''

इससे 'भारत भानु' के 1888 में उदयपुर से प्रकाशन होने तथा फिर बंद होने की प्रामाणिक सूचना मिलती है। पं. देवराज पंचानन शास्त्री पत्र के सम्पादक थे। 'भारतभ्राता' ने इसके पुनर्प्रकाशन का बीड़ा उठाया था, परन्तु यह प्रयास सफल नहीं हो सका। 'भारतभ्राता'[1] में यह सूचना भी मिलती है- ''विदित हो कि सब कुछ ठीक ठाक होकर अन्त में एक छोटी-सी परन्तु आवश्यक शर्त पण्डित देवराज पञ्चानन शास्त्रीजी को स्वीकार नहीं हुई अतः जोधपुरी भारत भानु भारतभ्राता में सम्मिलित नहीं होगा। भारतभ्राता निज नीति और स्वतंत्रता के साथ अपने ही पाठकों के सहायता के भरोसे देश सेवा में तत्पर रहेगा।''

सुधारक

तिलक से वैचारिक मतभेद होने पर गोपाल गणेश आगरकर 'केसरी' से पृथक हो गए। 15 अक्टूबर 1888 को उन्होंने पुणे से साप्ताहिक '*सुधारक*' का प्रकाशन-सम्पादन किया। यह द्विभाषी पत्र था, जिसमें मराठी और अँगरेजी में लेख, समाचार आदि छपा करते थे। नरमपंथी गोपाल कृष्ण गोखले का सहयोग 'सुधारक' को प्राप्त था। इसका वार्षिक शुल्क दो रुपये था। पुणे से बाहर के ग्राहकों को डाक खर्च के तेरह आना अलग से देना पड़ते थे।

'सुधारक' के उद्देश्यों की घोषणा करते हुए सम्पादक ने लिखा-''अभी जिन लोगों की सत्ता हम पर है, उनके और हमारे सुधार के बीच जमीन-आसमान का अन्तर है। अनुकरणीय बातें यदि हमने शीघ्र उठाई नहीं तो उत्तर अमेरिका के लोगों के समान हमारी दशा होगी। ऐसा प्रसंग न आए और भारतीयत्व, आर्यत्व कभी नष्ट न हो ऐसा सोचते हो तो जापान-चीन के समान आँखें खोल कर आजकल के जीवन कलह में हम कैसे टिकेंगे इसका विचार करके वैसा व्यवहार करना चाहिए। इस पर सोच कर सबको लिखना बोलना चाहिए। आजकल पढ़े लिखे लोग भी उल्टी बातें करते हैं। इसलिए राजनीतिक, सामाजिक, नैतिक और शास्त्रीय विचारों में हमें किस प्रकार चलना चाहिए यह बार-बार लोगों की दृष्टि में लाने का समाचारपत्रों के सिवाय दूसरा कोई साधन नहीं है। ऐसा सोचकर 'सुधारक' नाम का नया पत्र हम सोमवार दिनांक 15 अक्टूबर से प्रकाशित करने जा रहे हैं।''

'सुधारक' में मराठी और अँगरेजी में एक-एक लेख, दो या तीन स्फुट लेख, नीति-कहानियाँ, व्यंग्य, वर्तमान सार, विभिन्न स्थानों से प्राप्त समाचार आदि छापे जाते थे। 1890 में सीताराम गणेश देवधर भी सम्पादकीय सहयोगी बन गए। दूसरे साल में सुधारक का शुल्क

1. भारतभ्राता, 9 दिसम्बर 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो रु. से घटा कर बारह आना कर दिया गया। दो वर्ष पूरे होते-होते प्रसार सँख्या 2953 हो गई थी। सन 1891 के आखिर में गोखले ने 'सुधारक' से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। तब महादेव दिनकर जोशी ने अँगरेजी खण्ड का दायित्व सम्हाला। 17 जून 1895 को आगरकर का निधन होने पर देवधर सम्पादन-प्रकाशन करने लगे। वासुदेव राव पटवर्धन उनके सहयोगी थे। देवधर-पटवर्धन को डेक्कन एजुकेशन सोसायटी की सेवा शर्तों के कारण 'सुधारक' छोड़ना पड़ा। तब विनायक रामचन्द्र जोशी ने यह जिम्मेदारी सम्हाली। 1912 में हरिभाऊ आप्टे सम्पादक-प्रकाशक हुए। लेकिन आर्थिक संकट के चलते छह माह के भीतर ही 'सुधारक' बंद हो गया। रामचन्द्र विष्णु फड़तरे ने 'सुधारक' को पुनर्जीवित किया। 19 अक्टूबर 1914 को 'सुधारक' के पच्चीसवें वर्ष का पहला अंक निकला। तथापि पत्र चल नहीं पाया। 3 जुलाई 1916 को 'सुधारक' का प्रकाशन बंद हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम पत्रकारिता का प्रतिमान

1888

मलयाला मनोरमा

मलयालम पत्रकारिता की शुरूआत सन 1847 में तेलिचेरी से प्रकाशित 'राज्य समाचारम्' नामक अख़बार से हुई किंतु मलयालम पत्रकारिता के विकास का युग सन 1888 में '*मलयाला मनोरमा*' के प्रकाशन के साथ आरम्भ होता है। 'मलयाला मनोरमा' का प्रकाशनारम्भ कंदातिल वर्गीज मप्पिलई ने किया, जो कोचीन से सन 1881 में एक गुजराती व्यापारी देवजी भीमजी द्वारा प्रकाशित 'केरल मित्रम्' का सम्पादन कर चुके थे।

कंदातिल वर्गीज मप्पिलई ने मार्च 1888 में 100-100 रुपये के एक सौ शेयर बेच कर कम्पनी की स्थापना की, जिसने 'मलयाला मनोरमा' अख़बार का प्रकाशन आरम्भ किया। 'मलयाला मनोरमा' का पहला अंक शनिवार, 22 मार्च 1888 को निकला। चार पृष्ठ का यह साप्ताहिक पत्र इंग्लैंड में हाथ से बने कागज पर मुद्रित हुआ। इस दिन कोट्टायम में यह पत्र चर्चा का विषय रहा और खरीद कर पढ़ा गया। इस समाचारपत्र का चरित्र धर्मनिरपेक्ष था जो उस समय नई बात थी, क्योंकि पत्रकारिता के प्रारम्भिक काल में अनेक पत्र धार्मिक पक्षधरता के पोषण के उद्देश्य से प्रकाशित किए गए थे। 'मलयाला मनोरमा' ने समाचारों के सम्प्रेषण का नया मार्ग अपनाया। राजनीति और साहित्यक रुचि के समाचारों को महत्व दिया। कविता और कविकर्म को प्रतिष्ठित किया। फलस्वरूप 1891 में केरल कवि समाज की स्थापना हुई। बाद में यही संस्था विकसित होकर सभी विचारधाराओं के लेखकों और कवियों का एक ख्यातिप्राप्त मंच बनी। 'मलयाला मनोरमा' ने सामाजिक क्रांति का उद्घोष किया। दुर्भाग्य से 'मलयाला मनोरमा' के संस्थापक-सम्पादक का 47 वर्ष की अल्प आयु में जुलाई 1904 में निधन हो गया। वर्गीज मप्पिलई के भतीजे के.सी. मामन मप्पिलई जो 1895 में समाचारपत्र से जुड़े थे, 'मलयाला मनोरमा' के सम्पादक हुए। नये सम्पादक के कार्यकाल में केरल में जन जागृति के नये युग की शुरूआत हुई। पत्र ने केरल के धरती पुत्रों के लिए लड़ाई लड़ी, मलयाली अस्मिता आन्दोलन चलाया और जनता के राज्य का मुद्दा उठाया। इस प्रकार यह मलयाली जनता की धड़कन का केन्द्र बिन्दु बन गया। सन 1918 से यह सप्ताह में तीन बार प्रकाशित होने लगा। कलेवर भी बदला। बच्चों के लिए अलग सामग्री दी जाने लगी। प्रथम विश्व युद्ध में अपनी व्यापक समाचार प्रस्तुति के कारण इसकी प्रसार सँख्या खूब बढ़ी। इसी पत्र ने सर्वप्रथम केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयाला मनोरमा, (मलयालम) कोट्टायम, 22 मार्च 1888

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की रबर की खेती के व्यापारिक महत्व को प्रतिपादित किया। मलयाला मनोरमा 16 जनवरी 1928 से दैनिक समाचारपत्र के रूप में प्रकाशित होने लगा।

सर सी.पी. रामस्वामी अय्यर उस समय त्रावणकोर के दीवान थे। वे दबंग व्यक्ति थे। पहले तो दीवान ने पत्र को वशीभूत करने की कोशिश की परन्तु इसमें सफल नहीं होने पर एक सितम्बर, 1938 की अर्द्धरात्रि को राजा की फौज ने समाचारपत्र के दफ्तर को सील कर दिया। पत्र प्रकाशन की आज्ञा निरस्त कर दी गई। घोषणा की गई कि समाचारपत्र द्वारा जनता को सरकार के खिलाफ भड़काने वाले समाचार प्रकाशित करने की वजह से यह कार्रवाई करनी पड़ी। परन्तु ग्यारह दिन बाद ही पड़ोसी रियासत कोचीन से 'मलयाला मनोरमा' का प्रकाशन 13 सितम्बर 1938 से प्रारम्भ कर दिया गया। नौ माह तक प्रकाशित होने के बाद वित्तीय एवं अन्य कठिनाइयों के कारण बन्द हो गया। स्वतंत्रता के बाद 29 नवम्बर 1947 से इसका प्रकाशन पुनः प्रारम्भ हुआ। इस समय पत्र के मुख्य सम्पादक के.सी.मामन मप्पिलई थे।

मुख्य सम्पादक मामन मप्पिलई का 31 दिसम्बर 1953 को निधन हो गया। तब के. एम. चेरियन 'मलयाला मनोरमा' के सम्पादक हुए। इन्होंने समय की माँग के अनुरूप मुद्रणालय और समाचारपत्र दोनों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ की।

'मलयाला मनोरमा' ने देश की पत्रकारिता का अनेक अर्थों में नेतृत्व किया है। यह देश का पहला समाचारपत्र है जिसने पूरा अखबार एक स्थान से दूसरे स्थान पर फेसिमल प्रक्रिया से मुद्रण के लिए सम्प्रेषित करना प्रारम्भ किया। समाचारपत्र ने 22 मार्च 1988 को अपनी शताब्दी मनाई। उनके बाद सम्पादक के.एम.मैथ्यू हुये जिन्होंने अपने पिता के. एम. चेरियन से पत्रकारिता के संस्कार ग्रहण किए।

'मलयाला मनोरमा' के 16 संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं। केरल से 10 तथा मुम्बई, चेन्नै, बेंगलूरु, दिल्ली, बहराइन और दुबई से भी प्रकाशित हो रहा है। इसके अलावा वनिता, बलराम, मनोरमा वीकली, भाषोपासिनी और वीक जैसी उत्कृष्ट पत्रिकाएं भी प्रकाशित हो रही हैं। कालीकट से प्रकाशित 'मलयाला मनोरमा' मलयालम भाषा में प्रकाशित समाचारपत्रों में सबसे अधिक बिकने वाला दैनिक समाचारपत्र रहा है। इसी तरह कोट्टायम से प्रकाशित साप्ताहिक 'मलयाला मनोरमा' देश का सबसे अधिक प्रसारित आवधिक पत्र है।

अंजुमन नौमानिया लाहौर की पत्रिका *'रिसाला मदरसा उलूम-ए-इस्लामिया'* सन 1888 में लाहौर से प्रकाशित की गई थी। सम्पादक मुंशी ताजुद्दीन मुख़्तार थे। हैदराबाद से *'सफ़ीर-ए-दकन'* का प्रकाशन सन 1888 में हुआ था। इसके प्रकाशक मुंशी निसार अली शोहरत तथा सम्पादक सैयद अमजद अली 'अशहरी' थे।

ग्वालियर के पंडितों ने सद्विचारिणी सभा की स्थापना की तथा सन 1888 में *'सद्विचारिणी'* साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू किया। यह पत्रिका तीन वर्ष तक चली। सन 1900 में मासिक पत्रिका के रूप में पुनः निकली। अनन्तकृष्ण शास्त्री सम्पादक थे। संस्कृत, मराठी कविताएँ, हास्य व्यंग्य, निबन्ध, चुटकुले आदि छपते थे। जनवरी 1901 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

मुजफ्फरपुर से पंडित अम्बिकादत्त व्यास तथा पंडित भवानीचरण मुखोपाध्याय के सम्पादन में *'सारन सरोज'* सन 1888 में प्रकाशित हुआ। सन 1888 में साहित्यिक पत्रिका *'सुमन अभिरंजनी'* जुलुमूरू से प्रकाशित हुई। यह तेलुगु भाषा की मासिक पत्रिका थी। डबीरू कृष्णमूर्ति सम्पादक-प्रकाशक थे। नवम्बर 1888 में तेलुगु मासिक पत्रिका *'सत्यदूत'* का प्रकाशन हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

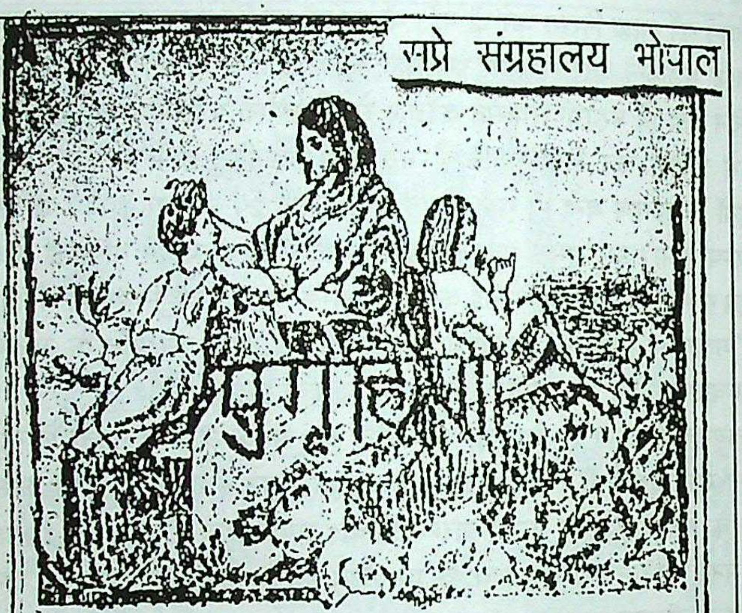
सप्रे संग्रहालय भोपाल

THE SUGRIHINI

संपादिका —— श्रीमती हेमन्त कुमारी देवी

खण्ड १	रतलाम - चैत्र संवत् १९४४	संख्या १

सूची।

१ सती गङ्गा	—१७	पन्ना	७ प्राचीन कालमें शासन किस तरह से	—२१	पन्ना
२ नारी धर्म्म	—१७	"	८ फोटोग्राफी	—२१	"
३ पशु की प्रभु भक्ति	—१८	"	९ कन्याविक्रय शतक	—२२	"
४ आदर्श माता	—१८	"	१० समालोचना	—२३	"
५ आरम्भ	—२१	"	११ विविध वृत्तान्त	—२४	"
६ उन्नत नारीजीवन	—२१	"			

सुखसंवादप्रेस लखनऊमें पण्डित बिहारीलालने मुद्रितकिया

(न्योछावर — वार्षिक पेशगी —— १))

सुगृहिणी, रतलाम, मार्च 1888

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक-प्रकाशक डी. अनंतम थे। क्रिश्चियन लिटरेचर ने इसका प्रकाशन किया था।

सुगृहिणी

'सुगृहिणी' सन 1888 में रतलाम से प्रकाशित हुई। हेमन्त कुमारी देवी सम्पादक-प्रकाशक थीं। उन्हें हिन्दी की प्रथम महिला सम्पादक होने का गौरव प्राप्त है। हेमंत कुमारी देवी के पति मध्यभारत की रतलाम रियासत में दीवान होकर गए और सन 1887 से 89 तक वहाँ रहे। वहीं से इन्होंने हिन्दी में अप्रैल 1888 में 'सुगृहिणी' नामक मासिक पत्रिका निकाली। इसका मुद्रण लखनऊ के सुख संवाद प्रेस से होता था। विषय सूची से पता चलता है कि पत्रिका का विषय फलक व्यापक था- सती गंगा, नारी धर्म, पशु की प्रभु भक्ति, आदर्श माता, स्मारक, उन्नत नारी जीवन, अगले युगों में राक्षस किन्हें कहते थे, फोटोग्राफी, कन्या विलाप शतक, समालोचना और विविध वृत्तांत आदि।

पत्रिका का वार्षिक मूल्य एक रुपया था। फिर भी ग्राहकों का शुल्क समय पर नहीं आता था जिससे प्रकाशन में कठिनाई होती थी। चौथे वर्ष के प्रथम अंक में पत्र के व्यवस्थापक ने एक अपील निकाली-''पाठिका 'सुगृहिणी' केवल तीन वर्ष की बालिका है। इस छोटी उम्र में बिचारी पर जैसी विपद की आंधी बीती है, इसके पुन: प्रकाशन की आशा नहीं थी। परन्तु धन्य है उस विपदहारी भगवान को जिसने इसकी रक्षा की। अब हमारी पाठक पाठिकाओं से प्रार्थना है कि इस विपद के समय कृपादृष्टि कीजिए प्राय: 200 रुपये ग्राहक ग्राहिकाओं के निकट प्राप्य हैं..... ऋण ग्रस्त रहकर पत्रिका प्रकाशन करना बड़ा कठिन कार्य है। जिस देश की स्त्रियाँ धर्म-लाभ के लिए तीर्थयात्रा और ब्राह्मण भोजन में हज़ारों रुपये दान करती हैं उनके निकट से इस पत्रिका की वार्षिक एक रुपया न्यौछावर प्राप्ति की आशा करना अनुचित नहीं।'' परन्तु हिन्दी समाज पर इस अपील का असर नहीं हुआ और 'सुगृहिणी' अधिक नहीं चल सकी। 'सुगृहिणी' स्त्री-उपयोगी समाचार भी छापती थी। दो खबरें प्रस्तुत हैं[1]-

(एक)-''बम्बई के एक भले मानस ने विज्ञापन दिया है कि जो हिन्दू स्त्री एल.एम.एस. की परीक्षा पास करके उसके बाद डॉक्टरी का काम करेगी उसे वे 15 रु. मासिक वृत्ति देंगे।''

(दो)-''भाऊनगर के राजा साहब ने स्त्री शिक्षा के प्रति अपने गाढ़े अनुराग का दृष्टान्त दिखाया है। एक पत्र लेखक ने लिखा है कि एक बालिका विद्यालय में वहाँ की राजकुमारी भी पढ़ती हैं। पुरस्कार दान के समय राजकुमारी ने अपना शिल्प कार्य भी दिखाया था जो कि बहुत उत्तम था इसलिए उन्हें भी एक पुरस्कार मिला है।''

उत्कल की प्रथम नारी पत्रिका *'आशा'* का प्रकाशन सन 1888 में हुआ। इसके सम्पादक साधुचरण राय थे। यह विक्टोरिया प्रेस कटक में छपती थी। ब्रह्म समाज ने इसका प्रकाशन किया। कुछ समय के लिए 'आशा' का प्रकाशन बंद रहा। सन 1892 में इसे सेवाराय ने पुन: प्रकाशित किया।

माधवप्रसाद धवन ने सन 1888 में मिर्ज़ापुर से साप्ताहिक *'खिचड़ी समाचार'* का प्रकाशन किया। यह हिन्दी-उर्दू-अँगरेजी में निकलता था। इसका ध्येय वाक्य था-''साँच को आँच क्या।'' राष्ट्रीयता का पक्षधर यह पत्र सामाजिक कुरीतियों का विरोधी था। हिन्दू-मुसलमानों की एकता का समर्थक था। वैचारिक दृढ़ता के कारण इस पत्र को सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा और सम्पादक धवन को जेल यात्रा करनी पड़ी। उन्होंने 33 वर्ष तक 'खिचड़ी समाचार'

1. सुगृहिणी, जुलाई 1888

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सम्पादन किया। सन 1922 में धवन का स्वर्गवास हो जाने पर अख़बार बंद हो गया। सन 1928 में महादेव प्रसाद ने पुनः 'खिचड़ी समाचार' का प्रकाशन किया। लेकिन फिरंगी हुकूमत की मुख़ालफत के कारण सरकार ने जमानत माँगी। सम्पादक ने झुकने के बजाए अख़बार को बंद करने का मार्ग चुना। मुकुंदराव गणपतराव पाटिल के सम्पादन में सन 1888 में मासिक '*दीन मित्र*' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह सत्य शोधक आंदोलन का प्रवक्ता था। पहले सोमठाणे और फिर तरबड़ी, जिला-अहमदनगर से निकलने वाला यह पत्र तीस वर्ष तक चला।

कन्नड भाषा के दैनिक पत्र '*सर्वोदय प्रकाशिका*' का प्रकाशन सन 1888 में हुआ। बी. नरसिंहराव इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। यह छह महीने तक दैनिक अख़बार के रूप में निकल पाया और बाद में साप्ताहिक हो गया। सन 1888 में गंगाराम पंड्या ने '*गुर्जर हितकारी*' निकाला। मडगांव से मराठी भाषा का '*श्रीखण्ड*' सन 1888 में प्रकाशित हुआ। सन 1888 में चेन्नै से पत्रिका '*इण्डियन इंजीनियरिंग*' का प्रकाशन किया गया। चेन्नै से सन 1888 में '*एशिया स्पोर्टिंग जर्नल*' प्रकाशित हुआ। राजकोट से गुजराती भाषा के '*काठियावाड टाइम्स*' का प्रकाशन सन 1888 में हुआ।

1889

सद्धर्म प्रचारक

स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम) ने कन्या महाविद्यालय जालन्धर के संस्थापक लाला देवराज के सहयोग से '*सद्धर्म प्रचारक*' का प्रकाशन 19 फरवरी 1889 को किया। यह उर्दू साप्ताहिक था। सन 1908 से हिन्दी में निकलने लगा। 'सद्धर्म प्रचारक' में धार्मिक और सामाजिक विषयों के अलावा सम-सामयिक राजनीति पर भी टिप्पणियाँ, लेख आदि होते थे।

'सद्धर्म प्रचारक' के विषय में 'हिन्दी कोविद रत्नमाला' (1913) ने लिखा-"आर्य समाज के एक बड़े भाग का यह पहिला पत्र था। लगभग 23 वर्षों तक यह पत्र आपके (महात्मा मुंशीराम) हाथ में रहा। उसके बाद यह गुरुकुल कांगड़ी का मुखपत्र बन गया। आर्य समाजियों में यह पत्र बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था और इसके लेखों का बहुत कुछ प्रभाव उन लोगों पर पड़ता रहा। जब 'सद्धर्म प्रचारक' उर्दू में निकलता रहा तब महात्मा मुंशीराम उसमें प्रायः हिंदी के राष्ट्रभाषा होने के पक्ष में लेख लिखते रहे। उर्दू लेखन में हिंदी के शब्दों का प्रयोग करते रहे। इस शैली का प्रभाव पंजाब के उर्दू पत्रों पर यहाँ तक पड़ा कि उनकी भाषा हिंदी मिश्रित उर्दू कही जा सकती है।

"सन 1908 से यह पत्र हिंदी में निकलने लगा। इस परिवर्तन का प्रभाव 'सद्धर्म प्रचारक' की आर्थिक अवस्था पर बहुत बुरा पड़ा, क्योंकि पंजाब में उस समय हिंदी का चलन बहुत कम था। परन्तु सैकड़ों पंजाबियों ने 'प्रचारक' के कारण देवनागरी अक्षरों का अभ्यास किया। सच तो यह है कि 'सद्धर्म प्रचारक' के कारण पंजाब में हिंदी का बहुत कुछ प्रचार हुआ। इस समय यह हिंदी के प्रतिष्ठित पत्रों में गिना जाता है।"

'प्रभा' ने (1913) 'सद्धर्म प्रचारक' के लिए लिखा था- "यह पत्र अपनी प्रणाली के लिए हिंदी भाषा में एक ही कहा जा सकता है। इसके कर्म-वीर सम्पादक की सम्पादन-कार्य-कला साहित्य के समुद्र में डुबा कर देश की आवश्यकता के सच्चे तत्वों का अनुभव कराती है। इसकी टिप्पणियाँ एवं लेख, विशेष मार्मिक एवं प्रशंसा के योग्य होते हैं। पंजाब प्रान्त में राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रचार करने में, इस पत्र के जीवन का एक भारी अंग बीता है, बीत रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और बीतेगा। इसके सब कार्य-कर्ता धन्यवाद के पात्र हैं।''

'सद्धर्म प्रचारक' बंद होने की सूचना 'हिन्दी सर्वस्व' तथा 'जयाजी प्रताप'[1] में छपी थी- ''आजकल हिन्दी के ऊपर शनिग्रह की दृष्टि बड़ी क्रूर पड़ रही है इसके दो साप्ताहिक पत्र 'भारत सुदशा प्रवर्तक' और 'सद्धर्म प्रचारक' बन्द हो गये हैं।''

मासिक *'आरोग्य सुधाकर'* फरुखनगर, जिला-गुड़गांव से सन 1889 में निकला। इसके सम्पादक पं. मुरलीधर पाठक थे। 'भारतभ्राता'[2] में इस पर परिचय-टिप्पणी मिलती है- ''हम अत्यन्त हर्ष के साथ इस मासिक पत्र की प्राप्ति स्वीकार करते हैं यह पत्र फ़रुखनगर जिला गुड़गांव में प्रत्येक पूर्णमासी को प्रकाशित होता है-सम्पादक इसके प्रख्यात पंडित मुरलीधर पाठक हैं- आशय इसके स्वास्थ रक्षा साधन चिकित्सा और रसायन अर्थात् ऐसी वस्तुओं के गुण दोष प्रगट करना है जो प्राय: खाने पीने के काम आती है। इस पत्र में संस्कृत वैद्यकों के प्रमाण और भाषान्तर अर्थ जो दिए जाते हैं उसे और भी पुष्ट करते हैं-साथ ही साथ हकीमी और कहीं कहीं डाक्टरी मत का प्रकाश करना इस पत्र को और भी दीप्तमान कर देता है मुख्य उद्देश्य इसका लोगों को अनेकश: क्लेशों से बचाना और अपनी सनातन विद्या और चिकित्सा को उन्नति देना है। मूल्य भी इसका बहुत थोड़ा सर्वसाधारण के लिए केवल आठ आना ही है। ऐसे पत्र की हिन्दुस्तान में बहुत ही आवश्यकता थी-आशा है कि सभी लोग जो अपने शरीर धन की रक्षा चाहते हैं अवश्य इसे लेवेंगे। हम तो बड़े आनन्द के साथ पल्टा स्वीकार करते हैं।''

बंगला भाषा का मासिक पत्र *'आर्य प्रतिभा'* सन 1889 में कोलकाता से प्रकाशित हुआ। सम्पादक वैष्णव चरण थे। एक प्रति का मूल्य चार आना था। एक जून 1889 को लाहौर से *'भारत भगिनी'* नामक मासिक पत्रिका श्रीमती हरदेवी ने प्रकाशित की। 'सुगृहिणी'[3] में 'समालोचना' शीर्षक के अन्तर्गत 'भारत भगिनी' का परिचय दिया गया है-''इस मासिक पत्रिका की सम्पादिका हमारी परम मान्या श्रीमती हरदेवी जी हैं। इस साल की पहली जून से इस अवलोकित मनोरंजिनी पत्रिका का प्रकाशन लाहौर नगर से आरम्भ हुआ है।'' 'भारत भगिनी' सन 1906 तक प्रकाशित हुई। नारी जागरण और स्त्रियों में साहित्यानुराग उत्पन्न करने में इस पत्रिका ने महत्वपूर्ण योगदान किया।

अख़बार *'दबीर-ए-हिन्द'* आगरा से सन 1889 में प्रकाशित हुआ। मास में तीन बार हर दसवें दिन प्रकाशित किया जाता था। प्रकाशक मोहम्मद अमीनउद्दीन फ़ारुक़ी थे। पृष्ठ सँख्या आठ थी। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। पत्र में दो कालम होते थे। देश, विदेश के एवं स्थानीय समाचार छपते थे। इस्लामी देशों के तथा धर्म सम्बन्धी समाचार अधिक दिए जाते थे। लखनऊ से शेर शायरी का 16 पृष्ठीय मासिक *'इंतिख़ाब'* सन 1889 में निकला। सम्पादक एवं प्रकाशक मोहम्मद इस्तफ़ा खुर्शीद लखनवी थे। इसमें देश के प्रसिद्ध शायरों की रचनाएँ प्रकाशित होती थीं। मुरादाबाद से सन 1889 में साप्ताहिक *'कर्नेल'* का प्रकाशन हुआ था। इसके सम्पादक-प्रकाशक पंडित बनवारीलाल मिश्र थे। विद्याभूषण प्रेस से छपता था। वर्षगांठ का अंक कवितामय होता था तथा उसमें प्रत्येक समाचार छंदबद्ध होता था। पंडित बनवारीलाल

1. जयाजी प्रताप, 1 सितम्बर 1915
2. भारतभ्राता, एक अप्रैल 1889
3. सुगृहिणी, सितम्बर 1889

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्र ने मुरादाबाद से हिन्दी की मासिक पत्रिका 'भारत प्रकाश' भी निकाली थी जो आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार का खंडन करती थी। *'ख़ैर-अंदेश'* का प्रकाशन अम्बाला से सन 1889 में हुआ। यह साप्ताहिक समाचारपत्र था जो रविवार को प्रकाशित किया जाता था। प्रकाशक लाला मुरलीधर तथा सम्पादक पंडित ब्रजमोहन दत्तात्रय 'कैफ़ी' थे। साप्ताहिक की एक प्रति का मूल्य एक आना और वार्षिक शुल्क चार रुपये था।

मासिक *'केरल कोकिल'* मुम्बई से सन 1889 में कृष्ण नारायण आठले के सम्पादकत्व में निकला। तदन्तर अच्युत चिंतामणि भट्ट इसे मुम्बई से पुणे ले आए। तीन साल तक चलने के बाद इसे कुछ समय तक पुणे की हिन्द एजेंसी ने भी प्रकाशित किया।

सन 1889 में कोलकाता से प्रकाशित *'जानकी'* का प्रकाशन असमिया विद्यार्थियों के एक समूह ने किया था। इसके सम्पादक चंद्र कुमार अग्रवाल स्वयं भी विद्यार्थी थे। उन्होंने असम में पत्रकारिता की नींव को सुदृढ़ बनाया। लक्ष्मीनाथ बैजबरुआ, हेमचंद्र गोस्वामी, कनकलाल बरुआ, रघुनाथ चौधरी जैसे दिग्गज कलमकार इससे जुड़े थे।

फ़रुखनगर (गुड़गांव) से सन 1889 में कन्हैयालाल सिंह के सम्पादन में मासिक *'जाट समाचार'* प्रकाशित हुआ। यह मुख्य रूप से जातीय और धार्मिक पत्र था। सन 1889 में काशी से कुल यशस्वी शास्त्री ने *'धर्म सुधावर्षण'* मासिक निकाला। साप्ताहिक *'नसीम-ए-सहर'* मिर्ज़ापुर से सन 1889 में प्रकाशित हुआ। आठ पृष्ठ का यह पत्र हर बुधवार को निकलता था। सम्पादक बाबू दीपेन्द्रनाथ बोस 'साहिब कुरान' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

अमृतसर से साप्ताहिक *'पंजाब'* का प्रकाशन सन 1889 में किया गया था। पृष्ठ सँख्या बारह थी। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। मौलवी गुलाम मोहम्मद अख़्तर कलानूरी प्रकाशक एवं सम्पादक थे। यह साप्ताहिक सर सैयद अहमद की विचारधारा से प्रभावित था। सियालकोट से साप्ताहिक *'पंजाब गजट'* का प्रकाशन सन 1889 में किया गया था। पंजाब प्रेस में छप कर इतवार को जारी होता था। सम्पादक गुलाम क़ादिर फ़सीह थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। जयपुर से सन 1889 में *'भारत मार्त्तण्ड'* का प्रकाशन हुआ। साप्ताहिक *'महबूब-उल-क़ुलूब'* का प्रकाशन हैदराबाद से सन 1889 में किया गया था। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक अब्दुल सलाम थे।

दीवानबहादुर कृष्णमाचारी ने अनेक वर्षों तक तमिल और तेलुगु भाषा की सचित्र पत्रिका *'महारानी'* का प्रकाशन और सम्पादन किया। विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बुनियादी कार्य किए। सन 1889 में साहित्यिक पत्रिका *'महारानी'* का प्रकाशन चेन्नै से हुआ था।

मुस्लिम हेरल्ड

'मुस्लिम हेरल्ड' सन 1889 में इसे मुम्बई से प्रकाशित किया गया था। उर्दू और अँगरेजी में प्रकाशित किया जाता था। प्रकाशक मोहम्मद यूसुफ थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये, अर्द्धवार्षिक तीन रुपये, त्रैमासिक शुल्क दो रुपये तथा एक माह का शुल्क आठ आना था। विज्ञापन की दर चार आना प्रति पंक्ति थी। इस दैनिक पत्र की एक प्रति का मूल्य एक पैसा था। पृष्ठ सँख्या आठ थी। प्रथम पृष्ठ पर 'ख़बरों का चयन' शीर्षक के अंतर्गत संक्षिप्त समाचार प्रकाशित किए जाते थे। दूसरे पृष्ठ पर सम्पादकीय छपती थी, जिसमें समाचारों पर टिप्पणी भी होती थी। अंतिम पृष्ठ पर बाज़ार भाव, पत्रिका के शुल्क का विवरण तथा विज्ञापन छापा जाता था। अदालत के समाचार और पुलिस के समाचार भी छपते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान समाचार

अजमेर से मनीषी समर्थदान ने 3 अप्रैल 1889 को साप्ताहिक *'राजस्थान समाचार'* का सम्पादन-प्रकाशन किया। 'भारतभ्राता'[1] में उल्लेख मिलता है- ''हर्ष की बात है कि हिन्दी साहित्य की उन्नति की ओर हमारे कई एक सहवर्त्तियों का ध्यान फिर भी इन दिनों किञ्चित मात्र हो चला है, परन्तु शोक की बात इतनी ही है कि मुख्य आशय को छोड़ कर हमारे सहवर्त्तियों में से अनेकश: महाशय एक न एक और ही शाखा पर जा पड़े हैं।

''इस विषय पर श्री कृष्णलाल गुप्त लिखित निम्न लेख सहवर्त्ती राजस्थान समाचार में प्रकाशित हुआ है- एक ऐसे षट मासिक या वार्षिक सूची पत्र की आवश्यकता है जिसमें सब. आर्यवर्ती हिन्दी समाचारपत्रों की सूची विषय और पते सहित हो। इससे कई प्रकार के लाभ हैं- 1. प्रथम तो हिन्दी साहित्य की दशा सब पर भलीभाँति प्रगट हो जायगी। 2. जिस जिस विषय का अभाव होगा उसके बढ़ाने का प्रयत्न किया जावेगा। 3. जिस विषय के पत्र कम निकलते होंगे नये पत्र निकालने वाले उसी विषय के पत्र सम्पादन करने की चेष्टा करेंगे। 4. हिन्दी रसिक ग्राहक गण जिन पत्रों के देखने की अभिलाषा रखते होंगे या सब हिन्दी समाचारपत्रों को देखना चाहते होंगे तो ठिकाना जानने से देख सकेंगे। 5. समाचारपत्रों की ग्राहक सँख्या बढ़ाने में सहायता मिलेगी। 6. इस सूची पत्र की बिक्री से भी कुछ लाभ होगा।

''गुप्त महाशय कहते हैं- इस उपकारी कार्य्य को कोई सम्पादक महाशय अवश्य कृपा कर करें। जो पत्र सम्पादक महाशय इस कार्य्य को करेंगे उनको अधिक परिश्रम न करना होगा क्यौंकि कुछ पत्र तो उनके पास परिवर्तन में आते ही होंगे, शेषों के अवलोकनार्थ एक विज्ञापन पत्रों में मुद्रित करा दें। अपने पत्र सम्पादक एक एक प्रति उनके पास अवश्य ही भेज देंगे।''

'भारतभ्राता'[2] में एक और सूचना छपी है- ''हिन्दी भाषा का अर्द्ध साप्ताहिक पत्र- गत एक अप्रैल से अजमेर का सहयोगी 'राजस्थान' पत्र 'साप्ताहिक' से 'अर्द्ध साप्ताहिक' हो गया अर्थात प्रथम सप्ताह में केवल एक बार प्रकाशित होता था अब दो बार अपने उसी आकार और वैसे ही स्वच्छ अक्षरों में प्रकाशित हुआ करता है। अभी तक अर्द्ध साप्ताहिक का एक अङ्क हमारे पास आया है लेख तथा स्वच्छता पूर्व्व से किसी प्रकार न्यून नहीं है वरन् विशेषता यह है कि प्रत्येक सप्ताह में एक उत्तम चित्र भी रहा करेगा। मूल्य बाहरी ग्राहकों के लिए 5 रुपये और स्थानीय ग्राहकों के लिए 4 रुपये डाक व्यय सहित किञ्चित अधिक नहीं है। ऐसे कठिन समय में सहयोगी का यह उन्नति प्राप्त करना निस्संदेह अत्यानन्द का विषय है।''

सन 1904 में कुछ समय के लिए यह पत्र दैनिक भी हुआ था। दैनिक समाचारपत्र के रूप में प्रकाशित इस पत्र की प्रस्तुति और चित्र सज्जा आदि में भी परिवर्तन हुए। क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समाचारों के अतिरिक्त पुस्तक समीक्षा आदि भी उसमें प्रकाशित होने लगी। इसका आकार 45 गुणित 25 से.मी. और पृष्ठ संख्या चार थी। इसका ध्येय वाक्य था- ''सत्ये नास्ति भयं क्वचित।'' प्रथम पृष्ठ पर देश-विदेश की प्रमुख खबरें, दूसरे पृष्ठ पर सम्पादकीय और एक लेख, तीसरे पृष्ठ पर समाचार और चौथे पृष्ठ पर विज्ञापन छपते थे। रविवार को छोड़कर बाकी छह दिन छपता था। दैनिक राजस्थान समाचार का वार्षिक शुल्क अजमेर में आठ रुपये तथा बाहर दस रुपये था। 13 मई 1904 के अंक (वर्ष 16, अंक 36) में प्रकाशित घोषणा के

1. भारतभ्राता, 19 अगस्त 1892
2. भारतभ्राता, 12 अप्रैल 1895

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

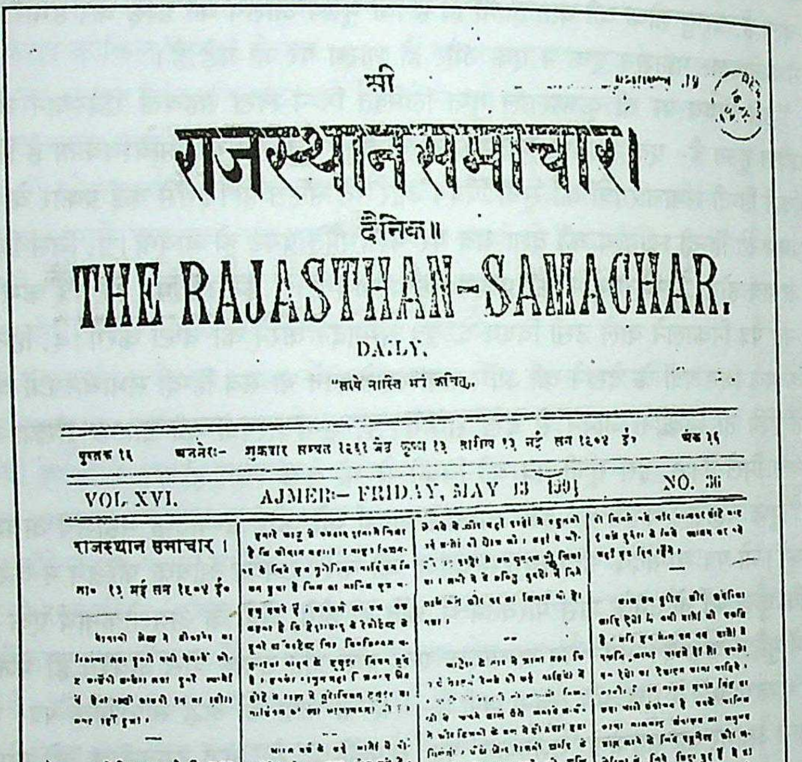

श्री

राजस्थान समाचार।

दैनिक॥

THE RAJASTHAN-SAMACHAR.

DAILY.

"सत्ये नास्ति भयं क्वचित्‌"

पुस्तक १६ अजमेरः- शुक्रवार सम्वत १९४१ जेठ कृष्णा १३ तारिख १३ मई सन १९०४ ई० अंक ३६

VOL. XVI. AJMER- FRIDAY, MAY 13 1904 NO. 36

राजस्थान समाचार।

ता० १३ मई सन १९०४ ई०

राजस्थान समाचार, अजमेर, 3 अप्रैल 1889

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार अग्रिम शुल्क भेजने वालों के लिए उपहार योजना चलाई गई थी।

बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने इस पत्र के बारे में लिखा- ''जो कुछ हो राजस्थान समाचार के प्रचार से हमें बड़ी प्रसन्नता है। इसका कारण यही है कि वह रजवाड़ों का अख़बार है। रजवाड़ों में अख़बार की बड़ी ज़रूरत है और रजवाड़े भारतवर्ष भर में शिक्षा आदि में सब प्रांतों से पीछे हैं। राजस्थान समाचार ने निकल कर रजवाड़ों में हिन्दी का प्रचार करने की चेष्टा की है और वहाँ के लोगों में समाचार पढ़ने की रुचि बढ़ायी है। यह बहुत ही साधु उद्देश्य है। चेष्टा करने से वह बहुत कुछ सफलता लाभ कर सकता है। वहाँ के अभावों और आवश्यकताओं पर ध्यान देता हुआ उक्त पत्र अपने पक्ष को बहुत कुछ ठीक कर सकता है। इसी प्रकार विचारपूर्वक चलने से कुछ दिनों में उक्त पत्र उन गुणों का संचय कर सकता है जो एक हिन्दी दैनिक पत्र के लिये दरकार हैं। हमारी सदा इच्छा है जिस प्रान्त का वह पत्र है, उसमें उसका यश बढ़े।'' सन 1908 में 'राजस्थान समाचार' का प्रकाशन बंद हो गया।

'*विद्या विनोदिनी*' सन 1889 में प्रकाशित हुई। यह केरल में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को जगाने वाली मलयालम पत्रिका थी। '*वेदभाष्य*' नामक पत्रिका का प्रकाशन सन 1889 में हुआ। जोधपुर से मासिक '*सहाब-ए-सुख़न*' का प्रकाशन सन 1889 में हुआ था। इसके सम्पादक अबू हसन 'शर्फ़ी' तथा श्यामसुन्दर 'सरखुश' थे। इसी के साथ जोधपुर से '*नग़मा-ए-यार*' पत्रिका भी निकली थी, जिसके सम्पादक मोहम्मद इब्राहीम 'मद्दाह' थे।

दैनिक '*सफ़दाना अख़बार*' का प्रकाशन सन 1889 में दिल्ली से किया गया था। बड़े आकार में सफ़ेद कागज़ पर आठ पृष्ठ का निकलता था। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। इसमें नवीन समाचार, टीका तार द्वारा प्राप्त समाचार, ज्ञानवर्धक लेख तथा देश की समस्याओं पर बहस छपती थी। अँगरेजी के समाचारपत्रों से समाचार लिए जाते थे।

मुम्बई से सन 1889 में सासाहिक '*हिन्दी पंच*' निकला था। 'हिन्दी पंच' ने अपने दीर्घ जीवन में अच्छे पत्र के रूप में लोकप्रियता पाई। यह पत्र सन 1931 तक प्रकाशित हुआ। उड़िया भाषा का साप्ताहिक पत्र '*दीपक*' सन 1889 में विक्टोरिया प्रेस कटक से प्रकाशित हुआ। मराठी भाषा का पत्र '*न्यायचक्षु*' सन 1889 में प्रकाशित हुआ।

कोलकाता से सन 1889 में '*हिन्दू पंच*' निकला। राजद्रोह के आरोप में इस साप्ताहिक के सम्पादक को दो साल के सश्रम कारावास की सजा हुई थी। सन 1889 में इलाहाबाद से '*प्रयाग मित्र*' निकला। राजनांदगांव से भगवानदास सिरोठिया ने सन 1889 में '*प्रजाहितैषी*' का सम्पादन-प्रकाशन किया।

सन 1886 में उड़िया साहित्य सम्मेलन का गठन हुआ। संस्था के मुख पत्र के रूप में उड़िया भाषा का पत्र '*समालोचना*' सन 1889 में निकला। इस पत्र में पुस्तकों की समालोचना छापी जाती थी। सन 1889 में वामण्डा से '*संभलपुर हितैषिणी*' निकला। यह उड़िया साप्ताहिक जगन्नाथ वल्लभ प्रेस देवगढ़ से निकला था। नीलमणि विद्यारत्न सम्पादक थे। इस पत्र ने 'उत्कल दीपिका' के रिक्त स्थान को भरा था। उड़िया के सभी साहित्यकारों की रचनाएं इसमें छपा करती थी। राधानाथ राय का 'काव्य रत्न' भी इसी में छपा था। वामण्डा के राजा सुठल देव ने उड़िया भाषियों के हित साधन की दृष्टि से यह पत्र प्रकाशित किया था।

सन 1889 में पटना से महेश नारायण ने सासाहिक '*कायस्थ गजट*' आरम्भ किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी बङ्गवासी

हिन्दी बंगवासी, कालकाता, सन 1890

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बहुत कम अवधि में इस पत्र ने कायस्थ समाज में सुधारों के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। परन्तु वित्तीय कठिनाई के चलते 25 दिसम्बर 1890 को इस पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया।

1890

हिन्दी बंगवासी

योगेन्द्रचन्द्र बसु ने सन 1890 में 'हिन्दी बंगवासी' का प्रकाशन कोलकाता से किया और 'भारतमित्र' के पूर्व सम्पादक अमृतलाल चक्रवर्ती को सम्पादन का दायित्व सौंपा। यह पत्र डबल रायल आकार के दो बड़े पन्नों में प्रति सप्ताह प्रकाशित होता था। इस पत्र का शुल्क दो रुपये वार्षिक था। इसकी प्रसार सँख्या 2000 हो गई थी, जो उस समय के अनुसार बहुत अच्छी थी।

'हिन्दी बंगवासी' को निकलते हुए एक वर्ष का समय ही हो पाया था कि एक ऐसा प्रसंग उपस्थित हो गया जिसने पत्र की प्रसार-वृद्धि का रास्ता खोल दिया। अँगरेज सरकार ने 'एज आफ कन्सेंट बिल' (सहवास वय विधेयक) पारित कर दिया। इस विधेयक का 'हिन्दी बंगवासी' ने विरोध किया। इसकी आलोचना करते हुए लेख लिखे गए। सरकार ने रुष्ट होकर राजद्रोह का मुकदमा चलाया। प्रेस के मालिक, प्रबन्धक, सम्पादक और मुद्रक को दो-तीन दिन हवालात में गुजारना पड़े। अन्त में एक लाख रुपये की जमानत भरी, तब कहीं मुक्ति मिली। कोलकाता हाईकोर्ट में मुख्य न्यायाधीश के सामने जब मुकदमा पहुँचा तो उन्होंने कहा कि जब तक जूरी एकमत नहीं होगी मैं कुछ भी कर पाने में असमर्थ हूँ। अन्ततः परिणाम यह निकला कि 'बंगवासी' माफी माँग कर मुक्त हो गया। किन्तु 'हिन्दी बंगवासी' इस सारे घटनाक्रम में अच्छी प्रसिद्धि पा गया, 'बंगवासी' और 'हिन्दी बंगवासी' को आम तौर पर लोग एक ही पत्र मानते थे। (दोनों के प्रकाशक एक थे, किन्तु 'बंगवासी' बंगला पत्र था।)

सन 1892 में प्रभुदयाल पाण्डेय 'हिन्दी बंगवासी' के सहायक सम्पादक बनाए गए। काशी के भारत धर्म महामंडल के अधिवेशन में 'बंगवासी' के मालिक और बालमुकुन्द गुप्त की भेंट हुई। 'हिंदी बंगवासी' में उन दिनों 'शिक्षित हिंदू बाला' उपन्यास प्रकाशित हो रहा था। गुप्तजी ने उपन्यास की समालोचना तत्कालीन सम्पादक अमृतलाल चक्रवर्ती को भेजी। प्रत्युत्तर में चक्रवर्ती ने उन्हें अपना सहायक (सम्पादक) नियुक्त कर लिया। यह घटना 1893 की है। कुछ समय सहायक रहने के बाद गुप्त 'हिन्दी बंगवासी' के सम्पादक हुए और सात वर्षों तक इस पद पर रहे। योगेन्द्रचन्द्र बसु की मृत्यु के उपरान्त पत्र के मालिकों में विवाद छिड़ गया और 1898 में बालमुकुन्द गुप्त ने 'हिन्दी बंगवासी' से इस्तीफा दे दिया।

'हिन्दी बंगवासी' ने पत्रकारिता में कई नए प्रयोग किए। सर्वप्रथम समाचारों को विषय और स्थान के अनुसार समायोजित करने का प्रयोग 'हिन्दी बंगवासी' ने ही आरम्भ किया। 'हिंदी बंगवासी' के तीसरे पृष्ठ पर जो समाचार रहते थे उनका शीर्षक होता था- 'कलकत्ता और मुफस्सिल'। कोलकाता के समाचारों में सरकारी बोर्डों के भाव तथा मुफस्सिल में नगर से बाहर के आंचलिक समाचार दिए जाते थे। सामान्य समाचारों को 'समाचार' शीर्षक के अन्तर्गत रखा जाता था जिनकी अधिकतम पंक्तियां दस रहती थीं। जो व्यक्ति समाचार भेजता था, उसी के नाम से छापा जाता था। इससे समाचार की प्रामाणिकता भी बढ़ जाती थी, क्योंकि प्रेषक अपना नाम छपने के कारण ज्यादा सजग रहता था।

'हिन्दी बंगवासी' के प्रत्येक अंक में समकालीन महापुरुषों के सचित्र परिचय प्रकाशित होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। लेखों को तथा युद्ध आदि के समाचारों को 'बंगवासी' से अनुवाद करके प्रकाशित किया जाता था। कहानी भी हर अंक में छपती थी। बंगला भाषा के 'महाभारत' का अनुवाद छाप कर 'हिन्दी बंगवासी' ने खासी लोकप्रियता अर्जित की।

'हिन्दी बंगवासी' में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि पूरे समाचारपत्र की वर्तनी एक जैसी रहे। एक प्रयोग यह भी किया गया कि अँगरेजी नामों को लोकप्रिय बनाने के लिए उन्हें सरल रूप में लिखा जाता था, जैसे 'सेक्रेटरी' का 'सिकतर', 'मजिस्ट्रेट' का 'मजिस्टर' आदि। अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने लिखा है- ''पत्रकारी का वह प्राथमिक विद्यालय था। पत्रकार के लिए भाषा की एकरूपता पहली आवश्यकता है। एक शब्द जिस रूप में एक जगह लिखा गया है, उसी रूप में सर्वत्र लिखा जाना चाहिए। यह बात 'हिन्दी बंगवासी' में कुछ दिन काम करने से आ जाती थी।''

'हिन्दी बंगवासी' के सम्पादकीय विभाग में उस समय के शीर्षस्थ पत्रकारों और साहित्यकारों ने अपनी सेवाएँ दीं। इनमें हरिकृष्ण जौहर, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, लक्ष्मण नारायण गर्दे, कुँवर गणेश सिंह भदौरिया प्रभृति सम्पादक हैं।

बालमुकुन्द गुप्त ने 'हिन्दी बंगवासी' के बारे में लिखा है- ''हिन्दी बंगवासी नये ढंग का अखबार निकला। हिन्दी में उससे पहले वैसा अख़बार कभी न निकला था- खबरें ताजा ताजा उसमें निकलने लगीं जो हिन्दी अखबारों में न होती थीं। केवल एक ही दोष उसमें था कि उसकी भाषा बंगला ढंग की होती थी। उसका कारण यही था कि उसका सम्पादक बंगाली था। उस समय वह बहुत साफ हिन्दी नहीं लिख सकता था और हिन्दी के अदब-कायदे भी कम जानता था। इससे हिन्दी के दो सुलेखक उसकी किसी बात से नाराज हुए। पर इससे उसकी उन्नति में कुछ बाधा न पड़ी। वह खूब फैलने लगा। विशेषकर बिहार और युक्त प्रान्त में उसका बड़ा आदर हुआ।''

बावजूद अच्छी प्रसिद्धि और प्रसार के 'हिंदी बंगवासी' अपना अस्तित्व बरकरार नहीं रख सका। प्रेस मालिकों (उत्तराधिकारियों) के बीच सम्पत्ति के विवाद ने ऐसा तूल पकड़ा कि वह प्रेस और समाचारपत्र दोनों को ले डूबा।

प्रसिद्ध चित्रावली

जोधपुर से *'प्रसिद्ध चित्रावली'* का प्रकाशन सन 1890 में हुआ। अपने स्वरूप का परिचय देते हुए इसने घोषित किया- ''प्रसिद्ध चित्रावली' जिसमें जगद्विख्यात, महतपुरुषों के चित्र और जीवन चरित्र प्रकाशित किए जावेंगे और जो महीने के महीने राजस्थान-जोधपुर से प्रकट होगा।'' यह द्विभाषी पत्र था जिसके एक कालम में हिंदी और दूसरी तरफ उर्दू में मजमून छपते थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये छह आना था। सम्पन्न लोगों से एक रुपया अधिक लिया जाता था। विद्यार्थियों को छह आना की रियायत मिलती थी। विज्ञापन प्रकाशन की दर एक आना प्रति पंक्ति थी। सम्पादक मुंशी देवीप्रसाद थे।

'प्रसिद्ध चित्रावली' के जून 1890 के अंक में राव बीकाजी के जीवन चरित्र की कुछ घटनाएँ और शेरशाह सूरी का सचित्र जीवन वृत्त प्रकाशित हुए हैं। फरवरी 1891 के प्रसिद्ध चित्रावली के उपलब्ध अंक का एक समाचार प्रस्तुत है-

''श्री महाराज बूंदी का शादी के वास्ते जोधपुर आगमन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''बूंदी के महाराज राजा रघुवीर सिंघ साहब की एक शादी तो पहले जोधपुर में हुई थी और दूसरी शादी भी फिर यहीं ठहरी थी-जिसके वास्ते आप ता. 17 जनवरी को इस्पेशल ट्रेन से तशरीफ लाए। श्री हजूर इस्टेशन तक लेने को पधारे। मुलाकात और सलामी मामूली कायदे के माफिक हुई। राई के बाग से रक्षण की तरफ छीतर के ऊपर जो श्री हजूर साहब बहादुर ने एक उम्दा बंगला अपनी पसंद से बनाया है, उसमें आपका डेरा हुआ- ता. 20 को आप महाराज श्री प्रताप सिंघ जी के साथ शिकार को पधारे और कई सूर शिकार किए।

''ता. 25 को आपने अमल गलाया और श्री हजूर और महाराज प्रताप सिंघ साहिब बगैरे सरदारों को बुलाया। यह जलसा आठ बजे रात तक रहा। ता. 27 को आपने श्री महाराज कंवर साहिब जोधपुर के वास्ते टीका दिया। किले के ऊपर उसकी रस्म अदा हुई।

''ता. 28 आप बरात सजाकर किले के ऊपर पधारे और साढ़े 12 बजे आपका ब्याह महारानीजी श्री तख्तसिंघजी की बाईजी श्री समरथ कंवर बाईजी साहब के साथ जनाने महलों में हुआ। मेजर बीटसन साहब की मेम को हथलेवा दिखाया गया क्योंकि उन्होंने पहिले नहीं देखा था।''

सितम्बर 1891 के अंक में अब्दुल रहीम खानखाना का सचित्र जीवन चरित्र प्रकाशित हुआ। एक अंश उद्धृत है- ''मारवाड़ में उनका (खानखाना) बड़ा चरचा है। यहाँ मेहू नाम का एक चारण हुआ है। उसने खानखाना के गुणों का बखान किया है और खानखाना ने भी उसको खूब-खूब दिया है। एक दफै उसने खानखाना की तारीफ में 4 दोहे बनाकर सुनाए। उस वक्त खानखाना के पास 3 लाख रुपये थे। वे उन्होंने तीन दोहों के इनाम में दे दिए और चौथे के बदले एक दोहा कहकर एक लाख उससे माफ कराए-

'भारतभ्राता' में *पुष्कर प्रदीप* के बारे में सूचना मिलती है-''क्या कोई ऐसा भी पत्र लेगा? जिसमें कला कौशल शिल्प काव्य नाटक चेटक प्रहसन उपन्यास राग रंग संगीत साहित्य परिहास गप्प हँसी चीज वैद्यक कृषि वाणिज्य आदि विषय समयानुसार सविस्तार वर्णन किए जावें और जिसमें विद्यार्थी, कृषिक, वणिक, वैद्य, नाट्ककार आदि सब को लाभ पहुँचे। यदि लेना हो तो एक पोस्टकार्ड भेजकर ग्राहक बन जाइये मूल्य केवल दस आना वार्षिक। झूठ मत समझना।

सम्पादक 'पुष्कर प्रदीप'।''

सर्वहित

20 फरवरी 1890 को पं. रामप्रताप शर्मा के सम्पादन में बूंदी से *'सर्वहित'* प्रकाशित हुआ जिसे कालान्तर में मेहता लज्जाराम शर्मा जैसे उत्कृष्ट सम्पादक ने अपनी प्रतिभा से नया कलेवर और नया तेवर दिया। इस पत्र में देश-विदेश के समाचार, टिप्पणियाँ, कविता, विज्ञापन, प्रेरित पत्र आदि प्रकाशित हुआ करते थे। यह पाक्षिक पत्र 14 वर्ष चलकर बंद हो गया। पं. लज्जाराम शर्मा 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' के सम्पादक होकर मुम्बई चले गए। बालमुकुन्द गुप्त ने लिखा है- ''लज्जाराम शर्मा के अलग हो जाने के बाद इस पत्र को वैसा योग्य सम्पादक नहीं मिला। हमें उक्त पत्र के तीसरे वर्ष के कुछ नम्बर मिले हैं। यद्यपि उनमें राजनीति की चर्चा नहीं है, पर सामाजिक, धर्म सम्बन्धी, देशी कारीगरी, देशी कारोबार, भाषा और साहित्य के विषय में कई एक खासे नोट और लेख हैं। खबरें ऐसे ढंग से चुनी हैं कि पत्र पाक्षिक होने पर भी वे बहुत पुरानी नहीं मालूम होती थीं। पत्र में सनातन हिन्दू धर्म का पक्ष किया जाता था। सामाजिक और धर्म सम्बन्धी बातों में मतभेद होने से कई बार उक्त पत्र ने 'हिन्दोस्थान' आदि पत्रों से झगड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी किया है। खेती और कारीगर के विषय में उन दिनों कई एक लेख अच्छे निकले थे। चुटकुले, पहेली, हँसी-दिल्लगी की बातें उसमें होती थीं। पुस्तकों की समालोचना भी खासी होती थी। विशेषकर हिन्दू धर्म के विरोधियों का अच्छा खण्डन होता था। इसकी 240 प्रतियाँ छपती थीं और यह पत्र के पहले पृष्ठ पर लिखी रहती थीं।''

साप्ताहिक *'निज़ाम-ए-हिन्द'* दिल्ली से फरवरी 1890 में प्रकाशित किया गया था। इसके प्रकाशक शहज़ादा जाह थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। मार्च 1890 में मासिक पत्रिका *'मुरक़्क़ा-उल-मशाहीर'* जोधपुर से निकली। प्रकाशक तथा सम्पादक देवीप्रसाद थे। पृष्ठ सँख्या 16 थी। एक अगस्त 1890 को मौलाना अब्दुल हलीम शरर ने लखनऊ से *'मुहज़्ज़ब'* नामक साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। विचार, सामग्री, छपाई और क़िताबत की दृष्टि से अख़बार का स्तर अच्छा था। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समाचार संक्षेप में दिए जाते थे। 'मुहज़्ज़ब' में साहित्यिक, शैक्षिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक लेख छपते थे। इसका आकार 22 गुणित 18 से.मी. था तथा इसमें सोलह पृष्ठ होते थे।

'भारतभ्राता' में *'आर्य हितैषी'* के सम्बन्ध में सूचना दी गई है- ''इस नाम का हिन्दी भाषा का पाक्षिक समाचारपत्र प्रत्येक मास की 1 और 15 तारीख को फर्रुखाबाद से सौ 100 ग्राहक हो जाने पर प्रकाशित किया जाएगा अतएव जिस किसी आर्य महाशय को ग्राहक होना स्वीकार हो डाक द्वारा व्यय सहित वार्षिक अग्रिम मूल्य एक रुपया दो आना भेजकर अनुगृहीत कीजिए। देवदत्त शर्मा 'आर्य हितैषी' के सम्पादक थे।

सन 1890 में साहित्यिक पत्रिका *'कलाभिवृद्धि'* का प्रकाशन वेंकट रंगनाथ स्वामी ने विशाखापत्तनम से किया। यह तेलुगु मासिक था। सन 1890 में साहित्यिक मासिक पत्रिका *'कल्पवल्ली'* ओंगल से प्रकाशित हुई। इस तेलुगु पत्रिका का सम्पादन कोपल्ल वेंकटरमण राव करते थे। महीने में तीन बार (पहली, दस तथा बीस तारीख को) प्रकाशित होने वाली पत्रिका *'कन्नौज पंच'* फ़र्रुखाबाद से सन 1890 में प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक भग्गू खाँ 'रहीम' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। यह हास्य विनोद की पत्रिका थी। पृष्ठ सँख्या बारह रहती थी।

अक्टूबर 1890 में हरिनारायण आप्टे ने *'करमणूक'* मराठी साप्ताहिक पुणे से निकाला। प्रति शनिवार को प्रकाशित इस पत्र में आप्टे के स्वयं के लिखे उपन्यासों के धारावाहिक अंश, संस्कृत कवि भास के नाटकों के मराठी भाषान्तर, कहानियाँ, चुटकुले आदि सामग्री छपती थी। यह पत्र लोकप्रिय हुआ। 'करमणूक' के बारे में 'विशाल भारत' ने लिखा- ''यह पत्र 1890 से 1912 तक चला। इसको हरिनारायण आप्टे निकाला करते थे, यह साप्ताहिक मनोविनोद प्रधान था। अक्टूबर 1890 से सर्वसाधारण के मनोविनोद के लिए प्रति शनिवार निकलता था। इसने स्त्री पुरुषों को पढ़ने का चस्का लगा दिया था।'' 'माधुरी' (1925) ने लिखा-''सम्पादक और प्रकाशक श्रीयुत नरहर रामचंद्र जोशी, गिरगाँव, बंबई (नं. 4), वार्षिक मूल्य 5 रुपये यह मराठी भाषा का सचित्र पत्र है। इसमें अच्छे और सामयिक व्यंग्य-चित्र निकलते हैं। अलवर राज्य में अभी जो हत्याकांड हो गया है, उसको एक व्यंग्य-चित्र द्वारा दिखाया गया है। लेख भी पठनीय रहते हैं। पत्र अच्छा है। अपनाने योग्य है।''

साप्ताहिक *'कानपुर गजट'* का प्रकाशन सन 1890 में कानपुर से हुआ। पृष्ठ सँख्या दस थी। सम्पादक-प्रकाशक बाबू हरनाम सिंह थे। छपाई तथा कागज़ अच्छा होता था। वार्षिक शुल्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो रुपये था। इसके 8 नवम्बर 1892 के अंक में खबर छपी-''देहली के नलों में 4 नवम्बर 1892 को पानी छोड़ा गया।'' सन 1890 में आठ पृष्ठ का साप्ताहिक *'खत्री समाचार'* प्रकाशित हुआ। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। लाला हीरालाल कपूर प्रकाशक एवं सम्पादक थे। बाद में नाम बदलकर *'पंजाब समाचार'* कर दिया गया। कुछ दिनों तक दैनिक भी रहा।

चिंतामणि

प्राचीन एवं अमुद्रित ग्रंथों के प्रकाशन के लिए न्यायमूर्ति सुब्बराव और कंदकूरि वीरेशलिंगम के सम्पादन में राजमुंदरी से सन 1890 में मासिक पत्रिका *'चिंतामणि'* का प्रकाशन हुआ। सन 1897 में वीरेशलिंगम का कार्य क्षेत्र चेन्नै होने के बाद वहाँ से यह तेलुगु पत्रिका निकलने लगी। सन 1899 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया। तेलुगु पत्रकारिता के इतिहास में इसे तेलुगु उपन्यास लेखन को प्रोत्साहन के लिए प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का श्रेय दिया जाता है। चिलकमति लक्ष्मी नरसिंहम अडवि वापिराजू जैसे मूर्धन्य उपन्यासकारों को इसने स्थापित किया। विज्ञानेश्वरीयम, भोजराजीयम, वाहपुराणम, मोल्ला रामायण आदि प्राचीन तेलुगु काव्यों का प्रकाशन भी इसने किया।

सन 1890 में तेलुगु साप्ताहिक *'सरस्वती'* का प्रकाशन हुआ। यह पत्र बेल्लारी से निकला था। कुछ समय बाद बंद हो गया। सन 1896 में पुन: 'सरस्वती' साहित्यिक पत्रिका के रूप में राजा कोच्चेर्ला कोटा ने प्रकाशित की। सम्पादक कोत्तपल्ली सूर्याराव वेंकटराव थे। पहले कुछ समय तक यह राजमुंदरी से निकलती रही, तत्पश्चात काकिनाडा से इस तेलुगु मासिक का प्रकाशन हुआ। सन 1890 में साहित्यिक पत्रिका *'शारदा'* निकली। अडवल्ली कामशास्त्री बुच्चिरेड्डी ने पालेम से तेलुगु मासिक के रूप में इसका प्रकाशन किया था। बीच में बंद रहने के बाद सन 1896 में 'शारदा' का पुन: प्रकाशन दोडला वेंकटराम रेड्डी ने किया।

जालंधर से साप्ताहिक *'सत्यधर्म प्रचारक'* का प्रकाशन सन 1890 में हुआ। लाला मुंशीराम वकील प्रकाशक थे। वार्षिक मूल्य चार रुपये, पृष्ठ सँख्या 16 थी। पटना से दैनिक *'सर्व हितैषी'* सन 1890 में प्रकाशित हुआ। हिन्दी दैनिकों में यह 'हिंदोस्थान' के बाद दूसरा पत्र था। यह पत्र कुछ ही दिनों का मेहमान रहा। बाबू महावीरप्रसाद 'सर्वहितैषी' के सम्पादक थे। इस पत्र में समाचारों के साथ-साथ साहित्यिक सामग्री का भी समावेश रहता था।

'जर्नल गोहर-ए-आसिफ़ी' का प्रकाशन कोलकाता से सम्पादक मोहम्मद वज़ीर ने सन 1890 में किया। इसी वर्ष अजमेर से परोपकारिणी सभा ने *'परोपकारी'* का प्रकाशन प्रारम्भ किया। सम्पादक पद्मसिंह शर्म्मा थे। 'विशाल भारत' में प्रकाशित विवरण से इसके सन 1908 तक प्रकाशन की पुष्टि होती है। *'रसिक पत्रिका'* सन 1890 में कानपुर जिले के बिठूर से प्रकाशित हुई। सम्पादक रामप्यारी बाई तथा प्रकाशक गोमती कुवँरि ज़मीदारिन थीं। दिल्ली से सन 1890 में साप्ताहिक *'वकील-ए-हिन्द'* का प्रकाशन किया गया। प्रकाशक तथा सम्पादक मुंशी अहमद मिर्ज़ा खाँ थे।

हितवार्ता

कोलकाता से पंडित कालीप्रसन्न ने सन 1890 में *'हितवार्ता'* का प्रकाशन किया। रुद्रदत्त शर्मा इसके सम्पादक थे। उस समय 'हितवाणी' नामक पत्र राष्ट्रीय विचारों का प्रचार कर रहा था तो दूसरी ओर भाषा के भविष्य के बारे में भी उसमें महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए जाते थे। 'हितवाणी' के सम्पादक सखाराम गणेश देउस्कर ने यह प्रश्न उठाया था कि बंगला, मराठी आदि संस्कृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल की अन्य भाषाओं में विभक्ति संस्कृत के आधार पर शब्द के साथ मिलाकर लिखी जाती है परन्तु हिन्दी में अलग क्यों लिखी जाती है। उन्होंने इस बारे में 'सरस्वती' सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्रश्न किया था। द्विवेदीजी ने तो कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन गोविन्दनारायण मिश्र ने 'हितवार्ता' में विभक्ति विचार और प्राकृत विचार नाम से लेख माला लिखी। अन्य हिन्दी पत्रों में भी इस समस्या पर काफी विमर्श हुआ। बाबूराव विष्णु पराड़कर 1907 में 'हितवार्ता' के सम्पादक हुए और बंगाल नेशनल कॉलिज में हिन्दी का अध्यापन करने लगे। *'हितवाणी'* का भी प्रकाशन सन 1890 में हुआ। सखाराम गणेश देउस्कर सम्पादक थे।

सन 1890 में इलाहाबाद से *'इण्डियन यूनियन'* का प्रकाशन हुआ। सम्पादक-प्रकाशक पंडित अयोध्यानाथ का सन 1892 में निधन हो जाने पर पत्र बंद हो गया। चेन्नै से अँगरेजी का *'इण्डियन सोशल रिफार्मर'* सन 1890 में निकला। पश्चात यह मुम्बई से निकलने लगा और 50 वर्ष तक चला। के. नटराजन सम्पादक थे। मुम्बई से सन 1890 में *'इण्डियन टेक्सटाइल जर्नल'* निकला। इसी वर्ष मराठी पत्र *'गोमंतक'* प्रकाशित हुआ। बीकानेर से *'बीकानेर गजट'* निकला। शाहपुर-सांगली से मराठी पत्र *'विजय'* निकला। हितचिंतक मंडली के मुखपत्र के रूप में मराठी साप्ताहिक *'सुविचार'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्रता की ज्वाला

1891

देशसेवक

मराठी साप्ताहिक *'देशसेवक'* का प्रकाशन नागपुर से सन 1891 में हुआ। इसका सम्पादन हरिमाधव पंडित करते थे। प्रकाशन का दायित्व चिंतामण रामचन्द्र केलकर वहन कर रहे थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। बाद में माधवराव पाध्ये ने 'देशसेवक' की जिम्मेदारी सम्भाली। 1906 में बाल गंगाधर तिलक ने पाध्ये की सहायता के लिए गोपालराव ओगले को भेजा। उसी समय अच्युत बलवंत कोल्हटकर नागपुर आए और शंभुराव गाडगिल भी 'देशसेवक' में लिखने लगे। 'देशसेवक' में तिलक के आन्दोलन, बंग भंग आन्दोलन का ब्यौरा, समाचार, लेखादि छपने लगे। अच्युतराव कोल्हटकर के लेखन से 'देशसेवक' के तेवर तीखे हुए। फिरंगी हुकूमत की मुखालफत से पत्र पर सरकार की कोपदृष्टि पड़ी। तब माधवराव पाध्ये ने अपने प्रेस में उसे छापने से इन्कार कर दिया। सन 1907 में अच्युतराव कोल्हटकर ने 'देशसेवक' के सम्पादन-प्रकाशन का पूरा दायित्व ले लिया। तभी अरविन्द के भाषणों की पुस्तक छापने के कारण सरकार ने प्रेस जब्त कर लिया। 'देशसेवक' का प्रकाशन रुक गया। राजद्रोह के आरोप में अच्युतराव कोल्हटकर को ढाई साल के सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई। तब गोपालराव ओगले 'देशसेवक' निकालने लगे। 18 जनवरी 1909 के अंक में उनके लेख पर भी सरकार कुपित हुई और ओगले को कैद की सजा हो गई। फिर शंभुराव गाडगिल 'देशसेवक' के सम्पादक हुए। 'पदत्यांचा पोकलपणा' लेख के लिए उन पर भी एक हजार रुपये का जुर्माना हुआ। कुलकर्णी सम्पादक हुए। उनसे जमानत माँगी गई। अन्तत: जनवरी 1910 में 'देशसेवक' का प्रकाशन बंद हो गया। विदर्भ में स्वतंत्रता की ज्वाला भड़काने का काम 'देशसेवक' ने किया। उसने तेजस्वी पत्रकारिता के ऐसे तेवर लोकमान्य तिलक की 'केसरी परम्परा' से ग्रहण किए थे।

बहावलपुर से 16 पृष्ठों का मासिक *'गम्ज़-ए-यार'* जनवरी 1891 में प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक मोहम्मद अब्दुल रहमान 'आज़ाद' थे। मतबअ सैफ़ी में छपता था। पहले अंक के दूसरे पृष्ठ पर एक विज्ञापन 'अख़्तर शहंशाही' पुस्तक का दिया गया है जो इस प्रकार है:- ''यह किताब लाजवाब है जिसको अख़बारात की ज़िन्दा तारीख कहना चाहिए। इसकी उम्दगी मुलाहिज़े पर मुनहसिर है। इसमें तमाम दुनिया के 1518 अख़बारात की सवान्ह-उर्मी है। रदीफ़वार अलेहदा अलेहदा मुफ़स्सिल दर्ज है और हर एक अख़बार उर्दू फ़ारसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरबी और गुलदस्ता व रिसाला माहवारी मतबह का शरह पता और नाम मालिक व मुहत्मिम व एडीटर, प्रिंटर सालाना क़ीमत, तादाद वरक़, व किस्म छापा व तूल कागज़ व सन् इजराअ व हैसियत छपाई मय रिव्यू के तहरीर है। कब्ल इसके इस क़िस्म की किताब आज तक इस सीग़े में तालीफ़ नहीं हुई निहायत मेहनत से मुर्रत्तिब की गई है। फ़ी जिल्द क़ीमत ढाई रुपये महसूल डाक चार आना। हाजी सैयद मोहम्मद अशरफ़ मालिक मतबअ अख़्तर प्रेस शहर लखनऊ।''

लखनऊ से जनवरी 1891 में मासिक *'गुलचीं'* का प्रकाशन किया गया था। छोटे आकार के 16 पृष्ठ में निकाला जाता था। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। सैयद मोहम्मद अस्करी 'वसीम' प्रकाशक एवं सम्पादक थे। जनवरी 1892 में गोरखपुर से निकाला जाने लगा। यह पत्रिका सन 1916 तक गोरखपुर से प्रकाशित होती रही। दूसरी बार लखनऊ से जून 1917 में प्रकाशित की गई।

जगन्मित्र

हिन्दी मासिक *'जगन्मित्र'* 1891 में मथुरा से प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक इंदिरा प्रसाद थे। 'भारतभ्राता'[1] में 'जगन् मित्र' का परिचय इस प्रकार छपा था–

''यदि हृदय को आनन्द देना चाहो तो मित्र का भाषण सुनो

''जगन्मित्र

''ऊपर लिखे हुए नाम का मासिक पत्र आज कई महीनों से प्रतिमास की 12 तारीख को मथुरापुरी से प्रकाशित होकर अपने पाठकों तक पहुँचता है। जब यह पत्र लेथो में छपता तो भी इसके लेख की उत्तमता पर मोहित होकर सैकड़ों ग्राहक हो गए थे अब यह बम्बई के उत्तम टाइप में छपता है जिस टाइप की उत्तमता भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध है कागज भी बहुत बढ़िया दिया जाता है। जो कि बहुत दिनों तक स्थायी रहे इसके केवल स्याही और छपाई की ही तारीफ़ नहीं है बल्कि लेखों में जो गम्भीरता, सरलता, न्यायपरता, निष्पक्ष पातिता आदि गुण भरे रहते हैं उनका वर्णन करना अपनी आप प्रशंसा करना है। काव्य, नाटक, उपन्यास, प्रहसन, राजनीति, धर्म्मनीति, समाज संशोधन, कहानी, इतिहास, जीवन चरित्र आदि उत्तमोत्तम विषयों पर लेख रहा करते हैं। इसके अतिरिक्त मथुरा वृन्दावन आदि ब्रजमण्डल के प्रसिद्ध स्थानों की प्रचलित कुरीतियों का संशोधन तथा यहाँ के भारी-भारी उत्सवों का वर्णन और उनकी यथार्थ समालोचना बिना किसी प्रकार का पक्षपात किये प्रकाशित की जाती है। इसके लिए नागरी के वर्तमान कितने ही सुलेखकों ने भी अपने लेख देना स्वीकार कर लिया है। कितने ही सुशिक्षित स्त्रियों के लेख भी इसमें छपा करेंगे इत्यादि कारणों से कहा जा सकता है कि ऐसे रङ्ग ढङ्ग का मासिक पत्र आज तक हिन्दी भाषा में दूसरा कोई भी प्रकाशित नहीं हुआ। यह पत्र बड़े-बड़े रईस और राजा महाराजों की सेवा में पहुँचता है अतएव इसमें विज्ञापन छपवाने और बांटने वालों को भी लाभ हो सकता है। बस अधिक प्रशंसा क्या करें पढ़ते ही आप स्वयं प्रशंसा करने लगेंगे इसीलिए कहते हैं कि इसका वार्षिक मूल्य सवा रुपये देकर जल्दी से ग्राहक बन जाइए। अगर नमूना चाहो तो बिना मूल्य मिलेगा।''

मुरादाबाद से साप्ताहिक *'उर्दू अख़बार'* सन 1891 में प्रकाशित हुआ। मुंशी अब्दुल अज़ीज़ सम्पादक तथा प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये तथा पृष्ठ सँख्या दस थी। जिला हरदोई

1. भारतभ्राता, 5 फरवरी 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कस्बा संदीला से मासिक पत्रिका *'क़मर'* 1891 में प्रकाशित हुई। पृष्ठ सँख्या 24 थी। सम्पादक सैयद क़मरुद्दीन 'क़मर' संदेलवी थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये तथा एक प्रति का मूल्य साढ़े चार आना था।

चैतन्य राय, राजेश्वर महापात्र ने बरीपदा से साहित्यिक पत्रिका *'उत्कल प्रभा'* का प्रकाशन सन 1891 में किया। इस उड़िया मासिक पत्र को मयूरभंज के महाराज रामचन्द्र भंजदेव का संरक्षण प्राप्त था। उड़िया साहित्य की प्रगति में 'उत्कल प्रभा' का महत्वपूर्ण योगदान है। त्रैलोक्यनाथ मुखोपाध्याय ने सन 1891 में *'उत्कल पत्रिका'* का प्रकाशन किया। यह उड़िया साहित्य तथा ब्रह्मधर्म का पोषक मासिक पत्र था।

'हिन्दी प्रदीप'[1] में *'धूर्तपञ्च'* के बारे में विवरण मिलता है-''कलकत्ता आर्य यन्त्रालय में वासुदेव शर्मा द्वारा मुद्रित इस सड़ी घुनी हिन्दी को सरसब्ज और तरोताज़ा करने को ऐसे एक ठठोलपत्र की बहुत ही आवश्यकता थी-हम वाना बाँधते हैं कि कैसी ही उदासी मन में छाई हो इस पत्र को लैके बैठे और दाँत न निकल पड़े तो कोई बात ही नहीं-हम जी से चाहते हैं ईश्वर इस्की दिन दिन वृद्धि करे-मूल्य वार्षिक सवा रुपया।'' फ़तेहपुर से सन 1891 में हिन्दी मासिक *'अग्रहरि वैश्य बंधु'* का प्रकाशन हुआ।

तिमाही पत्रिका *'कवि और चित्रकार'* कुन्दनलाल शर्मा के सम्पादन में सन 1891 में फर्रुखाबाद से प्रकाशित हुई। 'भारतभ्राता'[2] ने 'कवि और चित्रकार' के बारे में लिखा-''यह पत्र त्रैमासिक है, इसके साथ एक पुस्तक भी जिसका नाम पूर्त्ति पत्र है प्रति तीसरे महीने छपती है। बेल बूटे, चित्र और लेख आदि इनके अच्छे होते हैं, ऐसे पत्र की आवश्यकता इस देश में अवश्य थी। बहुत उत्तम होता यदि यह पत्र कम से कम मासिक होता और आश्चर्य नहीं कि यदि यथोचित सहायता मिली तो मासिक हो भी जावे। मूल्य इसका पूर्त्ति पत्र और डाक व्यय सहित वार्षिक डेढ़ रुपया है। पण्डित कुन्दनलाल जिला फ़र्रुखाबाद को लिखने से मिल सकता है।''

सन 1891 में टोरिया से साप्ताहिक *'ख़ैरख़्वाह-ए-ज़मींदारान'* का प्रकाशन किया गया। सम्पादक मौलवी अब्दुल रहमान मुंशी फाज़िल थे। सन 1891 में तेलुगु पत्र *'चित्तूर वर्तमानी'* तथा साप्ताहिक *'धर्म संरक्षिणी'* का प्रकाशन हुआ। विज्ञान पत्रिका *'बुध विधेय'* का प्रकाशन सन 1891 में हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक नादेल्ला पुरुषोत्तम थे। यह तेलुगु मासिक मछलीपत्तनम से निकलता था।

मई 1891 में धर्मपाल ने, जो पहले डॉन डेबिल कहलाते थे, गया में महाबोधि सोसाइटी की स्थापना की और भारत में बौद्ध धर्म के पुनरोदय के उद्देश्य से *'महाबोधि'* नामक पत्र निकालना शुरू किया। यह पत्रिका 1932 तक निकली।

सन 1891 में तेलुगु पत्र *'मनोविनोदिनी'* का प्रकाशन हुआ। सन 1891 में *'राजयोगी'* नामक अध्यात्म एवं विज्ञान की पत्रिका काकिनाडा से प्रकाशित हुई। गुरजाड श्री राममूर्ति इस साप्ताहिक तेलुगु पत्रिका के सम्पादक थे। साप्ताहिक *'रुहेलखण्ड गजट'* बरेली से सन 1891 में प्रकाशित हुआ। सम्पादक-प्रकाशक मोहम्मद अब्दुल अजीज़ मुरादाबादी थे।

साप्ताहिक *'लॉयल ख़ालसा गजट'* सियालकोट से सन 1891 में निकला। उर्दू तथा

1. हिन्दी प्रदीप, जुलाई, 1891
2. भारतभ्राता, 1 अप्रैल, 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुमुखी भाषा में निकलता था। इसके प्रकाशक एवं सम्पादक राजेन्द्र सिंह थे। वर्ष 1891 में तेलुगु मासिक पत्रिका *'लूथरिन'* का प्रकाशन चेन्नै से हुआ। इसके सम्पादक-प्रकाशक एफ. सी. मांडिक थे। बाबू गोपालराम ने सन 1891 में मुम्बई से *'व्यापार सिंधु'* का प्रकाशन, सम्पांदन किया। *'विज्ञान वर्द्धिनी'* सन 1891 में चेन्नै से प्रकाशित हुई। इस तेलुगु मासिक का सम्पादन-प्रकाशन वाई. नारायणप्पा ने किया। तेलुगु पत्र *'सकल कल कल्पवल्ली'* सन 1891 में प्रकाशित हुआ।

सन 1891 में *'सन्मत दर्शिनी'* का प्रकाशन हुआ। यह भी तेलुगु का साप्ताहिक पत्र था। *'सन्मार्ग बोधिनी'* इसी वर्ष बेल्लारी से प्रकाशित हुई। यह नैतिक विकास की पत्रिका थी। र. जगन्नाथ ने इस तेलुगु सासाहिक का प्रकाशन किया। सन 1891 में समाज सुधार की पत्रिका *'सत्य संवद्धिनी'* प्रकाशित हुई। कंदकूरि वीरेशलिंगम सम्पादक थे। प्रार्थना समाज की इस पत्रिका के प्रकाशक राजमहेन्द्रवरम थे। यह तेलुगु मासिक पत्रिका राजमुंदरी से प्रकाशित होती थी।

साधना

रवीन्द्रनाथ टैगोर और सुधीन्द्रनाथ ठाकुर ने *'साधना'* का प्रकाशन सन 1891 में किया। 'साधना' में न केवल गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताएँ छपीं, बल्कि अन्य प्रमुख बंगला लेखकों की रचनाओं का भी प्रकाशन हुआ। उन दिनों मासिक पत्रिकाओं में प्रमुख लेखकों की रचनाओं का प्रकाशन और प्रशंसा इतनी प्रचलित हो गई कि उसे बंग भाषा का स्वर्ण युग कहा जाता है। 'साधना' में ही गुरुदेव की प्रसिद्ध कहानी 'काबुलीवाला' छपी थी। धारावाहिक रूप से 'पंचतत्वेर डायरि' शीर्षक लेखमाला प्रकाशित की, जिसमें आपने जीवन, साहित्य और कला की सूक्ष्म विवेचना की है। 'साधना' में आपने बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास 'राजसिंह' की विस्तृत आलोचना की। बंगाल के लोकगीतों और लोरियों पर विस्तृत लेख लिखा। सन 1895 में 'साधना' का प्रकाशन बन्द हो गया।

'श्री विद्या कल्पद्रुममु' का प्रकाशन सन 1891 में हुआ। यह तेलुगु भाषा का पत्र था। सन 1891 में तेलुगु पत्र *'हिन्दू देशाभिमानी'* का प्रकाशन हुआ। इसी वर्ष सिंधी भाषा की पत्रिका *'प्रभात'* निकली। यह साहित्यिक पत्रिका थी। लेकिन अँगरेज सरकार की मुखालफत के कारण अल्पजीवी रही।

'जबलपुर टाइम्स' का प्रकाशन जबलपुर से सन 1891 में आरम्भ हुआ। यह अँगरेजी का साप्ताहिक अखबार था, जो हर शनिवार को छपता था। प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापन प्रकाशित किए जाते थे, जबकि सूचना-समाचार आदि का प्रकाशन अंदर के पृष्ठों में होता था। 'जबलपुर टाइम्स' के शीर्षक के नीचे जॉन ब्राइट की उक्ति प्रकाशित की जाती थी, जिसका भावार्थ है- ''राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए स्वतंत्र प्रेस उतना ही जरूरी है जितना कि हमारे प्राकृतिक जीवन के लिए वायु।''

सन 1891 में पटना से एन.ए. चिक के सम्पादन में *'इंडियन क्रानिकल'* निकला। यह अँगरेजी सासाहिक पत्र था। महेश नारायण के लेखन में छिपी प्रतिभा को पहचान कर चिक ने उन्हें 'इंडियन क्रानिकल' में सह-सम्पादक बना लिया। यह पत्र अधिक समय तक नहीं चला और 'बिहार हेरल्ड' में विलीन हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीयूष प्रवाह

भागलपुर से सन 1892 में मासिक पत्र *'पीयूष प्रवाह'* का सम्पादन-प्रकाशन पं. अम्बिकादत्त व्यास ने किया। वे विद्वान थे। उन्हें हिन्दी आशुलिपि का आविष्कार करने का श्रेय प्राप्त है। स्तरीय लेख, कहानियाँ, कविताएँ, नाटक प्रकाशित करने वाले इस पत्र का वार्षिक शुल्क आठ आना था। भाषा शैली चटपटी होने के कारण लोकप्रिय हुई थी।

जून, 1893 के 'पीयूष प्रवाह' में बाजार दर शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित भाव अब एक सौ पंद्रह साल बाद अचम्भे में डाल देते हैं। उन दिनों तौल के लिए सेर और मन प्रचलित थे। एक मन में चालीस सेर होते थे। एक रुपये का 13 सेर गेहूँ, अरहर की दाल 10 सेर, उड़द की दाल 10 सेर, चना 15 सेर बिकता था। देसी घी 39 से 40 रुपये मन, सरसों का तेल साढ़े पंद्रह रुपये मन, तिल का तेल उन्नीस रुपये बारह आना मन मिलता था।

समाचार-शैली का एक उद्धरण-''पश्चिमोत्तर प्रदेश की पुलिस संशोधन कमेटी के पूछने पर एक देशी ने कहा कि पुलिस विभाग में लोगों की तरक्क़ी लियाकत के मुताबिक होना चाहिए और 45 इंच से अधिक कमर वाला कोई मनुष्य भरती न होने पावे।''

साप्ताहिक *'कामगार'* का पहला अंक 16 जनवरी 1892 को मुम्बई से निकला। सम्पादक सदाशिव पांडुरंग केलकर थे।

पंजाब पेट्रियट

'भारतभ्राता'[1] में *'पंजाब पेट्रियट'* का विवरण इस प्रकार मिलता है- ''25 जनवरी को हमारा सहयोगी पञ्जाब पेट्रियट लिखता है कि इस समय पञ्जाब के लोगों में असन्तुष्टता फैलने के मुख्य कारण ये हैं:- (1) पञ्जाब प्रान्त से युरोप को अधिक गेहूँ का भेजना। (2) भूम्याधिकारी और कृषकों का अधिक ऋणी होना। (3) पञ्जाब प्रान्त में अधिक पञ्जाबियों के होने पर सेना कमसरिट और अन्य विभागों में बङ्गालियों को अधिक नौकरी देना। (4) चीफ कोर्ट के वर्तमान नियमानुसार न्यायालयों में बाहर वाले वकीलों की सँख्या का अधिक होना और इस कारण से पञ्जाब प्रान्त वालों के हाथ से उनकी जीविका का छीना जाना। (5) पञ्जाब प्रान्त में ल्यजिस्लेटिव कौन्सिल का न होना। (6) चीफ कोर्ट को हाईकोर्ट न बनाना। (7) लोगों में ट्यकनीकल एजूकेशन का प्रचार न करना। पञ्जाब प्रान्त की वर्तमान असन्तुष्टता के जितने कारण हमारे सहयोगी ने बताए हैं उसे हम स्वीकार करते हैं और आशा करते हैं कि गवर्मेण्ट और वहाँ की प्रजा उन्हें दूर करने का यत्न करेगी परन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि केवल बङ्गालियों को सरकारी सेवा देने से पञ्जाबियों को अप्रसन्न नहीं होना चाहिए। यदि वे पञ्जाब के सरकारी कार्य्यालयों में स्वयं रहना चाहते हैं तो सम्पूर्ण बाहर वालों से अप्रसन्न होंगे न कि केवल बङ्गालियों से।''

व्यापारी

हिन्दी भाषा का मासिक पत्र *'व्यापारी'* 1892 में कानपुर से प्रकाशित हुआ। प्रकाशक सीताराम थे। कुछ अरसे तक बंद रहने के बाद 1915 में इसका पुनर्प्रकाशन हुआ। इसकी सूचना 'सरस्वती' में मिलती है-''यह एक नया मासिक पत्र है। कमर्शल प्रेस, जूही-कलाँ कानपुर से निकला है। इसका वार्षिक मूल्य सिर्फ सवा रुपया है। इसके एप्रिल 1915 के पहले

1. भारतभ्राता, 12 फरवरी 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्क में 16 पृष्ठ हैं। कई पृष्ठ विज्ञापन भी हैं। काग़ज और छपाई अच्छी है। हर पृष्ठ में दो कालम हैं। इसका उद्देश्य इसके नाम ही से प्रकट है। व्यापार-सम्बन्धी उपयोगी लेख प्रकाशित करने के लिए यह निकाला गया है।''

आगरा से मासिक *'दामन-ए-बहार'* जून 1892 में प्रकाशित किया गया था। शेर शायरी के इस मासिक की पृष्ठ सँख्या 64 थी। प्रकाशक मिर्ज़ा फ़िदा हुसैन थे। *'नागरी नीरद'* सन 1892 में मिर्ज़ापुर से प्रकाशित हुआ। यह साप्ताहिक पत्र था। वार्षिक मूल्य दो रुपये था। बीच में बंद रह कर यह सन 1905 में दुबारा निकला। यह सूचना 'चांद' (1928) से मिलती है- ''सन 1905 'नागरी नीरद' मिर्ज़ापुर से बदरीनारायण चौधरी निकालते हैं।'' मुम्बई से साप्ताहिक 'इण्डिया गजट' अक्टूबर 1892 में निकला। प्रकाशक एवं सम्पादक हकीम शेख मुहीउद्दीन 'बंदा' थे। 7 अक्टूबर 1892 को मुम्बई से साप्ताहिक *'विक्षिप्त'* का प्रकाशन हुआ। सम्पादक-प्रकाशक विनायक नारायण भाटे थे।

सन 1892 में पंडित जगतनारायण ने मासिक *'गो सेवक'* का प्रकाशन काशी से किया। 'भारतभ्राता'[1] में 'गो सेवक' के विषय में यह जानकारी मिलती है- ''हिन्दी भाषा का यह एक साप्ताहिक पत्र है। दशास्वमेघ घाट काशी से प्रकाशित होने लगा है। काग़ज़ मोटा साफ़, छापा स्पष्ट और लेख बहुत उत्तम होते हैं। आकार इसका भारतभ्राता का आधा और वार्षिक मूल्य नगर निवासियों के लिए बारह आना और बाहर वालों के लिए डेढ़ रुपया वार्षिक है। उद्देश्य इस पत्र का नाम ही से विदित है। ऐसे पत्र का पालन हिन्दुओं को अवश्य करना चाहिए।'' सन 1894 में यह साप्ताहिक हो गया। गो हत्या और उसके झगड़ों की असलियत बयान करने के कारण सरकार ने सम्पादक को प्रांत से निष्कासित कर दिया था।

साप्ताहिक *'पुलिस न्यूज़'* मेरठ से 24 दिसम्बर 1892 को प्रकाशित किया गया था। इसके सम्पादक शेख़ हबीब अहमद थे। दारुल उलूम प्रेस मेरठ में छपता था। पृष्ठ सँख्या 12 थी। इसके मालिक के खिलाफ़ डिक्री होने पर हकीम मोहम्मद मुक़र्रब हुसैन, (जो 'अख़बार आलम' मेरठ के मालिक थे), ने इसे मुसीबत से निकाला। नीलाम में 'अख़बार आलम' ने 'पुलिस न्यूज़' को खरीद लिया। अक्टूबर 1895 से इसे हर दसवें दिन प्रकाशित किया जाने लगा।

सन 1892 में गोरखपुर से साप्ताहिक *'अल वक़्त'* प्रकाशित किया गया था। इसके प्रकाशक एवं सम्पादक मौलवी मोहम्मद सईद 'राज़' थे। आठ अथवा बारह पृष्ठ का रहता था। वार्षिक शुल्क तीन रुपये आठ आना था। छपाई और किताबत सुन्दर और साफ़ होती थी। साप्ताहिक *'इन्तिख़ाब-ए-आलम'* बदायूँ से सन 1892 में निकला था। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलवी सैयद बदरुद्दीन 'शायक़' थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। स्थानीय, देश तथा विदेशों के समाचार प्रकाशित किए जाते थे।

सन 1892 में विदेशी महिला ड्रायडन दोरसानी के सम्पादन में तेलुगु मासिक *'उपाध्यायोपकारी'* गुंटूर से निकला। इसी वर्ष *'उपाध्यायोपयोगिनी'* तेलुगु मासिक का प्रकाशन मछलीपत्तनम से हुआ। शिक्षा और विज्ञान की इस पत्रिका का प्रकाशन और सम्पादन कोट सूर्यनारायण करते थे। *'कपूरथला अख़बार'* का प्रकाशन कपूरथला से सन 1892 में हुआ। पृष्ठ सँख्या 12 थी। वार्षिक शुल्क चार सोमवार को निकलता था। प्रकाशक तथा सम्पादक मुंशी हामिद हुसैन थे।

1. भारतभ्राता, 14 अक्टूबर 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये तेरह आना था।

सन 1892 में साप्ताहिक *'कर्नाटक वैभव'* का प्रकाशन बीजापुर से किया गया था। सम्पादक मन्नूर गुंडीराव थे। उनके बाद सम्पादन का दायित्व वकील जयराव देशमुख ने निभाया। पश्चात मोहर हनुमंत राव सम्पादक हुए। प्रेस एक्ट के विरोध में इस पत्र ने सम्पादकीय लिखना बंद कर दिया था। सम्पादक ने इस्तीफा दे दिया था। जब 'कर्नाटक वैभव' से जमानत माँगी गई तब पाँच माह के लिए प्रकाशन बन्द रहा।

सन 1892 में शेर और शायरी की मासिक पत्रिका *'गुलज़ार-ए-सुख़न'* मुम्बई से प्रकाशित की गई थी। पृष्ठ सँख्या 16 थी। सम्पादक मिर्ज़ा मेहमूद अली और प्रकाशक जनाब मेहदी अली थे। मासिक *'तोहफ़ा-ए-मुहम्मदिया'* का प्रकाशन सन 1892 में कानपुर से किया गया था। इसके प्रकाशक मोहम्मद सईद थे। सन 1892 में पत्रिका *'धर्मवर्द्धिनी'* विशाखापत्तनम से प्रकाशित हुई। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक सी.एच. राममूर्ति शास्त्री थे। सन 1892 में विज्ञान पत्रिका *'धीरंजनी'* का प्रकाशन किया गया। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक विश्वनाथम राघवेंद्र शास्त्री थे।

मुरादाबाद से साप्ताहिक *'धेला अख़बार'* सन 1892 में निकला। देश-विदेश के समाचारों के अतिरिक्त पतंगबाज़ी, गेंद का खेल, इंद्रजाल, शतरंज, चौपड़, कुश्ती, तीरंदाज़ी तथा तैराकी आदि विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते थे। सबसे अच्छे लेख पर हीरे की अँगूठी तथा दूसरे क्रम के लेख पर नीलम की अँगूठी पुरस्कार स्वरूप दी जाती थी। उड़िया भाषा की पत्रिका *'ब्राह्म'* सन 1892 में प्रकाशित हुई थी। यह पत्रिका कटक के राय प्रेस से निकली थी। सन 1892 में हिन्दी साप्ताहिक *'व्यापार हितैषी'* काशी से निकला। वार्षिक मूल्य डेढ़ रुपया था। प्रकाशक बाबू हनुमानप्रसाद थे।

विन्ध्य रत्नाकर

'विन्ध्य रत्नाकर' के प्रकाशन की योजना सन 1892 में बनी थी। इस सम्बन्ध में 'भारतभ्राता'[1] में प्रकाशन में आ रही कठिनाई का जिक्र मिलता है कि पर्याप्त ग्राहक नहीं मिल पा रहे थे। ''इस पत्र का विज्ञापन हम लोग वर्ष दिन से अधिक काल तक देते रहे तो भी दु:ख की बात है कि आज तक इसके लिए ग्राहकों की यथेष्ट सँख्या नहीं हुई। विदित होता है कि हिन्दुओं और हिन्दी रसिकों में अभी तक वह देशानुराग नहीं हुआ है कि ऐसे पत्रों का सन्मान किया जावे। ऐसी दशा में श्री महाराजकुमार श्री लालबलदेव सिंह जी भी इस पत्र के निकालने का पूर्ण भार स्वत: अपने ही ऊपर लेना नहीं चाहते। वह समझते हैं कि एक भारतभ्राता को यदि वह सम्यक् प्रकार चलाते चले जावेंगे जैसा कि यह आज तक चला जा रहा है तो वह अपने जीवन को सफल समझेंगे। लाल साहेब के इस विचार को हम भी सराहते हैं। हमको दु:ख केवल इसी एक बात का है कि लेखदाता जी इस पत्र द्वारा आज बिना वेतन निज देश सेवा करने के लिए उद्धत हो गये थे स्यात फिर अभी दो दो तीन तीन सौ मासिक देने पर भी सुगमत: मिल न सकेंगे। हम इन महाशयों को उस सेवा के लिए जो इन्होंने उपहार ही अर्पण किया था और इसके निमित्त सामग्री एकत्र करने में धन व्यय और परिश्रम किया उसके लिए अंत:करण से अपनी कृतज्ञता प्रकाश करते हैं और साथ ही यह भी हमारी प्रार्थना है कि यदि वे महाशय चाहें तो उनका मूल्य वापिस कर दिया जावे या यदि चाहें तो भारतभ्राता के मूल्य

1. भारत भ्राता, 11 मार्च 1892

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उसका लेखा कर लिया जावे। लाल साहब का विचार विन्ध्य रत्नाकर को एकदम मृत कर देने का नहीं है। भारतभ्राता का विज्ञापन सहयोगी भारतमित्र, ब्राह्मण, द्विज पत्रिका, जगन् मित्र आदि कृपा कर छापते रहे हैं उन्हें हम लोग धन्यवाद देते हैं इनके परिश्रम से भारतभ्राता की ग्राहक सँख्या इतनी बढ़ गई कि यह पत्र निज व्यय को स्वत: संभाल सका और भारतभ्राता के ग्राहक वृन्द नादिहिन्दो में अपने नाम न लिखाए तो आशा है कि लाल बलदेवसिंह साहब विन्ध्य रत्नाकर का भार अपने ही ऊपर लेकर कभी न कभी इसे अवश्य निकालेंगे और स्वत: विन्ध्य रत्नाकर के ग्राहक न भी होंगे तो भारतभ्राता ही के ग्राहकों की उपहार हो जैसा कि नियम हो चुका है देंगे। सच है-''गुण न हिरानो गुण ग्राहक हिरानो है।'' सब कुछ हिन्दी रसिक देश हितैषी ग्राहक महाशयों ही के हाथ है। चाहे वह विन्ध्य रत्नाकर को निकाले वा इसे गर्भ ही में मृत करें।''

सन 1892 में '*सत्य संवर्द्धिनी*' की प्रतिद्वंद्वी पत्रिका '*सत्यान्वेषिणी*' का प्रकाशन राजमुंदरी से हुआ। इस तेलुगु पाक्षिक के सम्पादक-प्रकाशक बज उल उल्ला थे। '*साकेत जीवन*' मासिक पत्र प्रत्येक मास की पहली तारीख को अयोध्या से प्रकाशित होता था। इसका वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। बाबू रामनारायण सिंह ताल्लुकेदार सम्पादक और प्रकाशक थे। रावलपिंडी से साप्ताहिक '*हिमालय*' सन 1892 में प्रकाशित हुआ। प्रकाशक तथा सम्पादक कृपाराम थे। सन 1892 में बांकीपुर से '*विद्या विनोद*' और जयपुर से '*तफ़रीहे अहबाब*' का प्रकाशन हुआ।

सितम्बर 1892 में कोलकाता से अँगरेजी मासिक पत्रिका '*लाइट आफ ईस्ट*' का प्रकाशन हुआ। एस.सी. मुखोपाध्याय पत्रिका के सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। इंग्लैंड, अमेरिका तथा अन्य देशों में भी पत्रिका के ग्राहक थे। वेद, उपनिषद आदि पर अँगरेजी के पाठकों के लिए सारगर्भित आलेख प्रकाशित किए जाते थे। 'की नोट' शीर्षक से सम्पादक की विद्वतापूर्ण टिप्पणी पत्रिका के प्रथम पृष्ठ से दी जाती थी, जो चार पृष्ठों तक की होती थी।

सितम्बर 1892 में कोलकाता से मासिक पत्रिका '*हिन्दू मैगजीन*' का प्रकाशन हुआ। अँगरेजी भाषा की इस पत्रिका में वेद आदि वाड.मय, यज्ञ योग और हिन्दुओं की मान्यताओं पर शोधपरक लेख प्रकाशित किए जाते थे। संस्कृत श्लोकों के माध्यम से व्याख्या की जाती थी।

1893

दस दिन के अन्तराल से प्रकाशित होने वाले '*आलम अफ़रोज़*' का प्रकाशन मुम्बई से 10 मई 1893 को किया गया था। प्रकाशक सैयद हसन तथा सम्पादक मोहम्मद सादिक़ 'नातिक़' थे। आठ पृष्ठ के इस पत्र का वार्षिक शुल्क दो रुपये था। लुधियाना से साप्ताहिक '*सिविल एंड मिलिट्री न्यूज*' का प्रकाशन 10 मई 1893 को किया गया था। पृष्ठ सँख्या दस थी। हर बुधवार को निकलता था। पहले इसके सम्पादक मौलवी मिस्बाउद्दीन रहे फिर गुलाम मुहीउद्दीन हुए। वार्षिक शुल्क चार रुपये था।

अंजुमन-ए-इस्लाम का पाक्षिक '*तबलीग़*' 15 मई 1893 को जबलपुर से प्रकाशित किया गया। सम्पादक मौलाना मोहम्मद अब्दुल जब्बार 'उमरपुरी' थे। आठ पृष्ठ होते थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। जनवरी 1894 से 'तबलीग़' को साप्ताहिक कर दिया गया। इस पत्र में अधिकतर तबलीग़ी तथा इस्लाम धर्म से सम्बन्धित लेख प्रकाशित किए जाते थे। एक पृष्ठ पर संक्षेप में समाचार छपते थे।

जुलाई 1893 में '*जनाना पत्रिका*' का प्रकाशन राजमुंदरी से हुआ। यह तेलुगु भाषा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मासिक पत्रिका थी। इसके संस्थापक मल्लादि वेंकटरत्नम, सम्पादक वेंकट शिवुडु तथा प्रकाशक कंदकूरि वीरेशलिंगम थे।

सियालकोट से मासिक *'मोहम्मडन नेशनल मैगज़ीन'* का प्रकाशन एक अगस्त 1893 को किया गया था। जबलपुर से प्रकाशित 'तबलीग़'[1] ने इसके सम्बन्ध में लिखा-''तहज़ीब व अख़लाक़ व सोशल हालात पर बसीत व तवील आर्टिकल लिखता है। तारीख़ी वाक़यात दिलचस्प बयान करता है। काग़ज़ व छपाई की उम्दगी व सफ़ाई में अक्सर देसी अख़बारात से इसका नम्बर बढ़ा हुआ है। यकुम अगस्त से जारी हुआ है अब तक पाँच नम्बर शाया हो चुके हैं।''

'मुम्बई वैभव' एक सितम्बर 1893 को प्रकाशित हुआ। पार्वती वरदा छापाखाने में छपता था। सम्पादक केशव पुरुषोत्तम मेहेंदले थे। यह दैनिक 17-18 वर्ष तक व्यवस्थित चला। 15 वर्ष तक मेहेंदले इसके सम्पादक रहे। 'काल'[2] पत्र ने 'मुम्बई वैभव' के सम्बन्ध में लिखा था- ''सितम्बर से मुम्बई वैभव को तेरहवाँ वर्ष लगेगा। उसका आकार बढ़ाकर दुगुना याने रॉयल चार फॉर्म का किया गया है। इसमें प्रचलित विषयों पर निबंध, स्थानिक वृत्त, तारों की ख़बरें, चुने हुए वर्तमान सार, समाचार, पत्र व्यवहार, कामदारों की नियुक्तियाँ, स्थान स्थान की मौसम की जानकारी, बझार भाव आदि सुधार किया है।'' उस ज़माने में मराठी दैनिक पत्र चलाना अपने आप में बड़े साहस का काम था। बाद में 'मुम्बई वैभव' पत्र का छापाखाना भारत सेवक समाज ने खरीद लिया।

'दलील-ए-इस्लाम' मुम्बई से दो सितम्बर 1893 को निकला था। मतबअ अहमदी में छपता था। मुहीउद्दीन 'रश्क' सम्पादक-प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क 12 रुपये था।

'श्री सयाजी विजय' नाम का साप्ताहिक वड़ोदरा से 11 नवम्बर 1893 को प्रकाशित हुआ। हर शनिवार को निकलता था। इसके सम्पादक-प्रकाशक यन्दे थे। केसरी[3] से पता चलता है कि यह अँगरेजी और मराठी भाषा में निकलता था। अँगरेजी भाग के सम्पादक सर मनुभाई मेहता और मराठी भाग के सम्पादक शंकर मोरो रानडे थे।

चार पृष्ठ के अर्द्ध साप्ताहिक *'बहार-ए-रोज़गार'* का प्रकाशन मुम्बई से नवम्बर 1893 में हुआ था। इसके प्रकाशक तेग़ अली तथा सम्पादक सुलेमान मिर्ज़ा थे। साप्ताहिक *'अख़बार इस्लाम'* सन 1893 में आगरा से निकला। मौलवी वारिस अली सम्पादक तथा प्रकाशक थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

लखनऊ से पाक्षिक *'अदीब'* का प्रकाशन सन 1893 में हुआ। पृष्ठ सँख्या 12 थी। महीने की पहली और पन्द्रह तारीख को निकलता था। इसके प्रकाशक-सम्पादक रोशनलाल थे। यह सचित्र पत्रिका थी। इसमें समाचारों के अतिरिक्त जानकारीयुक्त लेख, शिक्षा विभाग से सम्बन्धित प्रश्न और उत्तर तथा आय व्यय आदि भी छपता था। इसकी क़िताबत और छपाई साफ सुथरी एवं कागज़ भी बढ़िया होता था। सन 1893 में साहित्यिक पत्रिका *'इन्द्रधनु'* का प्रकाशन हुआ। मासिक *'ज़बान'* दिल्ली से सन 1893 में प्रकाशित हुआ। सम्पादक रासिख़ देहलवी थे। कभी 16 और कभी 24 पृष्ठ में मतबअ मज़हर-उल-अजायब में छपता था।

1. तबलीग़, 1 सितम्बर 1893
2. काल, 25 अगस्त 1905
3. केसरी, 9 नवम्बर, 1900

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

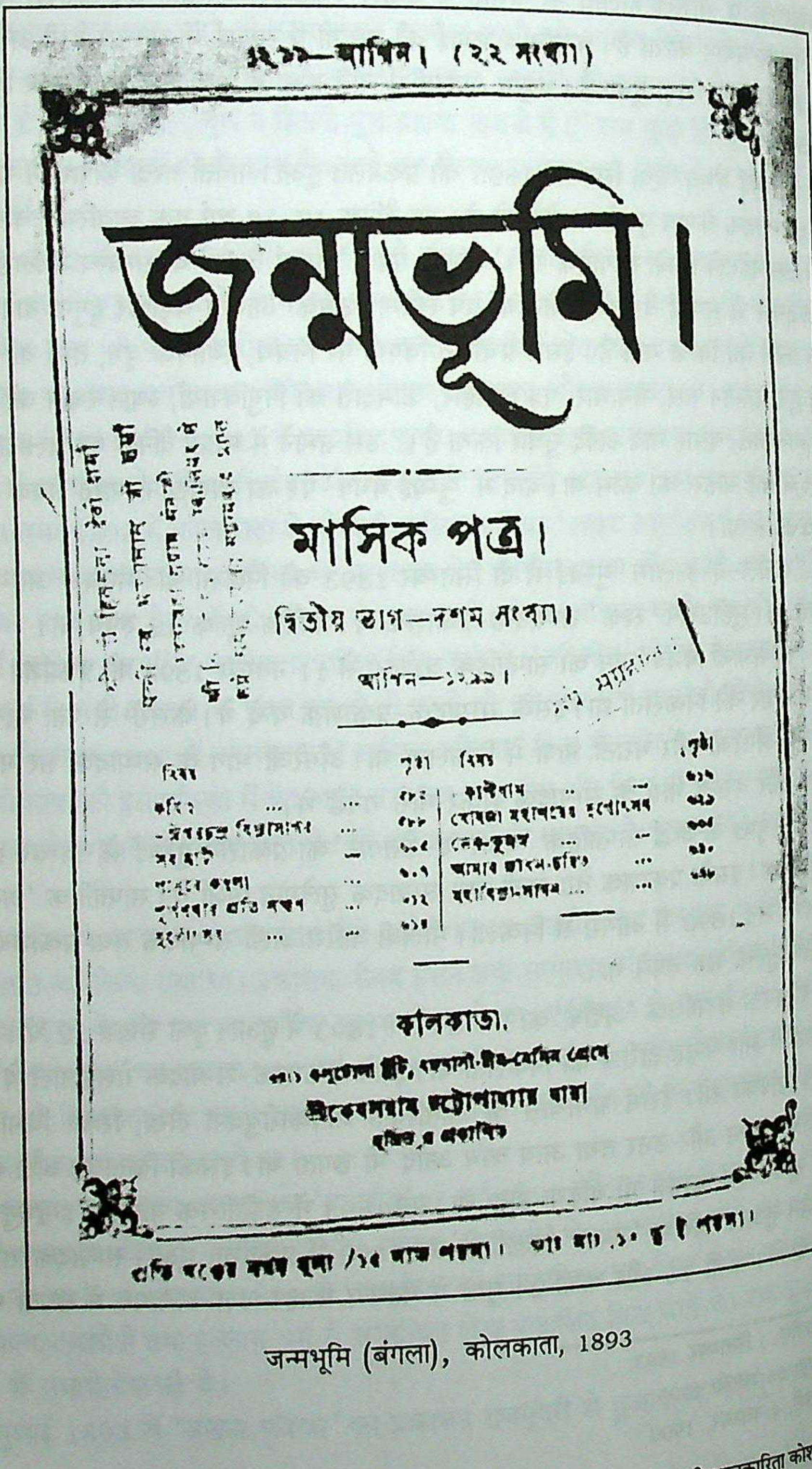

১২৯৯—আশ্বিন। (২২ সংখ্যা)

জন্মভূমি।

মাসিক পত্র।

দ্বিতীয় ভাগ—দশম সংখ্যা।

আশ্বিন—১২৯৯।

কলিকাতা.

মুদ্রিত ও প্রকাশিত

जन्मभूमि (बंगला), कोलकाता, 1893

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्मभूमि

बंगला भाषा की मासिक पत्रिका *'जन्मभूमि'* का प्रकाशन सन 1893 में कोलकाता से हुआ। इस साहित्यिक पत्रिका का आकार 25 गुणित 15 से.मी. था। पृष्ठ सँख्या 64 थी। किन्तु सामग्री के अनुसार पृष्ठ सँख्या कम-ज्यादा होती रहती थी। इसके सम्पादक और प्रकाशक कंवलराय चट्टोपाध्याय थे।

सन 1893 में *'देशोपकारी'* का प्रकाशन हुआ। सत्तिराजू सीतारामय्या इसके संस्थापक तथा चिलुकूरि वीर भद्रराव सम्पादक थे। यह तेलुगु साप्ताहिक एलुरु से प्रकाशित हुआ। साप्ताहिक *'नूर अली नूर'* सन 1893 में लुधियाना से निकला। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलवी नूर मोहम्मद थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। *'पेड़णे समाचार'* पेड़णे से सन 1893 में निकला। इसके सम्पादक आत्माराम वासुदेव देशप्रभु थे। सन 1893 में साप्ताहिक *'मुईन-उल-हिन्द'* अजमेर से निकला। सिकन्दर खां प्रकाशक तथा सम्पादक थे। मुजफ़्फ़रनगर से सन 1893 में *'रिसाला जलसा एहबाब'* प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक ज़हूरुल इस्लाम 'गौहर' थे।

सन 1893 में तेलुगु में विज्ञान की मासिक पत्रिका *'प्रबुद्ध आंध्र'* कडप्पा से प्रकाशित हुई। सन 1893 में *'बिजुली'* पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसका सम्पादन दाशरथि राऊत करते थे। यह वामण्डा देवगढ़ से प्रकाशित होती थी। 'मलयाला मनोरमा' की पहल पर सन 1891 में केरल कवि समाज की स्थापना हुई। लेखकों और कवियों की यह ख्याति प्राप्त संस्था बनी। इस संस्था ने सन 1893 में तिमाही पत्रिका *'भाषा पोषिणी'* का प्रकाशन प्रारम्भ किया, जो सन 1897 से मासिक हो गई।

सन 1893 में *'वार्ता दर्शिनी'* नामक समाचारपत्र नेल्लूर से प्रकाशित हुआ। नलतूरि कृष्णमाचार्युलु ने इस तेलुगु साप्ताहिक का प्रकाशन किया था। सम्पादक तूमुलूरि वेंकट रमणय्या थे। सन 1893 में पत्रिका *'स्त्री हितबोधिनी'* का प्रकाशन काकिनाडा से हुआ। रापाका कौस्तुभमु इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। यह तेलुगु भाषा की मासिक पत्रिका थी। सन 1893 में यलमंचिली से तेलुगु पत्रिका *'शारदा'* निकली। सन 1893 में समाचार पत्रिका *'ज्ञानोदयम्'* का प्रकाशन हुआ। इस तेलुगु पाक्षिक को एलूरु से दास केशवराव ने निकाला था।

सन 1893 में मुर्शिदाबाद से बंगला पत्र *'मुर्शिदाबाद हितैषी'* का प्रकाशन हुआ। विज्ञापनों का साप्ताहिक *'वर्नाक्युलर एडवर्टाइजर'* लखनऊ से सन 1893 में निकला। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक रामजीदास भार्गव थे। नवलकिशोर प्रेस में छपता था।

1894

अलीगढ़ मैगजीन

ज्ञान, विज्ञान तथा साहित्य के मासिक 'मोहम्मडन ऐंग्लो-ओरिएण्टल कालिज मैगजीन' का प्रकाशन अलीगढ़ से जनवरी 1894 में किया गया। उर्दू तथा अँगरेजी भाषा की इस पत्रिका के उर्दू भाग का सम्पादन मौलाना शिबली नोमानी तथा अँगरेजी भाग का सम्पादन थायोडोर बेक करते थे। फ़ैज़-ए-आम प्रेस अलीगढ़ में छपती थी। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

मार्च 1899 के अंक में सम्पादक ने पत्रिका के बारे में लिखा-''तक़रीबन पाँच बरस हुए के इस नाम का एक इल्मी रिसाला और उर्दू ज़बान का मिला हुआ अलीगढ़ कालिज से निकलना शुरू हुआ। अव्वल वह अलीगढ़ इंस्टीट्यूट गज़ट का ज़मीमा बन कर निकलता रहा लेकिन सन 1894 में उसने एक मुस्तक़िल रिसाले की सूरत इख़्तियार कर ली। इसके मज़ामीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

सप्रे संग्रहालय

علی گڑھ میگزین

نمبر ۱	بابت جنوری و فروری و مارچ سنہ ۱۹۳۴ء	جلد ۱۲

تاثرات

یک قصہ بیش نیست غمِ عشق وایں عجب
از ہر کسے کہ می شنوی نامکرر است

کائناتِ عالم کا ذرہ ذرہ تبدیل و تغیر کے اٹل قانون اور لامتناہی سلسلہ میں جکڑا ہوا ہے۔ ہریکلیٹس (مشہور
یونانی حکیم) کے الفاظ میں روشِ دہر ایک جاوداں خرام دریا کے مانند ہے جس میں دو بار قدم رکھنا ممکن نہیں
... طبیعیات کا یہ عالمگیر اصول کم و بیش زندگی کے ہر شعبہ میں جھلکتا نظر آتا ہے۔ پھر میگزین کیوں کر اس کلیہ سے مستثنیٰ
رہتا۔ ہر نئے سال کے ساتھ اس گلشن کی آئینہ بندی نئے باغبان کے سپرد ہوتی ہے ... کے آغاز پر اس سفینے کی
ناخدائی نئے شخص کو تفویض کی جاتی ہے۔ بارے اس اہم فرض کا بار ہمارے ناتواں کاندھوں پر رکھا گیا ہے ... وقت
... جن متضاد خیالات کا جولان گاہ ہے وہ اپنی نوعیت کے اعتبار سے ہمت افزا بھی ہیں اور حوصلہ شکن بھی

अलीगढ़ मैगजीन (उर्दू), सन 1894

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़्यादातर कालिज की ख़बरों और उसके मुताल्लिक़ात पर महदूद थे। और इस वजह से आम पब्लिक को इसके साथ कोई दिलचस्पी न थी। इस ख़्याल से इसके मुंतज़िमों ने इसको ज़्यादा वुसअत देनी चाही ताके वह एक इल्मी मैगज़ीन बन जाए जिसमें कालिज की ख़बरों के अलावा मुसलमानों के उलूम व फ़ुनून, तारीख़ और लिट्रेचर के मुताल्लिक़ मुफ़ीद और पुरज़ोर मज़ामीन लिखे जाएँ। इस ग़र्ज़ से उसके 24 सफ़े उर्दू के लिए मख़सूस कर दिए गए। मुल्क के मशहूर अहले क़लम यानी मौलाना हॉली, नवाब मोहसिन-उल-मुल्क, मौलवी नज़ीर अहमद और मुंशी ज़काउल्ला वग़ैरह बुज़ुर्गों ने इसके लिए मज़ामीन लिखने का वायदा किया है और अहले कलम भी अगर इसकी अयानत फ़रमाएंगे तो हम निहायत फ़ख़्र के साथ क़ुबूल करेंगे। अप्रैल 1898 से अब इंस्टीट्यूट गज़ट भी इसमें शामिल कर दिया गया है। मैगज़ीन और इंस्टीट्यूट गज़ट के कुल सफ़हात 40 और 50 के दरमियान हुआ करेंगे।''

1903 में मैगजीन का नाम बदलकर 'अलीगढ़ मंथली' किया गया, जिसका प्रकाशन दिसम्बर 1919 तक हुआ। जनवरी 1920 में नाम एक बार फिर बदला और 'अलीगढ़ मैगज़ीन' हो गया। इसके सम्पादक रशीद अहमद सिद्दीक़ी थे। ख़्वाजा मंज़ूर हुसैन, आले अहमद सुरूर, जाँ निसार अख़्तर, अबुलसेस सिद्दीकी, मुईनुद्दीन दरदाई, आफ़ताब अहमद सिद्दीकी, मुख़्तार अहमद आरज़ू, शबीउल हसन नौनहरी, खलील उर्रहमान आज़मी, क़मर रईस और शहरयार इस मैगज़ीन के सम्पादक रहे। पत्रिका के कुछ अंक अँगरेजी तथा उर्दू भाषा में संयुक्त रूप से प्रकाशित हुए। फिर उर्दू और अँगरेजी में अलग अलग अंक प्रकाशित किए जाने लगे। उर्दू में प्रकाशित सामग्री अंग्रेज़ी प्रकाशन की सामग्री से बिल्कुल अलग होती थी। 'अलीगढ़ मैगज़ीन' के उर्दू के महान साहित्यकारों-इक़बाल, अहसन, फ़ानी, गालिब, अकबर, मजाज़ आदि पर केन्द्रित विशेषांक शोध-सन्दर्भ की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। 'अलीगढ़ मैगज़ीन' 1970 में बन्द हो गई।

मुईन-उल मुल्क

'*मुईन-उल-मुल्क*' का प्रकाशन मुम्बई से 11 जनवरी 1894 को किया गया था। इस साप्ताहिक में आठ पृष्ठ होते थे। हकीम गुलाम अली बलीग़ प्रकाशक तथा मुंशी अहमद खां 'इदराक' सम्पादक थे। इसका शुल्क वर्ष में बारह रुपये था। इस साप्ताहिक में देश-विदेश के और स्थानीय समाचार छापे जाते थे। सम्पादकीय नोट भी लिखे जाते थे। सम्पादकीय टिप्पणियों में कम शब्दों में ज़्यादा बात कहने का हुनर झलकता है- ''इस साल सरकारी बड़े बड़े ओहदे मसलन जजी हॉयकोर्ट भी ऐसे अश्ख़ास (व्यक्तियों) को नसीब हुई जो कांग्रेस के सरबराह हामी और मुआवनीन (कांग्रेस के समर्थक एवं सहयोगी) थे। फिर कैसे ख़्याल किया जा सकता है के गवर्मेण्ट कांग्रेस वालों को नफ़रत की निगाह से देखती है।''

नारायण बालकृष्ण नाखरे ने जनवरी 1894 में '*विचार वाहन*' नामक हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। यह सागर संभाग से प्रकाशित होने वाला प्रथम पत्र था। 'विचार वाहन' के सम्पादक नाखरे चूँकि थियोसोफिकल सोसायटी के सक्रिय कार्यकर्ता थे, अत: इस पत्र में सोसायटी के क्रियाकलापों और गतिविधियों के समाचार प्रमुखता से छपते थे। 'विचार वाहन' के अंतिम पृष्ठ पर विज्ञापन प्रकाशित होता था। थियोसोफिकल सोसायटी के सूत्रधारों में से एक कर्नल आलकाट ने नाखरे को उपहार स्वरूप प्रेस भेंट किया था। उसी से 'विचार वाहन' का मुद्रण होता था। नाखरे ने प्रेस का नाम भी आलकाट प्रेस रखा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14 फरवरी 1894 को साहबगंज गया से '*गया पंच*' का प्रकाशन हुआ। पंडित कृष्णलाल शर्मा ने सन 1894 में पाक्षिक पत्र के रूप में आगरा से '*सज्जन विनोद*' प्रकाशित किया। यह पत्र पादरी मैकमिलन और महाराज नरेन्द्रसिंह की सहायता से प्रकाशित किया गया था। 'सज्जन विनोद' में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाता था। पृष्ठ सँख्या आठ थी। अग्रिम वार्षिक मूल्य डेढ़ रुपये था। पत्र में देश विदेश के समाचार, उपदेशात्मक टिप्पणियाँ, कविता, नाटक, लेख आदि छपा करते थे। यह पत्र सात वर्ष तक चला।

भूत

एक जुलाई 1894 को पाक्षिक '*भूत*' का पहला अंक मुम्बई से प्रकाशित हुआ। यह व्यंग्य चित्रात्मक पाक्षिक था। अमावस्या और पूर्णिमा को निकलता था। इस पत्र के सम्पादक आनंदराव रामचन्द्र धराधर थे। 'भूत' सन 1904 तक प्रकाशित हुआ।

'विक्षिप्त'[1] में 'भूत' के सम्बन्ध में अनूठे अंदाज में यह सूचना प्रकाशित हुई- ''भूत' नाम का समाचारपत्र मुम्बई से प्रकाशित होने लगा है और उसका प्रथमांक आया है। यह पत्र मनोरंजक मासिक जैसा लगता है। अमावस्या, पूर्णिमा को प्रकाशित यह भूत चक्कर लगाएगा। बीच के समय में सर्वत्र गुप्त रीति से अनाचार की ख़बरें इकट्ठा करके चमत्कारपूर्ण तरीके से छपाएगा। हमारे कामगारों को यह भूत न पछाड़े नहीं तो 'भूत' की मगरमिठी कामगारों पर पड़ गई तो उसका बेड़ापार हो जायगा।'' 'केसरी' और काल' पत्रों ने भी 'भूत' की प्रशंसा की थी। 'काल'[2] की टिप्पणी देखिए:- ''भूत'- इस नाम का मराठी में पहला सचित्र समाचारपत्र गत छह वर्षों से मुम्बई से प्रकाशित हो रहा है। इसमें राजनीतिक और सामाजिक विषयों पर अच्छे, मार्मिक और हास्य उत्पादक चित्र और लेख छपते हैं।''

मासिक '*बुंदेलखंड पंच*' का प्रकाशन 15 अगस्त 1894 को झांसी से किया गया था। बुंदेलखंड प्रेस में छपता था। पृष्ठ सँख्या 12 थी। इसके प्रकाशक मुंशी नत्थूप्रसाद तथा सम्पादक रियाज़ुल हसन 'रियाज़' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। सागर के आलकाट प्रेस से 1894 में '*बाल विभाग*' नामक बच्चों की पत्रिका प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक मोरेश्वर राव चन्द्राकर थे। सोलह पृष्ठ के मासिक में इतिहास पुरुषों के जीवन चरित्र, कविताएँ, कहानियाँ, विज्ञान पर निबंध, संक्षिप्त समाचार प्रकाशित किए जाते थे। पत्रिका में प्रश्नोत्तर का नियमित स्तम्भ था।

28 अगस्त 1894 को हैदराबाद से साप्ताहिक '*दकन गजट*' का प्रकाशन हुआ। मंगलवार को बारह पृष्ठों का छपता था। प्रकाशक एवं सम्पादक मोहम्मद सज्जाद हुसैन ताहिर थे। वार्षिक शुल्क बारह रुपये था। मुंबई से नवम्बर 1894 में पाक्षिक पत्रिका '*कोकब-ए-हिन्द*' का प्रकाशन हुआ। प्रकाशक तथा सम्पादक मुंशी मोहम्मद यूसुफ़ 'कोकब' थे।

साप्ताहिक '*असम*' का प्रकाशन 1894 में प्रारम्भ हुआ। यह अख़बार अँगरेजी और असमिया भाषा में छपता था। प्रकाशक और सम्पादक कालीराम बरुआ थे। यह पत्र सन 1907 तक प्रकाशित हुआ। आठ पृष्ठ का साप्ताहिक '*आईना-ए-हिन्द*' मुम्बई से सन 1894 में प्रकाशित हुआ। प्रकाशक तथा सम्पादक नन्दीराम थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था। चेन्नै से साप्ताहिक '*इल्हामी*' का प्रकाशन सन 1894 में किया गया था। इस्लामी प्रेस में छपता था।

---

1. विक्षिप्त, 4 अगस्त 1894
2. काल, 22 जून 1900

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर इतवार को निकलता था। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। साप्ताहिक *'इंडियन रिफार्मर'* का प्रकाशन लखनऊ से सन 1894 में किया गया। पृष्ठ सँख्या बारह थी। गुरुवार को रामनारायण प्रेस से छप कर जारी होता था। सम्पादक और प्रकाशक बाबू रामनारायण थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था। लाहौर से साप्ताहिक *'इंसाफ पसंद'* सन 1894 में निकला। सेवक प्रेस में छप कर सोमवार को जारी होता था। प्रकाशक लाला तोताराम तथा सम्पादक बख़्शी ताराचंद थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया बारह आना था।

सन 1894 में रामकृष्ण साहू ने राय प्रेस कटक से मासिक *'उत्कल चिकित्सक'* का प्रकाशन किया। मुम्बई से सन 1894 में मासिक *'उरूज-ए-बहार'* का प्रकाशन हुआ। प्रकाशक एवं सम्पादक सैयद इस्हाक़ हसन 'शरर' मारहरवी थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। मुज़फ़्फ़रनगर से साप्ताहिक *'कश्शाफ'* का प्रकाशन 1894 में किया गया था। प्रकाशक एवं सम्पादक शेख़ फ़ैय्याज़ अहमद थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। सन 1894 में रावलपिंडी से *'ख़बर औरंगाबाद'* का प्रकाशन हुआ।

तफरीह

बीस पृष्ठ का साप्ताहिक *'तफ़रीह'* सन 1894 में लखनऊ से प्रकाशित हुआ। सम्पादक एवं प्रकाशक रामजीदास भार्गव थे। नवलकिशोर प्रेस में छपता था। 'तफ़रीह' में मनोरंजक लेख, स्थानीय तथा देश-विदेश के समाचार, घटनाओं के विवरण, कविताएँ आदि प्रकाशित होते थे। प्रश्नोत्तर स्तम्भ में पाठक प्रश्न पूछ कर जानकारी हासिल कर सकते थे।

उन दिनों हिन्दुस्तान में समाचारपत्रों की दशा पर 'तफ़रीह' की यह टिप्पणी रोशनी डालती है- ''एक तरफ़ तो यह शिकायत है के हिन्दुस्तान के अख़बारात को जो तरक़्क़ी हासिल नहीं होती तो इसका सबब यह है के इनके मालिक या मुहत्मिम उलुलअज़्मी का बर्ताव नहीं करते। अख़बारों की क़ीमतें इस क़दर ज़्यादा होती हैं के हर शख़्स बाआसानी नहीं खरीद सकता और जरूरी ख़बरों और दिलचस्प मज़ामीन का कोई ख़ातिर ख़्वाह एहतमाम व इंतिज़ाम नहीं होता। दूसरी तरफ़ यह रोना है के मुल्क उनकी क़द्र नहीं करता और इस वजह से उनको इस काम में रुपये लगाने का हौसला नहीं होता। विलायत में बड़े से बड़ा अख़बार आधा आने को मिल सकता है यहाँ एक मामूली दर्जे का अख़बार भी दो पैसे में नहीं मिलता लेकिन अगर विलायत और हिन्दुस्तान के अख़बारात की इशाअत का मुक़ाबला किया जाए तो ज़मीन व आसमान का फ़र्क ज़ाहिर होगा। वहाँ के अख़बारात की इशाअत कई कई लाख होती है यहाँ सैकड़ों पर महदूद है। वहाँ वह जिस अरजां क़ीमत में फ़रोख़्त होते हैं उसमें भी फ़ायदा रहता है यहाँ गिरां क़ीमत में फ़रोख़्त होने पर भी कोई नफ़ा नहीं होता। मतलब यह है के जिस क़दर अख़बार अरज़ां होगा उस क़दर उसकी इशाअत ज़्यादा होगी और जिस क़दर इशाअत ज़्यादा होगी उसमें मुहत्मिम और ख़रीदार अख़बार का फ़ायदा है। इन सब बातों पर ग़ौर करने के बाद हमने अपने अख़बार की क़ीमत एक रुपया आठ आना मय महसूल सालाना यानि फ़ी पर्चा एक पैसा मुक़र्रर की है अगर इंसाफ़ फ़रमाइए तो एक पैसे में इतना कागज़ नहीं मिल सकता। हमने महज़ कसरते-इशाअत और मुल्क की क़द्रदानी की उम्मीद पर कम क़ीमत क़रार दी है और हमें यक़ीन है के जिस तरह हमारे इल्मदोस्त नाज़रीन गुज़िश्ता छह साल से 'एडवर्टाइज़र' को मदद देते रहे हैं उसी तरह 'तफ़रीह' को अपनी गिरांबहा मदद से मशकूर फ़रमाएंगे।''

सन 1894 में कन्नड भाषा का साप्ताहिक *'देशाभिमानी'* प्रकाशित किया गया था। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सम्पादक-प्रकाशक बी. श्रीनिवास अय्यंगार थे। मैसूर के दीवान सर के. शेषाद्रि की भृकुटियाँ इस पत्र पर सदैव चढ़ी रहती थीं। यहाँ तक कि पत्र के सम्पादक को पुलिस परेशान करती थी। अन्तत: प्रेस को जब्त कर लिया गया और यह साप्ताहिक अखबार बन्द हो गया।

मुम्बई से साप्ताहिक *'बशीर-उल-मुल्क'* का प्रकाशन सन 1894 में किया गया था। इसके सम्पादक मौलवी सैयद मोहम्मद बशीर थे। मतबअ अहमदी में आठ पृष्ठों में छपता था। विज्ञान की पत्रिका *'बुद्धिप्रदायिनी'* नंदगिरी वेंकट अप्पाराव ने सन 1894 में गुडिपाडा से प्रकाशित की। यह तेलुगु मासिक था। सन 1894 में रामचन्द्र वासुदेव कुलकर्णी ने हैदराबाद से *'भाग्य नगर'* नामक पत्र का प्रकाशन किया। मछलीपत्तनम से सन 1894 में *'रत्नाकरम्'* प्रकाशित हुआ। मल्म् पल्ली भैरवमूर्ति इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक थे। क़ानून की समाचार प्रधान पत्रिका *'लायरू'* का प्रकाशन सन 1894 में चेन्नै से हुआ। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक बी. पेरराजू थे।

सन 1894 में *'विबुध रंजनी'* पत्रिका निकली। इसे दामराजू रामचन्द्रराव ने एलूर से प्रकाशित किया। यह तेलुगु साप्ताहिक था। साहित्यिक पत्रिका *'वैजयंती'* का प्रकाशन सन 1894 में चेन्नै से हुआ। पनक्कम आनंदाचार्युलु इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक थे। सन 1894 में समाचार पत्रिका *'वृत्तांत मंजरी'* भी चेन्नै से निकली। इस तेलुगु साप्ताहिक के सम्पादक-प्रकाशक कोम्मूरि लक्ष्मी नरसिंहम थे।

रावलपिंडी से साप्ताहिक *'सरहदी अख़बार'* सन 1894 में निकला। शनिवार को प्रकाशित होने वाले इस पत्र के सम्पादक मुंशी गुलाम नक़्शबंदी सिंधी 'सफ़ी' थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। इसका कागज़, किताबत, छपाई उत्तम थी। इसमें सरहद की ख़बरों के साथ-साथ दुनियाभर की ख़बरें छपती थीं। इन्हीं सम्पादक ने रावलपिंडी से साप्ताहिक *'अल मुईन'* का भी प्रकाशन इसी वर्ष किया था।

सन 1894 में *'सुजन विनोदिनी'* का प्रकाशन मछलीपत्तनम से हुआ। इस तेलुगु पत्र के प्रकाशक और सम्पादक गोनुगुंट कोटय्या शास्त्री थे। सन 1894 में शैक्षिक पत्रिका *'सुफलार्थ-दायनी'* का प्रकाशन हुआ। इस तेलुगु मासिक का सम्पादन-प्रकाशन कोन कंची वेंकटचलपति राव करते थे।

'शशिलेखा' राजनीतिक पत्रिका थी, जिसका प्रकाशन सन 1894 में गट्टुपल्ली शेषाचार्युलु ने नेलदूर पार्थसारथी अय्यंगार के सम्पादन में किया था। चेन्नै से प्रकाशित होता था। यह तेलुगु पत्र आरम्भ में साप्ताहिक था, जो बाद में दैनिक हो गया। इस पत्र ने अँगरेजों की दुर्नीतियों का खुलकर विरोध किया।

हमदर्द-ए-हिन्द

सन 1894 में लाहौर से साप्ताहिक *'हमदर्द-ए-हिन्द'* का प्रकाशन हुआ था। पृष्ठ सँख्या दस थी। प्रत्येक पृष्ठ दो कालमों में बँटा होता था। प्रथम पृष्ठ पर पहले कालम से ही देश एवं विदेश के प्रमुख समाचार दिए जाते थे। एक बानगी- ''पोर्ट आर्थर की चीनी फ़ौज जंग से पहले भाग गई थी। जापानियों ने उन मफ़रूरों (भगोड़ों) को रास्ता दे दिया। यह फ़ौजी जंगी जहाज़ में पनाहगजीं (शरणागत) हुए। इन जहाज़ों में से दो जहाज़ों को जापानियों ने ग़र्क़ (डुबा) कर दिया। जापानी फ़ौज पोर्ट आर्थर पर क़ाबिज़ हो गई है।''

पत्र के 7 दिसम्बर 1894 के अंक में दरबार लाहौर का विवरण प्रकाशित किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके आठवें पृष्ठ पर अंतिम कॉलम में 'सरदार मोहम्मद हयात खां और कश्मीर' शीर्षक के अंतर्गत एक टीप प्रकाशित की गई है जो इस प्रकार है- ''जो लोग कहते हैं के अख़बारात की बकवास का कुछ असर नहीं होता उन्हें अब यह मानना पड़ेगा के उर्दू अख़बारात भी किसी लायक़ हैं और पब्लिक की वकालत भी कर सकते हैं। कुछ अरसे से अख़बारी दुनिया में सरदार साहब के हालात पर नुक्ताचीनी की जा रही थी। 'आईना-ए-हिन्द' और 'हमदर्द-ए-हिन्द' और दो एक अख़बार तो शुरू से ही अख़बारनवीसी के उसूल पर चल रहे थे मगर कई एक ऐसे भी पर्चे थे जो ख़ामोख़्वाह खुशामद की आड़ में बैठकर सरदार मोहम्मद हयात खां की तारीफ़ करते चले जा रहे थे।'' थोड़े दिनों से अजीब-अजीब अफ़वाहें उड़नी शुरू हो गई थीं कोई यह आवाज़ दे रहा था कि महाराजा साहब के दरबार लाहौर पर कामिल इख़्तियारात (सम्पूर्ण अधिकार) अता किए जाएंगे। कई एक यह सदाएं दे रहे थे के सरदार साहब भी साथ ही प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठेंगे। सरदार अमरसिंह साहब व राजा रामसिंह साहब अपने अपने दिल की कर लेंगे। बस इस क़िस्म की बेजोड़ कार्यवाही का नतीजा यह हुआ कि सरदार साहब रियासत से अलेहदा किए जाकर कहीं डिवीज़नल जज मुक़र्रर किए गए हैं। बस हम गवर्मेण्ट का शुक्रिया अदा करके रियाया-ए-जम्मू को मुबारकबाद देते हैं। इतना लिखने के बाद एक और बात याद आ गई-कहा जाता है कि अगर सरदार साहब रियासत कश्मीर से अलेहदा भी हो गए तो महाराजा साहब बहादुर सरदार साहब को अपने प्रायवेट स्टाफ़ में रख लेंगे। अब देखिए सरदार साहब महाराजा साहब के प्रायवेट स्टाफ़ में रहना पसंद करते हैं या डिवीज़नल जज के ओहदे को मंजूर करते हैं। सिविल मिलिट्री गज़ट 5 दिसम्बर 1894 की यह तहरीर के सरदार मोहम्मद हयात खां साहब अपनी दरख़्वास्त पर रियासत से अलेहदा होते हैं कि गवर्मेण्ट आफ इंडिया ने उनको कई बुजूहात से खुद वापिस लिया है जिसका तफ़सीली ज़िक्र हम किसी आइंदा पर्चे में करेंगे जिससे असल क़ैफ़ियत मालूम हो जाएगी।''

मराठी पत्र *'हितचिंतक'* सन 1894 में प्रकाशित हुआ। साप्ताहिक *'ही-उल-आलम'* रायपुर से सन 1894 में निकला। प्रत्येक सोमवार को आठ पृष्ठों में क़य्यूमी प्रेस में छप कर निकाला जाता था। इसके प्रकाशक शम्सुद्दीन ज़कीउद्दीन तथा सम्पादक मोहम्मद अब्दुल क़ादिर थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। सन 1894 में प्रयाग विद्यावर्द्धिनी सभा की ओर से *'नाट्य पत्र'*, वैद्य शिवराम पाण्डेय के सम्पादन में *'रत्नाकर'* तथा एक और जातीय पत्र *'कायस्थ हितकारी'* का प्रकाशन हुआ। जलगांव से सन 1894 में नारायण नरसिंह गाडगिल ने *'काव्य रत्नावली'* निकाली। यह मासिक पत्रिका चालीस वर्ष तक प्रकाशित हुई। इसका वार्षिक शुल्क दो रुपये था।

श्री हरिश्चन्द्र कौमुदी

अप्रैल 1894 में गया जिले के जमोर से मासिक पत्रिका *'श्री हरिश्चन्द्र कौमुदी'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका आकार 23 गुणित 20 सेंटीमीटर था। पत्रिका के संपादक समाज के उन लोगों पर व्यंग्य बाण छोड़ने में संकोच नहीं करते थे जो पत्रिका खरीद कर नहीं पढ़ते थे।

सवा रुपये वार्षिक शुल्क वाली इस पत्रिका की एक प्रति का मूल्य ढाई आना था। पत्र के प्रकाशक/सम्पादक बाबू पंचम सिंह वर्मा थे। उन दिनों हिन्दी में पत्रिका का प्रकाशन कितने उमंग की बात होती थी, इसका परिचय कौमुदी के प्रथम वर्षांक में लिखी सम्पादकीय टिप्पणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है- हमारे लिए इससे बढ़कर खुशी का दिन दूसरा नहीं, इस खुशी के आगे होली, दिवाली की खुशी बड़े दिन की सुखी भी इस खुशी के आगे सिर झुकाती है। बाकी बची डाली की भेंट प्यारे पाठक! यद्यपि यह भेंट यूरोपियन्स को देने का नियम है तथापि इस असीम खुशी के समय यह प्रथमांक कौमुदी, सुललित लेख रूपी पुष्पों से सज-धजकर आप लोगों को भेंट देते हैं। आशा है आप लोग अवश्य इसे अंगीकृत करेंगे और अपनी अपूर्व दयादृष्टि द्वारा इसके प्रफुल्लित रखने का उद्योग करेंगे।''

'श्री हरिश्चन्द्र कौमुदी' के राष्ट्रीय सरोकारों का परिचय इस टिप्पणी से मिलता है- ''देखना जरा संभलकर सभा . . . . में कोरे रिफार्मर बनकर लम्बी-लम्बी स्पीचें झारते हो और लोगों को देसी वस्तुओं के व्यवहार करने का उपदेश देते हो और खुद मैनचेस्टर और जर्मनी से ढके हो छाती पर स्वीटजरलैंड का मनोहर भूषण है। आँखों में स्लोगन कम्पनी का चकमक चमकता है। पाओं विलायती बूट हृदय में विलायती बोलबाला का अनुराग है सब सही लेकिन देखना संभलकर सौ दिन चोर न एक दिन शाह की भाँति एक दिन सारी नामवरी का भंडा फूटेगा और देश सुधारक रिफार्मर स्पीकर बहादुर सहादुर सब तेहां हंडे में चला जाएगा और कड़का मनका ऐसा उलटेगा कि बस बिना झूल के हाथी पर बिठलाकर गली-गली घुमाए जाओगे।'' इस पत्रिका में स्थानीय खबरें भी छपतीं थी। साहित्य समालोचना नामक स्तंभ में पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का परिचय दिया जाता था। इसका मुद्रण गोधर्म प्रकाश यंत्रालय फर्रुखाबाद से होता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार प्रान्त का निर्माण

1894

बिहार टाइम्स /बिहारी

साप्ताहिक *'बिहार टाइम्स'* का प्रकाशन 26 जनवरी 1894 को पटना से हुआ। सच्चिदानंद सिन्हा इस पत्र के सूत्रधार और महेश नारायण सम्पादक थे। इस प्रखर पत्र का एक प्रमुख उद्‌देश्य बिहार की स्वतंत्र पहचान कायम करना और पृथक प्रान्त बनवाना था। तब बिहार, बंगाल प्रेसीडेन्सी के अन्तर्गत आता था। एक वर्ष के अन्दर ही 'बिहार टाइम्स' की पहचान बिहारी जनमत के प्रतिनिधि और प्रवक्ता के रूप में हो गई। इसी बीच बंगाल प्रशासन का बोझ हल्का करने के लिए चिटगांव कमिश्नरी को असम में मिलाने का निर्णय हुआ। तब 'बिहार टाइम्स' ने मुद्दा उठाया कि बंगाल से बिहार को, (उड़ीसा सहित अथवा रहित) पृथक करने से बंगाल प्रशासन का बोझ सचमुच हल्का होगा। इसके बाद बिहार टाइम्स में पृथक बिहार राज्य के पक्ष में लेखमाला चलाई गई, जिनमें तथ्यों और तर्कों के साथ बिहार के पक्ष को पुष्ट किया जाता रहा। बंगाल बनाम बिहार की इस जद्दोजहद में कोलकाता के अखबार और गुरुप्रसाद सेन का 'बिहार हेरल्ड' एक तरफ थे, वहीं सच्चिदानंद सिन्हा- महेश नारायण का 'बिहार टाइम्स' अकेला था।

सन 1906 में सम्पादक महेश नारायण की सुविधा के दृष्टिगत कुछ समय के लिए 'बिहार टाइम्स' पटना के बजाय भागलपुर से निकला। तब 'बिहार टाइम्स' और भागलपुर के 'बिहार न्यूज' का विलय हुआ था। अप्रैल 1906 में 'बिहार टाइम्स' ने 'बिहारी' नाम धारण किया और पुनः पटना से निकलने लगा। सम्पादक महेश नारायण ही थे। यह प्रत्येक शुक्रवार को प्रकाशित होता था। मत्थे पर 'बिहारी' नाम के नीचे लिखा रहता था- ''पूर्ववर्ती 'बिहार टाइम्स' (बांकीपुर) और 'बिहार न्यूज' (भागलपुर) सम्मिलित। कुछ माह बाद कालीप्रसाद सिन्हा द्वारा सम्पादित-प्रकाशित 'बिहार न्यूज' का भी 'बिहारी' में विलय हो गया। महेश नारायण के सम्पादकत्व में 'बिहारी' ने उत्कृष्ट पत्रकारिता को पुष्पित-पल्लवित किया। बिहार की जनता की सच्ची आवाज बना रहा। प्रान्त में शिक्षा के उन्नयन के लिए वातावरण बनाया। एक अगस्त 1907 को 43 वर्ष की अल्पायु में महेश नारायण के आकस्मिक निधन के बाद ''बिहार, बिहारियों के लिए'' अभियान का जिम्मा सच्चिदानंद सिन्हा ने सम्हाला। अन्ततः 12 दिसम्बर 1911 को बिहार (और उड़ीसा), बंगाल से पृथक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

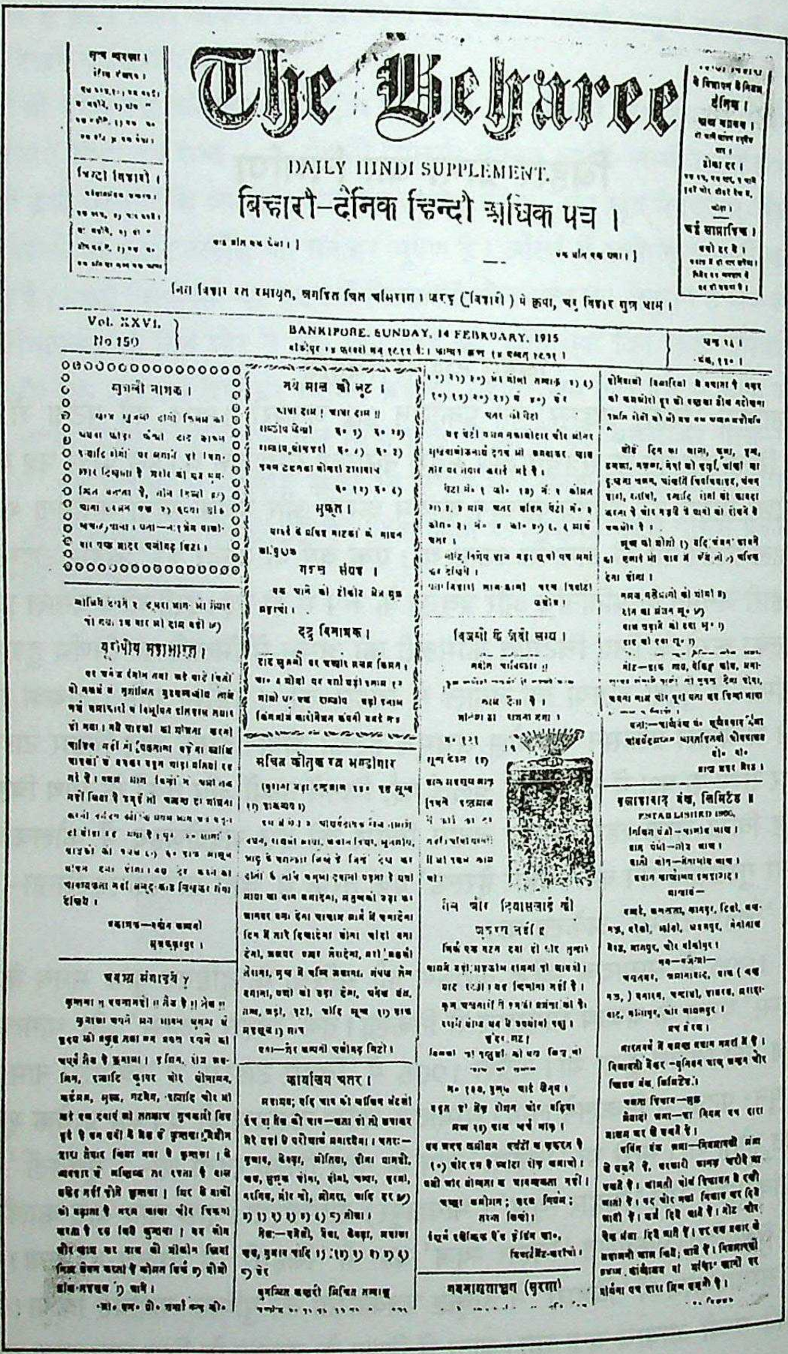

The Beharee

DAILY HINDI SUPPLEMENT.

बिहारी–दैनिक हिन्दी आधिक पत्र ।

Vol. XXVI. No 150

BANKIPORE. SUNDAY, 14 FEBRUARY, 1915

बिहारी (अँगरेजी-हिन्दी), बांकीपुर, सन 1894

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह 'बिहार टाइम्स' से 'बिहारी' तक चली ''बिहार, बिहारियों के लिए'' मुहिम सफल हुई। एक अप्रैल 1912 को बिहार प्रान्त का औपचारिक उद्घाटन हुआ, पटना राजधानी बना। समाचारपत्र और विचारवान सम्पादक किसी सुविचारित अभियान को परिणाम तक पहुँचा सकते हैं, यह ज्वलन्त उदाहरण 'बिहारी' ने प्रस्तुत किया।

पृथक बिहार प्रान्त गठन के साथ ही 'बिहारी' को दैनिक पत्र के रूप में प्रकाशित करने के लिए बिहार एंड उड़ीसा न्यूज पेपर लि. कम्पनी कायम की गई। बनैली (पूर्णिया) के जमींदार राजा कीर्ति आनन्द सिंह ने मुद्रणालय के लिए दो लाख रुपये दान दिए और कम्पनी के शेयर भी बड़ी संख्या में खरीदे। सच्चिदानंद सिन्हा ने इलाहाबाद के नामी प्रोफेसर महेश्वर प्रसाद को इस्तीफा देकर 'बिहारी' का सम्पादन-दायित्व स्वीकारने के लिए मना लिया। अँगरेजी दैनिक 'बिहारी' 13 अप्रैल 1912 को महेश्वर प्रसाद के सम्पादन में पटना से प्रकाशित हुआ। इसी दिन पटना में बिहार के पहले लेफ्टीनेंट गवर्नर ने कार्यभार ग्रहण किया था। नवगठित बिहार प्रान्त का यह प्रथम दैनिक समाचारपत्र था। तब तक बिहार में न तो कोई विश्वविद्यालय था और न ही उच्च न्यायालय। महेश्वर प्रसाद ने 'बिहारी' के माध्यम से इन संस्थाओं की स्थापना के लिए अभियान चलाया। फलस्वरूप सन 1916 में पटना हाईकोर्ट और सन 1917 में पटना विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। महेश्वर प्रसाद ने चम्पारन के किसानों की दुरावस्था और यूरोपीय बागान मालिकों के अत्याचारों के विरुद्ध नौ सम्पादकीय टिप्पणियों की श्रृंखला प्रकाशित की। इससे नाराज होकर बिहार के गवर्नर ने 'बिहारी' के संचालकों पर सम्पादक पद से महेश्वर प्रसाद को हटाने के लिए दबाव डाला। नवम्बर 1913 में महेश्वर प्रसाद को हटा भी दिया गया। उनका स्थान 'स्टेट्समेन' से आये अलफ्रेड कनिंघम ने लिया। परन्तु वे 'बिहारी' को चला नहीं पाए। अन्ततः सितम्बर 1917 में 'बिहारी' का प्रकाशन बन्द हो गया।

बिहारी का हिन्दीपूर्ति अंक

अँगरेजी दैनिक 'बिहारी' के साथ हिन्दी पूर्ति अंक के रूप में दैनिक और अर्द्ध साप्ताहिक आवृत्ति के साथ हिन्दी 'बिहारी' का प्रकाशन किया जाता था। इसके शीर्ष पर अँगरेजी में बिहारी और हिन्दी में- ''बिहारी- दैनिक हिन्दी अधिक पत्र'' लिखा जाता था। दैनिक संस्करण का मूल्य एक पैसा, वार्षिक शुल्क दस रुपये, छह माही शुल्क पाँच रुपये और मासिक शुल्क एक रुपया था। इसका आकार 42 गुणित 30 से.मी. और पृष्ठ संख्या चार थी। पहले पृष्ठ पर विज्ञापन प्रकाशित किए जाते थे। हिन्दी 'बिहारी' के दूसरे पृष्ठ पर सम्पादकीय लेख एक कालम में दिया जाता था। दूसरे कालम में किसी अन्य समाचारपत्र से अंश उद्धृत किया जाता था। तीसरे और चौथे कालम में समाचार दिए जाते थे। बिहारी के 14 फरवरी सन 1915 का एक सम्पादकीय उद्धृत है जिससे पत्र की भाषा और विचार पक्ष का परिचय मिलता है-

''युवावस्था पर हिन्दू कन्या का विवाह।।''

''पाठकों को मालूम होगा कि बड़े लाट के कौंसिल में एक लिपि उपस्थित की गई है जिसका आशय यह है कि हिन्दुओं में कन्याओं का विवाह युवावस्था प्राप्त होने पर हुआ करे। इस लिपि के सम्बन्ध में हिन्दू समाज में एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ है, एक दल कहता है कि कन्याओं का अधिक उमर में विवाह करना, हिन्दू धर्म के विरुद्ध है। दूसरा दल कहता है वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता है। शास्त्र और समय दोनों ही बातों को देखना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुराने धर्म्म शास्त्रकार समयानुसार शास्त्र पद्धति में परिवर्तन किया करते थे। इसलिए यदि वर्तमान समय के अनुसार हमारे पद्धति में समय के अनुकूल परिवर्तन किया जाए तो इससे शास्त्र का उल्लंघन नहीं हो सकता। जब हमारी कन्याएं शिक्षिता होंगी और अपने सुख:दुख को समझने लगेंगी तब वे स्वयम् बाल विवाह के विरुद्ध खड़ी हो जाएंगी। क्या हम लोग बाल विवाह को जारी रखने के लिए अपनी बालिकाओं को शिक्षिता न बनावें, क्या हम लोग शास्त्र के पुराने नियम के लिए अपनी हिन्दू जाति के नाश के कारण बनें। यदि यही श्रेय है तो हम लोग जरूर इस लिपि के विरुद्ध आन्दोलन करेंगे।'' हिन्दी बिहारी के सम्पादक बाबू गोकुलप्रसाद वर्म्मा और मुद्रक महावीर राम थे।

1895

टाइम्स आफ असम

पाँच जनवरी 1895 को डिब्रूगढ़ से राधानाथ चांकाकती ने अँगरेजी साप्ताहिक *'टाइम्स आफ असम'* का प्रकाशन किया। वे ही पत्र के सम्पादक थे। यह शनिवार को प्रकाशित होता था। अन्तरराष्ट्रीय राजनीति, भारत के प्रश्न या असम की समस्याओं पर विस्तृत सम्पादकीय टिप्पणियाँ लिखी जाती थीं। प्रमुख अग्रलेख वंशबद मित्र लिखते थे। चांकाकती का काम करने का ढंग बहुत भिन्न था। काम पूरा कर वे घर लौटते और बीच रास्ते में याद आ जाता कि अमुक शब्द या वाक्य इस तरह लिखा जाता तो अधिक उपयुक्त होता, वैसे ही वे कार्यालय लौट पड़ते और संशोधन कराने के बाद घर जाते। आरम्भ में चार पृष्ठ और कुछ समय पश्चात आठ पृष्ठ का निकलने लगा। शुरू में 'टाइम्स आफ असम' चाय उत्पादकों का मुखपत्र जैसा बन गया था। बाद में वंशबद मित्र के प्रयासों से उसे असम और असमिया के मुखपत्र का स्वरूप दिया गया। 1920 के आसपास लक्ष्मीनाथ फूकन पत्र के सहायक सम्पादक और 1923 में सम्पादक बने। फूकन ने पत्र को राष्ट्रवादी रुझान दिया। महात्मा गाँधी के सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा, स्वदेशी आन्दोलनों के वैचारिक प्रवाह ने 'टाइम्स आफ असम' के स्वर और कलेवर पर प्रभाव छोड़ा। पत्र में असम के प्रमुख नगरों के समाचार छपते थे। हर पृष्ठ पर कोई बड़ी खबर प्रकाशित की जाती थी। किन्तु राष्ट्रवादी रुझान के कारण चाय उत्पादकों तथा सरकार से मिलने वाला सहयोग न्यून हो गया था। घाटा बढ़ने लगा। प्रसार संख्या घटने लगी। राधानाथ चांकाकती का निधन होने से भी पत्र के संचालन पर विपरीत प्रभाव पड़ा। लक्ष्मीनाथ फूकन का पत्र से सम्बन्ध टूट गया। उनके बाद प्रबोधचन्द्र दत्त, तिलकचन्द्र शर्मा, केदारनाथ गोस्वामी, मुहम्मद अब्दुल्ला, प्रभातचन्द्र शर्मा, इन्दुभूषण चक्रवर्ती सम्पादक हुए। 'टाइम्स आफ असम' ने स्वर्ण जयन्ती मनाई। सितम्बर 1947 में अखबार बन्द हो गया। 15 अगस्त 1948 से जीवनराम फुकन के सम्पादन में अर्द्धसाप्ताहिक 'टाइम्स आफ असम' के रूप में पुनर्प्रकाशन की कोशिश की गई। परन्तु वह भी एक साल तक ही निकल सका।

सन 1895 में *'पण्डित'* का प्रकाशन दैनिक अख़बार के रूप में काशी से हुआ। 'भारतभ्राता'[1] में प्रकाशित टिप्पणी से इसकी पुष्टि होती है, ''हिन्दी भाषा का दूसरा दैनिक पत्र-हर्ष की बात है कि सहयोगी 'पण्डित' पत्र अब दैनिक हो गया है। आज तक भारत वर्ष में केवल हिन्दुस्थान ही दैनिक पत्र था। हम भी ईश्वर से इसके दिन प्रति उन्नति के वास्ते प्रार्थना करते हैं हम को दृढ़ आशा है जिस तरह सम्पादक महाशय ने उद्योग कर इसे दैनिक किया

1. भारतभ्राता, 4 जनवरी 1895

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है उसी तरह इसके और बातों के सुधार का भी उत्तम प्रबन्ध करेंगे।''

आठ जनवरी 1895 को दिल्ली से साप्ताहिक *'अफ़ज़ल-उल-अख़बार'* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके प्रकाशक मोहम्मद अब्दुल गफ़्फ़ार खान तथा सम्पादक मौलाना मोहम्मद अब्दुल रहमान 'रासिख़' थे। वार्षिक शुल्क विद्यार्थियों से चार रुपये था। आठ पृष्ठ के इस साप्ताहिक में देश-विदेश के समाचार, शैक्षिक एवं साहित्यिक लेख तथा दिल्ली और बाहर के शायरों की रचनाएं छापी जाती थीं। हास्य विनोद के साप्ताहिक *'देहली पंच'* का प्रकाशन दिल्ली से आठ जनवरी 1895 को किया गया था। इसके स्वामी अब्दुल गफ़्फ़ार मिर्ज़ा तथा सम्पादक अब्दुल रहमान 'रासिख़' थे। आठ पृष्ठ में मज़हर-उल-अजाइब प्रेस में छपता था।

जनवरी 1895 में पंडित सुंदरदेव शर्म्मा ज्योतिर्विद ने मथुरा से हिन्दी मासिक *'विश्वकर्मा'* का प्रकाशन किया। यह पत्र चौबीस पृष्ठ का था। 'भारतभ्राता' लिखता है-''विश्वकर्मा-यह हिन्दी भाषा का मासिक पत्र पण्डित सुंदर देव शर्म्मा ज्योतिर्विद द्वारा मथुरा से हर मास में प्रकाशित होने लगा है। आकार रायल 12 पेजी काग़ज सफेद स्वच्छ छापा स्पष्ट है। पृष्ठ 24 हैं। वार्षिक मूल्य सर्वसाधारण के सुगमनार्थ केवल 2 रुपये रक्खा गया है।''[1]

एक फरवरी 1895 से काशी से साप्ताहिक *'भारत भूषण'* का प्रकाशन हुआ। इसमें देश-देशान्तर के समाचार, धर्म, कर्म, साहित्य, नाटक, उपन्यास, गणित, विज्ञान आदि विषयों पर स्तरीय सामग्री प्रकाशित होती थी। वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित डेढ़ रुपया था।

साप्ताहिक *'ज़ब्दहतुल अख़बार'* लाहौर से फरवरी 1895 में प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक एवं प्रकाशक गुलाम नबी थे। वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपये था। रावलपिंडी से एक मार्च 1895 को साप्ताहिक *'चौदहवीं सदी'* का प्रकाशन हुआ। पृष्ठ सँख्या 12 थी। शुक्रवार को निकलता था। प्रकाशक अमीर अली थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। इलाहाबाद से पाक्षिक *'फरियाद-ए-हिन्द'* का प्रकाशन मार्च 1895 में हुआ। इसके सम्पादक राय बजरंग बली प्रसाद तथा प्रकाशक कुँवर बहादुर सिंह थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया बारह आना था।

मनोरंजन

मराठी मासिक पत्रिका *'मनोरंजन'* का प्रकाशन मई 1895 में मुम्बई से हुआ। इसके सम्पादक काशीनाथ रघुनाथ मित्र थे। 'मनोरंजन' के बारे में सरस्वती[2] में टिप्पणी है- ''इस नाम का मासिक पत्र बम्बई से मराठी भाषा में निकलता है। उसके उत्साही सम्पादक ने दिवाली पर विशेष अङ्क निकाला है। इस अङ्क में 240 पृष्ठ हैं। एक रङ्गीन चित्र सादे चित्र तो सौ से भी अधिक हैं। कितने ही चित्र विशेष करके इसी अङ्क के लिए तैयार किए गए हैं। लेख मनोरंजक और उपयोगी हैं। यद्यपि इसमें गहन विषयों पर बहुत कम लेख निकलते हैं, तथापि जो निकलते हैं सुपाठ्य होते हैं। महाराष्ट्र-स्त्रियों के लिखे हुए कई लेख इस अंक प्रकाशित हुए हैं। इससे सूचित होता है कि महाराष्ट्र-देश में स्त्री-शिक्षा का अच्छा प्रचार है। अनेक चित्रों से विभूषित इतना बड़ा अंक निकलना बहुत खर्च और परिश्रम का काम है। हम मनोरञ्जन के सम्पादक के इस अध्यवसाय का अभिनन्दन करते हैं। हमारी कामना है कि उनके पत्र की दिन पर दिन उन्नति हो। प्रार्थना इतनी ही है कि अन्य भाषाओं की कहानियों का अनुवाद प्रकाशित करने में मूल लेखक का नाम देना न भूल जाया करें।''

1. भारतभ्राता, 8 फरवरी 1895
2. सरस्वती, भाग- 14, संख्या-1, पृष्ठ- 61, सन 1912

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मनोरंजन' मासिक के सन 1926 के अंक में सम्पादक के रूप में वसन्त नारायण नाईक का नाम अंकित है। पत्रिका का आकार 27 गुणित 18 से.मी. था। सन 1930 तक इस पत्र में लगभग 2000 कथाएँ प्रकाशित हो चुकी थीं।

मासिक *'गुलदस्ता-ए-सुख़न'* मई 1895 में लुधियाना से निकला। इसके प्रकाशक अल्लाबख़्श तथा मौलाबख़्श थे। सम्पादक एवं प्रबन्धक खलीफ़ा बख़्त बहादुर 'बख़्त' थे। 16 पृष्ठ होते थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

मुख़बिर-ए-दकन

मासिक *'मुख़बिर-ए-दकन'* 27 जून 1895 को चेन्नै से प्रकाशित किया गया। कुछ दिनों पश्चात साप्ताहिक कर दिया गया था। इसके सम्पादक-प्रकाशक सैयद अब्दुल क़ादिर थे। यह अख़बार किसी के प्रति अन्याय बर्दाश्त नहीं करता था और सत्य लिखने में किसी की परवाह नहीं करता था। यही कारण था कि इसकी लोकप्रियता बढ़ती गई। प्रारम्भ में इसकी ढाई सौ प्रतियाँ छपती थीं। जो सन 1912 में बढ़ कर दो हज़ार हो गई थी। सैयद अब्दुल क़ादिर सन 1890 में शिक्षा पूरी करके हैदराबाद से चेन्नै चले गए थे। वहाँ सुल्तानी प्रेस स्थापित किया और 'मुख़बिर-ए-दकन' निकाला।

पाक्षिक *'कुमाऊँ पत्रिका'* पहली जुलाई 1895 को प्रकाशित हुई। अलमोड़ा से निकलने वाली इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। बुन्देलखण्ड के चरखारी राज्य से जुलाई 1895 में पाक्षिक *'भूषण'* माह की पहली और 15 तारीख को प्रकाशित होने लगा। वार्षिक मूल्य डेढ़ रु. था। 'भारतभ्राता'[1] ने भूषण को मशविरा दिया- "उत्तम लेखक रख कर उत्तमत्ता पूर्व्वक चलावें। देशीय राजस्थानों से बहुत ही न्यून पत्र प्रकाशित होते हैं और जो होते भी हैं वे नहीं के बराबर अतः इस समय उत्तमोत्तम पत्रों का प्रकाशित होना देशी राजस्थानों के लिए अत्यन्त ही उपयोगी और आवश्यक है। विशेष कहने का समय नहीं, बस इतने ही से समझ लेना चाहिए।" जुलाई 1895 में मेरठ से पाक्षिक *'साहित्य सरोज'* का प्रकाशन आरम्भ हुआ। महीने की एक और पन्द्रह तारीख को जारी होता था। मूल्य दो रुपये वार्षिक था। सम्पादक बलदेव प्रसाद मिश्र थे।

साप्ताहिक *'सत्यप्रिय'* का प्रकाशन अगस्त 1895 में नागपुर से हुआ। 'भारतभ्राता'[2] में 'सत्यप्रिय' का विवरण मिलता है-"इस साप्ताहिक पत्र की प्राप्ति हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। लेख बहुत अच्छे, उद्देश्य उत्तम, भाषा सरल, छापा स्वच्छ परन्तु मूल्य चार रुपये बहुत अधिक है। लेख अँगरेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में होते हैं। बाल्यावस्था की चमत्कारी और साहस प्रदान करें। ऐसे पत्रों से अवश्य देशोद्धार की सम्भावना हो सकती है। अधिक कहने की आवश्यकता नहीं, हिन्दी रसिकों और देश के शुभचिन्तकों को चाहिए कि पत्र मँगा कर पढ़ें और पत्र स्वामी के उत्साह को बढ़ावें। अध्यक्ष महाशय को भी चाहिए कि लोगों को सुगमता से पढ़ने के लिए पत्र का मूल्य न्यून करें अथवा आकार ही बढ़ा देवें, मँगाने का पता मैनेजर-'सत्यप्रिय' नागपूर है।"

अगस्त 1895 में जातीय पत्रिका *'कुरमी समाचार'* लखनऊ से प्रकाशित हुई। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। पृष्ठ सँख्या 24 रहती थी। मुम्बई से साप्ताहिक *'मिरात-उल-अख़बार'*

---

1. भारतभ्राता, 26 जुलाई 1895
2. वही, 13 सितम्बर 1895

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रकाशन 13 सितम्बर 1895 को किया गया था। 12 पृष्ठ का यह उर्दू साप्ताहिक हर शुक्रवार को निकलता था। मुंशी खुर्शीद हसन 'तैश' सम्पादक-प्रकाशक थे। राजस्थान और मालवा की आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से *'आर्य मार्त्तंड'* नामक मासिक सन 1895 में अजमेर से प्रकाशित हुआ। रामसहाय आर्योपदेशक सम्पादक थे। बाद में डा. सूर्यदेव शर्मा इसके सम्पादक हुए।

मासिक पत्रिका *'इस्लाह'* कदवा (बिहार) से सन 1895 में प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक सैयद हैदरअली थे। पृष्ठ सँख्या 56 थी। वार्षिक शुल्क तीन रुपये तथा एक प्रति का मूल्य चार आना था। मासिक पत्रिका *'इंतिख़ाब-ए-लाजवाब'* लाहौर से सन 1895 में प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलवी महबूब आलम थे। ख़ादिम-उल-तालीम प्रेस में छपती थी। इस पत्रिका में विज्ञान की जानकारी तथा चुटकुले आदि हास्य विनोद की सामग्री प्रकाशित की जाती थी। सन 1895 में तेलुगु मासिक पत्रिका *'कलिंगा'* का प्रकाशन श्रीकाकुलम से हुआ। डबीर कृष्णमूर्ति सूरी प्रकाशक तथा सम्पादक कामुकोलन कनकादि रामाराव थे।

16 पृष्ठों की मासिक पत्रिका *'कश्फ़-उल-हक़ायक़'* सन 1895 में मुम्बई से प्रकाशित हुई। वार्षिक शुल्क बारह आना था। हिसामुद्दीन प्रकाशक तथा सम्पादक थे। इसमें साहित्यिक तथा मसीही धर्म के विरोध में लेख छपते थे। क़िताबत, छपाई तथा कागज़ अच्छा होता था।

कन्नड नाडगन्नडि

वेंकटकृष्णैया के भाइयों गोपाल अय्यंगार और श्रीनिवास अय्यंगार ने अपने बड़े भाई से पत्रकारिता का पाठ पढ़ा था। उन्हें भी पत्रकारिता में रुचि थी। अत: उन्होंने बेंगलूरु से कन्नड साप्ताहिक *'कन्नड नाडगन्नडि'* सन 1895 में प्रकाशित किया। इस पत्र ने स्वतंत्रता और निर्भीकतापूर्वक विचार व्यक्त किए और शासन की नीतियों की आलोचना भी की। मैसूर के दीवान के.एन. कृष्णमूर्ति इस पत्र की स्वतंत्र चेतना के खिलाफ थे। उन्होंने सन 1907 में मैसूर लेजिस्लेटिव असेम्बली में न्यूज पेपर रेगुलेशन एक्ट पास कराकर सबसे पहले इसी पत्र को शिकार बनाया था। इसके बाद दोनों भाइयों को मैसूर शासन ने गिरफ्तार करके निर्वासित कर दिया था। वेंकटकृष्णैया यह अत्याचार सहन नहीं कर सके। उन्होंने शासन के इस कदम को प्रेस की स्वतंत्रता का हनन करने वाला कृत्य बताकर आन्दोलन छेड़ दिया। फलस्वरूप मैसूर के सभी कन्नड समाचारपत्रों ने सरकारी कानून के विरोध में अपना प्रकाशन स्थगित कर दिया। सरकार को स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए प्रेस कानून को शिथिल करना पड़ा।

सन 1895 में ग्वालियर से मराठी मासिक पत्रिका *'काव्यार बिन्दु'* निकली। इसके सम्पादक गणेश नारायण कर्वे थे। परन्तु इस पत्रिका का प्रथम अंक ही अन्तिम अंक सिद्ध हुआ।

नातिया कलाम का मासिक *'मद्दाह-उल-नबी'* झज्जर से सन 1895 में निकला था। पहले 16 पृष्ठ का निकलता था बाद में 20 पृष्ठ कर दिए गए। इसके सम्पादक-प्रकाशक मौलवी गुलाम अहमद खाँ 'बिरियाँ' थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। सन 1897 में इसने धारावाहिक उपन्यास का प्रकाशन आरम्भ किया। मौलाना 'बिरियाँ' ने स्वरचित उपन्यास 'अलहस्नात' सबसे पहले इसमें छापा था। शेर शायरी का मासिक *'गुल-ए-रौअना'* भोपाल से सन 1895 में निकला। इसके सम्पादक नूरुल हसन 'नसीम' थे। सोलह पृष्ठ के इस मासिक का वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था। साप्ताहिक *'जहाँनुमा'* का प्रकाशन सन 1895 में अमृतसर से किया गया था। पृष्ठ सँख्या 12 थी। सोमवार को निकलता था। सम्पादक नारायण सिंह अहलुवालिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के मुख पत्र के रूप में अजमेर से सन 1895 में साप्ताहिक *'जैन गजट'* का प्रकाशन हुआ। सूरजभान जैन के सम्पादन में प्रारम्भ हुए इस पत्र में जैन धर्म विषयक रचनाएँ प्रकाशित होती थीं। बाद में पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री सम्पादक हुए। आयु के 112 वर्ष पूरे करने वाला 'जैन गजट' वर्तमान में लखनऊ से निकल रहा है। पत्र के सम्पादक पं. कुन्जीलाल शास्त्री हैं। वार्षिक मूल्य 15 रुपये है।

सन 1895 में *'तेलुगु लॉ वर्तमानी'* का प्रकाशन एलूरू से हुआ। यह विधि और कानून की मासिक पत्रिका थी। सत्तिराजू सीता रामय्या सम्पादक-प्रकाशक थे। फर्रुखाबाद से *'दीनबन्धु'* का प्रकाशन सन 1895 में हुआ। राष्ट्रीय विचारों की यह पत्रिका लम्बे समय तक प्रकाशित होती रही। सन 1895 में साहित्यिक पत्रिका *'धीमणि'* का प्रकाशन तेलुगु भाषा में चेन्नै से होता था। इस मासिक को पुल्लेला श्रीरामय्या शास्त्री ने निकाला था। सन 1895 में बज़ीराबाद से साप्ताहिक *'पंजाब आर्गन'* निकला। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। इसके सम्पादक-प्रकाशक दीवान आत्मा थे।

दर्शन की पत्रिका *'ब्रह्मविद्या'* सन 1895 में निकली। इसके सम्पादक-प्रकाशक जी. श्रीनिवास शास्त्री थे। चेन्नै से प्रकाशित होती थी। यह तेलुगु मासिक था। आज़मगढ़ से साप्ताहिक *'लिबरल'* सन 1895 में निकला। आफ़ताब प्रेस में छपता था। सम्पादक क़ुदरत अली खाँ थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था।

वकील

सन 1895 में साप्ताहिक *'वकील'* अमृतसर से प्रकाशित किया गया था। प्रत्येक सोमवार को इसका प्रकाशन होता था। इसमें 12 पृष्ठ होते थे। इसके प्रकाशक शेख गुलाम मोहम्मद और सम्पादक मिर्ज़ा हैरत थे। बाद में मिर्ज़ा जालिब, मौलवी इंशाअल्लाह खां, अब्दुल्ला मिन्हास और मौलवी शुजाउल्लाह हकीम फ़रोज़ सम्पादक रहे। इस पत्र में समाचार तथा घटनाओं का विवरण एवं उन पर टिप्पणियाँ दी जाती थीं। ऐतिहासिक लेख तथा इस्लामी समाचारों नामक स्तम्भ के अंतर्गत मिस्र, तुर्की, ईरान आदि इस्लामी देशों के समाचार तथा ऐतिहासिक समाचार स्तम्भ के अंतर्गत यूरोप के समाचार दिए जाते थे।

25 मई 1896 के अंक में स्वदेशी पर 'वकील' का मंतव्य उल्लेखनीय है- ''हमें इस ख़बर से निहायत खुशी हुई है के मुल्क के सच्चे ख़ैरख़्वाह और हमारे मुअज़्ज़ि दोस्त कन्हैयालाल प्लीडर चीफ़ कोर्ट ने अपने लड़कों को देसी साख़्त के कपड़े की फ़रोख़्त की दुकान खुलवाने का इरादा किया है। हमारे दोस्त इससे हिन्दुस्तानियों के लिए दो नज़ीरें क़ायम कर रहे हैं एक तो यह के तालीमयाफ़्ता हिन्दुस्तानी अपने देश का बना हुआ कपड़ा पहनें वह खाली पंदोनसाह और लम्बी चौड़ी तक़रीरों से गुज़र कर अम्ली तौर पर खुद ऐसा करके दिखायें। अगर हमारे मुल्क के लोंग देसी कपड़ा पहनें और देसी साख़्त की चीज़ों का इस्तेमाल करने का अहद कर लें और हर शहर में मुक़्तदर अश्ख़ास मिलकर मुश्तरका सरमाये से देसी साख़्त की अश्या के बहम पहुँचाने और उन्हें उम्दा बनाने का इन्तिज़ाम करें तो मुल्क़ की बहुत सी दौलत मुल्क में हीं रह सकती है और मुल्क़ की खुशहाली में बहुत कुछ तरक़्क़ी हो सकती है। शौक तो चर्राया हुआ है अंगरेजी साख़्त की चीज़ों के इस्तेमाल का और ख़्वाहिश करें के मुल्क़ से इफ़्लास दूर हो। ईं ख्याल अस्तो मुहाल अस्तो जुनूँ, इस मामले में पूना का अख़बार 'मराठा' हस्बज़ेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्फ़ाज़ में हिन्दुस्तानियों को नसीहत करता है। तुम्हें हिन्दुस्तानी मोहब्बत की क़सम है के जब तक इंग्लिस्तान विलायती जुलाहों की बेज़ा तरफ़दारी से दस्तबरदार नहीं होगा जब तक हिन्दुस्तान के साथ इंग्लिस्तान पोलिटिकल चालें चलना मौक़ूफ़ न करे जब तक हिन्दुस्तानियों को मलिका मुअज़्ज़मा के ग़ैरेहुकूमत अँगरेजों के बराबर हक़्क़ूक़ न मिलें तब तक विलायती कपड़े को जिस पर के खुदगर्ज़ी के छींटे और धब्बे पड़े हुए हैं हाथ न लगाओ। यह बेहूदा उज़्र दरमियान में न लाओ कि देसी कपड़ा महँगा मिलता है अगर मक़दूर नहीं तो नंगे फिरो, बदन से पत्ते लपेट लो उसमें तुम्हारी ज़्यादा इज़्ज़त है. लेकिन मानचेस्टर और लंकाशायर का कपड़ा बदन से लगा कर अपने नाम और इज़्ज़त को बट्टा न लगाओ और जो शख़्स एक गज़ भी अँगरेजी कपड़ा खरीदे उसे ज़लील बेहया मुल्क़ का दुश्मन समझो।'' 'वकील' के सम्बन्ध में 'उर्दू-ए-मुअल्ला' के सम्पादक मौलाना हसरत मोहानी ने मई 1911 के अंक में टिप्पणी की है- ''ज़बान की सहत और लिट्रेचर की ख़ूबी के लिहाज़ से 'ज़मींदार' की तरह 'वकील' भी इम्तियाज़ हैसियत रखता है। जिसके एडीटोरियल मज़ामीन की आज़ादी का मुक़ाबला निस्बतन कोई दूसरा इस्लामी अख़बार नहीं कर सकता। मसलन 29 अप्रैल के पर्चे में मुस्लिम यूनिवर्सिटी और आम राय के मतालबे पर एक क़ाबिले क़द्र मज़मून निकला है जिसका मफ़हूम यह है के हैसियत में यूनिवर्सिटी को गवर्मेण्ट की मातहती से आज़ाद रहना चाहिए इसका चांसलर मुसलमान हो और इसकी इनान मुसलमानों के हाथ ही में रहे और सबसे ज़्यादा यह के इसकी तालीमी ज़बान उर्दू रखी जाए।''

मौलाना मोहम्मद अली ने 'कामरेड'[1] में लिखा- ''वकील उर्दू सहाफ़त का बहतरीन नमूना पेश करता है। इसके ख़्यालात हमेशा दानिशमंदाना और पुरविक़ार रहे हैं इसकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी के यह ज़हनी रवादारी का मज़हर है और यह वह ख़ूबी है जो इस दौर के बहुतेरे अँगरेजी अख़बारों में शाज़ ही मिलती है।''

सन 1895 में विज्ञान की पत्रिका *'विज्ञान वर्द्धिनी'* का प्रकाशन रायदुर्गम से हुआ। इस तेलुगु पाक्षिक के सम्पादक-प्रकाशक एलम राजू नारायण मूर्ति थे। तेलुगु साहित्यिक पत्रिका *'सूर्यलोकम्'* का प्रकाशन सन 1895 में हुआ। जी.सी.वी. श्रीनिवासाचार्युलु चेन्नै से साप्ताहिक पत्र के रूप में निकाला करते थे। *'सैद-उल-अख़बार'* सन 1895 में आक़ाए सैयद, आक़ाए शीराज़ी ने निकाला। बाद में सैयद महमूद अली इसके सम्पादक हुए। सन 1895 में शैक्षिक पत्रिका *'शारदा'* का प्रकाशन हुआ। आ. सूर्यनारायण राजू सम्पादक-प्रकाशक थे। आत्तिली से प्रकाशित यह तेलुगु मासिक पत्रिका थी।

सन 1895 में *'शिवग्रंथ मुक्तावली'* नामक धार्मिक पत्रिका का प्रकाशन कंदकूरि शैल वीरभद्र वरप्रसाद राव ने एलुरू से किया था। यह तेलुगु मासिक पत्रिका थी। सन 1895 में साप्ताहिक *'शोहरा-ए-आफ़ाक़'* गया से प्रकाशित किया गया था। सैयद मोहम्मद ताहिर इसके प्रकाशक तथा सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था।

उपन्यास लहरी

जनवरी 1895 में काशी से *'उपन्यास लहरी'* नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई। इसकी एक प्रति का मूल्य साढ़े तीन आना और वार्षिक शुल्क दो रुपये था। हरिप्रकाश प्रेस से यह मासिक पत्रिका उपन्यासों को धारावाहिक किश्तों में प्रकाशित करने के उद्देश्य से प्रकाशित की

1. कामरेड, 17 फरवरी 1912

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई थी। देवकीनंदन खत्री सम्पादक और चुन्नीलाल खत्री प्रबंधक थे। उपन्यास लहरी में देवकीनंदन खत्री के लोकप्रिय उपन्यास 'चन्द्रकांता' और 'चन्द्रकांता सन्तति' का धारावाहिक प्रकाशन हुआ। दिसम्बर 1897 में रिनाल्ड के लोकप्रिय अँगरेजी उपन्यासों का हिन्दी अनुवाद छापने के लिए मासिक '*उपन्यास माला*' का प्रकाशन 'उपन्यास लहरी' के साथ-साथ किया गया था।

पंजाब थियासोफिस्ट की ओर से दिसम्बर 1895 में मासिक पत्रिका '*ब्रम्हविद्या प्रचारक*' का प्रकाशन लाहौर से हुआ। यह हिन्दी पत्रिका हर माह की 15 तारीख को प्रकाशित होती थी। पृष्ठ संख्या 20 और वार्षिक शुल्क लाहौरवासियों से एक रुपया दो आना, बाहर वालों से डेढ़ रुपया लिया जाता था। तत्व ज्ञान सभा लाहौर पत्रिका की प्रकाशक थी। यह पत्रिका नैतिक विकास पर जोर देती थी। पंजाब इकोनॉमिकल प्रेस लाहौर से पत्रिका का मुद्रण कराया जाता था।

1896

नागरी प्रचारिणी पत्रिका

काशी में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना 16 जुलाई 1893 को बाबू श्यामसुंदर दास, पं. रामनारायण मिश्र तथा ठाकुर शिवकुमार सिंह के प्रयत्नों से हुई। प्रथम सभापति बाबू राधाकृष्ण दास तथा प्रधानमंत्री बाबू श्यामसुंदर दास थे। सभा के सहायकों में रायबहादुर लक्ष्मीशंकर मिश्र, ठा. रामदीन सिंह, बाबू रामकृष्ण वर्मा, बाबू गदाधर सिंह, बाबू कार्तिकप्रसाद खत्री आदि थे। हिन्दी भाषा के उन्नयन और प्रतिष्ठा तथा हिन्दी साहित्य की समृद्धि का उद्देश्य लेकर सभा ने '*नागरी प्रचारिणी पत्रिका*' का सन 1896 में प्रकाशन किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में, ''इसका उद्देश्य यह था कि इसके द्वारा 'हिन्दी में गद्य साहित्य की कमी दूर हो' और 'ऐसे लेखों की सँख्या बढ़ती रहे जिनका लक्ष्य न केवल पाठकों का मनोरंजन करना वरन हिन्दी बोलने वालों के विचारों को कुछ बढ़ाना और उनकी दृष्टि को कुछ और दूर तक फैलाना हो।''

प्रारम्भ में पत्रिका त्रैमासिक थी। प्रत्येक अंक में डिमाई अठपेजी आकार के 48 पृष्ठ होते थे। मूल्य चार आना प्रति अंक था। शुरू में 259 प्रतियाँ छापी गई थी। इतिहास, भाषा तत्व, साहित्य, ज्योतिष, दर्शन, विज्ञान पर लेख छापे जाते थे। इसकी परीक्षक समिति में रायबहादुर लक्ष्मीशंकर मिश्र, राधाकृष्ण दास, कार्तिक प्रसाद, जगन्नाथ दास रत्नाकर, देवकीनंदन खत्री थे। प्रवेशांक में रत्नाकर का 'समालोचनादर्श' और अम्बिकादत्त व्यास का 'गद्य मीमांसा' लेख प्रकाशित हुए। भाषा के सम्बन्ध में यह निर्णय लिया गया, ''इसके लेखों की भाषा ठेठ हिन्दी हो उसमें संस्कृत अथवा अरबी-फ़ारसी के बड़े-बड़े शब्द न रखे जायँ। जिन लेखों में अरबी-फ़ारसी के बहुत से शब्द भरे हों उन्हें परीक्षक समिति अस्वीकार कर दे।'' प्रारम्भ से सन 1920 तक बाबू श्यामसुंदर दास, पं. सुधाकर द्विवेदी, किशोरीलाल गोस्वामी, राधाकृष्ण दास, रामचंद्र शुक्ल, रामचंद्र वर्मा और वेणीप्रसाद ने पत्रिका का सम्पादन किया। सन 1908 से पत्रिका मासिक हो गई।

सन 1920 में 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' मासिक से पुनः त्रैमासिक हुई, इस पर 'प्राचीन-शोध-सम्बन्धी त्रैमासिक पत्रिका' अंकित किया जाने लगा। पृष्ठ सँख्या 120 हो गई। मूल्य एक रुपया था, जो बाद में बढ़ा कर ढाई रुपये कर दिया गया। नये कलेवर में 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के सम्पादक पुरातत्ववेत्ता महामहोपाध्याय डा. गौरीशंकर हीराचंद ओझा, मुंशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीप्रसाद, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी एवं श्यामसुंदर दास थे। सम्पादकों ने नये स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा-"अनुसंधान विषयक लेख सब अँगरेजी में ही छपते हैं, हिन्दी में तो यदा-कदा उनके दर्शन हो जाते हैं..... इस अवस्था में यह आवश्यक है कि हिन्दी में ऐसी सामयिक पत्रिका हो जिसमें प्राचीन शिलालेख, दान पत्रादि, सिक्के, ऐतिहासिक ग्रंथों के सारांश, विदेशियों की पुस्तक में लिखी हुई भारतीय ऐतिहासिक बातों, प्राचीन भूगोल, राजा और विद्वानों आदि के समय का निर्णय आदि विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित होते रहे।" पत्रिका के नये (जर्नल) स्वरूप का उत्साहवर्द्धक स्वागत हुआ। रायल एशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयर्लेंड की पत्रिका के अप्रैल 1921 के अंक में इसकी समीक्षा करते हुए डाक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन ने लिखा-"अब सभा ने पत्रिका को शुद्ध वैज्ञानिक रीति से प्रकाशित करने का निश्चय किया है और इसके पहले दो अंक सभा के कार्य की विशेष उन्नति के सूचक हैं। इनसे एक ऐसी पत्रिका का आरम्भ होता है जो, हम आशा करते हैं एक भारतीय विद्वत्सभा के सर्वथा उपयुक्त होगी। .....हम वास्तव में एक गम्भीरतापूर्ण पत्रिका के प्रकाशित करने पर सभा का अभिनन्दन करते हैं। ....सब लेख हिन्दी में लिखे हैं। यह सभा भारतीय संस्था है और अपने पाठकों से भारतीय भाषाओं द्वारा ही संवाद करती है। इसके लेख यूरोपीय विद्वानों की नकल मात्र नहीं हैं, वरन स्वतंत्र शोध से लिखे गए हैं। इसलिए उनमें स्थिर किए गए सिद्धांतों से चाहे हम सहमत न हों, पर पश्चिम में इनका अति सन्मानपूर्वक स्वागत होना चाहिए।"

सन 1938 में नागरी प्रचारिणी पत्रिका के लिए सभा ने उद्देश्यों का निर्धारण इस प्रकार किया- (1) नागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा का संरक्षण तथा प्रसार। (2) हिन्दी साहित्य के विविध अंगों का विवेचन। (3) भारतीय इतिहास और संस्कृति का अनुसंधान। (4) प्राचीन तथा अर्वाचीन शास्त्र, विज्ञान और कला का पुनरावलोकन।" सम्पादक मंडल में रामचन्द्र शुक्ल, मंगलदेव शास्त्री, केशवप्रसाद मिश्र, वासुदेवशरण अग्रवाल तथा कृष्णानंद सम्मिलित थे। सन 1943-44 में पत्रिका का 'विक्रमांक' निकला, जिसका सम्पादन डा. वासुदेवशरण अग्रवाल ने किया। विक्रमांक में पुरातत्व, इतिहास एवं संस्कृति विषयक लेख थे। पृष्ठ सँख्या 380 थी। पत्रिका ने सन 1950 में 'भारतेंदु जन्मशती अंक' तथा सन 1951 में 'केशव स्मृति अंक' निकाले। पत्रिका का हीरक जयंती विशेषांक सन्दर्भ की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

आर्य्य मित्र / मुहर्रिक

आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन 1875 में की। आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का सिलसिला आरम्भ हुआ। इन्हीं में से एक है *'आर्य्य मित्र'* जिसने अपने प्रकाशन की शताब्दी पूरी की। मुरादाबाद से सन 1896 में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने उर्दू पत्र 'मुहर्रिक' का प्रकाशन आरम्भ किया। दो वर्ष बाद इसका नाम बदलकर 'आर्य मित्र' कर दिया गया और इसे नागरी लिपि में निकाला जाने लगा। मुंशी नारायणसिंह वकील इसके सम्पादक तथा मुंशी काशीराम प्रकाशक थे। बाद में वही महात्मा नारायण स्वामी के नाम से विख्यात हुए। उनकी आत्मकथा में लिखा गया है-"मुहर्रिक अखबार का नाम आर्य मित्र रखा गया। यह 1898 तक उर्दू में निकलता रहा, उसके बाद हिन्दी में निकलने लगा।"

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भगवानदीन ने इसके लिए अपना प्रेस सभा को दान कर दिया था जो आर्य भास्कर प्रेस के नाम से चलता रहा। सन 1904 में प्रेस को मुरादाबाद से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

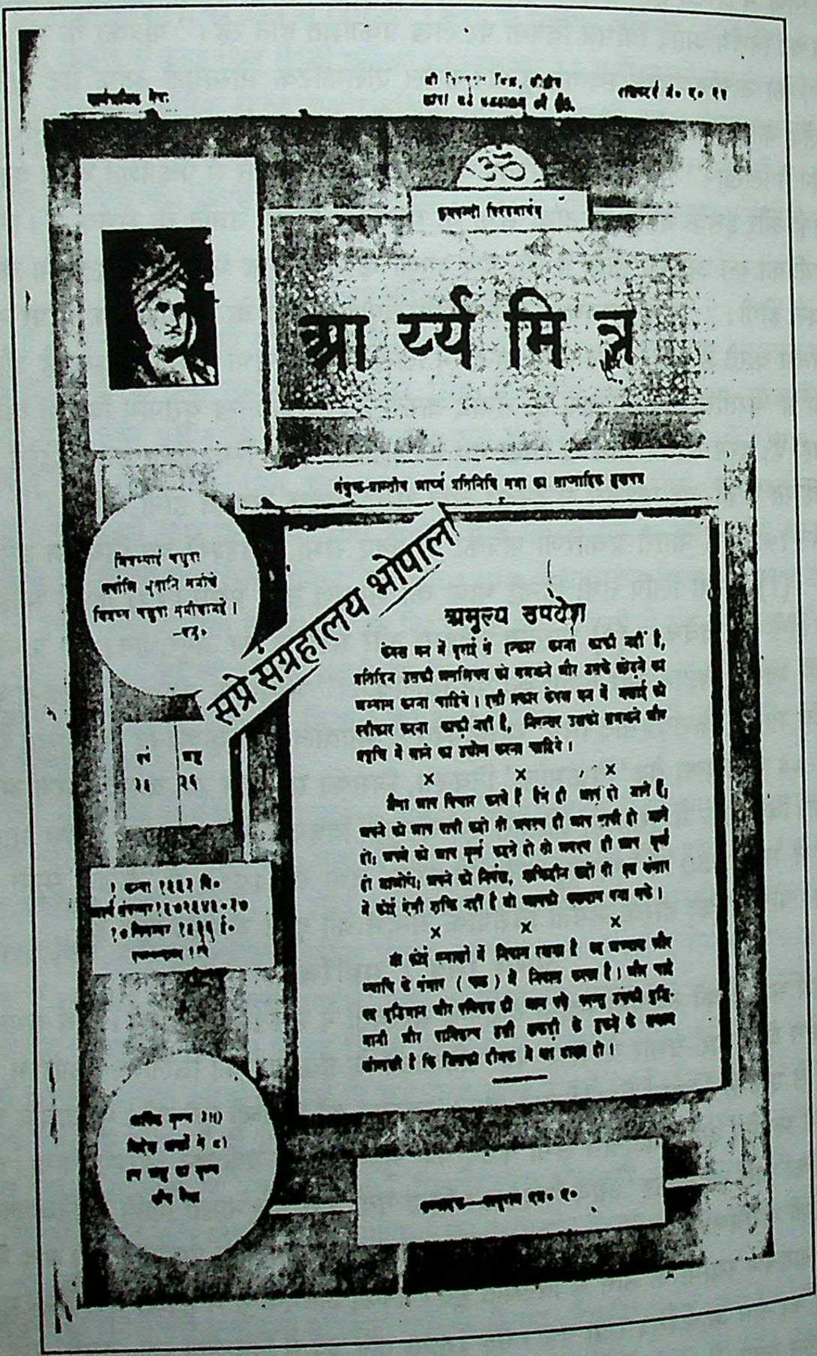

आर्य्यमित्र, मुरादाबाद/आगरा, सन 1896

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा ले आया गया और 'आर्य्यमित्र' का प्रकाशन भी आगरा से होने लगा। 'आर्य्यमित्र' का सम्पादन सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा ने किया। हिन्दी रूपान्तरण के बाद वे ही इसके पहले सम्पादक हुए। उनकें सम्पादन काल में 'आर्य्य मित्र' की प्रतिष्ठा और प्रसार में अभिवृद्धि हुई। वे 'प्रपंच' शीर्षक से एक व्यंग्य स्तम्भ खुद नियमित रूप से लिखते थे। 'स्वर्ग में महासभा' तथा 'कंठीजनेऊ का ब्याह' जैसी उनकी उत्कृष्ट व्यंग्य रचनाएँ पहले पहल 'आर्य्य मित्र' में ही छपीं।

सन 1908 में नन्दकुमार देव शर्मा सम्पादक हुए। उनके बाद 'हिन्दी केसरी' और 'चित्रमय-जगत' के सम्पादक रहे लक्ष्मीधर वाजपेयी ने सम्पादन का दायित्व ग्रहण किया। तब पत्र का वार्षिक शुल्क दो रुपये था। मासिक 'प्रभा' (1913) ने 'आर्य्य मित्र' पर सूचनात्मक टिप्पणी छापी- ''गत कई वर्षों से तो हम जानते भी नहीं थे कि भारत वर्ष में राष्ट्रभाषा में 'आर्य्य मित्र' नामधारी पत्र अभी तक जीवित है। परन्तु अब इसके दर्शन कर हम प्रसन्न हो रहे हैं। इसके योग्य सम्पादक के कार्यकलाप से हमारा साहित्य संसार अभी अन्तरङ्गता से पूर्ण परिचित नहीं विदित होता। तो भी वह यह अवश्य जानता है कि सर्वानन्द (लक्ष्मीधर वाजपेयी) सम्पादन-कला में बढ़े-चढ़े हैं। शीघ्र ही साहित्य संसार में 'आर्य्य मित्र' हाथों हाथ लुटेगा और सर्वानन्द अपने कार्य में सफल होगा।''

सन 1915 में हरिशंकर शर्मा 'आर्य्य मित्र' के सम्पादक हुए। सन 1916 में यह जिम्मेदारी धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ने सम्हाली। तदनन्तर वे अध्यापक हो गए। सन 1923 से 1934 तक पुनः हरिशंकर शर्मा ने सम्पादन किया। सन 1925 में स्वामी दयानन्द सरस्वती की जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित 'आर्य्य मित्र' का वृहद विशेषांक प्रामाणिक सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में समादृत है। इसी दौरान कुछ समय तक 'आर्य्य मित्र' का प्रकाशन दैनिक भी हुआ। 'आर्य्य मित्र' में मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही, मुंशी प्रेमचन्द, पीर मुहम्मद यूनिस तथा जहूर बख़्श जैसे प्रतिष्ठित रचनाकारों की रचनाएँ छपती थीं। स्वयं हरिशंकर शर्मा का स्तम्भ 'विनोद बिन्दु' काफी लोकप्रिय था। सन 1838-39 में हैदराबाद में आर्य सत्याग्रह के दौरान 'आर्य्य मित्र' अर्द्ध साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित हुआ था। मधुसूदन चतुर्वेदी, जयदेव शर्मा विद्यालंकार, ऋषिदेव विद्यालंकार, नरेन्द्रनाथ शास्त्री, धर्मपाल विद्यालंकार, गोपालदत्त जोशी, सच्चिदानंद शास्त्री, उमेशचन्द्र आयुर्वेद शिरोमणि, भारतेन्दुनाथ साहित्यांलकार ने भी 'आर्य्य मित्र' का सम्पादन किया।

पाँच जनवरी 1896 को लखनऊ से *'जिंदा दिल'* साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया गया था। पृष्ठ सँख्या बारह थी। प्रकाशक तथा सम्पादक सैयद मोहम्मद मिर्ज़ा 'मौज' थे। वार्षिक मूल्य छह रुपये था। सहारनपुर से साप्ताहिक *'खुर्शीद अनवर'* जनवरी 1896 में प्रकाशित हुआ। प्रकाशक लाला शंकरी प्रसाद तथा सम्पादक मोहम्मद शरीफ़ उल्ला 'शरीफ़' थे। वार्षिक मूल्य छह रुपये था। अर्द्ध साप्ताहिक *'सफीर'* का प्रकाशन मुम्बई से सन 1896 में हुआ। चार पृष्ठ का था। कुछ समय बाद साप्ताहिक हो गया। सम्पादक-प्रकाशक अब्दुल रहमान थे। एक प्रति का मूल्य एक पैसा था।

खदंग-ए-नजर

सितम्बर 1896 में साहित्यिक मासिक *'ख़दंग-ए-नज़र'* का प्रकाशन लखनऊ से हुआ। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक नौबतराय 'नज़र' थे। आसिफ़ी प्रेस नूरगंज में छपता था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका को तीन भागों में बांटा गया था। प्रथम भाग में साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा नैतिक विषयों पर लेख तथा समस्या पूर्ति, दूसरे भाग में प्रसिद्ध शायरों की उर्दू तथा फारसी कविताएँ और तीसरे भाग में रेनॉल्ड के एक मनोरंजक तथा आश्चर्यजनक घटनाओं से परिपूर्ण उपन्यास का अनुवाद प्रकाशित किया जाता था। प्रत्येक भाग में 16 पृष्ठ होते थे। इसका वार्षिक शुल्क तीन भागों का तीन रुपये, दो भागों का दो रुपये तथा एक भाग का एक रुपया चार आने डाक खर्च सहित रखा गया था। सन 1904 में इसका प्रकाशन बंद हो गया।

मुम्बई से साप्ताहिक *'जस्ट द पीस आफ बाम्बे'* अक्टूबर 1896 में निकला। इतवार को जारी होता था। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक बदरुद्दीन 'ग़ालिब' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। मेरठ से अक्टूबर 1896 में शेर शायरी के मासिक गुलदस्ते *'परवाना'* का प्रकाशन किया गया। पृष्ठ सँख्या 36 थी। सम्पादक-प्रकाशक मौलाना अहमद हसन 'शौकत' थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। इलाहाबाद से सन 1896 में साप्ताहिक पत्र *'अल रशीद'* का प्रकाशन हुआ। पृष्ठ सँख्या बारह थी। सोमवार को निकलता था। सम्पादक-प्रकाशक मुंशी हामिद थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

सन 1896 में खीरी (उ.प्र.) से *'आर्य भास्कर'* नामक पत्र प्रकाशित हुआ। पाक्षिक पत्रिका *'आईना-ए-आलम'* सन 1896 में झांसी से प्रकाशित हुई। इसके प्रकाशक अयोध्या प्रसाद थे। ब्रजबन्धु मित्र ने तलचर से साहित्यिक पत्रिका *'उत्कल बंधु'* का प्रकाशन सन 1896 में किया था। मासिक *'ख़्याले यार'* मई 1896 में कानपुर से प्रकाशित हुआ। पृष्ठ सँख्या 16 थी। सम्पादक मोहम्मद फ़ख़रुद्दीन 'फ़ख्र' थे। कानपुर गजट प्रेस में छपता था।

वर्ष 1896 में तेलुगु पत्रिका *'गायत्री'* का प्रकाशन हुआ। श्रीकाकुलम से प्रकाशित इस पत्रिका के सम्पादक-प्रकाशक कानुकोलनु कनकाद्रि नरहरिराव थे। श्यामसुन्दर राजगुरू के सम्पादन में सन 1896 में *'गंजाम न्यूज'* का प्रकाशन हुआ। उड़िया भाषा का यह पत्र कटक से प्रकाशित होता था। रेवाड़ी (हरियाणा) से साप्ताहिक *'जौहर-ए-हिन्द'* का प्रकाशन सन 1896 में किया गया था। मुंशी गंगाप्रसाद भार्गव इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। पृष्ठ सँख्या 12 थी। वार्षिक शुल्क चार रुपये था। साप्ताहिक *'ताजा अख़बार'* सन 1896 में पिंडदाद खां से निकला था। आर्य समाज का यह मुख पत्र बुधवार को प्रकाशित किया जाता था। सन 1896 में साप्ताहिक *'दोआबा'* का प्रकाशन होशियारपुर से किया गया था। इसके प्रकाशक तथा सम्पादक पंडित हरिलाल शर्मा थे। एक वर्ष चल कर पत्र बंद हो गया। *'नज्ज़ारा-ए-आलम'* 1896 में क़ुदरत उल्ला मुज़तर ने प्रकाशित किया था।

दैनिक *'नारद'* का प्रथम अंक सोमवार, श्रावण शुक्ल प्रतिपदा (सन 1896) को मुम्बई से प्रकाशित हुआ। पत्र का अपना नारद प्रेस था। इसके एक अंक का मूल्य एक पाई था। पत्र के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सम्पादक ने लिखा-''नारद' कहते हैं-पूर्व में मेरा काम डाक जैसा था और वाल्या कोली जैसे व्यक्तियों को ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताना होता था। परन्तु इस युग में मैं गरीबों को अलग मार्ग कहूँगा, अँगरेज सरकार के राज्य से क्या लाभ है यह मैं तुम्हें बतलाऊँगा। गरीब और अमीर, शिक्षित और अशिक्षित सबको एकसा जुलूम हो रहा है। पाद्री लोग कावेबाज कैसे होते हैं और मुक्ति फौज की चलाखी (चालाकी) आपको बताऊँगा जिससे आपकी फसगत नहीं होगी।'' 'नारद' के सम्पादक-प्रकाशक आठवंले थे। यह पत्र दीर्घायु नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1896 में *'पत्रिका सार प्रकाशिका'* का प्रकाशन किया गया। यह तेलुगु मासिक तुनि से प्रकाशित होता था। जोगीनाथ स्वामी सम्पादक और प्रकाशक थे। उड़िया भाषा में सन 1896 में *'प्रभावती तारा'* नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। कटक मिशन प्रेस से प्रकाशित यह पत्रिका ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए निकाली गई थी। बिलकिन्स तथा ब्रजानन्द दास सम्पादक-प्रकाशक थे।

'बसुमति' का प्रकाशन सन 1896 में हुआ। इसके सम्पादक कृष्णकमल भट्टाचार्य थे। स्वदेशी आन्दोलन और राजनीतिक जागृति में 'बसुमति' की भूमिका हेमन्त प्रसाद घोष के सम्पादन काल में महत्वपूर्ण रही। सन 1896 में विज्ञान की मासिक पत्रिका *'बालिका'* का प्रकाशन संगीतषु बापिराजू ने श्रीकाकुलम से तेलुगु भाषा में किया। मुम्बई से हास्य-विनोद का साप्ताहिक *'अबुल पंच'* सन 1896 में निकला था। इसके सम्पादक जौहर थे। आठ पृष्ठ होते थे। शुक्रवार को प्रकाशित किया जाता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये था।

मुम्बई से सन 1896 में साप्ताहिक *'पंच बहादुर'* का प्रकाशन किया गया था। इसके प्रकाशक-सम्पादक अब्दुल हमीद 'फ़र्रुख़' देहलवी थे। आठ पृष्ठ में पहले हमीदी प्रेस में छपता था फिर शहाबी प्रेस में छपने लगा। वार्षिक शुल्क दो रुपये तथा एक प्रति का मूल्य दो पैसे था। इस साप्ताहिक के सम्पादक इसके अतिरिक्त दो अन्य समाचारपत्र दैनिक 'सुल्तान-उल-अख़बार' तथा साप्ताहिक 'आजाद पंच' भी प्रकाशित करते थे। इन दोनों पत्रों के ग्राहकों को 'पंच बहादुर' निःशुल्क दिया जाता था।

'पंच बहादुर' की लेखन शैली का परिचय नए वर्ष के आगमन पर लिखी इन पंक्तियों से मिलता है- ''यह कमबख़्त पीछा ही नहीं छोड़ता था। सन के रस्से की तरह खिंचा ही चला आता था। घड़ी साअत गिनते गिनते नौबत बदुम शुमारी (अंतिम छोर तक) पहुँची लेकिन बेशुमार घड़ियाँ तमाम ही नहीं हुईं। आखिर इसके भी बारह बज गए। मिस्टर 98 नौ हाथ का डंडा लेकर इस पर दौड़े तो यह तान तोबड़ा लेकर भागा वरना तौबा क्या यह खिसकने वाला था।''

हैदराबाद से साप्ताहिक *'मुल्क वं मिल्लत'* सन 1896 में निकला था। प्रकाशक तथा सम्पादक सैयद अहमद 'नातिक़' थे। साप्ताहिक *'मुजफ़्फ़री'* भोपाल से सन 1896 में निकला। सम्पादक अर्जुमन्द मोहम्मद खाँ थे। यह पत्र साहित्यिक गतिविधियों की खबरें प्रकाशित करता था। मासिक *'रियाज़े सुख़न'* अक्टूबर 1896 में मारहरा (जिला ऐटा) से प्रकाशित किया गया था। पृष्ठ सँख्या 24 थी। इसके प्रकाशक एवं सम्पादक हाजी सैयद अली 'अहसन' तथा सैयद इफ़्तिख़ार आलम 'आज़ाद' थे। इसके बाद सैयद अली 'अहसन' प्रकाशक तथा ख़ाक़ानी वफ़ा मारहरवी सम्पादक हुए। डाक खर्च समेत वार्षिक शुल्क एक रुपया था। इसमें हिन्दुस्तान के प्रतिष्ठित कवियों की रचनाएँ छापी जाती थीं। लिखाई, छपाई तथा कागज़ अच्छा था। जून 1898 में इस गुलदस्ते का नाम टोंक के शासक को प्रसन्न करने के लिए बदल कर उसके नाम के अनुरूप *'रियाज़े ख़लील'* कर दिया गया।

हिन्दी भाषा का मासिक पत्र *'सत्य सिंधु'* कानपुर के मेडिकल यंत्रालय से प्रकाशित होता था। इसका वार्षिक मूल्य एक रुपया था। हरिहरप्रसाद पाठक सम्पादक थे। बलदेवप्रसाद मिश्र ने भी 'सत्य सिंधु' का सम्पादन किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

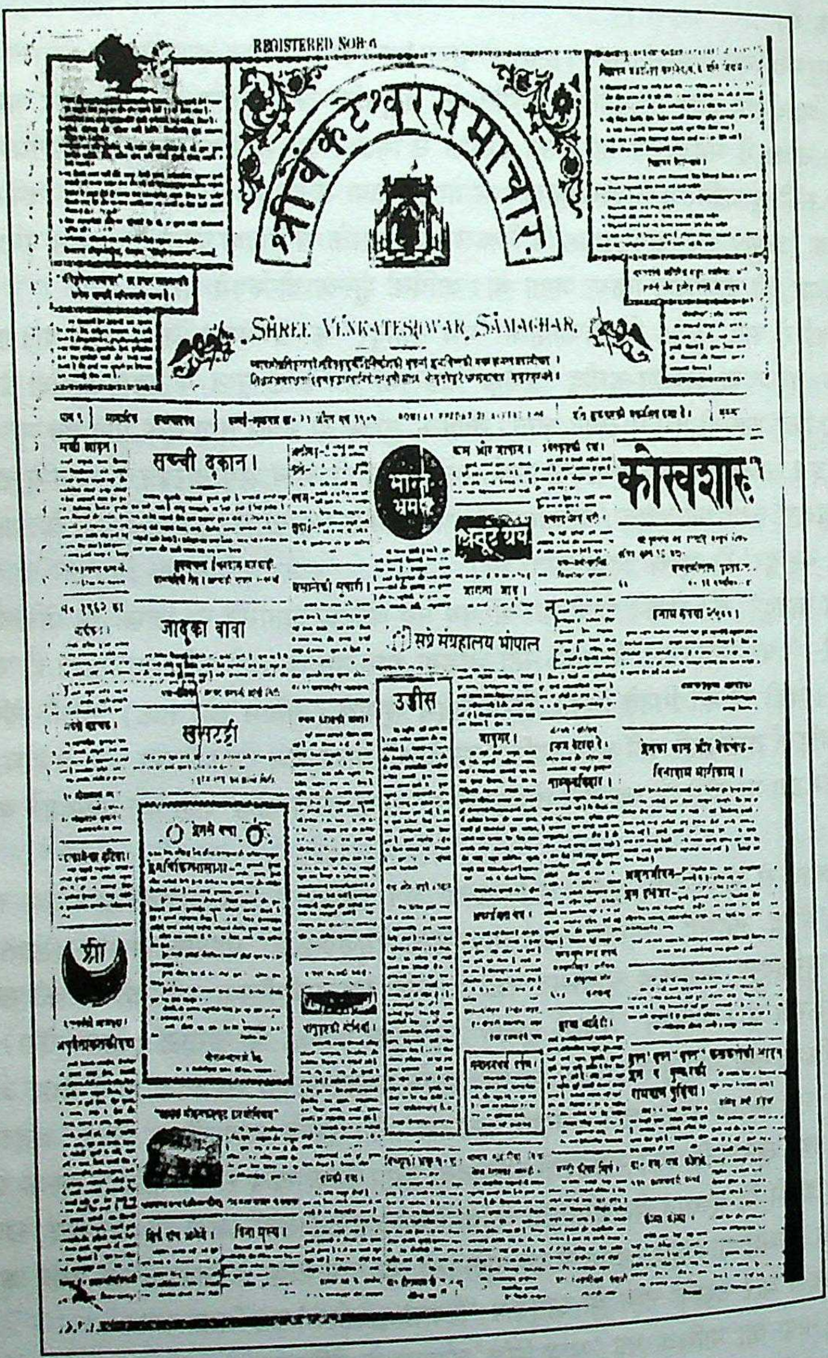
REGISTERED NO. 6

श्रीवेंकटेश्वरसमाचार

SHREE VENKATESHWAR SAMACHAR.

सच्ची दुकान।

जादूका बावा

सप्रे संग्रहालय भोपाल

श्री वेंकटेश्वर समाचार, मुम्बई, सन 1896

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीवेंकटेश्वर समाचार

श्रीवेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई से अप्रैल 1896 में साप्ताहिक '*श्रीवेंकटेश्वर समाचार*' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके संचालक सेठ श्रीकृष्णदास और सेठ खेमराज थे। पत्र के प्रथम सम्पादक रामदास वर्मा थे। बाबू गोपालराम गहमरी सहायक सम्पादक के रूप में 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' से जुड़े रहे। सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा ने एक वर्ष तक इसका सम्पादन किया। मेहता लज्जाराम शर्मा 1897 से 1904 तक सम्पादक रहे। उनके सम्पादन काल में पत्र में सनातन धर्म, सामाजिक सुधार, कृषि, शिल्प, वाणिज्य आदि विषयों पर अच्छी सामग्री का प्रकाशन हुआ। मेहताजी ने पत्र की प्रसार सँख्या बढ़ाने के लिए अच्छी पुस्तकों के उपहार की योजना चलाई।

'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' के लिए 'हिन्दी प्रदीप ने लिखा था-''बाम्बे में भी यह पत्र नागरी महापादप का अंकुर हो आरोपित किया गया है। जिस उठान से उठा है वैसा ही चला गया तो यह प्रथम श्रेणी का पत्र होगा। एक बात इस्के सम्बन्ध में विशेष लक्ष्य के योग्य है कि 'बंगवासी' के समान यह कान्ग्रेस का विरोधी नहीं है। अपिच इस्के लेख से विदित होता है कि यह कान्ग्रेस का बड़ा पक्षपाती है- भिन्न-भिन्न प्रान्तों के साधारण समाचार और इधर-उधर की गपशप के अतिरिक्त आर्टिकल इस्में अब तक ऐसे चटकीले नहीं निकले जिस्पर गुण दोष विवेचकों का ध्यान जाता और लेख का चटकीला होना ही पत्र की जान है- इस्के प्रवर्तकों को चाहिए या तो किसी उत्कट लेखनी वाले लेखक को इसका सम्पादन करैं या अधिक दृव्य व्यय कर हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखकों से लेख लिखवाय मुद्रित किया करैं जो बाम्बे के सुसम्पन्न लोगों के लिए कुछ बहुत दुष्कर नहीं है- महीने में एक लेख तो ऐसा रहै जो पढ़ने वालों के चित्त को हठात् अपनी ओर खींच ले- अस्तु प्रारम्भ में जिस उठान से उठना चाहिए उस्में किसी तरह की त्रुटि इस्में नहीं पाई जाती सिवाय इस्के कि लेख चटकीले हों तब सम्भव है यह पत्र चिरस्थायी दीर्घायु हो- पत्र के प्रवर्तकों को हम यहाँ पर इतना और सूचित किए देते हैं कि मुफ्तखोरों से सावधान रहैं और इस बात पर न फूल उठैं कि ग्राहक सँख्या बहुत बढ़ी हुई है। तीन चौथाई उस्में से ऐसे निकलैंगे जो पीछे से निबुआ नोन चटा देंगे उनका बन्दोबस्त पहले से ही कर रक्खैं- ऐसों को तो या तो समझ कर पत्र दें या अग्रिम मूल्य के बिना पत्र न भेजा करैं- यहाँ यही पापर बेलते धौले आए केश तब यह उचित मालूम होता है कि इस तरह के अदिष्टी मूंजियों के चंगुल से बचने को अपने सहयोगी को पहले ही चौकस रक्खैं।''[1]

'ग्वालियर गजट' में कुछ दूसरी ही तरह की चिन्ता मिलती है- ''यह अख़बार एक महीने से निकला है; हिन्दी ज़बान में है पूरे तख्ता रायल शिवरामपुरी चिकना पर छपता है छापा बहुत साफ़ और समान टैप बिलकुल नया है ख़बरैं बहुत उम्दा व दिलचस्प और मज़ामीन एडीटर भी क़ाबिल तारीफ़ है मगर ताज्जुब है कि ढाई रु. सालाना मय महसूल डाक में यह अख़बार किस तरह चल सकेगा सर्फा ढाई रु. से कहीं ज़्यादा है इसके मालिक खेमराज श्री कृश्नदास साहब हैं और यह अख़बार हफ़तेवार बरोज़ जुमा मक़ाम बम्बई से शाये होता है।''[2]

'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' में आने के पूर्व मेहता लज्जाराम शर्मा बूंदी में 'सर्वहित' के सम्पादक रह चुके थे। इसी दौरान 'भारतमित्र' और 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' में शेष शब्द के

1. हिन्दी प्रदीप, अप्रैल 1896
2. ग्वालियर गजट, 24 मई 1896

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ को लेकर शास्त्रार्थ चल पड़ा था। दोनों पत्रों में अनेक विद्वानों के लेख इस सन्दर्भ में छपे, जिनमें भाषाशास्त्र की दृष्टि से विवेचना की गई।

सन 1903 में जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, 'प्रयाग समाचार' के सम्पादक पद से इस्तीफा देकर 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' के सहकारी सम्पादक होकर आ गए। सन 1905 में बालमुकुन्द गुप्त की अनुशंसा पर अमृतलाल चक्रवर्ती को 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' के सम्पादन के लिए बुलाया गया। वे इसके पहले कालाकांकर के 'हिन्दोस्थान' और 'भारतमित्र' का सम्पादन कर ख्याति अर्जित कर चुके थे और उन दिनों 'हिंदी बंगवासी' के संचालक की नीति से असंतुष्ट होकर उसे छोड़ चुके थे। चक्रवर्ती का सम्पादन-काल एक प्रकार से 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' का श्रेष्ठ समय था, जब पाठकों को पत्र की प्रतीक्षा रहा करती थी। तब इस अख़बार का आकार 75 गुणित 54 से.मी. हो गया था, जो अलग ही स्वरूप लिए हुये था। इसका वार्षिक शुल्क ढाई रुपये था और तीन माह का शुल्क एक रुपया था। प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापनों की भरमार रहती थी।

अमृतलाल चक्रवर्ती की पत्र से विदाई बड़ी अजीबो-गरीब परिस्थिति में हुई या यूँ कहें कि सम्पादकीय अधिकार के प्रश्न पर समझौता न कर पाने के कारण हुई। घटना इस प्रकार है- एक बार सम्पादकीय विभाग में पत्र-मालिक की तरफ से एक लेख पर आदेश प्राप्त हुआ - ''आज्ञा श्रीमान छापो।'' इस आदेश को इस टीप के साथ लौटाया गया- ''पत्र का विषय और उसे छापने न छापने के सम्बन्ध में विचार किए बिना केवल आदेश के कारण यह न छापा जाएगा।'' परिणाम यह निकला कि चक्रवर्ती अपने घर वापस लौट गए। चक्रवर्ती के साथ ही अन्य लोग भी पत्र से अलग हो गए। तब सेठ खेमराज ने बाबू बालमुकुन्द गुप्त से पत्र का सम्पादन करने का आग्रह किया। उन्होंने असमर्थता व्यक्त करते हुए परामर्श दिया कि सम्पादक के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। किसी लेख को छापने अथवा नहीं छापने का अधिकार सम्पादक को ही होता है। ऊहापोह में दो सप्ताह बीत गए, सम्पादक का दायित्व ग्रहण करने के लिए और लोगों से भी सम्पर्क किया गया। लेकिन अन्ततः जगन्नाथप्रसाद शुक्ल के सम्पादन में 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' पुनः प्रकाशित हुआ। शुक्ल ने अपने संस्मरण-लेख में लिखा है- ''वह समय ऐसा विकट था कि पुरानी नरम रीति से पत्र का संपादन करना कठिन था। लार्ड कर्ज़न की दुर्नीति के कारण बंग-भंग हो चुका था। उसके विरुद्ध आन्दोलन बंगाल में चल रहा था, और भारत के सभी प्रान्तों से उसे समर्थन प्राप्त था। सरकारी नीति के विरुद्ध स्वदेशी आन्दोलन चल पड़ा था और लोकमान्य तिलक के प्रभाव से उसके साथ बहिष्कार का ज़ोर भी बढ़ रहा था। भारतीय गदर के 50 साल पूरे हो रहे थे। रौलट ऐक्ट के कारण पंजाब में अशान्ति भयंकरता से बढ़ रही थी। इसी बीच लाला लाजपतराय और अजीत सिंह का देशनिकाला मण्डाले के किले को हुआ। देश में सर्वत्र आग-सी लग रही थी। ऐसे अवसर पर पूर्ण संयम से पत्र निकलना कठिन था। समय और जनता की रुचि के अनुसार 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' में भी लेख लिखे जाने लगे। पत्र के तत्कालीन मैनेजर पं. शिवरतन वाजपेयी से यह भी मालूम हुआ कि पत्र के ग्राहक धूमधाम से बढ़ रहे हैं। उस समय इस पत्र के कई लेखों की बड़ी चर्चा थी। लोकमान्य तिलक ने भी सेठजी से पत्र की प्रशंसा की।''

इसी बीच (सन 1907) नागपुर से 'हिन्दी केसरी' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। माधवराव सप्रे इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। उनके आमंत्रण पर जगन्नाथप्रसाद शुक्ल 'श्रीवेंकटेश्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार' छोड़कर 'हिंदी केसरी' में चले गए। शुक्ल के बाद गंगाप्रसाद गुप्त और गौरीशंकर शर्मा ने 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' का सम्पादन दायित्व सम्हाला।

प्रथम विश्व युद्ध के समय इसे दैनिक पत्र के रूप में निकाला जाने लगा। इस सम्बन्ध में 'सरस्वती' की यह टिप्पणी उल्लेखनीय है-''हिन्दी के नए पत्रों में बम्बई का 'वेंकटेश्वर समाचार' का दैनिक संस्करण देखने को मिला। इसका आकार इस पत्र के साप्ताहिक संस्करण का आधा है। हर अंक में 8 पृष्ठ रहते हैं और हर पृष्ठ में 5 कालम। इसके दूसरे अंक में कई चित्र भी हैं, पहला अंक हमें नहीं मिला दैनिक पत्र के योग्य ही लेख, नोट और समाचार आदि इसमें निकलने लगे हैं। बम्बई और लन्दन के बाजारों के निर्खनामे भी इसमें प्रकाशित होते हैं। अभी तो यह पत्र कुछ ही समय के लिए निकाला गया है, पर यदि हिन्दी के हितैषियों और समाचारपत्रों के प्रेमियों ने इसकी कदर की तो यह हमेशा निकला करेगा। ईश्वर करे यह स्थायी हो जाय। इसका मूल्य 6 महीने का 7 रुपया और तीन महीने का 4 रुपया है। साल भर का 12 रुपया रक्खा गया है। पर अभी 6 और तीन महीने का मूल्य लिया जाता है। कम से कम जब तक यूरप में युद्ध जारी है तब तक तो इसे जरूर ही लेना चाहिए। क्योंकि 'भारतमित्र' की तरह इसमें भी युद्ध की ताजी खबरें पढ़ने को मिलेंगी।''

एशिया के देशों में प्राकृतिक आपदाओं को लेकर 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' ने टिप्पणी की- ''इस वर्ष न जाने एशिया के कई देशों पर भारी विपत्ति पड़ी है। दक्षिण भारत बाढ़ से पीड़ित हो ही रहा है कि चीन से समाचार आया है कि वहाँ भी महाभयंकर बाढ़ आयी, जिससे वहाँ की 10,000 वर्ग मील भूमि जलमग्न हो गई और सहस्त्रों गांव डूब गये, तथा बहुसंख्यक मनुष्यों के प्राण गये। उधर जापान का तार बताता है कि उसका 'तेरूमारू' जहाज़ डूब गया, जिससे उस पर के 200 आदमियों के प्राण गये। भारत के जो स्थान अभी तक बाढ़ से बचे हैं उनमें से किसी किसी स्थान में दूसरी भयंकर घटना हो गयी है। अहमदाबाद की एक मिल की बड़ी भारी दीवार के गिरने से 60-70 आदमी दब गये, जिनमें से बहुत थोड़े ही जीवित निकले। शेष की केवल लाशें निकल रही हैं। फिर भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर उद्धत पठानों पर बम बरसाते हुए कई विमान घने कुहरे के कारण गिर पड़े और उनके नामी-नामी कप्तान तथा अन्य कर्मचारी मर गये। इस बार दक्षिण भारत की बाढ़ से अनेक मनुष्यों की जानें गयी। इससे भी काल को सन्तोष नहीं हुआ तब उसने वहाँ भयंकर हैजा जारी कर दिया जिससे पहले सप्ताह कोई 500 मनुष्य काल के गाल में चले गये। ऐसे महाअनिष्टों को, जब अधिकांश लोग रोज़गार बिना स्वयं दुखी हो रहे हैं, दैवी चक्र छोड़ कर और क्या कहना चाहिये? शुकदेव जी आदि मुनि जो भविष्यवाणी कर चुके हैं वह हम देखते हैं अक्षर-अक्षर घटित हो रही है।''

निरन्जन शर्मा अजित के सम्पादन काल में अखबार का कलेवर और बेहतर हुआ। उसमें राजनीति की खबरें बढ़ीं। इसी कालखण्ड में 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' के विशेषांक अपने साहित्यिक कलेवर के लिए विशेष रूप से सराहे गए। सन 1938 में हरिकृष्ण जौहर पत्र के सम्पादक बने, किन्तु निजी कारणों से वे जल्दी ही वापस काशी लौट गए। तदनन्तर देवेन्द्र शर्मा (1944) ने सम्पादक का दायित्व ग्रहण किया। उन्होंने प्रतिवर्ष दीपावली विशेषांक निकालने की परम्परा को नियमितता प्रदान की। वे 27 अप्रैल 1973 तक पत्र के सम्पादक रहे। उसी दिन से 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' का प्रकाशन बंद हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ को लेकर शास्त्रार्थ चल पड़ा था। दोनों पत्रों में अनेक विद्वानों के लेख इस सन्दर्भ में छपे, जिनमें भाषाशास्त्र की दृष्टि से विवेचना की गई।

सन 1903 में जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, 'प्रयाग समाचार' के सम्पादक पद से इस्तीफा देकर 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' के सहकारी सम्पादक होकर आ गए। सन 1905 में बालमुकुन्द गुप्त की अनुशंसा पर अमृतलाल चक्रवर्ती को 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' के सम्पादन के लिए बुलाया गया। वे इसके पहले कालाकांकर के 'हिन्दोस्थान' और 'भारतमित्र' का सम्पादन कर ख्याति अर्जित कर चुके थे और उन दिनों 'हिंदी बंगवासी' के संचालक की नीति से असंतुष्ट होकर उसे छोड़ चुके थे। चक्रवर्ती का सम्पादन-काल एक प्रकार से 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' का श्रेष्ठ समय था, जब पाठकों को पत्र की प्रतीक्षा रहा करती थी। तब इस अख़बार का आकार 75 गुणित 54 से.मी. हो गया था, जो अलग ही स्वरूप लिए हुये था। इसका वार्षिक शुल्क ढाई रुपये था और तीन माह का शुल्क एक रुपया था। प्रथम पृष्ठ पर विज्ञापनों की भरमार रहती थी।

अमृतलाल चक्रवर्ती की पत्र से विदाई बड़ी अजीबो-गरीब परिस्थिति में हुई या यूँ कहें कि सम्पादकीय अधिकार के प्रश्न पर समझौता न कर पाने के कारण हुई। घटना इस प्रकार है- एक बार सम्पादकीय विभाग में पत्र-मालिक की तरफ से एक लेख पर आदेश प्राप्त हुआ - "आज्ञा श्रीमान छापो।" इस आदेश को इस टीप के साथ लौटाया गया- "पत्र का विषय और उसे छापने न छापने के सम्बन्ध में विचार किए बिना केवल आदेश के कारण यह न छापा जाएगा।" परिणाम यह निकला कि चक्रवर्ती अपने घर वापस लौट गए। चक्रवर्ती के साथ ही अन्य लोग भी पत्र से अलग हो गए। तब सेठ खेमराज ने बाबू बालमुकुन्द गुप्त से पत्र का सम्पादन करने का आग्रह किया। उन्होंने असमर्थता व्यक्त करते हुए परामर्श दिया कि सम्पादक के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। किसी लेख को छापने अथवा नहीं छापने का अधिकार सम्पादक को ही होता है। ऊहापोह में दो सप्ताह बीत गए, सम्पादक का दायित्व ग्रहण करने के लिए और लोगों से भी सम्पर्क किया गया। लेकिन अन्ततः जगन्नाथप्रसाद शुक्ल के सम्पादन में 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' पुनः प्रकाशित हुआ। शुक्ल ने अपने संस्मरण-लेख में लिखा है- "वह समय ऐसा विकट था कि पुरानी नरम रीति से पत्र का संपादन करना कठिन था। लार्ड कर्ज़न की दुर्नीति के कारण बंग-भंग हो चुका था। उसके विरुद्ध आन्दोलन बंगाल में चल रहा था, और भारत के सभी प्रान्तों से उसे समर्थन प्राप्त था। सरकारी नीति के विरुद्ध स्वदेशी आन्दोलन चल पड़ा था और लोकमान्य तिलक के प्रभाव से उसके साथ बहिष्कार का ज़ोर भी बढ़ रहा था। भारतीय गदर के 50 साल पूरे हो रहे थे। रौलट ऐक्ट के कारण पंजाब में अशान्ति भयंकरता से बढ़ रही थी। इसी बीच लाला लाजपतराय और अजीत सिंह का देशनिकाला मण्डाले के किले को हुआ। देश में सर्वत्र आग-सी लग रही थी। ऐसे अवसर पर पूर्ण संयम से पत्र निकलना कठिन था। समय और जनता की रुचि के अनुसार 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' में भी लेख लिखे जाने लगे। पत्र के तत्कालीन मैनेजर पं. शिवरतन वाजपेयी से यह भी मालूम हुआ कि पत्र के ग्राहक धूमधाम से बढ़ रहे हैं। उस समय इस पत्र के कई लेखों की बड़ी चर्चा थी। लोकमान्य तिलक ने भी सेठजी से पत्र की प्रशंसा की।"

इसी बीच (सन 1907) नागपुर से 'हिन्दी केसरी' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। माधवराव सप्रे इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। उनके आमंत्रण पर जगन्नाथप्रसाद शुक्ल 'श्रीवेंकटेश्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार' छोड़कर 'हिंदी केसरी' में चले गए। शुक्ल के बाद गंगाप्रसाद गुप्त और गौरीशंकर शर्मा ने 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' का सम्पादन दायित्व सम्हाला।

प्रथम विश्व युद्ध के समय इसे दैनिक पत्र के रूप में निकाला जाने लगा। इस सम्बन्ध में 'सरस्वती' की यह टिप्पणी उल्लेखनीय है-"हिन्दी के नए पत्रों में बम्बई का 'वेंकटेश्वर समाचार' का दैनिक संस्करण देखने को मिला। इसका आकार इस पत्र के साप्ताहिक संस्करण का आधा है। हर अंक में 8 पृष्ठ रहते हैं और हर पृष्ठ में 5 कालम। इसके दूसरे अंक में कई चित्र भी हैं, पहला अंक हमें नहीं मिला! दैनिक पत्र के योग्य ही लेख, नोट और समाचार आदि इसमें निकलने लगे हैं। बम्बई और लन्दन के बाजारों के निर्खनामे भी इसमें प्रकाशित होते हैं। अभी तो यह पत्र कुछ ही समय के लिए निकाला गया है, पर यदि हिन्दी के हितैषियों और समाचारपत्रों के प्रेमियों ने इसकी कदर की तो यह हमेशा निकला करेगा। ईश्वर करे यह स्थायी हो जाय। इसका मूल्य 6 महीने का 7 रुपया और तीन महीने का 4 रुपया है। साल भर का 12 रुपया रक्खा गया है। पर अभी 6 और तीन महीने का मूल्य लिया जाता है। कम से कम जब तक यूरप में युद्ध जारी है तब तक तो इसे जरूर ही लेना चाहिए। क्योंकि 'भारतमित्र' की तरह इसमें भी युद्ध की ताजी खबरें पढ़ने को मिलेंगी।"

एशिया के देशों में प्राकृतिक आपदाओं को लेकर 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' ने टिप्पणी की- "इस वर्ष न जाने एशिया के कई देशों पर भारी विपत्ति पड़ी है। दक्षिण भारत बाढ़ से पीड़ित हो ही रहा है कि चीन से समाचार आया है कि वहाँ भी महाभयंकर बाढ़ आयी, जिससे वहाँ की 10,000 वर्ग मील भूमि जलमग्न हो गई और सहस्त्रों गांव डूब गये, तथा बहुसंख्यक मनुष्यों के प्राण गये। उधर जापान का तार बताता है कि उसका 'तेरूमारू' जहाज़ डूब गया, जिससे उस पर के 200 आदमियों के प्राण गये। भारत के जो स्थान अभी तक बाढ़ से बचे हैं उनमें से किसी किसी स्थान में दूसरी भयंकर घटना हो गयी है। अहमदाबाद की एक मिल की बड़ी भारी दीवार के गिरने से 60-70 आदमी दब गये, जिनमें से बहुत थोड़े ही जीवित निकले। शेष की केवल लाशें निकल रही हैं। फिर भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर उद्धत पठानों पर बम बरसाते हुए कई विमान घने कुहरे के कारण गिर पड़े और उनके नामी-नामी कप्तान तथा अन्य कर्मचारी मर गये। इस बार दक्षिण भारत की बाढ़ से अनेक मनुष्यों की जानें गयी। इससे भी काल को सन्तोष नहीं हुआ तब उसने वहाँ भयंकर हैजा जारी कर दिया जिससे पहले सप्ताह कोई 500 मनुष्य काल के गाल में चले गये। ऐसे महाअनिष्टों को, जब अधिकांश लोग रोज़गार बिना स्वयं दुखी हो रहे हैं, दैवी चक्र छोड़ कर और क्या कहना चाहिये? शुकदेव जी आदि मुनि जो भविष्यवाणी कर चुके हैं वह हम देखते हैं अक्षर-अक्षर घटित हो रही है।"

निरन्जन शर्मा अजित के सम्पादन काल में अखबार का कलेवर और बेहतर हुआ। उसमें राजनीति की खबरें बढ़ीं। इसी कालखण्ड में 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' के विशेषांक अपने साहित्यिक कलेवर के लिए विशेष रूप से सराहे गए। सन 1938 में हरिकृष्ण जौहर पत्र के सम्पादक बने, किन्तु निजी कारणों से वे जल्दी ही वापस काशी लौट गए। तदनन्तर देवेन्द्र शर्मा (1944) ने सम्पादक का दायित्व ग्रहण किया। उन्होंने प्रतिवर्ष दीपावली विशेषांक निकालने की परम्परा को नियमितता प्रदान की। वे 27 अप्रैल 1973 तक पत्र के सम्पादक रहे। उसी दिन से 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' का प्रकाशन बंद हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यदीपिका

बेसेल मिशन बुक एंड ट्रेक्ट डिपाजिटरि ने मंगलूर से सन 1896 में *'सत्यदीपिका'* का प्रकाशन किया। पाठकों की पठन-अभिरुचि को नई दिशा देने का काम इस कन्नड साप्ताहिक पत्र ने किया। यह पत्र बुधवार को जारी होता था। इसमें निबन्ध, लघुकथा, कविताएँ, जीवनवृत्त, स्वास्थ्य आदि विषयों पर विविध सामग्री का प्रकाशन किया जाता था। समाचारों को मिशन, विदेश, देश और स्थानीय वर्गीकरण के साथ प्रकाशित किया जाता था। स्थानीय समाचारों में दुर्घटना, अपराध, निधन, अदालती खबरें ज्यादा रहती थीं। 'सत्यदीपिका' का प्रसार अच्छा था। चारों कव्हर पृष्ठ पर विज्ञापन छपते थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था।

जैसोर, जिला गया से हिन्दी मासिक पत्र *'बिहार भूषण'* सन 1896 में निकला। इसके प्रकाशक प्रयागलाल गुप्त थे। प्रवेशांक में पहला लेख 'जन्म' शीर्षक से लिखा गया था। उसके बाद उपयोगी उपदेश, जीवन चरित्र, परिहास और स्मरण के अलावा स्थानीय समाचार प्रकाशित किए गए हैं।

1897

प्रदीप

भारतीय पत्रकारिता के उन्नायक रामानन्द चटर्जी ने सन 1897 में बंगला मासिक 'प्रदीप' का सम्पादन किया। यह मासिक पत्र कोलकाता से बैकुण्ठनाथ दास निकालते थे। इसी समय रामानन्द चटर्जी की गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर से घनिष्ठता हुई और वे 'प्रदीप' के लिए नियमित रूप से लिखने लगे। उस समय बंगाल में जितने चोटी के लेखक थे, सभी 'प्रदीप' के लिए लिखते थे। उत्कृष्ट सामग्री के साथ-साथ, प्रकाशन की दृष्टि से भी मासिक 'प्रदीप' ने बंगला पत्रकारिता में नए आयाम जोड़े और एक नए युग का सूत्रपात किया।

सन 1897 में रसी मुकुंदराव ने *'भाग्येश नगर'* का प्रकाशन किया। सन 1897 में दर्शन की पत्रिका *'मुमुक्षु जनरंजनी'* का प्रकाशन हुआ। ए. नरसिंहाचार्युलु इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। चेन्नै से प्रकाशित होने वाली यह तेलुगु मासिक पत्रिका थी। साहित्यिक पत्रिका *'मंजुवाणी'* का प्रकाशन सन 1897 में हुआ। इसका सम्पादन नंदिराजू चलपति राव करते थे। एलूर से प्रकाशित यह तेलुगु मासिक पत्रिका थी। सन 1897 में काकिनाडा से तेलुगु की धार्मिक मासिक पत्रिका *'रवि'* का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के सम्पादक जे.पी. मलूरियन थे। यह बैप्टिस्ट मिशन द्वारा निकाली गई थी।

सन 1897 में पटना से *'रिसाला मख़ज़न मुलकिब व तोहफ़िया हनफ़िया'* निकला। सन 1897 में शैक्षिक पत्रिका *'विद्यावती'* का प्रकाशन चेन्नै से आरम्भ हुआ। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक ओमंडूर वैद्यम दोरासमैया थे। सन 1897 में धार्मिक पत्रिका *'सत्यसाधिनी'* का प्रकाशन चेन्नै से हुआ। टी.ए. स्वामीनायर द्वारा प्रकाशित इस पत्रिका का स्वरूप मासिक और भाषा तेलुगु थी। सन 1897 में पत्रिका *'सुनीति'* का प्रकाशन राजमुंदरी से हुआ। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक नलगोंडा कोदंड रामय्या थे।

मुम्बई से सन 1897 में दैनिक पत्र *'सुल्तान-उल-अख़बार'* का प्रकाशन हुआ। चार पृष्ठों के इस पत्र के प्रकाशक तथा सम्पादक हकीम मोहम्मद अब्दुल हमीद 'फर्रुख' देहलवी थे। हमीदी प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क डाक खर्च समेत बारह रुपये था। प्रारम्भ में गुरुवार तथा सोमवार को छुट्टी रहती थी अर्थात सप्ताह में दो दिन प्रकाशित नहीं होता था। किन्तु सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1898 से केवल एक दिन गुरुवार को प्रकाशित नहीं किया जाता था।

साप्ताहिक *'तोहफ़-ए-सरहद'* का प्रकाशन बन्नू से जनवरी 1897 में किया गया था। सम्पादक प्यारेलाल 'शाक़िर' थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया दस आना था। अंजुमन इस्लाम बांकीपुर के तत्वावधान में मासिक पत्रिका *'अलहादी'* का प्रकाशन पटना से मार्च 1897 में हुआ। सम्पादक वली मोहम्मद थे। 31 जुलाई 1897 को पटना से साप्ताहिक *'अख़बार तहज़ीब'* का प्रकाशन हुआ।

16 अक्टूबर 1897 को मुम्बई से साप्ताहिक *'मक़बूल-ए-आम'* का प्रकाशन किया गया। हर इतवार को निकलता था। प्रकाशक एवं सम्पादक मुंशी मोहम्मद अली 'शायक़' थे। शहाबी प्रेस में छपता था। वार्षिक शुल्क ढाई रुपये था। इसके दो मार्च 1898 के अंक में प्रकाशित समाचार से मुम्बई से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्रों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है- "अलहम्दो लिल्लाह (ईश्वर की कृपा से) हमारे शहर में इस वक़्त तीन उर्दू अख़बार रोज़ाना शाया होते हैं। 'मुस्लिम हेरल्ड', 'इंडिया गजट', 'सुल्तान-उल-अख़बार'। दूसरा एक और अख़बार है जिसका नाम 'सफ़ीर' हैं। यह हफ़्ते में एक बार छपता है। 'सुल्तान-उल-अख़बार' के दफ़्तर से हर हफ़्ते दो पर्चे पाँच रंगों में निकलते हैं। बम्बई 'पंच बहादुर' और 'आज़ाद पंच' बम्बई वालों का मज़ाक़ बनिस्बत ज़माना साबिक़ इस वक़्त बढ़ा हुआ है। उन बिचारों की मालूमात जिनको गुजराती और अँगरेजी नहीं आती इन अख़बारों से बढ़ती है।"

सन 1897 में पटना से मासिक *'अदीब'* और बिहार शरीफ़ से *'अशरफ़'* नामक अख़बार निकला। कादियान सम्प्रदाय के साप्ताहिक पत्र *'अलहुक्म'* को क़ादियान से सन 1897 में निकाला गया था। याक़ूब अली 'तुराब' अहमदी इसके सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क पाँच रुपये था। हैदराबाद से सन 1897 में मासिक *'अफ़सर'* का प्रकाशन किया गया था। इसके सम्पादक मुहिब्ब हुसैन थे। दो वर्ष बाद मौलवी अब्दुल हक़ सम्पादक हुए। इसका वार्षिक शुल्क चार रुपये था। इसमें सैनिक, दार्शनिक, शिक्षा, इतिहास, नैतिकता आदि विषयों पर लेख छापे जाते थे।

कटक से विश्वनाथ कर के सम्पादन में मासिक पत्रिका *'उत्कल साहित्य'* का प्रकाशन सन 1897 में हुआ। फकीर मोहन सेनापति, राधानाथ राय, मधुसूदन दास प्रभृति लेखकों के लेख इसमें छपते थे। विश्वनाथ कर के निधन के बाद महानंद कर और रमला कर ने पत्र का प्रकाशन किया। इसके सम्पादक कृष्ण प्रसाद चौधरी थे।

सन 1897 में दैनिक पत्र *'गुराखी'* मुम्बई से प्रकाशित हुआ। विनायक नारायण भाटे पत्र के प्रकाशक और सम्पादक थे। इस पत्र के साथ सम्पादकीय मर्यादा की अवमानना का कलंक जुड़ा हुआ है। 'गुराखी' पत्र के 26, 30 और 31 मार्च 1899 के अंक में प्रकाशित लेखों पर उसके विरुद्ध मुकदमा दायर किया गया। ये लेख थे-1. राजा व राज्य यांचा अर्थकाय? और 2. चाफेकर, द्रविड व मि. बुइन। बतौर सम्पादक भाटे ने नितान्त कायरता का परिचय दिया और सरकार पर जाहिर कर दिया कि ये लेख लक्ष्मण नारायण जोशी ने लिखे थे। परिणामस्वरूप भाटे को एक वर्ष और जोशी को छह माह की सज़ा हुई। इसके विपरीत लोकमान्य तिलक और काकासाहेब खाडिलकर जैसे सम्पादकों ने अन्य लेखकों के लिखे हुए लेखों के कारण सज़ा कुबूल की, पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली और अदालत में लेखक का नाम प्रकट नहीं किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

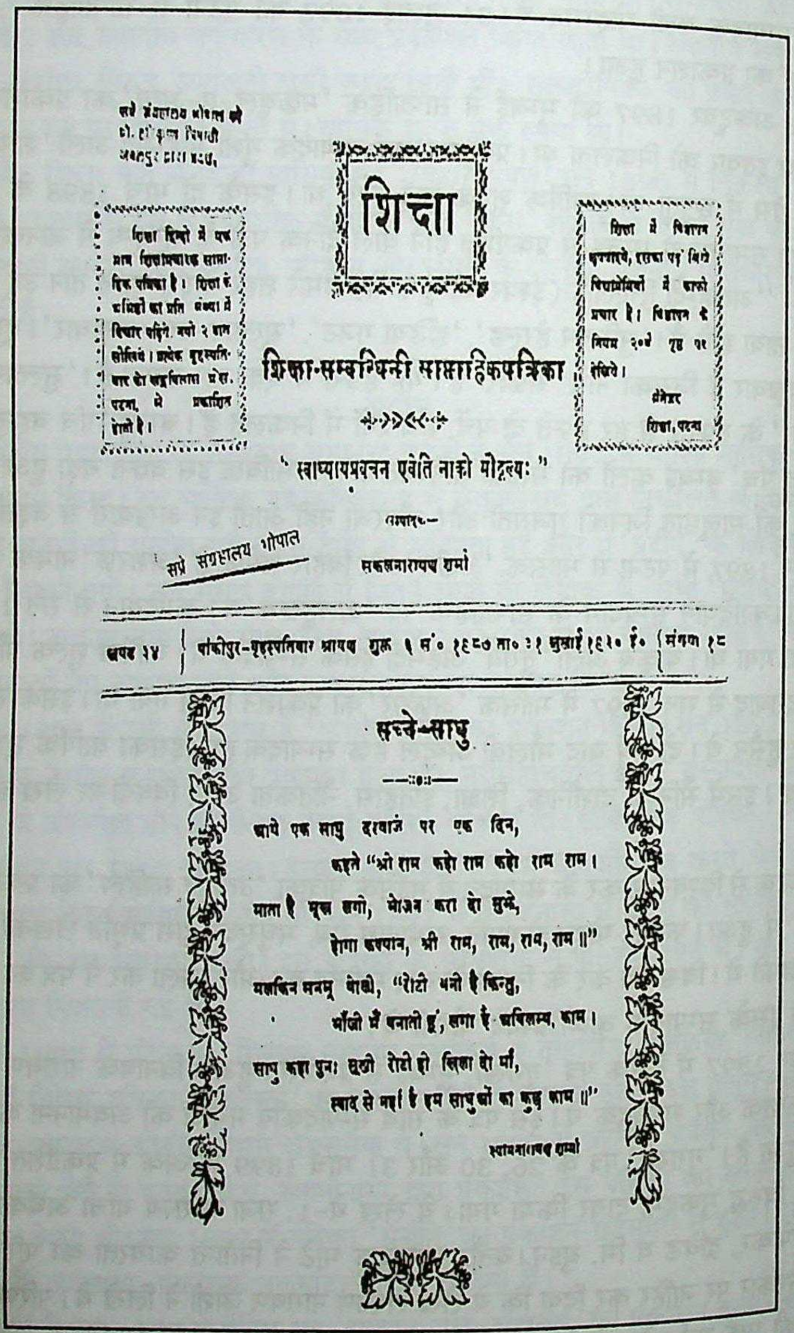

सप्रे संग्रहालय भोपाल को
डो. हरि कृष्ण त्रिपाठी
अवधपुर द्वारा भेंट

शिक्षा हिन्दी में एक मात्र शिक्षाप्रचारक सामाहिक पत्रिका है। शिक्षा के ग्राहकों का प्रति संख्या में विचार पढ़िए। मूल्य २ साल सालियां। प्रत्येक बृहस्पतिवार को खड्गविलास प्रेस, पटना, से प्रकाशित होती है।

शिक्षा

शिक्षा में विज्ञापन छपवाइये, इसका पढ़ बिक्री विद्याप्रेमियों में काफी प्रचार है। विज्ञापन के नियम २०४ पृष्ठ पर देखिये।

मेनेजर
शिक्षा, पटना

शिक्षा-सम्बन्धिनी साप्ताहिकपत्रिका

" स्वाध्यायप्रवचन एवेति नाको मौद्गल्यः "

सम्पादक—

सकलनारायण शर्मा

सप्रे संग्रहालय भोपाल

खण्ड १४ | बांकीपुर-बृहस्पतिवार श्रावण शुक्ल ९ सं० १९८७ ता० ३१ जुलाई १९३० ई० | संख्या १८

सच्चे-साधु

—::०::—

आये एक साधु दरवाजे पर एक दिन,
कहते "श्री राम कहो राम कहो राम राम।
माता है भूख लगी, भोजन करा दो मुझे,
होगा कल्याण, श्री राम, राम, राम, राम ॥"
मलकिन मनमू बोली, "रोटी बनी है किन्तु,
भाँजी मैं बनाती हूं, लगा है अविलम्ब, काम।
साधु कहा पुनः सूखी रोटी ही खिला दो माँ,
स्वाद से नहीं है हम साधुओं का कुछ काम ॥"

श्यामनारायण शर्मा

शिक्षा, बांकीपुर, सन 1897

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जैन भास्कर' जैन धर्म सम्बन्धी पत्रिका थी। इसका प्रकाशन सन 1897 में हुआ था। सतीश मुकर्जी ने 1897 में कोलकाता से *'डान'* का प्रकाशन किया। वे ही उसके सम्पादक थे। तदनन्तर, जुलाई 1902 में डान सोसायटी की स्थापना की गई। इस बीच 'डान' का प्रकाशन बंद हो चुका था। सितम्बर 1904 में सोसायटी ने 'डान एण्ड सोसायटीज मैगजीन' के रूप में पुनर्प्रकाशित किया। यह पत्रिका सन 1913 तक निकली।

कोलकाता देश के व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा था। यहीं देश के साइकिल वालों का 1892 में एक संघ बना। स्टेनले ओक्स इसके सूत्रधार थे। कोलकाता से साइकिल उद्योग के प्रचार-प्रसार के लिए सन 1897 में साप्ताहिक *'इंडियन सायक्लिस्ट'* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसका वार्षिक शुल्क आठ रुपये था। यह पत्रिका चार वर्ष तक निकली। सन 1897 में *'निज़ाम वैभव'* नाम का एक पत्र हैदराबाद से निकला। सन 1897 में तेलुगु साप्ताहिक *'प्रभावती'* का प्रकाशन हुआ। सिकंदराबाद से प्रकाशित इस पत्र के सम्पादक-प्रकाशक सच्चिदानंद बोधनकर थे।

शिक्षा

सकल नारायण पाण्डेय के सम्पादन में सन 1897 में पटना से साप्ताहिक *'शिक्षा'* का प्रकाशन हुआ। यह पत्रिका सन 1936 तक प्रकाशित हुई। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने भी इसका सम्पादन किया। हिन्दी कोविद रत्नमाला पुस्तक के दूसरे भाग में लिखा है- ''इधर चार-पाँच वर्षों से पांडेयजी शिक्षा नामक साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन करते हैं। यह काम भी आप अच्छी योग्यता से कर रहे हैं। यद्यपि यह पत्रिका बारह तेरह वर्ष से निकलती है पर पांडेयजी के हाथ में आने से पूर्व इसका प्रचार केवल शिक्षा विभाग में ही था। जब से पांडेयजी इसका सम्पादन करने लगे हैं तब से सर्वसाधारण में भी इसका आदर होने लगा है।''

'शिक्षा' पर सम्मेलन पत्रिका (1922) ने लिखा- ''आज से 26 वर्ष पूर्व 'शिक्षा' नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकाला गया था। सदा शिक्षा को ही लक्ष्य कर इसका सञ्चालन होता रहा है। यह बात हिन्दी प्रेमियों को विदित है। इस नये वर्ष से 'शिक्षा' अपने कार्य में और अधिक तत्परता और सजीवता के साथ लगेगी। कृषि, शिल्प, वाणिज्य, साहित्य, धर्म, दर्शन, इतिहास, नीति आदि आवश्यक विषयों के शिक्षा सम्बन्धी विद्वानों के विचार रहा करेंगे।'' 'माधुरी'[1] ने लिखा-''सम्मेलनांक, सम्पादक श्री सकल नारायण पांडेय सांख्य-काव्य-व्याकरण-तीर्थ द्वारा संपादित होकर बाँकीपुर (पटना) के खड्गविलास- प्रेस से प्रकाशित होती है। वार्षिक मूल्य 5 रुपये है। ''यह विशेष अंक है। इसके संपादक उक्त पांडेयजी और पं. चंद्रशेखर शास्त्री हैं। इस अंक में बड़े साइज़ के 48 पृष्ठ हैं। टाइटिल पर सम्मेलन के सभापति पुरुषोत्तमदास जी टंडन का चित्र है। कुल लेख 27 हैं। काग़ज़ बढ़िया लगा है। छपाई-सफ़ाई भी भव्य है। लेख सब अच्छे लेखकों के लिखे हुए हैं। इस अंक का मूल्य बारह आना है। मूल्य कुछ अधिक होने पर भी अंक दर्शनीय और संग्रह योग्य हुआ है। यह पत्रिका 26 वर्ष से निकल रही है, और अच्छी निकलती है। यह सँख्या देखकर मुझे बड़ा संतोष हुआ। साधारण सँख्याएँ भी इसकी सुसंपादित होती हैं। टिप्पणियाँ मार्के की और लेख काम के हुआ करते हैं। आशा है, बिहार के सिवा अन्य प्रांतों में भी इसका अच्छा प्रचार और आदर होगा।''

सन 1928 में ईश्वरी प्रसाद शर्मा 'शिक्षा' के सम्पादक हुए। सन 1933 में पं. सकल

1. माधुरी, 23 अप्रैल 1923

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नारायण शर्मा के सम्पादन में 'शिक्षा' पाक्षिक पत्रिका हो गई थी। 'शिक्षा' में हिन्दी के शब्दों के शुद्ध स्वरूप पर ध्यान दिया जाता था। इसी पत्रिका ने स्पष्ट किया कि 'राजनैतिक' शब्द गलत है, सही शब्द 'राजनीतिक' है। 'अन्तर्राष्ट्रीय' के स्थान पर 'अन्त:राष्ट्रीय' शब्द को सही निरूपित किया गया।

सन 1897 में किशनगढ़ से उर्दू पत्र *'शोला-ए-इश्क़'* का प्रकाशन हुआ। मूलत: *'वेद प्रकाश'* का प्रकाशन साप्ताहिक पत्र के रूप में कानपुर से हुआ था। सन 1897 में यह मासिक होकर मेरठ से निकला। तुलसीराम इसके सम्पादक-प्रकाशक थे। यही पत्र सन 1907 में गुरुकुल कांगड़ी से, सन 1912 में दिल्ली से और सन 1915 में पुन: कांगड़ी से निकलने लगा।

अप्रैल 1897 में कोलकाता से अँगरेजी मासिक पत्रिका *'न्यू एज'* का प्रकाशन किया गया। एस.सी. मुखोपाध्याय पत्रिका के सम्पादक थे। इसे विश्वजनीन ज्ञान की पत्रिका कहा जाता था जिसके विषयों में विज्ञान, राजनीति, प्रकृति, संस्कृति, कहानी, कविता, शिक्षा आदि सभी का समावेश होता था। इनका आकार 24 गुणित 18 से.मी. और प्रसार संख्या 2000 थी। न्यू एज के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित सूचना से पता चलता है कि न्यू एज के जो ग्राहक 'लाइट आफ द इस्ट' नामक पत्रिका खरीदते थे, उन्हें यह पत्रिका आधे दाम पर अग्रिम भुगतान की शर्त के साथ दी जाती थी। 'न्यू ऐज' के साथ स्वतंत्र संस्करण के रूप में आधुनिक एवं प्राचीन चिकित्सा विज्ञान की मासिक पत्रिका 'जर्नल आफ द हेल्थ' संलग्न रहती थी। इसके कवर और अन्दर के पृष्ठों पर विज्ञापन छापे जाते थे।

1898

काल

25 मार्च 1898 को शिवराम महादेव परांजपे ने मराठी साप्ताहिक *'काल'* का प्रकाशन आरम्भ किया। अध्यापन छोड़ कर उन्होंने पत्रकारिता को अपनाया था। वे 'केसरी' और 'पुणे वैभव' से जुड़े रहे थे। 'केसरी' की परम्परा पर चलने वाले 'काल' का उद्देश्य था-''लोकात दृढ़मूल व रूढ़ झालेल्या कित्येक राजकीय कल्पनांच्या उच्छेदासाठी कालचा जन्म आहे।'' 'काल' प्रारम्भ में जगहितेच्छु छापाखाने में छपता था। एक साल बाद परांजपे ने एक पुराना छापाखाना खरीद कर अपना मनोहर प्रेस शुरू किया। इसी में 'काल' और तदनन्तर 'स्वराज्य' पत्र छपने लगे।

साप्ताहिक 'काल' 12 वर्ष चला। 'काल' के नौ मई 1900 के अंक में प्रकाशित लेख ''भारत में एक अँगरेज के अनुभव'' को लेकर उनके ऊपर राजद्रोह का मुकदमा चलाने की पहली कोशिश हुई। मुम्बई के न्याय विभाग के सचिव सी.ज़े. हिल ने 10 जुलाई 1904 को 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के एल.जी. फ्रेजर को एक गुप्त पत्र भेजकर 'काल' के लेख प्रकाशित करके उसका राजद्रोहात्मक रूप प्रगट करने के लिए कहा था। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने 'काल' पत्र के लेखों के अँगरेजी अनुवाद प्रकाशित किए और उन पर अलग से टिप्पणी भी लिखी। परांजपे के साथ ऐसा कम से कम पाँच बार हुआ। अंतत: 15 मई 1908 के अंक का लेख राजद्रोही मानकर शिवराम परांजपे को 11 जून 1908 को अदालत के चक्कर में फँसना ही पड़ा। उन्होंने अपने पक्ष की पैरवी स्वयं की। जिरह के अन्त में शिवराम परांजपे ने कहा था-''स्वदेश पर प्रेम करना यदि गुनाह है तो वह मैने किया और उसके लिए जो सजा मुझे मिलेगी वह मैं आनन्द से भोगूँगा।'' उन्हें कैद की सजा हुई जो उन्होंने 10 जुलाई 1908 से पाँच अक्टूबर 1909

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक भुगती। लेख के इस अंश को आपत्तिजनक ठहराया गया था-''भारत और रूस में बम फेंकने के नतीजे में अन्तर है। वहाँ रूसी बादशाह को भी समर्थन मिलता है, क्योंकि बादशाह भी रूसी है, यहाँ भारत में अँगरेजों को समर्थन नहीं मिलेगा, इसलिए हमारा आन्दोलन अवश्य सफल होगा।'' इस अवधि में 'काल' का सम्पादन पु.बा. खेर और स.ल. सोमण ने किया। सन 1910 में 'काल' पत्र से सरकार ने जमानत की रकम माँगी। इसलिए 'काल' को अकाल बंद करना पड़ा।

तहज़ीब-ए-निस्वां

उर्दू में महिला पत्रिकाओं का युगारम्भ मौलवी सईद अहमद द्वारा प्रकाशित पत्र *'उनिसां'* से हुआ था किन्तु बुनियादी कार्य दो अन्य पत्रिकाओं ने किया। इनमें पहली पत्रिका 'तहज़ीब-ए-निस्वां' तथा दूसरी 'अस्मत' थी। 'तहज़ीब-ए-निस्वां' के सम्पादक सैयद मुमताज़ अली तथा 'अस्मत' के सम्पादक मौलाना राशिद-उल-ख़ेरी थे।

मोहम्मदी बेगम ने साप्ताहिक 'तहज़ीब-ए-निस्वां' विशेष रूप से लड़कियों के लिए एक जुलाई 1898 से प्रकाशित करना आरम्भ किया था। इसका वार्षिक शुल्क डाक खर्च सहित अग्रिम पाँच रुपये था। पृष्ठ सँख्या 22 थी। अधिकांश लेख महिलाओं के होते थे जिनमें ज़ोहरा अख़्तर, अतिया बेगम, फ़ातिमा बेगम, आसिफ़ा बेगम, हामिदा ख़ातून प्रमुख थीं। अंतिम पृष्ठ पर देश तथा विदेश के समाचार छापे जाते थे। ख़बरों का एक नमूना प्रस्तुत है-''अँगरेजी पाउंड की क़ीमत गिर गई है। ब्रिटेन की सियासी हालत पर इसका ज़बर्दस्त असर पड़ा है। विदेशी पाउंड को अमेरिका, हॉलैंड और स्विट्ज़रलैन्ड के नोटों में तब्दील करा रहे हैं। डेली टेलीग्राफ लिखता है के क़ीमत के गिरने का कोई आर्थिक कारण नहीं बल्कि बरतानिया में मज़दूरों की जमात की हुकूमत के क़याम का खौफ है।''

सप्रे संग्रहालय भोपाल में उपलब्ध पत्रिका की 1924 की फाइल से पता चलता है कि (1) पत्रिका के लिए प्रत्येक छह महीने में सबसे अधिक लेख भेजने वाली महिला को पुरस्कार दिया जाता था। (2) संस्कृति पर लिखने वाली महिलाओं को प्रत्येक छह मास की अवधि में अच्छे लेख लिखने के लिए तीन पुरस्कार रु. 25/-, रु. 15/- तथा रु. 7/- के दिए जाते थे। 5 महिलाओं को पुरस्कार स्वरूप किताबें दी जाती थीं। (3) शासकीय अधिकारियों एवं संस्थाओं के प्रबन्धकों की शिकायतें, जो पाठकों द्वारा की जाती थीं, पत्रिका में छपती थीं तथा सम्बन्धित व्यक्तियों अथवा संस्थाओं से सफ़ाई माँगी जाती थी और उनका ध्यान उस ओर आकृष्ट किया जाता था। (4) पत्राचार में सम्पादक से गृहस्थी अथवा महिलाओं के उपयोग में आने वाली वस्तुओं की जानकारी चाहने वाले पत्र ही छापे जाते थे। (5) समाचारों में देश के अतिरिक्त विदेशों के विशेषकर इस्लामी देशों के समाचार छपते थे। (6) केवल महिलाओं के लिए लाभप्रद अथवा उपयोगी चीज़ों के विज्ञापन ही छापे जाते थे। (7) अधिकांश लेख महिलाओं के लिए उपयोगी तथा इस्लाम धर्म सम्बन्धी हैं।''

साप्ताहिक *'समर्थ'* छह जुलाई 1898 को कोल्हापुर से प्रति बुधवार प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। प्रकाशक विनायक नारायण जोशी और सम्पादक बलवंतराव माधवराव राणे थे। वार्षिक शुल्क एक रुपया था। यह मराठी साप्ताहिक दस वर्ष चला। राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार इसका लक्ष्य था। राजनीतिक लेख भी छपते थे। कोल्हापुर दरबार की राजनीति पर कठोर और निर्भीक टीका करता था। सत्य शोधक आन्दोलन का समर्थक था। 'समर्थ' से सन 1909 में जमानत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

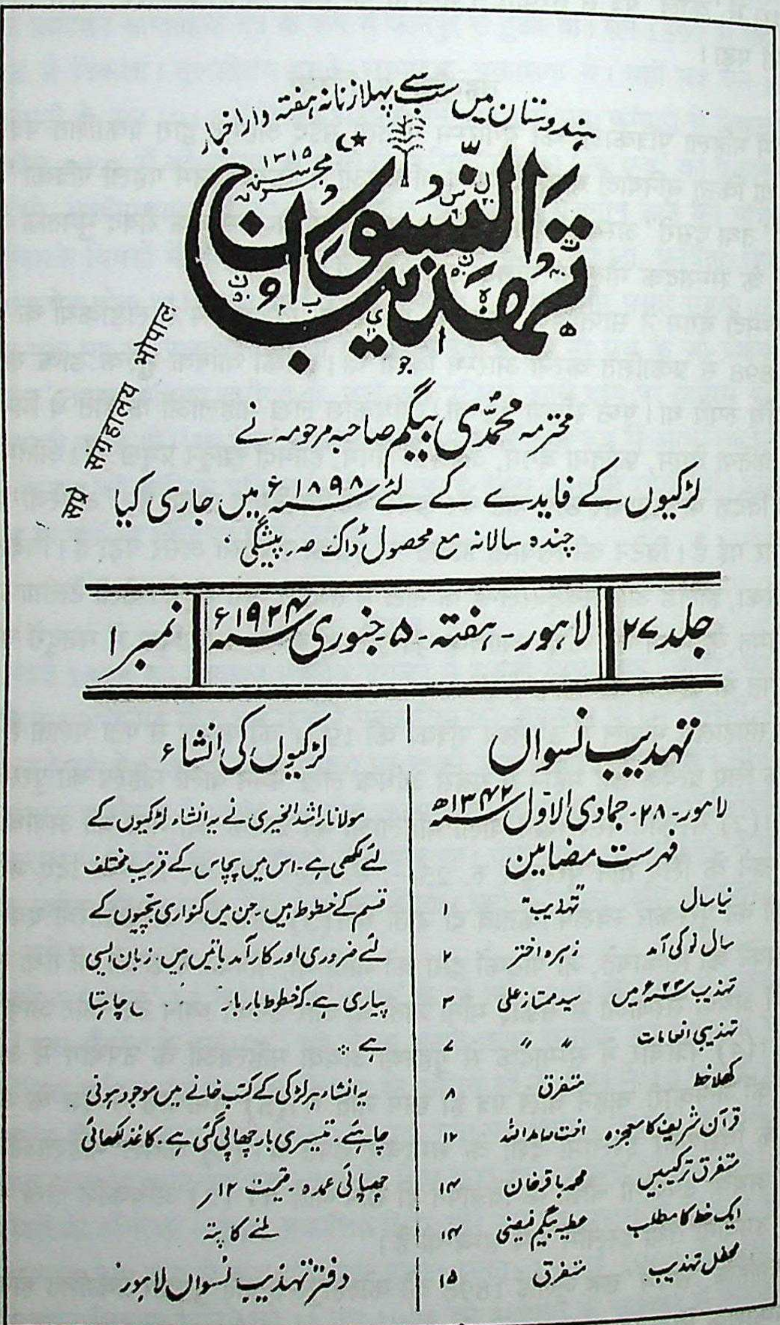
ہندوستان میں سب سے پہلا زنانہ ہفتہ وار اخبار

تہذیب النسوان

مجریہ ۱۳۱۵

محترمہ محمدی بیگم صاحبہ مرحومہ نے
لڑکیوں کے فایدے کے لئے سنہ ۱۸۹۸ء میں جاری کیا
چندہ سالانہ مع محصول ڈاک ۵ پیشگی

جلد ۲۷	لاہور ۔ ہفتہ ۔ ۵ جنوری سنہ ۱۹۲۴ء	نمبر ۱

تہذیب نسواں

لاہور ۔ ۲۸ ۔ جمادی الاول سنہ ۱۳۴۲ھ

فہرست مضامین

نیا سال	"تہذیب"	۱
سال نو کی آمد	زہرہ اختر	۲
تہذیب سنہ ۲۳ء میں	سید ممتاز علی	۳
تہذیبی انعامات	" "	۷
کھلا خط	متفرق	۸
قرآن شریف کا معجزہ	امت صاعد اللہ	۱۲
متفرق ترکیبیں	محمد باقر خان	۱۴
ایک خط کا مطلب	عطیہ بیگم فیضی	۱۴
محفل تہذیب	متفرق	۱۵

لڑکیوں کی انشاء

مولانا راشد الخیری نے یہ انشاء لڑکیوں کے لئے لکھی ہے۔ اس میں پچاس کے قریب مختلف قسم کے خطوط ہیں۔ جن میں کنواری بچیوں کے لئے ضروری اور کارآمد باتیں ہیں۔ زبان ایسی پیاری ہے۔ کہ خطوط بار بار [illegible] چاہتا ہے ۔

یہ انشاء ہر لڑکی کے کتب خانے میں موجود ہونی چاہئے۔ تیسری بار چھاپی گئی ہے۔ کاغذ لکھائی چھپائی عمدہ۔ قیمت ۱۲ ار

ملنے کا پتہ

دفتر تہذیب نسواں لاہور

संग्रहालय भोपाल

तहजीब-ए-निस्वां, सन 1898

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँगी गई थी, किन्तु सम्पादक-प्रकाशक ने जमानत देने के बजाय पत्र को बंद करने का निर्णय लिया।

जुलाई 1898 में अलीगढ़ से मासिक *'मुआरिफ़'* प्रकाशित हुआ। 32 पृष्ठों के इस उर्दू मासिक के सम्पादक हाजी मोहम्मद इस्माइल थे। जून 1900 से प्रकाशक मौलवी वहीदउद्दीन 'सलीम' ने सम्पादन का भार भी सम्भाल लिया। इसका वार्षिक शुल्क चार रुपये तथा एक प्रति का मूल्य साढ़े पाँच आना था। इस पत्रिका में साहित्यिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, धार्मिक लेख, कविताएँ एवं एक उपन्यास का अनुवाद धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जाता था। चार साल तक प्रकाशित होने के बाद सन 1902 में इसका प्रकाशन बंद हो गया। पटियाला जिले के नारनौल से धार्मिक मासिक पत्रिका *'तज़किरत-उल-कलाम'* का प्रकाशन सन 1898 में किया गया था। इसके प्रकाशक एवं सम्पादक मौलवी फ़तह मोहम्मद खाँ थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। पृष्ठ सँख्या तीस थी।

भरतपुर से साप्ताहिक *'अख़बार भरतपुर'* सन 1898 में प्रकाशित हुआ। छह साल तक प्रकाशित होने के बाद पत्र बंद हो गया। सम्पादक सैयद अब्दुल्ला रिज़वी थे। सियालकोट से 1898 में पाक्षिक पत्र *'अनवार-उल-इस्लाम'* निकला। मुंशी करीम बख़्श प्रकाशक तथा सम्पादक थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। मासिक पत्रिका *'अलनाज़िर'* का प्रकाशन सन 1898 में लखनऊ से किया गया था। इसके सम्पादक ज़फ़र-उल-मुल्क अलवी थे। पृष्ठ सँख्या 80 थी। प्रकाशक इस्हाक़ अलवी थे। वार्षिक शुल्क चार रुपये था।

सन 1898 में किशोरीलाल गोस्वामी ने *'उपन्यास'* पत्रिका निकाल कर उपन्यासों की लोकप्रियता तथा उन्नयन की पहल की। मासिक *'दबदबा-ए-आसिफ़ी'* हैदराबाद से सन 1898 में निकला। इसके प्रकाशक महाराजा सर किशनप्रसाद तथा सम्पादक रतननाथ 'सरशार' थे। इस मासिक पत्रिका में साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक लेख प्रकाशित किए जाते थे। वी. बसु एंड कम्पनी कोलकाता ने सितम्बर 1898 से अँगरेजी में मासिक पत्रिका *'इलस्ट्रेटेड इण्डियन न्यूज'* का प्रकाशन प्रारम्भ किया। लंदन के 'इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज' की तर्ज पर यह नाम रखा गया। पहले अंक में प्रकाशन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा गया- ''समाचारों के माध्यम से इंग्लैण्ड को भारत तथा भारत को इंग्लैण्ड को समझना चाहिए।''

सन 1898 में सनातन धर्म के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करने के लिए भारत धर्म महामंडल के तत्वावधान में निगमागम मंडली द्वारा *'निगमागम चंद्रिका'* का प्रकाशन किया गया था। कुछ समय चल कर पत्रिका बंद हो गई. सन 1904 में भारत धर्म महामंडल काशी ने 'निगमागम चंद्रिका' का प्रकाशन पुनः आरम्भ किया। इसके सम्पादक अमृतलाल चक्रवर्ती थे। बाद में गोविंद शास्त्री दुग्वेकर सम्पादक हुए।

'मनोरमा' (1924) में 'निगमागम चंद्रिका' का परिचय इस प्रकार मिलता है- यह पत्रिका धार्मिक, साहित्यिक, सामाजिक और ऐतिहासिक लेखों तथा कविताओं से परिपूर्ण है। एक तीन रंग का और ग्यारह सादे चित्र हैं। धार्मिक विषयों पर गवेषणापूर्वक इस पत्रिका में विविध विचार व्यक्त किए जाते हैं, जो धर्मज्ञ पुरुषों के पढ़ने योग्य हैं।'' हैदराबाद से मासिक पत्रिका *'पयाम-ए-महबूब'* सन 1898 में प्रकाशित हुई। मौलवी गुलाम हुसैन इसके प्रकाशक तथा सम्पादक थे। मौलवी गुलाम हुसैन 'दादा' के स्वामित्व एवं सम्पादकत्व में सन 1898 में हैदराबाद से *'शम्स-उल-कलाम'* का प्रकाशन हुआ। इसी के साथ *'मेडिकल जर्नल'* नामक पत्रिका नवाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहम्मद हैदर खाँ 'दिल' ने प्रकाशित की। सन 1898 में *'चंपावती'* व *'गुलबर्गा समाचार'* पत्र प्रकाशित हुए।

सन 1898 में अहमदाबाद से भगुभाई कारभारी ने साप्ताहिक *'प्रजाबन्धु'* का प्रकाशन प्रारम्भ किया। उन्होंने यह पत्र ठकोरीलाल पी. ठाकुर को सौंप दिया। ठकोरीलाल ने अपने भाई बलवंत राय की सहायता से इसका प्रकाशन इतने अच्छे ढंग से किया कि इसकी गणना उच्च श्रेणी के पत्रों में होने लगी। प्रारम्भ में तो उन्होंने शिक्षा को अपना ध्येय बनाया, किन्तु बाद में देश की समस्याओं पर भी सामग्री प्रकाशित की जाने लगी।

1899

मासिक *'दामन-ए-गुलचीं'* का प्रकाशन रामपुर से जनवरी 1899 में किया गया था। पृष्ठ सँख्या 32 थी। प्रसिद्ध उर्दू शायर अमीर अहमद 'अमीर' मीनाई की देखरेख में निकलता था। सम्पादक मुंशी लतीफ़ अहमद 'अख़्तर' लखनवी थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था।

अंजुमन तालीमी के तत्वावधान में जयपुर से 20 जनवरी 1899 को मासिक *'अल मालूमात'* का प्रकाशन किया गया था। इसके सम्पादक मौलवी विलायत अहमद थे। 'मुफ़ीद-ए-आम' प्रेस आगरा में छपता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। इस मासिक का प्रकाशन ज्ञानवर्धन के लिए किया गया था। तीन-चार साल तक ही इसका प्रकाशन हो सका।

अदीब

आगरा जिले के फ़िरोज़ाबाद से साहित्यिक मासिक पत्रिका *'अदीब'* का प्रकाशन जनवरी 1899 में हुआ था। वार्षिक शुल्क डाक खर्च सहित चार रुपये छह आना था। सैयद अकबर अली अकबराबादी इसके सम्पादक थे। पृष्ठ सँख्या 50 रहती थी। इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य अच्छे साहित्य के प्रति लोगों की रुचि जागृत करना, दार्शनिकों तथा भौतिकतावादियों द्वारा धर्म पर किए जाने वाले प्रहारों का उत्तर देना, पाठकों के लिए साहित्य, शिक्षा, कला, ऐतिहासिक घटनाओं तथा लाभप्रद जानकारी को प्रस्तुत करना तथा दर्शन, व्यवहार, नैतिकता, इतिहास, उपचार, संस्कृति, समाज, उद्योग-व्यापार आदि के सम्बन्ध में लेख एवं सामग्री उपलब्ध कराना था।

जनवरी 1899 में मुरादाबाद से साप्ताहिक पत्रिका *'शरारह'* का प्रकाशन किया गया था। यह पाक्षिक पत्रिका थी, जिसका प्रकाशन एम. फज़्ल मोहम्मद करते थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये छह आना था। पाक्षिक में समाचार, चुटकुले, इतिहास एवं भूगोल, जीवनियाँ, आश्चर्यजनक घटनाएं, शेर शायरी, इस्लाम धर्म के विषय में जानकारियाँ, व्यापार उद्योग, सैर एवं छात्रों के लिए लाभकारी लेख प्रकाशित किए जाते थे। राजनीति से परहेज किया जाता था। जालंधर से आर्य सभा के मुखपत्र *'आर्य मुसाफ़िर'* का प्रकाशन अक्टूबर 1899 में हुआ। इस मासिक पत्रिका में बहला-फुसलाकर धर्म परिवर्तन कराने के कृत्यों की भर्त्सना की जाती थी।

इटावा से साप्ताहिक *'अलबशीर'* का प्रकाशन सन 1899 में किया गया। प्रकाशक तथा सम्पादक मोहम्मद बशीरउद्दीन थे। हेमंत कुमारी देवी सन 1899 में पति की बदली हो जाने पर सिलहट चली गईं। इन्होंने बंगला में *'अन्त:पुर'* नामक एक मासिक पत्र का प्रकाशन वहाँ से किया। पत्रिका *'आनंद दयनी'* का प्रकाशन सन 1899 में नेल्लूर से हुआ। जनमंचि शेषाद्रि शर्मा इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक थे। सन 1899 में *'कन्यक परमेश्वरी'* का प्रकाशन हुआ। यह चेन्नै से प्रकाशित तेलुगु मासिक थी। प्रकाशक-सम्पादक के. सुब्बय्या थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आफ़ताब' का प्रकाशन सन 1899 में झालावाड़ से हुआ था। यह एक साहित्यिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक मासिक पत्रिका थी जिसके सम्पादक-प्रकाशक मोहम्मद हुसैन रिज़वी थे। सहायक सम्पादक पुरुषोत्तमलाल शर्मा थे। इस पत्रिका में साहित्य, संस्कृति, चरित्र, इतिहास, समाज-सुधार एवं आर्थिक विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते थे। यह मासिक पत्रिका सन 1906 तक प्रतिमाह प्रकाशित होती रही।

तेलुगु की साप्ताहिक पत्रिका *'कलानिधि वृत्तांतम्'* सन 1899 में गुंटूर से प्रकाशित हुई। सन 1899 में अमृतसर से पंजाबी भाषा का अख़बार *'खालसा समाचार'* निकला। ब्रह्मपुर से पं. गदाधर विद्याभूषण ने *'गंजाम उड़िया हितबाहिनी'* का प्रकाशन सन 1899 में किया। इसी वर्ष मासिक *'जल्वा-ए-महबूब'* को हैदराबाद से प्रकाशित किया गया। प्रकाशक एवं सम्पादक गुलाम हमदानी 'गोहर' थे। वार्षिक शुल्क छह रुपये था। यह बाद में साप्ताहिक हो गया। सन 1903 में प्रकाशित 'तज्क-ए-महबूबिया' के सम्पादक ने इसे दैनिक पत्र का रूप देने की सूचना दी थी।

'श्रीकान्यकुब्ज हितकारी' के बारे में 'सरस्वती' (1915) में विवरण मिलता है- ''कान्यकुब्जों का यह जातीय मासिक पत्र है। 16 वर्ष से बराबर कानपुर से निकल रहा है। कुछ समय से इसका रूप रङ्ग बिलकुल ही बदल गया है। इसके आवरण पृष्ठ पर व्यासजी का सुन्दर चित्र छपने लगा है। इसकी छपाई भी अच्छी होती है। इसमें जातीय विषयों के सिवा अन्य उपयोगी विषयों पर भी पढ़ने लायक लेख और कविताएँ निकलती हैं। नए प्रबन्ध और नए सम्पादक की नियुक्ति से इस पत्र के कलेवर में जान सी आ गई है। इसके हर अङ्क में 32 पृष्ठ रहते हैं। इसका वार्षिक मूल्य केवल एक रुपया है। अब यह कान्यकुब्जों ही के नहीं, सभी हिन्दी प्रेमियों के लेने और पढ़ने लायक हो गया है। कान्यकुब्ज- सभा, कानपुर को लिखने से यह मिलता है।''

सन 1899 में विज्ञान पत्रिका *'ज्ञानपदि'* का प्रकाशन हुआ। चेन्नै से प्रकाशित यह तेलुगु भाषा की मासिक पत्रिका थी। जैन प्रांतिक सभा मुम्बई ने सन 1899 में साप्ताहिक *'जैन मित्र'* का प्रकाशन शुरू किया। जैन धर्म सम्बन्धी पठनीय सामग्री इसमें रहती थी। मूलचंद किशनदास कापड़िया सम्पादक थे। सन 1901 में मुख्य सम्पादक गोपालदास बरैया और सह सम्पादक नाथूराम प्रेमी हुए। सन 1903 में बरैया ग्वालियर चले गए, लेकिन प्रेमी सन 1907 के अंत तक इसे निकालते रहे। बाद में आर्थिक कारणों से इसे पाक्षिक कर दिया। वर्ष सन 1927 में 'जैन मित्र' सूरत से साप्ताहिक पत्र के रूप में निकलने लगा। सन 1909 में ब्रह्मचारीजी इसके सम्पादक नियुक्त हुए। सन 1929 तक आपने इसका सम्पादन बड़ी योग्यता से किया। आपके सम्पादन काल में समाज-सुधार, ऐतिहासिक खोज, जैन धर्म प्रचार, सामाजिक संगठन, शिक्षा प्रचार आदि उपयोगी विषयों पर उच्चकोटि के लेख और मनन योग्य सम्पादकीय लेख वक्तव्य निकला करते थे। अँगरेजी पत्रों से इतिहास, कला, आदि विषयों की अच्छी सामग्री 'जैन मित्र' के पाठकों को प्रति सप्ताह देते थे। 'मित्र' ने समाज में जाग्रति ही नहीं, बल्कि उद्भट लेखकों और सुयोग्य सम्पादकों को भी उभारा।'' सन 1899 में *'न्याय बोधिनी'* का प्रकाशन ओंगोल से हुआ। कोपल्ले वेंकटरमण राव द्वारा सम्पादित प्रकाशित यह तेलुगु मासिक पत्रिका थी। सन 1899 में साहित्यिक पत्रिका *'बाल सरस्वती'* का प्रकाशन से हुआ। एस. कृष्णा राव इस तेलुगु मासिक पत्रिका के सम्पादक थे। *'वण्बल्ली'* साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन सन 1899 में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। कोमंडुरु वेंकट रामानुज शर्मा ने नेल्लूर से इस तेलुगु मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। सामाजिक पत्रिका *'सुजन रंजनी'* का प्रकाशन सन 1899 में काकिनाडा से हुआ। इस तेलुगु साप्ताहिक के सम्पादक-प्रकाशक कोम्मूरि लक्ष्मी नरसिंहराव थे।

गुजराती पत्र *'नवरस'* का प्रकाशन सन 1899 में हुआ। इसके प्रकाशक-सम्पादक बहमनजी नवरोजी काबराजी थे। यह साहित्यिक मासिक पत्रिका थी। इसमें धारावाहिक उपन्यास मुख्य रूप से छपते थे। इसमें अँगरेजी और हिन्दी में भी सामग्री दी जाती थी। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। *'पंजा-ए-निगारीन'* दिल्ली से अगस्त 1899 में निकला था। सम्पादक आग़ा मनाज़िर अली बेग थे। वार्षिक शुल्क ढाई रुपये था। इस मासिक पत्र में आठ पृष्ठ में ग़ज़लें तथा शेष आठ पृष्ठों में उपन्यास की एक क़िश्त छपती थी। हैदराबाद से मासिक *'महबूब-उल-कलाम'* का प्रकाशन सन 1899 में किया गया था। इसके सम्पादक हाफ़िज़ जलील हसन 'जलील' मानिकपुरी थे। नासिक से सन 1899 में *'नैरंगे जहाँ'* का प्रकाशन हुआ। आगरा से कुँवर हनुमन्त सिंह ने सन 1899 में *'राजपूत'* निकाला। 'राजपूत' के विषय में हिन्दी कोविद रत्नमाला के दूसरे भाग में लिखा गया-"कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी स्वतंत्र जीविका निर्वाह करने के विचार से आगरे चले गये और वहाँ इन्होंने राजपूत एंग्लो ओरिएंटल प्रेस खोला। क्षत्रिय महासभा का मुख पत्र पाक्षिक 'राजपूत' इसी प्रेस से निकलता था।" ठाकुर सूर्य कुमार वर्मा ने भी कुछ समय तक 'राजपूत' का सम्पादन किया।

काव्य सुधानिधि

एक जुलाई 1899 को ज्योतिष कार्यालय काशी से रामभरोसे शर्मा चतुर्वेदी के सम्पादन में मासिक पत्रिका *'काव्य सुधानिधि'* का प्रकाशन हुआ। इसका वार्षिक मूल्य दो रुपये था। 'काव्य सुधानिधि' के ग्राहकों को सवा रुपये कीमत का मासिक वर्षफल बिना मूल्य दिया जाता था। इस पत्रिका में समस्यापूर्ति का विशेष रूप से प्रकाशन होता था। वैचारिक आलेखों का प्रकाशन भी किया जाता था। पत्रिका का आकार 21 गुणित 12 से.मी. था। पत्रिका में खबरें भी दी जाती थीं। उन्हें विभिन्न वृत्तांत स्तम्भ के अन्तर्गत एक के बाद एक, बीच में छोटी सी लकीर खींचकर छाप दिया जाता था।

सत्वसाधनी

तेलुगु पत्रिका *'सत्वसाधनी'* सन 1899 में प्रकाशित हुई। ओ.वी. दोरासमैया इसके प्रकाशक और सम्पादक थे। सन 1905 तक प्रकाशित हुई 'सत्वसाधनी' में दर्शन पर सारगर्भित आलेख प्रकाशित होते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का भाषिक संस्कार

1900

सरस्वती

'सरस्वती' ने हिन्दी भाषा को संस्कारित किया तथा साहित्यकारों और पत्रकारों की पीढ़ियां तैयार कीं। 'सरस्वती' के जन्म की कहानी श्यामसुंदर दास ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार लिखी है- ''सन 1899 में इण्डियन प्रेस के स्वामी बाबू चिन्तामणि घोष ने नागरी प्रचारिणी सभा से प्रस्ताव किया कि सभा एक सचित्र मासिक पत्रिका के सम्पादन का भार ले और उसे प्रकाशित करे। सभा ने इसका अनुमोदन किया- पर सम्पादन का भार लेने में अपनी असमर्थता प्रकट की। अंत में यह निश्चय हुआ कि सभा एक सम्पादक मण्डल बना दे। सभा ने इसे स्वीकार किया और बाबू राधाकृष्णदास, बाबू कार्तिकप्रसाद, बाबू जगन्नाथदास, किशोरीलाल गोस्वामी तथा मुझे इस काम के लिए चुना।'' चिन्तामणि बाबू ने इस सम्पादक मण्डल को स्वीकार कर लिया।

पत्रिका की नीति और उद्देश्य के सम्बन्ध में प्रकाशक ने यह नीति वक्तव्य प्रकाशित किया- ''परम कारुणिक सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की अशेष अनुकम्पा ही से ऐसा अनुपम अवसर आकर प्राप्त हुआ है कि आज हम लोग हिन्दी भाषा के रसिक जनों की सेवा में नए उत्साह से उत्साहित हो एक नवीन उपहार लेकर उपस्थित हुए हैं जिसका नाम 'सरस्वती' है। इसके नवजीवन धारण करने का केवल यही मुख्य उद्देश्य है कि हिन्दी रसिकों के मनोरंजन के साथ ही साथ भाषा के सरस्वती-भण्डार की अंगपुष्टि, वृद्धि और यथार्थ पूर्ति हो तथा भाषा सुलेखकों की ललित लेखनी उत्साहित और उत्तेजित होकर विविध भावभरित ग्रंथराजि को प्रसव करे।''

यह वह समय था जब हिन्दी में एक सर्वांगपूर्ण सचित्र मासिक पत्र की आवश्यकता का अनुभव तो किया जा रहा था, किन्तु इसके लिए साधन नहीं जुट रहे थे। एक ऐसे हिन्दी मासिक पत्र की आवश्यकता थी जो सुसम्पादित हो और सर्वांगीण हो। 'सरस्वती' का प्रथम अंक जनवरी, 1900 में प्रकाशित हुआ। इसके मुखपृष्ठ पर 'नागरी प्रचारिणी सभा के अनुमोदन से प्रतिष्ठित' अंकित रहता था। प्रवेशांक के मुखपृष्ठ पर पाँच चित्र थे। सबसे ऊपर वीणावादिनी सरस्वती का चित्र था, दाहिनी ओर ऊपर सूरदास और बाँई ओर गोस्वामी तुलसीदास के प्रार्थना मुद्रा में चित्र थे और नीचे राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद और बाबू भारतेंदु हरिश्चन्द्र के चित्र थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

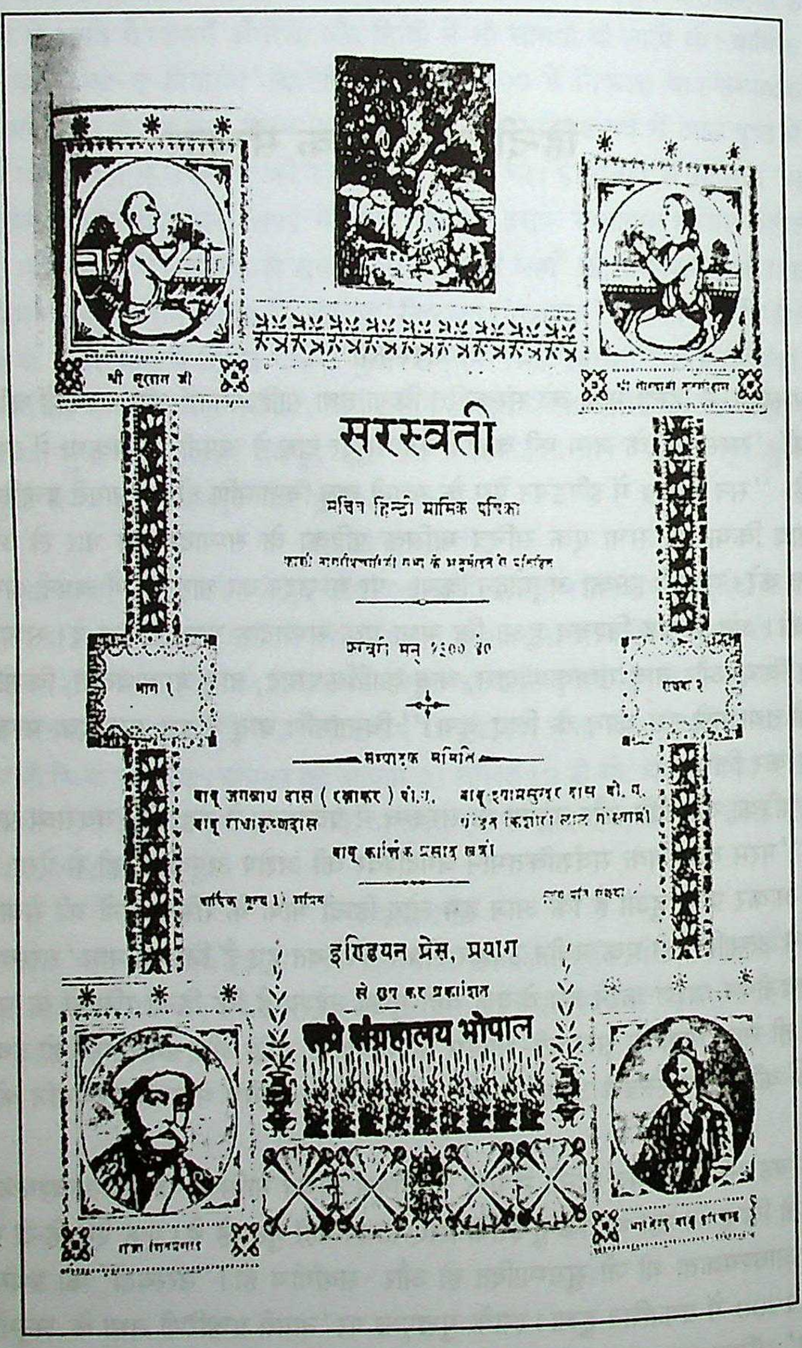

श्री सूरदास जी

सरस्वती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के अनुमोदन से प्रतिष्ठित

जनवरी सन् १९०० ई०

भाग १ — संख्या १

सम्पादक समिति

बाबू जगन्नाथ दास (रत्नाकर) बी.ए. — बाबू श्यामसुन्दर दास बी.ए.

बाबू राधाकृष्णदास — पंडित किशोरी लाल गोस्वामी

बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री

वार्षिक मूल्य ३) अग्रिम

इण्डियन प्रेस, प्रयाग

से छप कर प्रकाशित

सरस्वती, प्रयाग, जनवरी 1900

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम वर्ष समाप्त होते-होते यह स्पष्ट हो गया कि सम्पादक मण्डल से काम नहीं चलेगा। जनवरी, 1901 से बाबू श्यामसुन्दर दास 'सरस्वती' के सम्पादक हो गए। वैसे भी वे ही लेख भेजने और प्रूफ देखने का दायित्व निभा रहे थे। लेकिन 1902 के अंत में अर्थात 'सरस्वती' का तीसरा वर्ष पूरा होते होते बाबू श्यामसुन्दर दास ने आगे सम्पादन कर पाने में असमर्थता व्यक्त कर दी। महावीरप्रसाद द्विवेदी का नाम इस समय तक हिन्दी जगत में सुपरिचित हो गया था। 'सरस्वती' से उनका लेखकीय सम्बन्ध प्रारम्भ से ही था। चिन्तामणि घोष उनकी लेखनी और प्रतिभा से प्रभावित थे। अत: उन्होंने 'सरस्वती' के सम्पादन के लिए द्विवेदीजी को आमंत्रित किया। द्विवेदीजी उस समय झांसी में टेलिग्राफ इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने 'सरस्वती' के सम्पादन का दायित्व स्वीकार कर लिया। जनवरी 1903 में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' के सम्पादक बने। वस्तुत: यहीं से 'सरस्वती' का, हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का और हिन्दी भाषा के नव संस्कार का स्वर्णयुग आरम्भ होता है। उन्होंने 'सरस्वती' को हिन्दी की प्रतिनिधि राष्ट्रीय मासिक पत्रिका बना दिया था। द्विवेदीजी के सम्पादन की विशिष्टता राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की इस टिप्पणी से रेखांकित होती है-"ऐसा लगता है जैसे आदि से अंत तक उसे एक ही व्यक्ति लिखता हो।"

'सरस्वती' का सम्पादक नियुक्त होने पर आचार्य द्विवेदी ने अपने लिए चार आदर्श निर्धारित किए- (एक)वक्त की पाबंदी (दो)मालिकों का विश्वासपात्र बनने की चेष्टा, (तीन)अपने हानि-लाभ की परवाह न करके पाठकों के हानि लाभ का सदा ख्याल रखना, (चार)न्यायपथ से कभी विचलित न होना।

सन 1903 से 1905 अर्थात तीन वर्ष तक और 'सरस्वती' का नागरी प्रचारिणी सभा से अनुमोदन सम्बन्ध बना रहा। 1904 में द्विवेदीजी ने सभा की खोज सम्बन्धी रिपोर्ट की खरी आलोचना की। इससे सभा असंतुष्ट हो गई। उसने घोष बाबू को लिखा कि 'सरस्वती' से सभा का अनुमोदन हटा दिया जाए। सन 1905 में प्रकाशित सभा के 12वें वार्षिक विवरण में पृष्ठ 38 पर इस सम्बन्ध में निम्नांकित उल्लेख है- ''मासिक पत्रों में अब सबसे श्रेष्ठ 'सरस्वती' है। यद्यपि कई कारणों से अब इस पत्रिका के साथ इस सभा का कोई सम्बन्ध नहीं है, सभा को दुःख है कि सरस्वती के प्रकाशक ने उसमें अपवादपूर्ण लेखों का रोकना उचित न जानकर नागरी प्रचारिणी सभा से अपना सम्बन्ध तोड़ना उचित समझा।'' आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी 'सरस्वती' में इस सम्बन्ध में एक टिप्पणी- 'अनुमोदन का अंत' लिखी।

'सरस्वती' के रचनाकारों में श्यामसुंदर दास, कार्तिकप्रसाद खत्री, राधाकृष्ण दास, जगन्नाथदास रत्नाकर, किशोरीलाल गोस्वामी, संत निहालसिंह, पं. माधवराव सप्रे, पं. रामनरेश त्रिपाठी, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, कामताप्रसाद गुरु, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, मैथिलीशरण गुप्त, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही, गोपालशरण सिंह, राय देवीप्रसाद पूर्ण, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, राय कृष्णदास, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर' प्रभृति शीर्षस्थ साहित्यकार शामिल थे। बाद में प्रख्यात हुए हिन्दी के अनेक रचनाकारों को 'सरस्वती' ने ही आरम्भ में अवसर दिया, उनकी लेखन-प्रतिभा को सँवारा और निखारा।

'सरस्वती' की सबसे महत्वपूर्ण देन यह मानी जाती है कि उसने हिन्दी लेखन की वर्तनी को शुद्ध किया और भाषा को व्याकरण सम्मत बनाया। हिन्दी को मानक स्वरूप देने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सरस्वती' ने द्विवेदीजी के 18 वर्ष के सम्पादन काल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

द्विवेदीजी ने नवम्बर, 1905 की 'सरस्वती' में 'भाषा और व्याकरण' शीर्षक एक लेख लिखा। इसमें लेखकों की भाषा सम्बन्धी भूलें बतलाई गईं। संस्कृत साहित्य में श्रृंगार रस की प्रधानता पर भी उन्होंने चोट की और 'कालिदास की निरंकुशता' शीर्षक लेख लिखा। उनके इस तरह के आलेखों की व्यापक प्रतिक्रिया हुई और 'भारतमित्र' सहित विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में बहस चल पड़ी। एक लाभ जरूर हुआ कि द्विवेदीजी के तर्कों की काट ढूँढने के लिए साहित्य मंथन की नई लहर चल पड़ी। आलोचना-प्रत्यालोचना के इस सिलसिले ने हिन्दी को जीवन्त भाषा बनाने का वातावरण रचा। 'सरस्वती' की सम्पादकीय टिप्पणियाँ और समालोचनाएँ इतनी सटीक मानी जाती थीं कि जिस पुस्तक की प्रशंसा हो जाती थी, उसकी प्रतियाँ हाथों हाथ बिक जाती थीं।

जब बनारसीदास चतुर्वेदी ने 'विशाल भारत' में, जो रामानंद चटर्जी का पत्र था, सूरत में हिन्दू महासभा के अध्यक्ष पद से दिए गए उनके भाषण पर प्रतिकूल टिप्पणी लिख दी, तब बनारसीदास चतुर्वेदी को द्विवेदीजी ने लिखा था, ''रामानंद बाबू से तो हमने सम्पादकीय टिप्पणी लिखना सीखा है, उनके बारे में ऐसी टिप्पणी नहीं छपनी चाहिए थी।''

1909 तक 'सरस्वती' उत्कृष्ट पत्रिका के रूप में स्थापित हो गई थी। परन्तु इसके लिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को जी तोड़ परिश्रम करना पड़ा। परिणामत: वे रोगग्रस्त हो गए और उन्हें एक वर्ष का अवकाश लेना पड़ा। इस बीच देवीदत्त शुक्ल ने सरस्वती के सम्पादन का दायित्व सम्हाला।

'प्रताप' के यशस्वी सम्पादक गणेशशंकर विद्यार्थी की प्रतिभा का परिमार्जन 'सरस्वती' में हुआ। द्विवेदीजी ने उनकी प्रतिभा परखते हुए, उन्हें 'सरस्वती' के सम्पादकीय विभाग में (2 नवम्बर 1911) सम्मिलित कर लिया। इस प्रकार पत्रकार कला की दीक्षा गणेशजी ने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से ली। 'सरस्वती' में उन्होंने एक वर्ष से अधिक कार्य किया। द्विवेदीजी ने उनके बारे में लिखा है- ''जब तक मेरे पास रहे, गणेशजी ने बड़ी मुस्तैदी और बड़े परिश्रम से काम किया। रोज दो मील दूर शहर से जूही जाते और शाम को लौटते। उनकी शालीनता, सुजनता, परिश्रमशीलता और ज्ञानार्जन की सदिच्छा ने मुझे मुग्ध कर लिया। उधर वे मुझे शिक्षक या गुरु मानते थे, इधर मैं स्वयं ही कितनी बातों में उन्हें अपना गुरु समझता था। हिन्दी लिखना उन्होंने खूब सीखा। मैं चाहता था कि वह कुछ संस्कृत सीख लें। पर उनका झुकाव राजनीति की ओर अधिक था। अतएव मैंने उन पर दबाव नहीं डाला। उन्हें पढ़ने का बड़ा शौक था। जूही आते-जाते राह में कभी-कभी वह अखबार या पुस्तक पढ़ते चले जाते थे।''

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी एक तरह से 'सरस्वती' के पर्याय बन गए थे। सन 1902 से 1920 तक द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' का सम्पादन किया। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में- ''किसी भाषा के बारे में किसी एक व्यक्ति (महावीरप्रसाद द्विवेदी) और एक पत्रिका (सरस्वती) ने उतना काम नहीं किया, जितना हिन्दी के बारे में इन दोनों ने किया।''

प्रारम्भ में महावीरप्रसाद द्विवेदी का वेतन 21 रुपये तय हुआ था जो बाद में बढ़कर 50 रुपये हो गया। कुछ समय बाद बाबू चिंतामणि घोष ने अपनी वसीयत में यह प्रावधान किया कि सेवानिवृत्ति के पश्चात भी द्विवेदीजी को जीवन पर्यन्त 50 रुपये मासिक पेन्शन इण्डियन प्रेस से दी जाती रहेगी। चिंतामणि बाबू अहिंदी भाषी थे किन्तु हिंदी भाषा के प्रति उनकी निष्ठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श बनी। हिन्दी की पहली आधुनिक कहानी मानी जाने वाली किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमती' सबसे पहले 'सरस्वती' में ही छपी थी। वृंदावनलाल वर्मा की पहली कहानी भी सन 1907 में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई।

महावीरप्रसाद द्विवेदी उस समय के विद्वानों से आग्रहपूर्वक लिखवाते भी थे। एक बार जब महावीरप्रसाद द्विवेदी उस समय के प्रख्यात पत्रकार-संत निहालसिंह से मिलने आनंद भवन गए तो उनसे 'सरस्वती' के लिए लिखने को कहा। जब संत निहाल सिंह ने कहा कि वे तो अँगरेजी में लिखते हैं, तब उन्होंने उत्तर दिया कि कोई बात नहीं हम उसका अनुवाद करा लेंगे। तब से संत निहाल सिंह के लेख 'सरस्वती' में छपने लगे।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 31 दिसम्बर 1920 को दौलतपुर, रायबरेली से अपना अंतिम सम्पादकीय- 'सम्पादक की बिदाई' लिखकर भेजा जो जनवरी 1921 की 'सरस्वती' में छपा। उसके कुछ अंश यहाँ उद्धृत हैं- ''पुस्तक रचना के सम्बन्ध से तो इण्डियन प्रेस से मेरा सम्पर्क बहुत पहले ही हो चुका था- बाबू चिन्तामणि घोष और उनके उत्तराधिकारियों ने मेरे साथ बड़ी उदारता का व्यवहार किया, मेरे लिए अनेक सुखकर सुभीते कर दिए, किसी और काम के योग्य न रह जाने पर घर बैठे, मेरे लिए 'सरस्वती' का सम्पादन कार्य करने की अनुकूल योजना कर दी। उनके अनुग्रह का यह हाल है कि 'सरस्वती' का काम छोड़ देने पर भी वे मेरे सुख-साधन की चिन्ता से अपने चित्त को रिक्त रखना नहीं चाहते। उनके विषय में मेरे हृदय के कृतज्ञता सूचक भाव- ''हृद्येव जीर्णतां यान्तु।''

''सरस्वती' को निकलते पूरे 21 वर्ष हो चुके। जिस समय उसका आविर्भाव हुआ था उस समय हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य की क्या दशा थी यह बात लोगों से छिपी नहीं है, जिन्होंने उस समय को भी देखा है और जो इस समय को भी देख रहे हैं।

''सरस्वती' के आकार-प्रकार, उसके ढंग और लेखन शैली आदि को लोगों ने बहुत पसन्द किया- अच्छी मासिक पुस्तक के सम्पादक में जो गुण होने चाहिए उनका शतांश भी मुझ में नहीं। अपनी अल्पज्ञता और असामर्थ्य का यथेष्ट ज्ञान होने पर भी मैंने 'सरस्वती' के सम्पादन का भार केवल यह समझकर अपने ऊपर लिया कि- ''नभः पतन्त्यात्मसमं पतत्रिणः''

''मैं सेवा का अर्थ अच्छी तरह जानता हूँ। अतएव मैं कह सकता हूँ कि मैंने सेवाभाव से प्रेरित होकर 'सरस्वती' का सम्पादन नहीं किया। हिन्दी की सेवा मैंने तो नहीं, पर इण्डियन प्रेस के अध्यक्ष ने अवश्य की है। जन्मभूमि उनकी बंगदेश है और मातृभाषा उनकी बंगला। 'सरस्वती' से उन्हें प्रत्यक्ष कुछ भी लाभ नहीं हुआ, परोक्ष लाभ चाहे जो कुछ हुआ हो। यदि उनमें उदारता की मात्रा इतनी अधिक न होती तो 'सरस्वती' का विसर्जन कभी का हो गया होता। आज से लेख, समालोचनार्थ पुस्तकें, बदले के पत्र और 'सरस्वती' के सम्पादन से सम्बन्ध रखने वाली चिट्ठियां आदि 'सरस्वती' सम्पादक, इण्डियन प्रेस लिमिटेड कटरा, इलाहाबाद के पते से ही भेजी जानी चाहिए. अच्छा तो अब मैं विदा होता हूँ-

''अतः परं व्याधिशतक्षतस्य मे
मनो मनोहारिणि जान्हवीतटे''

महावीर प्रसाद द्विवेदी''

दौलतपुर, रायबरेली
31 दिसम्बर 1920

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदीजी के अवकाश ग्रहण करने के बाद 'सरस्वती' के सम्पादन का उत्तराधिकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (1921) को मिला और देवीदत्त शुक्ल उनके सहायक नियुक्त किए गए। 'सरस्वती' के सम्पादक के रूप में बख्शीजी ने साहित्य की सभी विधाओं को अपने प्रखर व्यक्तित्व से प्रभावित किया। उन्होंने बड़ी मेहनत और लगन से द्विवेदीजी की परम्परा का निर्वाह किया और उनके द्वारा स्थापित मर्यादा को आगे बढ़ाया।

'सरस्वती' में प्राप्त लेखों को बख्शीजी, द्विवेदीजी की तरह इतना अधिक संशोधित और परिवर्तित करते थे कि वह नई रचना बन जाती थी। जो रचना उन्हें पसंद नहीं आती थी, उसे वे कभी नहीं छापते थे। साहित्य, भाषा और पत्रकारिता के सम्बन्ध में उनकी अपनी कुछ मान्यताएँ थीं और उन्हीं के अनुसार वे कार्य करते थे। बख्शीजी को आत्मपरक निबन्ध लेखन का सम्राट कहा जाता है। समालोचक के रूप में भी वे प्रतिष्ठित हुए।

1925 में जब बख्शीजी ने 'सरस्वती' छोड़ी तब फिर सम्पादक की तलाश हुई। कुल 125 अर्जियाँ आईं। घोष बाबू ने वे सब द्विवेदीजी के पास भेज दीं। उन्होंने सारी अर्जियाँ वापस करते हुए सुझाव दिया कि यह जवाबदारी देवीदत्त शुक्ल को सौंप दी जाए। इस प्रकार शुक्ल (1926) 'सरस्वती' के सम्पादक नियुक्त हुए। देवीदत्त शुक्ल ने हिन्दी पत्रिकाओं के विशेषांक निकालने की परम्परा आरम्भ की। इसी समय 'सरस्वती' के स्वरूप में भी कुछ परिवर्तन किया गया। शुक्ल भी द्विवेदीजी की तरह लेखों में संशोधन करते थे। उनके द्वारा किए गए संशोधन से लेखक का मत प्रभावित नहीं होता था, अपितु उसकी भाषा और शैली में अद्भुत निखार आ जाता था। शुक्ल ने 20 वर्ष तक 'सरस्वती' का सम्पादन किया। (उन्हें भी 50 रुपये मासिक पेन्शन दी गई थी।) सन 1927-28 में बख्शीजी ने एक बार फिर 'सरस्वती' का सम्पादन दायित्व सम्भाला। पश्चात सन 1929 से सन 1946 तक देवीदत्त शुक्ल सम्पादक रहे। सन 1930 में गांधीजी ने हिन्दी के स्थान पर हिन्दुस्तानी के समर्थन की बात कही, तब सर्वप्रथम शुक्लजी ने गांधीजी के इस मंतव्य का विरोध किया और 'सरस्वती' में इस पर सम्पादकीय लिखा।

देवीदत्त शुक्ल के सहायक के रूप में ठाकुर श्रीनाथ सिंह ने 'सरस्वती' के सम्पादन में उल्लेखनीय योगदान किया। लेकिन वे एक वर्ष में ही 'सरस्वती' छोड़ गए। उनके जाने के बाद उमेशचंद्र मिश्र संयुक्त सम्पादक बनाए गए, जो सन 1947 में शुक्लजी के स्थान पर 'सरस्वती' के सम्पादक बने। सन 1952 में जब उनका स्वास्थ्य भी जवाब दे गया और वे गोलोकवासी हुए, तब एक बार फिर पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (1952) को 'सरस्वती' के सम्पादन का दायित्व ग्रहण करना पड़ा। देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' संयुक्त सम्पादक नियुक्त हुए। बख्शीजी खैरागढ़ में रहकर 'सरस्वती' के लिए सम्पादकीय भेजा करते थे और इलाहाबाद में मस्तजी सम्पादन के शेष दायित्व निभाया करते थे। नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की 'सरस्वती' की जो परम्परा द्विवेदी युग से चली आ रही थी तथा जिसका निर्वहन अभी तक के सम्पादक करते रहे, उसी नीति पर मस्तजी भी चले और नए रचनाकारों को बराबर 'सरस्वती' में स्थान देते रहे। इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा था- ''किसी राजपथ पर गड़े हुए मील के पत्थरों की गिनती करने में वह कौशल नहीं, वह विशेषता नहीं और वह मौलिकता नहीं जो नवनिर्मित राजपथ पर मील के नवीन पत्थर स्थापित करने में वांछनीय है।'' जून 1955 में जब परिस्थितियों की विषमता के कारण 'सरस्वती' से बख्शीजी ने पृथक्करण का निश्चय कर लिया, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तजी भी उनके साथ ही 'सरस्वती' से विदा हो गए।

बख्शीजी के उत्तराधिकारी के रूप में श्रीनारायण चतुर्वेदी ने सन 1955 से 1975 तक बीस वर्षों में हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'सरस्वती' की काया पलट की। श्रीनारायण चतुर्वेदी ने सन 1960 में 'सरस्वती' का हीरक जयन्ती विशेषांक एक वृहद ग्रंथ के रूप में निकाला। यह ग्रंथ एक प्रकार से हिन्दी भाषा और साहित्य, विशेषकर खड़ी बोली के विकासक्रम का प्रामाणिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है। इस ग्रंथ में 1900 से 1959 के बीच के साठ वर्षों में 'सरस्वती' में प्रकाशित 108 कवियों, 60 कहानीकारों और 100 अन्य लेखकों की प्रतिनिधि रचनाओं का समावेश किया गया है। हीरक जयन्ती ग्रंथ में प्रकाशित रचनाओं का पुन: सम्पादन नहीं करते हुए उन्हें उसी स्वरूप में छापा गया है, जिस रूप में वे मूलत: प्रकाशित हुई थीं। इससे समकालीन भाषागत प्रयोग भी यथावत बने रहे। शब्दों और मुहावरों के मूल प्रयोगों को ज्यों का त्यों रहने दिया गया है. तथापि, हीरक जयंती ग्रंथ में दो कमियों का रह जाना, तब भी 'सरस्वती' के सम्पादक को अखरा था और आज भी शोधकर्ताओं और हिन्दी साहित्य के अध्येताओं के लिए बहुत बड़ी कमी रह गई है। ये कमियां हैं (1)साठ वर्ष में 'सरस्वती' में जो लेख, कहानियाँ और कविताएँ छपी हैं, उनकी विवरणिका प्रकाशित करना। यह सूची बनी भी परन्तु 500 पृष्ठों में उसका विस्तार होने पर, साधनों की कमी से यह महत्वपूर्ण सूची प्रकाशित नहीं हो सकी। (2)'सरस्वती' में जो सम्पादकीय टिप्पणियाँ निकलीं उनका एक खण्ड अलग तैयार किया जाना था। हिंदी भाषा और हिन्दी आंदोलन संबन्धी टिप्पणियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि उनसे हिन्दी आन्दोलन का और हिन्दी भाषा और साहित्य की तत्कालीन समस्याओं का इतिहास पता चलता है। ये दोनों कार्य तब जो टले, तो अभी तक सम्पन्न नहीं हो सके हैं, जबकि उनकी उपादेयता और प्रासंगिकता आज भी है और सदैव रहेगी।

'सरस्वती' ने अपने सर्वांगपूर्ण स्वरूप, मुद्रण, भाषा, व्याकरण, विषयों की विविधता, सम्पादन, समालोचना और सामग्री चयन के जो मानदण्ड स्थापित किए थे, वह वर्षों तक पत्रकारिता का पथ प्रदर्शन करते रहे। 'सरस्वती' की तर्ज पर देश के विभिन्न प्रांतों से कई पत्रिकाएं निकलीं। यह अलग बात है कि कोई पत्रिका फिर उस ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकी। तथापि इसे हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि 'सरस्वती' शतायु नहीं हो सकी। इसके लिए कोई और नहीं, हिन्दी भाषी ही जवाबदेह हैं- साहित्य और संस्कृति कदाचित् जिनके लिए जीवन के अपरिहार्य तत्व नहीं हैं।

छत्तीसगढ़ मित्र

मासिक पत्रिका '*छत्तीसगढ़ मित्र*' का प्रकाशन पेण्ड्रा रोड से जनवरी, 1900 में आरम्भ हुआ। 'छत्तीसगढ़ मित्र' के सम्पादक रामराव चिंचोलकर और माधवराव सप्रे थे। इस पत्रिका का मुद्रण कय्यूमी प्रेस रायपुर से होता था। प्रकाशक वामन बलीराम लाखे थे। 32 पृष्ठ की यह पत्रिका 20 गुणित 15 से. मी. आकार की थी। इसका वार्षिक शुल्क डेढ़ रुपया था।

माधवराव सप्रे 'छत्तीसगढ़ मित्र' के सम्पादक के साथ-साथ उसके व्यवस्थापक भी थे। 'मित्र' के प्रथम चार और अंतिम चार पृष्ठ रंगीन कागज पर छपा करते थे। रंगीन पृष्ठों में विषयानुक्रम, नियमावली, समाचार, घोषणाएँ, विज्ञापन, प्रेरित पत्र, नोटिस आदि प्रकाशित होते थे।

प्रवेशांक में 'छत्तीसगढ़ मित्र' के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए 'आत्म परिचय' शीर्षक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्रीपरमात्मनेनमः ॥

वर्ष २रा. छत्तीसगढमित्र. अंक ३रा.

॥ श्लोक ॥

पापान्निवारयति योजयते हिताय । गुह्यानि गूहति गुणान् प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले । सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥१

श्रीमती रानी भवानी.

(लेखक---" छत्तीसगढ़ निवासी एक मित्र "----)

इतिहास के पढ़नेवाले जानते हैं कि बंगाले में मुसलमानों का राज्य कई दिनों तक रहा। उस समय वहां अनेक एतद्देशीय राजा और ज़मीन्दार भी थे जो अपनी २ रियासत के स्वतंत्र मालिक थे। वे सब बड़े शूर और बलवान थे। उनके पास फ़ौज भी बहुतसी रहा करती थी। वे नाम मात्रको दिल्ली के बादशाह को अपना सार्वभौम राजा मानते थे और इसी लिये वे उसके नव्वाब को कर दिया करते थे। बादशाह ने बंगाल प्रान्त के लिये जो एक नव्वाब भेजा था वह मुर्शिदाबाद में रहता था। अप्रत्यक्ष रीति से वही वहां का मालिक था। उसी के बल और चतुराई पर उस प्रदेश में बादशाह की अमलदारी क़ायम रहने का सम्भव था। परंतु उसको भी सदैव इस बातका डर बना रहता था कि न जानें किस दिन ये राजा और ज़मीदार बिलकुल स्वतंत्र हो जांयगे॥

अठारहवीं सदी के अन्तिम भाग में मुसलमानों की रति घटने लगी; यहांतक कि अन्तमें दिल्ली के बादशाहों का अधिकार केवल उनके शाही तख्त और महल के सिवाय अन्यत्र कहीं भी न रह गया। जो उनके सरदार और नव्वाब थे वे सब खुद मुख्त्यार हो गये और जिन्हें जहां बना वहीं अपना २ अधिकार जमाने लगे। बंगाले का नव्वाब भी इसी तरह स्वतंत्र हो गया। परंतु थोड़ ही दिनों में उसके प्रांतके छोटे २ राजाओं और

छत्तीसगढ़ मित्र, पेंड्रारोड, जनवरी 1900

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अन्तर्गत सम्पादक ने लिखा- ''सम्प्रति छत्तीसगढ़ विभाग को छोड़ ऐसा एक भी प्रांत नहीं है जहाँ दैनिक, साप्ताहिक, मासिक या त्रैमासिक पत्र प्रकाशित न होता हो। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि सुसंपादित पत्रों के द्वारा हिन्दी भाषा की उन्नति हुई है। अतएव यहाँ भी 'छत्तीसगढ़ मित्र' हिन्दी भाषा की उन्नति करने में विशेष प्रकार से ध्यान दे। आजकल भाषा में बहुत-सा कूड़ा-कर्कट जमा हो रहा है, वह न होने पावे इसलिए प्रकाशित ग्रंथों पर प्रसिद्ध मार्मिक विद्वानों के द्वारा समालोचना भी कहे।'' छत्तीसगढ़ के जमींदारों और राजाओं के बारे में सम्पादक ने कहा- ''परन्तु अत्यन्त शोक और कष्ट से कहना पड़ता है कि मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ विभाग में राजा-महाराजा, श्रीमान तथा जमींदारों की इतनी विपुलता होने पर भी उनमें कोई भी विद्योत्तेजन की ओर यथावश्यक ध्यान नहीं देते। वे इस बात पर विचार नहीं करते कि विद्या की उन्नति करने में जब तक वे उदासीनता और परांङ्मुख बने रहेंगे तब तक समाज की प्रगति नहीं हो सकती।'' इससे स्पष्ट है कि 'छत्तीसगढ़ मित्र' शिक्षा के माध्यम से जागृति फैलाने के लिए और ग्रंथों की समालोचना कर साहित्य के स्तर को उठाने के लिए विशेष उत्सुक था।

सप्रेजी ने 'छत्तीसगढ़ मित्र' के नाम से ही पत्र क्यों निकाला? सप्रेजी कलकत्ता से प्रकाशित 'भारतमित्र' से काफी प्रभावित थे। 'भारतमित्र' एक सुसम्पादित पत्र था। देशवासियों की सच्ची भावनाओं को प्रतिबिम्बित करता था। उस समय छत्तीसगढ़ क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ था। शिक्षा का प्रसार कुछ नगरों तक ही सीमित था। गांवों में स्कूल तक नहीं थे। न कृषि की उन्नति हो रही थी। न उद्योग धंधे ही थे। अत: सप्रेजी के मन में इस पिछड़े क्षेत्र को सभी प्रकार से जागृत करने की भावना उद्वेलित होना स्वाभाविक था। इसी से वहाँ की जनता के सच्चे मित्र की भूमिका निभाने के लिए उन्होंने अपने पत्र का नाम 'छत्तीसगढ़ मित्र' रखा।.

'छत्तीसगढ़ मित्र' में समाचार कम और लेख तथा समालोचनाएँ अधिक प्रकाशित होती थीं। जो कुछ समाचार प्रकाशित होते थे उनकी अंतिम पंक्ति में एक चुटीला वाक्य रहता था। उदाहरण के लिए मार्च-अप्रैल 1900 के 'छत्तीसगढ़ मित्र' के (संयुक्त) अंक में-'अकाल निवारणार्थ सभा' शीर्षक से बिलासपुर में डिप्टी कमिश्नर की अध्यक्षता में 17 मार्च 1900 को हुई बैठक का पाँच पंक्तियों का समाचार प्रकाशित हुआ, जिसमें लिखा गया, ''इण्डियन चैरिटेबल रिलीफ फण्ड के लिए बैठक में चन्दा वसूल किया गया। लगभग 6,000 रुपये वसूल हुए। काम बहुत अच्छा है, पर जब दुष्काल पीड़ितों ही के लिये खर्च किया जाये।''

'छत्तीसगढ़ मित्र' में समाचार, कविताएँ, कहानियाँ, प्रार्थना, छोटे-छोटे उपदेशात्मक लेख, प्रेरित पत्र, समालोचनाएँ, नीतिशास्त्र आदि से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री प्रकाशित होती थी। अच्छे-अच्छे लेखक अपनी पुस्तकें सम्पादक के पास समालोचना हेतु भेजते थे। 'छत्तीसगढ़ मित्र' के प्रकाशित होते ही हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक पंडित श्रीधर पाठक ने सप्रेजी के पास अपनी पाँच पुस्तकें भेजी थीं जिनके नाम प्रकाशित करते हुए सप्रेजी ने प्राप्ति स्वीकार किया था और बाद के अंकों में इन पुस्तकों की सविस्तार समालोचना प्रकाशित की थी। सितम्बर 1900 के 'छत्तीसगढ़ मित्र' में रायपुर के ठाकुर भगवानसिंह, असिस्टेण्ट मास्टर का दिनांक 10 अगस्त, 1900 का जो पत्र प्रकाशित हुआ था उससे ज्ञात होता है कि उस समय कैसी मुहावरेदार हिन्दी लिखी जाती थी। सम्पादक को लिखा वह पत्र इस प्रकार था-''कोई आशा नहीं करता था कि 'मित्र' जन्म लेते ही पलना छोड़ जमीन पर पेटकौआ चलने लगेगा और अपनी मीठी नीति संगत बानी से सबका मन मोहने लगेगा...''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वर्ष की कड़ी मेहनत ने 'छत्तीसगढ़ मित्र' को हिन्दी जगत में स्थापित तो कर दिया परन्तु उसके संचालन में जो व्यय हो रहा था, उसकी पूर्ति नहीं हो पा रही थी। 'छत्तीसगढ़ मित्र' के दूसरे और तीसरे वर्ष के अंकों में समाचार प्रकाशित नहीं हुए हैं। तब यह विशुद्ध रूप से शिक्षाप्रद साहित्यिक पत्रिका बन चुकी थी और इन्हीं विषयों पर मौलिक और अनुवादित लेख छपते थे।

सप्रेजी 'छत्तीसगढ़ मित्र' को सार्वजनिक सम्पत्ति समझते थे और उसके व्यवस्थापक होने के नाते अपने आप को उसका ट्रस्टी मानते थे। यही कारण था कि वे प्रतिवर्ष उसका लेखा तैयार कर उसे 'छत्तीसगढ़ मित्र' में प्रकाशित भी करते थे. समय-समय पर वे 'छत्तीसगढ़ मित्र' के ग्राहकों को शुल्क भेजने का निवेदन भी प्रकाशित करते रहते थे. उन्होंने वर्ष दो के ग्यारहवें अंक में 'मतलब की दो बातें' शीर्षक से एक मार्मिक अपील प्रकाशित की-

''देशाभिमान कोरी बातों में नहीं है। जो अपने देश के लिये शारीरिक मिहनत करता है, जो देशकार्य में पूरा-पूरा मन लगाता है और जो स्वदेशहित साधनार्थ केवल धन ही नहीं किन्तु जीवन भी अर्पण कर देता है वही देश का सच्चा प्रेमी है। चिराग तभी तक रहता है जब तक कि उसके तेल में बत्ती जला करती है। क्या हमारे हिन्दुस्तान में ऐसे दो चार आदमी है कि जो अपने देश का प्रकाश फैलाने के लिये उसके स्नेह (तेल) में अपने को दिन रात जलाया करते हैं? यही प्रश्न हम अपने उन ग्राहकों से भी करते हैं जो हिन्दी के प्रेमी कहलाते हैं पर 'मित्र' का मूल्य देने का नाम नहीं लेते। भला जो लोग वी.पी. लौटा देते हैं उनसे कौन सा प्रश्न करें? हे हिन्दी! अब तेरी चिंदी क्यों न होगी! क्यों? तेरी दशा पर कोई एक भी दुःखाश्रु ढरकाने वाला नहीं मिलता!! हा!!!'' इस अपील का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। दूसरे वर्ष से मुद्रण का कार्य कय्यूमी प्रेस रायपुर के बजाय देशसेवक प्रेस नागपुर में होने लगा था।

प्रथम वर्ष की अपेक्षा दूसरे वर्ष में यद्यपि आय में 106 रुपये पाँच आना बढ़े परन्तु डाकव्यय, रेलवे पार्सल आदि का व्यय बढ़ जाने से पहले वर्ष की अपेक्षा दूसरे वर्ष में व्यय 49 रुपये दो आना अधिक हुआ। इससे प्रकाशक और सम्पादकों को काफी आशा बँधी थी कि यदि तीसरे वर्ष भी सभी का पूरा-पूरा सहयोग मिलता गया तथा परिश्रम की रफ्तार कम नहीं हुई तो तीसरे वर्ष घाटा न होगा। सम्पादकों ने वर्ष 1901 का वार्षिक आय-व्यय का लेखा प्रस्तुत करते हुए लिखा था कि- ''मित्र' के निकलने के पहिले ही हमने सोच लिया था कि हमें घटी के सिवाय कुछ लाभ न होगा, परंतु छत्तीसगढ़ में विद्या की वृद्धि, स्वदेश में ज्ञान का प्रसार, नागरी की उन्नति और हिन्दी साहित्य में सत्य समालोचना द्वारा सत्य विचार की जागृति करने के हेतु जिस समय हमने 'मित्र' को जन्म दिया उसी समय हमने यह भी दृढ़ संकल्प कर लिया था कि इस कार्य में चाहे जैसी हानि और कठिनाई सहनी पड़े पर हम तीन वर्ष तक इसे अवश्य चलावेंगे। हमारे संकल्पानुसार परमात्मा की कृपा से दो वर्ष बीत गये, और हमारे दुर्भाग्य से दोनों वर्ष हमें घाटा ही उठाना पड़ा। अब यह तीसरा वर्ष है। देखना चाहिये कि इसका क्या परिणाम होता है? यदि इस वर्ष भी ऐसी ही घटी उठानी पड़ी तो समझ लीजिये कि आपके प्रिय 'मित्र' के सौ वर्ष पूरे हो चुके, और फिर, बड़े दुःख से लिखना पड़ता है कि, यही इसकी आयु का अन्तिम वर्ष भी होगा!!! हाँ, भावी आशा के हेतु एक स्थान रख छोड़ा है। वह यह कि, यदि इस वर्ष घटी न होकर आय-व्यय का हिसाब बराबर रहा, तो और कुछ दिन तक आप लोगों की सेवा टहल करने के लिये 'मित्र' के जीवित रहने की संभावना है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने जीवन के तीसरे वर्ष भी 'छत्तीसगढ़ मित्र' ने अपने अस्तित्व के लिए लड़ाई लड़ी। इस वर्ष के प्रारम्भ से ही यह कोशिश रही कि 'छत्तीसगढ़ मित्र' के कलेवर को अधिकाधिक उपयोगी और ग्राहकों की रुचि के अनुकूल बनाया जाए। यद्यपि छत्तीसगढ़ क्षेत्र उस समय अविकसित था, आवागमन के साधन सीमित थे, आसपास ब्रिटिश शासित क्षेत्र और रियासतें थीं जो 'छत्तीसगढ़ मित्र' सरीखे राष्ट्रीय पत्र को अपनाने या सहायता करने में संकोच करते थे, फिर भी इसे उत्तमता प्रदान करने की भरसक कोशिश की जाती रही। इसके बाद भी प्रकाशक और सम्पादक कठिनाइयों के घेरे से बाहर निकलने में सफल नहीं हो सके। सप्रेजी ने अपना कार्य समेटना प्रारम्भ कर दिया। जो लेखादि पूरे करना था उन्हें अगले अंकों में समाप्त किया और भारी मन से तृतीय वर्ष के अंतिम अंक में 'हमारी अन्तिम सूचना' के साथ प्रकाशन बंद करने की घोषणा कर दी।

'छत्तीसगढ़ मित्र' का प्रकाशन बंद होने का सारा दोष स्वयं पर लेते हुए कहा- "छत्तीसगढ़ मित्र' के बंद होने का दोष किसी एक व्यक्ति पर नहीं है, किन्तु यह दोष स्वयं उस पत्र का ही है कि जो तीन वर्ष में भी भारत के भाषा प्रेमियों के हृदय में स्वार्थ त्याग के भाव को इतना जागृत न कर सका कि जिससे वह अपने जीवन को चिरस्थायी बनाने में समर्थ होता। अतएव हम आशा करते हैं कि, परमात्मा के अनुग्रह से जब 'छत्तीसगढ़ मित्र' स्वयं सामर्थ्यवादी होगा तब वह फिर भी लोकसेवा करने के हेतु जन्म धारण करेगा।

"अनुग्राहक ग्राहक! आप अब कुछ चिंता न कीजिये। मित्र के व्यवस्थापक की ओर से आपके नाम अब कोई सूचना वा नोटिस नहीं दी जायगी। आपने मित्र को तीन वर्ष लों जीवित रख अपनी अनुपम उदारता का परिचय दिया है, इस हेतु हम आपको अनेक धन्यवाद देते हैं। यदि स्व-कर्तव्य पालन में हमारी कुछ भूल हो तो कृपा कर क्षमा प्रदान कीजिये।

"मान्यवर सहयोगियों! यह आपकी सहानुभूति, भ्रातृप्रेम और समय-समय पर दिये हुए उचित उपदेश का फल है कि 'छत्तीसगढ़ मित्र' तीन वर्ष तक अपने उद्देश्यों की पूर्ति के उद्योग में लगा रहा। अब यह इसी दिशा में और उद्योग करने में असमर्थ है। अतएव वह आज आपसे बिदा होता हुआ यह प्रार्थना करता है कि यदि उसने अपने जीवन समय में कुछ भूल की हो तो आप उसे भूल जाइये और उसके सब अपराधों को मुक्त हृदय से क्षमा कीजिये। हम स्वयं इस बात का निर्णय कर नहीं सकते कि छत्तीसगढ़ मित्र ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किस प्रकार उद्योग किया और उसने कितनी सफलता प्राप्त की। इस बात का निर्णय तो केवल हमारे सहयोगी गण ही कर सकते हैं। यदि इसके संबंध में इतना ही निश्चित हो जाय कि 'मित्र' ने स्व-सामर्थ्यानुसार कुछ उद्योग किया, तो हम इसी को अपने परिश्रम का पारितोषिक समझ पूर्ण संतुष्ट होंगे।

"ग्रंथकार तथा समालोचनार्थ पुस्तक भेजने वाले महाशय! हम आपको अनेक धन्यवाद देते हैं कि आपने कृपाकर समय-समय पर इस 'मित्र' का स्मरण किया। जिन-जिन पुस्तकों की समालोचना नहीं हुई है, अब उनकी समालोचना क्रमशः किसी अन्य पत्र में प्रकाशित करने का प्रबंध किया जाएगा। अतएव आप लोगों से प्रार्थना है कि आप कुछ धैर्य रक्खें।

"अन्तिम प्रार्थना यही है कि अब सब पाठक, ग्राहक, ग्रंथकार तथा सहयोगी गण इस 'छत्तीसगढ़ मित्र' को एक बार दृढ़ आलिंगन देकर उसे अपने हृदय मंदिर के किसी कोने में स्थापित कर दें और बीती हुई बातों को बिसार कर हमें निज कृपा दृष्टि से उपकृत करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, सहयोगियों के प्रति एक आवश्यक निवेदन और है कि अब 'छत्तीसगढ़ मित्र' के बंद हो जाने से परिवर्तन में पत्र पाने का हमारा स्वत्व जाता रहा, तथापि यदि आप लोग कृपा कर पूर्ववत स्नेह भाव से सदैव दर्शन देते रहेंगे तो हम अपने तईं बड़े भाग्यवान समझ आपके सदा के लिये अनुगृहीत रहेंगे।"

'छत्तीसगढ़ मित्र' विभिन्न प्रकार की स्तरीय सामग्री प्रकाशित कर जहाँ एक ओर पाठकों की अभिरुचि में परिपक्वता लाना चाहता था वहीं उन्हें स्तरहीन घटिया कलेवर से विमुख भी करना चाहता था। इसीलिए उसमें एक ओर बाबू सत्येन्द्रनाथ टैगोर, ईश्वरचन्द्र विद्यालंकार, श्रीमती रानी भवानी, दादाभाई नौरोजी, ऐनीबेसेन्ट, स्वामी विवेकानंद, डा. अनंदी बाई जोशी, बाबू सुरेशचन्द्र बिस्वास आदि महापुरुषों के जीवन चरित्र प्रकाशित हुए, वहीं दूसरी ओर लोकोक्तियों और कहावतों को भी स्थान दिया गया। वैज्ञानिक और ऐतिहासिक विषयों, महिला उत्थान, शिक्षाप्रद कहानियाँ, लोकभ्रम की बातें, ललित निबन्ध आदि का प्रकाशन कर उन्होंने पाठकों की विविध रुचियों की पूर्ति भी की। यह सभी सामग्री आज भी उतनी ही नवीन और सार्थक लगती है जो एक शती पूर्व प्रकाशन के समय थी।

जनवरी 1900 में *'वैदिक धर्म'* उज्जैन से बलवन्त कमलाकर माकोड़े ने निकाला। इस पत्रिका में वैदिक धर्म का यथार्थ परिचय, सत्पुरुषों की शिक्षाप्रद जीवनियाँ, पौराणिक कथाएँ, धार्मिक व्रतों का इतिहास, पुण्य स्थानों का वर्णन तथा समीक्षात्मक टिप्पणियाँ आदि प्रकाशित होते थे। स्पेन्सर के अज्ञेयवाद का खंडन करने के लिए माकोड़ेजी ने इस पत्रिका में एक खास लेखमाला लिखी थी जिसकी प्रशंसा स्वयं लोकमान्य तिलक ने की थी। माकोड़े का स्वर्गवास होने पर तिलकजी के सुझाव पर महाराष्ट्र के नामी वेदान्त कोविद शंकर शास्त्री ने सम्पादन का दायित्व सम्भाला। उन्होंने पत्रिका का नाम बदलकर 'स्वधर्म' कर दिया तथा उद्देश्य भी कुछ बदल दिए। उनका यह कार्य डोंगरे (मालिक) को पसंद नहीं आया और उन्हें हटना पड़ा। इस बीच केवल तीन अंक निकल सके। 1902 से पत्रिका पुनः 'वैदिक धर्म' के नाम से निकलने लगी किन्तु उज्जैन के स्थान पर इन्दौर से तथा इसके सम्पादक रामचन्द्र बलवन्त डोंगरे हुए। जून 1903 तक यह पत्रिका अनियमित रूप से छपती रही, फिर बन्द हो गईं।

सुदर्शन

सन 1900 में माधव प्रसाद मिश्र के सम्पादन और बाबू देवकीनंदन खत्री के प्रबंध में जनवरी 1900 में काशी के लहरी प्रेस से सचित्र हिन्दी मासिक *'सुदर्शन'* का प्रकाशन हुआ। यह पत्रिका दो वर्ष चार माह तक निकली। हिन्दी भाषा के उन्नयन और सनातन धर्म की प्रचार पत्रिका के रूप में इसका प्रकाशन होता था। प्राचीन सभ्यता और जातीय गौरव की प्रशंसा करने में जहाँ 'सुदर्शन' सन्नद्ध रहा, वहीं सामाजिक बुराइयों तथा कुसंस्कारों पर प्रहार करने में भी कभी पीछे नहीं रहा।

'सुदर्शन' के प्रथम अंक में पत्रिका के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सम्पादक ने लिखा-
"इसमें संदेह नहीं कि हमको नियमानुसार सबसे प्रथम 'सुदर्शन' का उद्देश्य प्रकाश करना चाहिये जिससे पाठकों की जिज्ञासा निवृत्त हो और उनकी इसके पाठ में प्रवृत्ति हो। किंतु इसका उद्देश्य इतना बड़ा भारी है जिसको प्रगट करना इस समय उपहास का कारण होगा। यदि कोई पत्र यह कहे कि हमारा उद्देश्य केवल मातृ भाषा की उन्नति करना है, तो वह हो सकता है, यदि कोई कहे कि हमारा केवल समाज सुधार एवं राजनीतिक उद्देश्य है तो वह भी हो सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, परंतु कोई इस कलिकाल में यह कह बैठे कि हमारा वह उद्देश्य है जो 'श्रीसुदर्शन' धारी भक्तभयहारी भगवान श्रीकृष्ण देव का है जिसके अंतर्गत ब्रह्माण्ड भर के समस्त सउद्देश्य भरे पड़े हैं तो लोग उसे उन्मत वा ग्रह ग्रस्त नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे? क्योंकि छोटे मुँह बड़ी बात शोभा नहीं देती। जो कुछ प्रतिज्ञा का प्रण किया जाय वह समयानुकूल होना चाहिये जिसकी उस समय के आकार प्रकार से कुछ स्थिति दिखलाई दे अन्यथा न कहना ही अच्छा.....। परंतु विस्तृत और स्पष्ट रूप से इसके उद्देश्य जानने के लिए कुछ दिन पत्र पाठ करना होगा। कुछ दिनों में आप ही लोग कह देंगे कि हिन्दी भाषा और सनातन धर्म के प्रचार में 'सुदर्शन' ने अपूर्व कार्य कर दिखाया। किधिकेन।।''[1]

'सुदर्शन' ने पत्र-संचालक और सम्पादक के बीच कार्य नीति के सन्तुलन की राह भी एक शताब्दी पूर्व दिखाई। फरवरी 1902 के अंक में पं. माधव प्रसाद मिश्र ने लिखा-''बहुधा पत्रों के सर्वनाश का मूल स्वामी और सम्पादक का मतभेद हुआ करता है। दो में से कोई एक जब किसी की कुंचित भ्रू से डर कर, वा लोभ लालच में गिर कर अथवा कहने-सुनने से दब कर, अपने कर्तव्य को भूलता है तभी उसके कार्य का बंटाढार हो जाता है। वहीं पर सब कार्य उत्तमता से पूर्ण होता है, जहाँ स्वामी सम्पादक के कार्य में हस्तक्षेप न करे और सम्पादक अपने स्वामी के अभिप्राय और पदगौरव पर विचार कर लेखनी संचालन करें।''[2]

'सुदर्शन' के पहले अंक में हिन्दी भाषा अदालत में नागरी, जैसे विचारोत्तेजक निबंध प्रकाशित हुए। समालोचना पत्रिका का नियमित स्तम्भ था। जीवन चरित, इतिहास, पुरातत्व, भ्रमण-वृत्तांत, भाषा चिन्तन के अलावा कविता-कहानी का प्रकाशन भी पत्रिका में होता था। ज्यादातर सामग्री स्वयं माधव प्रसाद मिश्र को ही तैयार करनी पड़ती थी। उनकी लेखन शैली से ऐसा आभास होता था मानो वे पाठकों से सहज संवाद कर रहे हों। 'सुदर्शन' डिमाई आकार में प्रकाशित होता था। वार्षिक शुल्क दो रुपये तथा एक प्रति का मूल्य साढ़े तीन आना था। विज्ञापन दर प्रति कालम प्रति पंक्ति दो आना थी।

कर्ज़न गज़ट

फरवरी 1900 में दिल्ली से साप्ताहिक 'कर्ज़न गज़ट' का प्रकाशन किया गया था। पृष्ठ सँख्या 24 थी। इसके प्रकाशक एवं सम्पादक मिर्ज़ा हैरत थे। वार्षिक शुल्क तीन रुपये था।

गर्मी के मौसम में शरबत से कण्ठ तर करने के दिल्ली के रिवाज का पता 'कर्ज़न गज़ट'[3] से चलता है-''गर्मी की गर्मबाज़ारी शुरू हो गई है-कई रोज़ से यकायक सख्त गर्मी पड़ने लगी है। रात को पिछले पहर तक लू चलती है धूप की तेजी बढ़ती जाती है शरबत वालों की दुकानों पर ग़ोल के ग़ोल (झुंड के झुंड) तीसरे पहर नज़र आने लगे हैं। अंग्रेज़ी खारी और मीठा पानी भी पिया जाता है लेकिन जितना कंद के शरबत का रिवाज़ है और किसी कच्चे पक्के शरबत का नहीं। तुख्मरीहाँ (रीहाँ के बीज) और फ़ालूदा शरबत की जान है दो पैसे का निस्फ़ (आधा) गिलास और एक आने का पूरा गिलास दिया जाता है। यह दुकानें गोया देहली के लिए रिफ्रेशमेन्ट रूम या होटल हैं दस दस पन्द्रह पन्द्रह आदमियों के ग़ोल हर दुकान पर बैठे हुए नज़र आते हैं उनके क़हक़हे और चहचहे देहली की ज़िंदादिली का पूरा नमूना हैं। शरबत कंद

1. सुदर्शन, जनवरी 1900
2. सुदर्शन, फरवरी 1902ठ
3. कर्ज़न गज़ट 15 मई 1912

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(शकर) का नहीं बनता बल्के ओलों (बताशों) का बनता है ओले कंद को पका कर बनाते हैं। नारंगी या नीबू वग़ैरह के सत् से काम लिया जाता है गर्मियों में ओलों (बताशे) के शरबत पीने की क़दीम (पुरानी) रस्म भी बदस्तूर है के अगर किसी की फ़सद खुलती है तो पान और बताशे बटते हैं। हिस्सा वग़ैरह में भी ओले (बताशे) काम में आते हैं।''

नई दिल्ली के निर्माण के प्रस्ताव पर दिल्ली वालों के मनोभाव एवं प्रतिक्रिया का वर्णन 'कर्ज़न गज़ट'[1] ने किया है तथा यह भी बताया है कि उस समय दरियागंज का बाज़ार कैसा था- ''अभी तक यह नहीं मालूम हुआ के नई दिल्ली के हुदूदो अरबाअ (सीमाएं) क्या होंगे और गाँव का कौन सा हिस्सा इसमें शामिल किया जायेगा यह बात तो तयशुदा है के जदीद शहर (नया नगर) वल्लभगढ़ तक फैल जाएगा मगर जैसा के अफ़ूह (अफ़वाह) है के शाहदरा वग़ैरह भी जदीद शहर (नये नगर) में मिला लिए जायेंगे इसकी कोई तस्दीक़ (पुष्टि) नहीं हुई। अदालतों, हाईकोर्ट और चीफ़कोर्ट के मुत्ताल्लिक़ अभी कुछ सुनने में नहीं आया इस पर मुख्तलिफ़ ख्यालात (अलग अलग विचार) ज़ाहिर किए जाते हैं। हम तो यह कहते हैं के यह शहंशाही जदीद शहर किसी अदना (छोटे) सूबे का किसी पहलू से भी दस्तेनिगर न रहे (मोहताज) ग़दर के बाद से देहली पंजाब में शामिल कर दी गई थी और क़जाओ क़द्र ने (ईश्वर की मर्ज़ी ने) उसे यह सज़ा दी के वह एक कोरदह के मातहत बना दी गई जिससे उसकी खुद्दारी, अज़मत और बुज़ुर्गी का खात्मा हो गया। अगर लाहौर के मातहत न होती तो अब तक मौजूदा हालत से कहीं ज़्यादा तरक़्क़ी कर जाती। खुदा न करे के हिन्दुस्तान का पायतख़्त (राजधानी) बनने के बाद भी यह लाहौर की किसी सिलसिले में दस्तनिगर (मोहताज) रहे।

''मुद्दत से ग़ुल (शोर) मच रहा है के दरियागंज खाली होगा और जो पल्टन यहाँ रहती है वह बड़ी छावनी में चली जायेगी। इस नज़रिये से यह मुक़ाम सेहत के लिहाज़ से बहुत खराब है। दरियागंज एक तारीखी मुक़ाम है। यहीं खास बाज़ार था। यहीं उमराअ (अमीर) सल्तनत (साम्राज्य के) रहा करते थे यहीं तीन सौ पालकीनशीन उमराओं की हवेलियाँ बनी हुई थीं। इसका एक ज़माने में बड़ा उरूज (उन्नति) था। यह क़िले के पाईं (पास) में वाक़ये (स्थित) है आज यहाँ कुछ भी नहीं है. फ़ौजों की बारिकें (बैरिक) हैं या जंगी अफ़सरों की चंद कोठियाँ और चमन हैं। हां यह क़ितए ज़मीन (ज़मीन का टुकड़ा) अगर नीलाम हो जाएगा तो हज़ारों मकानात बन जाएंगे और नये सिरे से आबाद हो जायेगा।''

हिन्दुस्तान रिव्यू

जुलाई 1900 में *'हिन्दुस्तान रिव्यू'* का प्रकाशन इलाहाबाद से किया गया था। इसके सम्पादक सच्चिदानन्द सिन्हा थे। उन्होंने पत्रिका के प्रकाशन के सम्बन्ध में लिखा है-''यू.पी. में उस समय किसी हिन्दुस्तानी द्वारा निकाली गयी अँगरेजी की पत्रिका नहीं थी। केवल लखनऊ से 'एडवोकेट' नामक पत्रिका अर्द्ध साप्ताहिक के रूप में निकलती थी, जिसका सम्पादन गंगाप्रसाद वर्मा करते थे। यद्यपि 'समाचार' एक मासिक पत्रिका थी फिर भी उस अभाव को पूरा करने के लिए और जनसाधारण का रुख एवं मत प्रकट करने के लिए केवल यू.पी. में ही नहीं पूरे उत्तरी भारत के लिए एक उपयुक्त पत्रिका साबित हो सकती थी।''

वास्तव में 'समाचार' नामक पत्रिका कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद की एक शैक्षिक मासिक पत्रिका थी जिसको पाठशाला के प्रिंसिपल रामानन्द चटर्जी अपने सम्पादकत्व में

---

1. कर्ज़न गज़ट, 23 जनवरी 1912

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकालते थे। सन 1900 में उनकी व्यस्तता के कारण सच्चिदानन्द सिन्हा को जो इलाहाबाद में वकालत करते थे, इसका सम्पादन करने के लिए पाठशाला के अध्यक्ष गोविंद प्रसाद ने आमंत्रित किया। सिन्हा ने यह शर्त रखी कि उनके कार्य में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न किया जाए। सिन्हा उस समय की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार इसका कलेवर बदल कर दायरा बढ़ाना चाहते थे। अत: 1900 के जुलाई मास में उनकी इच्छानुसार 'समाचार' नये रूप में प्रकट हुआ और इसके पहले अंक में ही एक राजनीतिक लेख जिसे सर तेजबहादुर सप्रू ने लिखा था। 'सर मेक्डानल एंड द यूनाइटेड प्राविंस' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित किया गया। इसके बाद 'समाचार' में कई लेख, सम्पादकीय टिप्पणियाँ तथा समीक्षाएँ प्रकाशित हुईं। दो वर्षों के अंदर ही पत्र ने बहुत लोकप्रियता प्राप्त कर ली। इसका अनुमान केवल इस बात से लगाया जा सकता है कि दिल्ली दरबार में मासिक पत्रिकाओं के सम्पादकों में केवल सिन्हा को आमंत्रित किया गया था।

उसी वर्ष कायस्थ पाठशाला के ट्रस्टी सिन्हा के पत्रिका का नाम बदलने के प्रस्ताव से सहमत हो गए थे, और इसका नाम बदल कर 'हिन्दुस्तान रिव्यू' रख दिया गया। सन 1904 में पाठशाला के नये अध्यक्ष गोकुल प्रसाद से पटरी न बैठ पाने के कारण सिन्हा ने एक नई पत्रिका 'न्यू हिन्दुस्तान रिव्यू' निकालने के लिए आवेदन किया था किन्तु कुछ गणमान्य व्यक्तियों के हस्तक्षेप से पाठशाला ने 'हिन्दुस्तान रिव्यू' को एक हज़ार रुपये में सच्चिदानन्द सिन्हा को बेच दिया। इस पत्र के वे 18 वर्षों तक सम्पादक रहे। उनके बाद के.सी. महेन्द्र सम्पादक हुए। वे कोलकाता के व्यापारिक जगत से जुड़े थे। सन 1921 में वे इसको कोलकाता से प्रकाशित करने लगे। सन 1926 में सच्चिदानन्द सिन्हा ने पुन: इसको अपने हाथ में लिया और इसे पटना से प्रकाशित करने लगे जहाँ से यह 1950 तक प्रकाशित हुई।

कोलकाता से मासिक *'ख़ादिम-उल-इस्लाम'* एक सितम्बर सन 1900 को निकला। इसे 'ख़ादिम-उल-इस्लाम' नामक संस्था ने प्रकाशित कराया था। 32 पृष्ठों के इस मासिक का वार्षिक शुल्क दो रुपये था। हाफ़िज़ मोहम्मद मूसा इसके प्रकाशक थे। इसके प्रकाशन का उद्देश्य (1) इस्लाम धर्म की विशेषताओं तथा मोहम्मद सा. के निर्देशों को प्रकट करना तथा इस्लाम पर लगाये जाने वाले आरोपों का उत्तर देना, (2)मुसलमानों के हितों और लाभ को देखना तथा उनकी प्रगति के लिए किए जाने वाले उपायों पर बहस करना, (3) इस्लाम विरोधियों द्वारा लगाये जाने वाले आरोपों का खंडन करना तथा (4) मुसलमानों में प्रसिद्ध तथा पहुँचे हुए व्यक्तियों की जीवनी प्रकाशित करना था।

वर्ष 1900 में *'आंध्र भाषा ग्राम वर्तमानी'* का प्रकाशन नेल्लूर से हुआ। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक-प्रकाशक दंपूरू नरसय्या थे। 1900 में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश की ओर से *'आर्य सेवक'* नामक पाक्षिक गणेश प्रसाद शर्मा के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। 1909 में इसे मासिक कर दिया गया।

सन 1900 में जलालउद्दीन 'घायल' ने चेन्नै से *'आफ़ताब-ए-दकन'* का प्रकाशन किया था। त्रैमासिक *'गुलबन-ए-सुख़न'* हाफ़िज़ अब्दुल शकूर ने अपने गुरु अमीर मीनाई के आगमन पर भोपाल से सन 1900 में प्रकाशित किया था। इसके सम्पादक मंडल में मोहम्मद यूसुफ़ क़ैसर भी थे। इसमें अधिकतर उर्दू के शायरों की रचनाएँ प्रकाशित की जाती थीं। यह पत्र तीन साल तक निकलने के बाद बंद हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जासूस

सन 1900 में मासिक *'जासूस'* का गहमर नामक छोटे से ग्राम जिला-गाजीपुर (उत्तरप्रदेश) से प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। पत्रिका के सम्पादक-संचालक गोपालराम गहमरी ने 'जासूस' का परिचय इस प्रकार दिया था- ''डरिये मत यह कोई भकौआ नहीं है धोती सरिया कर भागिये मत यह कोई सरकारी सी.आई.डी. नहीं है।

है क्या! क्या है?

है यह 50 पन्ने की सुंदर सजी सजायी मासिक पुस्तक माहवारी किताब जो हर पहले सप्ताह सब ग्राहकों के पास पहुँचती है। हर एक में बड़े चुटीले, बड़े चटकीले, बड़े रसीले, बड़े गरबीले, बड़े नशीले मामले छपते हैं। हर महीने बड़ी पेचीली, बड़ी चक्करदार, बड़ी दिलचस्प घटनाओं से बड़े फड़कते हुए, अच्छी शिक्षा और उपदेश देने वाले उपन्यास निकलते हैं........कहानी की नदी ऐसी हरहराती है, किस्से का झरना ऐसा झर्राता है कि पढ़ने वाले आनंद के भंवर में डूबने उतराने लगते हैं।''

'जासूस' के प्रायः प्रत्येक अंक में समालोचना साहित्य संवाद, नोट्स-न्यूज, नए-नए समाचार, नाटक, स्थायी स्तम्भ होते थे. पत्रिका में कविताएँ भी छपती थीं। कुरीतियों एवं आडम्बरों पर जैसी तीखी प्रतिक्रिया 'जासूस' में मिलती है, वैसी अन्यत्र नहीं मिलती। 'जासूस' हिन्दी में अपनी तरह की पहली पत्रिका थी।

'सुदर्शन'[1] के सम्पादक माधवप्रसाद मिश्र ने 'जासूस' पर टिप्पणी करते हुए लिखा था- '' ......इन दो अंकों में आश्चर्यजनक घटना लिखी हुई है कि क्या सामर्थ्य जो कोई एक बार आरंभ कर अधूरी छोड़ दें ज्यों ज्यों पढ़ते जावोगे कौतूहल बढ़ता चला जाएगा। भाषा इसकी ऐसी सरल है कि हिन्दी के अक्षर मात्र जानने वाला पढ़ सकता है। ...बंगला में ऐसे कई पत्र हैं परन्तु हिन्दी में इसका अब तक अभाव था। आशा है कि उपन्यास प्रिय पाठक इसके ग्राहक हो बाबू गोपालरामजी के उत्साह को बढ़ायेंगे।''

यद्यपि 'जासूस' ने लोकप्रियता पाई थी, किन्तु 28 साल तक प्रकाशित होने के बावजूद 'जासूस' को पाठकों के असहयोग के कारण बंद होना पड़ा।

धार्मिक पत्रिका *'तेलुगु उद्योगस्तुडु'* का प्रकाशन बापट्ला से हुआ। इस तेलुगु मासिक के सम्पादक एस.रत्नम और प्रकाशक साल्वेशन आर्मी थी। यह पत्रिका सन 1900 में निकली। दिल्ली से मासिक *'नसीम'* सन 1900 में निकला था। प्रकाशक मोहम्मद अब्दुल सत्तार अख़्तर तथा सम्पादक मुंशी क़ुर्बान अली 'बिस्मिल' थे। रहमानी प्रेस देहली में छपता था। साप्ताहिक *'मैसूर स्टार'* का प्रकाशन यजमान वीर वासप्पा ने सन 1900 में किया था। इसमें यदा कदा अँगरेजी भाषा के लेख भी छपते थे। पत्र ने पिछड़ी जातियों में शिक्षा एवं संस्कृति के प्रसार पर ज़ोर दिया। इसका प्रकाशन सन 1906 में बंद हो गया था। साहित्यिक पत्रिका *'श्री भारती'* का प्रकाशन 1900 में हुआ। वाविलिकोलनु सुब्बाराव ने नेल्लूर से इसका सम्पादन-प्रकाशन किया था। यह तेलुगु भाषा की मासिक पत्रिका थी।

रामबख्श पाण्डेय 'सुजान' के सम्पादकत्व में सन 1900 में मासिक पत्रिका *'श्रीकवि समालोचक'* प्रकाशित हुई। अब्दुल सत्तार 'प्यारे' उप सम्पादक थे, जो ब्रजभाषा में काव्य रचना किया करते थे।

---

1. सुदर्शन, मई 1900

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुवासिनी

मासिक पत्रिका '*सुवासिनी*' का प्रकाशन मंगलूर से एक जुलाई 1900 में किया गया। इस कन्नड पत्रिका के सम्पादक वेंगल रामराव थे। एक प्रति का मूल्य चार आना था। प्रकाशक कनारा बुक डिपो के मालिक बोलरा विट्ठल राव थे। इस पत्रिका में कविताएँ, कहानियाँ, इतिहास, धारावाहिक उपन्यास, सामाजिक विषयों तथा कला पर लेखादि प्रकाशित किए जाते थे। पांजे मंगेशराव पत्रिका के मुख्य आश्रयदाता थे। 16 पृष्ठ की पत्रिका का वार्षिक शुल्क दो रुपये तथा एक प्रति का मूल्य चार आना था। इस पत्रिका में विज्ञापन नहीं छापे जाते थे। सम्पादकीय टिप्पणी में उपरोक्त तथ्य को प्रकट करते हुए सम्पादक ने यह भी लिखा था कि महिला लेखिकाओं को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाएगा। मंगेश राव, नंदालिक लक्ष्मीनारायणन, वी.वेंकटाचार्य, एस.एन. नरहरैया, आर.श्रीनिवास राव आदि का सहयोग प्राप्त था। सन 1903 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

इंडियन रिव्यू

सन 1900 में अँगरेजी की मासिक पत्रिका '*इंडियन रिव्यू*' का प्रकाशन चेन्नै से हुआ। चेन्नै के पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता जी.ए.नटेशन एण्ड कम्पनी पत्रिका की प्रकाशक थी। 56 पृष्ठ की पत्रिका के दायरे में ज्ञान-विज्ञान के सभी विषय सम्मिलित थे। दिसम्बर 1960 में 'इंडियन रिव्यू' के प्रकाशन के 60 वर्ष पूरे हुए। इस अवसर पर पत्रिका का हीरक जयन्ती अंक प्रकाशित किया गया। सन्दर्भ की दृष्टि से यह विशेषांक महत्वपूर्ण है। पत्रिका के संस्थापक-सम्पादक जी.ए.नटेशन थे। हीरक जयन्ती अंक के प्रकाशन के समय मार्नपन नटेशन संपादन का दायित्व निभा रहेथे। हीरक जयन्ती विशेषांक में 'इंडियन रिव्यू' के साठ वर्ष के अंकों से चुनकर महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की गई थी।

'इंडियन रिव्यू' का मुद्रण अखण्ड ज्योति प्रेस चेन्नै से होता था। आर्थिक, आयोजना, शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, साहित्य, राजनीति, पुरातत्व, समीक्षा इत्यादि विषयों पर उत्कृष्ट आलेखों का प्रकाशन किया जाता था। पत्रिका का स्वरूप जर्नल के समान था. पत्रिका में बीते माह के उल्लेखनीय घटनाक्रम का तिथिवार विवरण प्रकाशित किया जाता था। पत्रिका का आकार 24 गुणित 18 से.मी. था। 60 वर्ष पूरे होने पर एक प्रति का मूल्य 75 पैसे, वार्षिक शुल्क भारत में 6 रुपये, अमेरिका में चार डालर और यूरोप में एक पौण्ड था।

मुरादाबाद से अप्रैल 1900 में '*सनातन धर्मपताका*' नामक हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया। रामस्वरूप शर्मा गौड़ इसके सम्पादक, प्रकाशक और मुद्रक थे। सनातनधर्म प्रेस मुरादाबाद से पत्रिका का प्रकाशन किया जाता था। 44 पृष्ठ की इस पत्रिका का आकार 21 गुणित 12 से.मी. होता था। इसका वार्षिक मूल्य सवा रुपये था। इस पत्रिका में सनातनधर्म सम्बन्धी सामग्री का प्रकाशन किया जाता था। सन 1950 तक यह पत्रिका निकली।

असम बंति

सन 1900 में तेजपुर से प्रकाशित होने वाला '*असम बंति*' कदाचित एकमात्र ऐसा समाचारपत्र है जिसके प्रकाशन का फैसला नगर की आमसभा में लिया गया। मधुर मोहन बरुआ 'असम बंति' के संस्थापक सम्पादक थे। उनके बाद पद्मनाथ गोहंई बरुआ प्रभृति मूर्धन्य असमिया साहित्यकार सम्पादक हुए। स्वतंत्रता पूर्व ब्रम्हपुत्र के उत्तरी तट से प्रकाशित होने वाला यह पहला समाचारपत्र था। चवालीस वर्ष तक इसका प्रकाशन हुआ। सन 1900 में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँगरेजी साप्ताहिक '*वीकली क्रानिकल*' का प्रकाशन हुआ। सचीन्द्र सिन्हा इसके सम्पादक थे।

कलावती

प्रख्यात तेलुगु लेखक श्रीपाद कृष्णमूर्ति शास्त्री के सम्पादकत्व में सन 1900 में राजमुन्दरी से तेलुगु मासिक पत्रिका '*कलावती*' का प्रकाशन हुआ। इसी पत्रिका में तेनाली रामकृष्ण कवि की अन्तिम रचना '*घटिकचलमहात्मंयम्*' प्रकाश में आई। कस्तूरी रंगा कवि का आनन्दरंगचन्द्रम् प्रकाशित किया। सम्पादक द्वारा लिखित 'आनन्दोदयम्' भी कलावती में ही सबसे पहले प्रकाशित हुआ। इसका प्रकाशन सन 1903 तक हुआ। सन 1900 में बामंडा से जलंधर देव की सरपरस्ती में उड़िया मासिक पत्रिका '*आलोचना*' का प्रकाशन हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

अ

अखबार सेरामपुर- 31
अनुवादिका- 60
अखबार-उल-जफर- 69
अक्षय कुमार दत्त- 187
अहसान-उल-अखबार- 91, 93, 163
अरुणोदय- 98, 103, 144, 162, 176, 204
अखबार-उल-हकायक- 99
असद-उल-अखबार- 100, 101, 103, 105, 116, 117
अखिल गुरुम- 103
अली नकी- 105
अखबार-ए-आलम- 115, 161, 162, 185, 333
अखबार-उल-नवाह- 116
अब्दुल बासित 'इश्क'- 116
अलेक्जेंडर कनेलिक- 123
अवध अखबार- 125, 152, 153, 154, 155, 185
अखबार गवालियर- 126
अहमद अली- 138
अद्वैत चन्द्र- 142
अद्वैततत्व प्रदर्शिका पत्रिका- 145
अमीर मीनाई- 146
अब्दुल रहमान शफफाक- 147
अजीमउल्ला खां- 147
अब्दुल्ला- 148
अय्यार-उल-अखबार- 149
अशरफ-उल-अखबार- 149
अकमल-उल-अखबार- 149
अंजुमन पंजाब- 153
अब्दुल हलीम 'शरर'- 154
अखबार साईंटिफिक सोसायटी- 154, 175
अजीम-उल-अखबार- 158
असगर हुसैन- 159
अयोध्या प्रसाद- 161, 190
अंजुमन-ए-हिन्द- 165
अमृत प्रवाहिनी- 168
अभयनंद बंद्योपाध्याय- 168
आयुर्वेद पत्रिका- 168
अक्षय कुमार मित्रा- 168
अमावस्या- 168
अवकाश रंजनी- 168
अबोध बन्धु- 169
अंजुमन इस्लामी- 169
अविनाशचन्द्र मुखोपाध्याय- 171
अब्दुल करीम अंसारी- 173
अवकाश बंधु- 179
अखबार श्री दरबार साहिब- 181
अमृत बाजार पत्रिका- 185, 186, 187, 188, 189, 190, 195
अमृत प्रभात- 190
अखबारुल अखियार- 190
अखबार-ए-आम- 196, 197
अलमोड़ा अखबार- 198, 199, 200, 201
अखबार अंजुमन पंजाब- 201
असम मिहिर- 205
अक्षय कुमार सरकार- 208
अंताजी रामचन्द्र जोगलेकर- 208
अलफ्रेड ईवान केल्टन- 217
अ.तु.वालके- 218
अदीब-ए-आलम- 219
अलबर्ट गजट- 220

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनीस-ए-बिहार- 221
अतालीक जमींदारान- 224
अख्तर-ए-हिन्द- 225, 234, 353
अवध पंच- 231, 232, 233, 234, 296
अफजल-उल-अखबार- 231
अख्तर-ए-हिन्द- 234
अहसन उल अखबार- 235, 271
अमृतलाल चक्रवर्ती- 240, 243, 291, 304, 368, 410, 419
अम्बिका प्रसाद वाजपेयी- 243, 244, 370
अर्ल वेल्बी- 251
अखबारों का किबलागाह- 260
अवधबिहारी शरण मिश्र- 264
अखबार-ए-हिन्द- 271
अनल्प जल्पिता कल्पवल्ली- 271
अलफ्रेड नन्दी- 279
अंजुमन-ए-इस्लाम- 282
अरण्य पंडित- 283
अमीर-उल-अखबार- 286
अब्दुल समद कानपुरी- 286
अब्बास मिर्जा- 287
अंजुमन इल्मी- 289
अखबार-उल-अखबार- 290, 340
अल बशीर- 290
अम्बिकादत्त व्यास- 292, 359, 379
असम न्यूज- 293
अल्ताफ- 295
अरमुगान- 295
अखबार-उल-निसार- 296
अबू-उल-जुरफा- 302
अब्दुल वहाब- 302
अतालीक-ए-हिन्द- 303
अनीस-ए-हिन्द- 307
अलसिद्दीक- 308
अब्दुल करीम औज- 308
अंजुमन-रिफा-ए-आम- 312
अंजुमन जराअत- 313
अखबार-उल-निसाँ- 316
अजीजुद्दीन फारसी- 316
अखबार चुनार- 316
अब्दुल अजीज- 317
अली मोहम्मद खाँ- 323
अलीमुद्दीन- 323
अहमद अली खां शौक- 323
अल पंच- 324
अमजद-उल-अखबार- 324
अफजल खां देहलवी- 325
अमीर अली- 325
अदीब-ए-हिन्द- 326
अब्दुल्ला जेगम- 327
अलमीजान- 327
अब्दुल कादिर- 327
अफसाना-ए-अय्याम- 327
अलीम-उल-अखबार- 328
अली अहमद खां असीर- 329
अब्दुल वाहिद- 328
अतारिद- 329
अया सिंह- 329
अजमत अली सौदागर- 329
अमुद्रित ग्रंथ चिंतामणि- 329
अब्दुल हलीम नादिम- 329
अख्तर-ए-अवध- 330
अली असगर- 330, 331
असम तारा- 333
असम बन्धु- 333
अत्तार- 334
अब्दुल कवी- 334
अलबेला- 335
अब्दुल कादिर नायब- 336
अफसूं- 336
अजीज-उल-अखबार- 336
अफसर-उल-अखबार- 346
अली अख्तर- 346
अम्बाला गजट- 347
अनीस- 347, 351
अर्जुमन्द मोहम्मद खां- 347, 407
अब्दुल रहीम शर्फ- 347
अदीब- 348, 383, 413, 420
अल बयान- 351
अमृतसर गजट- 352

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकमल तुर्की- [illegible]
अब्दुल रहीम [illegible]- [illegible]
अशरफ गजट- [illegible]
अनिल धारकर- [illegible]
अब्दुल हलीम शरर- [illegible], [illegible], [illegible]
अनन्त कृष्ण शास्त्री- 369
अबू हसन सफी- 367
अडवल्ली कामशास्त्री बुच्चिरेड्डी- 373
अच्युतराव कोल्हटकर- 375
अग्रहरि वैश्य बंधु- 377
अल वक्त- 380
अखबार इस्लाम- 383
अलीगढ़ मैगजीन- 385, 386, 387
अलीगढ़ मंथली- 387
असम- 388
अल मुईन- 390
अल्फ्रेड कनिंघम- 395
अफजल-उल-अखबार- 397
अब्दुल रहमान- 405
अल रशीद- 406
अबुल पंच- 407
अब्दुल हमीद फर्रुख- 407
अलहादी- 413
अखबार तहजीब- 413
अशरफ- 413
अलहुक्म- 413
अफसर- 413
अस्मत- 417
अखबार भरतपुर- 419
अनवर-उल-इस्लाम- 419
अलनाजिर- 419
अल मालूमात- 420
अल बशीर- 420
अन्तःपुर- 420
असम बंति- 439

आ

ऑक्सफोर्ड गजट- 7
आर.विलियम्स- 25
आनन्द मोहन मुखोपाध्याय- [illegible]
आईना-ए-सिकन्दरी- [illegible]
[illegible]- [illegible]
आर.एम.मार्टिन- [illegible]
आईना-ए-सिकन्दर- 60
आगरा अखबार- 63, 64
आसुदर्शन- 89
आजम-उल-अखबार- 105
आनन्द चरण वर्मा- 107
आफताबे पंजाब- 115
आफताब-ए-आलमताब- 117
आप्टीमिस्ट- 124
आफताब-ए-हिन्द- 126
आगरा गजट- 128, 129
आप अख्तियार- 141
आनन्द लहरी- 162, 220
आयुर्वेद पत्रिका- 168
आबे हयात- 172
आनन्द चरण सेनगुप्ता- 173
आफताब-ए-कुदरत- 173
आनन्द वृत्त- 179
आशुतोष मुखोपाध्याय- 179
आगरा एजूकेशनल गजट- 192
आर्य दर्पण- 195
आनन्द कादम्बिनी- 195, 261, 317, 320, 330, 331
आर्य्य मित्र- 195, 403, 404, 405
आंध्र भाषा संजीवनी- 202
आत्माराम नारायण- 205
आर्य विनय- 217
आर्यावर्त- 220, 348
आर्य वैभव- 220, 333
आर्यन- 221
आर्य भूषण- 234
आसिफ-उल-अखबार- 236
आईना-ए-रियाजी- 264
आर्य समाचार- 264
आनन्द लाल- 264
आस्तान-ए-हिकमत- 264
आईन-ए-हिन्द- 264

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यभिषक- 266
आईना-ए-सिकन्दरी- 281
आफताब-ए-हिन्द- 282, 335
आरोग्य दर्पण- 284
आईना-ए-तहजीब- 289
आईना-ए-हिन्द- 295, 388
आशिक लखनवी- 296
आईना-ए-नुमाइश- 308
आर्य पत्र- 310
आजाद- 325
आशिक हुसैन आशिक- 308, 312
आईना-ए-अखलाक- 317
आईना-ए-तिजारत- 322
आसिफी- 323
आर.सी.टेम्पल- 323
आशोब-ए-महशर- 327
आफताब-ए-सुखन- 327, 352
आर्य गजट- 328
आईना-ए-सुखन- 329
आरोग्य दर्पण- 330
आन्ध्र प्रकाशिका- 330
आबिद हुसैन आबिद- 330, 347
आर्य बंधु- 333
आफताब-ए-आलम- 335
आरा गजट- 336
आर्यवृत्त- 337
आलम आरा- 337
आर्य प्रकाश- 337
आफताब-ए-महशर- 347
आर्य सिद्धांत- 348
आगरा पंच- 352
आशा- 361
आरोग्य सुधाकर- 363
आर्य प्रतिभा- 363
आर्य हितैषी- 372
आलम अफरोज- 382
आनन्दराव रामचन्द्र धराधर- 388
आर्य मार्त्तण्ड- 399
आ. सूर्यनारायण राजू- 401
आर्य भास्कर- 406
आईना-ए-आलम- 406
आठवले- 406
आजाद पंच- 407, 413
आर्य मुसाफिर- 420
आनन्ददायिनी- 420
आफताब- 421
आगा मनाजिर अली बेग- 422
आन्ध्र भाषा ग्राम वर्तमानी- 437
आर्य सेवक- 437
आफताब-ए-दकन- 437
आलोचना- 440

इ

इंग्लिश मर्करी- 7
इण्डिया गजट- 11, 45, 46, 62, 171, 380, 413
इण्डियन रिव्यू एण्ड जर्नल आफ फारेन साइंस एण्ड द आर्ट्स- 19, 70
इण्डियन हेरल्ड- 25
इण्डियन अपोलो- 25
इण्डियन- 32
इंग्लिशमैन एण्ड मिलिटरी क्रॉनिकल- 33
इंग्लिशमैन- 33, 52, 71, 215
इंडियन मैगजीन- 52
इंडियन जर्नल आफ मेडिकल एंड फिजिकल साइंस- 66
इण्डिया रिव्यू- 30, 76
इण्डियन रजिस्टर- 62
इण्डियन स्टेट्समेन- 67
इंडियन मिरर- 79
इंडियन यूथ मैगजीन- 79
इण्डियन टाइम्स- 77, 79, 107
इवैन्जेलिस्ट- 87
इण्डियन जूरिस्ट- 89
इण्डियन फील्ड- 94
इंडिया स्पोर्टिंग रिव्यू- 94
इकानामिस्ट- 96
इंडियन सन- 98
इंडिया रजिस्टर आफ मेडिकल साइंस- 103
इंडियन एनल्स आफ मेडिकल साइंस- 134

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इक्लीजिएस्टिक इंटेलिजेंसर- 140
इण्डियन स्टेण्डर्ड- 140
इंडियन फ्रीमेन्स फ्रेण्ड- 142
इंडियन पंच- 158, 267
इंडियन रिफार्मर- 160, 389
इण्डियन एम्पायर- 161
इण्डिया- 162
इन्दु प्रकाश- 166, 167, 168, 169
इन्दु आफ बाम्बे- 168
इलस्ट्रेटेड कन्नडीज जर्नल- 168
इंडियन डेली न्यूज- 171, 215
इन्द्रप्रस्थ प्रकाश- 194, 217
इण्डियन विटनेस- 202
इण्डियन रेलवे सर्विस गजट- 208
इंडियन स्टेट्समेन- 215
इआन मेलविल स्टीफेन्स- 216
इण्डियन इकानामिस्ट- 220
इण्डियन लॉ रिपोर्टर- 220, 279
इण्डियन पेट्रियट- 248
इंडिया- 249, 285
इण्डिपेण्डेण्ट- 250
इच्छाराम सूर्यराम देसाई- 266
इण्डियन क्रानिकल- 282
इस्राएली धर्मदीप- 287
इस्लाम- 287
इमामिया- 290
इसहाक खान- 296
इण्डियन नेशन- 309
इत्तेहाद- 311
इशराक- 315
इन्तिखाब- 317, 363
इत्तेफाक- 320
इंजीनियर गाइड- 322
इण्डियन एण्टीक्वेरी- 323
इनायत हुसैन खाँ- 327
इस्माइल खां शौकत- 328
इशाअत-ए-इस्लाम- 328
इल्म-उल-अखबार- 330
इम्पीरियल पेपर- 335
इंस्टीट्यूट- 336
इन्तिखाब-उल-हिकमत- 339
इतिहास मंजरी- 349
इंतिखाब-ए-लाजवाब- 349, 399
इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इण्डिया- 351
इंडियन फायनेन्सियल रिव्यू- 353
इण्डियन इंजीनियरिंग- 362
इंडियन यूनियन- 374
इण्डियन सोशल रिफार्मर- 374
इण्डियन टेक्स्टाइल जर्नल- 374
इण्डियन क्रानिकल- 378
इंतिखाब-ए-आलम- 380
इन्द्रधनु- 383
इल्हामी- 388
इंसाफ पसंद- 389
इन्दुभूषण चक्रवर्ती- 396
इस्लाह- 399
इंडियन सायक्लिस्ट- 414
इलस्ट्रेटेड इंडियन न्यूज- 419
इंडियन रिव्यू- 439

ई

ई मेलेट- 8
ईस्ट इण्डियन- 55, 59
ईश्वरचन्द्र गुप्त- 101
ईस्ट इण्डिया युनाइटेड सर्विस जर्नल- 65
ईस्टर्न स्टार- 80
ईस्टर्न बेंल्स एण्ड केलकटा टाइम्स- 81
ईश्वरी प्रसाद- 102
ईस्ट इण्डिया मैसेंजर- 122
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर- 125, 155
ईस्ट इण्डिया आर्मी मैगजीन एण्ड मिलिटरी रिव्यू- 131
ईवनिंग मेल- 140
ई.के.राबिन्सन- 205
ईस्टर्न हेरल्ड- 276
ई.सी.केम्प- 333
ईस्ट इंडियन रेलवे- 336
ईश्वरीप्रसाद शर्मा- 415

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ

उदन्त मार्त्तण्ड- 8, 47, 48, 49, 50, 51, 93
उपदेशक- 98
उमदत-उल-अखबार- 98, 173, 197
उमाकांत भट्टाचार्य- 99, 100
उमाचरण भद्र- 101
उत्कल हितैषिणी- 125, 191
उमाचरण- 126
उत्तर पारा- 147
उर्दू गाइड- 151, 153
उमेशचन्द्र चट्टोपाध्याय- 159
उद्योग विधायिनी- 169
उमेशचन्द्र दत्त- 169
उत्कल दीपिका- 170
उत्कल शुभकरी पत्रिका- 194
उत्कल दर्पण- 210
उत्कल पुत्र- 210
उत्कल मधुप- 245
उचित वक्ता- 267, 268, 269, 270, 299
उर्वर वंश प्रकाश- 289
उरूज मुहम्मदी- 289
उर्दू इंस्ट्रक्टर- 290
उल्लि गोंडमु रामचन्द्रराव- 292
उर्दू-ए-मुअल्ला- 303, 401
उड़ीसा स्टूडेण्ट- 333
उड़िया संवादपत्र- 351
उत्कल दीपिका- 367
उर्दू अखबार- 370
उत्कल पत्रिका- 377
उत्कल प्रभा- 377
उपाध्यायोपकारी- 380
उपाध्यायोपयोगिनी- 380
उत्कल चिकित्सक- 389
उरूज-ए-बहार- 389
उपन्यास लहरी- 401, 402
उपन्यास माला- 402
उत्कल बंधु- 406
उत्कल साहित्य-413
उनिसां- 417
उपन्यास- 419

ऊ

ऊषा प्रभा दत्ता- 169

ए

एशियाटिक मिसलेनी- 17
एशियाटिक मिसलेनी एण्ड बंगाल रजिस्टर- 17
एशियाटिक मिरर- 18, 21, 26
एशियाटिक मिरर एण्ड कामर्शियल एडवरटाइजर- 18
एशियाटिक रिसर्चेज- 18, 19
एशियाटिक सोसायटी जर्नल- 19
एशियाटिक मैगजीन- 25
एशियाटिक मैगजीन एण्ड रिव्यू एण्ड लिटरेरी एण्ड मेडिकल मिसलेनी- 31
एशियाटिक जर्नल- 32
एशियाटिक आब्जर्वर- 44
एडम- 52
एच.कोप- 59
एनक्वायरर- 59
एच.एल.व्ही.डिरोजिओ- 59
एच. ट्यूकेट- 59
एन. केम्पवैल- 59
ए.ई.लासन- 71
एन.जे.नगपुरिया- 75
एबिल ईस्ट- 94
एडवर्ड एलडिन- 103
एक्जामिनर- 123
एक्सट्रैक्ट्स कन्सर्निंग क्रिश्चिनिटी- 126
एजुकेशन गजट- 144
एजाज- 146
एल. रिके- 176
एग्रीकल्चरल गजट आफ इण्डिया- 220
एम.श्रीनिवासन- 249
ए.रंगास्वामी अय्यंगार- 251, 252, 253, 285
एन.एन.घोष- 309
एडवरटाइजर- 315, 389

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एन.नारायण स्वामी- 321
एचीसन गजट- 323
एडवोकेट आफ एग्रीकल्चरिस्ट- 333
ए.पी.पार्थसारथी नायडू- 330
एम.वेंकट कृष्णैया- 331
एंग्लो इंडियन- 335
एतराज- 335
एडवोकेट आफ इण्डिया- 339
एहतशाम-उल-अखबार- 340
ए.एस.रमन- 352
एम.वी.कामथ- 352
एडवोकेट- 353, 439
एशिया स्पोर्टिंग जर्नल- 362
एफ.सी.मांडिक- 378
एन.ए.चिक- 378
एस.सी.मुखोपाध्याय- 382, 416
एलम राजू नारायण मूर्ति- 401
ए.नरसिंहाचार्युलु- 412
एस.कृष्णाराव- 421
एस.रत्नम्- 438

ऐ

ऐन-उल-अखबार- 281

ओ

ओटमर- 4
ओरिएंटल मिसलेनी- 17
ओरिएण्टल स्टार- 20, 21
ओरिएण्टल कमर्शियल रजिस्टर- 28
ओरिएण्टल बैप्टिस्ट- 43, 100
ओरिएंटल मैगजीन एंड केलकटा रिव्यू- 44
ओरिएण्टल हेरल्ड- 45
ओरिएण्टल आब्जर्वर- 52, 55, 99
ओनीनिबस- 58
ओरिएण्टल स्पोर्टिंग मैगजीन- 69
ओरिएण्टल मैगजीन- 89
ओड़िया पेट्रियट- 125
ओब्रियन स्मिथ- 144
ओल्ड स्पेक्टेटर- 159
ओक- 283
औरंगाबाद समाचार- 310
ओरिएण्टल ट्रैवलर्स गजट- 330
ओमंडूर वैद्यम दोरासमैया- 412, 422

क

कोरेण्टो- 7
केलकटा गजट- 13, 14, 15, 16, 18, 20, 25, 36, 27, 31, 145
केलकटा गजट ऑर ओरिएण्टल एडवरटाइजर- 15
केलकटा क्रानिकल- 15, 17, 18, 20, 46, 52
केलकटा मैगजीन ऑर ओरिएंटल एम्यूजमेंट- 17, 21
केलकटा जर्नल- 18, 20, 21, 23, 26, 31, 32, 34, 35, 37, 40, 44, 45
केलकटा मंथली रजिस्टर एण्ड इण्डिया रिपॉजिटरि-19
केलकटा मैगजीन एण्ड एशियाटिक एम्यूजमेंट- 20
केलकटा मैगजीन- 20, 57, 65
केलकटा ईवनिंग पोस्ट- 20
केलकटा मार्निंग पोस्ट- 20
केलकटा मंथली जर्नल- 20, 21, 37
केलकटा कूरियर- 21, 26, 27, 71
कोलम्बियन प्रेस गजट- 23, 45
केलकटा टाइम्स- 26
केलकटा एक्सचेंज- 28
केलकटा मिरर- 32
क्वार्टरली सरकुलर- 32
क्रिश्चियन इंटेलीजेंसर- 32, 57
कैप्टन सेमुएल पार्लकी- 37
केलकटा क्रिश्चियन आब्जर्वर- 43, 62, 71
केलकटा मिशनरी हेरल्ड- 43, 100
केलकटा गजट एण्ड कर्मशियल एडवरटाइजर- 43
केलकटा स्टार- 43, 80, 107

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्वार्टरली ओरिएण्टल मैगजीन रिव्यू एण्ड रजिस्टर- 44
कृष्ण मोहन दास- 44
केलकटा लिटरेरी गजट- 45
क्वार्टरली ओरिएंटल मैगजीन- 45
क्रिश्चियन इन्वेस्टीगेटर- 51
केलकटा मैसेंजर- 55
केलकटा इंटेलिजेंसर- 55
कलाचन्द्र राय- 57
कैलीडोस्कोप- 57
केलकटा क्वार्टरली मैगजीन एण्ड रिव्यू- 57, 65
कृष्णधन मित्रा- 60
कर्नाटक क्रानिकल- 65
केलकटा रिव्यू- 69, 90
कैलाशचन्द्र दत्त- 69
के.के.बियूचेम्प- 71
कमर्शियल एडवरटाइजर- 71
के.रामाराव- 75
कालीचंद्र दत्त- 75
कैथोलिक इंटेलीजेंसर- 77
कालीकांत गंगोपाध्याय- 77
केलकटा जर्नल आफ नैचुरल हिस्ट्री- 77
केलकटा जर्नल आफ नैचुरल हिस्ट्री एंड मिसलेनी आफ द आर्ट्स एंड साइंस इन इण्डिया- 79
कृष्णमोहन बंद्योपाध्याय- 79
केलकटा स्टार- 77
क्रिश्चियन हेरल्ड- 81
केलकटा लिटरेरी ग्लीनर- 81
कन्नड समाचार- 89
केलकटा क्रिश्चियन हेरल्ड- 91, 77
कराची एडवरटाइजर- 90
कायस्थ कौस्तुभ- 90
कुरान-उस-सैदीन- 96, 97, 105, 111, 112
करीम-उल-अखबार- 97
केलकटा स्टेंडर्ड- 97
काशी प्रसाद घोष- 97
क्रिस्टोदास पाल- 97, 142
कमरुद्दीन- 100
कोहेनूर- 102, 116, 118, 119, 120, 121, 124, 125, 140, 141, 148, 153, 307
कालीप्रसाद बनर्जी- 105
कुतुबुल अखबार- 105
केप्टन फ्रांसिस पामर- 107
कृष्णजी गोविन्द लिमये- 108
काका साहेब लिमये- 109
कौस्तुभ किरण- 117
कैलाशचन्द्र बोस- 119
कालीकुमार दास- 121
कालीदास बंद्योपाध्याय- 122
कमर्शियल एण्ड शिपिंग गजट- 122
कृष्णमोहन बंद्योपाध्याय- 122
काशीवार्ता प्रकाशिका- 124
कालीदास मित्रा- 124, 128, 130
कालीपद बंद्योपाध्याय- 125, 191
कालीप्रसन्न सिन्हा- 125, 142, 144, 161, 393
क्वार्टरली मिशनरी इंटेलिजेंसर- 128
क्विल- 130
कृपाशंकर सिकंदराबादी- 133
केदारनाथ बंद्योपाध्याय- 140
कादरी- 141
केलकटा मंथली मैगजीन- 142
कश्फ-उल-अखबार- 142
कन्हैयालाल- 145
के.पी.मूरी- 149
कोमस ऑर केलकटा चारवारि- 149
कालीकाता वार्तावाह- 153
केदारनाथ दत्त- 155
कालीकाता पत्रिका- 155
कोटा गजट- 158
कविता कुसुमावली- 159
कृष्णचन्द्र मजूमदार- 159, 160, 172
करतान- 159
कैलाशचन्द्र सरकार- 159
कैरो लक्ष्मण छत्रे- 162
कृष्ण शास्त्री चिपलूणकर- 130, 162
केलकटा ईवनिंग न्यूज- 165
काव्य प्रकाश- 171
काशीनाथ मित्रा- 171
कन्नड शाला- 172
कन्नड प्राथमिक शिक्षण- 172

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कासिम-उल-अखबार- 173
कर्नाटक प्रकाशिका- 175
काशीनाथ विष्णु फड़के- 176
काशी विद्या सुधानिधि- 177
कल्पतरु- 179
कवि वचन सुधा- 180, 181, 182, 183, 184, 204, 209
कटक स्टैण्डर्ड- 194
कटक स्टार- 194
कंडकूरी वीरेशलिंगम- 197, 205, 210, 223, 373, 378, 383
कोवकोंडा वेंकटरत्नम- 202
कार्तिकप्रसाद खत्री- 202
केशवराम भट्ट- 202
कोकबे हिन्द- 207
कृष्णराव- 208
कामगार- 208
कष्ट विलासिनी- 212
कनुकुर्ति भुजंगराव- 213
कृष्णजी गणेश अत्रे- 217
कासिद- 220
के.मो.पंडित- 220
कामन सेन्स- 221
कवि चन्द्रोदय- 223
कैसर-उल-अखबार-ए-हिन्द- 223
कासिम अली जफा- 224
किरण- 225, 273
कलीद इम्तिहान मिडिल स्कूल व इंट्रेस- 234
काशी पत्रिका- 236
कलेण्डर- 244
कायस्थ समाचार- 245
कस्तूरी रंगा अय्यंगार- 248, 249, 250, 251, 252
के.पी.विश्वनाथ अय्यर- 252
करुणाकर मेनन- 253
के.श्रीनिवासन- 253
के.गोपालन- 254
कलकत्ता पंच- 264
कामधेनु- 266
कोहिनूर- 266
केसरी- 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 383, 416
कालीनाथ राय- 279
कनार्टक मित्र- 282
केरलमित्रम्- 282
कंदातिल वर्गीज मप्पिलई- 282, 358
कल्पनिधि- 290
कृष्ण कुमार मित्र- 292
कलीद-ए-कवानीन- 295
कालीचरण अवस्थी- 309
काव्य सुधानिधि- 310
कृष्णचन्द्र कैसर- 311
काजी एहतशामुद्दीन- 312
कनार्टक पंच- 313
करिश्मा-ए-दिलबर- 316
कविकुल कंज दिवाकर- 320
कायस्थ व्यवहार- 320
केरल संचारी- 320
केरल पत्रिका- 320
कुन्ही कृष्ण मेनन- 321
कयामत- 322
कटरा पंच- 324
कादिर शरीफ साबिर- 325
किताब-मसाइल-ए-कानून- 327
काशिफ-उल-हकीकत- 328
कलीद-ए-जन्नत- 329
कश्मीर दर्पण- 330
कर्नेल- 331, 363
कृष्णलाल जोश- 335
के.रामकृष्ण पिल्लै- 338
कायस्थ रिफार्मर- 339
कैसर-उल-अखबार- 339
केसरी- 341
कलीदे इम्तिहान- 349
केपीटल- 353
कालीचरण मुखोपाध्याय- 354
केरल मित्रम्- 358
के.सी.मामन मप्पिलई- 358
के.एम.चेरियन- 359
के.एम.मेथ्यू- 359

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काठियावाड टाइम्स- 362
कृष्णजी नारायण आठले- 364
केरल कोकिल- 364
कन्हैयालाल सिंह- 364
कायस्थ गजट- 367
कुँअर गणेश सिंह भदौरिया- 370
कलाभिवृद्धि- 372
कल्पवल्ली- 372
कन्नौज पंच- 372
करमणूक- 372
कोपल्ले वेंकटरमण राव- 372
कानपुर गजट- 372
कोतपल्ली सूर्याराव वेंकटराव- 373
कमर- 377
कवि और चित्रकार- 377
कामगार- 379
कपूरथला अखबार- 380
कोट सूर्यनारायण- 380
कनार्टक वैभव- 381
कृपाराम- 382
केशव पुरुषोत्तम मेहेंदले- 383
काल- 383, 388, 416, 417
कँवलराय चट्टोपाध्याय- 385
कोकब-ए-हिन्द- 388
कालीराम बरुआ- 388
कश्शाफ- 389
कोम्मूरि लक्ष्मी नरसिंहम- 390
कोनकंची वेंकटचलपति राव- 390
कायस्थ हितकारी- 391
काव्य रत्नावली- 391
केदारनाथ गोस्वामी- 396
काशीनाथ रघुनाथ मित्र- 397
कुमाऊँ पत्रिका- 398
कुरमी समाचार- 398
कलिंगा- 399
कानुकोलन कनकाद्रि रामराव- 399, 406
कश्फ-उल-हकायक- 399
कन्नड नाडगन्नडि- 399
काव्यार बिन्दु- 399
कुदरत अली खां- 400
कामरेड- 401
किशोरीलाल गोस्वामी- 402, 419
कृष्णकमल भट्टाचार्य- 407
कृष्णप्रसाद चौधरी- 413
कन्यका परमेश्वरी- 420
के.सुब्बय्या- 420
कलानिधि वृत्तांतम- 420
कुँवर हनुमंत सिंह- 421
कोम्मूरि लक्ष्मी नरसिंहराव- 422
काव्य सुधानिधि- 422
किशोरीलाल गोस्वामी- 423
कर्जन गजट- 435, 436
के.सी.महेन्द्र- 437
कलावती- 440

ख

खैरख्वाह-ए-हिन्द- 101
खुर्शीद- 144
खुरशेदजी कामा- 147
खुलासत-उल-अखबार- 149
खैरख्वाहे खल्क- 161
खेड़ा वर्तमान- 162
खोजा दोस्त- 168
खानदेश वैभव-190
खुरशीद-ए-आलम- 225
खुर्शीद दकन- 235
खिजर-ए-हिन्द- 264
खजनियत-उल-उलूम- 265
खजीना-उल-कवानीन- 271
खाडिलकर- 277, 278
खैरख्वाह-ए-इस्लाम- 289
खैरख्वाह-ए-खलाइक- 295
खादिम-ए-हिन्द- 300
खालसा-पंजाब- 316
खैरख्वाह-ए-कश्मीर- 317
ख्वाजा आशिक अली- 322
खुर्शीद-ए-आफाक- 324
खंजर-ए-इश्क- 325
ख्याल-ए-यार- 329

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खैरख्वाह-ए-अखलाक- 330
खैरख्वाह-ए-आम- 330
खालसा अखबार- 333
खालसा गजट- 336
ख्वाजा अहमद हसन- 337
ख्वाजा मुहीउद्दीन लखनवी- 337, 341
खादिम-उल-तुल्बा- 339
खत्री हितकारी- 346
ख्याल-ए-महबूब- 347
खुर्शीद- 348
खुशवंत सिंह- 352
ख्वाजा सैयद हसन खां- 353
खिचड़ी समाचार- 361
खैर-अंदेश- 364
खत्री समाचार- 373
खैरख्वाह-ए-जमींदारान- 377
खबर औरंगाबाद- 389
खुर्शीद अनवर- 405
खदंग-ए-नजर- 405
ख्याले-यार- 406
खालसा समाचार- 421
खादिम-उल-इस्लाम- 437

ग

गणपति कृष्णाजी- 5
गंगाकिशोर भट्टाचार्य- 8, 30, 35
गजट आफ इण्डिया- 16
गवर्नमेंट गजट- 26, 27, 31, 79, 117
गास्पेल मैगजीन- 32
गोविन्द चन्द्र कोनार- 35
गोविन्द रघुनाथ थत्ते- 47, 93, 94
ग्लीनिंज इन साइंस- 53
गंगाचरण सेन- 60
गिरीशचन्द्र बसु- 71
गिरिलाल जैन- 75
गंगानारायण बसु- 76, 90, 102
गौरीशंकर तर्कवागीस- 76, 77, 148
गोविन्द विट्ठल कुंटे- 79
गेतीनुमा- 80
गुले राना- 97
गिरीशचन्द्र घोष- 97, 133, 165
गुरुचरण रायचौधरी- 101
गोपालकृष्ण गोखले- 108
गोविन्द चन्द्र डे- 117
गोविन्द चन्द्र बंद्योपाध्याय- 117, 124
गार्जियन- 125
ग्वालियर स्टेट गजट- 126
गुलाम नसीरुद्दीन- 130
गुलशन-ए-नौबहार- 141
गुलाम मुहीउद्दीन हनीफ- 158
गोसाई दासगुप्त- 158
गंज-ए-शायगां- 159
गद्य प्रसून- 162
गोवा संस्थान- 166
गुजरात मित्र- 168
गुजरात दर्पण- 168
ग्रामवार्ता प्रकाशिका- 168
ग्रामवार्ता- 168
गौरीशंकर राय- 175
गुंजीकर- 179
गुरुचरण गुप्ता- 185
गंजीना-ए-उलूम- 190
गंगाप्रसाद- 190
गणपतराव कोल्हटकर- 191
गोविन्दचन्द्र पटनायक- 191
ग्वालियर गजट- 192, 263, 320, 349, 352, 409
गोदावरी विद्या प्रबोधिनी- 197
गुलदस्ता नजाइर- 202
ग.ल.चंदावरकर- 208
गुरुप्रसाद सेन- 218, 393
गंजीना-ए-नजायर- 220
गोपालकृष्ण देवधर- 249
गोपालहरि पुणतांबेकर- 261
गणेशप्रसाद शर्मा- 261
गोविन्दनारायण मिश्र- 261, 374
गुलाम सुबहान खां- 264
गंगालहरी- 265
गुलाम दस्तगीर- 265

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजराती- 266
गुलाम हजरत खाँ- 267
गोविन्दचरण वकील- 267
गोपालकृष्ण गर्दे- 273
गोपालगणेश आगरकर- 273, 275, 276
गुरुदत्त विद्यार्थी- 284
ग्रूस गजट- 286
गोविन्द भास्कर पार्सेकर- 286
गुलदस्ता बनारस- 287
गुलदस्ता-ए-सुखन- 290
गोवामित्र- 290
गोपालराम गहमरी- 291, 307, 438
गणेश विश्राम पाटकर- 292
गुलशन-ए-रियाजी- 295
गुलकदा शफक- 296
गुलकदा मुश्ताक- 302
गुलकदा जीनत सुखन- 307
गुलदस्ता-ए-अंजुमन- 308
गौहर- 308
गौहर-ए-शादाब- 308
गुलाम हमदानी- 308
गुलदस्ता-ए-बिहार- 308
गौहर-नजफी- 308
गंगाप्रसाद गुप्त- 310, 411
गुलाम गौस- 311
गौरक्षा- 312
गुलदस्ता-ए-नाज- 315
गौर कायस्थ- 320
गमख्वार-ए-हिन्द- 323
गुलबन सुखन- 324
गुलजार-ए-जहाँ- 325
गुलजार-ए-खुल्द- 325
गुलकदा-ए-बहार- 326
गुलदस्ता-ए-मजामीन- 326
गंगाप्रसाद मुख्तार- 326
गंगा सहाय- 327
गुलदस्ता-ए-हिकमत- 327
गौहर- 330
गुलदस्ता-ए-सारन- 330
गोवात्मा- 330
गोधर्म प्रकाश- 330
गंगाधर रायचौधुरी- 333
गुणाभिराम बरुआ- 333
गुलदस्ता-ए-कलाम- 335
गुंचा-ए-मुराद- 336
गुजराती पंच- 337
ग्रंथ प्रदर्शिनी- 337
गयाराम- 339
गुलजार-ए-सुखन- 347, 381
गुलो बुलबुल- 348
गोवा पंच- 349
गुलजार-ए-अवध- 352
गुलशन-ए-दाग- 353
गुर्जर हितकारी- 353
गोपाल गणेश आगरकर- 355
गोमंतक- 374
गोपालराव ओगले- 375
गम्ज-ए-यार- 375
गुलचीं- 376
गया पंच- 388
गोनुगुंट कोट्या शास्त्री- 390
गुलाम नबी- 397
गुलदस्ता-ए-सुखन- 397
गोपाल अय्यंगार- 399
गणेश नारायण कर्वे- 399
गुल-ए-रौअना- 399
गायत्री- 406
गंजाम न्यूज- 406
गौरीशंकर शर्मा- 411
गुराखी- 413
गुलबर्ग समाचार- 420
गंजाम उड़िया हितवाहिनी- 421
गुलाम हमदानी गोहर- 421
गोपालदास बरैया- 421
गणेशशंकर विद्यार्थी- 426
गंगाप्रसाद वर्मा- 436
गणेशप्रसाद शर्मा- 437
गुलबन-ए-सुखन- 509

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घ

घर बंधु- 271

च

चार्ल्स बिल्किंस- 5
चार्ल्स ब्रूस- 26
चाबुक- 58
चार्ल्स लॉसन- 71
चार्ल्स बुचर- 80
चर्च आफ इंग्लैंड मैगजीन- 81
चर्च मैगजीन- 81
चार्ल्स नेपियर- 90
चैतन्य चरण अधिकारी- 100
चंद्रोदय- 100, 105
चन्द्रशेखर उपाध्याय- 124
चश्मा-ए-फैज- 129
चश्मा-ए-खुर्शीद- 129
चार्ल्स विलियम एलन- 129
चिकित्सा रत्नाकर- 134
चंद्रिका- 142, 213
चमत्कार मोहन- 155
चितरंजिका- 171
चिकित्सक- 175, 221
चश्म-ए-इल्म- 192
चिदानंद चौधरी- 205
चिरागे राजपूताना- 213
चश्म-ए-इंसाफ- 224
चंद्रांशु- 282
चिंतामणि- 282, 373
चतुर्भुज पटनायक- 310
चमन-ए-सुखन- 316
चमनिस्तान-ए-सुखन- 317
चेकलाथु कुंजिरामा मेनन- 320
चम्पारण चन्द्रिका- 330
चम्पारन हितकारी- 320
चौधरी जियालाल सरावगी- 323
चिरागउद्दीन लायक- 324
चिराग-ए-काबा- 327
चमन-ए-हिन्द- 336
चलता पुर्जा- 339
चंद्रकुमार अग्रवाल- 364
चिलुकूरि वीर भद्रराव- 385
चौदहवीं सदी- 397
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी- 403
चित्रमय जगत- 405
चंपावती- 420
चिन्तामणि घोष- 423

छ

छोटो जागुलिया हितैषी सभार पत्रिका- 134
छोटूलाल मिश्र- 237, 240
छत्तीसगढ़ मित्र- 429, 430, 431, 432, 433, 434

ज

जानटेट- 3
जोआलो दे बुस्तामेंत- 5
जावजी दादाजी- 5
जान कैरोलस- 7
जर्नल डिस सेवण्ट्स- 7
जाम-ए-जहाँनुमा- 8, 36, 37, 38, 39, 51, 102, 123, 151, 303
जेम्स आगस्टस हिकी- 8, 11, 13
जे.एस.बंकिघम- 18, 33, 45
जार्ज प्रिंसप- 26
जान होवेल- 26
जान क्लार्क मार्शमैन- 29, 30, 67
जेम्स सदरलैण्ड- 32, 45, 52
जेम्स मीकांजी- 33
जे.डब्ल्यू.जानसन- 33
जान् बुल- 33, 52
जेम्स मीकांजी- 33
जे.एच.स्टाक्वेलर- 33, 52, 65, 69
जगत प्रकासादरस- 53
जेम्स डी.हर्बट- 53
जर्नल आफ द एशियाटिक सोसायटी- 53

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जार्ज पिकान्स- 57
जाम-ए-जमशेद- 62, 102, 123, 221
जार्ज मार्शमैन- 63, 79
जब्दहतुल अखबार- 63, 101, 397
जे.ग्राण्ट- 66
जे.टी.पियर्सन- 66
जगदीश चरण शाह- 66
जान स्टोन- 77
जगननारायण मुखोपाध्याय- 77
जेम्स ह्यूम- 77, 80
जामेअ-उल-अखबार- 85
जॉन राबिनसन- 89
जान मेकनाल्ड- 89
जमीलुद्दीन खाँ हिज्र- 91
जे.लांग- 95
जगदीपक भास्कर- 98
जगत बंधु- 100
जे.एडमंड शर्के- 105
जायरीने हिन्द- 121
जान न्यूमार्क- 122
जयाजी प्रताप- 126, 127, 128, [illegible], 261, 350, 363
जगन्मित्र- 141
जनार्दन हरी आठले- 141
जाफर हुसैन चिश्ती- 146
जगहितकारक- 159, 160
जगनमोहन तर्कालंकार- 161
जेमन कर्म तेमन फल- 162
जलधर सेन- 168
जदुनाथ तर्कभूषण- 169
जोगेन्द्रनाथ घोष- 169
जगमोहन तारालंकार- 172
जीवन शिक्षण- 172
ज्योतिर्मयी- 175
जखीरा बाल गोविन्द- 190
जग हितेच्छु- 192
जबलपुर समाचार- 208
जिया उल अखबार- 209
जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल- 210, 291
जयपुर अखबार- 213
जियाफ्री एडवर्ड पावेल- 216
जन विनोदिनी- 218
जरीदा रोजगार- 218
जहीर-उल-इस्लाम- 218
जर्नल आफ इंडियन एग्रीकल्चर मिनरलाजी एण्ड स्टेटिस्टक्स- 220
जिया-उल-इस्लाम- 234
जगन्नाथ चतुर्वेदी- 240
जी.सुब्रमण्य अय्यर- 247, 249, 252, 253, 285
जे.ए.सेंटब्रुक- 249
जन्मभूमि- 260, 384, 385
जयपुर गजट- 260
जयंत तिलक- 278
जम्बू प्रकाश- 282
जानहिदश नॉव्हश कोफीस्तश- 286
जामी करतान- 288
जुर्रियात हुसैन रिजवी- 288
जमाना- 308
जरीदा नुमाइश- 308
जामये मसाइल इल्मे तिब- 309
जगन्नाथ दास रत्नाकर- 310
जम्मू गजट- 311
जामय-उल-उलूम- 311
जोन्स गजट- 311
जामए-उल-अखलाक- 313
जिया-उल-हक- 313
जैन प्रकाश- 313
ज़खीरा-ए-तालीम- 317
जगदीशचन्द्र विद्यार्थी- 321
जर्नल आफ इंडियन आर्ट- 322
जादू- 322
जे.एफ.फलीट- 323
जरीफ-ए-हिन्द- 325
जौहर-ए-सुखन- 327
जालिब देहलवी- 331
जरीफ-उल-हिन्द- 334
जमींदार- 334, 401
जल्वा-ए-एजवी- 335
जीनत-उल-अखबार- 335

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगदम्बा प्रसाद- 336
जरीदा-ए-इंतिजामिया- 337
जिक्र-उल-हबीब- 338
जर्नल आफ द बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी- 339
जकाउल्ला- 339
जुबली पेपर- 340
जहाँगीर खाँ- 347
जुबली गजट- 347
जानकी- 364
जाट समाचार- 364
जगन् मित्र- 376
जनाना पत्रिका- 382
जबान- 383
जहूरूल इस्लाम गौह्रर- 385
जीवनराम फुकन- 396
जहांनुमा- 399
जैन गजट- 399
जी.श्रीनिवास शास्त्री- 400
जस्ट द पीस आफ बाम्बे- 406
जिंदादिल- 405
जौहर-ए-हिन्द- 405
जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल- 410
जे.पी.मलूरियन- 412
जैन भास्कर- 415
जर्नल आफ द हेल्थ- 416
जफर-उल-मुल्क अलवी- 419
जनमंचि शेषाद्रि शर्मा- 420
जल्वा-ए-महबूब- 421
जैन मित्र- 421
जगन्नाथ दास- 423
जासूस- 438

झ

झज्जर पंच- 312

ट

टैटलर- 8
टाइम्स आफ इण्डिया- 19, 73, 74, 75, 323, 416
टेलीग्राफ- 21, 26
टी.ई.वेब्ले- 71
टी.सी.श्रीनिवासाचार्य- 175
टीचर- 353
टाइम्स आफ असम- 396
ट्रिब्यून- 279, 280, 281

ठ

ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा- 422

ड

डेविड ब्रूस- 4
डेनिस डि सैलो- 7
डेली करंट- 8
डिफो- 8
डा. शूलब्रेड- 18
डब्ल्यू.एच.पियर्स- 37, 44
डेली एडवर्टाइजर- 43
डेली न्यूज- 43, 70
डा. जेम्स ब्रायस- 44
डी.एल.रिचर्डसन- 45, 55, 57, 65
डा. इविलेघ- 66
डा. फ्रेडरिक कारबिन- 66, 70
डा. सी.फिन्च- 66
डा. ग्राण्ट- 71
डी. स्काट ब्रेमनर- 71
ड्रुमंड- 77
डब्ल्यू.एच.कैरी- 81, 97
डा. डनलप- 123
डा. जी.डब्ल्यू.मैरियट- 140
डोरीलाल- 177
डी.वी.गुण्डप्पा- 219
डेक्कन स्टार- 265, 275
डा. सैयद अकबर शाह- 267
डा. अशफाक हुसैन- 282
डी. अनंतम- 260

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डबीर कृष्णमूर्ति- 359, 399
डा.सूर्यदेव शर्मा- 399
डा. गौरीशंकर हीराचंद ओझा- 402
डान- 415
डान एण्ड सोसायटीज मैगजीन- 415

ढ

ढाका न्यूज- 144
ढाका प्रकाश- 160
ढाका वार्ता प्रकाशिका- 163
ढाका दर्पण- 169, 171
ढुण्ढिराज शास्त्री- 266

त

ताराचंद दत्त- 34, 35
तमिल मैगजीन- 60
तत्वबोधिनी पत्रिका- 87, 88
तिनकोरी मुकर्जी- 99
तारामोहन मित्र- 99
तोहफा-तुल-हदायक- 105
तालीम-उल-हलायक- 111
तयस्सुर-उल-अखबार- 116
ताराचंद चक्रवर्ती- 130
तिलिस्म-ए-लखनऊ- 143, 144
तमांतक- 147
ताज-उल-अखबार- 148
तहजीब-उल-अखलाक- 153, 194, 195
तारकचन्द्र चूड़ामणि- 157, 161
तिलिस्म-ए-हैरत- 157
त्रिपुराज्ञान प्रकाशिनी- 159
त्यागराज वेंकटरमन- 159
तत्वबोधिनी- 171
तत्व विकासिनी- 179
तुषार कान्ति घोष- 189, 190
तेलुगु बैप्टिस्ट- 218
तोहफा-ए-कश्मीर- 221
तहजीब-उल-आसार- 265
तेरहवीं सदी- 265, 308
तकमील-उल-हिकमत- 267
तिजारत-उल-अखबार- 267
ताईद-उल-इस्लाम- 282
तूती-ए-हिन्द- 283, 290
तहजीब- 290, 413
तबलीग- 294, 382, 383
तक्मला- 311
तर्जुमान- 312
तूती-ए-हिन्द- 315
तोहफा-ए-उश्शाक- 315
तिब्बे हैवानात- 315
तोहफा- 316
ताजुल अखबार- 317
तारका- 320
तुलसीराम स्वामी- 321
तबीब- 323
तावीज- 327
तुगरा-ए-एजाज- 327
तेज बहादुर सप्रू- 330
तस्वीर-ए-सुखन- 334
तीसमार खां- 335
तहजीब-ए-सुखन- 335, 347
तजुर्मान-ए-हकीकत- 336
तोहफा-ए-मुहम्मदिया- 381
तफरीह-ए-अहबाब-382
तूमुलरि वेंकट रमणय्या- 385
तफरीह- 389
तिलकचन्द्र शर्मा- 396
तेलुगु लॉ वर्तमानी- 400
ताजा अखबार- 406
तोहफ-ए-सरहद- 413
तुलसीराम- 416
तहजीब-ए-निस्वां- 417, 418
तजकिरत-उल-कलाम- 419
तज्क-ए-महबूबिया- 421
तेलुगु उद्योगस्तुडु- 438

थ

थाम होलिंगबरी- 25
थामस जेवल बेनट- 74

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थियासोफिस्ट- 266
थायोडोर बेक- 385

द

दिग्दर्शन- 28, 29
दिग्दर्शन आर इंडियन यूथ्स मैगजीन- 28
द्वारकानाथ टैगोर- 46
देहली गजट- 63, 159, 163, 220, 221
दक्षिणारंजन मुखोपाध्याय- 59
दौलतचंद्र चटर्जी- 60
दर्पण- 61, 62
दूरबीन- 63, 138
देहली उर्दू अखबार- 68, 69, 70, 89
दिलीप पडगांवकर- 75
देहली एडवरटाइजर- 79
दरिया-ए-नूर- 121, 124
दुर्भिक्षानिका- 122
द्वारकानाथ मजूमदार- 122
दादाभाई नौरोजी- 125
दीवानचंद- 129
दादाभाई कावसजी दाढ़ीवाला- 130
द्वारकानाथ राय- 131
द्वारकानाथ होरी- 145
दिन वर्तमानी- 146
दिक् प्रकाश- 158
दीनानाथ सेन- 160
देहली इंस्टीट्यूट जर्नल- 161
दा.पा.रानाडे- 163
दबदबा-ए-सिकंदरी- 165
देश सुधारणेच्छु- 166, 205
द्वारकानाथ दास- 168
देशबंधु चितरंजन दास- 171
दम्भहारक- 201
दक्षिण तारा- 207
द्वारकानाथ गोविन्द वैद्य- 208
दुर्गाप्रसाद शुक्ल- 208
दीनबंधु बंद्योपाध्याय- 210
द्वैतम कोटेश्वर शर्मा- 210
दामोदर शास्त्री- 210
दीनबंधु- 224
दबीर-ए-हिन्द- 224
दामोदर सावलाराम चंदे- 224
दबदबा-ए-केसरी- 234
दुर्गाप्रसाद मिश्र- 237, 240, 261, 267, 282
दिनकर प्रकाश- 240, 316
देशभक्तन- 251
देहली पंच- 267, 397
दारुल सल्तनत- 282
दबीर-उल-मुल्क- 283
देवनागरी प्रचारक- 283
देश हितैषी- 287, 292
देवकीनंदन तिवारी- 291
दबदबा-ए-इस्लाम- 295
दास्तान-ए-सैयाह- 302
देश उपकारक- 309
दक्षिण वृत्त- 310
दबीर- 311
दकन पंच- 322, 346
दरबार-ए-अकबरी- 323
दामन-ए-गुलचीं- 324, 420
दर्द-ए-दिल- 327
दिनचर्या- 330
देवाजीराव तंजावरकर- 331
दानिश-ए-हिन्द- 334
देहली गाइड- 338
देशाभिमानी- 338, 389
देहली टेलीग्राफ- 338
देवगुत्तम शेष चलपतिराव- 338
दिलगुदाज- 340, 353
दोस्त- 341
दीनानाथ टंडन- 346
दोस्त-ए-हिन्द- 346
दाग-ए-दिल- 347
दीपिका- 349
दिलसोज- 349
दाग- 352
देवनागरी गजट- 354
द्वारका प्रसाद उफक- 354
दीन मित्र- 362

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दबीर-ए-हिन्द- 363
दीवान बहादुर कृष्णमाचारी- 364
दीपक- 367
देश सेवक- 375
दामन-ए-बहार- 380
दलील-ए-इस्लाम- 383
देशोपकारी- 383
दाशरथि राऊत- 383
दकन गजट- 388
दीवान आत्मा- 400
दीनबंधु- 400
देवकीनन्दन खत्री- 402
दोआबा- 406
देवेन्द्र शर्मा- 411
दबदबा-ए-आसिफी- 419
देवीदत्त शुक्ल- 428
देवीदयाल चतुर्वेदी मस्त- 428
दपूरु नरसय्या- 437

ध

धर्म मर्म प्रकाशिका- 123
धर्मराज- 131
धूमकेतु- 131, 310
धर्म प्रचारिणी- 171
धर्म तत्व- 172
धोंडो काशीनाथ फड़के- 176
धोंडोपंत- 204
धौलपुर गजट- 207
धारवाड वृत्त- 208
धर्मबोधिनी- 210
धर्म प्रकाश- 234
धार दरबार गजट- 265
धर्म प्रचारक- 288, 320
धर्म्मोपदेश- 292
धर्म जीवन- 293
धर्म्म दिवाकर- 330
धर्म सुधावर्षण- 364
धर्म संरक्षिणी- 337
धूर्त पन्च- 377
धर्मवर्द्धिनी- 381
धीरंजनी- 381
धेला अखबार- 381
धीमणि- 400
धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री- 405

न

नारद- 2, 406
नावेल्स डी ला रिपब्लिकन डेस लेट्रेस- 8
न्यू एशियाटिक मिसलेनी एण्ड बंगाल रजिस्टर- 17
नारायणदत्त- 49
नीलरतन हालदार- 55
नौरोजजी दराबजी- 58, 60
नतवर विकास- 60
नील कँवल दास- 81, 107, 130
नेटिव हेरल्ड- 97
नित्य धर्मानुरंजिका- 97
नन्दकुमार कविरत्न- 97
नीलाम्बर मुखोपाध्याय- 101
नवकृष्ण राय- 101
नवीनचन्द्र- 102, 142
नरेश अप्पाजी उर्फ बाबू साहब द्रविड़- 108
निजाम विजय- 108
नवभारत- 109
नुजहतुल नवाह- 116
नागरी प्रचारिणी पत्रिका- 119
नूर-आला-नूर- 124, 129
नूर-उल-बिसार- 124
नूर-उल-अनवार- 131
नूर-ए-मगरिबी- 133
नूर-ए-मशरिकी- 133
नौशेरवां दाराबजी- 141
नैयर-ए-आजम- 141
नित्य सार संग्रह- 143
नित्यसार संग्रह और ज्ञान सागर- 143
नवकृष्ण बसु- 144
नारायण छत्तराज गुणानिधि- 149
नुसरत-उल-अखबार- 153, 157

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नसीम- 157
न्यूजीलियर- 160
नवल किशोर सेन- 163
नेटिव ओपीनियन-169, 170, 273
नारायण गणेश चंदावरकर- 166
नरहर रघुनाथ फाटक- 168
नारायण महादेव- 169
निजाम-उल-अखबार- 171
नव प्रबंध- 177
नहर-उल-फवायद- 179
नादर्न इण्डिया पत्रिका- 189
नासिक वृत्त- 192
नैयरे राजस्थान- 194
नसीर अली- 201
नादिर उल अखबार- 205
नूर अफशां- 207
नूर उल अखलाक- 210
निबंध माला- 211
नाटक प्रकाश- 212
नवोदित हरिश्चन्द्र चंद्रिका- 212
नासिक समाचार- 218
नासिर-उल-अखबार- 210
नारायण वासुदेव जोशी- 220
नौरोज अली शैदा- 221
नारायण मेघाची लोखंडे- 224
नैयर-ए-आजम- 224
नसीम-ए-सहर- 224, 329
नागरी पत्रिका- 235
नसीम-ए-सारन- 235
नसीम-ए-आगरा- 235
नजायर कानून-ए-हिन्द- 236, 266
नैरंग-ए-मैगजीन- 245
न्यू इंडिया- 250
नामजोशी- 265
नव व्यवहार संहिता- 271
नैयर-ए-हिन्द- 279
नरसिंह चिंतामणि केलकर- 277, 278
नज्म-उल-हिन्द- 279
नरेन्द्रनाथ गुप्त- 279
नतीजा-ए-सुखन- 286
नूर-ए-बदायूं- 288
नफीस-उल-अखबार- 289
नजायर वीकली नोटिस- 289
नारा मस्ताना- 289
नफीस कानपुरी- 290
नज्म-उल-अखबार- 290, 309
नूर-उल-अखबार- 290
नदीम- 308
नाला-ए-उश्शाक- 312
निजाम-उल-अखबार- 312
नामा-ए-यार- 313
निगम ओमायान- 315
नूर-ए-बसीरत- 315
नाजिमा बेगम- 315, 327
नसीम-ए-सुबह- 317
नागपुर एंड बरार टाईम्स- 320
नागपुर समाचार- 320
नवविधान- 322
नेटिव क्रिश्चियन पेपर- 322
नौबहार- 327
नाजिम-उल-हिन्द- 328
नामा-ए-उश्शाक- 328, 330
नामा-ए-दिलसोज- 328
नसरत-उल-सुन्नत- 329
नीति प्रकाशिका- 330
नीति दर्पणम्- 330
नूर-उल-इस्लाम- 331
न्याय सुधा- 333
नसीम-ए-जन्नत- 334
नूर अहमद- 334
निसार अली- 334
न्यू गाइड- 335
नाला-ए-जख्मी- 336
नगम-ए-बहार- 336
नगमा-ए-अनादिल- 337
नज्म-उल-हिन्द- 337
नवाब-मिर्जा देहलवी- 338
नवसंवाद- 339
नामा-ए-गंजूम- 341
नगमा-ए-हिन्द- 347

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारोमन- 347
नवेद-ए-उम्मीद- 347
नोरि गुरुलिंग शास्त्री- 349
नजरानि दीपिका- 349
नरेन्द्र नारायण सिंह- 350
नज्म- 354
नसीम-ए-सम्भल- 354
नेशन- 354
नसीम-ए-सहर- 364
नगमा-ए-यार- 367
न्यायचक्षु- 367
नीलमणि विद्यारत्न- 367
निजाम-ए-हिन्द- 372
नरहर रामचंद्र जोशी- 372
नादेल्ला पुरुषोत्तम- 377
नागरी नीरद- 380
नूर अली नूर- 383
नारायण बालकृष्ण नाखरे- 387
नन्दी राम- 388
नेलदूर पार्थसारथी अय्यंगार- 390
नाट्य पत्र- 391
नूरुल हसन नसीम- 399
नारायण सिंह अहलुवालिया- 399
नागरी प्रचारिणी पत्रिका- 402, 403
नन्दकुमार देव शर्मा- 405
नौबतराय नजर- 405
नज्जारा-ए-आलम- 406
निरन्जन शर्मा अजित- 411
निजाम वैभव- 415
नंदिराजू चलपति राव- 412
नलगोंडा कोदंड रामय्या- 412
न्यू एज- 416
निगमागम चंद्रिका- 419
नाथूराम प्रेमी- 421
न्याय बोधिनी- 421
नवरस- 422
नैरंगे जहां- 422
न्यू हिन्दुस्तानी रिव्यू- 437
नसीम- 438

प

पंचानन कर्मकार- 5
पेकिंग गजट- 6
पोस्ट आफ द एशियाटिक मिरर आर द स्पिरिट आफ पब्लिक ओपीनियन इन इंडिया- 18
पशुबलि- 37
पार्थेनान- 57
प्रसन्न कुमार टैगोर- 58
प्रेमचन्द राय- 58
पेस्तनजी माणिकजी मोतीवाला- 62
प्रजामित्र- 66
प्रजातंत्र- 66
प्रो. जयगोपाल बैनर्जी- 69
पार्वती चरण दास- 76
प्रभाकर- 78, 79, 131
प्यारे चंद मित्रा- 81, 134
प्लांटर्स जर्नल- 85
प्लांटर्स जर्नल मरकेन्टाइल एण्ड एग्रीकल्चर इंटेलीजेंसर-85
पी.वेंकटराव- 86
पाक्षिर विवरण- 90
पं.धर्मनारायण- 96, 111
प्रभुदयाल- 99
पिकनिक मैगजीन- 103
पंचानन बंद्योपाध्याय- 103
प्रेमनारायण- 112
प्राणकिशन- 113, 115, 142
पेम्फलेटियर- 121
प्रबोध चन्द्रिका- 125, 147
पूना आब्जर्वर- 129
प्रिय माधव बसु- 131
पंजाब गवर्नमेंट गजट- 146
पीटर पर्सिवल- 146
परशु- 147
पयाम-ए-आजादी- 147, 148
पंच- 149
प्रेस- 150
पूर्णिमा- 157
पूर्ण चन्द्रोदय- 158

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिदर्शक- 161, 271
प्रजा हितैषी- 162
पुणे पाठशाला पत्रक- 162
पुणे वैभव- 271, 416
प्रवीणकान्त उत्तमराव रेशमवाला- 168
परिदर्शन- 169
पवना दर्पण- 171
पधिममतारका- 171
पायनियर- 173, 174
पल्ली विज्ञान- 179
प्रियचरण सरकार- 185
प्रबोध सिंधु- 190
पं. गोपीनाथ- 197
प्रेम विलासिनी- 202
प्रमोदशरण पाठक- 204
पुरुषार्थ प्रदायिनी- 205
प्यारी मोहन आचार्य- 210
प्रयाग धर्म प्रकाश- 213
प्राण चोपड़ा- 217
परवस्तु वेंकट रंगनाथ स्वामी- 219
परवस्तु श्रीनिवास जगन्नाथ स्वामी- 219
प्रिंस आफ वेल्स गजट- 221
पंचानन- 234
पादरी रज्जब अली- 235
पंजाब रिव्यू- 235, 339
प्यारेलाल- 241
प्रताप- 244, 426
पंचानंद- 261
पुरुषोत्तम पत्रिका- 266
प्रबंध कल्पवल्ली- 271
प्रभाती- 271
पंडित प्रताप कृष्ण आन- 279
पं. हरगोपाल- 286, 309
पयामे आशिक- 287
पुलपर्ति शांतय्या- 290
प्रयाग समाचार- 291
प्रजाबंधु- 292
पंडित छेदीलाल- 295
प्रताप नारायण मिश्र- 297, 299, 300, 306, 307
पब्लिक ओपीनियन- 302
पयाम-ए-यार- 302, 303
पं. बिशननारायण- 308
पं. दीनदयाल- 308, 327
पुणे पंच- 309
पैक -ए-आसिफी- 311
पं. शिवनाथ- 312
पं. श्रीलाल- 313
पंजाब लोकल सेल्फ गजट- 317
प्रकाशिका- 320
प्रबोध रत्न- 325
पारलिंग प्रभुअय्या- 325
पैक-ए-सबा- 326
पंडित जगमोहन नाथ शौक- 328
परकाला-ए-आतिश- 328
पंडित जगन्नाथ वैद्य- 330
पी. रामकृष्ण- 330
पंजाब दर्पण- 331
पंडित बनवारीलाल मिश्र- 331, 363
प्रदीप- 333, 412
पंडित राजनाथ- 334
पोलिटिकल सिपाही- 334
पाटे खाँ- 335
पंजाब ओपीनियन- 336
पंजाब समाचार- 337
पं. शिवप्रसाद- 337
पी. श्रीनिवास जगन्नाथ शास्त्री- 337
पालडुगु पनकल राव- 338
पैकर- 341
पंडित हरगोपाल- 341
पंडित दीनदयाल शर्मा- 341
पयाम- 347
पंडित चन्द्रशेखर मिश्र- 349
पैसा अखबार- 349
पं. प्रताप कृष्ण- 352
पण्डित देवराज पंचानन शास्त्री- 355
पं. भवानीचरण मुखोपाध्याय- 359
प्रभा- 362
पं. मुरलीधर पाठक- 363
पं. ब्रजमोहन दत्तात्रय कैफी- 364
पंजाब- 364

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब गजट- 364
प्रयाग मित्र- 367
प्रजा हितैषी- 367
प्रभुदयाल पांडेय- 368
प्रसिद्ध चित्रावली- 370
पुष्कर प्रदीप- 371
पं. रामप्रताप शर्मा- 371
परोपकारी- 373
पद्मसिंह शर्म्मा- 373
प्रभात- 378
पीयूष प्रवाह- 379
पंजाब पेट्रियट- 379
पुलिस न्यूज- 380
पेड़णे समाचार- 385
प्रबुद्ध आंध्र- 385
पनक्कम आनंदाचार्युलु- 390
प्रबोधचन्द्र दत्त- 396
प्रभात चन्द्र शर्मा- 396
पंडित- 396
पं. कुंजीलाल शास्त्री- 400
पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री- 400
पंजाब आर्गन- 400
पं. सुधाकर द्विवेदी- 402
परवाना- 406
पं. हरिलाल शर्मा- 406
पत्रिका सार प्रकाशिका- 407
प्रभावती तारा- 407
पंच बहादुर- 407, 413
प्रभावती- 415
पु.बा.खेर- 417
पयाम-ए-महबूब- 419
प्रजाबंधु- 420
पंजा-ए-निगारीन- 422
पद्मनाथ गोहंई बरुआ- 439

फ

फस्ट- 4
फ्रेडरिक कोनिंग- 4
फिलन थ्रोप्स- 13
फ्रांसिस ग्लाडविन- 15, 16
फ्रेण्ड आफ इण्डिया- 29, 30, 31, 63, 66, 71, 94, 95, 97, 98, 122, 215
फ्रांसिस सेण्डीज- 32
फरदुनजी मर्झवानजी- 41
फिदा हुसैन- 63
फिलानथ्रोपिस्ट- 63
फोर आना मैगजीन- 65
फोर्ट सेंट गजट- 66
फ्रैंक मोरेस- 75
फ्री चर्चमैन- 89
फवायद-उल-नाजरीन- 95, 101, 111, 117
फवायद-उल-शायकीन- 99
फॉलियन- 99
फतह-उल-अखबार- 133
फोरबिस- 144
फीनिक्स- 144
फार्वर्ड- 172
फकीर मोहन सेनापति- 191
फखे दक्कन- 219
फरहत-उल-एहबाब- 220, 231
फादर लुइस- 223
फतह मोहम्मद- 223
फ्रीसेण्ट- 247
फरोग- 271
फुनून- 302, 327
फैज-ए-सुखन- 302
फितना- 303
फिलासफर- 311
फतहगढ़ पंच- 328
फर्रुख- 328
फीरोज निगार- 329
फसीह-उल-अखबार- 334
फसीहउल्ला- 334
फीरोजपुर पंच- 337
फरियाद-ए-जख्मी- 339
फैज-ए-आम- 340
फरियाद-ए-हिन्द- 397

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब

बंगाल गजट ऑर केलकटा जनरल एडवरटाइजर 8, 11, 13
बाम्बे गजट- 19
बंगाल गजट- 8, 13, 30
बंगाल हरकारू- 15, 21, 22, 23, 26, 44, 45, 46, 52, 55
बंगाल जर्नल- 16, 20
बाम्बे हेरल्ड- 19, 28, 52, 73
बाम्बे कूरियर- 19, 73
बंगाल डायरेक्टरी- 19
बंगाल क्रानिकल- 23, 44, 46, 52
बंगाल हरकारू एण्ड क्रानिकल- 23, 46, 55
बंगाल हेरल्ड- 44, 55, 58
ब्रह्मेनिकल मैगजीन- 31, 34
बंगाल ईवनिंग पोस्ट- 32
ब्रिटिश इंडियन मिलिटरी रिपाजटरि- 37
बंगाल वीकली मैसेंजर- 45
बाबू राधाकृष्ण दास- 47
बनारस अखबार- 47, 93
ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय- 47
बंगदूत- 54, 55
बंगाल स्पेक्टेटर- 58, 81, 83
बेनी माधव डे- 60
बाल गंगाधर शास्त्री जाम्भेकर- 61, 62
बंगाल मंथली स्पोर्टिंग मैगजीन- 65, 69
बाबू शिवप्रसाद- 69
बुस्ट- 73
बाम्बे स्टैण्डर्ड- 73
बाम्बे टेलीग्राफ- 73
बाम्बे टाइम्स- 72, 73
बाम्बे स्टेट्समैन- 74
बंगाल कैथलिक एक्सपोजिटर- 77
बंगाल कैथोलिक हेरल्ड- 77
बकेट- 89
बेलिन- 89
बनारस गजट- 94
बंगाली- 97, 270
बंगाल रेकार्डर- 97
बाम्बे टेलीग्राफ एण्ड कूरियर- 99
ब्रजनाथ बोस- 103
बनारस मैगजीन- 103
बनारस रेकार्डर- 103
बागोबहार- 105
बागेनूर- 124
बंगाल टाइम्स- 122
बाम्बे गार्जियन- 123
बुद्धि प्रकाश- 124, 141, 316
बागे नसीहत- 125
बंगाल स्पेक्टेटर- 130
बलदेव सिंह- 133
बाम्बे क्वार्टरली रिव्यू- 141
बंगवार्ता वाह- 142
बंग विद्या प्रकाशिका- 142
बाम्बे टाइम्स- 145
बेनी प्रसाद- 146
बलदेव प्रसाद मिश्र- 157
बलाईचन्द्र सेन- 158
बंग हितार्थिनी- 160
बंगोज्ज्वल- 163
बंगाली- 164, 165, 188
बलवंत विनायक गोखले- 166
बसंत कुमार घोष- 168
बामा बोधिनी- 169
बेलगांव समाचार- 171
बरकती- 172
बुद्धि विलास- 179
बाल गंगाधर तिलक- 188, 273, 275, 276, 277, 278, 375
बलवंत जनार्दन करंदीकर- 190
बालगोविन्द माथुर- 190
बोधदायिनी- 191
बालेश्वर संवाद वाहिका- 191
बुद्धि वल्लभ पंत- 201
बदरीदत्त पाण्डेय- 201
बिहार बन्धु- 202, 203, 204, 263
बंगदर्शन- 205, 206, 207
बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय- 205, 206, 207
बोध सुधाकर- 207

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालाबोधिनी- 210, 211
बुलाकीदास- 211
ब्रह्माण्ड रंजनी- 213
बी.कृष्णाचार्युलु- 218
बिहार हेरल्ड- 2218
बनारस जर्नल- 221
बिहार पंच- 221, 231
बाबू गणेशीलाल- 221
बालकृष्ण भट्ट- 227, 229, 230, 231, 299, 307, 320
बोस्ताना-उल-आंशकीन- 231
बिशनदत्त राय- 235
बालेश्वर प्रसाद- 236
बालमुकुन्द गुप्त- 241, 243, 306, 307, 319, 368, 370, 371, 410
बाबूराव विष्णु पराडकर- 243, 244, 370
बालक बन्धु- 245
बशीरी- 265
ब्राह्मण- 297, 298, 299, 300
बंगाल पंच- 267
बाबा आदम- 282
बनारस पंच- 282
बतियान-उल-अखबार- 283
बालबोध- 283
बंगवासी- 284
बाबू गंगा सहाय- 286
बहार-ए-अंजुमन- 287
बकुल- 287
बशीरउद्दीन अहमद- 290
बाबू शशिभूषण- 291, 306
बाल दर्पण- 292
बालाजी रघुनाथ जी- 309
बेनजीर- 312
बाबा अर्जुन सिंह- 312
बिहार पेट्रियट- 312
बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन- 317, 318, 319, 320, 380
बड़ौदा वत्सल- 320
बलराम मिश्र- 320
बाबूराव जक्कल- 324
बाद-ए-सबा- 325
बालक- 326
बहारिस्तान-ए-शोखी- 327
बहार-ए-हिन्द- 327, 348
बर्क- 328
बैजनाथ- 327
बहार-ए-सुखन- 327, 349
बो कलमून सिदक- 328
बालसिंह अहुलवालिया- 329
बंगाल टाइम्स- 332, 333
बिंदा प्रसाद अजीज- 336
बाबा प्रभुदास ईसाई- 336
बहार-ए-शिमला- 337
बागबान- 337
ब्रह्मानंद- 337
बालकृष्ण सहाय- 337
बाबू रिछपाल- 341
बेंगलूरु अखबार- 347
बशीरुद्दीन अफसर- 349
बीकानेर राजपत्र- 349
बाल मनोरंजन- 350
बैलूर रामाराव- 351
बुलबुल-ए-हिन्द- 352
बाबू गंगाप्रसाद वर्मा- 353
बांसुरी- 354
बाबू हरदयाल सिंह- 354
बी.नरसिंहराव- 362
बाबू दीपेन्द्रनाथ बोस- 364
बाबू हंरनाम सिंह- 372
बाबू महावीर प्रसाद- 373
बीकानेर गजट- 374
बुध विधेय- 377
बाबू गोपालराम- 378
बिहार हेरल्ड- 378, 393
ब्राह्म - 381
बज उल उल्ला- 382
बाबू रामनारायण सिंह- 382
बहार-ए-रोजगार- 383
बिजुली- 385
बुन्देलखण्ड पंच- 388

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल विभाग- 388
बाबू रामनारायण- 389
बख्शी ताराचंद- 389
बी. श्रीनिवास आयंगर- 390
बशीर-उल-मुल्क- 390
बुद्धिप्रदायिनी- 390
बी.पेरराजू- 390
बाबू पंचम सिंह वर्मा- 391
बिहारी- 393, 394, 395
बिहार न्यूज- 393
बिहार टाइम्स- 393, 395
बाबू गोकुल प्रसाद वर्म्मा- 396
बलदेव प्रसाद मिश्र- 398, 407
ब्रह्मविद्या- 400
ब्रह्मविद्या प्रचारक- 402
बदरुद्दीन गालिब- 406
ब्रजानन्द दास- 407
बसुमति- 407
बालिका- 407
बिहार भूषण- 412
बलवंतराव माधवराव राणे- 417
बहमनजी नौरोजजी काबराजी- 422
बाल सरस्वती- 421
बनारसीदास चतुर्वेदी- 426
बलवन्त राव कमलाकर माकोड़े- 434

भ

भगवतीचरण चट्टोपाध्याय- 31
भवानीचरण बनर्जी- 34, 35
भोलानाथ सेन- 60
भुवन मोहन मित्र- 69
भास्कर- 99
भारतभ्राता- 129, 291, 313, 333, 342, 343, 344, 345, 346, 348, 354, 355, 363, 366, 371, 372, 376, 379, 380, 381, 396, 397, 398
भक्ति सूचक धर्म व्यापिका- 130
भारत वर्षीय कृषि विविध संग्रह- 134
भूदेव मुखोपाध्याय- 144
भोलानाथ मुखोपाध्याय- 149
भारतवासी- 157
भारतवर्षीय सभा मासिक विज्ञापनी- 158
भारतवर्षीय संवाद पत्र- 161
भारत रंजन- 163
भारत पत्रिका- 165
भारत परिदर्शन- 169
भगवत भक्ति प्रदायिनी- 169
भिकाजी पंत सामंत- 171
भारत खण्डामृत- 172
भुवन श्री- 181
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र- 181, 204, 209, 210, 227, 241, 261, 282, 423
भारत मित्र- 204, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 267, 291, 300, 319, 368, 409, 426, 431
भ्रमर- 211
भगवत भक्ति तोषिणी- 213
भारती- 219, 225, 327
भारत बंधु- 234, 263
भारत सुदशा प्रवर्तक- 261, 363
भारत हितैषी- 287
भारतेन्दु- 301
भडौंच समाचार- 266
भग्गू खां रहीम- 325, 328, 372
भवग्राही दास- 310
भारत जीवन- 310
भाई फतह सिंह- 316
भारत प्रकाश- 331, 364
भारती विलास- 331
भारतोद्धारक- 331
भारतोदय- 331
भाई गुरुमुख सिह- 333
भालेकर- 333
भाई नन्दगोपाल- 336
भूपतिनाथ बसु- 339
भाग्यनगरम गुरुलिंग देवर- 349
भार्गव पत्रिका- 354
भारत भानु- 354, 355
भारत भगिनी- 363

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवानदास सिरोठिया- 367
भाषा पोषिणी- 385
भूत- 388
भाग्य नगर- 390
भारत भूषण- 397, 399
भूषण- 398
भाग्येश नगर- 412

म

मडिमैन- 7
मंथली रिव्यू- 8
मुम्बई समाचार- 8, 41, 42, 43
मुंशी सदासुख मिर्जापुरी- 8, 37
मद्रास कूरियर- 17
मद्रास हरकारू- 17
मार्निंग पोस्ट- 21, 23
मद्रास गजट- 24, 25, 159
मिशनरी इंटेलीजेंसर- 32
मिरात उल-अखबार- 39, 40, 398
माणिकजी बरजोरजी- 41
मिशनरी हेरल्ड- 43
महेरजी- 41
मेकाइश हिल- 44
मंथली म्यूजिकल मिसलेनी- 46
मुम्बई वर्तमान- 58
मुम्बइना चाबुक- 58
मिरर आफ द प्रेस आर द पोलिटिकल एण्ड लिटरेरी रजिस्टर- 58
मुम्बईना हरकारू अने वर्तमान- 58
मेरठ आब्जर्वर- 59
मेरठ युनिवर्सल मैगजीन- 59
माधवचन्द्र मलिक- 59
मरकरी- 60
मद्रास क्रानिकल- 62
मुंशी वाजिद अली खां- 63
माह आलम अफरोज- 65
मौलवी वहाजुद्दीन- 65
मेनुअल आफ लिटरेचर एण्ड साइन्स- 65
मोहम्मद ताहिर- 69
मुईनउद्दीन-70
मौलवी मोहम्मद बाकर- 70, 89
मोहम्मद हुसैन- 70
मोतीलाल- 70, 96
मद्रास टाइम्स- 70, 71, 248
मद्रास मेल- 71, 159, 248, 251
मौलवी अब्दुल गफूर- 71
मुर्शिदाबाद न्यूज- 76
मंडिगल वेंकटराव शास्त्री- 76
मार्निंग क्रानिकल- 77, 80, 107
मुम्बई अखबार- 79
मेहर-ए-मुनीर- 80
मजहर-उल-हक- 80, 89
मोहम्मद अकबर- 80
मोहम्मद अली- 80
मसलहउद्दीन सैयद- 80
मंगलूर समाचार- 89
मित्रोदय- 90
मंथली क्रिश्चियन हेरल्ड- 91
मोफस्सिलाइट- 95
मोहम्मद हुसैन- 96
मालवा अखबार- 96, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 142
मुकर्जीज मैगजीन- 97
मुंशी लक्ष्मण प्रसाद- 98
मौलाना नसीरुद्दीन- 98
मार्त्तण्ड- 98
मुहिब्ब-ए-हिन्द- 101
मतला-उल-अखबार- 102, 111
मुंशी हरसुख राय- 102, 119, 120, 129, 159, 220, 323
मुंशी चमनलाल- 102
मैआर-उस-शौअरा- 103
मौलवी अबुल हसन- 103
माधवचन्द्र घोष- 103
मिरातुल उलूम- 103, 105, 121
मोहम्मद जाफर- 105
मुंशी मोहम्मद अमीर खां- 105
मुम्बई वैभव- 108, 109
मुंशी गुलाम अली- 113

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफीद-उल-खलायक- 117, 147
मफ्ताह-उल-अखबार- 117
महाजन दर्पण- 119
मतिलाल चट्टोपाध्याय- 107
मजहरुल सुरूर- 119
माउण्टेन मानीटर- 119
मुंशी हीरालाल- 120
मुंशी मिर्जा नसरूल्ला बेग- 121
मोहतशमुल अखबार- 121
मिशनरी- 122, 123
मुंशी सदासुख लाल- 124
मिदनापुर एण्ड हिजिली गार्जियन- 124
मेहदी हुसैन खां- 125
मुंशी नवल किशोर- 125, 148, 153, 154, 155
मुंशी लक्ष्मण दास- 126
मध्यप्रदेश संदेश- 128
मध्यभारत संदेश- 128
मनमोहन बसु- 130
मद्रास एक्जामिनर- 130
मिलिट्री गजट- 133
मुर्तजाई- 131, 140, 141
मोहम्मद ताहिर- 138
मतला-ए-अनवार- 141
मुद्गार- 141
मुफर्रह-ए-कुलूब- 142, 143
मिर्जा मुखलिस अली मुशहदी- 142
मिर्जा मोहम्मद शफी- 142
मिर्जा मोहम्मद जाफर- 142
मिर्जा मोहम्मद सादिक- 142
मतला-ए-खुर्शीद- 142
मुदर्रिस फारसी- 142
मर्म धुरन्धर- 144
मधुसूदन सरकार- 146
मजहर-उल-अखबार- 146
मोहम्मद ख्वाजा बादशाह इबरत- 146
माजिलपुर पत्रिका- 147
मखजन-उल-अखबार- 148
मैअदन-उल-अखबार- 148
मुंशी बिहारीलाल मुश्ताक- 149, 177
मौलवी अजीज अंसारी- 151
मौलवी गुलाम मोहम्मद तपिश- 154
मौलवी अहमद हसन शौकत- 154
मथुरानाथ दत्त- 155
मोहम्मद नसीरुद्दीन- 157
मधुसूदन भट्टाचार्य- 158
मीर फतहउल्ला शाह- 158
मंजूर-उल-अखबार- 159
मनोहर- 159
मुफीद-उल-नाम- 159
मुंशी शंकर स्वरूप निजात-159
मनोरंजिका- 159
मौलवी मंजूर- 159
मजमा-उल-बहरीन- 159
माधव चंद्रोबा- 159
मंगल उषा- 159
मदनमोहन गोस्वामी- 161
मराठीशाला पत्रक- 163
मंगलोदय- 163
मौलवी हसन खां- 165
मौलवी मोहम्मद अहसन- 165
महादेव गोविन्द रानडे- 166
मठ पत्रिका- 172
मुंशी वजाहत अली खाँ- 173
मेरठ गजट- 173
मुंशी दीवानचंद- 176
मौलवी मोहम्मद इस्माइल- 176
मैसूर गजट- 176
मुर्शिदाबाद संवाद सार- 177
मुहिब्बे मारवाड़- 177
मरुधर मित्र- 177
मारवाड़ गजट- 177
मित्रोदय- 179
मुंशी हरिनारायण- 181
मेल- 181
मतिलाल घोष- 187, 188
मुंशी कुरबान अली- 190
मुरक्का तहजीब- 190
मुंशी गोकुलप्रसाद- 190
मुंशी चिराग अली- 190

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र मित्र- 190, 191
महादेव गणेश कोल्हटकर- 190
मुंशी बख्तावर सिंह- 195
मोहम्मडन सोशल रिफार्मर- 194
मित्र विलास- 197, 234, 287
मुंशी इम्तियाज अली- 201
मेऊ गजट- 201
मौलाना मोहम्मद हुसैन आजाद- 201
मुंशी हसन अली- 202
मदनमोहन भट्ट- 202
मोफस्सिलाइट- 205
मंशूर मोहम्मदी- 207
मर्यादा परिपाटी समाचार- 208
मामा परमानंद- 208
मैसूर अखबार- 209
मुंशी अली हसन- 211
मोहन चन्द्रिका- 212
मोहनलाल पंड्या- 212
मखजन-ए-फवायद- 213
महादेव कृष्ण चितले- 217
मुंशी खादिम अली- 219
मुंशी मोहम्मद अली खाँ-·220
मजमा-उल-फवायद- 220
मुंशी जमना प्रसाद- 221
मंगेशराव तेलंग- 221
मणिप्रकाश- 221
मंबा-उल-अहकाम- 221
मेहदी हसन- 221
मुंशी खैराती लाल ताहिर- 221
मुधोल समाचार- 221
मुंशी बुलाकीदास- 221
मैदन-उल-हिकमत- 224
मुहम्मदी- 224
मुंशी जियालाल- 225
माधुरी- 244, 337, 415
मजाक- 231
मद्रास पंच- 231
मुंशी अब्दुल समद खां- 231
मुंशी सैयद मोहम्मद सज्जाद हुसैन- 231
महबूब आलम- 234, 250
मौलवी इंतिजाम अली- 234
मुंशी ब्रजलाल- 234
मुंशीधर- 234
मुकुंदराम- 234
मीडिएटर- 235
मद्रासी- 235
मजलिस-ए-अखलाकिया- 235
मजमुआ नजायर-ए-हिन्द- 236
मोतीलाल मिश्र- 244
मयूरभंज पत्रिका- 245
मद्रास स्टेण्डर्ड- 247
मौलवी निहालउद्दीन- 260
महेन्द्रनाथ सेन- 260
मौलवी फाखर हुसैन- 264
मिर्जा मोहम्मद हुसैन- 265
मुम्बई पंच- 265
मुंशी मुन्नीलाल बिलग्रामी- 265
मौलवी नासिर अली- 265
महर नीमरोज- 265
मजहर-उल-अजायब- 265
मंदार मंजरी- 266
मयूरभंज- 266
मानकलाल देसाई- 266
मुशीर-ए-बिहार- 267
मथुरा प्रसाद समर- 267, 282
मौलवी फजलउद्दीन- 267
मिर्जा रफीउद्दीन- 271
महादेववल्लभ नामजोशी- 273
मराठा- 275, 277
मौलवी सैयद रहीमउद्दीन- 282
मुंशी रहमतउल्ला- 282
मौलवी काजी एहतशाम उद्दीन- 282
मोहम्मद मुर्तुजा- 283
मेरठ पंच- 283
मौलाना अमजद अली अशहरी- 283
मौलाना मोहम्मद अली- 283
महाराजकुमार रामदीन सिंह- 284, 352
मुराद अली बीमार- 284
मेहर-ए-इन्तिखाब- 286
मुखबिर-ए-हकीकी- 286

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुंशी नत्थूराम- 286
मजहर-उल-जराअत- 287
मुंशी सिद्दीक हसन मिन्नत- 288
महर-ए-जराफत- 289
मलिक-उल-अखबार- 290
मथुरा समाचार- 290
मुअल्लिम शफीक- 292
मुहिब हुसैन- 292
मुअल्लिम-ए-निस्वां- 292
मुंशी हुसैन बख्श- 292
मफ्ताह-उल-कवरीन- 294
मौलवी अहमद हसन शौकत- 294
मुंशी मोहम्मद अली खां- 295
मुशायरा- 295
मिर्जा याकूब बेग- 295
मिस्टर पंच- 296
मकबूल हुसैन- 296
मौलवी अली अमजद हुसैन- 296
मौलाना हसरत मोहानी- 303
मुंशी निसार हुसैन- 303
मदनमोहन मालवीय- 306
मुंशी जंगबहादुर जंग- 307
मजाक-ए-सुखन- 307
मौलवी वलीउल्ला- 308
मौलवी सैफ-उल-हक- 308
मेडिकल पेपर- 308
मौलवी नासिर अली- 308
मौलवी फरीद-उल-नवी- 308
मौंज-ए-नर्बदा- 309, 314
मोहम्मद हयात- 309
मुंशी करीम बख्श आजाद- 311
मौलवी मरहम अली चिश्ती- 311
मुहज्जब- 312
मिर्जा अब्दुल्ला- 312
मुंशी मुहीउद्दीन हुसैन खां- 312
मुरक्का निगार- 312
महशर- 313
मुशर्रफ यार खां- 314
मौलवी गुलाम अली कसूरी- 315
महर-ए-मुनव्वर- 315
मीर मुनव्वर अली खां- 316
मोहम्मद हुसैन 'अहसन'- 316
मुअल्लिम-ए-हिन्द- 316
मोहम्मद अली खां- 317
मुअल्लिम दबिस्तान-ए-कटरा- 317
मुंशी सखावत अली- 317
मुंशी सैफुल हक अदीब- 317
मुंशी रामसहाय खलीक- 317
मिर्जा अनवर अली- 317
मुख्तार-उल-अखबार- 317
मोहम्मद यूसुफ- 317
महावीर प्रसाद द्विवेदी- 319, 373, 425, 426, 427
मनोरमा- 321, 419
मुफीद-ए-हिन्द- 321
मास्टर नन्हेलाल- 321
मौलवी सैफ-उल-हक- 322
मोहम्मद करीम बख्श- 322
मोहम्मद जाफर नज्म- 323
मोहम्मद फकीर मोहम्मद- 323
मेडिकल रिफार्मर- 325
मौलवी अरशद हुसैन- 324
मुंशी गुलाम हुसैन- 325
मुंशी दीदार बख्श- 325
मुंशी अहमद अली शौक- 325
मुंशी रामसिंह- 325
मौलवी सैयद अब्दुल रहीम- 326
मथुरा अखबार- 327
मौलवी नुसरत अली खाँ कैसर- 327
मौलवी गुलाम हुसैन- 327
मुंशी ललताप्रसाद शाद- 328
मौलवी अबुल हसन जौहर- 328
मुंशी गोविन्दलाल सहारनपुरी- 328
मुफीद-उल-मुजारऐन- 328
मौलवी मोहम्मद उमर हकीम- 328
मोहम्मद अमीन हन्फी कादरी- 328.
मयदुन-उल-अक्सीर- 329
मौलवी हकीम चिरागउद्दीन- 329
मौलवी गजनफर हुसैन- 329
मुंशी सालिगराम- 329

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहम्मद ईसा- 329
मुंशी आशिक अली आशिक- 330
मौलवी हसन अली- 331
मन्नव बुच्चय्या पंतुलु- 331
मधुसूदन दास- 333
मौ- 333
मुंशी हुसैन अली 'फरहत'- 334
मोहम्मद दीन- 334
मुल्की नामवर- 334
मौलवी फजलुद्दीन- 334
मुल्ला दो प्याजा- 334
मुल्की शोहदा- 334
मुआयना- 334
मियाँ अलाउद्दीन- 334
मुआविन-मजमए-मुहम्मदी- 335
मुश्तहर- 335
मौलवी अरशद हुसैन- 335
मौलवी अब्दुल्ला खां- 335
मजमा उलूम- 335
मजाक का पुतला- 336
मौलवी मोहम्मद हुसैन- 336
मौलवी वलीउल्ला- 336
मुबारक- 336
मर्चेन्ट- 337
मौलवी सिराजुल हक- 338
मलयाली- 338
माधव वारियर- 338
मुखबिर सुरूर- 338
मुरक्का-ए-आलम- 338
मुंशी राजबहादुर जख्मी- 339
मौलवी अब्दुल रहमान रासिख- 339
मुंशी महबूब आलम- 339, 340
मुंशी हसीबुद्दीन अहमद 'सुजान'- 340
मआनी- 340
मौलवी मोहम्मद हसन- 340
मौलवी गरीबउद्दीन- 346
मुशीर-ए-दकन- 346
मुजीबउल्ला तमन्नाई- 346
मुंशी अहमद शफक- 346
मुंशी फखरुद्दीन- 347
मुशीर-ए-हिन्द- 347
मुदब्बिर-ए-आलम- 347
मिर्जा खादिम हुसैन- 347
मुंशी मोहम्मद इस्माइल मुंसरिम- 347
मुंशी किशन स्वरूप- 347
मिर्जा मोहम्मद मुर्तुजा- 348
मियां दीन मोहम्मद फौक- 349
मीर जालिब- 349
मनोरंजनी- 349
मतला-ए-सुखन- 349
मुंशी नरोत्तमदास- 352
मनोविहार- 352
मुअल्लिम-ए-तिजारत- 352
माइकल ब्राउन- 351
महादेव दिनकर जोशी- 356
मलयाला मनोरमा- 357, 358, 359, 385
मुंशी ताजुद्दीन मुख्तार- 359
माधवप्रसाद धवन- 361
मुकुन्दराव गणपतराव पाटिल- 362
मोंहम्मद इस्तफा खुर्शीद- 362
मुस्लिम हेरल्ड- 364
मौलवी गुलाम मोहम्मद अख्तर- 364
महबूब-उल-कुलूब- 364
महारानी- 364
मनीषी समर्थदान- 366
मुंशी देवी प्रसाद- 370
मेहता लज्जाराम शर्मा- 371, 409
मुरक्का-उल-मशाहीर- 372
मुहज्जब- 372
मुंशी अहमद मिर्जा खां- 373
मोहम्मद वजीर- 373
माधवराव पाध्ये- 375
मोहम्मद अब्दुल रहमान- 375
मुंशी अब्दुल अजीज- 376
महाबोधि- 377
मनोविनोदनी- 377
मोहम्मद अब्दुल अजीज मुरादाबादी- 377
महेश नारायण- 378, 393
मुंशी हामिद हुसैन- 380
मोहर हनुमंत राव- 381

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्नूर गुंडीराव- 381
मिर्जा महमूद अली- 381
मोहम्मद सादिक नातिक- 382
मौलवी मिस्बाउद्दीन- 382
मोहम्मद अब्दुल जब्बार- 382
मोहम्मडन नेशनल मैगजीन- 383
मुम्बई वैभव- 383
मुहीउद्दीन रश्क- 383
मौलवी वारिस अली- 383
मौलवी नूर मोहम्मद- 385
मुर्शिदाबाद हितैषी- 385
मौलाना शिबली नोमानी- 385
मोहम्मडन ऐंग्लो ओरिएण्टल कालिज मैगजीन- 385
मुईन-उल-हिन्द- 385
मुईन-उल-मुल्क- 387
मुंशी अहमद खाँ- 387
मोरेश्वर राव चन्द्राकर- 388
मोहम्मद सज्जाद हुसैन- 388
मुंशी मोहम्मद यूसुफ कोकब- 388
मौलवी मोहम्मद बशीर- 390
मुंशी गुलाम नक्शबंदी- 390
मल्लं पल्ली भैरवमूर्ति- 390
मोहम्मद अब्दुल कादिर- 391
महेश्वर प्रसाद- 395
मौलाना मोहम्मद अब्दुल रहमान रासिख- 397
मनोरंजन- 397, 398
मुखबिर-ए-दकन- 398
मुंशी खुर्शीद हसन 'तैश'- 399
मौलवी महबूब आलम- 399
मद्दाह उल-नबी- 399
मौलवी गुलाम अहमद खां बिरियाँ- 399
मिर्जा हैरत- 400
मराठा- 400
मौलाना मोहम्मद अली- 401
मुंशी देवीप्रसाद- 403
मुंशी नारायणसिंह वकील- 403
मुर्हरिक- 403
मोहम्मद शरीफ उल्ला 'शरीफ'- 405
मौलाना अहमद हसन शौकत- 406
मुंशी हामिद- 406
मोहम्मद फ़खरुद्दीन फख्र- 406
मुंशी गंगाप्रसाद भार्गव- 406
मुल्क व मिल्लत- 407
मुजफ्फरी- 407
माधवराव सप्रे- 410, 429, 430, 431
मंजुवाणी- 412
ममुक्षु जनरंजनी- 412
मकबूल-ए-आम- 413
मुंशी मोहम्मद अली शायक- 413
मुस्लिम हेरल्ड- 413
मुहिब्ब हुसैन- 413
मौलवी अब्दुल हक- 413
मौलाना राशिद-उल-खैरी- 417
मोहम्मदी बैगम- 417
मौलवी वहीदउद्दीन 'सलीम'- 419
मुआरिफ- 419
मौलवी फतह मोहम्मद खां- 419
मुंशी करीम बख्श- 419
मौलवी गुलाम हुसैन- 419
मेडिकल जर्नल- 419
मुफीद-ए-आम- 420
मुंशी लतीफ अहमद- 420
मौलवी विलायत अहमद- 420
मोहम्मद बशीरउद्दीन- 420
मोहम्मद हुसैन रिजवी- 421
मूलचंद किशनदास कापड़िया- 421
महबूब-उल-कलाम- 422
माधव प्रसाद मिश्र- 434, 435
मैसूर स्टार- 438
मुंशी कुर्बान अली बिस्मिल- 438
मधुर मोहन बरुआ- 439

य

योहान गुटेनबर्ग- 3
यूरनल्स- 7
यूनिटेरियन रिपॉजिटरि-44
युगल किशोर शुक्ल- 8, 47, 49, 123
यूनाइटेड सर्विस गजट एण्ड लिटरेरी क्रानिकल- 62

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय- 131
यशवंतराव केसकर- 190
यादव बालकृष्ण उर्फ तात्या साहेब बहालकर- 190
यू.एस.आई.जर्नल- 197
यंग इण्डिया- 244, 250, 333
योगेन्द्रचन्द्र बसु- 284
युगवाणी- 291
यथार्थवादी- 309
यूसुफ जरीफ- 327
याकूब अली खां नुसरत- 337
यंदे- 383
याकूब अली- 413

र

रिलेशन- 7
रिव्यू- 8
रिचर्ड स्टील- 8
रिचर्ड जानसन- 17
रेवरेण्ड ब्राइस- 18
रत्न प्रकाश- 19
रिचर्ड फलेमिंग- 21
रिलेटर- 26
राजा राममोहन राय- 30, 31, 34, 35, 39, 40, 55, 293
राधाप्रसाद राय- 35
राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द- 47, 93, 269, 423
रिफार्मर- 45, 52, 58, 60
रेवरेण्ड बासवेल- 57
रेवरेण्ड इनेस- 57
रामचन्द्र गुप्त- 57
रसिक कृष्ण मलिक- 59
रामचन्द्र पाल- 60
रामचन्द्र मित्रा- 60, 90
रेवरेण्ड अलेक्जेण्डर- 62
रेवेण्ड डब्ल्यू.एच.पीयर्स- 62
रेवरेण्ड थामस बोआज- 62
राबर्ट नाइट- 67, 73
रज्जब अली- 69
रुडियार्ड किपलिंग- 75
रस्टन जूनियर- 76
रामगोपाल घोष- 81
रेवरेण्ड हेनरी बेलेंटाइन- 83
रिचर्ड थामस मार्टिन- 89
रेशनल एनालिसिस आफ गास्पेल- 95
रईस और रैय्यत- 97
रेवरेण्ड जे.बेंगर- 98
रसराज- 99
रत्नेश्वर तिवारी- 99
राज्य समाचारम- 100
रंगपुर वार्ता- 100
रघुनाथ शंकर शास्त्री- 103, 176
राधानाथ बसु- 107
राष्ट्रसभा समाचार- 108
रामसहाय भट्टाचार्य- 107
रेवरेण्ड सी.लेसी- 107
रंगलाल बंद्योपाध्याय- 117
राजनारायण मित्रा- 117
रेवरेण्ड जे.लांग- 122, 124
रियाज-ए-नूर- 124, 125
रियाज-उल-अखबार- 124
रास्तगोफतार- 125, 169
राजेन्द्रलाल मित्रा- 125, 169
रामकिशोर शर्मा- 128
राय दीवानचंद- 131
रिफाए खलायक- 141
रहनुमा-ए-पंजाब- 142
रघुनाथ त्र्यम्बक जोशी- 143
राजवर्ती बोधिनी- 143
रोजत-उल-तालीम- 145
राजपूताना अखबार- 145, 191
रेवरैण्ड लेसी- 147
रचना रत्नावली- 153
रामचन्द्र दीक्षित- 153
रतननाथ सरशार- 154, 419
रामचन्द्र आपाजी चितले- 157
रफीक-उल-हिन्द- 158
राजपुर पत्रिका- 159

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुहेलखंड अखबार- 165, 177
रेवरेंड फर्डिनेड किटेल- 168
रहस्य संदर्भ- 169
रचनावली- 171
राजेन्द्रनाथ गुहा- 171
राजनीति संग्रह- 173
रंगभूमि- 173
रिसाला देहली सोसायटी- 173
रिसाला अंजुमन फैज-ए-आम- 176
रत्नप्रकाश- 185
रावजी श्रीधर गोंधलेकर- 192
रुद्रदत्त शर्मा- 194, 217, 241, 348, 373, 405, 409
रिसाला अंजुमन मनाजरा- 201
रिसाला अंजुमन इशाअत- 201
रिसाला अरब सराय सोसायटी- 202
रिसाला अंजुमन राजपूताना- 205
रवीन्द्रनाथ टैगोर- 207, 225, 326, 378
रिसाला देहली एसोसिएशन- 208
रिसाला अंजुमन मजाकिरा इल्मिया- 211
रिसाला मुफीद-ए-आम- 212
रियाज-उल-अखबार- 213
राबर्ट नाइट- 215, 220
रोजनामचा- 217, 286
रिसाला अंजुमन तहजीब- 217
रिसाला अंजुमन इस्लाम- 218
रहबर-ए-हिन्द- 219
रामप्रसाद राय- 220
रुहेलखंड पंच- 221, 231
रायबारी- 235
रेलवे समाचार- 235
रामदास वर्मा- 240
राधाकृष्ण चतुर्वेदी- 240, 241
रियाज-उल-अशआर- 279
राजपूताना गजट- 284
रिफार्मर- 286
रिसाला अंजुमन पेशावर- 292
रौनक-ए-हिन्द- 295
राय किशनलाल- 295
राजा रामपाल सिंह- 305, 307
रौअना- 308
रिफा-ए-आम- 308
राजाराम शास्त्री- 309
रामगुलाम अवस्थी- 310
रघुवर प्रसाद द्विवेदी- 310
रफी-उल-अखबार- 311
रफीक-ए-हिन्द- 311
रफीक-ए-बेनजीर- 312
रफीक-ए-दकन- 316
रोजनामचा-ए-आलम- 317
रामनाथ शुक्ल- 320
राधाकृष्ण दास- 320, 423
राधाकृष्ण गुप्त- 321
रिसाला हिमायत-उल-इस्लाम- 321
राजहंस- 321, 333
रहनुमा- 322
रियाज-ए-सुखन- 323
रायकिशन लाल- 323
रिपन गजट- 323
रियाज रंगी- 325
रसिक पंच- 326
रघुवर दास- 328
राजपूताना मालवा टाइम्स- 331, 349
रोजनामचा-ए-मुल्क- 331
रघुनाथ बालकृष्ण- 333
रिफा-ए-आमकड़ा- 333
रघुवीर कामत पारसेकर- 333
रियाज-ए-हिन्द- 334
रहनुमा-ए-हिन्द- 338
रसकोल्लासिनी- 338
रज्जब अली- 339
रियाज-उल-नबवी- 339
रोशनी- 340
रियासत- 341
रावी- 341
राजस्थान पत्रिका- 349, 350
रामचन्द्र दत्तात्रय आजेरकर- 351
रहबर- 352
रामचन्द्र विष्णु फड़तरे- 356
राज्य समाचारम्- 358

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिसाला मदरसा उलूम-ए-इस्लामिया- 359
राजस्थान समाचार- 365, 366, 367
रसिक पत्रिका- 373
रामप्यारी बाई- 373
राजयोगी- 377
राजेन्द्र सिंह- 378
रुहेलखण्ड गजट- 377
रासिख देहलवी- 383
रिसाला जलसा एहबाब- 385
रामजीदास भार्गव- 385, 389
रापाका कौस्तुभमु- 385
रशीद अहमद सिद्दीकी- 387
रियाजुल हसन रियाज- 388
रत्नाकरम्- 390
रत्नाकर- 391
राधानाथ चांकाकती- 396
राय बजरंगबली प्रसाद- 397
रामसहाय आर्योपदेशक- 399
रामचन्द्र शुक्ल- 402
रामचन्द्र वर्मा- 402
रियाजे सुखन- 407
रियाजे खलील- 407
रामदास वर्मा- 409
रामानन्द चटर्जी- 412, 426, 436
रवि- 412
रिसाला मखजन मुलकिब व तोहेफिया हनफिया- 412
राजपूत- 422
रामभरोसे शर्मा चतुर्वेदी- 422
राहुल सांकृत्यायन- 426
रामराव चिंचोलकर- 429
रामचन्द्र बलवंत डोंगरे- 434
रामस्वरूप शर्मा गौड़- 439

ल

लन्दन गजट- 7
लिएंट हेनरी मेकेनली- 19
लन्दन वीकली रिव्यू- 45
लिटरेरी गजट- 52, 55
लक्ष्मीनारायण न्यायालंकार- 58
लुधियाना अखबार- 66, 124
लन्दन इण्डियन स्टेट्समेन- 67
लोवेट फ्रेशर- 75
लीगल आब्जर्वर- 77
लेमैन- 81
लिटरेरी ब्लूसम- 81
लखनऊ अखबार- 102
लिटरेरी क्रानिकल- 119
लिटरेरी स्टार- 131
लाहौर गजट- 141, 325
लाहौर क्रानिकल- 141, 146
लाला बैजनाथ- 141
लल्लू भाई रामचन्द्र- 141
लाला बिंदाप्रसाद हसरती- 142
लोक लोचन चन्द्रिका- 149
लोकमान्य- 168
लोकमित्र- 169
लोक कल्याणेच्छु- 201
लीलानंद जोशी- 201
लाला चिरौंजीलाल- 202
लाला रामजी दास- 208
लोकरंजनी- 213
लाला शीतला बख्श- 213
लोकमत- 218, 221
लाला खुशबख्त राय- 221
लिटन गजट- 221
लाला माधवप्रसाद- 231
लाला शंभुदयाल- 236
लक्ष्मण नारायण गर्दे- 244, 370
लाला रामनारायण- 245
लक्ष्मण अनंत प्रयागी- 264
लाला हजारीलाल- 264
लीगल रिफरेन्सेज- 267
लाला अम्बिकाप्रसाद- 279
लंदन टाइम्स- 278
लिस्सान-उल-मुल्क- 283, 346
लाला रामसहाय तमन्ना- 289
लॉयल गजट- 295
लखनऊ पंच- 296

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला इन्द्रस्वरूप- 300
लम्हा-ए-नूर- 303
लख्ते जिगर- 326
लाला बांकेलाल- 327
लाला देवीप्रसाद- 329
लक्ष्मीनारायण दासगुप्ता- 333
लाला राजबिहारी जख्मी- 336
लतीफ-उल-अखबार- 337
ललित मोहन चक्रवर्ती- 339
लाला देवीदयाल- 340
लमआत-उल-अखलाक- 341
लाल बलदेव सिंह- 342, 381
लाला सुकुन लाल- 447
लाला दीनानाथ- 349
लाला सुगनलाल- 350
लाला हीरालाल कपूर- 373
लायल खालसा गजट- 377
लूथरिन- 378
लाइट आफ द इस्ट- 382, 416
लायरू- 390
लक्ष्मीनाथ फूकन- 396
लिबरल- 400
लक्ष्मीधर वाजपेयी- 405
लक्ष्मणनारायण जोशी- 413

व

वत्स भट्टि- 1
विलियम कैक्सटन- 4
विलियम कैरे- 5
वेस्ट मिन्स्टर क्लर्क- 7
विलियम बोल्ट्स- 10
विलियम डुआन- 16, 20
वर्ल्ड- 20
विलियम एडम्स- 44
विज्ञान सुबोधि- 60
विशाख पेरूमल अय्यर- 62
वृत्तान्त वाहक- 66
विलियम स्टीफन लेमब्रिक- 76
वृत्तांतनी- 76
वीकली एक्जामिनर एण्ड लिटरेरी रजिस्टर- 77
वीकली इन्टेलीजेंसर- 79
विद्या दर्शन- 85
वर्तमान तरंगिनी- 84, 86
वीरेश्वर सदाशिव छत्रे- 81, 90
विद्या कल्पद्रुममु- 97
वासुदेव गोविन्द आप्टे- 108
वीकली जर्नल- 123
विशेश्वर बंद्योपाध्याय- 123
विविधार्थ संग्रह- 125
विक्टोरिया पेपर- 129, 131
विचार लहरी- 130
विश्व विलोकन- 130
विद्या रत्न- 130
विद्या दर्पण- 131
वर्तमान दीपिका- 131
वर्तमान संग्रह- 133
विद्योत्साहिनी पत्रिका- 142
वर्नाकुलर न्यूज पेपर- 143
वीकली न्यूज- 144
विजयकृष्ण मुखोपाध्याय- 147
विज्ञान मिहिरोदय- 149
विचारक- 157
वासुदेव बल्लार मुड़े- 158
विज्ञान कौमुदी- 159
वृत्त वैभव- 162
विश्व मनोरंजन- 163
विंजमूरी कृष्णमाचार्युलु-166
विज्ञान निक्षेपम्- 166
वेस्टर्न स्टार- 166
विष्णु परशुराम पंडित- 166
विष्णु शास्त्री- 166
विचित्र वर्तमान संग्रह- 168
विद्योन्नति साधिनी- 172
वंशीधर वाजपेयी- 172, 192
विद्या संग्रहम्- 172
विज्ञापनी- 172
वीकली रिपोर्ट- 173
वर्धमान मासिक पत्रिका- 177
विविध ज्ञान विस्तार- 177, 178, 179

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध वृत्त- 179
वर्हाड समाचार- 179
वृत्तांत दर्पण- 191
विज्ञान सुधा- 191
वजीर अली- 191
वैदर्भ- 195
व्यंकटराव मुधोलकर- 195
वामन एकनाथ शास्त्री केलकर- 197
व्यवहार तरंगिणी- 209
वंकीपुरम् राघवाचार्युलु- 209
विनोद प्रतोद- 209
वृत्तधारा- 210
वासुदेव त्र्यंबक कापशे- 210
विदेशी- 210
विद्यार्थी- 212, 261
विट्ठल पांडुरंग- 212
विद्वन्मनोहारिणी- 213
वृत्तलहरी- 217
वर्हाड शाला पत्रक- 218
वेंगुर्ले वृत्त- 218
वामनराव सावंत- 221
विवेकवर्धिनी- 222, 223
विद्या विनोद- 245
वालाजाही- 266
वैद्य शंकर शास्त्री- 266
वर्धालहरी- 271
विद्या धर्म दीपिका- 271
विपिनचन्द्र पाल- 271, 279
विष्णु शास्त्री चिपलूणकर- 273
वामनशिवराम आप्टे- 273
वासुदेवराव केलकर- 275
विका-ए-आलम- 281
वैदिक मैगजीन- 284
विद्यार्थी कल्पद्रुममु- 292
विद्योदय- 292
वैष्णव पत्रिका- 292
विचारशील- 292
वॉयस आफ इंडिया- 295
व्यापार बंधु- 309
वार्ताहर- 309
वजीर-ए-हिन्द- 321
वेद प्रकाश- 321, 416
वजाइफ-ए-खुल्द- 323
वर्गीज- 323
वाजिद अली बिस्मिल- 324
विट्ठलराव- 324
वायस-आफ-इस्लाम- 325
वीरवर- 326
वाइजुद्दीन अहमद- 330
व्यंकटेश रामचंद नायक- 330
वृत्तसुधा- 331
वृत्तांत चिंतामणि- 331
वजीरुल मुल्क- 334
वकील एंड ला गजट- 338
विद्या विलास- 339
वीकली रिपोर्ट- 347
विद्याधर्म दीपिका- 350
वृत्तांत पत्रिका- 351
वकील कौमी- 352
विनायक रामचंद्र जोशी- 356
वैष्णवचरण- 363
विद्या विनोदिनी- 367
वेदभाष्य- 367
वकील-ए-हिन्द- 373
विशाल भारत- 372, 426
विजय- 374
व्यापार सिंधु- 378
विज्ञान वर्द्धिनी- 378, 401
वाई नारायणप्पा- 378
व्यापारी- 379
विक्षिप्त- 380, 388
विनायक नारायण भाटे- 380, 413
वकील जयराव देशमुख- 381
विश्वनाथम् राघवेन्द्र शास्त्री- 381
व्यापार हितैषी- 381
विन्ध्य रत्नाकर- 381, 382
विद्या विनोद- 382
वेंकट शिवुडू- 383
वार्ता दर्शिनी- 385
वर्नाकुलर एडवर्टाइजर- 385

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार वाहन- 387
विबुध रंजनी- 390
वैजयंती- 390
वृत्तांत मंजरी- 390
वैद्य शिवराम पांडेय- 390
विश्वकर्मा- 397
बसंत नारायण नाईक- 398
वेंकट कृष्णय्या- 399
वकील- 400, 401
वफा मारहरवी- 407
विद्यावती- 412
वली मोहम्मद- 413
विश्वनाथ कर- 413
वणबल्ली- 421
वैदिक धर्म- 434
वाविलिकोलनु सुब्बाराव- 438
वीकली क्रानिकल- 440

श

शंकर ए.बिसे- 5
शम्स-उल-अखबार- 44, 157
शास्त्र प्रकाश- 58
शेख अजीमुल्ला- 58
शिमला अखबार- 69
शेख अब्दुल्ला- 69
श्यामाचरण बंद्योपाध्याय- 81
शेख इमदाद हुसैन- 89
श्यामाचरण बसु- 98
शंभुचन्द्र मुखर्जी- 97, 142
शेख खादिम अली- 102
शुभकारी- 107
शिपिंग गजट- 122
शुआ-उल-शम्स- 130
श्याम सुंदर सेन- 135, 138
शमशेर बहादुर- 141
शंकरदयाल फरहत- 146
शुभ सूचक- 157
शिवकृष्ण दत्त- 160
शिल्पकला लतिका- 168
शिक्षा दर्पण- 171
शाला- 172
शिशिर कुमार घोष- 185, 187
शुजा महर- 202
शिशिरचन्द्र मजूमदार- 207
शिवाजी- 207
शिक्षक- 210
शिवनारायण अग्निहोत्री- 217
शंकर हरि जोशी- 220
शहजादा मिर्जा अब्दुल गनी अशरद- 234
शिवनारायण सिंह- 243
शंकर विनायक केलकर- 271
शीतलकांत चटर्जी- 279
शीतलचन्द्र मुखर्जी- 279
शेख निजामउद्दीन- 282
शफक- 284
शमीम- 286
शेख अवध- 287
शौकत-उल-इस्लाम- 288
शाहना-ए-हिन्द- 294
शर्फ-उल-अखबार- 296
शुभचिंतक- 310
शम-ए-सुखन- 313
शेख मोहम्मद हसन जिया- 315
शक्तिनाथ झा- 320
शाम-ए-विसाल- 322
शफीक-ए-हिन्द- 322
शेरे बिहार- 323
शोलापुर समाचार- 324
शेखचिल्ली- 329
शौकत-ए-हिन्द- 329
शरदचन्द्र मुखर्जी- 333
शेख निहाल अहमद- 333
शिक्षा बंधु- 333
शेतकन्यांचा कैवारी- 333
शरीफ अहमद- 335
शेख रियाजुद्दीन अहमद- 335
शेख करम अली- 335
शेख मोहम्मद हसन- 337
श्यामजी शर्मा- 337

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभवार्ता- 339
शेख इल्हाम अली मोहानी- 348
शिल्पकला विज्ञान- 350
शोर-ए-आनादिल- 350
श्यामसुन्दर 'सरखुश'- 367
शारदा- 373, 385, 401
शेख हबीब अहमद- 380
शंकर मोरो रानडे- 383
शेख फैय्याज अहमद- 389
शशिलेखा- 390
शिवग्रंथ मुक्तावली- 401
शोहरा-ए-आफाक- 401
श्यामसुन्दर दास - 402, 403, 423, 425
शिक्षा- 414, 415, 416
शोला-ए-इश्क- 416
शिवराम महादेव परांजपे- 416
शम्स-उल-कलाम- 419
शरारह- 420

स

संजय- 2
सेमुएल बकाले- 8
स्पेक्टेटर- 7, 70, 71
सी.के.ब्रूस- 18
समाचार दर्पण- 18, 29, 30, 31, 41, 49, 51, 60
संवाद कौमुदी- 34, 35
समाचार चन्द्रिका- 35, 37, 49, 51
संवाद तिमिर नाशक- 44
स्काट्समेन इन द ईस्ट- 44
सुन्दरदास- 52
संवाद प्रभाकर- 56, 57
सर्वतत्व दीपिका- 57
संवाद सुधाकर- 58
समाचार सभा राजेन्द्र- 58
संवाद सारसंग्रह- 60
संवाद रत्नाकर- 60
सिराजुद्दीन- 60
स्पेक्टेटर इन इण्डिया- 62
सी.एच.हेग- 63
स्टेट्समेन एण्ड फ्रेण्ड आफ इण्डिया- 67
सुलतान-उल-अखबार- 69, 138
स्टेट्समेन- 69, 214, 215, 216, 217, 323
सैयद हुसैन- 70
सैयद-उल-अखबार- 71
संवाद गुणाकर- 71
सर स्टेनले रीड- 75
सर फ्रेंसिस लो- 75
संवाद सुधा सिंधु- 75
स्केचेज आफ ओरिएण्टल हैंड्स- 75
संवाद सौदामिनी- 76
संवाद मृत्युंजय- 76
संवाद दिवाकर- 76
संवाद भास्कर- 76
संवाद रसराज- 77
संवाद अरुणोदय- 77
सैयद औलाद अली- 80
सिराज-उल अखबार- 80
संवाद भारत बंधु- 81
संवाद निशाकर- 81
स्पीड- 85
सैयद रहमतउल्ला- 85, 86
सईद-उल-अखबार- 86, 123
संवाद राजरानी- 90
सर्वस्व रागिनी- 90
सदुक्ति रत्न- 91
सादिक-उल-अखबार- 91, 92
स्टैण्डर्ड- 96
सत्य संचारिणी पत्रिका- 98
समाचार ज्ञान दर्पण- 99
सीफंक- 99
सदर-उल-अखबार- 99, 100, 101
सुधाकर- 99
सिविल एण्ड मिलिटरी गजट- 100, 205
सीतानाथ घोष- 100
संवाद ज्ञानाञ्जन- 100
संवाद काव्य रत्नाकर- 100
संवाद साधु रंजन- 101
सहर सामरी- 102, 130, 146, 147, 148

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाद सुजान बंधु- 102
संवाद दिग्विजय- 102
संवाद मनोरंजन- 103
संवाद ज्ञान रत्नाकर- 103
संवाद रत्न वर्षण- 103
संवाद कौस्तुभ- 103
संवाद मुक्तावली- 107
संवाद दिनमणि- 107
संवाद भृंगदूत- 107
सर्वशुभकारी- 107
साधना- 109, 308
संवाद सागर- 117
संवाद रस सागर- 117
सत्य धर्म प्रकाशिका- 117
संवाद रस उद्गार - 117
सुबुद्धि प्रकाश- 119
संवाद रस रत्नाकर- 119
सत्यप्रदीप- 121
सत्यार्णव- 122
संवाद सुधांशु- 122
संवाद वर्धमान- 122
सिटीजन- 122
सूरत समाचार- 123
सामदंड मार्त्तण्ड- 123
संवाद वर्धमान ज्ञान प्रदायिनी- 123
संवाद सज्जन रंजन- 123
संवाद ज्ञानोदय- 124
सत्यप्रकाश- 125
सबरस- 125
संवाद विभाकर- 130
संवादिनी सागर- 130
संवाद शशिधर- 130
सौदागर- 130
सैयद मोहम्मद हाशिम बिलग्रामी- 131
सुलभ पत्रिका- 131
संवाद पाषाण दलन- 134
समाचार सुधावर्षण- 135, 136, 137, 138, 139, 140
स्माल काज कोर्ट क्रानिकल- 140
संवाद दिनकर- 140
सत्यशोधक- 141
सिद्धांत दर्पण- 142
सर्वार्थ पूर्णचन्द्र- 142
सद्धर्म दीपिका- 143
सत्य ज्ञान संचारिणी- 144
सर्वतत्व प्रकाशिका- 144
साप्ताहिक पंजाबी अखबार- 146
सुबह सादिक- 146, 147
सांवत्सरिक संवाद पत्रिका- 147
स्त्री बोध- 147
सफीर-ए-पंजाब- 148
सैयद आफताब अली- 149
सैयद वाजिद अली बिलग्रामी- 149
सफीर-ए-आगरा- 153
सुबोधिनी- 153
सर सैयद अहमद- 153
सोम प्रकाश- 155, 156, 157, 161
सोल्जर पत्रिका- 157
सैयद अब्दुल सत्तार- 157
सौदामिनी- 158
संवाद द्विजराज- 158
सूरजभान- 159
सर्व संग्रह- 159
सोहनलाल- 161
समाचार हिन्दुस्तानी- 163
स्टार आफ इंडिया- 165
सुरेन्द्रनाथ बनर्जी- 165, 188, 250, 270
सुजन रंजनी- 166
सेन्ट्रल प्राव्हिन्सेज न्यूज- 166
सत्यदीपक- 166
संवाद भारतबंधु- 168
साहित्य संक्रान्ति- 169
स्त्री भूषण- 171
सत्य निशान- 172
सत्य ज्ञान प्रदायिनी- 173
सदर्न क्रास ऑर इण्डियन चर्च गजट- 176
सिंध सुधार- 176
साधु हीरानन्द आडवाणी- 176
सत्य दीपक- 177
सूर्योदय- 179, 204

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदिष्टवादी- 179
सारसुधा निधि- 181, 240, 261, 262, 263, 264, 267
सुन्दरलाल सोम- 185
सभा पत्र- 191
सदासुख लाल- 191, 235
सुज्ञान बोधक- 192
सज्जन कीर्ति सुधाकर- 192, 193
सत्य सदन- 195
सुलभ समाचार- 195
सतिय वर्तमानी- 197
सदानंद सनवाल- 201
सुबोधिनी- 202
संजीव चन्द्र- 205
सुबोध पत्रिका- 208
साधारणी- 208
सुबोध प्रकाश- 208
स्वधर्म प्रकाशिनी- 210
सर्वार्थ संग्रह- 210
समय विनोद- 210
सफीर-ए-हिन्द- 211
सर्वमित्र- 211
सैयद खुर्शीद अहमद- 213
सफीर-ए-सगीर- 213
सुधि रंजनी- 213
सदादर्श- 213
सैयद हुसैन बिलग्रामी- 213
सैयद मुर्तुजाशाह कादरी- 218
स्वदेशी- 219
सत्यमित्र- 219
सती हितबोधिनी- 219
सकल संबोधिनी पत्रिका- 219
सी.सुब्रमण्य शास्त्री- 219
सकल विद्याभिवर्द्धिनी- 219
सैल्फ गवर्मेंट- 219, 323
सुकाव्य संबोधनी- 219
सफीर-220
सैयद फैजल करीम- 221
सैयद मेहदी हसन- 221
सत्यनाद कहलम्- 221
सन्मार्ग दर्शक- 221
सत्यनादम्- 223
सैफ-उल-इस्लाम- 223
सिंधु युग्म- 223
सांगली जिला गजट- 223
सैयद मोहम्मद अली शाद- 224
सुवर्ण कुमारी देवी- 225
सफीर-ए-हिन्द- 235
सदानन्द मिश्र- 239, 261, 263
स्वराज्य- 244
सर्वेण्ट- 244
स्वदेशमित्रन- 247, 248, 250, 253, 259
सैयद हुसैन- 250
सी.वाइ.चिंतामणि- 250
सी.एफ.एन्ड्रूज- 250
सी.आर.श्रीनिवासन- 259, 286
सद्धर्म प्रचारक- 261, 362, 363
सुबोध सिंधु- 264
सुबह बनारस- 265
सभा कपूरथला- 266
सैयद अबू हसन- 271
सैयद नादिर अली शाह सैफी- 271
सुधारक- 276
सरदार दयालसिंह मजीठिया- 279
सुबह वतन- 282
सुब्बराव- 282
सुजन प्रमोदिनी- 284
संजीवनी- 284, 292
सुब्रमण्यम भारती- 285
सैयद अब्दुल बशीर- 286
सैयारा-ए-अवध- 286
सैयद मोहम्मद हुसैन- 286
सवान्ह उम्री- 286
सुरमय रोजगार- 288
सैयद मोहम्मद अली- 290
सरस्वती- 291, 319, 322, 379, 421, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429
सत्यानंद अग्निहोत्री- 292
सत्यप्रकाश- 295
सुखदायक सभा- 295

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुल्तान-उल-जुर्फा- 296
सैयद हसन जश्न- 301
सैयद मोहम्मद अशरफ- 302
सैयद इब्राहीम- 302
सत्य समाचार- 303
सम्राट- 307
सैयद लियाकत अली- 307
समाचार मार्त्तण्ड- 309
साहित्य सुधानिधि- 310
सद्धर्म स्मारक प्रचारक- 310
सेवक- 310
संस्कारक- 310
सैयद निसार अली शोहरत- 311
सैयद हसन रजा आतिशी- 311
सलाम- 312
सैयद निजाम अली- 313
सदाकत- 308
सरवर कैसरी- 313
सफीर-ए-पंजाब- 315
सी.पी.गोविदन नायर- 320
सफर-ए-सफीर- 321
सरस्वती विलास- 321, 322
सुजन मनोरंजनी- 322
संस्कृत चन्द्रिका- 322
सिराज-उल-अखबार- 323
सईद-उल-अखबार- 323
सफदर अली ईसाई- 322
सैयद अलताफ हुसैन- 323
सहीफा-ए-कुदुसी- 335
सिद्दीक हुसैन मिन्नत- 328
सैयद मोहम्मद हुसैन- 328
सफीर-ए-आम- 328
सिदक- 328
सरोश- 329
सरमाया-ए-फरास्त- 329
सरदार अली अख्तर- 329
स्टुडेन्ट्स गाइड- 329
सत्यबोधिनी- 331
सन्मार्ग दर्शिनी- 331
सुजन मनोल्लासिनी- 331
सुलह कुल- 331
सदाशिव पटवर्धन- 333
सैयद जव्वाद अली शाह- 334
सुहेल- 334
सैयद रहमत अली शाह- 335
सैयद खुर्शीद अहमद- 336
स्टार आफ इण्डिया- 336
सहर-ए-बाबिल- 336
सहीफा-ए-नामी- 337
सोमलाल शाह- 337
सहर आर्फ्री- 338
साम्यवादी- 339
सैयद याकूब अली- 339
स्कूल मास्टर- 340
सदर पंच- 340
सैयद गुलाम हुसैन- 340
सिविल एंड मिलिट्री न्यूज- 341, 382
सरदार अली- 346
सैयद मोहम्मद अब्बास- 348
सफीर-ए-टोंक- 351
सुदर्शन- 351
स्टेनले जेपसन- 351
सी.आर.जे.मांडी- 352
सरवर-ए-कैसरी- 352
सैयद अहमद बलीग- 352
सर मूर गजट- 353
सी.गोपलय्या- 353
सटरडे रिव्यू- 354
सुधारक- 355, 356
सीताराम गणेश देवधर- 355
सत्यदूत- 359
सैयद अमजद अली अशहरी- 359
सफीर-ए-दकन- 359
सद्विचारिणी- 359
सारन सरोज- 359
सुमन अभिरंजनी- 359
सुगृहिणी- 360, 361
साधुचरण राय- 361
सर्वोदय प्रकाशिका- 362
स्वामी श्रद्धानन्द- 362

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहाब-ए-सुखन- 367
सफदाना अखबार- 367
सभंलपुर हितौषिणी- 367
समालौंचना- 367
सर्वहित- 371, 409
सरस्वती- 373
सत्य धर्म प्रचारक- 373
सर्व हितैषी- 373
सखाराम गणेश देउस्कर- 373
सुविचार- 374
सैयद मोहम्मद अस्करी 'वसीम'- 376
सैयद कमरुद्दीन- 376
सकल कल कल्पवल्ली- 378
सन्मत दर्शिनी- 378
सन्मार्ग बोधिनी- 378
सत्य संवर्धनी- 378, 382
सुधीन्द्रनाथ ठाकुर- 378
सदाशिव पांडुरंग केलकर- 379
सी.एच.राममूर्ति शास्त्री- 381
सत्यान्वेषिणी- 382
साकेत जीवन- 382
सर मनुभाई मेहता- 383
सुलेमान मिर्जा- 383
सिकंदर खां- 385
स्त्री हितबोधिनी- 385
सज्जन विनोद- 388
सैयद इस्हाक हसन 'शरर'- 389
सरहदी अखबार- 390
सुजन विनोदिनी- 390
सुफलार्थदायिनी- 390
सच्चिदानंद सिन्हा- 393, 395, 436, 437
सैयद अब्दुल कादिर- 398
साहित्य सरोज- 398
सत्यप्रिय- 398
सूरजभान जैन- 400
सत्तिराजू सीता रामय्या- 400
सूर्यलोकम्- 401
सैद-उल-अखबार- 401
सैयद महमूद अली- 401
सैयद मोहम्मद ताहिर- 401
सफीर- 405, 413
सैयद मोहम्मद मिर्जा मौज- 405
सुल्तान-उल-अखबार- 407, 412
सैयद अहमद नातिक- 407
सैयद इफ्तिखार आलम आजाद- 407
सत्य सिंधु- 407
सत्य दीपिका- 412
सत्यसाधिनी- 412
सुनीति- 412
सच्चिनानंद बोधनकर- 412, 415
सतीश मुकर्जी- 415
सकलनारायण पाण्डेय- 415
सम्मेलन पत्रिका- 415
सैयद मुमताज अली- 417
स.ल.सोमण- 417
समर्थ- 417
सैयद अब्दुल्ला रिजवी- 419
सैयद अकबर अली अकबराबादी- 420
सुजन रंजनी- 422
सत्व साधनी- 422
सुदर्शन- 434, 435
समाचार- 436
सनातन धर्म पताका- 439
सचीन्द्र सिन्हा - 440

ह

हरि जी. गोविल- 6
हारूचन्द्र राय- 8, 30, 35
हिकीज गजट- 11, 12
हग बोर्ड- 17
हिन्दू पेट्रियट- 24, 27, 132, 133, 155, 271, 333
हम्फ्रीज- 25
हेलटर स्केलटर मैगजीन- 44
हासपेरस- 53
हेनरी डिरोजिओ- 53
हटचिन्स- 59
होजेज- 66
हेनरी मीड- 67

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू पायनियर- 69
हेनरी टॉरेन्स- 77
हरमोन मोएगलिंग- 89
हिन्दुस्तान गार्जियन- 90
हिन्दू इन्टेलीजेंसर- 97
हरिश्चन्द्र मुखर्जी- 97
हरिनारायण गोस्वामी- 100
हिन्दू धर्म चद्रोदय- 100
हिन्दू बंधु- 101
हरवंशलाल- 103
हितवादी- 104, 105
हकीम महबूब अली खां- 117
हरकारा- 125
हुमाए-बे-बहा- 129
हालदार सेन- 134
हाजी अलीकरम- 140
हरिनारायण लिमये- 141
हरणचंद्र मुखोपाध्याय- 142
ह्यूम न्यूज- 145
हिन्दू रत्न कमलाकर- 148
हितैषिणी- 153
हरिश्चन्द्र कमियाजी- 158
हरिश्चन्द्र मित्रा- 168, 169, 171
हरिनाथ मजूमदार- 168
हिन्दू हितैषिणी- 172
हिन्दू रंजिका- 175
हरनाम स्वरूप- 177
हीरालाल- 177
हिन्दू रिफार्मर- 179
हित साधक- 185
हिन्दी दीप्ति प्रकाश- 191
हकीम असगर हुसैन- 197
हिन्दी प्रकाश- 202
हैदराबाद गजट- 202
हिन्दू पंच- 204, 205
होलकर सरकार गजट- 208,
हरिश्चन्द्र मैगजीन- 209
हरिश्चन्द्र चंद्रिका- 211
हिन्दू बान्धव- 217
हाफिज अब्दुल्ला बिलग्रामी- 217
हरिविष्णु सहस्त्रबुद्धे- 218
हास्यवर्द्धिनी- 219
हिन्दीप्रदीप- 227, 228, 229, 230, 231, 299, 377, 409
हाफिज-ए-सेहत- 236
हरिसुन्दर बोस- 236
हकीम गुलाम नबी- 236
हरमुकुन्द शास्त्री- 240
हिन्दू- 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 285
हेमेन्द्र प्रसाद घोष- 249
हिन्दू नेशन- 250
हिन्दू सर्वस्व- 261
हाफिज करीमउल्ला- 265
हयात-ए-जाविदां- 284
हिन्दुस्तानी उर्दू लुगात- 290
हिन्दोस्थान- 291, 304, 305, 307, 319, 371, 373
हृषिकेश भट्टाचार्य शास्त्री- 292
हेमचन्द्र बरुआ- 293
हरिचन्द्र साहनी- 296
हामी-ए-हिन्द- 296
हिन्दुस्तानी- 296
हजार दास्तान- 301
हामी-ए-इस्लाम- 302, 311
हाफिज निजाम अहमद- 303
हबीब-ए-हिन्द- 308
हकीम नाजिर हुसैन नाजिर- 308
हकीम आशिक अली- 308
हाकिम- 310
हकीम रघुवीर सहाय बिरियां- 310
हरियाणा पंच- 312
हरियाणा अखबार- 312
हदीक-ए-शौउरा- 313
हुमा-ए-बंगाल- 313
हकीम मोहम्मद हुसैन- 313
हिदायत- 315
हदीकतुल अखबार- 316
हाफिल अब्दुल हक हकीकी- 317

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हकीम मजहर एहसन खां- 324
हाफिज मोहम्मद इस्माइल- 324
हाफिज अब्दुल हक सौदागर- 325
हकीम मोहम्मद ताहिर- 325
हाफिज मतीन- 326
हाफिज अहमद अली खां- 326
हरिदल अजीज- 326
हुसैन खां- 327
हकीम मोहम्मद रजा- 328
हकीम असगर हुसैन- 329
हिरज-ए-जां- 329
हुब्ब-उल वतन- 329
हकीम मोहम्मद नाजिर हसन चिश्ती- 330
हरदयाल शुक्ल- 330
हिन्दू जन संस्कारिणी- 331
हामी हिन्द कड़ा- 333
हकीम अब्दुल करीम- 335
हाजी अब्दुल रहीम- 338
हकीम मोहम्मद अली खां- 338
हैदर हुसैन आफ़्रीं- 338
हिन्दुस्तान- 339, 341
हामी-ए-हिन्द- 339
हिम्मत- 339
हंटर- 340
हकीम देवीदयाल- 347
हिलाल- 347
हिन्दू धर्म्म- 348
हेनरी हेग- 351
हामी-ए-इस्लाम- 352
हरिभाऊ आप्टे- 356
हेमंत कुमारी देवी- 361
हिन्दी पंच- 367
हिन्दू पंच- 367
हिन्दी बंगवासी- 241, 368, 369, 370
हरिकृष्ण जौहर- 370, 411
हरिनारायण आप्टे- 372
हितवार्ता- 373, 374
हितवाणी- 373, 374
हरिमाधव पंडित- 375
हिन्दू देशाभिमानी- 378
हकीम शेख मुहीउद्दीन- 380
हिन्दू मैगजीन- 382
हिमालय- 382
हमदर्द-ए-हिन्द- 390
हितचिंतक- 391
ही-उल-आलम- 391
हिसामुद्दीन- 399
हिन्दी केसरी- 405, 411
हरिशंकर शर्मा- 405
हाजी सैयद अली अहसन- 407
हरिहरप्रसाद पाठक- 407
हकीम मोहम्मद अब्दुल हमीद- 412
हाफिज जलील हसन- 422
हिन्दुस्तान रिव्यू- 436, 437

श्र

श्रीमंत मिरजकर- 5
श्रवण पेरूमाल अय्यर- 62
श्रीनाथ राय- 89
श्रीनिवास हवानूर- 89
श्रेष्ठ मोहन बंद्योपाध्याय- 117
श्रीलाल बी.ए.- 126
श्रीनाथ बंद्योपाध्याय- 144
श्री यक्षिणी- 159
श्रीनाथ सिंह राय- 175
श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका- 211, 212
श्री कृष्णचंद्र कैसर- 267, 326
श्रीधर बरुआ- 333
श्री गुरुमत प्रकाशक- 336
श्री हरिश्चन्द्र कला- 350
श्रीनिवास नारायण काकडे- 352
श्रीखण्ड- 362
श्रीमती हरदेवी- 363
श्री वेंकटेश्वर समाचार- 371, 408, 409, 410, 411
श्री विद्या कल्पद्रुममु- 378
श्री सयाजी विजय- 383
श्री हरिश्चन्द्र कौमुदी- 391, 392
श्रीनिवास आयंगर- 399

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री कान्यकुब्ज हितकारी- 421
श्रीनाथ सिंह- 428
श्रीनारायण चतुर्वेदी- 429
श्री भारती- 438
श्री कवि समालोचक- 438
श्रीपाद कृष्णमूर्ति शास्त्री- 440

क्ष

क्षेत्रमोहन भट्टाचार्य- 77
क्षत्रिय पत्रिका- 284
क्षेत्रपाल शर्मा- 348

ज्ञ

ज्ञान अन्वेषण- 59
ज्ञानोदय- 60, 82, 83, 85, 107, 131
ज्ञान सिंधु- 84
ज्ञान दर्पण- 99, 142
ज्ञान संचारिणी- 102
ज्ञान निक्षेपम्- 105
ज्ञान चन्द्रोदय- 107
ज्ञान अरुण- 107
ज्ञान प्रकाश- 106, 107, 108, 109
ज्ञान दर्शन- 123, 142
ज्ञान अरुणोदय- 128
ज्ञानचन्द- 133
ज्ञान प्रसारक- 133
ज्ञान प्रसार- 142
ज्ञान वर्धक- 142
ज्ञान सागर- 143
ज्ञान बोधक- 158, 282
ज्ञान चन्द्रिका- 158
ज्ञान दीप- 162
ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका- 177
ज्ञान रत्न- 185
ज्ञानांकुर- 205
ज्ञान विनोदिनी- 219
ज्ञानभानु- 223
ज्ञानोदयम्- 385
ज्ञानपदि- 421

143772

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access on	V. Kumar	24/09/08
Class on	[signature]	25/09/08
Cat on	[signature]	
Tag etc.	V. Kumar	
Filing		
E.A.R.	[signature]	
Any others		
Checked		

Recommended By....... डॉ० संतराम वैश्य

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

Entered in Database
Signature with Date
[signature] 26/7/12

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar